Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

69



| | |
|---|---|
| नक्त व्रतोद्यापन, तेलाधर तप जैन | २९ अगस्त |
| गौरी तृतीया, वाराह जयंती | ३० " |
| श्री गणेश जन्म चतुर्थी | ३१ " |
| चंद्र दर्शन निषेध, कलंकी चौथ | ३१ " |
| जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) | ३१ " |
| ऋषि पंचमी, संवत्सरी (पंचमी पक्ष) जैन | १ सितं. |
| क्षमावणी पर्व | १ " |
| सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ, मुक्ताभरण सप्तमी | २ " |
| संतान सप्तमी, अपराजिता सप्तमी | २ " |
| राधाष्टमी, दुर्गाष्टमी, दूर्वाष्टमी | ३ " |
| दधीची ज., महालक्ष्मी व्रत प्रा. | ३ " |
| चन्द्र नवमी, अदुःख नवमी | ४ " |
| गुरु उदय, भागवत सप्ताहारंभ | ४ " |
| दशावतार दशमी व्रत, शिक्षक दिवस | ५ " |
| पद्म (जलझूलनी) एकादशी व्रत | ६ " |
| वामन ज., भुवनेश्वरी जयंती | ७ " |
| सोम प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्री व्रत प्रा. | ८ " |
| अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोइल | ९ " |
| सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, प्रोष्ठपदी पूर्णिमा | १० " |
| गोत्रिरात्री व्रत पूर्ति, भागवत सप्ताह पूर्ति | १० " |
| पूर्णिमा व्रत, महालयारंभ | १० " |
| प्रतिपदा श्राद्ध, ह. अली जन्म दिवस | ११ " |
| अशून्य शयन द्वितीया व्रत, द्वितीया श्राद्धम् | १२ " |
| तृतीया श्राद्धम् | १३ " |
| कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध | १४ " |
| दशरथ ललिता व्रत., भा. हिंदी दि. | १४ " |
| पंचमी श्राद्ध, भा. इंजीनियर्स डे | १५ " |
| चन्दन छठ, षष्ठी श्राद्धम् | १६ " |
| सप्तमी श्राद्धम्, विश्वकर्मा पूजा | १७ " |
| महालक्ष्मी व्रत पूर्ति, सप्तमी श्राद्ध | १८ " |
| कालाष्टमी, अष्टमी श्राद्धम् | १९ " |
| मातृ नवमी, भूदान ज., नवमी श्राद्ध | २० " |
| गुरु नानक देव शहीदी दि., दशमी श्राद्ध | २१ " |
| इन्दिरा एकादशी व्रत, एकादशी श्राद्ध | २२ " |
| भौम प्रदोष व्रत, द्वादशी श्राद्ध | २३ " |
| मास शिवरात्री, मघा त्रयोदशी श्राद्ध | २४ " |
| शब्बे मिराज | २५ " |
| चतुर्दशी श्राद्ध, देवपितृकार्यऽमा. | २५ " |
| सर्वपितृ श्राद्ध, पितृ विसर्जन | २५ " |
| मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्रारंभ | २६ " |
| अग्रसेन जयंती | २६ " |
| विनायक चतुर्थी व्रत | २९ " |
| उपांग ललिता पंचमी व्रत, बैंक होली डे | ३० " |

| | |
|---|---|
| सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा | २ अक्टू. |
| महात्मा गांधी जयंती, शास्त्री जयंती | २ " |
| सरस्वती पूजन, दुर्गाष्टमी | ३ " |
| जैन आयंबिल ओली प्रा. | ३ " |
| सरस्वती बलिदान, महानवमी | ४ " |
| शुक्रोदय, नवरात्रा पूर्ति | ४ " |
| विजया दशमी, सरस्वती विसर्जन | ५ " |
| बौद्धावतार दशमी, श्री माधवाचार्य ज. | ५ " |
| पापांकुशा एकादशी व्रत | ६ " |
| भौम प्रदोष व्रत | ७ " |
| वायु सेना दिवस | ८ " |
| शरद पूर्णिमा व्रत, कोजागरी व्रत | ९ " |
| सत्य व्रत, जैन आयंबिल ओली पूर्ति | १० " |
| महर्षी वाल्मीकि ज., कार्तिक स्नान प्रा. | १० " |
| अशून्य शयन द्वितीया व्रत | ११ " |
| शब-ए-बारात | १२ " |
| गुरु रामदास जयंती | १२ " |
| करवा चौथ व्रत, करक चतुर्थी | १४ " |
| श्री पद्म प्रभु जयंती जैन | १५ " |
| स्कंद षष्ठी | १६ " |
| कालाष्टमी, अहोई अष्टमी | १८ " |
| रमा एकादशी व्रत, स्मार्त | २१ " |
| रमा एकादशी व्रत वैष्णव, गोवत्स पूजा | २२ " |
| प्रदोष व्रत, धन तेरस, धन्वंतरी ज. | २३ " |
| महामना मालवीय पुण्यं | २३ " |
| यमाय दीपदान, नरक १४ | २४ " |
| मास शिवरात्री व्रत, रूप चतुर्दशी | २४ " |
| देव पितृ कार्येऽमा. दीपावली | २५ " |
| कमला ज., महावीर निर्वाण दि. जैन | २५ " |
| गोवर्धन पूजा, अन्नकूट | २६ " |
| भैया दूज, रोजा प्रा. | २७ " |
| विनायक ४ व्रत | २८ " |
| पांडव पंचमी, गुरु गोविन्द सिंह पुण्यं | २९ " |
| सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ | ३० " |
| अष्टान्हिक व्रत प्रा. जैन, पटेल ज. | ३१ " |
| इन्दिरा गांधी पुण्य दि. | ३१ " |
| गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी | १ नवं. |
| अक्षय नवमी, आँवला नवमी | २ " |
| रवि दशमी | ३ " |
| देव प्रबोधनी एकादशी व्रत | ४ " |
| तुलसी विवाह, भीष्म पंचकारंभ | ४ " |
| कालीदास जयंती | ५ " |

| | |
|---|---|
| प्रदोष व्रत | ६ नवं. |
| वैकुंठ चौदस, चौमासी चौदस जैन | ७ " |
| सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, नानक जयंती | ८ " |
| आष्टान्हिक व्रत पूर्ति जैन | ८ " |
| भीष्म पंचक पूर्ति, मेला गढ़ गंगा | ८ " |
| श्री निम्बार्काचार्य जयंती | ८ " |
| पूर्णिमा पुण्य, देव दीवाली, कार्तिक स्नान पूर्ति | ९ " |
| अशून्य शयन द्वितीया व्रत | १० " |
| सौभाग्य सुन्दरी व्रत | ११ " |
| कृष्ण चतुर्थी व्रत | १२ " |
| सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दि. जैन | १४ " |
| जवाहर लाल नेहरू ज., बाल दिवस | १४ " |
| सहादत हजरत अली | १६ " |
| काल भैरवाष्टमी, प्रथमाष्टमी (उड़ीसा) | १७ " |
| महावीर स्वामी दीक्षा दि. | १९ " |
| इन्दिरागांधी जन्म दि. | १९ " |
| उत्पत्ती एकादशी व्रत, वैतरणी व्रत | २० " |
| प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्यं | २१ " |
| जुमातुल विदा | २१ " |
| मास शिवरात्री व्रत, शब-ए-कद्र | २२ " |
| देव पितृ कार्येऽमा. श्री बालाजी ज. | २३ " |
| रुद्रव्रत (पीड़िया व्रत) | २४ " |
| विनायक चौथ व्रत, ईद-उल-फितर | २६ " |
| नाग पंचमी (द.भा.), गुरुतेगबहादुर बलिदान | २८ " |
| चम्पा षष्ठी व्रत | २९ " |
| मित्र सप्तमी, नरसी मेहता ज. | ३० " |
| दुर्गाष्टमी, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान | ३० " |
| महानन्दा नवमी, विश्व एड्स डे | १ दिसं. |
| श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष जैन | ३ " |
| डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म, विश्व विकलांग दि. | ३ " |
| मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता ज., मातंगी ज. | ४ " |
| विश्व रसायन दुर्घटना निवारण दि. | ४ " |
| भारतीय नौ सेना दिवस | ४ " |
| अखंड द्वादशी, व्यंजन द्वादशी | ५ " |
| शनि प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी | ६ " |
| गुरु ग्रंथ साहिब वार्षिकोत्सव | ६ " |
| पिशाच मोचन श्राद्ध, त्रिपुर भैरव ज. | ७ " |
| संभव नाथ ज., झण्डा दिवस | ७ " |
| सत्य व्रत पूर्णिमा व्रत | ८ " |
| अन्नपूर्णा ज., दत्तात्रेय ज. | ८ " |
| उर्स मेला निजामुद्दीन | ११ " |

| | |
|---|---|
| कृष्ण चतुर्थी व्रत | १२ दिसं. |
| गुरु गोविन्द सिंह ज., मल मासारंभ | १६ " |
| कालाष्टमी, जिन सागर पुण्य | १७ " |
| सफला एकादशी व्रत स्मार्त | १९ " |
| पार्श्वनाथ ज., श्री चन्द्र प्रभु ज. जैन | १९ " |
| सफला एका. व्रत वैष्णव | २० " |
| प्रदोष व्रत | २१ " |
| मास शिवरात्री व्रत | २२ " |
| देव पितृ कार्याऽमा., बकुला अमा. | २३ " |
| क्रिसमस डे, बड़ा दिन | २५ " |
| यतीन्द्र सूरीश्वर पुण्य, त्रिस्तुति जैन | २५ " |
| पं. मदन मोहन मालवीय ज. | २५ " |
| विनायक चौथ | २६ " |
| गुरु गोविन्द सिंह ज. (प्रा.म.से.) | २९ " |
| राजेन्द्र सूरीश्वर पुण्य | २९ " |
| दुर्गाष्टमी, शाकम्भरी यात्रा | ३० " |
| न्यू ईयर इवनिंग | ३१ " |

**सन् २००४ ई.**

| | |
|---|---|
| शाम्ब दशमी, ईसाई नव वर्ष प्रा. | १ जन. |
| पवित्र एकादशी व्रत | ३ " |
| प्रदोष व्रत | ४ " |
| सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत, माघ स्नान प्रा. | ७ " |
| शाकम्भरी ज. | ७ " |
| कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकष्ट चौथ | ११ " |
| लोहड़ी उत्सव (पंजाब) | १३ " |
| मकर संक्रांति, मलमास समाप्त | १४ " |
| पोंगल (द.भा), माघ बिहू (आसाम) | १४ " |
| विवेकानन्द ज., रामानन्दाचार्य ज. | १४ " |
| कालाष्टमी, भा. थल सेना दिवस | १५ " |
| षट्तिला एकादशी व्रत | १८ " |
| सोम प्रदोष व्रत, वंजुली द्वादशी व्रत | १९ " |
| शीतल नाथ ज. जैन | १९ " |
| मास शिव रात्री व्रत., मेरू त्रयोदशी जैन | २० " |
| श्री आदि नाथ कल्याणक जैन | २० " |
| देवपितृ कार्याऽमा., मौनी अमावस | २१ " |
| वल्लभाचार्य जयंती | २२ " |
| नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ज. | २३ " |
| गौरी तृतीया | २४ " |
| विनायक चौथ व्रत, तिल चौथ | २५ " |
| बसन्त पंचमी, सरस्वती पूजा | २६ " |
| आरोग्य ७, माधवाचार्य ज., लाजपतराय ज. | २८ |
| दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी | २९ " |
| महात्मा गांधी पुण्य दिवस | ३० " |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



| | | |
|---|---|---|
| जया एकादशी व्रत स्मार्त, हज्ज | १ | फर. |
| जया एकादशी व्रत वैष्णव, ईद-उल-जुहा | २ | " |
| भौम प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी | ३ | " |
| गुरु हरराय ज. | ४ | " |
| पूर्णिमा व्रत, श्री राम चरण स्नेही ज. | ५ | " |
| माघी पूर्णिमा, सत्य व्रत, माघ स्नान पूर्ति | ६ | " |
| रविदास ज., ललिता ज., भैरवी ज. | ६ | " |
| कृष्ण चतुर्थी व्रत | ९ | " |
| कालाष्टमी, सीताष्टमी | १३ | " |
| गुरु रामदास ज., वेलेन्टाइन डे | १४ | " |
| स्वामी दयानन्द सरस्वती ज. | १५ | " |
| विजया एकादशी व्रत | १६ | " |
| प्रदोष व्रत, महाशिव रात्री व्रत | १८ | " |
| शिव खप्पर पूजा, वासुदेव पून्य ज. जैन | १९ | " |
| देव पितृ कार्याऽमावस्या | २० | " |
| फुलरिया दूज, रामकृष्ण परमहंस ज. | २२ | " |
| विनायक चतुर्थी व्रत | २३ | " |
| संत चतुर्थी उड़ीसा | २४ | " |
| याज्ञवल्क ज. | २५ | " |
| गोरूपिणी षष्ठी (बंगाल) | २६ | " |
| दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी | २८ | " |
| होलाष्टक प्रा., दादूदयाल ज. | २८ | " |
| अष्टान्हिक व्रत प्रा. जैन | २८ | " |
| आमलकी एकादशी व्रत, ताजिया | २ | मार्च |
| गोविन्द द्वादशी, मेला श्याम जी (खाटू) | ३ | " |
| प्रदोष व्रत | ४ | " |
| सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन | ६ | " |
| चैतन्य महाप्रभु ज., अष्टान्हिक व्रत पूर्ति जैन | ६ | " |
| वसन्त प्रतिपदा, छारेंडी | ७ | " |
| संत तुका राम ज., विश्व महिला दिवस | ८ | " |
| कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ | १० | " |
| रंग पंचमी, श्री जयंती | ११ | " |
| एक नाथ षष्ठी | १२ | " |
| शीतला सप्तमी | १३ | " |
| कालाष्टमी, शीतलाष्टमी | १४ | " |
| ऋषभदेव ज. जैन | १५ | " |
| दशमाता व्रत | १६ | " |
| पापमोचनी एकादशी व्रत | १७ | " |
| प्रदोष व्रत | १८ | " |
| मास शिवरात्री व्रत | १९ | " |
| देव पितृ कार्याऽमावस्या | २० | " |
| चांद्र संवत्सर २०६० समाप्त | २० | " |

| | | |
|---|---|---|
| चेहल्लम शहीद करबला | २२ | अप्रैल |
| आखरी चाहर शम्बा | ३० | " |
| सहादतें इमाम हसन | १ | मई |
| ईद-ए-मिलाद (बारावफात) | १५ | " |
| ईद-ए-मौलाद | २० | " |
| फातिहा यजदहूम (ग्यारहवीं शरीफ) | १२ | जून |
| उर्स ओलिया निजामुद्दीन प्रा. | १७ | " |
| वफात सरसैयद हैमद खाँ | २९ | जुला. |
| उर्स ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ति | ३ | सितं. |
| हजरत अली जन्म | ११ | " |
| शब्बे मिराज | २५ | " |
| शब्बे रात | १२ | अक्टू. |
| रमजान (रोजा) प्रा. | २७ | " |
| उर्स अलीशाह कलन्दर पानीपत | ८ | नवं. |
| शहादते हजरत अली | १६ | " |
| जुमातुल विदा | २१ | " |
| शब-ए-कद्र | २२ | " |
| ईद-उल-फितर | २६ | " |
| उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो दिल्ली | ११ | दिसं. |
| वफात कायदे आजम मोहम्मद अली | ३१ | " |

## सन् २००४ ई.

| | | |
|---|---|---|
| हज्ज | १ | फर. |
| ईद-उल-जुहा (बकरीद) | २ | " |
| मोहर्रम हिजरी सन् १४२५ प्रा. | २२ | " |
| मुहर्रम ताजिया | २ | मार्च |

## महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

| | | | |
|---|---|---|---|
| मुनि सुमतिनाथ | जयंती | १३ | अप्रैल |
| " महावीर स्वामी | " | १५ | " |
| " सुव्रत नाथ | " | २६ | " |
| " कुन्थ नाथ | " | २ | मई |
| " अनन्त नाथ | " | २७ | " |
| " शान्ति नाथ | " | ३१ | " |
| " सुपार्श्व नाथ | " | ११ | जून |
| " नमी नाथ | " | २४ | जून |
| " नेमी नाथ | " | ३ | अग. |
| " पद्मप्रभु नाथ | " | १५ | अक्टू. |
| " सम्भव नाथ | " | ९ | नवं. |
| " पुष्प दन्त नाथ | " | २४ | " |
| " [illegible] | " | [illegible] | दिसं. |
| मुनि [illegible] | जयंती | | |
| " पार्श्वनाथ | " | १९ | " |
| " चन्द प्रभु | " | २१ | " |
| " यतीन्द्र सुरीश्वर नाथ | " | २५ | " |
| " राजेन्द्र सुरीश्वर नाथ | " | २९ | " |

## सन् २००४ ई.

| | | | |
|---|---|---|---|
| " शीतल नाथ | " | १९ | जन. |
| " विमल नाथ | " | २५ | " |
| " अजित नाथ | " | ३१ | " |
| " अभिनन्दन नाथ | " | ३ | फर. |
| " धर्म नाथ | " | ४ | " |
| " श्रेयांश नाथ | " | १६ | " |
| " वासु पून्य नाथ | " | १९ | " |
| " ऋषभ नाथ | " | २९ | " |

## महापुरुषों के जन्म दिन

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्री गौतम | जयंती | २ | अप्रैल |
| श्री झूलेलाल | " | ३ | " |
| डॉ. अम्बेडकर | " | १४ | " |
| श्री हनुमान | " | १६ | " |
| श्री वल्लभाचार्य | " (उ.भा.) | २७ | " |
| श्री शुकदेव | " | १ | मई |
| श्री शिवाजी | " | ३ | " |
| श्री आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य | " | ६ | " |
| श्री सूरदास | " | ६ | " |
| श्री रामानुजाचार्य | " (द.भा.) | ६ | " |
| बाबू कुंवर सिंह | " | ६ | " |
| श्री रामानुजाचार्य | " (उ.भा.) | ७ | " |
| श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर | " | ७ | " |
| श्री देव ऋषि नारद | " | १८ | " |
| श्री माँ आनन्दमयी | " | १८ | " |
| श्री महाराणा प्रताप | " | ३ | जून |
| श्री संत कबीर | " | १४ | " |
| श्री लोकमान्य तिलक | " | २३ | जुला. |
| श्री सरस माधुरी | " | २९ | " |
| श्री गोस्वामी तुलसीदास | " | ४ | अगस्त |
| श्री संत ज्ञानेश्वर | " | १९ | " |
| श्री संत सुधरे शाह | " | २७ | " |
| श्री दधीचि | " | ३ | सितं. |
| डॉ. राधा कृष्णन् | " | ५ | " |
| श्री विनोबा भावे | " | ११ | " |
| श्री अग्रसेन | " | २६ | " |
| श्री महात्मा गाँधी व शास्त्री | जयंती | २ | अक्टू. |
| श्री माधवा चार्य | " | ५ | " |
| श्री महर्षि बाल्मीकि | " | १० | " |
| श्री गुरु रामदास | " | १२ | " |
| श्री धन्वन्तरी | " | २३ | " |
| श्री जलराम | " | ३१ | " |
| सरदार पटेल | " | ३१ | " |
| कवि कालिदास | " | ५ | नवं. |
| श्री निंबार्काचार्य | " | ८ | " |
| श्री जवाहर लाल नेहरू | " | १४ | " |
| श्रीमती इन्दिरा गांधी | " | १९ | " |
| संत नरसी मेहता | " | ३० | " |
| डॉ. राजेन्द्र प्रसाद | " | ३ | दिसं. |
| श्री दत्तात्रेय | " | ८ | " |
| महामना मदन मोहन मालवीय | " | २५ | " |
| ईसा | " | २५ | " |

## सन् २००४ ई.

| | | | |
|---|---|---|---|
| श्री स्वामी विवेकानन्द | जयंती | १४ | जन. |
| श्री रामानन्दाचार्य | " | १४ | " |
| श्री नेताजी सुभाषचन्द्र बोस | " | २३ | " |
| लाला लाजपत राय | " | २८ | " |
| श्री राम चरण स्नेही | " | ५ | फर. |
| गुरु रविदास | " | ६ | " |
| समर्थ गुरु रामदास | " | १४ | " |
| स्वामी दयानन्द सरस्वती | " | १५ | " |
| श्री राम कृष्ण परमहंस | " | २२ | " |
| श्री याज्ञ वल्क | " | २५ | " |
| श्री दादूदयाल | " | २८ | " |
| श्री चैतन्य महा प्रभु | " | ६ | मार्च |
| संत तुकाराम | " | ८ | " |

## प्रा. मेला दशहरा आदि उत्सव

| | | |
|---|---|---|
| मेला आर्य समाज स्थापना दिवस | २ | अप्रैल |
| " चीमान नानकसर (पंजाब) | २ | " |
| " गणगौरी जयपुर (राज.) | ४ | " |
| " माई सरखाना (पंजाब) | ९ | " |
| " मनसा देवी (हरियाणा) | १० | " |
| " बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर) | १० | " |
| " ज्वालामुखी (हरचोवाल) | १० | " |
| " ज्वालामुखी (गुरदासपुर) | १० | " |
| " श्री राम जन्मोत्सव (अयोध्या) | ११ | " |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चांद्र संवत्सर २०६० समाप्त | २० '' | पुष्प दन्त नाथ | २४ '' | श्री विनोबा भावे | ११ | ज्वालामुखी ( गुरदासपुर ) | १० '' |
| | | मल्लि नाथ | ४ दिसं. | | | श्री राम जन्मोत्सव ( अयोध्या ) | ११ '' |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| | |
|---|---|
| मेला कांसी देवी ( रोपड़ कांसल ) | १५ अप्रैल |
| '' देवी थीहरा ( केथल ) | १५ '' |
| '' बाला सुन्दरी देवबन्द ( उ. प्र. ) | १५ '' |
| '' मानकपुर शरीफ ( रोपड़ ) | १६ '' |
| '' श्री हनुमानजी सालासर ( राज. ) | १६ '' |
| '' कशाधा नहयाणी सह कुल्लू | २३ '' |
| '' पिंजौर ( हरियाण ) | १ मई |
| '' पीपल जातर ( कुल्लू ) | ६ '' |
| '' आनी आउडर सिराज ( कुल्लू ) | १६ '' |
| '' डूंगरी जातर मनाली | २२ '' |
| '' बंजार ( कुल्लू ) | २२ '' |
| '' चानाणी माता | २३ '' |
| '' शाढ़ी जातर नगर ( हि. प्र. ) | २५ '' |
| '' हल्दी घाटी ( राज. ) | ३ जून |
| '' क्षीर भवानी ( कश्मीर ) | ८ '' |
| '' गंगा दशहरा ( हरिद्वार ) | १० '' |
| '' सपोरा यात्रा धारलदा बुधपुरा | १० '' |
| '' ब्रहिरे भटिण्डा ( पंजाब ) | ११ '' |
| '' पिपलू ऊना ( हि. प्र. ) | ११ '' |
| '' शुद्ध महादेव यात्रा ( ऊधमपुर ) | १४ '' |
| '' भून्तर ( हि.प्र. ) | २२ '' |
| '' शरीफ भवानी ( कश्मीर ) | ८ जुला. |
| '' ज्वालामुखी ( कश्मीर ) | १२ '' |
| '' नैमिषारण्य ( उ.प्र. ) | १३ '' |
| '' गुरु पूर्णिमा ( कुराली ) | १३ '' |
| '' नानकसर ( चीमा ) | १७ '' |
| '' हरियाली अमावस ( उदयपुर ) | २९ '' |
| '' चिंतपूर्णी व नयना देवी ( हि. प्र. ) | ५ अग. |
| '' अमरनाथ दर्शन ( कश्मीर ) | १२ '' |
| '' द्रोण दनकौर ( उ. प्र. ) | १९ '' |
| '' जन्माष्टमी ( मथुरा ) | १९ '' |
| '' कैलाश यात्रा ( कश्मीर ) | २५ '' |
| '' सुथरेशाह ( दिल्ली ) | २७ '' |
| '' गुसाईं आणां ( कुराली ) | २९ '' |
| '' रामदेव जी रुणीचा ( जैसलमेर ) प्रा. | २९ '' |
| '' गणेशोत्सव मण्डी ( हि. प्र. ) | ३१ '' |
| '' गणेशोत्सव ( महाराष्ट्र ) | ३१ '' |
| '' पात ( कश्मीर ) प्रा. | १ सितं. |
| '' ब्रजमण्डल ( उ. प्र. ) | २ '' |
| '' चारभुजानाथ ( मेवाड़ ) | ६ '' |
| '' वामन द्वादशी ( पटियाला ) | ७ '' |
| '' सोडल ( जालन्धर ) | ९ '' |

| | |
|---|---|
| मेला छपार ( पंजाब ) | ९ सितं. |
| '' गोयन्दवाल ( पंजाब ) | १० '' |
| '' श्री आशापति यात्रा ( कश्मीर ) | २५ '' |
| '' ज्वालामुखी तारादेवी ( हि.प्र. ) | ३ अक्टू. |
| '' हरचोवाल ( गुरदास पुर ) | ३ '' |
| '' दशहरा कुल्लू ( हि.प्र. ) | ५ '' |
| '' शाकम्भरी देवी ( उ.प्र. ) | ९ '' |
| '' थीहरा ( केथल ) | ९ '' |
| '' दीपावली ( अमृतसर ) | २५ '' |
| '' अन्नकूट ( गोवर्धन ) पूजा | २६ '' |
| '' बाबा रुद्रानंद नारी ऊना ( हि. प्र. ) | ४ नवं. |
| '' रेणुका नाहन ( हि. प्र. ) | ४ '' |
| '' वीर बैरागी नकोदर ( पंजाब ) | ६ '' |
| '' पुष्कर ( राज. ) | ८ '' |
| '' रामतीर्थ ( अमृतसर ) | ८ '' |
| '' कपालमोचन ( हरियाणा ) | ८ '' |
| '' गढ़ गंगा ( उ. प्र. ) | ८ '' |
| '' बाल मेला ( दिल्ली ) | १४ '' |
| '' पुरमण्डल देवी का स्ना. ( जम्मू ) | २३ '' |
| '' जोड़ फतेहगढ़ साहिब ( पं. ) प्रा. | ४ दिसं. |
| '' मेला संगीत हर वल्लभ प्रा. | ५ '' |
| '' उर्स निजामुद्दीन ( दिल्ली ) | ११ '' |
| **सन् २००४ ई.** | |
| '' मस्तु आणा ( पंजाब ) | ११ जन. |
| '' लोहड़ी ( पंजाब ) | १३ '' |
| '' मुक्तसर ( पंजाब ) | १४ '' |
| '' मौनी अमावस ( हरिद्वार ) | २१ '' |
| '' वसन्त पंचमी ( हि.प्र. ) | २६ '' |
| '' पंचखण्ड पीठ विराटनगर | ४ फर. |
| '' डेजर्ट उत्सव जैसलमेर ( राज. ) | ४ '' |
| '' वेणेश्वर बांसवाड़ा ( राज. ) | ६ '' |
| '' महाशिवरात्री मण्डी ( हि.प्र. ) | १८ '' |
| '' नीलकण्ठ महादेव ( पौड़ी ) | १८ '' |
| '' श्याम जी खाटू ( राज. ) | १-३ मार्च |
| '' होला आनन्दपुर साहिब ( पं. ) | ७ '' |
| '' मानकपुर शरीफ ( रोपड़ ) | ७ '' |
| '' पंखा ( भभफर ) | ७ '' |
| '' बीरमदास बछौली ( पटि. ) | ११ '' |
| '' गुरु रामराय ( देहरादून ) | ११ '' |
| '' शीतला माता कुराली ( पंजाब ) | १३ '' |
| '' पृथूदक पिहोवा ( हरियाणा ) | १९ '' |

## क्रिश्चियन व्रत त्यौहार

| | |
|---|---|
| पाम सण्डे | १३ अप्रैल |
| गुड फ्राईडे | १८ '' |
| इस्टर सण्डे | २० '' |
| क्रिसमस डे | २५ दिसं. |
| न्यू ईयर इवनिंग | ३१ '' |
| न्यू ईयर डे सन् २००४ प्रा. | १ जन. |
| एपीफेनी डे | ६ '' |

## सिक्खों के गुरु पर्व

| | | |
|---|---|---|
| गुरु तेगबहादुर जी | जन्म | २१ अप्रैल |
| '' अर्जुन देव जी | '' | २३ '' |
| '' अंगद देव जी | '' | ३ मई |
| '' अमरदास जी | '' | १५ '' |
| '' हरगोविन्द जी | '' | १४ जून |
| '' हर किशन जी | '' | २२ जुला. |
| '' रामदास जी | '' | १२ अक्टू. |
| '' नानक देव जी | '' | ९ नवं. |
| '' गोविन्द सिंह जी | '' | २९ दिस. |
| **सन् २००४ ई.** | | |
| '' हरराय जी | '' | ४ फर. |

## गुरुयाई गिली

| | |
|---|---|
| गुरु अमरदास जी | २ अप्रैल |
| '' तेगबहादुर जी | ११ '' |
| '' हरराय जी | २० '' |
| '' हरगोविन्द जी | २३ मई |
| '' अर्जुन देव जी | २९ अगस्त |
| '' राम दास जी | ८ सितं. |
| '' अंगद देव जी | १५ '' |
| '' हरकिशन जी | १९ अक्टू. |
| '' गोविन्द सिंह जी | ११ नवं. |

## ज्योति जोत समाए

| | |
|---|---|
| गुरु अंगद देव जी | ६ अप्रैल |
| '' हरगोविन्द जी | ७ '' |
| '' हरकिशन जी | १५ '' |
| '' अर्जुन देव जी | ४ जून |
| '' रामदास जी | ३० अग. |
| '' अमर दास जी | १० सितं. |
| '' नानक देव जी | २१ '' |
| '' हरराय जी | २० अक्टू. |
| '' गोविन्द सिंह जी | २९ '' |
| '' तेग बहादुर जी | २८ नवं. |

## दशावतार जयंतियाँ

| | | |
|---|---|---|
| श्री मत्स्य | जयंती | ४ अप्रैल |
| '' राम | '' | ११ '' |
| '' परशुराम | '' | ४ '' |
| '' नृसिंह | '' | १४ '' |
| '' कूर्म | '' | १५ '' |
| '' बुद्ध | '' | १६ '' |
| '' कल्की | '' | ३ अगस्त |
| '' कृष्ण | '' | १९-२० '' |
| '' वाराह | '' | ३० '' |
| '' वामन | '' | ७ सितं. |

## संक्रांतियाँ

| | | |
|---|---|---|
| मेष | सोमवार | १४ अप्रैल |
| वृष | गुरुवार | १५ मई |
| मिथुन | रविवार | १५ जून |
| कर्क | बुधवार | १६ जुला. |
| सिंह | रविवार | १७ अगस्त |
| कन्या | बुधवार | १७ सितं. |
| तुला | शुक्रवार | १७ अक्टू. |
| वृश्चिक | रविवार | १६ नवं. |
| धनु | मंगलवार | १६ दिसं. |
| **सन् २००४ ई.** | | |
| मकर | बुधवार | १४ जन. |
| कुंभ | शुक्रवार | १३ फर. |
| मीन | रविवार | १४ मार्च |

## व्रत पूर्णिमा

| | |
|---|---|
| चैत्र | १६ अप्रैल |
| वैशाख | १५ मई |
| ज्येष्ठ | १३ जून |
| आषाढ़ | १३ जुला. |
| श्रावण | ११ अग. |
| भाद्रपद | १० सितं. |
| आश्विन | ९ अक्टू. |
| कार्तिक | ८ नवं. |
| मार्गशीर्ष | ८ दिसं. |
| **सन् २००४ ई.** | |
| पौष | ७ जन. |
| माघ | ५ फर. |
| फाल्गुन | ६ मार्च |

शेष पृष्ठ २०९ पर...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

## विक्रम संवत् २०६० (दिनांक २ अप्रैल २००३ ई. से २० मार्च २००४ ई. तक)

- राजा बुध व मंत्री चन्द्र एवं दुर्गेश सूर्य का संयोगिक प्रभाव शक्तिशाली राष्ट्राध्यक्षों के लिए अनेक चुनौती पूर्ण।
- विश्व के कुछ विशिष्ट भागों में कट्टरवादी ताकतों द्वारा विनाशक ताण्डव।
- जगल्लग्न व वर्ष लग्न की ग्रह स्थिति मध्य एशिया ईरान, ईराक, अरब, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चेचन्या, रूस व चीन आदि राष्ट्रों में आंतरिक अराजकता।
- किसी मुस्लिम राष्ट्राध्यक्ष पर हमला व बलात् सत्ता परिवर्तन संभव।
- पूर्वोत्तर राष्ट्रों व प्रांतों, रूस-चीन-जापान-बर्मा व भारत के पर्वतीय स्थानों पर भूकम्प, ज्वालामुखी व तूफान आदि अनेक प्राकृतिक प्रकोप।
- क्रीड़ा- कला व विज्ञान जगत में भारत का विशिष्ट सम्मान।
- पश्चिमोत्तर सीमाओं पर आतंकवादी उद्गार व सैन्य संघर्ष लगातार।
- सत्तारूढ़ दल में भीतरी घात, अन्तर्विरोध के लाभ से विपक्ष के वर्चस्व की वृद्धि।
- स्त्री शासित राष्ट्रों व प्रान्तों में औद्योगिक अनेक विकास।

विगत डेढ़ दशक से "श्री आर्यभट्ट पंचांग" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी है एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैवविद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैवविद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है अत: समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा।

ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह महिराचार्य कृत "वाराही संहिता" के आधार पर "दैवज्ञ" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संवट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं ... होगी। इसके लिए सर्वतोभद्र चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि का आधार मानकर हम अपनी स्वयं बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।



नवीन विक्रम संवत् २०६० का भली भांति फल जानने के लिए ग्रहों की सूक्ष्म स्थिति का विवेचन और पर्यवेक्षण होना परमावश्यक होता है। अत: यहां प्रमुख ग्रहों की वर्ष प्रारंभ एवं वर्ष समाप्ति काल की ग्रह स्थिति का उल्लेख किया जा रहा है। जो चित्रा पक्षीय निरयन मान से निम्न तालिका के अनुसार है:-

**वर्षारंभ २ अप्रेल २००३ ई. प्रात: ५.३० बजे वर्ष समाप्ति २० मार्च २००४ ई. ५.३० बजे**

| राशि | अंश | कला | विकला | वक्री/मार्गी | प्रमुख ग्रहा: | राशि | अंश | कला | विकला | वक्री/मार्गी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २३ | ५० | ३४ | मार्गी | ← मंगल → | १ | ५ | १४ | २९ | मार्गी |
| ३ | १४ | १० | १३ | वक्री | ← गुरु → | ४ | १८ | २ | ४५ | वक्री |
| १ | २९ | ३५ | ४९ | मार्गी | ← शनि → | २ | १२ | ३० | ५२ | मार्गी |
| १ | ८ | १८ | ५७ | वक्री | ← राहु → | ० | १९ | ३६ | ३१ | वक्री |
| ७ | ८ | १८ | ५७ | वक्री | ← केतु → | ६ | १९ | ३६ | ३१ | वक्री |
| १० | ७ | १४ | २८ | मार्गी | ← हर्षल → | १० | १० | २३ | ४ | मार्गी |
| ९ | १८ | ४६ | ७ | मार्गी | ← नेपच्यून → | ९ | २० | ३५ | १ | मार्गी |
| ७ | २६ | १ | ३२ | वक्री | ← प्लूटो → | ७ | २८ | १९ | ३८ | मार्गी |

**मंगल-** वर्षारंभ में धनुराशि पर व ता. ११ अप्रेल को मकर, ता. १० जून को कुंभ राशि में रहते ता. २९ जुलाई को वक्री होकर २७ सितंबर को मार्गी होगा तथा ता. ५ दिसंबर को मीन में, ता. २४ जनवरी २००४ ई. को मेष में एवं ता. ११ मार्च को वृष राशि में गोचरीय भ्रमण करेगा। इस वर्ष मंगल अस्तंगत नहीं होगा।

**गुरु-** वर्ष प्रारंभ काल में गुरु कर्क राशि पर रहेगा। ता. ३० जुलाई को सिंह राशि में वर्षान्त तक चलेगा। वर्ष के शुरू में गुरु वक्री है जो ता. ५ अप्रेल को मार्गी होगा। सिंह राशि का गुरु ता. ६ जनवरी २००४ ई. को वक्री होगा। जो वर्ष समाप्ति तक वक्रगति रहेगा। ता. ९ अगस्त को पश्चिम में अस्त होकर ता. ४ सितंबर को पूर्व में उदय होगा।

**शनि -** वर्ष आरंभ में वृष राशि पर रहकर ता. ७ अप्रेल को मिथुन राशि में रहेगा जो वर्ष की समाप्ति तक चलेगा। ता. २५ अक्टूबर से ता. ७मार्च २००४ ई. तक वक्री रहेगा। ता. ४ जून को पश्चिम में अस्त एवं ता. १४ जुलाई को पूर्व में उदय होगा।

**राहु केतु-** वर्ष के प्रारंभ में राहु वृष राशि पर व केतु वृश्चिक राशि पर रहकर ता. ६ सितंबर को राहु मेष राशि में और केतु तुला में आकर वर्षांत तक रहेगा।

**हर्षल-** वर्षभर कुंभ राशि पर रहेगा। ता. ७ जून से ता. ८ नवंबर तक वक्री रहेगा।

**प्लूटो-** सम्पूर्ण वर्ष वृश्चिक राशि पर चलेगा। वर्षारंभ काल में वक्र है तथा ता. २८ अगस्त को मार्गी होगा।

**नेपच्यून-**मकर राशि पर पूर्ण वर्षभर रहेगा। ता. १५ मई से ता. २२ अक्टूबर तक वक्री रहेगा।

## नवीन वर्ष के शुभाशुभ फल

विक्रम संवत २०६० ई. में अन्तरिक्ष परिषद में पृथक पृथक ग्रहों की जो अधिकार प्राप्त हुए हैं उनका विवरण इस प्रकार है। वर्ष का राजा बुध अन्य तीन पद सस्य, निरस व कोषाध्यक्ष (धनेश) अधिकार सहित विराजित हुआ है , मंत्री पद पर चन्द्रमा हुए हैं। मेष व फल स्वामी एवं रक्षामंत्री(दुर्गेश) पद पर सूर्य निर्वाचित हुए हैं। रसेश शुक्र व कृषि मंत्री (धान्येश) पदासीन मंगल है। इस प्रकार इस वर्ष सौम्य ग्रहों को विशेष अधिकार प्राप्त हुए हैं। गुरु व शनि देव को इस वर्ष अधिकारों से वंचित रखा गया है। उपरोक्त विवरण अनुसार विश्व में विपक्षी दल विशेष शक्तिशाली बनकर सत्तारूढ़ शासकों की आंतरिक कमियां प्रजा के समक्ष प्रस्तुत कर भयातीत रखेंगे। सुरक्षा परिषद में अनेक कानून एवं नियम बन कर उग्रवाद व आतंकवादी ताकतों की रुकावटों के लिए कठोर कदम उठाये जायेंगे। स्त्री शासित राष्ट्रों व प्रदेशों में विकास स्थितियां बढ़ेंगी। राष्ट्राध्यक्ष बुध को नपुंसक संज्ञा शास्त्रों में दी है अत: विश्व की नियम नीतियों का बार बार उलंघन होकर पूर्वी गोलार्द्ध में युद्धादिक भय बढ़ेगा। मुस्लिम राष्ट्रों के प्रमुख शासकों को विकट परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा। अमेरिका, ब्रिटेन तथा कई यूरोपीय देशों की हठ धर्मिता से प्रजा को कष्ट, हानि एवं भय बढ़ेगा। मंत्री पदस्थ चन्द्रमा कूटनीतियों की अनेक चाल चलनें में दक्ष है। तदनुसार आतंकवादी ताकतों के गुप्त निर्णयों को उदघाटित कर सर्व विदित करने के कारक रहेगा। इस हेतु संयुक्त राष्ट्र परिषद का विशेष योगदान रहेगा। गुरु व शनि विपक्षी दलीय होने के कारण भू भाग के पूर्वोत्तर भागों में प्राकृतिक विपत्तियां पैदा होकर जन समुदाय में भय वृद्धि कारक है। रूस, जापान, चीन, फिलीपाइन्स द्वीप समूह, बर्मा, पूर्वी भारत एवं आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में तूफान , भूकम्प, भूस्खलन, पर्वत श्रृंखलाओं का विघटन व हिमपातादि से जन धन हानि के योगप्रद है। विश्व व्यापार में परिवर्तन बनकर सुधार होने पर भी अनेक राष्ट्रों में महंगाई -बेरोजगारी की समस्याएं उभरी हुई रहेंगी। देश के अनेक प्रांतों में ठगी, लूट, चोरी, डाका आदि घटनाओं की विशेषता रहकर प्रजा में भय वृद्धि रहेगी। देश में विपक्षी दल सबल होकर सत्तारूढ़ दल पर प्रभावी बनेगा। प्रजा में अपना वर्चस्व बढ़ा कर शासकीय नीतियों पर तीखे प्रहार से उद्विग्न व बरगलाहट पैदा करेगा। कट्टरवादी ताकतें बढ़कर दक्षिणी पश्चिमी प्रांतों व देश के मध्य भाग में अनेक उपद्रव कारी घटनाओं के साथ प्रकट होंगी। जिससे प्रधान शासकों को चिन्ताएं बढ़ेंगी। देश की वैज्ञानिक ज्ञान प्रतिभा का विश्व पर प्रभाव बढ़ेगा। इस वर्ष औद्योगिक विकास कार्यों की गिरावट से व्यापारी वर्ग में चिन्ता व्याप्त रहेंगी।

वर्ष प्रवेश कुण्डली

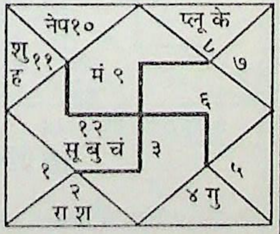


विक्रम संवत् २०६० का प्रारंभ सं.२०५९ चैत्र कृष्णा ३० मंगलवार ता. १ अप्रेल २००३ ई. को रात्री २४ बजकर ५० मिंट तदनुसार इष्ट घटी ४६ पल ३२ पर धनु लग्न में प्रवेश हो रहा है जिसकी तात्कालिक कुण्डली सामने दी जा रही है। वर्ष प्रवेश लग्न का शास्त्रोक्त फल निम्न प्रकार लिखा गया है। यथा-

धनुर्लग्नेतत्रस्यां पूर्वस्यां च सुख णृणाम्। दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्य देशे सरोगता॥
पश्चिमायां घृतंधान्यं समर्घ मास पंचकम्। दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित्पीडा चतुष्पदे॥

गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी लग्न धनु में वर्ष प्रवेश हुआ है। इस वर्ष लग्न स्वामी गुरु अष्टम भाव में मंगल, शनि, नेपच्यून से दृष्ट होकर स्थित है। मंगल लग्नस्थ पंचम व व्यय भावेश होकर बैठा है। जिसका शनि से षडाष्टक योग है। वर्ष का राजा बुध अपनी नीच राशि पर मंत्री चन्द्र व वर्ष के सेनाध्यक्ष दुर्गेश सूर्य के साथ दुबक कर बैठा है एवं रिपु भाव में शनि राहु योग है इस प्रकार की ग्रह स्थिति के अनुसार उग्रवाद व आतंकवादी ताकतें विश्व के हर भू भाग पर फैल कर वाहन यान दुर्घटनाएं, विस्फोटक सामग्रियों से जन धन की हानि तथा राष्ट्रों के मूल भूत स्थानों का ह्रास करके प्रजा व प्रमुख शासकों में भय वृद्धि करेंगे। शक्तिशाली देशों के अस्तित्व को बार बार चुनौती का सामना करना पड़ सकता है। लग्न में मंगल का होना वर्ष में अनेक राष्ट्र सीमाओं पर सैन्य संघर्ष अथवा युद्ध विभिषिका से जनक्षति होना संभव है। ब्रिटेन, फ्रांस, बेलजियम, अफ्रीका, अरब, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, चीन, रूस, इजरायल तथा भारतीय भू भाग पर युद्धादिक बादलों की छाया के बादल मंडरायेंगे। विरोधी दलों का वर्चस्व बढ़ेगा तथा सत्तारूढ़ दलों में आपसी तनाव व फूट से आन्तरिक घटक में निर्बलता बनने के आसार है।

इस वर्ष राजा बुध (नपुंसक)व मंत्री चन्द्र (स्त्री)आपस में पिता पुत्र संज्ञक भी है अत: शासकीय नीतियों का सुचारु उपयोग करने में असमर्थ एवं भयभीत रहेंगे जिसका दुष्ट एवं क्रूर स्वभावी व कट्टर पंथी लोग लाभ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


उठाकर अनेक उपद्रवों का कारण बनेंगे। चैत्र मास में शनि का मिथुन राशि में प्रवेश होना उत्तरी व पश्चिमी सीमाओं पर सैन्य संघर्ष एवं पश्चिमी राष्ट्रों में युद्ध भय प्रद है। यथा-

**मिथुन राशि शनि आवहीं, उत्तर में होय राड़। मास पांच सूंगी रहे नद नर्मद की आड़॥**

तथा- **मिथुने च यदा सौरि, दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद् भयम्॥**

शनि ता. ७ अप्रैल को वृषस्थ चन्द्रमा काल में मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। मेदिनी ज्योतिषानुसार मालवा देशों में विग्रह तथा उज्जैन देश में उत्पात एवं अनेक राष्ट्रों में परस्पर युद्धोन्मादकारी फलप्रद रहेगा। पूर्वी राष्ट्रों व प्रांतों में तूफान, भूकम्प एवं पर्वत श्रृंखलाओं के विघटन आदि प्राकृतिक विपत्तियों से अनेक हानि तथा रोगोत्पात बढ़ेगा। ता. ११ अप्रैल से ता. ३ जून तक गुरु मंगल का सम सप्तक योग दोनों ही अपनी उच्च राशि पर बैठकर कर रहे हैं जो विश्व के उन्नत राष्ट्रों के लिए चुनौती का समय रहेगा। मुस्लिम राष्ट्रों में गृह क्लेश, सत्ता विरोधी आंदोलन एवं शासकों में आपसी तनाव के परिणाम स्वरूप बलपूर्वक अधिकार छीनने के प्रयास अथवा आरोप प्रत्यारोप से सम्मान हानि जन्य वातावरण बनेगा। कहीं सत्ता परिवर्तन भी संभव है। यथा-

*क्रूराणां सह सौम्यश्च यदि स्यात्सप्त सप्तकम्। अनावृष्टि स्तदा ज्ञेया लोक पीडा महत्यपि॥*

वैशाख मास में पांच गुरुवार व ज्येष्ठ मास में ५ शनिवार और आषाढ़ मास के ५ रविवार तीनों मासों में अनेक प्राकृतिक प्रकोपों से विश्व जन मानस में अशांति भय एवं शासकों में बौखलाहट वृद्धि कारक है। पूर्वी व दक्षिणी प्रांतों में तूफान- चक्रवात एवं अतिवर्षण क्षति कारक रहेगा। पश्चिमोत्तर भागों में रोगवृद्धि, अनेक आंदोलन, विरोधी पक्षों द्वारा उत्पात एवं राज्य सरकारों में परिवर्तन, सीमावर्ती क्षेत्रों पर सैन्य संघर्ष बढ़ने से प्रमुख अधिकारी शासकों में चिन्ताएँ बढ़ेंगी। मौसम का दुष्प्रभाव जनता में पीड़ाप्रद रहेगा।

**पहिल मास गुरु होव हिं पंच, दूजै मास जु रविसुत पंच। पांचौ सूरज तीजै मास, आगो पीछौ एक विलास॥ १॥**
**फिरत चक्र ज्यों देश सब, मचै घनो संग्राम। रुंड मुंड सब जग दुखी, ताको फल भनि आम॥ २॥**

के अनुसार उपद्रवों के साथ कहीं तापमान वृद्धि व कहीं अतिवर्षा से जल विप्लव आदि अनेक प्राकृतिक आपदाओं का समावेश रहेगा। श्रावण में पांच सोमवार श्रेष्ठ वर्षा व फसलों की उपज और देश की शिक्षा पद्धति में उन्नति कारक है किन्तु शुक्ल पक्ष में गुरु का सिंह राशि में अस्त व भाद्रपद मास के चतुर्ग्रही योग से राजनैतिक स्थितियों में विघटनात्मक परिवर्तन एवं कुछ प्रदेशों की राज्य सरकारों में परिवर्तन और कर्मचारीयों द्वारा आन्दोलन आदि विग्रह रहेंगे। गुरु सिंह राशि में ता. ९ अगस्त को पश्चिमास्त होगा। यथा-

**सिंहे गुरो अस्तं याति, नृप युद्धं तदा भवेत्। लोक धनादि नाशं च भविष्यति न संशयः॥**

अतः पश्चिमी राष्ट्रों में सैनिक संघर्ष रहेगा। आश्विन मास में कन्या राशि में ता. ४ अक्टूबर को शुक्रोदय तथा कार्तिक मास में शनिवारी दीपावली देश को विज्ञान क्षेत्र में प्रतिभावान बनाने में सहायक व विदेशी व्यापार के नवीन मुद्दों से राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति में दृढ़ता रहने पर भी शासकों में आपसी तनाव और तकरार बनने से आंतरिक बौखलाहट रहेगी। विपक्षी दलों का अदभुत दबाव बनेगा एवं नयी परिवर्तन जन्य समस्याएँ उभरकर सामने आयेंगी। महिला शासित क्षेत्रों में विकास एवं औद्योगिक प्रगति बढ़ेगी।

**रवि शनि मंगलवार मंह, स्वाती आयुष योग। दीप मालिका होई तो, बढ़े बहुत नर रोग॥**
**छत्र भंग पर्वत गिरे, जड़ पद मंहिगो होई। गर्भ परत तिय कटक को, युद्ध उपद्रव जोई॥**

के अनुसार कहीं सत्ता परिवर्तन एवं प्रधान शासक का निधन संभव है। मार्गशीर्ष में गुरु मंगल का सम सप्तक योग व पौष मास में पांच मंगलवार, प्राकृतिक संकटों से पैदावार में हानि, कीट जंतुओं अथवा तूफानादि से क्षति रहेगी। माघ मास में शुक्र व गुरु आमने सामने (सम सप्तक योग) व फाल्गुन में पांच शनिवार शासकों व जनता के लिए संघर्ष शीलता एवं मानसिक भय का फलप्रद रहेगा।

संवत् २०६० चैत्र शुक्ल १२ सोमवार ता. १४ अप्रैल, २००३ ई. को मध्याह्न ११ बजकर ४९ मि. तदनुसार इष्ट घटी १४ पल ३५ पर कर्क लग्न में श्री सूर्य भगवान सप्ताश्वजुत रथ की सवारी से मेष राशि में प्रवेश करेंगे। जिसकी जगत लग्न कुण्डली सामने दी जा रही है। लग्न स्वामी चन्द्र सिंह राशि पर द्वितीय भाव में है जिस पर मंगल शुक्र व शनि ग्रहों की पूर्ण दृष्टि होने से विश्व के शक्तिशाली राष्ट्र अपनी दोहरी नीतियों से स्वकीय स्वार्थ का साधन करेंगे। जिससे अनेक राष्ट्राधिकारी एकत्रित होकर विरोध करेंगे। मंगल उच्च राशि में नेपच्यून के साथ युत होकर शनि से षडाष्टक योग करता है तदनुसार मुस्लिम राष्ट्रों में विशेष आंतरिक अशांति का शासकों के लिए गंभीर समस्याएँ पैदा करने का कारक है। गुरु भाग्य भावेश होकर लग्न में अपनी उच्च राशि पर स्थित होने के कारण वर्ष में गुप्त आतंकवादियों व भीतर घात करने वाले राष्ट्राधिकारियों का पर्दा उठाकर वास्तविकता प्रगट करने में सहायक सिद्ध होगा। उग्रवाद के अनेक गैर कानूनी सैनिक प्रशिक्षण केन्द्रों का पता चलकर ध्वस्त किये जायेंगे। बोस्निया, फिलीस्तीन, लेबनान, चेचेन्या, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, आयरलैंड, सूडान, बंगला देश,

जगत् लग्न कुण्डली

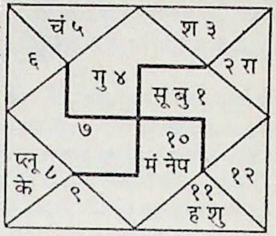


श्रीलंका, भारत, काश्मीर व चीन आदि राष्ट्रों में गुप्त प्रशिक्षण केन्द्रों की गुप्त रूप से जानकारी प्राप्त करने में शांति स्थापना की चादर ओढ़कर अमेरीका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस व जर्मन राष्ट्र एक जुट होकर खोज करेंगे तथा संयुक्त राष्ट्र परिषद के सहयोग से ध्वस्त करने के प्रयास करेंगे। भारतीय शासक दलों में आपसी कटुता व छिद्रान्वेषी आदतों से विपक्ष नेतृत्व में जागृति आकर पक्ष सबल होगा। जगत लग्न कुंडली में उच्च राशि का सूर्य पैदावार में अनेक स्थानों पर उत्तम उपज व पर्याप्त वर्षा कारक है और कुछ स्थानों पर मंगल दृष्टि वशात् सूखे की चपेट अथवा प्राकृतिक आपदाओं से हानि योगप्रद है।

## भारतीय गणतंत्र का ५४ वां वर्ष

विक्रम संवत २०५९ माघ कृष्णा ८ शनिवार इष्ट ४६ घटी १० पल तदनुसार ता. २६ जनवरी २००३ ई.के प्रातः १ बजकर ४२ मिंट पर तुला लग्न में भारतीय गणतंत्र का ५४ वां वर्ष प्रवेश कर रहा है। जिसकी तात्कालिक कुण्डली सामने प्रस्तुत की जा रही है। लग्न स्वामी शुक्र अन्य चार ग्रहों के साथ द्वितीय भाव में स्थित है जिस पर गुरु व शनि की पूर्ण दृष्टि है। मंगल स्वराशि है, गुरु अपनी उच्चराशि में तथा राज्येश चन्द्र नीच राशि में है। भली भांति ग्रह स्थिति का अवलोकन करने पर भारत की शासकीय स्थिति किंकर्त्तव्यविमूढ़ संज्ञक रहेगी। लग्न स्वामी शुक्र दैत्य गुरु होने के नाते राजनीति ज्ञाता एवं कूटनीतियों का समुचित ज्ञानवान होते हुए भी राज्य भाव स्वामी चन्द्र नीचस्थ होकर

गणतंत्र वर्ष लग्न कुण्डली

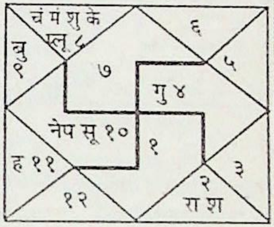


एवं केतु से ग्रस्त स्थिति में लग्नेश के साथ होने से प्रधान शासकों की कार्यक्षमता अन्य उत्पातिक घटकों के विलय के दुष्परिणाम स्वरूप सत्ता के समुचित उपयोग में बाधक रहेंगे। इस निर्बलता का लाभ विपक्षी दलों और विशेषतः आतंकवादी तत्वों को लाभ रहकर देश के अनेक प्रांतीय भागों में नर संहार, बम विस्फोट, वाहनयान दुर्घटनाएँ तथा धार्मिक और साम्प्रदायिक फिसादों की अधिकता रहेगी। ठग- चौर- डाकू व बलात्कारादि उपद्रवों से जन जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। सीमावर्ती क्षेत्रों पर सैनिक गतिरोध एवं देश के रक्षकों में विशेष जागृति रहते हुए भी शासकों के मनोहीनता से सैनिकों में क्षोभ पैदा होगा। लोक सभा विधान सभा आदि लोकतांत्रिक परिषदों में अनेक बौद्धिकता पूर्ण तर्क व विवादकताएँ बनेंगी। भाग्य भावेश बुध पराक्रम स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारों में उत्साह एवं प्रगति कारक है किन्तु लाभ भाव स्वामी सूर्य चतुर्थ भाव में नेपच्यून के साथ शत्रु राशि में होना मध्यम वर्गीय व्यापारियों के लिए कष्टप्रद है। उच्च व्यापारियों को ही विशेषता व प्राथमिकता रहेगी। इस वर्ष देश में पैदावार गुरु दृष्टि नीच राशि चतुर्थ भाव पर होने के कारण मध्यम प्रायः रह सकेगी। अष्टम शनि दक्षिणी प्रांतों में अनेक चक्रवात तूफानादि उपद्रवों से हानि कारक है। भारतीय गणतंत्र का यह वर्ष देश के लिए अनेक चुनौतियां भरा रहेगा। इसलिए प्रधान शासकों को चाहिए कि देश को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करे तथा छिछली राजनीति [illegible] स्थल को स्वर्ग तुल्य सुसज्जित करें।

शेष पृष्ठ १८ पर...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

मंगल शुक्र व शनि ग्रहों की पूर्ण दृष्टि होने से विश्व के श...

रहेगा। इसलिए प्रधान शासकों को चाहिए कि देश को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास करे तथा छिछली राजनीति का त्याग कर देश हित समझ व जन्मभूमि के पावन स्थल को स्वर्ग तुल्य सुसज्जित करें।

शेष पृष्ठ १८ पर...

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# ग्रहण विवरण संवत् २०६० विक्रम

## विक्रम सं० २०६० में अन्तर्राष्ट्रीय जगत में चार ग्रहण दिखाई देंगे। जिस में से भारतीय भूभाग पर दो ग्रहण ही दिखाई देंगे। अन्य ग्रहण भारत में दिखाई नहीं देंगे।

**१. खग्रास चन्द्र ग्रहण :–** वैशाख शुक्ला पूर्णिमा शुक्रवार ता० १९ मई २००३ ई० को विशाखा नक्षत्र व वृश्चिक राशि के चन्द्रमा में होगा। यह ग्रहण अफ्रीका, अमेरिका, ग्रीनलैण्ड, अन्टार्टिका, अटलांन्टिक और पेसेफिक महासागर आदि क्षेत्रों में दिखाई देगा। भारत भूभाग पर यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

**२. कंकणाकृति सूर्य ग्रहण :–** ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या शनिवार ता० ३१ मई २००३ ई० को रोहिणी नक्षत्र व वृषभ राशिस्थ चन्द्रमा में होगा। यूरोप, ग्रीनलैण्ड, अमेरिका, एशिया के पश्चिमी भागों व इग्लैंण्ड के उत्तरी भाग आदि स्थानों पर खण्ड ग्रास दिखाई देगा। भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में कंकणाकृति खण्डग्रास दिखाई देगा। जहाँ यह ग्रहण दिखाई देगा उसी क्षेत्रों पर ग्रहण जनित धार्मिक नियमों का पालन किया जायेगा। अन्यत्र वेधादि नहीं माने जायेंगे।

**३. खग्रास चन्द्र ग्रहण :–** कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा शनिवार ता० ८, ९ नवम्बर २००३ ई० को भरणी नक्षत्र तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा में होगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत और मध्य एवं पश्चिमी एशिया, आयरलैण्ड, ब्रिटेन, यूरोप, अन्टार्टिका, ग्रीनलैण्ड, अमेरिका, अफ्रीका तथा पूर्वी पेसेफिक सागर आदि क्षेत्रों पर देखा जायेगा। भारत भूभाग पर ग्रहण का स्पर्श (आरंभ काल) ग्रस्तास्त ही दिखाई देगा।

**४. खग्रास सूर्य ग्रहण :–** मार्गशीर्ष कृष्णा १४ (अमावस्या क्षय:) रविवार ता० २३, २४ नवम्बर २००३ ई० को अनुराधा नक्षत्र एवं वृश्चिक राशिस्थ चन्द्रमा में होगा। यह ग्रहण दक्षिण अमेरिका, न्यूजीलैंण्ड, अन्टार्टिका, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी पेसेफिक महासागर आदि क्षेत्रों पर दिखाइ देगा। भारत में यह ग्रहण दिखाई नहीं देगा।

## विक्रम सं० २०६० में भारत में दिखाई देने वाले सूर्य व चन्द्र ग्रहणों का विवरण

**कंकणाकृति (खण्डग्रास) सूर्य ग्रहण :–** ज्येष्ठ कृष्णा ३० शनिवार ता० ३१ मई २००३ ई० चन्द्रमा रोहिणी नक्षत्र व वृष राशिस्थ, ग्रासमान ०.९३९।

यह ग्रहण भारत के पश्चिमोत्तर भाग में अल्प(खण्ड)ग्रास दिखाई देगा। मानचित्र के अनुसार स्थान व स्पर्श मोक्ष की जानकारी की जा सकती है। मुख्यत: उत्तरी गुजरात, कच्छ, भुज, काठियावाड़, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, दिल्ली व पश्चिमी मध्य भारत में ग्रहण दिखाई देगा। देखें आगे दिया गया मानचित्र में रेखा अ और ब से पश्चिमोत्तर भाग में ही ग्रहण देखा जा सकेगा। अत: दिखाई देने वाले स्थानों पर ग्रहण वेधादि व पर्वादि माने जायेंगे। अन्य स्थान पूर्वी-दक्षिणी भारत के भू-भाग पर पर्वादि नहीं माने जाऐंगे। यहां ग्रहण का स्पर्शादि समय दिल्ली का दिया गया है अन्यत्र स्थानों के लिए तालिका में दिया गया है।

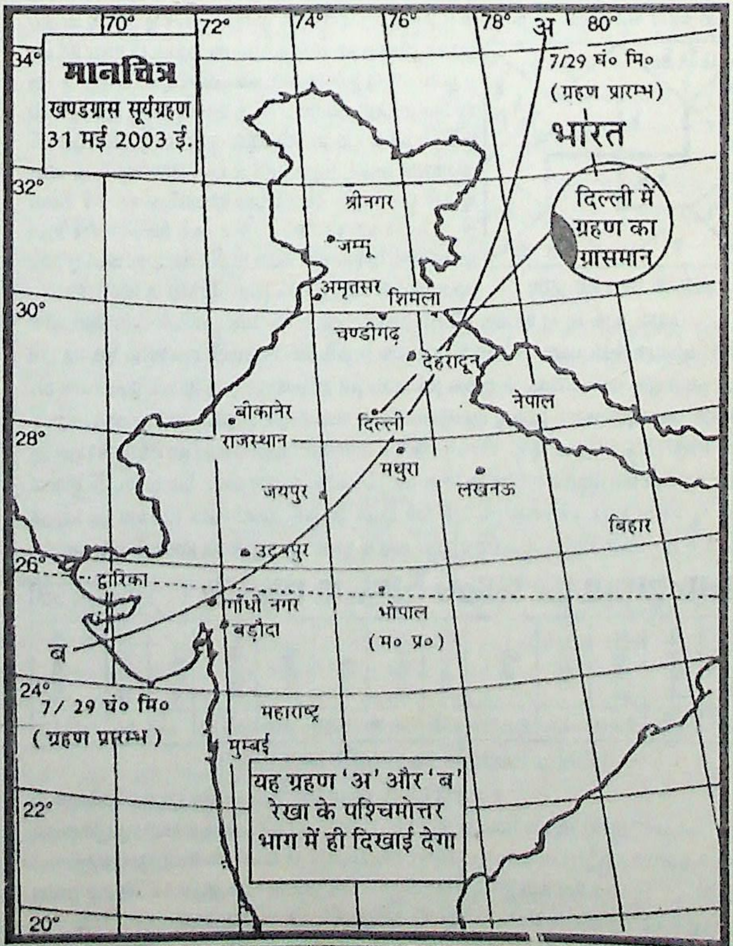


CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



**ग्रहण स्पर्श – प्रात: ७.३७ बजे**
**ग्रहण मध्य – प्रात: ८.०३ बजे**
**ग्रहण मोक्ष – प्रात: ८.३२ बजे**

ग्रहण का पर्वकाल ० घंटा ५५ मिंट है। ग्रहण का वेध (सूतक) ता० ३० मई २००३ ई० शुक्रवार को सायं ७.३७ बजे से लगेगा जिसमें रोगियों, बालकों व वृद्धों को छोड़कर अन्य सभी को भोजनादि करना निषेध माना गया है।

## कुछ प्रमुख स्थानों पर ग्रहण के आरम्भ व समाप्ति काल की तालिका

| नगर नाम | ग्रहणारंभ घं. मि. | समा. काल घं. मि. | नगर नाम | ग्रहणारंभ घं. मि. | समा. काल घं. मि. | नगर नाम | ग्रहणारंभ घं. मि. | समा. काल घं. मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अजमेर | ७/३४ | ८/२४ | उदयपुर | ७/३५ | ८/१५ | द्वारिका | ७/२९ | ८/१३ |
| अमृतसर | ७/३० | ८/४९ | चण्डीगढ़ | ७/३४ | ८/४३ | नाथद्वारा | ७/३५ | ८/१७ |
| अलीगढ़ | ७/४१ | ८/२४ | जयपुर | ७/३६ | ८/२४ | बीकानेर | ७/२९ | ८/३५ |
| आगरा | ७/४३ | ८/१८ | जोधपुर | ७/३० | ८/२६ | मथुरा | ७/४० | ८/२२ |
| अहमदाबाद | ७/३७ | ८/७ | देहरादून | ७/३७ | ८/३८ | हरिद्वार | ७/३७ | ८/३६ |

**वृष राशिस्थ चन्द्रमा के समय में ग्रहण का फल:**–वृषे च ग्रहणे गोपा: पशव: पथिका: जना:। महान्तो मनुजा ये च तेषां पीडा गरीयसी ॥ इस ग्रहण से यात्रियों, महान पुरुषों, गाय आदि चतुष्पादों का कारक फल होंगे।

### ॥ ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ फलम् ॥

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फलम् | धननाश | देहारिष्ट | द्रव्य हानि | धन लाभ | मनोसुख | सम्मानहानि | देह पीड़ा | स्त्रीकष्ट | उत्साहवृद्धि | उद्वेग | अरिष्ट | अर्थ लाभ |

**ग्रस्तास्त ( खग्रास ) चन्द्रग्रहण:**–कार्तिक शुक्ला १५ शनिवार ता० ८, ९ नवम्बर २००३ ई० चन्द्रमा भरणी नक्षत्र व मेष राशिस्थ, ग्रासमान १.०२३।

भारत में यह ग्रहण पश्चिमी क्षितिज पर ग्रस्तास्त देखा जायेगा। ग्रहण का स्पर्श प्राय: सम्पूर्ण भारत में दिखाई देगा। ग्रहण का वेध पर्व आदि सर्वत्र देश में माना जायेगा। नीचे ग्रहणारंभ, समाप्ति काल दिल्ली समयानुसार दिया गया है।

**ग्रहण स्पर्श– ता० ९ नवम्बर प्रात: ५.२ बजे**
**संमीलन– ता० ९ नवम्बर प्रात: ६.३६ बजे**
**ग्रहण मध्य– ता० ९ नवम्बर प्रात: ६.४८ बजे**
**उन्मीलन–ता० ९ नवम्बर प्रात: ७.०१ बजे**
**ग्रहण मोक्ष– ता० ९ नवम्बर प्रात: ८.३५ बजे**
**ग्रहण का पर्वकाल ३ घंटा ३३ मिंट है।**

**ग्रहण का वेध ( सूतक )**– ता० ८ नवम्बर की रात्री में ८.२ बजे से लगेगा। जिसमें भोजनादि करना निषेध है। बालकों, वृद्धों व रोगियों को दोष नहीं माना गया है।

**मेष राशिस्थ चन्द्रमा में ग्रहण का फल:**– उपरागो यदा मेषे पीडयन्ते ये तदा जना:। काम्बोजांधिकिराताश्च पांचालाश्च तिलंगका ॥ मेष राशि में ग्रहण होने पर तिलंग, काम्बोज, आन्ध्र व पांचालादि देश की जनता व्याधि ग्रस्त हो कर पीड़ित होती है।

### ॥ ग्रहण का राशियों पर शुभाशुभ फलम् ॥

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फलम् | अरिष्टप्रद | अर्थहानि | अर्थलाभ | सौख्य | अपमान | देहकष्ट | पत्नि कष्ट | सुख | मनोद्वेग | अस्थिरता | संपत्ति लाभ | धन हानि |

पृष्ठ १७ का शेष...

## भारतीय जलवायु मण्डल एवं वर्षादि योग

वर्ष में वायु मण्डल एवं वर्षादि योग जानने के लिये भारतीय शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक नगर व राज्य में प्रतिदिन की वायु-मेघ गर्जना-बादल वर्षा की परीक्षा द्वारा वृष्टि गर्भ लक्षण का उल्लेख मिलता है। जैसे आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा अंतरिक्ष लक्षण जहां शुभ शकुन का आभास करायेंगे। वहां सुभिक्ष व सुवृष्टि का संचार होगा। इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा रविवार ता. १३ जुलाई २००३ को है। इस दिन यदि पूर्व ईशान- उत्तर व पश्चिम दिशा की हवा चलेगी तो सुभिक्ष माना जायेगा। जबकि शेष दिशाओं में हवा दुर्भिक्ष- रोग उत्पात व भय कारक मानी जायेगी। खगोल विद्वानों को वर्ष भर के गर्भ लक्षणों का परीक्षण करना चाहिए। वर्ष पर्यन्त नहीं कर सके तो आषाढ़ी पूर्णिमा को सायं सूर्यास्त काल में खुले स्थान पर जाकर ध्वजा की विधिवत पूजा करके वायु परीक्षा कर अपने नगर, देश व राज्य के लिए शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिए।

वर्षादि योग के लिए सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से आगामी दस नक्षत्र में भ्रमण करने तक वर्षा के द्योतक माने जाते हैं। नवीन विक्रम संवत् २०६० आषाढ़ कृष्ण ८ रविवार ता. २२ जून २००३ ई. को मध्याह्न १५ बजे तदनुसार इष्ट घटी २३ पल ५७ पर लग्न तुला के समय श्री सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश करेंगे। जिसकी तात्कालिक कुण्डली सामने दी जा रही है। लग्नेश शुक्र स्व राशि में बुध व राहु से युत एवं मंगल से दृष्ट है। चन्द्र व गुरु में आपसी राशि परिवर्तन का योग है। पिता पुत्र रवि व शनि एक साथ हैं। दोनों त्रिकोण भावों में पाप ग्रह स्थित हैं। उपरोक्त ग्रह परीक्षणानुसार वर्ष में समुद्री तटवर्ती क्षेत्रों पर वायुवेग के साथ प्रलयंकारी वर्षा रहेगी। मैदानी क्षेत्रों में कहीं वर्षा की अल्पता तथा विशेष भाग पर पर्याप्त वर्षा होगी। बुध शुक्र का योग वर्षा कारक है। पश्चिमी भागों में खण्ड वर्षा होगी। देश के महाराष्ट्र-कर्नाटका-तामिलनाडु-उड़ीसा-बंगाल-आसाम-मेघालय-अरुणाचल एवं बिहार प्रांतों में वायुवेग तेज तथा अतिवर्षण से भूस्खलन, यातायात मार्गों में अवरोध तथा फसलों को हानि होगी। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर आदि पर्वतीय क्षेत्रों पर शरद काल समय में हिमपात व भूकम्पादि उपद्रव हों एवं पर्वत श्रृंखलाओं के विखण्डन कारक योग हैं। [illegible] दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि प्रांतों में कहीं पर्याप्त वर्षा व कहीं कहीं खण्ड वर्षा होगी। पैदावार मध्यम प्राय: [illegible]

आर्द्रा रवि प्रवेश कुण्डली

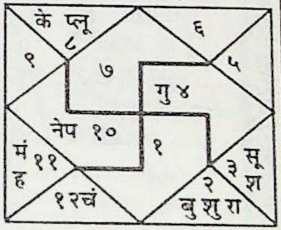


CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

ग्रहण मोक्ष- ता० ९ नवम्बर प्रातः ४.३५ बजे
ग्रहण का पर्वकाल ३ घंटा ३३ मिंट है।

पर्वतीय क्षेत्रों पर शरद काल समय में हिमपात व भूकम्पादि उपद्रव हों एवं पर्वत श्रृंखलाओं के विखण्डन कारक योग हैं। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात आदि प्रांतों में कहीं पर्याप्त वर्षा व कहीं कहीं खण्ड वर्षा होगी। पैदावार मध्यम प्राय: रहकर कृषक वर्ग में सन्तोष अभिवृद्धि बढ़ेगी।



# वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

परिलेखकर्ता —अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले द्वारा लाइट मशीनरी, चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर (म. प्र.)-४७४०११ एस.टी.डी.-०७५१ फोन : पी.पी.-३४०७२२

**नोटः व्यापार में लाभ-हानि की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।**

## जनवरी २००३ ई. JANUARY

१ जनवरी २००३ से २१ जनवरी तक बड़ी इलायची ९९९, कालीमिर्च, गुवार १५० की तेजी जोरदार तूफानी तेजी मगर २५ दिसम्बर २००२ से ११ जनवरी २००३ तक सोयाबीन, डी.ओ.सी. ५०५, पिपरमेंट, गुड़, कपूर में मंदी आ सकती है। पानी वर्षा हो सकती है। ११ जनवरी से २७ जनवरी २००३तक अरहर १५० की मंदी मगर हल्दी १५०, काबली चना बादाम ७०२ में तेजी नारियल तेल में तूफानी तेजी आ सकती है। २७ दिसम्बर २००२ से २७ जनवरी २००३के मध्य पिपरमेंट में अच्छी तेजी आ सकती है।

१५ जनवरी से ५ फरवरी तक, काबली चना ९००, बाजरा ४५, बड़ी इलायची ७०७ की तेजी, खोपरा गोला, गेहूं, मूंगफली तेल में एक अच्छी तेजी आ सकती है। १५ जनवरी २००३ से २५ नवं. २००३तक अरण्डी तैल, काली मिर्च ७०० की तेजी, केसर, पिस्ता में अच्छी तेजी आ सकती है। ११ जनवरी २००३ से ५ फरवरी तक चना, मसूर, जीरा, अरहर, किसमिस, इमली में जोरदार मंदी आ सकती है।

२१ से ३१ जनवरी तक, सौंफ, लौंग, जीरा में मंदी आ सकती है। २७ जनवरी २००३ से ७ अप्रैल तक, लौंग में अच्छी तेजी बन सकती है। (बी-७वाई) १८ जनवरी २००३ से १ फरवरी के बीच फली तेल में ५९, सरसों २५० की तूफानी मंदी आ सकती है। १२ जनवरी २००३ को सूर्य बुध की इनफेरियर युति होगी। (६६५डी) १५ अक्टूबर २००२ से ३ दिसम्बर के बीच ए.सी.सी. रिलाइंस, रोल्टा, इनफोसिस शेयर्स में भारी तेजी आई तो ३ दिसम्बर से ८ जनवरी २००३ तक बी.एस.ई. (बी) १६ जन. से ११ मार्च के बीच सरसों तेल में अच्छी मन्दी बनें तो आगे जोरदार तेजी आ सकती है। इन्डेक्स में ३९९-५९९ पोइन्ट की जोरदार मंदी आ सकती है। अथवा ये मंदी २९ जनवरी २००३ तक नीचे भाव बना कर आगे ११-२१ दिन में भयंकर तेजी आवेगी।

**चांदी सोना के स्पेशल चांस**—नीचे कुछ चांस लिखे जा रहे हैं जो बहुत महत्वपूर्ण हैं। २० दिसम्बर २००२ यहाँ डेढ़ या एक महीने पहले से तेजी आ कर ऊंचे भाव बने हों तो आगे ढाई या ३ महीने में चांदी में ५०० की तेजी आवेगी। (बी) २० दिसम्बर २००२ के आसपास चांदी सोना के नीचे भाव बनें तो आगे तेजी आवेगी। २० दिसम्बर २००२ से १ मार्च २००३ चांदी में १५०-७७७ की भयंकर तेजी बन सकती है तो बाद में मंदी आवेगी। सन् २००३-२००४ के मध्य किस वस्तु में दूने, किस वस्तु में आधे, किस में २ से तीन गुने होंगे वो जानने के लिए तेजी मंदी चांस हेतु ग्राफिकल सदस्य बनें। फोन: ०७५१-५४०३८९ पी.पी., ३३४६७५, ३६७१८२, ३६६५१८ पर सम्पर्क करें।

## फरवरी-२००३ FEBRUARY

१ फरवरी २००३ से ११ फरवरी तक, अरहर ५५, मसूर ४५ की तेजी तो उड़द-मूंग में मंदी आ सकती है। २५ जनवरी से ११ फरवरी तक, हल्दी ७०, जीरा २५०, बाजरा ५० तेजी, गुड़ में तेजी तो सुपारी, पोस्तादाना, तिल-तेल में ५६० की मंदी आ सकती है। १२ फरवरी से २७ फरवरी तक मसूर, चना, अरहर में मंदी। राजमां, काबली चना में मंदी आ सकती है। २० फरवरी से ७ मार्च २००३ तक गुड़, चीनी, अरहर, चांदी में १५५ की तेजी आ सकती है। १८ फरवरी से ३ मार्च तक अरण्ड तेल २५०, पिपरमेंट २५ मंदी तो पीतल, तांबा प्लेट में तेजी आ सकती है। २३ फरवरी से ७ मार्च तक मोम, बड़ी इलायची ११००, चांदी २१५ की तेजी, तिल, तेल २५०, काबली चना ५०६ की तेजी, साथ में गेहूं, चावल, मक्का में तेजी आ सकती है। १५ फरवरी से २० फरवरी तक, देशी घी, बादाम, लौंग, जावित्री, जई में अच्छी तेजी आ सकती है। ३ फरवरी २००३ से २१ फरवरी तक ए.सी.सी., रिलाइन्स, विप्रो, नीट, जे.पी. आदि में अच्छी तेजी आ सकती है। तो ३ मार्च तक शेयर्स में मंदी चलेगी। (बी-७) १६ जन. से ११ से मार्च के बीच सरसों, तिल में अच्छी मन्दी बने तो आगे जोरदार तेजी आ सकती है।

## मार्च-२००३ MARCH

३ मार्च २००३ से १५ मार्च तक अरहर, उड़द, बाजरा, मक्का, बिनौला तेल ५०, सोयाबीन डी.ओ.सी. ५०६ की तेजी, इसके अलावा राजमा ५०६, छोटी इलाइची १५, बादाम, अरण्डी तेल ७०, मसूर में १५०-२५० की तेजी आ सकती है। २० फरवरी से ५ अप्रैल तक प्याज, इमली में जोरदार मंदी, मगर लौंग, राजमां, कालीमिर्च में तेजी आवेगी। ३ मार्च २००३ से २ अप्रैल तक शेयर्स में अच्छी तेजी आवेगी। २ अप्रैल २००३ से १९ अप्रैल तक अच्छी मंदी। फिर भी जैसी लाइन मकड़े वैसा ही व्यापार करें। २१ अप्रैल से २३ मई तक अच्छी तेजी आ सकती है। बादामगिरी, छोटी इलाइची में अच्छी तेजी आ सकती है। २० फरवरी से २० अप्रैल तक मेवा-बादाम, किसमिस, उड़द, मूंग में जोरदार तेजी आ सकती है। १ मार्च से ११ मार्च तक गेहूं में तेजी आ सकती है। (सी) २७ मार्च से ५ अप्रैल तक जोरदार मंदी आ सकती है। २२ मार्च २००३ को सूर्य बुध की सुपिरियर युति होगी। २१ मार्च से ११ अप्रैल या १९ अप्रैल तक सरसों, अरहर, चना १५०-२५० की तेजी आवे तो आगे ९ या १९ अप्रैल तेलों में भयंकर मंदी का दौर चल सकता है। २५ फरवरी २००३ से २१-४-२००३ के बीच शेयर्स मार्केट में भयंकर मंदी चल सकती है। बाजार लाइन जैसा व्यापार करें। व्यापार में जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। १७ मार्च सोमवार को होलिका दहन होगा। २ अप्रैल २००३ बुधवार सम्वत् २०६० चालू होगा।

## अप्रैल-२००३ APRIL

२१ मार्च २००३ से ५ अप्रैल के बीच छोटी इलाइची ६१ रुपये तक तेजी तो जौ ६५, चांदी २५०, देशी रुई, बादाम २००, लौंग ७७ में जोरदार तेजी आवे-आगे १०-१५ दिन में निकिल प्लेट, गेहूँ, सोना में अच्छी तेजी तो किशमिस, गोला तेल २५०-५६० की धमाकेदार मंदी आ सकती है। २५ मार्च से ११ अप्रैल तक, लहसुन-प्याज, चावल में ५६, ईसबगोल ३९ की जोरदार तेजी तो राजमां, काबली चना ५५१, पिपरमेंट में मंदी का झटका लग सकता है। ५ अप्रैल से २१ अप्रैल तक, निकिल प्लेट, एल्यूमीनियम में भारी तेजी आवेगी। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। २ अप्रैल २००३ से २५ अप्रैल तक सोयाबीन ५००, हल्दी ५०६, जूट, बारदाना में तेजी, अजवाइन, उड़द ३६० की जोरदार तेजी चल सकती है। २१ अप्रैल से ३० अप्रैल तक, पामोलिन तेल-सरसों तेल २५०, लाल मिर्च ७७७, जीरा १०९९ की धमाकेदार मंदी आ सकती है। यहाँ सरसों खली-मूंगफली खली में ५००-७०० की जोरदार तेजी आ सकती है। २१ अप्रैल से ५ मई तक, अमचूर ९९९, छोटी इलाइची ७७, किशमिश ३ हजार, सौंफ ७७९ की तेजी साथ में सौंठ ५९९, धनियाँ ७०२ की तेजी, इसके अलावा उड़द, मूंग में अच्छी तेजी आ सकती है। तो पिपरमेंट में मंदी आ सकती है। सरसों, अरहर जब भी २७ दिन की तेजी के उबाल में बेचना, चूकना नहीं दान पुण्य धर्म करते रहें।

**शेयर्स मार्किट के स्पेशल चांस**—नीचे शेयर मार्किट के खतरनाक व खास चांस प्रस्तुत किए जा रहे हैं। नोट-१. वैसे तो इन

शेष पृष्ठ २११ पर...

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# ☆ विक्रम संवत् २०६० शाके १९२५ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ☆

## समय शुद्धिः

**शुक्र अस्तः**-इस वर्ष संवत् २०६० वि० में श्रावण कृष्णा द्वादशी शनिवार दिनांक २७ जुलाई २००३ ई० से आश्विन शुक्ल नवमी शनिवार दिनांक ४ अक्टूबर २००३ ई० तक शुक्र पूर्वास्त रहेगा।

**गुरु अस्तः**-इस वर्ष संवत् २०६० वि० में श्रावण शुक्ला द्वादशी शनिवार दिनांक ९ अगस्त २००३ ई० से भाद्रपद शुक्ला नवमी गुरुवार दिनांक ४ सितंबर २००३ ई० तक गुरु पश्चिमास्त रहेगा।

**धनु राशि में सूर्य ( मलमास )**:-पौष कृष्ण सप्तमी मंगलवार दिनांक १६ दिसंबर २००३ ई० से माघ कृष्णा ७ बुधवार दिनांक १४ जनवरी २००४ ई० तक।

**होलाष्टकः**-फाल्गुन शुक्ला अष्टमी शनिवार दिनांक २८ फरवरी २००४ ई० से फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा शनिवार ६ मार्च २००४ ई० तक।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गरु-शुक्र के अस्त काल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्व काल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए तदनुसार ही मुहूर्त्तादि लिखे गये हैं।

**नोटः**-नीचे लिखे विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं वे विवाह मुहूर्त्त भी लिखे गये हैं। यहाँ क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

## सिंह राशिस्थ गुरु (सिंहसठ) विचार

सिंह राशि पर गुरु का गोचर भ्रमण होने पर विवाह आदि मांगलिक कामों में शास्त्रों में वर्जित लिखा है।

यथा - उद्यान चूड़ा व्रत बंध दीक्षा विवाह यात्रा च वधु प्रवेशः।
तड़ाग कूप त्रिदश प्रतिष्ठां बृहस्पतौ सिंहगते न कुर्यात्॥

अन्यऽपि च - शांतिकं पौष्टिकं यात्रा प्रतिष्ठा विवाह कर्मणे ।
न कुर्यात्सर्वमांगल्यं सिंहस्थे बृहस्पतौ॥

इसी संदर्भ में प्राचीन विद्वानों ने परिहार स्वरूप इस प्रकार लिखा है। यथा-

गोदावर्युत्तरे भागे भागीरथ्याश्च दक्षिणे। विवाहादि न कर्त्तव्य सिंहस्थे बृहस्पतौ।
मघादि पंच पादेषु गुरु सर्वत्र निन्दितः। गंगा गोदान्तरे हित्वा शेषांषु न दोष कृत्॥
मेषेऽर्के सन्वतोद्वाहौ गंगागोदान्तरेऽपि च। सर्वः सिंहः गुरुर्वर्ज्यः कलिंग गौड़ गुर्जरे॥

परिहार वाक्यानुसार गंगा के उत्तरी भाग व गोदावरी के दक्षिण में विवाहादि हेतु सिंहस्थ गुरु दोष नहीं माना गया है। मघा नक्षत्र के ४ चरण व पूर्वा फाल्गुनी १ चरण तक सभी स्थानों पर वर्जित माना है शेष चरणों में दोषकारक नहीं हैं। मेष में सूर्य आने पर सिंहस्थ गुरु रहते हुए भी गंगा गोदावरी मध्य में विवाहादि मांगलिक कार्य किये जाने का दोष नहीं है यद्यपि कलिंग, गौड़ व गुर्जर देशों में वर्जित है। अतः इस वर्ष परिहार वाक्यों का अनुसरण करते हुए विवाहादि मुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।

## अथ शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | **चैत्र शुक्ल पक्षः** |
| १२ | सोम | १४ | अप्रैल | उ.फा. | रे० ७ ऽसूश॥ऽशु॥ऽ। गोधूलि वेलायां सायं |
| १२ | सोम | १४ | अप्रैल | उ.फा. | रे० ८ ऽसूश॥ऽशु॥॥ लग्न रात्री कुंभ २७/९ से २८/२९ तक। लग्न मीन रात्री २८/२९ से २९/५८ तक। |
| १५ | बुध | १६ | अप्रैल | चित्रा | रे० ७।ऽ।ऽ शु।ऽअग्नि।ऽ॥ गोधूलि वेलायां, ल. कुंभ रात्री २६/५४ से २८/२२ तक (राहु दान) ल० मीन रात्री २८/२२ से २९/५१तक। |
| | | | | | **वैशाख कृष्ण पक्षः** |
| १ | गुरु | १७ | अप्रैल | स्वा. | रे० ७॥॥ ऽसू।ऽऽ।ल० कुंभ, रात्री २६/५० से २८/१८ तक (राहु दान)। |
| ४ | रवि | २० | अप्रैल | मूल | रे० ६॥॥ऽश ऽचौर ऽऽ।लग्न कुंभ रात्री २६/३८ से २८/६ तक। लग्न मीन रात्री २८/६ से २९/३५ तक (राहु दान)। |
| ५ | सोम | २१ | अप्रैल | मूल | रे० ६॥॥ऽश।ऽऽ।ऽ गोधूलि वेलायां (दग्धादोष-आव.) |
| ७ | बुध | २३ | अप्रैल | श्रव. | रे० ६ ऽशु ऽ॥ऽगु॥ऽ॥ लग्न कुंभ रात्री २६/२६ से २७/५४ तक (राहुदान) लग्न मीन रात्री २७/५४ से २९/१९ तक (तिथि क्षयः) |
| १२ | सोम | २८ | अप्रैल | उ.भा. | रे० ७।ऽऽशु॥॥ऽ॥ लग्न कुंभ रात्री २६/६ से २७/३४ तक (राहुदान)। |
| १३ | मंगल | २९ | अप्रैल | रेव. | रे० ८॥॥ऽ चौर ऽ॥। लग्न कुंभ रात्री २६/२ से २७/३० तक (राहुदान-रिक्तातिथि) आवश्यके। |
| | | | | | **वैशाख शुक्ल पक्षः** |
| ३ | रवि | ४ | मई | मृग. | रे० ८॥ऽश॥ऽ अग्नि॥॥ लग्न कुंभ रात्री २५/४१ से २७/९ तक(राहुदान) लग्न मीन रात्री २७/९ से २८/३४ तक। |
| ११ | सोम | १२ | मई | हस्त | रे० ८॥॥ऽ॥॥ऽ लग्न मीन रात्री २६/३८ से २८/३ तक। लग्न मेष रात्री २८/३ से २९/४३ तक (दग्धादोष)। |
| १२ | मंगल | १३ | मई | चित्रा | रे० ८ऽसू॥॥ऽअग्नि॥॥ ल० मीन रात्री २६/३४ से २७/५९ तक। |
| १३ | बुध | १४ | मई | चित्रा | रे० ८ ऽसू॥॥ऽअग्नि॥॥ ल० सिंह मध्या;न १२/४ से १४/२२ तक(मासान्त दोष) आवश्यके। |
| | | | | | **ज्येष्ठ कृष्ण पक्षः** |
| ३ | रवि | १८ | मई | मूल. | रे० ८॥॥ऽश॥॥ऽ लग्न कुंभ रात्री २४/४७ से २६/१५ तक ल० मीन रात्री २६/१५ से २७/४० तक(शनिदान) लग्न मेष रात्री २७/४० से २९/२० तक (दग्धा दोष) आवश्यके। |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

में विवाहादि मांगलिक कार्य किये जाने का दोष नहीं है [illegible]
अतः इस वर्ष परिहार वाक्यों का अनुसरण करते हुए विवाहादि मुहूर्त्त दिये जा रहे हैं।

... से २७/४० तक(शनिदान) लग्न मेष रात्री २७/४० से २९/२० तक (दग्धा दोष) आवश्यके।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| ५ | मंगल | २० मई | श्रवण | रे॰ ९।।।।।।।ऽ। लग्न मेष रात्री २७/३२ से २९/१२ तक। |
| ७ | गुरु | २२ मई | धनि. | रे॰ ६ ऽ।।ऽशु ऽ।।ऽ।। गोधूलि वेलायां सायं (पादवेधेन दोषऽभावः)। |
| ११ | सोम | २६ मई | रेव. | रे॰ ८।।।।ऽअग्नि।ऽ।। गोधूलि वेलायां सायं लग्न कुंभ रात्री २४/१५ से २५/४३ तक। लग्न मेष रात्री २७/८ से २८/४८ तक। |
| १२ | मंगल | २७ मई | अश्वि. | रे॰ ९।।।।।।ऽ।। लग्न कुंभ रात्री २४/११ से २५/३९ तक। |
| १३ | बुध | २८ मई | अश्वि. | रे॰ ९।।।।।।ऽ।। लग्न सिंह मध्याह्न ११/१० से १३/२८ तक। |

**ज्येष्ठ शुक्ल पक्षः**

| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| ६ | शुक्र | ६ जून | मघा | रे॰ ७।।।। ऽमं।ऽऽ।। लग्न तुला दिवा १५/८ से १७/२८ तक (बुध शुक्र पू.)। लग्न मेष रात्री २६/२५ से २८/१ तक। गोधूलि वेलायां सायं। |
| ८ | रवि | ८ जून | उ.फा. | रे॰ ८।।।।।ऽऽ।। लग्न कन्या दिवा १२/४३ से १५/० तक। लग्न गोधूलि वेलायां सायं। ल. मकर रात्री २१/४१ से २३/२४ तक (गुरु ७ पूज्य)। ल. मीन रात्री २४/५१ से २६/१७ तक (शनि-चन्द्रदान)। |
| ९ | सोम | ९ जून | हस्त | रे॰ ६ ऽश ऽ।।ऽचौर ऽ।।। लग्न गोधूलि वेलायां सायं। ल. मकर रात्री २१/३७ से २३/२० तक (गुरु ७ पूज्य) ल॰ मीन रात्री २४/४७ से २६/१३ तक(शनि चन्द्रदान)। |
| ११ | बुध | ११ जून | स्वा. | रे॰ ८।।।।ऽरोगऽ।।। लग्न गोधूलि वेलायां सायं। लग्न मकर रात्री २१/३० से २३/१३ तक (गुरु ७ पूज्य-क्षय तिथि) |

**आषाढ़ कृष्ण पक्षः**

| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| ३ | मंगल | १७ जून | श्रवण | रे॰ ८।।।।ऽअग्नि।ऽ।। लग्न गोधूलि वेलायां सायं काले। ले॰ मीन रात्री २४/१७ से २५/४३ तक(सू.श.पूज्य) |
| ७ | शनि | २१ जून | उ.भा. | रे॰ ७ ऽमं।।।।।ऽ।ऽ ले॰ गोधूलि वेलायां सायं। ले॰ मकर रात्री २०/५१ से २२/३४ तक(गुरु ७ पूज्य) दग्धा। |
| ८ | रवि | २२ जून | उ.भा. | रे॰ ७ऽमं।।।ऽचौर।ऽ।। ले॰ कन्या दिवा ११/४९ से १४/६ तक (चन्द्र ७ पूज्य) रिक्ता.। |
| ८ | रवि | २२ जून | रेव. | रे॰ ८।।।।ऽचौर।ऽ।। ले॰ गोधूलि वेलायां सायं। ले॰ मकर रात्री २०/४७ से २२/३० तक (गुरु ७ पूज्य)। |
| ८ | रवि | २२ जून | रेव. | रे॰ ९।।।।।।ऽ।। ल॰ मेष रात्री २५/२३ से २६/५९ तक.। |
| ९ | सोम | २३ जून | रेव. | रे॰ ९।।।।।।ऽ।। ले॰ कन्या दिवा ११/४६ से १४/३ तक। |
| ९ | सोम | २३ जून | अश्वि. | रे॰ ९ऽशु।।।।।।।। ल॰ मकर रात्री २०/४४ से २२/२७ तक |
| १० | मंगल | २४ जून | अश्वि. | रे॰ ९।।।।ऽरोग।।।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |

**आषाढ़ शुक्ल पक्षः**

| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| ४ | गुरु | ३ जुला. | मघा | रे॰ ७।।।।ऽरोगऽऽ।। ले॰ मेष रात्री २४/४८ से २६/१६ तक। |
| ५ | शुक्र | ४ जुला. | मघा | रे॰ ७।।।।ऽरोगऽऽ।ले॰ कन्या दिवा ११/३ से १३/१९ तक। |
| ७ | रवि | ६ जुला. | हस्त | रे॰ ६ऽबु।।।।ऽअग्निऽऽ।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| ८ | सोम | ७ जुला. | चित्रा | रे॰ ८ऽगु।।।।।।ऽ।। ल॰ मेष रात्री २४/२४ से २६/०० तक। |
| ११ | गुरु | १० जुला. | अन. | रे॰ ९।।।।ऽ।।।।। ल॰ कन्या दिवा भद्रांत्तरे ११/४१ से १२/५५ तक। |
| ११ | गुरु | १० जुला. | अनु. | रे॰ ८।।।।ऽराहुऽचौर।।।। ल॰ गोधुलि वेलायां सायं। ल॰ मीन रात्री २२/४७ से २४/१२ तक। |

## पंजाब आदि द्विगर्त देशीय प्रान्तों हेतु विवाह मुहूर्त्ताः

(इन मुहूर्त्तों में भी सिंहस्थ गुरु के मघादि नक्षत्रों के ५ चरण व सिंह नवांश वर्जित किया गया है)

**श्रावण कृष्ण पक्षः**

| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| १ | सोम | १४ जुला. | उ.पा. | रे॰ ६।ऽ।।ऽसूशु।ऽऽ।। ल॰ कन्या दिवा १०/२३ से १२/३९ तक। ल॰ तुला दिवा १२/३९ से १४/५९ तक। |
| ६ | शनि | १९ जुला. | उ.भा. | रे॰ ८।।।।।ऽअग्नि।।।ऽ ले॰ कन्या दिवा १०/४ से १२/२० तक (दग्धादोष) आवश्यके। |
| ७ | रवि | २० जुला. | रेव. | रे॰ ९।।।।।।।ऽ।। ल॰ कन्या दिवा १०/२६ से १२/१६ तक। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| ८ | सोम | २१ जुला. | अश्वि. | रे॰८।।।।।ऽनृप.।ऽ।। ल॰ तुला दिवा १२/१२ से १४/३२ तक (चन्द्र ७ पूज्य) ल॰ मीन रात्री २२/४ से २३/२९ तक (सूर्य दान)। |

**कार्तिक कृष्ण पक्षः**

| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| १० | मंगल | २१ अक्टू. | मघा | रे॰ ९।।।।।।।ऽ।। ल॰ वृश्चिक दिवा ८/२९ से १०/४७ तक (मंगल दान)। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं (तिथि क्षय) आवश्यके। |
| १३ | गुरु | २३ अक्टू. | उ.फा. | रे॰ ९ऽशु।।।।।।।।। ले॰ वृश्चिक दिवा ८/२१ से १०/३९ तक (मंगल दान)। ल॰ मकर दिवा १२/४२ से १४/२५ तक। |

**कार्तिक शुक्ल पक्षः**

| ति. | वार | ता. मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|
| २ | सोम | २७ अक्टू. | अनु. | रे॰ ९।।।ऽराहु।।।।। ले॰ मकर दिवा १२/२७ से १४/१० तक। |
| ५ | बुध | २९ अक्टू. | मूल | रे॰ ७।।।।ऽअग्निऽऽ।। ल॰ वृश्चिक दिवा ७/५८ से १०/१६ तक (मंगलदान)। ल॰ मकर दिवा १२/१९ से १४/२ तक (रा.चं.पूज्य) |
| ७ | शुक्र | ३१ अक्टू. | उ.पा. | रे॰ ८।।।।ऽनृप।ऽ।। ल॰ वृश्चिक दिवा ७/५० से १०/८ तक(मंगलदान)। |
| ८ | शनि | १ नवं. | धनि. | रे॰ ८।ऽ।।।ऽचौर।।।। ले॰ कन्या रात्री २७/५ से २९/२१ तक (रिक्ता-आवश्यके)। |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ९ | रवि | २ | नवं. | धनि. | रे॰ ८।ऽ।।।ऽचौर।।।। ल॰ वृश्चिक प्रात: ७/४१ से ९/५९ बजे तक (रिक्ता-आवश्यके)। |
| १२ | बुध | ५ | नवं. | उ. भा. | रे॰ ९।।।।।।।ऽ। ल॰ वृश्चिक प्रात: ७/२९ से ९/४७ तक। ल॰ मकर दिवा ११/५१ से १३/३३ तक (गणितेन वेंति साम्याऽभाव:) |

गंगा के उत्तरी तथा गोदावरी के दक्षिणी भागों में किये जाने वाले विवाह मुहूर्त्ता: (यथा-गोदाया याम्य दिग्भागे भागीरथ्यास्तथोत्तरे। विवाहाद्यरिवलं कार्य सिंहस्थेऽपि बृहस्पतौ।।)

## मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष:

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | सोम | १७ | नवं. | मघा | रे ॰ ८ऽरा।।।।।ऽ।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| ११ | गुरु | २० | नवं. | हस्त | रे॰ ८ऽश।।।।।ऽ।। ल॰ मकर दिवा १०/५३ से १२/३५ तक (राहु पूज्य)। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |

## मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष:

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| २ | मंगल | २५ | नवं. | मूल | रे॰ ९।।ऽशु।।।।।। ले॰ कन्या रात्री २५/३१ से २७/४७ बजे तक (शुक्र युति)। |
| ३ | बुध | २६ | नवं. | मूल | रे॰ ९।।ऽशु।।।।।। ल॰ मकर दिवा १०/३० से १२/१२ तक (शुक्र युति)। |
| ४ | गुरु | २७ | नवं. | उ.षा. | रे॰ ६।ऽ।।।ऽ अग्नि ऽऽ।। ल॰ कन्या रात्री २५/२४ से २७/४० तक। |
| ५ | शुक्र | २८ | नवं. | श्रवण | रे॰ ८।।।।ऽअग्नि।ऽ।। ल॰ मीन दिवा १३/३२ से १४/५८ तक। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| ५ | शुक्र | २८ | नवं. | श्रवण | रे॰ ९।।।।।।ऽ।। ले॰ कन्या रात्री २५/२० से २७/३६ तक। |
| ६ | शनि | २९ | नवं. | धनि. | रे॰१०।।।।।।।।।ले॰मीन दिवा १३/२८ से १४/५४ तक। |
| ६ | शनि | २९ | नवं. | धनि. | रे॰ ९।।।।ऽनृप.।।।ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| ९ | मंगल | २ | दिसं. | उ.भा. | रे॰८।।।।।।ऽऽ।। ल॰ मकर दिवा १०/६ से ११/४९ तक (रिक्तातिथि-आवश्यके)। |
| ९ | मंगल | २ | दिसं. | उ.भा. | रे॰ ६।।।।ऽचौरऽऽ।ऽ ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। ल॰ कन्या रात्री २४/४ से २७/२१ तक। (दग्धा) |
| १० | बुध | ३ | दिसं. | उ.भा. | रे॰ ६।।।।ऽचौरऽऽ।ऽ ल॰ मकर दिवा १०/२ से ११/५४ तक (दग्धा)। |
| ११ | गुरु | ४ | दिसं. | अश्वि. | रे॰ ८।।ऽगुरु।ऽरोग।।।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। (चरण वेधात् गुरुवेधाभ्भाव:) |
| १२ | शुक्र | ५ | दिसं. | अश्वि. | रे॰ ९।।।ऽगुरु।।।।।। ल॰ मकर दिवा ९/५४ से ११/३७ तक (चरण वेधात् गुरु वेधाभ्भाव:) |
| १५ | सोम | ८ | दिसं. | रोहि. | रे॰ ९।।।।।।।ऽ।। ल॰ मीन दिवा १२/५३ से १४/१९ तक। |
| १५ | सोम | ८ | दिसं. | रोहि. | रे॰ ८।।।।ऽनृप।ऽ।। ल॰ कन्या [illegible] |

## पौष कृष्ण पक्ष:

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | मंगल | ९ | दिसं. | मृग. | रे॰ ६।ऽ।।ऽसूऽनृप।ऽ।। ल॰ मकर दिवा ९/३९ से ११/२२ तक। |
| १ | मंगल | ९ | दिसं | मृग. | रे॰ ७।ऽ।।ऽसू।।ऽ।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। ल॰ कन्या रात्री २४/३७ से २६/५४ तक। |

## माघ कृष्ण पक्ष: (सन् २००४ ई.)

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ | गुरु | १५ | जन. | चित्रा | रे॰ ८।।।।ऽमं।ऽ।।। लग्न कुंभ दिवा ८/५७ से १०/२५ तक (गुरु ७ पूज्य)। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| १२ | सोम | १९ | जन. | मूल | रे॰ ९।।ऽबु।।।।।। ल॰ वृश्चिक रात्री २६/३३ से २८/५० तक (बुध युति)। |

## माघ शुक्ल पक्ष:

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | गुरु | २२ | जन. | श्रवण | रे॰ ९।।।।।ऽ।।। ल॰ मीन दिवा ९/५७ से ११/२२ तक(शनि ४ दान)। ल॰ वृष दिवा १२/५८ से १४/५४ तक। ल॰ वृश्चिक रात्री२६/२१ से २८/३८ तक। |
| २ | शुक्र | २३ | जन. | धनि. | रे॰ ८।।।।ऽरोगऽ।।। ल॰ मीन दिवा ९/५३ से ११/१८ तक। ल॰ वृष दिवा १२/५४ से १४/५० तक। |
| ४ | रवि | २५ | जन. | उ. भा. | रे॰ ८।।।।ऽअग्नि।ऽ।। ल॰ वृश्चिक रात्री २७/३१ बाद से २८/२६ तक (गुरु ७ पूज्य)। |
| ५ | सोम | २६ | जन. | उ. भा. | रे॰ ८।।।।ऽअग्नि।ऽ।ल॰ मीन दिवा ९/४१ से ११/६ तक। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। |
| ५ | सोम | २६ | जन. | उ. भा. | रे॰ ९।।।।।।ऽ।। ल॰ वृश्चिक रात्री २६/५ से २८/२२तक। |
| ६ | मंगल | २७ | जन. | रेव. | रे॰ ९।।।।ऽनृप।।। ल॰ वृष दिवा १२/३८ से १४/३४ तक। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। ल॰ वत्रश्चिक रात्री २६/१ से २८/१८ तक। |
| १० | शनि | ३१ | जन. | रोहि. | रे॰ ७।।।।ऽरोग।ऽऽ। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। ल॰ वृश्चिक रात्री २५/४६ से २८/३ तक (गणितेन वेंतिसाम्याऽभाव:)। |
| ११ | रवि | १ | फर. | रोहि. | रे॰ ७।।।।ऽरोग।ऽऽ। ल॰ मीन दिवा ९/१८ से १०/४४ तक (शनि ४ पूज्य) |
| ११ | रवि | १ | फर. | मृग. | रे. ८।।।ऽबुध।।ऽ।।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। (पाद वेधेन बुध दोषाभ्भाव:) |

## फाल्गुन कृष्ण पक्ष:

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | शनि | ७ | फर. | मघा | रे॰ ७ऽरा।।।ऽसू।।ऽ।। ल॰ कुंभ प्रात: ७/२७ से ८/५५ तक। ल॰ वृष दिवा ११/५५ से १३/५१ तक। |
| १ | शनि | ७ | फर. | मघा | रे॰ ६ऽरा।।।ऽसूऽचौर।ऽ।। ल॰ गोधूलि वेलायां सायं। ल॰ वृश्चिक रात्री [illegible] से २७/३६ तक। |

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

१४ सोम ८ दिसं. रोहि. रे० ९।।।।।ऽ।। ल० मीन दिवा १२/५३ से १४/१९ तक।
१५ सोम ८ दिसं. रोहि. रे० ८।।।।ऽनृपाऽ।। ल० कन्या रात्री २४/४१ से २६/५८ तक।

१ शनि ७ फर. मघा रे० ६ऽऽ।।।ऽऽऽचौरऽ।। ल० गोधूलि वेलायां सायं। ल० वृश्चिक रात्री २५/१८ से २७/३६ तक।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| ३ | सोम | ९ | फर. | उ.फा. | रे० ९।।।।ऽरोग।।।। ल० गोधूलि वेलायां सायं। ल० वृश्चिक रात्री २५/१० से २७/२८ तक। |
| ४ | मंगल | १० | फर. | हस्त | रे० ६ऽ।।ऽशुऽ।।ऽ।। ल० गोधूलि वेलायां सायं। (चरण वेधात् शुक्रवेधाप्भाव:) |
| ५ | बुध | ११ | फर. | चित्रा | रे० ७।ऽ।।।।ऽऽ।। ल० मीन दिवा ८/३९ से १०/५ तक। |
| १० | रवि | १५ | फर. | मूल | रे० ७।ऽ।।।ऽअग्नि।ऽ।। ल० मकर रात्री २९/७ से ३०/५५ तक (मं-रा दान)। |
| ११ | सोम | १६ | फर. | मूल | रे० ७।ऽ।।।ऽअग्नि।ऽ।। ल० मीन दिवा ८/१९ से ९/४५ तक (शनि पूज्य) ल० गोधूलि वेलायां सायं। |

## फाल्गुन शुक्ल पक्षः

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| २ | रवि | २२ | फर. | उ.भा. | रे० ९।ऽ।।।।।।।। ल० वृश्चिक रात्री २४/१७ से २६/३५ तक। ल० मकर रात्री २८/३८ से ३०/२६ तक। |

## चैत्र कृष्ण पक्षः

| ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण |
|---|---|---|---|---|---|
| १ | रवि | ७ | मार्च | उ.फा. | रे० ६।ऽ।।ऽबु।ऽऽ।। ल० कर्क दिवा १४/१७ से १६/३४ तक। |
| २ | सोम | ८ | मार्च | हस्त | रे० ७ऽश।ऽ।।।ऽचौर।।।। ल० वृष प्रात: १०/४९ बाद से ११/५६ तक। ल० कर्क दिवा १४/१० से १६/३० तक। गोधूलि वेलायां सायं। ल० मकर रात्री २७/४५ से २९/२७ बजे तक। |

**विस्मृति दृष्टि: दोषश्चेत् क्षन्तव्यं सुधीभि:**

| मास | पक्ष | ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | लग्नादि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्ताः** | | | | | | | |
| चैत्र | शु. | ५ | सोम | ७ | अप्रैल | रोहिणी | अभिजित् |
| वैशा. | शु. | ११ | सोम | १२ | मई | उ.फा. | मिथुन |
| ज्येष्ठ | कृ. | ३ | रवि | १८ | मई | मूल | कर्क |
| ज्येष्ठ | शु. | ९ | सोम | ९ | जून | हस्त | कर्क |
| ज्येष्ठ | शु. | ११ | बुध | ११ | जून | स्वाति | सिंह |
| आषा. | शु. | ३ | बुध | २ | जुलाई | पुष्य | कन्या |
| **सिंहस्थ गुरु वशात् गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य मुहूर्त** | | | | | | | |
| माघ | शु. | ५ | सोम | २६ | जन. | उ.भा. | अभिजित् |
| फाल्गु | कृ. | ५ | बुध | ११ | फर. | चित्रा | मीन |

| मास | पक्ष | ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | लग्नादि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फाल्गु | शु. | २ | रवि | २२ | फर. | पू.भा. | अभिजित् |
| फाल्गु | शु. | ३ | सोम | २३ | फर. | उ.भा. | अभिजित् |
| फाल्गु | शु. | ५ | बुध | २५ | फर. | अश्वि. | मेष |
| चैत्र | कृ. | २ | सोम | ८ | मार्च | हस्त | अभिजित् |
| **देव प्रतिष्ठा मुहूर्ताः** | | | | | | | |
| वैशा. | शु. | ३ | रवि | ४ | मई | रोहिणी | अभिजित् |
| वैशा. | शु. | ६ | बुध | ७ | मई | पुनर्वसु | वृष |
| वैशा. | शु. | ७ | गुरु | ८ | मई | पुष्य | अभिजित् |
| वैशा. | शु. | ११ | सोम | १२ | मई | उ.फा. | कर्क |
| वैशा. | शु. | १३ | बुध | १४ | मई | चित्रा | वृष |
| ज्येष्ठ | कृ. | ७ | गुरु | २२ | मई | धनिष्ठा | अभिजित् |

| मास | पक्ष | ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | लग्नादि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **सिंहस्थ गुरु वशात् गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य मुहूर्त** | | | | | | | |
| माघ | शु. | ३ | शनि | २४ | जन. | शत. | अभिजित् |
| माघ | शु. | ५ | सोम | २६ | जन. | उ.भा. | अभिजित् |
| माघ | शु. | ११ | रवि | १ | फर. | रोहिणी | अभिजित् |
| माघ | शु. | १३ | बुध | ४ | फर. | पुनर्वसु | मीन |
| फाल्गु | कृ. | ५ | बुध | ११ | फर. | चित्रा | मीन |
| फाल्गु | कृ. | ६ | गुरु | १२ | फर. | स्वाति | मीन |
| फाल्गु | शु. | ६ | गुरु | २२ | फर. | उ.भा. | मिथुन |
| फाल्गु | शु. | ३ | सोम | २३ | फर. | उ.भा. | अभिजित् |
| फाल्गु | शु. | ५ | बुध | २५ | फर. | अश्वि. | मिथुन |
| **गृहारम्भ (भूमि पूजन) मुहूर्ताः** | | | | | | | |
| वैशा. | कृ. | १ | गुरु | १७ | अप्रैल | स्वाति | अभिजित् |
| वैशा. | शु. | ११ | सोम | १२ | मई | उ.फा. | कर्क |
| वैशा. | शु. | १३ | बुध | १४ | मई | चित्रा | सिंह |
| ज्येष्ठ | शु. | ९ | सोम | ९ | जून | हस्त | अभिजित् |
| ज्येष्ठ | शु. | ११ | बुध | ११ | जून | स्वाति | सिंह कन्या |
| **सिंहस्थ गुरु वशात् गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य मुहूर्त** | | | | | | | |
| कार्ति. | शु. | १२ | बुध | ५ | नवं. | उ.भा. | धनु |
| मार्ग. | शु. | ५ | शुक्र | २८ | नवं. | उ.पा. | धनु (१९/७तक) |
| मार्ग. | शु. | १० | बुध | ३ | दिसं. | उ.भा. | धनु |
| चैत्र | कृ | २ | सोम | ८ | मार्च | हस्त | अभिजित् |
| **अन्य गृहारम्भ मुहूर्ताः (अति आवश्यकता में)** | | | | | | | |
| वैशा. | कृ. | ९ | शुक्र | २५ | अप्रैल | धनि. | अभिजित् |
| वैशा. | कृ. | १० | शनि | २६ | अप्रैल | शत. | अभिजित् |
| वैशा. | शु. | ७ | गुरु | ८ | मई | पुष्य | अभिजित् |
| ज्येष्ठ | कृ. | ७ | गुरु | २२ | मई | धनि. | अभिजित् |
| ज्येष्ठ | कृ. | ११ | सोम | २६ | मई | रेवति | अभिजित् |
| ज्येष्ठ | शु. | ५ | गुरु | ५ | जून | पुष्य | मिथुन |

| मास | पक्ष | ति. | वार | ता. | मास | नक्षत्र | लग्नादि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **सिंहस्थ गुरु वशात् गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य मुहूर्त** | | | | | | | |
| कार्ति. | कृ. | १३ | गुरु | २३ | अक्टू. | उ. फा. | अभिजित् |
| कार्ति. | शु. | २ | सोम | २७ | अक्टू. | अनु. | अभिजित् |
| माघ | शु. | ३ | शनि | २४ | जन. | शत. | अभिजित् |
| माघ | शु. | ५ | सोम | २६ | जन. | उ. भा. | अभिजित् |
| फाल्गु | कृ. | ५ | बुध | ११ | फर. | चित्रा | मीन |
| फाल्गु | शु. | ३ | सोम | २३ | फर. | उ.भा. | अभिजित् |
| **गृह प्रवेश मुहूर्ताः** | | | | | | | |
| वैशा. | कृ. | ९ | शुक्र | २५ | अप्रैल | धनि. | अभि. (जीर्ण) |
| वैशा. | कृ. | १० | शनि | २६ | अप्रैल | शत. | अभि. (जीर्ण) |
| वैशा. | शु. | ७ | गुरु | ८ | मई | पुष्य | अभि. (जीर्ण) |
| वैशा. | शु. | ११ | सोम | १२ | मई | उ.फा. | कर्क |
| ज्येष्ठ | कृ. | ८ | शुक्र | २३ | मई | शत. | अभि. (जीर्ण) |
| ज्येष्ठ | कृ. | ११ | सोम | २६ | मई | रेवति | अभिजित् |
| **सिंहस्थ गुरु वशात् गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य मुहूर्त** | | | | | | | |
| माघ | शु. | १० | शनि | ३१ | जन. | रोहि. | मिथुन |
| फाल्गु. | शु. | ३ | सोम | २३ | फर. | उ.भा. | अभिजित् |
| **अन्य गृह प्रवेश मुहूर्ताः (अति आवश्यकता में)** | | | | | | | |
| वैशा. | कृ. | १ | गुरु | १७ | अप्रै. | स्वाति | अभि. (जीर्ण) |
| ज्येष्ठ | कृ. | ७ | गुरु | २२ | मई | धनि. | अभि. (जीर्ण) |
| ज्येष्ठ | शु. | ५ | गुरु | ५ | जून | पुष्य | मिथुन (जीर्ण) |
| **सिंहस्थ गुरु वशात् गंगा के उत्तर व गोदावरी के दक्षिण भाग में करने योग्य मुहूर्त** | | | | | | | |
| माघ | कृ. | ८ | गुरु | १५ | जन. | चित्रा | अभिजित् |
| माघ | शु. | ३ | शनि | २४ | जन. | शत. | अभि. (जीर्ण) |
| माघ | शु. | ५ | सोम | २६ | जन. | उ.भा. | अभिजित् |
| फाल्गु | कृ. | ६ | गुरु | १२ | फर. | स्वाति | कुंभ (जीर्ण) |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०६० विक्रमी (दिनांक २ अप्रैल २००३ से २० मार्च २००४ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर को सूर्य व कन्या को गुरु बल विचार सहित) बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं।

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के व लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अमुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए "सूर्य की पूजा" तथा कन्या के लिए "गुरु की पूजा" वाला समय भी लिखा गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कॉलम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उस राशि वाले लड़के लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें तथा बारहवें सूर्य व ४, ८ चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है। अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है। चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्त्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

| वर ( लड़का ) | वर के लिए पूज्य सूर्य | कन्या ( लड़की ) | लड़की के लिए पूज्य गुरु |
|---|---|---|---|
| मेषः-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २१, २३, मई-४, १२, १४, १८, २०, जून-६, ८, ९, ११, १७, २१, जुलाई-३, ४, ७, जनवरी-१५, १९, २२, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | १४ अप्रैल से १५ जून तक | मेषः-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २१, २३, मई-४, १२, १४, १८, २०, जून-६, ८, ९, ११, १७, २१, जुलाई-३, ४, ७ , नवंबर-१७, २०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११, १२, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | वर्षारंभ से ३० जुलाई तक |
| वृषः-मई-१८, २०, २६, २७, जून-६, ८, ९, ११, १७, २१, २२, २३, जुलाई-३, ७, नवंबर-१७, २०, २५, २७, २८, २९, दिसंबर-२, ३, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २६, २७, फरवरी-९, ११, १५, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | १५ मई से १५ जून तक<br>१६ नवं. से १६ दिसं. तक<br>१४ जनं. से १३ फर. तक | वृषः-अप्रैल-१४, १६, १७, २३, २८, २९, मई-१२, १४, १८, २०, २६, २७, जून-६, ८, ९, ११, १७, २१, २२, २३, जुलाई-३, ७, नवंबर-१७, २०, २५, २७, २८, २९, दिसंबर-२, ३, ५, जनवरी-१५,१९, २२, २६, २७, फरवरी-९, ११, १५, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | वर्षारंभ से वर्षान्त तक |
| मिथुनः-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २८, २९, मई-१२, १४, जून-२१, २२, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २५, २६, २७, २९, दिसंबर-२, ३, ५, फरवरी-१५, १६, २२, मार्च-७ शुभ हैं। | १५ जून से १६ जुला. तक<br>१३ फर. से १४ मार्च तक | मिथुनः-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २१, २८, २९, मई-१२, १४, १८, २०, २६, २७, २८, जून-६, ८, ११, २१, २२, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २५, २६, २७, २९, दिसंबर-२, ३, ५, जनवरी-१५, १९, २६, २७, फरवरी-७, ९, ११, १५, २२, मार्च-७ शुभ हैं। | ३० जुलाई से वर्षान्त तक |
| कर्कः-अप्रैल-१४, १६, २०, २१, २३, २८, २९, मई-४, १२, १४, १८, २०, २६, २७, २८, जून-६, ८, ९, नवंबर-१७, २०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-२, ३, ५, ८, ९, जनवरी-१९, २२, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११ शुभ हैं। | १६ नवं. से १६ दिसं. तक<br>१४ जन. से १३ फर. तक | कर्कः-अप्रैल-१४, १६, २०, २१, २३, २८, २९, मई-४, १२, १४, १८, २०, २६. २७, २८, जून-६, ८, ९, १७, २१, २२, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-२, ३, ५, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | वर्षारंभ से ३० जुलाई तक |
| सिंहः-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २१, २३, मई-४, १२, १४, १८, २०, २७, २८, जून-८, ९, ११, १७, २१, २३, जुलाई-७, जनवरी-१५, १९, २२, २७, ३१, फरवरी-१, ९, ११, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | १४ अप्रैल से १५ मई तक<br>१३ फर. से १४ मार्च तक | सिंहः-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २१, २३, मई-४, १२, १४, १८, २०, २७, २८, जून-८, ९, ११, १७, २१, २३, जुलाई-७, नवंबर-२०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-५, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २७, ३१, फरवरी-१, ९, ११, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | वर्षारंभ से वर्षान्त तक |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

१५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। ... २२, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



| वर ( लड़का ) | वर के लिए पूज्य सूर्य | कन्या ( लड़की ) | लड़की के लिए पूज्य गुरु |
|---|---|---|---|
| **कन्याः**-मई-१८, २०, २६, २७, जून-६, ११, १७, २१, २२, २३, जुलाई-३, ७, नवंबर-१७, २५, २७, २९, दिसंबर-२, ३, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ११, १५, २२ शुभ हैं। | १५ मई से १५ जून तक<br>१४ जन. से १३ फर. तक | **कन्याः**-अप्रैल-१६, १७, २३, २८, २९, मई-४, १४,१८, २०, २६, २७, जून-६, ११, १७, २१, २२, २३, जुलाई-३, ७, नवंबर-१७, २५, २७, २९, दिसंबर-२, ३, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ११, १५, २२ शुभ हैं। | ३० जुलाई से वर्ष पर्यंत |
| **तुलाः**-अप्रैल-१४, २०, २१, २८, २९, मई-१२, जून-२१, २२, २३, जुलाई-३, ४, नवंबर-१७, २५, २६, २७, २९, दिसंबर-२, ३, ५, ९, फरवरी-१५, १६, २२, मार्च-७ शुभ हैं। | वर्षारंभ से वर्षान्त तक | **तुलाः**-अप्रैल-१४, २०, २१, २८, २९, मई-१२, २०, २६, २७, २८, जून-६, ८, २१, २२, २३, जुलाई-३, ४, नवंबर-१७, २५, २६, २७, २९, दिसंबर-२, ३, ५, ९, जनवरी-१९, २०, २६, २७, फरवरी-७, ९, १५, १६, २२, मार्च-७ शुभ हैं। | वर्षारंभ से ३० जुलाई तक |
| **वृश्चिकः**-अप्रैल-१४, १६, २०, २१, २३, २८, २९, मई-४, १२, १४, १८, २०, २६, २७, २८, जून-६, ८, ९, नवंबर-१७, २०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-२, ३, ५, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११ शुभ हैं। | १५ मई से १५ जून तक<br>१६ नवं. से १६ दिसं. तक | **वृश्चिकः**-अप्रैल-१४, १६, २०, २१, २३, २८, २९, मई-४, १२, १४, १८, २०, २६, २७, २८, जून-६, ८, ९, १७, २१, २२, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-२, ३, ५, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २२, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११, १५, १६, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | ३० जुलाई से वर्षान्त तक |
| **धनुः**-अप्रैल-१४, १६, १७, २३, मई-४, १२, १४, २०, २७, २८, जून-६, ८, ९, ११, १७, २१, २३, जुलाई-३, ४, ७, जनवरी-१५, २२, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | १४ अप्रैल से १५ मई तक<br>१५ जून से १६ जुला. तक<br>१४ जन. से १३ फर. तक | **धनुः**-अप्रैल-१४, १६, १७, २३, मई-४, १२, १४, २०, २७, २८, जून-६, ८, ९, ११, १७, २१, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २०, २७, २८, २९, दिसंबर-५, ८, ९, जनवरी-१५, २२, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | वर्षारंभ से ३० जुलाई तक |
| **मकरः**-मई-१८, २६, २७, जून-६, ८, ९, ११, २१, २२, २३, जुलाई-३, ७, नवंबर-१७, २०, २५, २९, दिसंबर-२, ३, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ९, ११, १५, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | १५ मई से १५ जून तक<br>१४ जन. से १४ मार्च तक | **मकरः**-अप्रैल-१४, १६, १७, २८, २९, मई-४, १२, १४, १८, २६, २७, जून-६, ८, ९, ११, २१, २२, २३, जुलाई-३, ७, नवंबर-१७, २०, २५, २९, दिसंबर-२, ३, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २६, २७, ३१, फरवरी-१, ९, ११, १५, २२, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | ३० जुलाई से वर्षान्त तक |
| **कुंभः**-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २८, २९, मई-१२, १४, जून-२१, २३, २८, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २५, २६, २७, दिसंबर-२, ३, ५, ९, फरवरी-१५, १६, २२, मार्च-७ शुभ हैं। | १५ जून से १६ जुला. तक<br>१३ फर. से १४ मार्च तक | **कुंभः**-अप्रैल-१४, १६, १७, २०, २८, २९, मई-१२, १४, १८, २०, २६, २७, २८, जून-६, ८, ११, २१, २२, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २५, २६, २७, दिसंबर-२, ३, ५, ९, जनवरी-१५, १९, २६, २७, फरवरी-७, ९, ११, १५, १६, २२, मार्च-७ शुभ हैं। | वर्षारंभ से ३० जुलाई तक |
| **मीनः**-अप्रैल-१४, १६, २०, २१, २३, मई-४, १२, १४, १८, २०, २७, २८, जून-६, ८, ९, नवंबर-१७, २०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-५, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २०, २२, २७, ३१, फरवरी-१, ७, ९, ११ शुभ हैं। | १४ अप्रैल से १५ मई तक<br>१६ नवं. से १६ दिसं. तक | **मीनः**-अप्रैल-१४, १६, २०, २१, २३, मई-४, १२, १४, १८, २०, २७, २८, जून-६, ८, ९, १७, २३, जुलाई-३, ४, ७, नवंबर-१७, २०, २५, २६, २७, २८, २९, दिसंबर-५, ८, ९, जनवरी-१५, १९, २०, २२, २७, फरवरी-१, ७, ९, ११, १५, १६, मार्च-७, ८ शुभ हैं। | ३० जुलाई से वर्षान्त तक |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०६० विक्रमी

## मेष–चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल–शनि साढ़ेसाती की समाप्ति होगी। व्यवसायों, सामाजिक, पारिवारिक वातावरण में परिवर्तन होकर मानसिक हर्ष होगा। मास उत्तरार्द्ध में सूर्य जन्म राशि पर मनोबल सतेज कर राज्यादि कार्यों में सफलता कारक है। स्वास्थ्य में सुधार एवं गृहस्थ जीवन में सुख की वृद्धि रहेगी।

मई–स्त्री सन्तान का सुख, मान-सम्मान की वृद्धि, आय सम्बन्धि कामों में नवीन योजनाएं बन कर आर्थिक लाभ तथा नवीन व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ेगा। कर्मचारी वर्ग को पद वृद्धि के योग हैं। मास उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी।

जून–कानूनी कामों में सफलता, राज्याधिकारियों से सम्पर्क, भागीदारों, मित्रों व स्वजनों का सहयोग होकर व्यवसायिक कामों में आर्थिक प्रगति होगी। स्वयं में आत्म विश्वास की जागृति रहेगी। भौतिक सुख साधनों हेतु खर्च रहेगा।

जुलाई–मानसिक परेशानियां, भागदौड़ के काम विशेष तथा कानूनी कामों में रुकावटें, स्वयं के स्वास्थ्य में भी सामान्यत: न्यूनता होकर मनोद्वेग रहेगा। व्यवसायिक कामों में अवरोध और यात्रादि कामों में विशेष व्यय रहेगा। स्वयं को क्रोधाधिक्यता रहेगी।

अगस्त–राशि से पाचवें स्थान का गुरु गत मास बने तनाव को आकस्मिक ढंग से सुलझा कर स्वयं की प्रतिष्ठा वृद्धि कारक है। शत्रुवर्ग पर प्रभाव बढ़ेगा तथा पराजित होने से मनोबल की बढ़ोत्तरी होगी। दाम्पत्य सुख श्रेष्ट रहेगा। व्यवसायों में सुधार होगा।

सितम्बर–व्यवसायिक कामों में प्रगति, मान-सम्मान की वृद्धि तथा राज्यादिक कामों में परिश्रम विशेष रहकर सफलता रहेगी। जन्म राशि पर राहु का भ्रमण मासान्त में स्वास्थ्य में शिथिलता तथा मानसिक चिन्तन शीलता व भ्रमवृद्धि कारक रहेगा।

अक्टूबर–पत्नी स्वास्थ्य में कमी, यात्रा व भ्रमण के कार्य विशेष रहकर खर्च की अधिकता और रिश्ते-नातेदारों अथवा स्वजनों से सामान्य विवादकता रहेगी। आर्थिक आय के कार्य यथावत रहेंगे। भूमि भवन अथवा वाहन सुख बनेगा।

नवम्बर–मास प्रारम्भ में गुप्त शत्रुओं की चालें निष्फल होने का हर्ष होगा। आय के कार्य प्रगतिप्रद रहेंगे। कानूनी कामों अथवा उच्चाधिकारियों के सम्पर्कों में श्रेष्ठ सफलता रहेगी। मास उत्तरार्द्ध अष्टम सूर्य से पारिवारिक कलह तथा स्वयं को कुछ अस्वस्थता रहेगी।

दिसम्बर–दाम्पत्य जीवन में आंशिक संघर्ष रहकर मानसिक अस्थिरता रहेगी। व्यवसायादि कामों में रुकावटें और अनावश्यक खर्चे विशेष होंगे। मासान्त में राजकीय कार्य की सफलता का हर्ष तथा आर्थिक आय बन कर मनोबल की वृद्धि होगी।

जनवरी २००४ –मास में मिले-जुले फल रहेंगे। भागीदारों मित्रों व स्वजनों का सहयोग रहेगा। व्यवसायिक कामों में शिथिलता रहेगी। स्त्री सन्तान के स्वास्थ्य हेतु चिन्ताएं रहेंगी। राज्यादिक स्थानों पर प्रभाव व प्रतिष्ठा की बढ़ोत्तरी होगी।

फरवरी–व्यापारिक कार्य सामान्य रहकर अर्थोपार्जन मध्यम प्राय: रहेगा। मांगलिक व उत्सवादि कामों में सहयोग रहकर इज्जत वृद्धि होगी। दाम्पत्य जीवन में मधुरता व सुख वृद्धि रहेगी। स्वजनों का सहयोग रहेगा।

मार्च–नवीन व्यवसायिक कार्य की योजना बनकर सफलता मिलेगी। यात्रा कार्य होंगे तथा मान-सम्मान की वृद्धि होगी। वाहन खरीद योजना बनेगी। राजकीयादि कार्य गतिशील होने से व्यस्तता बढ़ेगी और मनोबल में सतेजता रहेगी।

## वृष–ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल–शनि द्वितीय स्थान पर धन लाभ के साथ खर्च की अधिकता कारक है। अत: आर्थिक संकट से मानसिक अस्थिरता रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। स्त्री सन्तान का सहयोग श्रेष्ट रहकर आत्म-विश्वास की दृढ़ता रहेगी। यात्रा योग रहे।

मई–शत्रु पराजित होंगे, राजकीयादि कामों में सफलता तथा आय-व्यय के कार्य समान प्राय: रहेंगे। कर्मचारी वर्ग को पदोन्नति सम्भावित है। सन्तान तथा पारिवारिक व्यक्तियों का सफल सहयोग रहेगा। दैहिक स्वास्थता उत्तम रहेगी।

जून–सामाजिक व पारिवारिक जनों के मध्य प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। व्यवसाय के कामों से आर्थिक लाभ होकर भी अनायास घरेलू खर्चों की अधिकता रहेगी। मनोबल उन्नत रहेगा। लम्बी यात्राएं लाभदायी रहेंगी। मासान्त में अस्वस्थता होगी।

जुलाई–शत्रु भय भीत होंगे। व्यापारिक कामों में आर्थिक लाभ बन कर मानसिक हर्ष रहेगा। स्त्री हेतु स्वास्थ्य चिन्ता होगी। स्वयं को भी देह शिथिलता तथा मासान्त में चिन्तन शीलता बढ़ेगी। आकस्मिक घरेलू कामों में व्यय वृद्धि रहेगी।

अगस्त–चतुर्थ स्थान पर गुरु का गोचर भ्रमण रिश्ते-नातेदारों से मिथ्या तनाव व विवाद कारक है। आय के कामों में रुकावटें तथा मांगलिक कामों में व्यस्तता बढ़कर खर्च तेज रहेगा। दाम्पत्य जीवन का सुख श्रेष्ठ रहेगा। स्वजनों का सहयोग रहेगा।

सितम्बर–बुद्धि चातुर्यता बढ़कर आर्थिक आय होगी। अनेक व्यक्तियों से सम्पर्क बनेगा। राज्य पक्ष इस मास निर्बल रहेगा। कानूनी कामों में बाधाएं रहेंगी। कर्मचारी वर्ग को इच्छा विहीन स्थानों पर स्थानान्तरण संभव है। जिससे चिंता बढ़ेगी।

अक्टूबर–आय के बनते कामों में अवरोध होने से मानसिक अशान्ति रहेगी। बारहवें स्थान का राहु भागदौड़ व यात्रादि कामों में विशेष व्यय कारक है। स्वयं व पत्नी स्वास्थ्य में भी मास उत्तरार्द्ध में स्वास्थ्य हीनता रहेगी। भावावेश की अधिकता रहेगी।

नवम्बर–स्वास्थ्य में सुधार, स्त्री सन्तान का सहयोग तथा उच्चाधिकारी वर्ग से सम्पर्क ... व्यापार में नवीन परिवर्तन होकर आर्थिक प्रगति व धन लाभ होगा। समाज व परिवार में सम्मान वृद्धि होगी।

दिसम्बर–व्यापारिक कामों में अनेक बाधा आकर अवरोध बनेंगे। जिससे आर्थिक चिन्ता रहेगी। रिश्ते-नातेदारों से सम्पर्कों में सुधार होगा। राजकीय कामों सफलता रहेगी। अन्तिम सप्ताह में अर्थोपार्जन के नये स्रोत बढ़ेंगे।

जनवरी २००४ –अष्टम सूर्य मास पूर्वार्द्ध में अस्वस्थता तथा मनोद्वेग कारक है। आलस्य वृद्धिवश कार्यावरोध व आर्थिक रुकावटें रहेंगी। मास उत्तर भाग में यात्रादि कार्य होकर धनार्जन व मान-सम्मान की वृद्धि होगी।

फरवरी–पारिवारिक जनों से मानसिक उद्वेग बढ़कर अस्थिरता रहेगी। यात्रादि कामों में रुकावटें तथा क्रोधाधिक्यता चलेगी। राजकीय कामों परेशानी एवं कानूनी रुकावटें बनने से चिन्ताओं का उद्गार रहेगा।

मार्च–नवीन व्यक्तियों से सम्पर्क बनकर राज्यादि कामों में सफलता बनेगी। शत्रुओं में भयवृद्धि होगी तथा व्यापारिक कामों में सुधार होकर धन लाभ होगा। सुखद यात्राएं होंगी। आकस्मिक स्थान परिवर्तन से हर्ष व मनोबल बढ़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma/Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

यन कर मानसिक हर्ष रहेगा। स्त्री हेतु स्वास्थ्य चिन्ता ...

नवम्बर-स्वास्थ्य में सुधार, स्त्री सन्तान का सहयोग तथा उच्चाधिकारी जनों से सम्पर्क होकर शत्रुओं पर विजय होगी। व्यापार

में सुधार होकर धन लाभ होगा। सुखद यात्राएं होंगी। आकस्मिक शुभ परिवर्तन से हर्ष व मनोबल बढ़ेगा।



## मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

**अप्रैल**-शनि साढ़े साती का द्वितीय भाग शत्रुओं द्वारा परेशानी, खर्च की विशेषता, शारीरिक अस्वस्थता एवं राजकीयादि कामों में रुकावटें होकर मानसिक अशांति कारक है। स्त्री सन्तानादि परिवार जनों से विवादकता रहेगी।

**मई**-व्यापारिक कामों में बाधाएं किन्तु श्रम विशेष से सामान्य अर्थ उपार्जन रहेगा। शत्रुओं का मानसिक भय एवं राज्यादि कामों में अवरोध रहने से मानसिक चिन्ता रहेगी। उदर विकार-अतिसार आदि अस्वस्थता बनेगी।

**जून**-स्वास्थ्य में सुधार, नये काम की योजना तथा नवीन सम्पर्क होकर कानूनी कामों में सुधार होगा। शत्रुवर्ग पर प्रभाव वृद्धि होगी। आंशिक अर्थोपार्जन होकर मनोबल उन्नत होगा।

**जुलाई**-खर्च की अधिकता अनायास ही रहेगी। श्रम व पराक्रम के द्वारा व्यापारिक कामों में सुधार होकर धन लाभ होगा। मासान्त में गृह-कलह बढ़कर भावावेश की वृद्धि होगी। यात्रादि कार्य विशेष रहेंगे।

**अगस्त**-मान-सम्मान की प्राप्ति, व्यापारिक कामों में प्रगति तथा नवीन आय के व्यवसाय की योजना बनकर सफलता बनेगी। उत्तरार्द्ध में मित्रों भागीदारों व स्वजनों से वाद-विवाद होकर अशांति बढ़ेगी।

**सितम्बर**-विवाद अथवा झगड़ा बनकर चोट लगने के योग हैं अतः स्वयं पर व्यवहारिक नियन्त्रण रखना श्रेष्ठ रहेगा। स्त्री स्वास्थ्य में न्यूनता होकर आय-व्यय व यात्रादिक भ्रमण कार्य विशेष प्रायः रहेंगे।

**अक्टूबर**-अदालती कामों में परेशानियां व मानसिक खिन्नता बढ़ेगी। आय के कामों में अवरोध तथा व्यय वृद्धि रहेगी। स्वयं, स्त्री, सन्तानादि घर के सदस्यों में बीमारियों के प्रकोप बढ़ने से चिन्ताएं बनी रहेंगी।

**नवम्बर**-आंशिक धनार्जन के कार्य बनेंगे किन्तु पारिवारिक जनों व स्वजनों के सहयोग की कमी रहेगी। मांगलिक व उत्सव के कामों में खर्च रहेगा। व्यवसायिक कामों में सुधार होने से सामान्य सन्तोष बनेगा।

**दिसम्बर**-आर्थिक लाभ की अपेक्षा खर्च की अधिकता रहेगी। शत्रु प्रबल होकर अनेक परेशानियां पैदा करेंगे। जिससे मनोद्वेग बढ़ा हुआ रहेगा। मासान्त में रिश्ते-नातेदारों के सहयोग से आत्म-विश्वास की वृद्धि होगी।

**जनवरी २००४**-व्यापारिक कामों में सुधार, उच्चाधिकारियों से सम्पर्क तथा पारिवारिक जनों के सहयोग का सुअवसर बनेगा। शत्रु वर्ग पराजित होगा। मनोत्साह की वृद्धि रहेगी। सम्मान व प्रभाव वृद्धि रहेगी।

**फरवरी**-व्यवसायिक कामों में प्रगति होकर आर्थिक लाभ रहेगा। भागीदारों अथवा मित्रों द्वारा धोखा होकर नुकसान होने के योग हैं अतः लेन-देन का कार्य सोच समझ कर करना हितकर रहेगा। दाम्पत्य सुख श्रेष्ठ रहेगा।

**मार्च**-कानूनी कामों में अड़चनें आकर मानसिक चिन्ता बढ़ेगी। आय कामों में अवरोध तथा स्वजनों से वाद-विवाद बनेगा। सन्तान स्त्री के स्वास्थ्य हेतु चिन्ता और व्यय वृद्धि रहेगी। मनोस्थिति अस्थिर रहेगी।

## कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

**अप्रैल**-शनि साढ़ेसाती का आरम्भ मानसिक चिन्ता, शारीरिक अस्वस्थता और अनावश्यक खर्च वृद्धि कारक है। व्यवसायिक कामों में अनेक अवरोध आने पर भी बुद्धि चातुर्यता से आर्थिक लाभ रहेगा। शत्रु पराजित रहेंगे।

**मई**-शत्रु पक्ष प्रबल रहेगा। कानूनी कामों में अड़चनों से मानसिक चिन्ताएं बढ़ेंगी। मास उत्तरार्द्ध में खर्च वृद्धि रहकर राजकीय कामों में विजय तथा सामाजिक, पारिवारिक जनों में मान-सम्मान की वृद्धि रहेगी।

**जून**-स्त्री सन्तानादि सुख श्रेष्ठ रहेगा। रिश्ते-नातेदारों के सम्पर्क से मनोहर्ष रहेगा। व्यवसायिक कार्य लाभदायक रहकर घर में मंगलोत्सव बढ़ेंगे। स्वास्थ्य शिथिलता मास में बार-बार बनने के योग हैं।

**जुलाई**-नवीन आय स्रोत बढ़ाने की योजना बनेगी। भूमि भवन अथवा वाहन लाभ के योग हैं। कानूनी कामों में विशेष परिश्रम होकर सफलता होगी। रिश्ते-नातेदारों का श्रेष्ठ सम्पर्क एवं सहयोग से आत्म-विश्वास में दृढ़ता रहेगी।

**अगस्त**-आकस्मिक शत्रुवर्ग प्रभावी होगा जिससे मनोमालिन्यता बढ़कर अशान्ति होगी। आय सम्बन्धी कामों में अवरोध, मिथ्या भागदौड़ व परेशानियां रहकर खर्च की अधिकता रहेगी। पत्नी स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी।

**सितम्बर**-मासारम्भ में पारीविारिक कलह एवं विवादकता रहेगी। प्रथम सप्ताह बाद व्यवसायिक कामों में परिवर्तन बनकर आर्थिक प्रगति होगी। शत्रु वर्ग पराजित होंगे तथा राजकीय कामों में सफलता का हर्ष रहेगा। सन्तानादि सहयोग उत्तम रहेगा।

**अक्टूबर**-पारीवारिक व सामाजिक व्यक्तियों में मान-सम्मान की वृद्धि एवं नवीन-मित्रों से सम्पर्क बढ़कर व्यवसायिक कामों में बढ़ोत्तरी होगी। दाम्पत्य जीवन का सुख प्राप्त होगा। मांगलिक व उत्सव कामों में धन व्यय होगा।

**नवम्बर**-मौसम परिवर्तन प्रभाव से स्वास्थ्य में न्यूनता होगी। मानसिक चंचलता बढ़कर अस्थिरता रहेगी। किन्तु व्यापारिक कार्य उत्तम रहकर अर्थ लाभ रहेगा। घरेलू स्वजनों से आन्तरिक तनाव व विवादकता रहेगी।

**दिसम्बर**-नये गुप्त शत्रु पैदा होकर व्यवसायादि कामों में बाधक होंगे। मन में उद्वेग व क्रोधाधिक्यता बढ़ेगी। कर्मचारियों को इच्छा विहीन स्थान पर स्थानान्तरण से मन में क्षोभ रहेगा। पत्नी को स्वास्थ्य हीनता चलेगी।

**जनवरी २००४**-आर्थिक हानि, मित्रों व भागीदारों से सतर्क रहना आवश्यक है। मास में स्वजनों द्वारा शत्रु तुल्य व्यवहार रहने के योग हैं किन्तु मास उत्तरार्द्ध में संतान स्त्री व उच्चाधिकारी सहयोग से मनोबल बढ़ेगा और अर्थ लाभ होगा।

**फरवरी**-व्यापार कामों में विशेष श्रम रहकर धन लाभ रहेगा। समान कार्यकर्त्ता व्यक्तियों से व्यवसायिक तनाव तथा रिश्ते-नातेदारों से सम्पर्क बनकर राजकीय सहयोग से मान-सम्मान व प्रभाव की बढ़ोत्तरी रहेगी। स्वयं को स्वस्थता रहेगी।

**मार्च**-शत्रु परास्त होंगे। घरेलू खर्च की वृद्धि की चिन्ता रहेगी। यात्रादि कामों में श्रम की अधिकता रहेगी। सामाजिक व पारिवारिक जनों के बीच सम्मान एवं प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। रिश्ते-नातेदारों का सहयोग रहकर व्यवसायों से अर्थ लाभ होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## सिंह- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

**अप्रैल**-बारहवें स्थान का गुरु रिश्तेदारियों व स्वजनों के सम्पर्कों में वैमनस्यता कारक है। व्यवसायादि कामों में अवरोध तथा नौकरी पेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों से खीझ रहने के योग हैं। स्वास्थ्य निर्बलता भी रहेगी।

**मई**-शत्रु बाधा बनकर बनते कामों में अड़चनें बनेंगी। वाद-विवाद मास में बार-बार होना संभव है। व्यापारिक कार्यों में विशेष श्रम से थोड़ा लाभ बन सकेगा। राजकीय, कानूनी कामों की चिन्ताएं बनी रहेंगी।

**जून**-पराक्रम बढ़कर शत्रु परास्त होंगे। उच्चाधिकारियों से श्रेष्ठ सम्पर्क बनेंगे। व्यवसाय के कामों में स्वजनों के सहयोग से आर्थिक लाभ होगा। भूमि भवन सम्बन्धी झगड़ों का निपटारा होकर मन में शांति बढ़ेगी।

**जुलाई**-शत्रुओं द्वारा चली गई चालें निष्फल होकर राजकीय कामों में सफलता बनेगी। आय कार्यों में प्रगति रहेगी। स्त्री सन्तानादि का सुख बढ़कर घर में मंगलोत्सव रहेगा। बूढ़े- बड़े घरेलू व्यक्तियों की सेवा का सुअवसर प्राप्त होगा।

**अगस्त**-धार्मिक व मंगलोत्सव कामों में रुचि बढ़ेगी। व्यवसाय के कामों से आर्थिक उन्नति होगी। द्वेष करने वाला पराजित होकर मित्र संज्ञा में बदलेंगे। स्त्री सन्तान व पारिवारिक जनों का सहयोग एवं सुख प्राप्त होगा।

**सितम्बर**-आय तथा व्यय समान प्राय: रहेगा। भूमि जमीन-जायदाद का लाभ रहेगा। रिश्तेदारों से मिलन रहकर आमोद-प्रमोद का समय रहेगा। मास के अन्तिम पक्ष में स्त्री एवं स्वयं को स्वास्थ्य हीनता उदर-विकार आदि के योग हैं।

**अक्टूबर**-रोजी-रोजगार के नये आयाम बनकर आर्थिक प्रगति होगी। पारिवारिक सदस्यों के स्वास्थ्य हेतु चिन्ता अवश्य रहेगी। राज्य कर्मी लोगों को पद वृद्धि रहेगी तथा स्व इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण का हर्ष रहेगा।

**नवम्बर**-आमदनी के कामों में अवरोध, समान कार्य-कर्त्ताओं से विरोध तथा खर्च कामों की अधिकता रहेगी। स्वयं स्त्री एवं पारिवारिक सदस्यों में प्राय: छुट-पुट स्वास्थ्य हीनता का दौर चलेगा। जिससे मानसिक उद्विग्नता रहेगी।

**दिसम्बर**-स्वयं व स्त्री स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी। गुप्त शत्रु पैदा होकर नये ढंग से अपनी चालें चलेंगे किन्तु खद का मनोबल तेज रहकर व्यवसायों में लाभ एवं शत्रु पराजित होंगे। मास में व्ययाधिक्य प्राय: विशेष रहेगा।

**जनवरी २००४** -यश, मान-सम्मान का उत्तम योग है। शत्रुओं पर स्वकीया बुद्धि चातुर्यता से प्रभाव बढ़कर पराजित होंगे। नवीन व्यवसाय योजना बनकर सफलता रहेगी। घर-परिवार के सदस्यों का सहयोग श्रेष्ट रहेगा।

**फरवरी**-लम्बी यात्राओं का संयोग बनकर अनावश्यक अपव्यय तथा परेशानि बनेगी। दुखद समाचार से मानसिक खिन्नता एवं कामों में रुकावटें रहेंगी। स्त्री सन्तान एवं बुजुर्गों के स्वास्थ्य हेतु बार-बार चिन्ताएं उभरेंगी।

**मार्च**-शत्रुजन प्रभावी होकर व्यवसायिक कामों में बाधक सिद्ध होंगे। मानसिक अस्थिरता व सामान्य अस्वस्थता रहेगी। मासान्त में मनोबल की वृद्धि होकर श्रेष्ठ अर्थोपार्जन होगा एवं शत्रु परास्त होंगे।

## कन्या-टो, पा, पी, पू, प, ण, ठ, पे, पो

**अप्रैल**-स्त्री सनतान का सुख उत्तम रहकर मनोहर्ष बढ़ा हुआ रहेगा। नवीन व्यक्तियों के सम्पर्क से व्यवसायिक कामों में सहयोग एवं लाभ होगा। राज्यादिक कामों में सफलता एवं उच्चाधिकारियों से श्रेष्ट सम्पर्क बनेगा।

**मई**-राज-कर्मचारियों को स्थान परिवर्तन एवं व्यवसायिक वर्ग को आय कामों में रुकावटें रहेंगी। आय की अपेक्षा खर्च कामों की अधिकता रहने से मानसिक चिन्ताएं बढ़ी हुई रहेंगी। स्वजनों से विवादकता के योग हैं।

**जून**-व्यापारिक कामों में विशेष परिश्रम रहकर सुधार होगा जिससे आर्थिक लाभ उत्तम बनेगा। रिश्तेदारों के आगमन से समाज व परिवार में मान-सम्मान की वृद्धि होगी। दाम्पत्य सुख की वृद्धि रहेगी।

**जुलाई**-राजकीय व कानूनी कामों में सफलता होकर शत्रुजन परास्त होंगे। स्वयं के आत्मविश्वास की वृद्धि होगी। स्वजनों का श्रेष्ठ सहयोग बन कर व्यापारिक कामों में प्रगति एवं अर्थ लाभ उत्तम होगा।

**अगस्त**-बारहवें स्थान का गुरु भाई-भतीजे तथा परिवार सदस्यों से वैमनस्य फलकारक है। स्वयं में भावावेश की वृद्धि रहेगी। घरेलू कलह व विवादकता वश मानसिक अस्थिरता एवं खिन्नता प्राय: मास भर रहेगी।

**सितम्बर**-व्यवहार में कटोरता जन्य स्थिति बनने के कारण अनायास शत्रुओं का उदय होगा। व्यापारिक कामों में अवरोध व बाधाएं बनेंगी। यात्रादि कामों में परेशानी एवं खर्च की विशेषता रहेगी।

**अक्टूबर**-राहु अष्टम स्थान पर चलेगा अत: स्वयं के स्वास्थ्य में गड़बड़ रहकर देह में शिथिलता रहेगी। अकारण ही स्वजनों से विवाद बनेंगे तथा व्यवसायादि आय के कामों में बाधाएं चलने से मानसिक उद्विग्नता प्रायश: रहेगी।

**नवम्बर**-सन्तान स्वास्थ्य में न्यूनता, यात्रादिक काम विशेष [illegible] वृद्धि [illegible] कामों में सुधार होकर आय होगी। मास उत्तरार्द्ध में शत्रुओं पर प्रभाव वृद्धि तथा राज्यादि कामों में सफलता रहेगी।

**दिसम्बर**-मांगलिक व उत्सव जन्य कामों में अभिरुचि बढ़कर खर्च रहेगा। स्त्री सन्तान का सहयोग व सुख प्राप्त होगा। रिश्ते-नातेदारों से मनमुटाव रहकर मानसिक अशांति मासान्त में होगी। मित्रों का सहयोग श्रेष्ट रहेगा।

**जनवरी २००४** -भ्रमण विशेष रहकर आर्थिक लाभ, राजकीय कामों में सुधार एवं पारिवारिक जनों का सहयोग रहेगा। मास पूर्वार्द्ध में लेनदेन के किसी काम में धोखा होने के योग हैं अत: सतर्क रहना लाभदायी रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

**फरवरी**-कामों व सामाजिक कार्यों में व्यस्तता एवं परिश्रम विशेष रहेगा। मन-इच्छित भौतिक सुख साधनों की उपलब्धि होगी। स्वयं में मनोबल वृद्धि रहेगी। रिश्ते-नातेदारों का आगमन व मेल न रहकर प्रशंसा वृद्धि रहेगी।

**मार्च**-अपव्यय के दुष्परिणाम स्वरूप आर्थिक संकट होकर मानसिक चिंता बढ़ेगी। लेन-देन के कामों में अव्यवस्थित स्थिति के कारण मनोबल में गिरावट रहेगी। कामों में अवरोध से आय में न्यूनता रहेगी। जन सम्पर्क फिर भी श्रेष्ट रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जुलाई-राजकीय व कानूनी कामों में सफलता होकर शत्रुजन परास्त होंगे। स्वयं के आत्मविश्वास की वृद्धि होगी। स्वजनों का

नवम्बर-सन्तान स्वास्थ्य में न्यूनता ... रहकर व्यय की वृद्धि रहेगी। व्यवसाय के कामों में सुधार होकर

... लेन-देन के कामों में अव्यवस्थित स्थिति ... मनोबल में गिरावट रहेगी। कामों में अवरोध से आय में न्यूनता रहेगी। जन सम्पर्क फिर भी श्रेष्ठ रहेगा।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## तुला-रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल-अष्टम राहु से शारीरिक निर्बलता चलेगी। आय व्यय के कामों में उत्तम सफलता रहकर आर्थिक लाभ रहेगा। भ्रमणादि कार्य विशेष रहेंगे। स्वजनों और मित्रों का सहयोग रहेगा। मासान्त में गुप्त शत्रुओं का उदय होकर किंचिद् परेशानियां होंगी।

मई-स्वास्थ्य में सुधार, निजी व्यक्तियों के सहयोग से व्यवसाय कामों में उत्तम सहयोग रहकर लाभ रहेगा। शत्रुओं पर विजय, राजकीयादि व कानूनी कामों में सफलता रहेगी। स्वयं का मनोबल सतेज होगा तथा परिश्रम विशेष से व्यापारिक उन्नति बनेगी।

जून-नवीन व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ेंगे। मंगलोत्सव कामों में खर्च की विशेषता रहेगी। व्यापारादि कार्य प्रगतिशील रहेंगे। नवीन आय स्रोत बढ़ाने की योजनाएं बनेंगी। दाम्पत्य सुख की वृद्धि रहेगी। मास उत्तरार्द्ध में अचानक होते कामों में बाधाएं आकर चिंता होगी।

जुलाई-व्यवसाय कामों में गिरावट से लेन-देन में अवरोध और पारिवारिक जनों से मिथ्या विवाद व तनाव से मानसिक अस्थिरता बढ़ेगी। राजकर्मचारियों पर उच्च अधिकारियों द्वारा दवाव व प्रताड़ना बढ़ेगी। पड़ौसियों से परेशानियां बढ़ेंगी।

अगस्त-राजकीय सहयोग बनकर मनोबल वृद्धि तथा व्यापार कार्यों में सुधार, मित्र वर्ग का पूर्ण सहयोग बनेगा। पुरानी दी गई रकमों के आगमन का हर्ष होगा। भूमि भवन अथवा वाहन सम्बन्धी वृद्धि की सफल योजना बनेगी।

सितम्बर-स्वयं के स्वास्थ्य में गड़बड़ी, स्त्री सन्तानादि के प्रति चिन्ताएं और खर्च की अधिकता का मनो-मस्तिष्क पर प्रभाव रहेगा। जबकि व्यापार आदि कार्य यथावत् रहकर आर्थिक लाभ श्रेष्ट रहेगा। साहसी स्थिति प्राय: बनी रहेगी।

अक्टूबर-व्यवसायिक कामों में विशेष व्यस्तता, स्वास्थ्य में सुधार तथा शत्रुजन परास्त होंगे। लग्नस्थ केतु राज्य कर्मचारियों को अति परिश्रम, उच्चाधिकारियों से मनोमालिन्यता तथा स्थान या आफिस परिवर्तन कारक है। जिससे मनोबल में गिरावट रहेगी।

नवम्बर-यात्रा व भ्रमण के कार्य ज्यादा रहेंगे। कोई भूमि भवन जन्य विवाद बन कर मानसिक उद्वेग बढ़ेंगे तथा स्वयं के स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी। व्यापारिक कामों में भी अड़चनें होंगी एवं लेनदेन में भूल वशात् हानि होने के योग हैं।

दिसम्बर-राजकीय सहयोग बनकर शत्रु जन भयभीत होंगे। व्यापार सम्बन्धी कामों में सामान्य सुधार होगा। पारिवारिक जनों का सहयोग एवं विशेष सम्मेलन होकर मनोबल की वृद्धि होगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

जनवरी २००४ -बिगड़े कामों में सुधार, मनोबल सुदृढ़ और व्यवसाय के कामों से आर्थिक लाभ बनेगा। परिवार में उत्सवादि मांगलिक कामों का आयोजन होगा जिसमें हर्षपूर्वक खर्च रहेगा। स्त्री सन्तान सुख उत्तम रहेगा।

फरवरी-शारीरिक परिश्रम की विशेषता रहकर आर्थिक लाभ श्रेष्ट रहेगा तथा नवीन आय कार्यों की योजना बनेगी। रिश्ते-नातेदारों के समागम से समाज एवं परिवार में यश-सम्मान की वृद्धि होगी। सन्तान कार्यों की प्रगति का हर्ष रहेगा।

मार्च-अर्थ लाभ के नये स्रोत बनेंगे। शत्रुवर्ग में भय एवं कानूनी कामों में सफलता रहेगी। स्वयं सामान्य उदर विकारादि स्वास्थ्य हीनता के योग हैं किन्तु मनोबल तेज रहेगा एवं कार्यक्षमता की वृद्धि रहेगी। दाम्पत्य सुख श्रेष्ट रहेगा।

## वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल-शनि का अष्टम भाव में भ्रमण स्वजनों, मित्रों तथा पारिवारिक जनों से कलह-विवाद एवं वैमनस्यता कारक है। शत्रु बाधा बन कर कामों में अवरोध और स्वयं के स्वास्थ्य में न्यूनता रहेगी। मानसिक अशान्ति का चक्र प्राय: मास भर रहेगा।

मई-स्त्री सन्तानादि के प्रति चिन्ताएं, यात्रादि कामों में परेशानी व हानि होने के योग हैं। कौटुम्बिक व्यक्तियों से अनायास विवाद किन्तु मासान्त में आर्थिक आय के कामों में सुधार बनकर आत्म विश्वास की वृद्धि होगी।

जून-आकस्मिक नवीन सम्पर्क बनकर आर्थिक आय के कामों में सुधार होगा। शारीरिक स्वस्थता बनेगी और भ्रमणादि कामों में विशेष परिश्रम होकर राजकीय व कानूनी कामों में सफलता बनेगी। स्वयं को मनोबल सतेज रहेगा।

जुलाई-साहसिक स्थिति उत्तम बनकर व्यवसायों में आर्थिक लाभ और स्वजनों के समागम से समाज व कुटुम्ब में यश सम्मान की बढ़ोत्तरी रहेगी। सन्तान के कामों में प्रगति तथा स्त्री सौख्य श्रेष्ट रहेगा। स्वास्थ्य में सामान्य न्यूनता रहेगी।

अगस्त-धन लाभ के योग बनते हुए बीच में रुकावटें होंगी। स्त्री एवं सन्तान के लिए स्वास्थ्य चिन्ता और आर्थिक खर्चा रहेगा। गुप्त शत्रुओं द्वारा अनेक चालें बनकर राजकीयादि कामों में परेशानियां बढ़ेंगी। मानसिक अस्थिरता रहेगी।

सितम्बर-आय व्यय में समानता रहेगी। राजकीय स्थिति अनुकूल रहेगी। मास उत्तरार्द्ध में व्यापारिक कामों में परिवर्तन होकर आर्थिक लाभ श्रेष्ठ होगा। शत्रुवर्ग परास्त होंगे। कार्यक्षेत्र व समाज में मान-सम्मान की बढ़ोत्तरी होगी।

अक्टूबर-घरेलू व्यक्तियों का सहयोग, रिश्ते-नातेदारों में सम्मान वृद्धि तथा घर में उत्सवादि मांगलिक कार्य रहेंगे। शत्रुओं पर प्रभाव वृद्धि तथा कानूनी कामों में सफलता बनकर मनोहर्ष बढ़ेगा। स्त्री सन्तानादि का सहयोग श्रेष्ठ रहेगा।

नवम्बर-शत्रु जन परास्त होंगे। स्वयं में मनोबल की जागृति होकर कार्य की क्षमता बढ़ेगी। व्यापारिक कामों में आर्थिक लाभ बढ़ेगा। स्त्री सन्तान सुख श्रेष्ठ रहेगा। कौटुम्बिक जनों में मान-सम्मान की वृद्धि रहेगी।

दिसम्बर-केतु के दुष्प्रभाव से अनावश्यक खर्चे की अधिकता रहेगी। स्वयं व स्त्री स्वास्थ्य में न्यूनता रहकर स्वयं को मनोद्वेग रहेगा। नवीन कार्य के लिए योजना बनकर असफल रहेगी तथा भागदौड़ के कामों में विशेषता रहेगी।

जनवरी २००४ -बुद्धि चातुर्य श्रेष्ट बनकर नवीन पुरुषों से सम्पर्क बनेगा। जिससे व्यवसायिक कामों में सहयोग होकर आर्थिक लाभ बनेगा। जमीन-जायदाद संबंधी कामों में विजय व सफलता मिलेगी। गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा।

फरवरी-अर्थ लाभ के कामों में प्रगति, समान कार्यकर्त्ताओं से सम्मान प्राप्ति व कुटुम्बिक लोगों से सुसम्पर्क बढ़ेंगे। मासान्त में तबियत में नरमी तथा घरेलू मांगलिक कामों तेज खर्च रहेगा। धार्मिक अभिरुचि बढ़ेगी।

मार्च-स्वयं के आत्म-विश्वास की वृद्धि रहकर सामाजिक कामों में अग्रता होगी। व्यापार स्थिति में तरक्की होकर आय की बढ़ोत्तरी रहेगी। राजकीय व कानूनी कामों में विजय एवं सफलता रहेगी। मानसिक स्थिति हर्ष पूर्ण रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल-गुरु अष्टम स्थान पर होने से कौटुम्बिक व रिश्तेदारों से मनमुटाव व विवादकता रहेगी। शत्रु बाधा बनकर आर्थिक आय के कामों में बाधा रहेगी। मानसिक उद्वेग एवं अशांति कारक योग है। जबकि स्त्री सन्तान का सहोयग श्रेष्ठ रहेगा।

मई-लड़ाई-झगड़े के वातावरण से मानसिक अस्थिरता, क्रोध वृद्धि एवं स्व कामों में रुकावटें रहेंगी। राज्य कर्मचारियों को उच्चाधिकारियों से तनाव तथा स्थानान्तरण सम्बन्धी क्षोभ रहेगा। घरेलू कलह प्रायश: चलेगी।

जून-नवीन मित्रों से सम्पर्क बढ़ेगा तथा उच्च वर्ग से सम्मेलन बनकर शत्रुओं पर विजय तथा कानूनी कामों में सुधार बनेगा। व्यापारिक कामों के नये आयाम बनकर आर्थिक लाभ के आसार बनेंगे। दाम्पत्य सुख उत्तम रहेगा।

जुलाई-शत्रु पराजित होंगे। स्वयं के मनोबल की वृद्धि होगी। व्यवसायिक कामों में सुधार होकर आय वृद्धि रहेगी। धार्मिक कामों में रूझान बढ़ेगा व घर में मंगलोत्सव बनकर हर्षोत्साह बढ़ेगा। संतान कार्यों में प्रगति होगी।

अगस्त-राजकीय स्थानों पर प्रभाव बढ़ेगा। शत्रुओं में भय वृद्धि तथा आय के कामों में प्रगति से आत्म-विश्वास बढ़ेगा। स्वजनों के बीच मान-सम्मान की वृद्धि होगी। भूमि भवन सम्बन्धी विवादों में सुधार होकर प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

सितम्बर-गृहस्थ कामों में विशेष परिश्रम व व्यस्तता रहेगी। रिश्ते-नातेदारों के समागम से मनो हर्ष बढ़ेगा तथा नवीन रिश्तेदारी बनेगी। आर्थिक आय के कार्य उत्तम चलेंगे तथा व्यय स्थिति भी तेज प्राय: चलेगी।

अक्टूबर-समान कार्य-कत्ताओं तथा शत्रु वर्ग पर प्रभाव की वृद्धि रहेगी। राजकीय कामों में सफलता एवं स्वजनों का सहयोग रहेगा। मासान्त में स्त्री सन्तानादि के स्वास्थ्य हेतु चिन्ताएं बढ़ेंगी व व्यय वृद्धि रहेगी।

नवम्बर-आय तथा व्यय प्रायश: समान रूप में रहेंगे। व्यापारिक शत्रुओं का उदय होगा। कर्मचारी वर्ग में कार्य व्यग्रता विशेष बढ़कर मानसिक खिन्नता बढ़ेगी। मास मध्य में मान-सम्मान चिन्ता रहेगी व मानसिक अस्थिरता बढ़ेगी।

दिसम्बर-आय के नये स्रोत बनते हुए कामों में रुकावटें बनेंगी। घरेलू भूमि जायदाद भवनादि के विवाद भी उभरेंगे किन्तु रिश्ते-नातेदारों का सहयोग होकर सुलझाने के योग हैं। स्त्री पक्ष सहयोग विशेष लाभदायी होगा।

जनवरी २००४ -व्यापारिक कामों में विशेष परिश्रम रहकर आशातीत लाभ होगा। पुराने लेन-देन के झंझट का निपटारा होगा। सन्तान पक्ष की प्रगति का मानसिक हर्ष बढ़ेगा। स्वजनों में यश-सम्मान उत्तम बनेगा।

फरवरी-शारीरिक स्वास्थ्य हीनता होकर देह में शिथिलता, व्यापार के कामों में कमी रहेगी। भागीदारों अथवा मित्रों से आर्थिक हानि अथवा धोखा होने के योग हैं। मास में उच्चाटन जन्य मानसिक स्थिति रहेगी।

मार्च-परिश्रम का उत्तम लाभ होने से मनोबल बढ़ेगा। स्वास्थ्य में सुधार तथा धैर्यशीलता बढ़कर शत्रुओं को गुप्त चालों से परास्त करने के योग हैं। नवीन व्यापारिक योजना बकर प्रगति होगी। स्वजनों का सहयोग बढ़ेगा।

## मकर- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल-भाई-बन्धुओं के सहयोग से व्यापारिक कामों में उन्नति होगी। स्वयं में आत्म-विश्वास की जागृति तथा स्वजनों के मध्य मान-सम्मान की वृद्धि होगी। बुद्धि चातुर्यता से अर्थोपार्जन श्रेष्ठ रहेगा। दाम्पत्य सुख श्रेप्ठ रहेगा।

मई-शत्रु वर्ग परास्त होंगे। कानूनी कामों में सफलता रहेगी। कर्मचारी वर्ग को पद वृद्धि का हर्ष रहेगा। पुराने बिगड़े कामों में प्रशंसनीय बनेगा। व्यवसायिक कामों में विशेष परिश्रम एवं व्यस्तता बनी रहेगी।

जून-धार्मिक कामों में रुचि बढ़ेगी। नवीन मित्रों के समागम से व्यापार कार्यों में तरक्की होगी। शीघ्रता करने की आदत पर नियंत्रण रखें जिससे लेन-देन कामों में कोई धोखा नहीं हो। सन्तान स्त्री सुख उत्तम रहेगा।

जुलाई-भ्रमण विशेय व यात्रादि कामों में परेशानियां बनेंगी। स्वयं के स्वास्थ्य में न्यूनता चलेगी किन्तु अर्थोपार्जन के कामों श्रेष्ठता रहेगी। पारिवारिक जनों के सहयोग से मनोबल उत्तम बढ़ा हुआ रहेगा।

अगस्त-आठवें स्थान पर गुरु का गोचर भ्रमण पारिवारिक सदस्यों व रिश्ते-नातेदारों से मानसिक खिन्नता व तनाव वृद्धि कारक है। स्वयं को क्रोध वृद्धि के साथ अस्थिरता रहेगी। खानपान व रहन-सहन में गड़बड़ियां बनेंगी।

सितम्बर-शत्रु बाधा का प्रकोप रहेगा। जबकि परिश्रम विशेष रहकर अर्थ लाभ रहेगा। स्त्री सन्तान के स्वास्थ्य में हीनता चलेगी। और अपव्यय सम्बन्धी कामों की विशेपता रहेगी। मास पूर्वार्द्ध में मानसिक अशांति प्राय: रहेगी।

अक्टूबर-राहु का चतुर्थ स्थान पर आना घरेलू वातावरण दूपित होकर मनोमालिन्यता कारक है। भागदौड़ व विशेप परिश्रम करने के बावजूद आर्थिक लाभ में कमी रहेगी। सन्तान की प्रगति से मन सन्तोप बनेगा।

नवम्बर-पारिवारिक ढंग प्राय: असन्तुलित रहेगा किन्तु राजकीयादि कामों तथा आर्थिक आय साधनों में सफलता रहेगी। मित्रवर्ग के सहयोग व मेलन से मनोबल की वृद्धि रहेगी। भूमि भवनादि कामों का लाभ रहेगा।

दिसम्बर-समान कार्य कर्ताओं के मध्य सम्मान वृद्धि तथा शत्रु जन परास्त होंगे। गृहस्थ जीवन में सुधार होकर व्यवहार में हर्ष एवं विनोद बढ़ेगा। व्यापार कामों की प्रगति होगी। अर्थोपार्जन श्रेष्ठ रहेगा।

जनवरी २००४ -कार्यादि स्वाभाविक रूप से सफल होंगे। स्त्री सन्तान के सहयोग का लाभ रहेगा। घर में मांगलिक उत्सवों के आयोजनों से हर्ष वृद्धि रहेगी। मासान्त में स्वंय को स्वास्थ्य हीनता रहेगी।

फरवरी-दूर यात्राओं का संयोग, परिश्रम से नवीन कार्यों का प्रारम्भ तथा वाहन खरीद सुख होगा। स्वजनों में मान-सम्मान की बढ़ोत्तरी रहेगी। स्वयं में श्रेप्ठ आत्म-विश्वास की जागृति बनेगी।

मार्च-रोजगार की उन्नति से प्रसन्नता, पारिवारिक व सामाजिक जनों में प्रतिप्टा वृद्धि एवं स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पत्नी, सन्तान का सुख श्रेप्ठ एवं सन्तान कार्यों में तरक्की होने से मन में हर्ष व प्रसन्नता बढ़ेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जुलाई-भ्रमण विशेष व यात्रादि कामों में परेशानियां रहेंगी। स्वयं के स्वास्थ्य में न्यूनता चलेगी किन्तु अर्थोपार्जन के कामों श्रेष्टता | नवम्बर-पारिवारिक ढंग ... राजकीयादि कामों तथा आर्थिक आय साधनों में सफलता रहेगी। | ... सन्तान कार्यों में तरक्की होने से मन में हर्ष व प्रसन्नता बढ़ेगी।

शेष पृष्ठ २१० पर

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



## विक्रम संवत् २०६० में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि योगों का विवरण

प्रत्येक मास की अंग्रेजी तारीखों में बनने वाले भा.स्टैं. टाइम से शुभ योगों में किए गये सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

### सर्वार्थ सिद्धि योग

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| ३ अप्रै. | ६।११ | से | ३ अप्रै. | २८।३२ | तक |
| ७ " | ६।६ | " | ८ " | ६।५ | " |
| १० " | ६।३ | " | ११ " | ६।२ | " |
| १६ " | ५।५७ | " | १६ " | १०।३९ | " |
| १८ " | २५।५५ | " | १८ " | २९।५४ | " |
| २० " | २१।३३ | " | २० " | २९।५२ | " |
| २७ " | २५।५४ | " | २७ " | २९।४५ | " |
| १ मई | ५।४२ | " | १ मई | १०।३९ | " |
| ३ " | १६।५२ | " | ३ " | २९।४० | " |
| ५ " | ५।३९ | " | ५ " | २२।२० | " |
| ८ " | ५।३७ | " | ८ " | २६।५९ | " |
| ११ " | २५।२८ | " | ११ " | २९।३४ | " |
| १६ " | १२।५० | " | १६ " | २९।३१ | " |
| १८ " | ७।३५ | " | १८ " | २९।३० | " |
| २५ " | ७।५९ | " | २५ " | २९।२७ | " |
| २७ " | १३।३८ | " | २७ " | २९।२६ | " |
| ३१ " | ५।२६ | " | ३१ " | २५।४० | " |
| ५ जून | ५।२५ | " | ५ जून | ८।४६ | " |
| ८ " | ८।४५ | " | ८ " | २९।२४ | " |
| १२ " | २३।१६ | " | १३ " | २०।४२ | " |
| १५ " | ५।२४ | " | १५ " | १६।१० | " |
| २२ " | ५।२५ | " | २२ " | १७।३३ | " |
| २४ " | ५।२६ | " | २४ " | २३।२९ | " |
| २५ " | २६।३७ | " | २५ " | २९।२६ | " |
| २८ " | ५।२७ | " | २८ " | ८।१५ | " |
| ६ जुलाई | ५।३० | " | ६ जुलाई | २९।३० | " |
| १० " | ७।४४ | " | १० " | २९।३२ | " |
| १३ " | २४।१० | " | १३ " | २९।३४ | " |
| १४ " | २२।४९ | " | १४ " | २९।३४ | " |
| २२ " | ५।३८ | " | २२ " | ६।५८ | " |
| २३ " | १०।५ | " | २३ " | २९।३९ | " |
| २८ " | २०।४० | " | २८ " | २९।४२ | " |

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| २९ जुला. | २१।१९ | से | २९ जुला. | २९।४२ | तक |
| ३ अगस्त | ५।४५ | " | ३ अग. | १७।५५ | " |
| ६ " | १४।० | " | ७ " | १२।३६ | " |
| १० " | ८।३९ | " | १० " | २९।४९ | " |
| १९ " | १८।१ | " | २० " | २१।६ | " |
| २५ " | ५।५७ | " | २५ " | २९।३५ | " |
| २६ " | ५।५७ | " | २६ " | २९।१८ | " |
| ३ सितंबर | ६।१ | " | ३ सितं. | १८।१ | " |
| ७ " | ६।३ | " | ७ " | १४।४० | " |
| ८ " | ६।४ | " | ८ " | १४।२९ | " |
| १२ " | १८।२ | " | १२ " | ३०।६ | " |
| १६ " | ६।८ | " | १६ " | २८।५९ | " |
| १७ " | ६।८ | " | १७ " | ३०।८ | " |
| २१ " | १४।२३ | " | २२ " | १५।२ | " |
| २३ " | ६।११ | " | २३ " | १४।५५ | " |
| २९ " | २५।५४ | " | २९ " | ३०।१५ | " |
| ४ अक्टू. | २०।१५ | " | ४ अक्टू. | ३०।१७ | " |
| ९ " | २५।१० | " | १० " | २७।२७ | " |
| १४ " | ६।२२ | " | १४ " | १२।१३ | " |
| १५ " | ६।२४ | " | १५ " | ३०।२४ | " |
| १९ " | ६।२५ | " | १९ " | २४।१० | " |
| २५ " | १६।३४ | " | २५ " | ३०।३० | " |
| २७ " | ११।१ | " | २७ " | ३०।३१ | " |
| ३१ " | २६।४ | " | १ नवं. | २५।५६ | " |
| ४ नवं. | २९।११ | " | ४ " | ३०।३७ | " |
| ६ " | ७।१७ | " | ७ " | ३०।३९ | " |
| १० " | १८।४२ | " | १० " | ३०।४२ | " |
| १२ " | ६।४२ | " | १२ " | २४।५० | " |
| १३ " | २७।३५ | " | १४ " | २९।५५ | " |
| १६ " | ६।४६ | " | १६ " | ७।४३ | " |
| २२ " | ६।५० | " | २२ " | २५।९ | " |
| २४ " | ६।५२ | " | २४ " | १९।१२ | " |

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| २८ नवं. | ९।५७ | से | २९ नवं. | ९।५ | तक |
| २ दिसं. | ११।६ | " | २ दिसं. | ३०।५९ | " |
| ४ " | ७।० | " | ५ " | १८।३९ | " |
| ८ " | ७।३ | " | ८ " | ३१।३ | " |
| ११ " | ९।२९ | " | १२ " | ११।४७ | " |
| १७ " | १६।११ | " | १७ " | ३१।९ | " |
| २० " | ७।१० | " | २० " | ११।४८ | " |
| २६ " | ७।१३ | " | २६ " | १८।३४ | " |
| ३० " | ७।१५ | " | ३० " | २०।२ | " |
| १ जन. | ७।१५ | " | १ जन. | २५।९ | " |
| ५ " | ७।१६ | " | ५ " | ३१।१६ | " |
| ८ " | ७।१७ | " | ८ " | ३१।१७ | " |
| १४ " | ७।१७ | " | १४ " | २१।४९ | " |
| २५ " | २७।३१ | " | २५ " | ३१।१४ | " |
| २९ " | ७।१३ | " | २९ " | ८।४३ | " |
| ३१ " | १४।४७ | " | ३१ " | ३१।११ | " |
| २ फर. | ७।११ | " | २ फर. | २०।४३ | " |
| ५ " | ७।९ | " | ५ " | २६।२६ | " |
| ८ " | २७।५३ | " | ८ " | ३१।६ | " |
| १३ " | २४।२४ | " | १३ " | ३१।२ | " |
| १५ " | २१।३२ | " | १५ " | ३१।१ | " |
| २२ " | १३।१४ | " | २२ " | ३०।५५ | " |
| २४ " | १५।१२ | " | २४ " | ३०।५३ | " |
| २८ " | ६।५० | " | २८ " | २५।५५ | " |
| ४ मार्च | ६।४४ | " | ४ मार्च | १०।५५ | " |
| ७ " | ११।३३ | " | ७ " | ३०।४० | " |
| ११ " | २९।४८ | " | १२ " | २८।२४ | " |
| १४ " | ६।३३ | " | १४ " | २५।४३ | " |

### अमृत-सिद्धि योग

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| ७ अप्रैल | १३।४४ | से | ७ अप्रैल | ३०।५ | तक |
| १० " | १९।१७ | " | १० " | ३०।२ | " |
| ३ मई | १६।५२ | " | ३ मई | २९।४० | " |
| ५ " | ५।३९ | " | ५ " | २२।२० | " |
| ८ " | ५।३७ | " | ८ " | २६।५९ | " |
| २७ " | १३।३८ | " | २७ " | २९।२६ | " |
| ३१ " | ५।२६ | " | ३१ " | २५।४० | " |
| ५ जून | ५।२५ | " | ५ जून | ८।४६ | " |

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| २४ जून | ५।२६ | से | २४ जून | २३।२९ | तक |
| २८ " | ५।२७ | " | २८ " | ८।१५ | " |
| ६ जुला. | १३।३७ | " | ६ जुला. | २९।३० | " |
| २२ " | ५।३८ | " | २२ " | ६।५८ | " |
| ३ अग. | ५।४५ | " | ३ अग. | १७।५५ | " |
| ६ " | १४।० | " | ६ " | २९।४७ | " |
| ३ सितं. | ६।१ | " | ३ सितं. | १८।१ | " |
| १२ " | १८।२ | " | १२ " | ३०।६ | " |
| १० अक्टू. | ६।२० | " | १० अक्टू. | २७।२७ | " |
| ७ नवं. | ६।३९ | " | ७ नवं. | ९।४७ | " |
| ५ जन. | १०।३० | " | ५ जन. | ३१।१६ | " |
| ८ " | १७।४८ | " | ८ " | ३१।१७ | " |
| २७ " | ३०।१६ | " | २७ " | ३१।१३ | " |
| ३१ " | १४।४७ | " | ३१ " | ३१।११ | " |
| २ फर. | ७।११ | " | २ फर. | २०।४३ | " |
| ५ " | ७।९ | " | ५ " | २६।२६ | " |
| २४ " | १५।१२ | " | २४ " | ३०।५३ | " |
| २८ " | ६।५० | " | २८ " | २५।५५ | " |
| ४ मार्च | ६।४४ | " | ४ मार्च | १०।५५ | " |

### रवि पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग यंत्र, तंत्र, मंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरु पुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होते हैं।

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| २४ अग. | २९।१३ | से | २४ अग. | २९।५७ | तक |
| २१ सितं. | १४।२३ | " | २१ सितं. | ३०।१० | " |
| १९ अक्टू. | ६।२५ | " | १९ अक्टू. | २४।१० | " |
| १६ नवं. | ६।४६ | " | १६ नवं. | ७।४३ | " |

### गुरु पुष्य योग

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| १० अप्रैल | १९।१७ | से | १० अप्रैल | ३०।२ | तक |
| ८ मई | ५।३७ | " | ८ मई | २६।५९ | " |
| ५ जून | ५।२५ | " | ५ जून | ८।४६ | " |
| ८ जन. | १७।४८ | " | ८ जन. | ३१।१७ | " |

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| ५ फर. | ७।९ | से | ५ फर. | २६।२६ | तक |
| ४ मार्च | ६।४४ | " | ४ मार्च | १०।५५ | " |

### द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले द्विपुष्कर एवं त्रिपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित तथा त्रिगुणित फल प्रत्येक काम में दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

### द्विपुष्कर योग

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| ८ अप्रैल | १५।२७ | से | ८ अप्रैल | १६।१३ | तक |
| १ जून | ११।५४ | " | १ जून | २८।५ | " |
| २६ जुला. | ५।४० | " | २६ जुलाई | १०।४४ | " |
| ३ अग. | २८।५ | " | ३ अग. | २९।४५ | " |
| २७ सितं. | ८।३६ | " | २७ सितं. | २६।४२ | " |
| २९ नवं. | ११।२८ | " | ३० नवं. | ८।५९ | " |
| ९ दिसं. | २८।३७ | " | ९ दिसं. | ३०।५१ | " |

### त्रिपुष्कर योग

| ता. मास | घं.मि. | से | ता. मास | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|
| २२ अप्रैल | १९।३३ | से | २२ अप्रैल | २९।५० | तक |
| २७ " | ८।३१ | " | २७ " | २५।५४ | " |
| ३ मई | ५।४१ | " | ३ मई | १६।५२ | " |
| २१ जून | ५।२५ | " | २१ जून | ७।३४ | " |
| १ जुलाई | ५।२८ | " | १ जुला. | १३।३२ | " |
| ५ " | २२।३७ | " | ६ " | १३।३७ | " |
| २३ अग. | २८।९ | " | २४ अग. | २५।३१ | " |
| २ सितं. | ९।१९ | " | २ सितं. | १९।२२ | " |
| ६ " | २४।१८ | " | ७ " | १४।४० | " |
| २६ अक्टू. | १४।४९ | " | २६ अक्टू. | ३०।३१ | " |
| ४ नवं. | २२।४० | " | ४ नवं. | २९।११ | " |
| २० दिसं. | ११।४८ | " | २० दिसं. | २५।४७ | " |
| २९ " | २६।२७ | " | २९ " | ३१।१४ | " |
| ३ जन. | ११।३९ | " | ४ जन. | ७।२७ | " |
| १७ फर. | १८।११ | " | १७ फर. | २१।५ | " |
| २१ " | १३।३१ | " | २२ " | १२।४८ | " |
| २ मार्च | २८।३७ | " | २ मार्च | ३०।४५ | " |
| ७ " | २७।२८ | " | ७ " | ३०।४० | " |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

**अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥**
**विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥**

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जीरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

**सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य**—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

**"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"**

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

**अथ युग व्यवस्था**—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें ५१०३ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५३वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

## चतुर्युगानां व्यवस्था

**सतयुग**—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति [illegible] ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

**त्रेतायुग**—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

**द्वापर युग**—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

**कलियुग**—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०५९ में कलियुग के ५१०३ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९७ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्युयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण

... करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

# संवत् २०६० वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् संवत्सर २०६० सृष्टितोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०४, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गत कलि: ५१०४, भौग्य कालि : सौर वर्ष संख्या ४२६८९६, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दा: ५२३९, श्री मन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दा: २०६०, शकाब्दा: १९२५, बार्हस्पत्य मानेन वर्षनाम पौष:, इस्वीय सन् २००३-२००४, हिजरी सन् १४२३-१४२४, श्री महावीर निर्वाण जैन संवत् २५२९-२५३०, भारतीय गणराज्य संवत् ५४-५५ प्रवर्तते।

समय विश्वा १२, समय वाहन सिंचाणु:, स्तंभ तीन जल वायु व तृण, सोमव्रति अमावस्या ०, सोमवती पंचमी ३, अंगारकी चतुर्थी १, भानु सप्तमी २, बुधाष्टमी ०, रवि दशमी २, समय मुहूर्ता: ३६०, समय दिनानि ३५४, तिथि वृद्धि: १०, तिथि क्षय: १६, उत्पत्ति विश्वा १०५, खपति विश्वा ९६, वर्षा विश्वा ५, धान्यम् १३, तृणम् ९, शीत् तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, तयोरेक्यम् १०७, सत्य आधा, धर्म ड्योढ़ा, पाप १८, शनि दृष्टि: पूर्वे नेष्ठम, अस्मिन् वर्षे भारते दृश्य ग्रहण २, चन्द्र सूर्ययो:। मेघनाम द्रोण, रोहिणी समुद्रे, समय निवासो मालाकार गृहे। दैवज्ञ शुभाशुभ चिन्तनीयम्। वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णु विंशति का १० वाँ "दुर्मुख" नाम का सम्वत्सर है। जिसका पूर्वाचार्यों ने इस प्रकार फल कथन किया है।

## दुर्मुख नाम सम्वत्सर फलम्

**दुर्मुखाब्दे मध्य वृष्टिरीति घोरा कुला धरा।**
**महावैरा महीनाथा वीर वारण वाजिभि:॥**

जिस वर्ष दुर्मुख नाम सम्वत्सर हो तो वर्ष में वर्षा मध्यम् प्राय होती है एवं चोर, डाकु तथा तस्करादि के भय से लोग भयभीत रहते हैं। बड़े-बड़े राज नेताओं में परस्पर शत्रुता पूर्ण विवाद होकर बार बार युद्ध के आसार बनते हैं।

अखिलेश्वर काल के कर्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परम पिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गए वर्ष के दशाधिकारी राजा मन्त्री आदि का न्यायाधिक फल सर्वत्र होता है। किन्तु राजा का प्रभाव वसुन्धरा के स्वर्ग व भारत के ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में अधिक होता है। इसी प्रकार मन्त्री का पूर्वी देश कलिंग में, सस्येश का ईशान (पूर्वोत्तर के मध्य) विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्य प्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग के साथ-साथ काश्मीरादि प्रदेश में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश व दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

## राजा बुध: तस्य फलम्

**बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं, गृहे गृहे तूर्य विवाह मंगलम्।**
**प्रकृत्ति दान दया जनोपि, स्वास्थ्यं सुभिक्षं धन धान्य संकुलम्॥**

**वर्ष के राजा बुध का फल** – राजा बुध है। इसलिए पृथ्वी पर अच्छी वर्षा होकर उत्तम धान्य उत्पादन होगा। जनता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। लोगों में दया दान के भावों की वृद्धि होकर घर-घर में विवाहादि मांगलिक उत्सव होंगे।

## मन्त्री चन्द्र: तत्फलम्

शशिनि मंत्रिगते बहु सस्य वत्यधिरा रमते सुख मण्डिता:।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदा: सुख राशि सुशोभिता:॥

**मंत्री चन्द्र का फल**–चन्द्र मंत्री पदासीन होने पर पृथ्वी पर उत्तम वर्षा होकर घास चारादि का अच्छा उत्पादन होता है। पशु आदि सुखी होते हैं एवं जन समुदाय में सुख शान्ति रहती है।

## सस्येश बुध: तत्फलम्

जलधरा जलराशि मुचो भृशं, सुखसमृद्धि युतं निरुपद्रवम्।
द्विजगण: स्तुतिपाठकर: सदा, प्रथम सस्यपतौ सति बोधने॥

**सस्येश बुध का फल** – सस्येश बुध होने से पृथ्वी पर बादल अच्छी वर्षा करते हैं। लोग निर्भय होकर सुख समृद्धिवान होते हैं। और ब्राह्मण पूजा स्तुति पाठादि में सदा निमग्न रहते हैं।

## धान्येशो भौमस्तस्य फलम्

भूमिजे ग्रीष्म धान्येशो ग्रीष्म धान्य महर्घकम्।
शालीतु घृत तैलादि महर्घाणि भवन्ति च॥

**धान्येश मंगल का फल** – मंगल धान्येश हों तो ग्रीष्म धान्य मूंग, मोठ, बाजरा, चावल आदि मंहगे हों एवं गन्ना, घी, तेल के भावों में तेजी का रुख रहे।

## मेघेशो रवि: तत्फलम्

जलदपे यदि वासरपे तदा, सरसि वै रमते जनतारसम्।
यव चनेक्षु निवार सु शालिभि:, सुखचयं सुलभं भुवि वर्तते॥

**मेघेश सूर्य का फल** – सूर्य जब मेघेश हों तब धरा वर्षा से सरस होकर जौ, चना, इक्षु (गन्ना), निवार व शालि नामक चावल आदि फसलों को उत्पन्न करती है जिससे जनता में खुशहाली रहती है।

## रसेशो शुक्रस्तत्फलम्

यजन याजन कोत्सव कोत्सुका, जनपदा जलतोषितमानसा:।
सुखसुभिक्ष समोदवतीधरा, धरणिपा हत पापगणा: प्रिया:॥

**रसेश शुक्र का फल** - जिस वर्ष रसेश शुक्र हों तो दानी जन याचकों को उत्सुक होकर दान देते हैं। पृथ्वी को सुवृष्टि व धन धान्य से पूर्ण देखकर प्रजा तुष्ट होती है। और राज्याधिकारी गण अपराधियों को दण्डित करते हैं।

## नीरसेश बुध: तत्फलम्

चित्र वस्त्रादिकं चैव शंख चंदन पूर्वकम्।
अर्घवृद्धि: प्रजायेत नीरसेशो बुधो यदि॥

**नीरसेश बुध का फल**:–बुध नीरसेश हों तो पृथ्वी पर तरह तरह के चित्र विचित्र वस्त्रों, शंख व चन्दन आदि वस्तुओं की वृद्धि होती है।

## फलेशो सूर्य: तत्फलम्

द्रुमवती फल पुष्पवती धरा, प्रमुदिता फल भोग विशेषत:।
बहुजलं जलदो भुवि मुंचति, क्वचिदपि प्रमितं फलपोरवि:॥

**फलेश सूर्य का फल**– सूर्य फलेश हों तो धरा पेड़ पौधों, फल पुष्पादि से समृद्ध होती है एवं बादल अच्छी वर्षा करते हैं। परन्तु कहीं-कहीं सीमित वर्षा ही होती है।

## धनेशो बुधस्तस्य फलम्

द्रविणपो हिमरश्मि सुतो यदा, विविध संग्रह वस्तु फलातदा।
द्विजवरा जपयज्ञ सुसंयता:, कृषि विशेष विशेषित मानसा:॥

धनेश बुध का फल - बुध धनेश हों तो अनेक प्रकार की वस्तुओं के संग्रह से लाभ होता है। ब्राह्मण - वर्ग जप यज्ञादि मांगलिक कार्यों संलग्न रहते हैं। एवं लोग कृषि कार्य में उत्तम लाभ व प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

## दुर्गेशो रवि: तत्फलम्

जयविशेष करस्तदा गतभया नरराज पुरोगमा:।
समधिकेन तदा नृपतोन्यत: पथि च सव्रजतां न भयं॥

**दुर्गेश सूर्य का फल**–सूर्य दुर्गेश हों तो लोगों को न्याय सुलभ होकर समाज वाद की वृद्धि होती है एवं लोग भय रहित होकर अच्छे कार्य करते हैं।

## वर्षनाम पौष तत्फलम्

ज्वर रोगक्षु धार्ताश्च नाना जनपदा: सदा।
महर्घ तु त्रयो मासा पौषे स्वास्थ्यं तत परम्॥

**वर्षनाम पौष का फल**– पौष नाम वर्ष में लोग भूख व ज्वरादि रोगों से पीड़ित रहते हैं तथा तीन मास पर्यन्त मंहगाई का जोर रहता है तत्पश्चात जन स्वास्थ्य में सुधार रहता है।

**मेघनाम द्रोण तत्फलम्**– द्रोणे वर्षति सर्वदा के अनुसार इस वर्ष चतर्मेघों में द्रोण नामक मेघ होने के कारण देश में उत्तम वृष्टि होकर पैदावार में वृद्धि रहेगी।

**रोहिणि निवास: समुद्रे तस्य फलम्**–इस वर्ष रोहिणी का निवास "समुद्र" में है। जिसका फल-"समुद्रे तु महा वृष्टि:" इस शास्त्र वचनानुसार सर्वत्र उत्तम वर्षा होगी। जिससे धान्य तृणादि की पैदावार उत्तम होकर लोगों में प्रशन्नता रहेगी एवं पशुधन की वृद्धि होगी।

**समय निवासो मालाकार गृहे तत्फलम्** – समय का निवास माली के घर होने से वर्ष में सुवृष्टि होकर पेड़, पौधे, फल, पुष्प, धान्य, तृण आदि की अच्छी पैदावार रहेगी। यथा- **धरा फल पुष्पवती बहु वृष्टिश्च मालिन: ॥**

**समय वाहन सिंचाणु: तत्फलम्**– समय वाहन सिंचाणु होना देश में कहीं अति वृष्टि व कहीं पर्याप्त वर्षा होना योग कारक है परन्तु फसलों का उत्पादन उत्तम रहे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## अथ ( विन्ध्य से दक्षिण निवासियों हेतु अष्टोत्तरी मत से ) आय-व्यय कोष्ठकम्

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आय | ५ | १४ | २ | ११ | १४ | २ | १४ | ५ | ८ | ११ | ११ | ८ |
| व्यय | ५ | ११ | ११ | ८ | २ | ११ | ११ | ५ | ११ | ५ | ५ | ११ |

## अथ ( विन्ध्य से उत्तर निवासियों हेतु विंशोत्तरी मत से ) आय-व्यय कोष्ठकम्

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुंभ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आय | ११ | ५ | ११ | ५ | ८ | ११ | ५ | ११ | ८ | २ | २ | ८ |
| व्यय | १४ | ८ | ५ | २ | १४ | ५ | ८ | १४ | ५ | ८ | ८ | ५ |

**आय-व्यय कोष्ठक देखने की विधि** :-अपनी राशि के आय व व्यय के अंकों को जोड़कर उसमें से एक घटा दें और ८ का भाग दें। जो शेष रहें उसके अनुसार फल जानें। शेष १-२-६-७ रहने पर लाभ तथा ०-३-५ रहने पर वर्ष में हानि होती है।

## अथ शनि साढ़ेसाती एवं लघु कल्याणी ( ढ़ैया ) विचार विक्रम संवत् २०६०

वर्ष प्रारम्भ के ६ दिन तक शनि वृषभ् राशि में रहेगा। ता० ७ अप्रैल २००३ ई० को मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। प्रवेश समय चन्द्र राशि वृष रहेगी। मिथुन राशि में शनि के आने तक मेष राशि वालों को उतरती, वृष राशि वालों को मध्यकालीन तथा मिथुन राशि वालों को लगती ( चढ़ती ) साढ़ेसाती है और तुला एवं कुंभ राशि वालों को ढैया (लघु कल्याणी) है। जिसका फल गत वर्ष के पंचांग में राशिवार लिखा जा चुका है।

इस वर्ष सं० २०६० चैत्र शुक्ला ५ सोमवार ता. ७ अप्रेल २००३ ई. को शनि मिथुन राशि में प्रवेश हुआ है। अत: वृष राशि वालों को शनि साढ़ेसाती का अंतिम भाग पैरों पर सोने के पाये प्रारंभ होगा, मिथुन राशि वालों को मध्यभाग उदर पर लोह पाये साढ़े साती है और कर्क राशि वालों को प्रारंभिक साढ़े साती शीश (मस्तक) भाग पर सोने के पाये प्रारंभ होगी। वृश्चिक राशि वालों को ढैया (लघु कल्याणी) ताम्बे के पाये एवं मीन राशि वालों को भी ताम्बे के पाये शनि का ढ़ैया (लघु कल्याणी) चलेगा। अत: मिथुन राशि स्थित शनि का गोचरीय प्रभाव पृथक-पृथक राशि पर निम्न प्रकार रहेगा।

**मेष**:-शनि पराक्रम स्थान पर चान्दी के पाये चलेगा। जिससे अनेक व्यवसाय बढ़कर आर्थिक प्रगति होगी। सामाजिक व पारिवारिक मांगलिक आयोजनों में प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। स्त्री सन्तान का उत्तम सहयोग एवं निपटारा बनकर मनोहर्ष बढ़ेगा। राज्य कार्यों में विजय और राज्य कर्मचारियों को पद वृद्धि एवं उच्चाधिकारियों से प्रशंसा-सम्मेलन व सम्मान प्राप्त होगा।

**वृष**:-सोने के पाये पैरों पर उतरती साढ़ेसाती है। अत: शत्रुओं द्वारा अनेक अवरोध और प्रतिष्ठा हानि के प्रयास बनेंगे, अनावश्यक व आकस्मिक खर्च की वृद्धि, देह पर रोगों का प्रकोप बढ़कर मानसिक घुटनशीलता चलेगी। स्वजनों-मित्रों तथा रिश्ते-नातेदारों के साथ मतान्तर-विवादकता प्राय: बार-बार बनेगी। राजकीयादि कामों में अड़चनें, मिथ्या व्यय एवं कानूनी अवरोध बनेंगे। कर्मचारी वर्ग को उच्चाधिकारियों से मनमुटाव, इच्छित स्थानों से स्थान परिवर्तन एवं अपवाद स्वरूप आरोप बनने के योगप्रद है।

**मिथुन**:-मध्यकालीन साढ़ेसाती उदर (पेट) भाग पर लोह के पाये से है तदनुसार आर्थिक तंगी, कारोबार में रुकावटें, स्वास्थ्य में गड़बड़ी और सामाजिक, पारिवारिक जनों से द्वेष एवं विवादकता रहेगी। राजकीय परेशानियों से मानसिक खिन्नता, लोगों में सम्मान हानि रहेगी। राज्य कर्मचारियों को आकस्मिक राज्यभय तथा पद अवनति संभव है। समान कार्यकर्त्ताओं और उच्चाधिकारियों से शत्रुता बढ़े। आय के कामों की अपेक्षा खर्च वृद्धि होने से ऋण बढ़कर मानसिक अशांति लगातार बढ़ती रहेगी।

**कर्क**:- मस्तक (शिर) भाग पर सोने के पाये शनि साढ़े साती का आरम्भ हुआ है। इसलिए स्वजनों से खिन्नता, भ्रम एवं वैर विरोध बढ़ेंगे। शारीरिक स्वास्थ्यहीनता, अनावश्यक खर्च और आय साधनों में रुकावट होकर ऋण कारक स्थिति में वृद्धि रहेगी। राजकीय परेशानियां तथा राज्यापमान होने से मनोबल में गिरावट होगी। राज्याधिकारियों में आपसी कटुता वश अनेक विरोध होकर राज्य सन्ताप बढ़ेगा।

**सिंह**:-शनि लाभ के स्थान पर ताम्बे के पाये शुभ फल सूचक है। नवीन व्यवसायों की योजनाएं सार्थक बनकर आर्थिक प्रगति होगी। भूमि, भवन आदि स्थाई सम्पत्ति एवं भौतिक सुख साधनों की वृद्धि रहेगी। वैवाहिक जीवन के सुखों में आंशिक मतान्तर बनकर बीच-बीच में तनाव रहेगा। आरोग्यता श्रेष्ठ रहेगी। राजकीय कार्यकर्त्ताओं को पद एवं प्रभाव की बढ़ोत्तरी होगी तथा उत्तम मनोबल बढ़ेगा। इच्छित स्थान व पद की प्राप्ति का हर्ष रहेगा।

**कन्या**:-चांदी के पाये दशम भाव में शनि का गोचर भ्रमण संरक्षकों के स्वास्थ्य में न्यूनता का द्योतक है किन्तु स्वयं को नये कारोबार बनकर आर्थिक आय बढ़ेगी। व्यवसायों के द्वारा समाज, परिवार में इज्जत एवं प्रशंसा की वृद्धि होगी। नवीन व्यक्तियों से सम्पर्क होकर सहयोग प्राप्त होगा। सरकारी कामकाज में सफलता एवं श्रेष्ठ जानकारियां बढ़ेंगी। शारीरिक स्वस्थता रहकर श्रम साधना उत्तम रहेगी। सरकारी कर्मचारियों को सम्मान वृद्धि बनेगी।

**तुला**:-शनि भाग्य भाव में लोहे के पाये से चलेगा। इसलिए मिले जुले फल रहेंगे। व्यवसाय के कामों में विशेष परिश्रम होकर सामान्य लाभ रहेगा। पारिवारिक व सामाजिक व्यक्तियों का सहयोग रहेगा। स्त्री सन्तान के स्वास्थ्य हेतु चिन्ता रहकर मानसिक अशांति रहेगी। राजकीय कामों में विजय एवं उच्चाधिकारियों से श्रेष्ठ सम्पर्क बनेंगे। मांगलिक कामों तथा संरक्षकों के प्रति खर्च की अधिकता रहेगी। नौकरी पेशा व्यक्तियों को समय सामान्य प्राय: रहकर इज्जत वृद्धि रहेगी।

**वृश्चिक**:-ताम्बे के पाये शनि की छोटी पनोति (ढैया) चलेगी। जिससे देह में शिथिलता व अस्वस्थता का प्रभाव रहेगा। व्यावसायिक कामों एवं आय के स्रोतों में बढ़ोतरी होकर मनोबल बढ़ेगा। समान कार्यकर्त्ता एवं स्वपरिवार के व्यक्तियों से द्वेषता बनकर मानसिक अशांति रहेगी। राजकीय मान प्रभाव वृद्धि से कार्य क्षेत्र कर्मचारियों को मनोहर्ष तथा उच्चाधिकारियों का सहयोग रह कर मनोरथ सिद्धि होगी।

**धनु**:-सप्तम् स्थान में सोने के पाये से शनि का चलना दाम्पत्य जीवन में बाधक फलप्रद है। स्त्री सन्तानादि को अस्वस्थता, रोजी-रोजगार कामों में रुकावट तथा अनावश्यक खर्च की अधिकता रहेगी। जबकि शत्रुवर्ग परास्त होगा। अनेक नवीन कामों की योजना बनकर सफलता होगी। आय-व्यय में प्रायश: समानता चलेगी। राजकीय व्यक्तियों के सम्पर्क से आर्थिक लाभ भी रहेगा। राज्यसेवी जनों का स्थान परिवर्तन एवं विशेष भागदौड़ आदि श्रम रहकर परेशानियां रहेंगी।

**मकर**:-चांदी के पाये से शत्रु स्थान पर शनि रहेगा तदनुसार शत्रुओं पर विजय, समाज व परिवार में प्रभाव की वृद्धि तथा कान्ट्रेक्ट संबंधी कामों का लाभ होकर आर्थिक प्रगति होगी। स्वयं, स्त्री व संतान के स्वास्थ्य में सामान्य न्यूनता रहकर बार-बार चिन्ता भी बनेगी। रिश्ते नातेदारों एवं मित्रों से उत्तम सम्मेलन बनेगा। जिनसे आय-व्यय और व्यवसाय में बढ़ोत्तरी होगी। राज्याधिकारियों को पदोन्नति तथा प्रभाव वृद्धि से मनोहर्ष रहेगा।

**कुम्भ**:-शनि पंचम भाव में लोहे के पाये से चलेगा जिससे मानसिक चिन्तनशीलता विशेष रहेगी। पारिवारिक सामाजिक जनों के लिए भागदौड़ व परिश्रम विशेष रहेगा। नवीन व्यावसायिक कार्य बनकर गत समय में सुधार होगा और आर्थिक मसलों में सफलता बनने से मनोबल बढ़ेगा। राजकीय परेशानियों व विवादों में विजय के आसार बनेंगे। स्वास्थ्य में न्यूनाधिक्यता रहेगी। कर्मचारियों को सामान्य समय रहकर इच्छित स्थान व पद की प्राप्ति रहेगी।

**मीन**:-शनि की छोटी पनोती (ढैय्या) ताम्बे के पाये से लगेगी। इसलिए मान सम्मान की वृद्धि, नवीन व्यवसाय बनकर आर्थिक प्रगति एवं कार्य व्यग्रता बढ़ेगी। स्वास्थ्य में न्यूनता होने से कार्यावरोध भी होंगे। राज्य पक्ष की ओर से यह पनोती परेशानी एवं भाग दौड़ फलप्रद है। स्वजनों से मनमुटाव एवं द्वेष से मानसिक अशांति बढ़ेगी। स्वयं के विचार तथा स्वाभिमान में दृढ़ता जन्य प्रभाव बढ़ेगा। भूमि भवनादि संपति संग्रह

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

होगी। सामाजिक व पारिवारिक मांगलिक आयोजनों में प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। स्त्री सन्तान का उत्तम सहयोग एवं शारीरिक स्वस्थता रहेगी। गत समय की परेशानियों का

शनि साढ़े साती का आरंभ हुआ है। इसलिए स्वयं का मानसिक अस्थिरता व उच्चाटन स्थिति बन कर

अशांति रहेगी। राज्य कामों में प्रभाव वृद्धि से कार्य क्षेत्र में प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी। श्रम साधना विशेष होगी।

अशांति बढ़ेगी। स्वयं के विचार तथा स्वाभिमान में दृढ़ता जन्य प्रभाव बढ़ेगा। भूमि भवनादि संपति संग्रह

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



की प्राप्ति होगी, किन्तु समान कार्यकर्त्ताओं से मनोमालिन्य बढ़ेगा।

## मिथुन राशि स्थित शनि का विश्व पर प्रभाव

मिथुने च यदा सौरि, दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारूण युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥

शनि के मिथुन राशि पर गोचर भ्रमण करने पर कठिन दुर्भिक्ष होता है तथा पश्चिमी राष्ट्रों में भयानक युद्ध होते हैं और शासकों में आन्तरिक महान भय बढ़ता है।

## वृहस्पति का गोचर राशि संचार फल

गुरु कर्क राशि में गत वर्ष विक्रम सं० २०५९ अषाढ़ कृष्णा १० शुक्रवार ता. ५ जुलाई, २००२ ई० को भरणी नक्षत्र व मेष राशिस्थ चन्द्र के सानिध्य में प्रवेश किया था और इस वर्ष श्रावण शुक्ल प्रतिपदा बुधवार ता०३० जुलाई २००३ ई० को आश्लेषा नक्षत्र व कर्क राशिस्थ चन्द्र काल में सिंह राशि में प्रवेश करेगा।

कर्क राशिस्थ गुरु-वृष-कन्या-मकर राशि वालों को लोहे के पाये मानसिक अशांति, अस्वस्थता एवं घुटनशीलता कारक है। मेष-मिथुन व वृश्चिक राशि वालों को सोने के पाये शत्रुओं द्वारा उपद्रव, कामों में अवरोध तथा श्रमाधिक्य के साथ अस्थिरता फलप्रद है। कर्क-तुला एवं कुंभ राशि वालों को ताम्र पाये से पराक्रम तेज होकर राज्यादि कामों में विजय, मनोबल में सबलता एवं सामाजिक ख्याति अर्जित करने के योगकारक है। सिंह-धन तथा मीन राशि वालों को चान्दी के पाये आर्थिक लाभ, भौतिक सुख साधनों का संग्रह, मानसिक हर्ष और आत्मविश्वास की वृद्धि प्रद है।

## सिंहराशिस्थ गुरु का राशियों पर प्रभाव

मेष:-लोहे के पाये से पंचम गुरु मानसिक चिन्तनशीलता बढ़ाकर व्यवसायों व राज्यादिक कामों में लाभकारी रहेगा। पाये दोष वश परिश्रम व एक काम को बार-बार पुनरावृत्ति करनी होगी।

वृष:-ताम्बे के पाये से सुख भाव गत गुरु भूमि जमीन आदि कामों में लाभ व सफलता कारक रहेगा। रिश्ते नातेदारों तथा मित्रों का विशेष सहयोग रहकर शत्रुओं पर विजय होगी।

मिथुन:-चान्दी के पाये से पराक्रम स्थान पर गुरु का प्रभाव उच्चाधिकारी व बड़े लोगों से उत्तम सम्पर्क होकर आय साधनों की वृद्धिप्रद रहेगा। भाइयों, पारिवारिक जनों से विवादकता बनकर मन अशान्त रहेगा।

कर्क:-सोने के पाये धन भाव में गुरु भ्रमण करेगा। इसलिए स्थाई संपत्ति सम्बन्धी कामों में अवरोध एवं राज्यादिक परेशानियां रह कर भी लाभ व विजय रहेगी। शत्रु परास्त होंगे। स्वजनों में सम्मान वृद्धि होगी।

सिंह:-लोहे के पाये से लग्न भाव में गुरु का भ्रमण शारीरिक अस्वस्थता, अनावश्यक अपव्यय तथा आर्थिक संकट वृद्धि कारक है। आकस्मिक यात्रा व मांगलिक कामों में सहयोग रहकर परेशानियां बढ़ेंगी।

कन्या:-सुवर्ण पाद से द्वादश भावस्थ व्यावसायिक कामों में अवरोध व हानिप्रद रहेगा। मित्रों, भागीदारों व स्वजनों से आर्थिक नुकसान होने पर मनोबल में गिरावट तथा घृणात्मक भावों की वृद्धि होगी।

तुला:-लाभ भाव में ताम्बे के पाये गुरु का गोचर भ्रमण नवीन व्यवसाय व आय कार्यों में उन्नतिकारक रहेगा। मनोबल तेज होगा। आर्थिक स्थिति में दृढ़ता बनेगी। मनोहर्ष होकर कार्यक्षमता में बढ़ोत्तरी होगी।

वृश्चिक:-चांदी के पाये राज्य भावस्थ गुरु चलेगा। जिससे राज्य लाभ, नवीन व्यवसाय होकर अर्थोपार्जन होगा तथा शत्रुवर्ग पर विजय बनेगी। स्वयं में आत्मविश्वास की वृद्धि तथा स्वजनों, रिश्ते नातेदारों का सहयोग रहेगा।

धनु:-भाग्य भाव में लोह के पाये से होने के कारण भाग्यावरोधक फलप्रद रहेगा। बनते कामों में रुकावट मित्रों, भागीदारों व पारिवारिक जनों से विवाद व उलझनें बनने से मानसिक स्थिति विचलित रहेगी। स्वयं को वेधाधिक्यता प्रायश: रहेगी।

मकर:-ताम्बे के पाये से अष्टम स्थान का गुरु शारीरिक स्वास्थ्यहीनता रोगोपद्रव कारक है, किन्तु व्यावसायिक कामों में आर्थिक लाभ तथा श्रम विशेष रहकर उत्तम सम्मान व द्रव्य लाभ रहेगा। स्वजनों से मनमुटाव व मानसिक अस्थिरता चलेगी।

कुंभ:-सोने के पाये से पत्नि भाव में गुरु दाम्पत्य सुख में बाधक है तथा स्त्री स्वास्थ्य में न्यूनता चलेगी। स्थाई आय साधनों में रुकावटें रहकर मानसिक अशान्ति रहेगी। स्त्री सन्तान व स्वयं के स्वास्थ्य हेतु बार-बार चिन्ताएं बढ़ेंगी।

मीन:-चान्दी के पाये छठे स्थान पर गुरु का भ्रमण शत्रु विनाशक तथा राज्यादिक कामों में विजय फलप्रद है। नवीन व्यक्तियों के मेलन से अर्थोपार्जन में वृद्धि तथा सामाजिक-पारिवारिक जनों में मान-सम्मान बढ़ेगा।

## सिंह राशिस्थ गुरु का विश्व पर प्रभाव

यदा सिंहे गुरुर्याति सुभिक्षं तत्र जायते।
मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहु सस्या च मेदिनी॥

गुरु के सिंह राशि में रहने पर कृषि की उपज उत्तम होती है, सुभिक्ष होता है तथा बादल प्रबल वर्षा करके प्रजा को सन्तुष्ट करते हैं। सिंहस्थ गुरु सुकाल फल कारक है।

## राहु-केतु का राशि संचार विचार

वृष राशि में राहु तथा वृश्चिक राशि में केतु विक्रम सं० २०५८ माघ शुक्ला ४ शनिवार ता०१६ फरवरी २००२ ई० को अश्विनी नक्षत्र व मेष राशिस्थ चन्द्रमा के समय प्रवेश हुआ जो विक्रम संवत २०६० भाद्रपद शुक्ला ११ शनिवार ता० ६ सितम्बर २००३ ई० तक रहेगा। जिसका विश्वव्यापी फल शास्त्रों में इस प्रकार लिखा है: यथा-

### वृषे राहुफलम्

वृषे राहुर्यदा याति, दुःखं सर्वजनेषु च।
दुर्लभानि च धान्यानि, नान्यथा ऋषि भाषितम्॥

राहु का वृष राशि पर गोचर भ्रमण होने पर प्रजा को अनेक दुख होते हैं और धान्यों की उपज प्रायश: दुर्लभ होने से धान्य मंहगे होते हैं।

### वृश्चिके केतु फलम्

वृश्चिके च शिखीर्याति स्वल्प वृष्टिर्तदा भवेत्।
महर्घ सर्व द्रव्याणां नृपाणां कोपमादिशेत्॥

वृश्चिक का केतु होने पर पृथ्वी पर वर्षा की न्यूनता रहती है तथा सभी व्यवसायिक वस्तुएं मंहगी होती हैं। शासकों में वेध वृद्धि होकर युद्धोन्माद बढ़ता है।

## वृषस्य राहु व वृषस्य-केतु का पाये के अनुसार राशियों पर प्रभाव:-

मेष-मिथुन-वृश्चिक राशि वालों को सुवर्ण के पाये से आर्थिक संकटप्रद है। वृष-कन्या-मकर राशि वालों को लोह के पाये से स्वास्थ्यहीनता व अरिष्टप्रद है। कर्क-तुला-कुंभ राशि वालों को ताम्र के पाये से मान-सम्मान वृद्धि व मनोहर्ष प्रद है। सिंह-धन-मीन राशि वालों को रजत के पाये से आर्थिक उन्नति व स्थाई संपत्ति लाभप्रद है।

## मेष राशिस्थ राहु व तुला राशिस्थ केतु विचार

विक्रम संवत् २०६० भाद्रपद शुक्ला ११ शनिवार ता० ६ सितम्बर २००३ ई० को पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र व धनु राशिस्थ चन्द्रमा के काल में राहु मेष राशि व केतु तुला राशि में आयेगा। जिसका विश्व पर प्रभाव कथन निम्न प्रकार है। यथा:-

### मेषे राहुफलम्

मेष राशौ यदा राहुः पीडयन्ते यं तदा जनः।
काम्बोजाधिकिरातश्च पांचालाश्चेति तैलंगका॥

मेष राशि पर राहु आने पर कांबोज, आंध्र, किरात, पांचाल व तैलंग देश की जनता दुखी होती है। उनको रोगादि उपद्रवों से पीड़ा होती है।

### तुलायां केतु फलम्

तुला राशौ व्याद्वै यदा शिखी प्रवर्तते।
अवश्यं तस्कराः सर्वे लोक पीड़ा प्रकुर्वते॥

केतु का तुला राशि में वक्र स्वरूप आने पर चोर लुटेरे और डाकुओं द्वारा प्रजा दुखी होती है।

## मेषस्थ राहु तथा तुला के केतु का पाये के अनुसार राशियों पर प्रभाव :-

मेष-सिंह-वृश्चिक राशि वालों को चांदी के पाये अर्थोपार्जन, सम्पत्ति वृद्धि लाभप्रद है।

वृष-कन्या-मकर राशि वालों को लोहा के पाये रोगादि उपद्रव व स्वास्थ्य चिंताप्रद है।

मिथुन-तुला-मीन राशि वालों को ताम्बे के पाये सामाजिक प्रतिष्ठा व उत्साहवर्द्धक है।

कर्क-धन-कुंभ राशि वालों को सोने के पाये कारोबार में अवरोध व व्यय वृद्धि कारक है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६० वि.

## सूर्य नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १ अप्रैल | रेवती | १ मीन |
| ५ " | " | २ " |
| ८ " | " | ३ " |
| ११ " | " | ४ " |
| १४ " | अश्वि. | १ मेष |
| १८ " | " | २ " |
| २१ " | " | ३ " |
| २४ " | " | ४ " |
| २८ " | भर. | १ " |
| १ मई | " | २ " |
| ४ " | " | ३ " |
| ८ " | " | ४ " |
| ११ " | कृति. | १ " |
| १५ " | " | २ वृष |
| १८ " | " | ३ " |
| २२ " | " | ४ " |
| २५ " | रोहि. | १ " |
| २९ " | " | २ " |
| १ जून | " | ३ " |
| ५ " | " | ४ " |
| ८ " | मृग. | १ " |
| ११ " | " | २ " |
| १५ " | " | ३ मिथु. |
| १८ " | " | ४ " |
| २२ " | आर्द्रा | १ " |
| २५ " | " | २ " |
| २९ " | " | ३ " |
| २ जुलाई | " | ४ " |
| ६ " | पुन. | १ " |
| ९ " | " | २ " |
| १३ " | " | ३ " |
| १६ " | " | ४ कर्क |

## सूर्य नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| २२ जुलाई | पुष्य | २ कर्क |
| २७ " | " | ३ " |
| ३० " | " | ४ " |
| ३ अग. | श्लेषा | १ " |
| ६ " | " | २ " |
| १० " | " | ३ " |
| १३ " | " | ४ " |
| १७ " | मघा | १ सिंह |
| २० " | " | २ " |
| २४ " | " | ३ " |
| २७ " | " | ४ " |
| ३१ " | पू.फा. | १ " |
| ३ सितं. | " | २ " |
| ६ " | " | ३ " |
| १० " | " | ४ " |
| १३ " | उफा. | १ " |
| १७ " | " | २ कन्या |
| २० " | " | ३ " |
| २४ " | " | ४ " |
| २७ " | हस्त | १ " |
| ३० " | " | २ " |
| ४ अक्टू. | " | ३ " |
| ७ " | " | ४ " |
| ११ " | चित्रा | १ " |
| १४ " | " | २ " |
| १७ " | " | ३ तुला |
| २१ " | " | ४ " |
| २४ " | स्वाति | १ " |
| २७ " | " | २ " |
| ३१ " | " | ३ " |
| ३ नवं. | " | ४ " |
| ६ " | त्रिशा. | १ " |

## सूर्य नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १३ नवं. | त्रिशा. | ३ तुला |
| १६ " | " | ४ वृश्चि. |
| २० " | अनु | १ " |
| २३ " | " | २ " |
| २६ " | " | ३ " |
| २९ " | " | ४ " |
| ३ दिसं. | ज्ये. | १ " |
| ६ " | " | २ " |
| ९ " | " | ३ " |
| १३ " | " | ४ " |
| १६ " | मूल | १ धनु |
| १९ " | " | २ " |
| २२ " | " | ३ " |
| २६ " | " | ४ " |
| २९ " | पू.षा. | १ " |
| **सन् २००४ ई.** | | |
| १ जन. | " | २ " |
| ५ " | " | ३ " |
| ८ " | " | ४ " |
| ११ " | उ.षा. | १ " |
| १४ " | " | २ मकर |
| १८ " | " | ३ " |
| २१ " | " | ४ " |
| २४ " | श्रवण | १ " |
| २७ " | " | २ " |
| ३१ " | " | ३ " |
| ३ फर. | " | ४ " |
| ६ " | धनि. | १ " |
| १० " | " | २ " |
| १३ " | " | ३ कुंभ |
| १६ " | " | ४ " |
| १९ " | शत. | १ " |

## सूर्य नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| २६ फर. | शत. | ३ कुंभ |
| २९ " | " | ४ " |
| ४ मार्च | पू.भा. | १ " |
| ७ " | " | २ " |
| १० " | " | ३ " |
| १४ " | " | ४ मीन |
| १७ " | उ.भा. | १ " |
| २० " | " | २ " |
| **मंगल नक्षत्र चार** | | |
| १ अप्रैल | पू.षा. | ४ धनु |
| ६ " | उ.षा. | १ " |
| ११ " | " | २ मकर |
| १७ " | " | ३ " |
| २२ " | " | ४ " |
| २८ " | श्रवण | १ " |
| ४ मई | " | २ " |
| १० " | " | ३ " |
| १५ " | " | ४ " |
| २२ " | धनि. | १ " |
| २८ " | " | २ " |
| ३ जून | " | ३ कुंभ |
| १० " | " | ४ " |
| १८ " | शत. | १ " |
| २७ " | " | २ " |
| ८ जुला. | " | ३ " |
| २० अग. | " | २ " |
| १ सितं. | " | १ " |
| १९ " | धनि. | ४ " |
| ५ अक्टू. | शत. | १ " |
| २१ " | शत. | २ कुंभ |
| [illegible] " | " | ३ " |
| २ नवं. | " | ४ " |

## मंगल नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १६ नवं. | पू.भा. | १ कुंभ |
| २३ " | " | २ " |
| २९ " | " | ३ " |
| ५ दिसं. | " | ४ मीन |
| ११ " | उ.भा. | १ " |
| १७ " | " | २ " |
| २३ " | " | ३ " |
| २८ " | " | ४ " |
| **सन् २००४ ई.** | | |
| ३ जन. | रेवती | १ " |
| ८ " | " | २ " |
| १४ " | " | ३ " |
| १९ " | " | ४ " |
| २४ " | अश्वि. | १ मेष |
| ३० " | " | २ " |
| ४ फर. | " | ३ " |
| ९ " | " | ४ " |
| १४ " | भर. | १ " |
| २० " | " | २ " |
| २५ " | " | ३ " |
| १ मार्च | " | ४ " |
| ६ " | कृति. | १ " |
| ११ " | " | २ वृष |
| १७ " | " | ३ " |
| २२ " | " | ४ " |
| **बुध नक्षत्र चार** | | |
| ३१ मार्च | रेवती | ४ मीन |
| २ अप्रै. | अश्वि. | १ मेष |
| ४ " | " | २ " |
| ६ " | " | ३ " |
| ७ " | " | ४ " |
| ९ " | भर. | १ " |

## बुध नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १२ अप्रैल | भर. | २ मेष |
| १४ " | " | ३ " |
| १८ " | " | ४ " |
| ५ मई | व. भर | ३ " |
| ८ " | " | २ " |
| २८ " | मा. | ३ " |
| २ जून | " | ४ " |
| ५ " | कृति. | १ " |
| ८ " | " | २ वृष |
| ११ " | " | ३ " |
| १३ " | " | ४ " |
| १५ " | रोहि. | १ " |
| १७ " | " | २ " |
| १९ " | " | ३ " |
| २१ " | " | ४ " |
| २३ " | मृग. | १ " |
| २४ " | " | २ " |
| २६ " | " | ३ मिथुन |
| २८ " | " | ४ " |
| २९ " | आर्द्रा | १ " |
| १ जुलाई | " | २ " |
| २ " | " | ३ " |
| ४ " | " | ४ " |
| ५ " | पुन. | १ " |
| ७ " | " | २ " |
| ८ " | " | ३ " |
| १० " | " | ४ कर्क |
| १२ " | पुष्य | १ " |
| १३ " | " | २ " |
| १५ " | " | ३ " |
| १७ " | " | ४ " |
| १९ " | श्ले. | १ " |
| २० " | " | २ " |

## बुध नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| २२ जुला. | श्ले. | ३ कर्क |
| २४ " | " | ४ " |
| २६ " | मघा | १ सिंह |
| २८ " | " | २ " |
| ३० " | " | ३ " |
| २ अग. | " | ४ " |
| ४ " | पू.फा. | १ " |
| ७ " | " | २ " |
| १० " | " | ३ " |
| १३ " | " | ४ " |
| १६ " | उ.फा. | १ " |
| २१ " | " | २ कन्या |
| ४ सितं. | व.उ.फा. | १ सिंह |
| ८ " | पू.फा. | ४ " |
| ११ " | व.पू.फा. | ३ " |
| १५ " | " | २ " |
| २४ " | मा.पू.फा. | ३ " |
| २४ " | " | ४ " |
| १ अक्टू. | उ.फा. | १ " |
| ३ " | " | २ कन्या |
| ५ " | " | ३ " |
| ७ " | " | ४ " |
| ९ " | हस्त | १ " |
| ११ " | " | २ " |
| १३ " | " | ३ " |
| १५ " | " | ४ " |
| १७ " | चित्रा | १ " |
| १८ " | " | २ " |
| २० " | " | ३ तुला |
| २२ " | " | ४ " |
| २४ " | स्वाति | १ " |
| २६ " | " | २ " |
| २८ " | " | ३ " |
| ३० " | " | ४ " |

## बुध नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| २ नवं. | त्रिशा. | १ तुला |
| ४ " | " | २ " |
| ६ " | " | ३ " |
| ८ " | " | ४ वृश्चि. |
| १० " | अनु | १ " |
| १२ " | " | २ " |
| १४ " | " | ३ " |
| १७ " | " | ४ " |
| १९ " | ज्ये. | १ " |
| २१ " | " | २ " |
| २३ " | " | ३ " |
| २६ " | " | ४ " |
| २८ " | मूल | १ धनु |
| ३० " | " | २ " |
| ३ दिसं. | " | ३ " |
| ६ " | " | ४ " |
| ८ " | पू.षा. | १ " |
| १२ " | " | २ " |
| २२ " | व. " | १ " |
| २५ " | मूल | ४ " |
| २७ " | " | ३ " |
| ३० " | " | २ " |
| **सन् २००४ ई.** | | |
| ३ जन. | व.मूल | १ धनु |
| १० " | मा. " | २ " |
| १५ " | " | ३ " |
| १८ " | " | ४ " |
| २१ " | पू.षा | १ " |
| २४ " | " | २ " |
| २६ " | " | ३ " |
| २९ " | " | ४ " |
| ३१ " | उ.षा. | १ " |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०६० वि.

### बुध नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ३ फर. | उ.षा. | २ मकर |
| ५ " | " | ३ " |
| ७ " | " | ४ " |
| ९ " | श्रवण | १ " |
| ११ " | " | २ " |
| १४ " | " | ३ " |
| १६ " | " | ४ " |
| १८ " | धनि. | १ " |
| २० " | " | २ " |
| २२ " | " | ३ कुंभ |
| २३ " | " | ४ " |
| २५ " | शत. | १ " |
| २७ " | " | २ " |
| २९ " | " | ३ " |
| २ मार्च | " | ४ " |
| ४ " | पू.भा. | १ " |
| ५ " | " | २ " |
| ७ " | " | ३ " |
| ९ " | " | ४ मीन |
| ११ " | उ.भा. | १ " |
| १२ " | " | २ " |
| १४ " | " | ३ " |
| १६ " | " | ४ " |
| १७ " | रेवति | १ " |
| १९ " | " | २ " |
| २१ " | " | ३ " |

### गुरु नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १५ मई | श्लेषा | १ कर्क |
| ८ जून | " | २ " |
| २७ " | " | ३ " |
| १४ जुला. | " | ४ " |
| ३० " | मघा | १ सिंह |
| १४ अग. | " | २ " |
| ३० " | " | ३ " |
| १४ सितं. | " | ४ " |

### गुरु नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ३० सितं. | पू.फा. | १ सिंह |
| १७ अक्टू. | " | २ " |
| ६ नवं. | " | ३ " |
| २ दिसं. | पू.फा. | ४ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| ५ फर. | व.पू.फा. | ३ सिंह |
| ४ मार्च | " | २ " |

### शुक्र नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ३१ मार्च | शत. | २ कुंभ |
| २ अप्रैल | " | ३ " |
| ५ " | " | ४ " |
| ८ " | पू.भा. | १ " |
| ११ " | " | २ " |
| १३ " | " | ३ " |
| १६ " | " | ४ मीन |
| १९ " | उ.भा. | १ " |
| २२ " | " | २ " |
| २५ " | " | ३ " |
| २७ " | " | ४ " |
| ३० " | रेवति | १ " |
| ३ मई | " | २ " |
| ५ " | " | ३ " |
| ८ " | " | ४ " |
| ११ " | अश्वि. | १ मेष |
| १४ " | " | २ " |
| १७ " | " | ३ " |
| १९ " | " | ४ " |
| २२ " | भर. | १ " |
| २५ " | " | २ " |
| २८ " | " | ३ " |
| ३० " | " | ४ " |
| २ जून | कृति. | १ " |
| ५ " | " | २ वृष |
| ७ " | " | ३ " |
| १० " | " | ४ " |

### शुक्र नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १३ जून | रोहि. | १ वृष |
| १६ " | " | २ " |
| १८ " | " | ३ " |
| २१ " | " | ४ " |
| २४ " | मृग. | १ " |
| २७ " | " | २ " |
| २९ " | " | ३ मिथु. |
| २ जुला. | " | ४ " |
| ५ " | आर्द्रा | १ " |
| ८ " | " | २ " |
| १० " | " | ३ " |
| १३ " | " | ४ " |
| १६ " | पुन. | १ " |
| १८ " | " | २ " |
| २१ " | " | ३ " |
| २४ " | " | ४ कर्क |
| २७ " | पुष्य | १ " |
| २९ " | " | २ " |
| १ अग. | " | ३ " |
| ४ " | " | ४ " |
| ६ " | श्लेषा | १ " |
| ९ " | " | २ " |
| १२ " | " | ३ " |
| १४ " | " | ४ " |
| १७ " | मघा | १ सिंह |
| २० " | " | २ " |
| २३ " | " | ३ " |
| २५ " | " | ४ " |
| २८ " | पू.फा. | १ " |
| ३१ " | " | २ " |
| २ सितं. | " | ३ " |
| ५ " | " | ४ " |
| ८ " | उ.फा. | १ " |
| १० " | " | २ कन्या |
| १३ " | " | ३ " |

### शुक्र नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १६ सितं. | उ.फा. | ४ कन्या |
| १८ " | हस्त | १ " |
| २१ " | " | २ " |
| २४ " | " | ३ " |
| २६ " | " | ४ " |
| २९ " | चित्रा | १ " |
| २ अक्टू. | " | २ " |
| ५ " | " | ३ तुला |
| ७ " | " | ४ " |
| १० " | स्वाति | १ " |
| १३ " | " | २ " |
| १५ " | " | ३ " |
| १८ " | " | ४ " |
| २१ " | विशा. | १ " |
| २३ " | " | २ " |
| २६ " | " | ३ " |
| २९ " | " | ४ वृश्चि. |
| ३१ " | अनु | १ " |
| ३ नवं. | " | २ " |
| ६ " | " | ३ " |
| ८ " | " | ४ " |
| ११ " | ज्येष्ठा | १ " |
| १४ " | " | २ " |
| १६ " | " | ३ " |
| १९ " | " | ४ " |
| २२ " | मूल | १ धनु |
| २४ " | " | २ " |
| २७ " | " | ३ " |
| ३० " | " | ४ " |
| ३ दिसं. | पू.षा. | १ " |
| ५ " | " | २ " |
| ८ " | " | ३ " |
| ११ " | " | ४ " |
| १३ " | उ.षा. | १ " |
| १६ " | " | २ मकर |

### शुक्र नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १९ दिसं. | उ.षा. | ३ मकर |
| २१ " | " | ४ " |
| २४ " | श्रवण | १ " |
| २७ " | " | २ " |
| २९ " | " | ३ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| १ जन. | " | ४ " |
| ४ " | धनि. | १ " |
| ७ " | " | २ " |
| ९ " | " | ३ कुंभ |
| १२ " | " | ४ " |
| १५ " | शत. | १ " |
| १८ " | " | २ " |
| २० " | " | ३ " |
| २३ " | " | ४ " |
| २६ " | पू.भा. | १ " |
| २९ " | " | २ " |
| ३१ " | " | ३ " |
| ३ फर. | " | ४ मीन |
| ६ " | उ.भा. | १ " |
| ९ " | " | २ " |
| १२ " | " | ३ " |
| १४ " | " | ४ " |
| १७ " | रेवति | १ " |
| २० " | " | २ " |
| २३ " | " | ३ " |
| २६ " | " | ४ " |
| २९ " | अश्वि. | १ मेष |
| ३ मार्च | " | २ " |
| ६ " | " | ३ " |
| ९ " | " | ४ " |
| १२ " | भर. | १ " |
| १५ " | " | २ " |
| १८ " | " | ३ " |
| २१ " | " | ४ " |

### शनि नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ७ अप्रैल | मृग. | ३ मिथुन |
| १२ मई | " | ४ " |
| ८ जून | आर्द्रा | १ " |
| ४ जुला. | " | २ " |
| ३१ " | " | ३ " |
| ३१ अग. | " | ४ " |
| २२ दिसं. | व. आर्द्रा | ३ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| ४ फर. | आर्द्रा | २ मिथुन |

### राहु नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ३ मई | कृति. | ३ वृष |
| ५ जुला. | " | २ " |
| ६ सितं. | " | १ मेष |
| ८ नवं. | भर. | ४ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| १३ जन. | " | ३ " |
| १३ मार्च | " | २ " |

### केतु नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ३ मई | अनु | १ वृश्चि. |
| ५ जुला. | विशा. | ४ " |
| ६ सितं. | " | ३ तुला |
| ८ नवं. | " | २ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| १३ जन. | विशा. | १ तुला |
| १३ मार्च | स्वाति | ४ " |

### हर्शल नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| ३१ अग. | व.धनि. | ४ कुंभ |
| सन् २००४ ई. | | |
| १२ जन. | मा.शत. | १ " |
| १२ मार्च | " | २ " |

### नेपच्यून नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| २७ सितं. | व.श्रवण | २ मकर |
| १७ नवं. | मा." | ३ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| २ मार्च | श्रवण | ४ मकर |

### प्लूटो नक्षत्र चार

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| २५ अग. | व.ज्येष्ठा | २ वृश्चि. |
| २ सितं. | मा." | ३ " |
| सन् २००४ ई. | | |
| ३ जन. | " | ४ " |

### मंगल का उदयास्त

मंगल इस वर्ष सं. २०६० में अस्त नहीं होगा।

### बुध का उदयास्त

| | | |
|---|---|---|
| २६ अप्रैल | अस्त | पश्चि. |
| १७ मई | उदय | पूर्व |
| २२ जून | अस्त | " |
| १९ जुलाई | उदय | पश्चि. |
| ३ सितं. | अस्त | पश्चि. |
| २० " | उदय | पूर्व |
| ५ अक्टू. | अस्त | " |
| २० नवं. | उदय | पश्चि. |
| २० दिसं. | अस्त | पश्चि. |
| सन् २००४ ई. | | |
| ३ जन. | उदय | पूर्व |
| १३ फर. | अस्त | पूर्व |
| २० मार्च | उदय | पश्चि. |

### गुरु का उदयास्त

| | | |
|---|---|---|
| ९ अगस्त | अस्त | पश्चि. |
| ४ सितं. | उदय | पूर्व |

### शुक्र का उदयास्त

| | | |
|---|---|---|
| २७ जुलाई | अस्त | पूर्व |
| ४ अक्टू. | उदय | पश्चि. |

### शनि का उदयास्त

| | | |
|---|---|---|
| ४ जून | अस्त | पश्चि. |
| ४ जुलाई | उदय | पूर्व |

### मंगल वक्री-मार्गी

| ता. मास | नक्षत्र | पाद |
|---|---|---|
| १९ जुला. | | वक्री |
| १७ सितं. | मार्गी | |

### बुध वक्री-मार्गी

| | |
|---|---|
| २६ अप्रैल | वक्री |
| २० मई | मार्गी |
| २८ अगस्त | वक्री |
| २१ सितं. | मार्गी |
| १७ दिसं. | वक्री |
| सन् २००४ ई. | |
| ८ जन. | मार्गी |

### गुरु वक्री-मार्गी

| | |
|---|---|
| ५ अप्रैल | मार्गी |
| सन् २००४ ई. | |
| ६ जन. | वक्री |

### शुक्र वक्री-मार्गी

शुक्र इस वर्ष सं. २०६० में वक्री नहीं होगा।

### शनि वक्री-मार्गी

| | |
|---|---|
| २५ अक्टू. | वक्री |
| सन् २००४ ई. | |
| ७ मार्च | मार्गी |

### हर्शल वक्री-मार्गी

| | |
|---|---|
| ७ जून | वक्री |
| ८ नवंबर | मार्गी |

### नेपच्यून वक्री-मार्गी

| | |
|---|---|
| १५ मई | वक्री |
| २२ अक्टू. | मार्गी |

### प्लूटो वक्री-मार्गी

| | |
|---|---|
| २८ अगस्त | मार्गी |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# साढ़े पांच बजे ( प्रातः ५ बजकर ३० मिनट ) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाइम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से १५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३/२९/१४/४३ राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

कृपया पाठक इन (❖ को $\frac{1}{4}$) (★ को $\frac{1}{2}$) (● को $\frac{3}{4}$) पढ़ें।

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम** के ८ बजकर ४५ मिनट के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

**मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य:** १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं-यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

| | रा. | अं. | क. | वि. |
|---|---|---|---|---|
| १६ ता. को सूर्य स्पष्ट | ३ | २९ | ३५ | ४५ |
| १५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-) | ३ | २८ | ३८ | ०४ |
| | ० | ० | ५७ | ४१ |

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७×६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्त राल १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अतः १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३** बना। इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

**वक्री ग्रहों के लिए:-** शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से १६ अगस्त के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(१-४७)=११-१२-५६-३५ अतः **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

| दैनिक गति (२४घंटे) | गति (३०मि.) क. वि. | गति (१ घं.) क. वि. | गति (२ घं.) क. वि. | गति (३ घं.) क. वि. | गति (४ घं.) क. वि. | गति (५ घं.) क. वि. | गति (६ घं.) क. वि. | गति (७ घं.) क. वि. | गति (८ घं.) क. वि. | गति (९ घं.) क. वि. | गति (१०घं.) क. वि. | गति (११घं.) क. वि. | गति (१२घं.) क. वि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ०।०१❖ | ०।०२★ | ०।०५ | ०।०७★ | ०।१० | ०।१२★ | ०।१५ | ०।१७★ | ०।२० | ०।२२★ | ०।२५ | ०।२७★ | ०।३० |
| २ | ०।०२★ | ०।०५ | ०।१० | ०।१५ | ०।२० | ०।२५ | ०।३० | ०।३५ | ०।४० | ०।४५ | ०।५० | ०।५५ | १।०० |
| ३ | ०।०३● | ०।०७★ | ०।१५ | ०।२२★ | ०।३० | ०।३७★ | ०।४५ | ०।५२★ | १।०० | १।०७★ | १।१५ | १।२२★ | १।३० |
| ४ | ०।०५ | ०।१० | ०।२० | ०।३० | ०।४० | ०।५० | १।०० | १।१० | १।२० | १।३० | १।४० | १।५० | २।०० |
| ५ | ०।०६❖ | ०।१२★ | ०।२५ | ०।३७★ | ०।५० | १।०२★ | १।१५ | १।२७★ | १।४० | १।५२★ | २।०५ | २।१७★ | २।३० |
| ६ | ०।०७★ | ०।१५ | ०।३० | ०।४५ | १।०० | १।१५ | १।३० | १।४५ | २।०० | २।१५ | २।३० | २।४५ | ३।०० |
| ७ | ०।०८● | ०।१७★ | ०।३५ | ०।५२★ | १।१० | १।२७★ | १।४५ | २।०२★ | २।२० | २।३७★ | २।५५ | ३।१२★ | ३।३० |
| ८ | ०।१० | ०।२० | ०।४० | १।०० | १।२० | १।४० | २।०० | २।२० | २।४० | ३।०० | ३।२० | ३।४० | ४।०० |
| ९ | ०।११❖ | ०।२२★ | ०।४५ | १।०७★ | १।३० | १।५२★ | २।१५ | २।३७★ | ३।०० | ३।२२★ | ३।४५ | ४।०७★ | ४।३० |
| १० | ०।१२★ | ०।२५ | ०।५० | १।१५ | १।४० | २।०५ | २।३० | २।५५ | ३।२० | ३।४५ | ४।१० | ४।३५ | ५।०० |
| ११ | ०।१३● | ०।२७★ | ०।५५ | १।२२★ | १।५० | २।१७★ | २।४५ | ३।१२★ | ३।४० | ४।०७★ | ४।३५ | ५।०२★ | ५।३० |
| १२ | ०।१५ | ०।३० | १।०० | १।३० | २।०० | २।३० | ३।०० | ३।३० | ४।०० | ४।३० | ५।०० | ५।३० | ६।०० |
| १३ | ०।१६❖ | ०।३२★ | १।०५ | १।३७★ | २।१० | २।४२★ | ३।१५ | ३।४७★ | ४।२० | ४।५२★ | ५।२५ | ५।५७★ | ६।३० |
| १४ | ०।१७★ | ०।३५ | १।१० | १।४५ | २।२० | २।५५ | ३।३० | ४।०५ | ४।४० | ५।१५ | ५।५० | ६।२५ | ७।०० |
| १५ | ०।१८● | ०।३७★ | १।१५ | १।५२★ | २।३० | ३।०७★ | ३।४५ | ४।२२★ | ५।०० | ५।३७★ | ६।१५ | ६।५२★ | ७।३० |
| १६ | ०।२० | ०।४० | १।२० | २।०० | २।४० | ३।२० | ४।०० | ४।४० | ५।२० | ६।०० | ६।४० | ७।२० | ८।०० |
| १७ | ०।२१❖ | ०।४२★ | १।२५ | २।०७★ | २।५० | ३।३२★ | ४।१५ | ४।५७★ | ५।४० | ६।२२★ | ७।०५ | ७।४७★ | ८।३० |
| १८ | ०।२२★ | ०।४५ | १।३० | २।१५ | ३।०० | ३।४५ | ४।३० | ५।१५ | ६।०० | ६।४५ | ७।३० | ८।१५ | ९।०० |
| १९ | ०।२३● | ०।४७★ | १।३५ | २।२२★ | ३।१० | ३।५७★ | ४।४५ | ५।३२★ | ६।२० | ७।०७★ | ७।५५ | ८।४२★ | ९।३० |
| २० | ०।२५ | ०।५० | १।४० | २।३० | ३।२० | ४।१० | ५।०० | ५।५० | ६।४० | ७।३० | ८।२० | ९।१० | १०।०० |
| २१ | ०।२६❖ | ०।५२★ | १।४५ | २।३७★ | ३।३० | ४।२२★ | ५।१५ | ६।०७★ | ७।०० | ७।५२★ | ८।४५ | ९।३७★ | १०।३० |
| २२ | ०।२७★ | ०।५५ | १।५० | २।४५ | ३।४० | ४।३५ | ५।३० | ६।२५ | ७।२० | ८।१५ | ९।१० | १०।०५ | ११।०० |
| २३ | ०।२८● | ०।५७★ | १।५५ | २।५२★ | ३।५० | ४।४७★ | ५।४५ | ६।४२★ | ७।४० | ८।३७★ | ९।३५ | १०।३२★ | ११।३० |
| २४ | ०।३० | १।०० | २।०० | ३।०० | ४।०० | ५।०० | ६।०० | ७।०० | ८।०० | ९।०० | १०।०० | ११।०० | १२।०० |
| २५ | ०।३१❖ | १।०२★ | २।०५ | ३।०७★ | ४।१० | ५।१२★ | ६।१५ | ७।१७★ | ८।२० | ९।२२★ | १०।२५ | ११।२७★ | १२।३० |
| २६ | ०।३२★ | १।०५ | २।१० | ३।१५ | ४।२० | ५।२५ | ६।३० | ७।३५ | ८।४० | ९।४५ | १०।५० | ११।५५ | १३।०० |
| २७ | ०।३३● | १।०७★ | २।१५ | ३।२२★ | ४।३० | ५।३७★ | ६।४५ | ७।५२★ | ९।०० | १०।०७★ | ११।१५ | १२।२२★ | १३।३० |
| २८ | ०।३५ | १।१० | २।२० | ३।३० | ४।४० | ५।५० | ७।०० | ८।१० | ९।२० | १०।३० | ११।४० | १२।५० | १४।०० |
| २९ | ०।३६❖ | १।१२★ | २।२५ | ३।३७★ | ४।५० | ६।०२★ | ७।१५ | ८।२७★ | ९।४० | १०।५२★ | १२।०५ | १३।१७★ | १४।३० |

| दैनिक गति (२४घंटे) | गति (३०मि.) क. वि. | गति (१ घं.) क. वि. | गति (२ घं.) क. वि. | गति (३ घं.) क. वि. | गति (४ घं.) क. वि. | गति (५ घं.) क. वि. | गति (६ घं.) क. वि. | गति (७ घं.) क. वि. | गति (८ घं.) क. वि. | गति (९घं.) क. वि. | गति (१०घं.) क. वि. | गति (११घं.) क. वि. | गति (१२घं.) क. वि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३१ | ०।३८● | १।१७★ | २।३५ | ३।५२★ | ५।१० | ६।२७★ | ७।४५ | ९।०२★ | १०।२० | ११।३७★ | १२।५५ | १४।१२★ | १५।३० |
| ३२ | ०।४० | १।२० | २।४० | ४।०० | ५।२० | ६।४० | ८।०० | ९।२० | १०।४० | १२।०० | १३।२० | १४।४० | १६।०० |
| ३३ | ०।४१❖ | १।२२★ | २।४५ | ४।०७★ | ५।३० | ६।५२★ | ८।१५ | ९।३७★ | ११।०० | १२।२२★ | १३।४५ | १५।०७★ | १६।३० |
| ३४ | ०।४२★ | १।२५ | २।५० | ४।१५ | ५।४० | ७।०५ | ८।३० | ९।५५ | ११।२० | १२।४५ | १४।१० | १५।३५ | १७।०० |
| ३५ | ०।४३● | १।२७★ | २।५५ | ४।२२★ | ५।५० | ७।१७★ | ८।४५ | १०।१२★ | ११।४० | १३।०७★ | १४।३५ | १६।०२★ | १७।३० |
| ३६ | ०।४५ | १।३० | ३।०० | ४।३० | ६।०० | ७।३० | ९।०० | १०।३० | १२।०० | १३।३० | १५।०० | १६।३० | १८।०० |
| ३७ | ०।४६❖ | १।३२★ | ३।०५ | ४।३७★ | ६।१० | ७।४२★ | ९।१५ | १०।४७★ | १२।२० | १३।५२★ | १५।२५ | १६।५७★ | १८।३० |
| ३८ | ०।४७★ | १।३५ | ३।१० | ४।४५ | ६।२० | ७।५५ | ९।३० | ११।०५ | १२।४० | १४।१५ | १५।५० | १७।२५ | १९।०० |
| ३९ | ०।४८● | १।३७★ | ३।१५ | ४।५२★ | ६।३० | ८।०७★ | ९।४५ | ११।२२★ | १३।०० | १४।३७★ | १६।१५ | १७।५२★ | १९।३० |
| ४० | ०।५० | १।४० | ३।२० | ५।०० | ६।४० | ८।२० | १०।०० | ११।४० | १३।२० | १५।०० | १६।४० | १८।२० | २०।०० |
| ४१ | ०।५१❖ | १।४२★ | ३।२५ | ५।०७★ | ६।५० | ८।३२★ | १०।१५ | ११।५७★ | १३।४० | १५।२२★ | १७।०५ | १८।४७★ | २०।३० |
| ४२ | ०।५२★ | १।४५ | ३।३० | ५।१५ | ७।०० | ८।४५ | १०।३० | १२।१५ | १४।०० | १५।४५ | १७।३० | १९।१५ | २१।०० |
| ४३ | ०।५३● | १।४७★ | ३।३५ | ५।२२★ | ७।१० | ८।५७★ | १०।४५ | १२।३२★ | १४।२० | १६।०७★ | १७।५५ | १९।४२★ | २१।३० |
| ४४ | ०।५५ | १।५० | ३।४० | ५।३० | ७।२० | ९।१० | ११।०० | १२।५० | १४।४० | १६।३० | १८।२० | २०।१० | २२।०० |
| ४५ | ०।५६❖ | १।५२★ | ३।४५ | ५।३७★ | ७।३० | ९।२२★ | ११।१५ | १३।०७★ | १५।०० | १६।५२★ | १८।४५ | २०।३७★ | २२।३० |
| ४६ | ०।५७★ | १।५५ | ३।५० | ५।४५ | ७।४० | ९।३५ | ११।३० | १३।२५ | १५।२० | १७।१५ | १९।१० | २१।०५ | २३।०० |
| ४७ | ०।५८● | १।५७★ | ३।५५ | ५।५२★ | ७।५० | ९।४७★ | ११।४५ | १३।४२★ | १५।४० | १७।३७★ | १९।३५ | २१।३२★ | २३।३० |
| ४८ | १।०० | २।०० | ४।०० | ६।०० | ८।०० | १०।०० | १२।०० | १४।०० | १६।०० | १८।०० | २०।०० | २२।०० | २४।०० |
| ४९ | १।०१❖ | २।०२★ | ४।०५ | ६।०७★ | ८।१० | १०।१२★ | १२।१५ | १४।१७★ | १६।२० | १८।२२★ | २०।२५ | २२।२७★ | २४।३० |
| ५० | १।०२★ | २।०५ | ४।१० | ६।१५ | ८।२० | १०।२५ | १२।३० | १४।३५ | १६।४० | १८।४५ | २०।५० | २२।५५ | २५।०० |
| ५१ | १।०३● | २।०७★ | ४।१५ | ६।२२★ | ८।३० | १०।३७★ | १२।४५ | १४।५२★ | १७।०० | १९।०७★ | २१।१५ | २३।२२★ | २५।३० |
| ५२ | १।०५ | २।१० | ४।२० | ६।३० | ८।४० | १०।५० | १३।०० | १५।१० | १७।२० | १९।३० | २१।४० | २३।५० | २६।०० |
| ५३ | १।०६❖ | २।१२★ | ४।२५ | ६।३७★ | ८।५० | ११।०२★ | १३।१५ | १५।२७★ | १७।४० | १९।५२★ | २२।०५ | २४।१७★ | २६।३० |
| ५४ | १।०७★ | २।१५ | ४।३० | ६।४५ | ९।०० | ११।१५ | १३।३० | १५।४५ | १८।०० | २०।१५ | २२।३० | २४।४५ | २७।०० |
| ५५ | १।०८● | २।१७★ | ४।३५ | ६।५२★ | ९।१० | ११।२७★ | १३।४५ | १६।०२★ | १८।२० | २०।३७★ | २२।५५ | २५।१२★ | २७।३० |
| ५६ | १।१० | २।२० | ४।४० | ७।०० | ९।२० | ११।४० | १४।०० | १६।२० | १८।४० | २१।०० | २३।२० | २५।४० | २८।०० |
| ५७ | १।११❖ | २।२२★ | ४।४५ | ७।०७★ | ९।३० | ११।५२★ | १४।१५ | १६।३७★ | १९।०० | २१।२२★ | २३।४५ | २६।०७★ | २८।३० |
| ५८ | १।१२★ | २।२५ | ४।५० | ७।१५ | ९।४० | १२।०५ | १४।३० | १६।५५ | १९।२० | २१।४५ | २४।१० | २६।३५ | २९।०० |
| ५९ | १।१३● | २।२७★ | ४।५५ | ७।२२★ | ९।५० | १२।१७★ | १४।४५ | १७।१२★ | १९।४० | २२।०७★ | २४।३५ | २७।०२★ | २९।३० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

# ❊ दैनिक ग्रह-स्पष्ट ❊

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रातः ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-इटली के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं. टा. से अन्तर - ४ घं. ३० मि. है। अतः ये ग्रह स्पष्ट इटली के स्टैं. टा. के अनुसार रात्रि १ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

## अप्रैल सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।५२"

| ता. अप्रैल | सूर्य रा. अं. क. वि. | चन्द्र रा. अं. क. वि. | मंगल रा. अं. क. वि. | बुध रा. अं. क. वि. | गुरु (वक्री) रा. अं. क. वि. | शुक्र रा. अं. क. वि. | शनि रा. अं. क. वि. | राहु रा. अं. क. वि. | हर्शल रा. अं. क. वि. | नेपच्यून रा. अं. क. वि. | प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि. | ता. अप्रैल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ११ १७ ५६ ३० | ११ २० ०४ ०९ | ०८ २३ ५० ३४ | ११ २९ १४ २४ | ०३ १४ १० १३ | १० १२ २३ २० | ०१ २९ ३५ ४९ | ०१ ०८ १८ ५७ | १० ०७ १४ २८ | ०९ १८ ४६ ०७ | ०७ २६ ०१ ३२ | २ |
| ३ | ११ १८ ५५ ४३ | ०० ०१ ५८ १३ | ०८ २४ २७ ५४ | ०० ०१ ११ २५ | ०३ १४ ०९ ५४ | १० १३ ३५ २६ | ०१ २९ ३९ ५५ | ०१ ०८ १५ ४७ | १० ०७ १७ १६ | ०९ १८ ४७ २९ | ०७ २६ ०१ १२ | ३ |
| ४ | ११ १९ ५४ ५३ | ०० १३ ४७ ३९ | ०८ २५ ०५ ११ | ०० ०३ ०६ २१ | ०३ १४ ०९ ४७ | १० १४ ४७ ३३ | ०१ २९ ४४ ०७ | ०१ ०८ १२ ३६ | १० ०७ २० ०२ | ०९ १८ ४८ ४९ | ०७ २६ ०० ५० | ४ |
| ५ | ११ २० ५४ ०१ | ०० २५ ३४ २५ | ०८ २५ ४२ २५ | ०० ०४ ५८ ४९ | मा.०३ १४ ०९ ५१ | १० १५ ५९ ४२ | ०१ २९ ४८ २४ | ०१ ०८ ०९ २५ | १० ०७ २२ ४६ | ०९ १८ ५० ०८ | ०७ २६ ०० २५ | ५ |
| ६ | ११ २१ ५३ ०७ | ०१ ०७ २१ ५२ | ०८ २६ १९ ३५ | ०० ०६ ४८ २५ | ०३ १४ १० ०७ | १० १७ ११ ५१ | ०१ २९ ५२ ४६ | ०१ ०८ ०६ १५ | १० ०७ २५ २९ | ०९ १८ ५१ २४ | ०७ २५ ५९ ५९ | ६ |
| ७ | ११ २२ ५२ ११ | ०१ १९ १३ ३० | ०८ २६ ५६ ४२ | ०० ०८ ३४ ४७ | ०३ १४ १० ३४ | १० १८ २४ ०३ | ०१ २९ ५७ १४ | ०१ ०८ ०३ ०४ | १० ०७ २८ १० | ०९ १८ ५२ ३९ | ०७ २५ ५९ ३१ | ७ |
| ८ | ११ २३ ५१ १२ | ०२ ०१ १३ ३१ | ०८ २७ ३३ ४६ | ०० १० १७ ३४ | ०३ १४ ११ १२ | १० १९ ३६ १५ | ०२ ०० ०१ ४६ | ०१ ०७ ५९ ५३ | १० ०७ ३० ४९ | ०९ १८ ५३ ५३ | ०७ २५ ५९ ०१ | ८ |
| ९ | ११ २४ ५० ११ | ०२ १३ २६ ३७ | ०८ २८ १० ४७ | ०० ११ ५६ २६ | ०३ १४ १२ ०२ | १० २० ४८ २९ | ०२ ०० ०६ २४ | ०१ ०७ ५६ ४२ | १० ०७ ३३ २६ | ०९ १८ ५५ ०४ | ०७ २५ ५८ २९ | ९ |
| १० | ११ २५ ४९ ०८ | ०२ २५ ५७ ४३ | ०८ २८ ४७ ४४ | ०० १३ ३१ ०४ | ०३ १४ १३ ०३ | १० २२ ०० ४४ | ०२ ०० ११ ०७ | ०१ ०७ ५३ ३१ | १० ०७ ३६ ०० | ०९ १८ ५६ १४ | ०७ २५ ५७ ५६ | १० |
| ११ | ११ २६ ४८ ०३ | ०३ ०८ ५१ २७ | ०८ २९ २४ ३७ | ०० १५ ०१ १२ | ०३ १४ १४ १६ | १० २३ १३ ०० | ०२ ०० १५ ५४ | ०१ ०७ ५० २० | १० ०७ ३८ ३३ | ०९ १८ ५७ २२ | ०७ २५ ५७ २० | ११ |
| १२ | ११ २७ ४६ ५५ | ०३ २२ ११ ४२ | ०९ ०० ०१ २७ | ०० १६ २६ ३३ | ०३ १४ १५ ३९ | १० २४ २५ १७ | ०२ ०० २० ४६ | ०१ ०७ [illegible] १० | १० ०७ ४१ ०४ | ०९ १८ ५८ २८ | ०७ २५ ५६ ४३ | १२ |
| १३ | ११ २८ ४५ ४५ | ०४ ०६ ०० ४२ | ०९ ०० ३८ १३ | ०० १७ ४६ ५५ | ०३ १४ १७ १४ | १० २५ ३७ ३५ | ०२ ०० २५ ४३ | ०१ ०७ ४३ ५९ | १० ०७ ४३ ३३ | ०९ १८ ५९ ३३ | ०७ २५ ५६ ०४ | १३ |
| १४ | ११ २९ ४४ ३३ | ०४ २० १८ २० | ०९ ०१ १४ ५६ | ०० १९ ०२ ०६ | ०३ १४ १८ ५९ | १० २६ ४९ ५५ | ०२ ०० ३० ४५ | ०१ ०७ ४० ४८ | १० ०७ ४५ ५९ | ०९ १९ ०० ३५ | ०७ २५ ५५ २३ | १४ |
| १५ | ०० ०० ४३ १८ | ०५ ०५ ०१ २७ | ०९ ०१ ५१ ३५ | ०० २० ११ ५६ | ०३ १४ २० ५६ | १० २८ ०२ १५ | ०२ ०० ३५ ५१ | ०१ ०७ ३७ ३८ | १० ०७ ४८ २४ | ०९ १९ ०१ ३६ | ०७ २५ ५४ ४१ | १५ |
| १६ | ०० ०१ ४२ ०१ | ०५ २० ०३ ४५ | ०९ ०२ २८ ११ | ०० २१ १६ १५ | ०३ १४ २३ ०३ | १० २९ १४ ३७ | ०२ ०० ४१ ०२ | ०१ ०७ ३४ २७ | १० ०७ ५० ४६ | ०९ १९ ०२ ३४ | ०७ २५ ५३ ५७ | १६ |
| १७ | ०० ०२ ४० ४३ | ०६ ०५ १६ २३ | ०९ ०३ ०४ ४२ | ०० २२ १४ ५७ | ०३ १४ २५ २२ | ११ ०० २७ ०० | ०२ ०० ४६ १७ | ०१ ०७ ३१ १६ | १० ०७ ५३ ०६ | ०९ १९ ०३ ३२ | ०७ २५ ५३ ११ | १७ |
| १८ | ०० ०३ ३९ २२ | ०६ २० २९ १६ | ०९ ०३ ४१ १० | ०० २३ ०७ ५४ | ०३ १४ २७ ५१ | ११ ०१ ३९ २४ | ०२ ०० ५१ ३७ | ०१ ०७ २८ ०५ | १० ०७ ५५ २४ | ०९ १९ ०४ २७ | ०७ २५ ५२ २३ | १८ |
| १९ | ०० ०४ ३८ ०० | ०७ ०५ ३२ ३९ | ०९ ०४ १७ ३३ | ०० २३ ५५ ०० | ०३ १४ ३० ३० | ११ ०२ ५१ ५० | ०२ ०० ५७ ०१ | ०१ ०७ २४ ५५ | १० ०७ ५७ ४० | ०९ १९ ०५ २१ | ०७ २५ ५१ ३४ | १९ |
| २० | ०० ०५ ३६ ३५ | ०७ २० १८ ३८ | ०९ ०४ ५३ ५३ | ०० २४ ३६ १३ | ०३ १४ ३३ २० | ११ ०४ ०४ १६ | ०२ ०१ ०२ ३० | ०१ ०७ २१ ४४ | १० ०७ ५९ ५४ | ०९ १९ ०६ १२ | ०७ २५ ५० ४३ | २० |
| २१ | ०० ०६ ३५ १० | ०८ ०४ ४१ ५६ | ०९ ०५ ३० ०८ | ०० २५ ११ २९ | ०३ १४ ३६ २१ | ११ ०५ १६ ४४ | ०२ ०१ ०८ ०२ | ०१ ०७ १८ ३३ | १० ०८ ०२ ०५ | ०९ १९ ०७ ०२ | ०७ २५ ४९ ५१ | २१ |
| २२ | ०० ०७ ३३ ४२ | ०८ १८ ४० १२ | ०९ ०६ ०६ १८ | ०० २५ ४० ४६ | ०३ १४ ३९ ३२ | ११ ०६ २९ १३ | ०२ ०१ १३ ३९ | ०१ ०७ १५ २२ | १० ०८ ०४ १४ | ०९ १९ ०७ ५० | ०७ २५ ४८ ५७ | २२ |
| २३ | ०० ०८ ३२ १३ | ०९ ०२ १३ २१ | ०९ ०६ ४२ २४ | ०० २६ ०४ ०५ | ०३ १४ ४२ ५४ | ११ ०७ ४१ ४३ | ०२ ०१ १९ २० | ०१ ०७ १२ ११ | १० ०८ ०६ २० | ०९ १९ ०८ ३६ | ०७ २५ ४८ ०१ | २३ |
| २४ | ०० ०९ ३० ४२ | ०९ १५ २३ ०७ | ०९ ०७ १८ २५ | ०० २६ २१ २६ | ०३ १४ ४६ २६ | ११ ०८ ५४ १४ | ०२ ०१ २५ ०५ | ०१ ०७ ०९ ०० | १० ०८ ०८ २४ | ०९ १९ ०९ २० | ०७ २५ ४७ ०४ | २४ |
| २५ | ०० १० २९ १० | ०९ २८ १२ ११ | ०९ ०७ ५४ २१ | ०० २६ ३२ ५४ | ०३ १४ ५० ०८ | ११ १० ०६ ४७ | ०२ ०१ ३० ४५ | ०१ ०७ ०५ ५० | १० ०८ १० २६ | ०९ १९ १० ०२ | ०७ २५ ४६ ०५ | २५ |
| २६ | ०० ११ २७ ३६ | १० १० ४३ ४७ | ०९ ०८ ३० ११ | व०० २६ ३८ ३५ | ०३ १४ ५४ ०० | ११ ११ १९ २० | ०२ ०१ ३६ ४७ | ०१ ०७ ०२ ३९ | १० ०८ १२ २६ | ०९ १९ १० ४२ | ०७ २५ ४५ ०५ | २६ |
| २७ | ०० १२ २६ ०० | १० २३ ०१ १३ | ०९ ०९ ०५ ५६ | ०० २६ ३८ ३६ | ०३ १४ ५८ ०३ | ११ १२ ३१ ५४ | ०२ ०१ ४२ ४४ | ०१ ०६ ५९ २८ | १० ०८ १४ २२ | ०९ १९ ११ २० | ०७ २५ ४४ ०३ | २७ |
| २८ | ०० १३ २४ २३ | ११ ०५ ०७ ३८ | ०९ ०९ ४१ ३५ | ०० २६ ३३ ०९ | ०३ १५ ०२ १५ | ११ १३ ४४ २९ | ०२ ०१ ४८ ४५ | ०१ ०६ ५६ १८ | १० ०८ १६ १७ | ०९ १९ ११ ५७ | ०७ २५ ४३ ०० | २८ |
| २९ | ०० १४ २२ ४४ | ११ १७ ०५ ४९ | ०९ १० १७ ०८ | ०० २६ २२ २८ | ०३ १५ ०६ ३८ | ११ १४ ५७ ०५ | ०२ ०१ ५४ ५० | ०१ ०६ ५३ ०७ | १० ०८ १८ ०९ | ०९ १९ १२ ३१ | ०७ २५ ४१ ५६ | २९ |
| ३० | ०० १५ २१ ०३ | ११ २८ ५८ १३ | ०९ १० ५२ ३५ | ०० २६ ०६ ५३ | ०३ १५ ११ १० | ११ १६ ०९ ४१ | ०२ ०२ ०० ५८ | ०१ ०६ ४९ ५६ | १० ०८ १९ ५८ | ०९ १९ १३ ०३ | ०७ २५ ४० ५० | ३० |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

## मई सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।५६"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध (वक्री) | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल | नेपच्यून | प्लूटो (वक्री) | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मई | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | मई |
| १ | ०० १६ १९ २१ | ०० १० ४७ ०५ | ०९ ११ २७ ५६ | ०० २५ ४६ ४४ | ०३ १५ १५ ५२ | ११ १७ २२ १८ | ०२ ०२ ७ १० | ०१ ०६ ४६ ४६ | १० ०८ २१ ४५ | ९ १९ १३ ३४ | ७ २५ ३९ ४२ | १ |
| २ | ०० १७ १७ ३७ | ०० २२ ३४ ३३ | ०९ १२ ०३ ११ | ०० २५ २२ २८ | ०३ १५ २० ४३ | ११ १८ ३४ ५६ | ०२ ०२ १३ २५ | ०१ ०६ ४३ ३५ | १० ०८ २३ २९ | ९ १९ १४ ०२ | ७ २५ ३८ ३३ | २ |
| ३ | ०० १८ १५ ५१ | ०१ ०४ २२ ४७ | ०९ १२ ३८ १८ | ०० २४ ५४ ३२ | ०३ १५ २५ ४५ | ११ १९ ४७ ३५ | ०२ ०२ १९ ४४ | ०१ ०६ ४० २४ | १० ०८ २५ ११ | ९ १९ १४ २९ | ७ २५ ३७ २३ | ३ |
| ४ | ०० १९ १४ ०४ | ०१ १६ १४ ०८ | ०९ १३ १३ १९ | ०० २४ २३ ३० | ०३ १५ ३० ५५ | ११ २१ ०० १४ | ०२ ०२ २६ ०६ | ०१ ०६ ३७ १३ | १० ०८ २६ ५० | ९ १९ १४ ५३ | ७ २५ ३६ १२ | ४ |
| ५ | ०० २० १२ १४ | ०१ २८ ११ १५ | ०९ १३ ४८ १३ | ०० २३ ४४ ५७ | ०३ १५ ३६ १५ | ११ २२ १२ ५३ | ०२ ०२ ३२ ३२ | ०१ ०६ ३४ २ | १० ०८ २८ २६ | ९ १९ १५ १६ | ७ २५ ३४ ५९ | ५ |
| ६ | ०० २१ १० २३ | ०२ १० १७ ०४ | ०९ १४ २३ ०० | ०० २३ १४ ३० | ०३ १५ ४१ ४४ | ११ २३ २५ ३३ | ०२ ०२ ३९ ०१ | ०१ ०६ ३० ५१ | १० ०८ ३० ०० | ९ १९ १५ ३६ | ७ २५ ३३ ४५ | ६ |
| ७ | ०९ २२ ०८ ३० | ०२ २२ ३४ ५६ | ०९ १४ ५७ ३९ | ०० २२ ३७ ४९ | ०३ १५ ४७ २३ | ११ २४ ३८ १४ | ०२ ०२ ४५ ३३ | ०१ ०६ २७ ४१ | १० ०८ ३१ ३१ | ९ १९ १५ ५५ | ७ २५ ३२ ३० | ७ |
| ८ | ०० २३ ०६ ३५ | ०३ ०५ ०८ २७ | ०९ १५ ३२ ११ | ०० २२ ०० ३२ | ०३ १५ ५३ १० | ११ २५ ५० ५५ | ०२ ०२ ५२ ०८ | ०१ ०६ २४ ३० | १० ०८ ३२ ५९ | ९ १९ १६ ११ | ७ २५ ३१ १४ | ८ |
| ९ | ०० २४ ०४ ३८ | ०३ १८ ०१ १४ | ०९ १६ ०६ ३६ | ०० २१ २३ १९ | ०३ १५ ५९ ०७ | ११ २७ ०३ ३६ | ०२ ०२ ५८ ४६ | ०१ ०६ २१ १९ | १० ०८ ३४ २५ | ९ १९ १६ २६ | ७ २५ २९ ५७ | ९ |
| १० | ०० २५ ०२ ३९ | ०४ ०१ १६ ३५ | ०९ १६ ४० ५२ | ०० २० ४६ ५१ | ०३ १६ ०५ १२ | ११ २८ १६ १८ | ०२ ०३ ०५ २७ | ०१ ०६ १८ ०८ | १० ०८ ३५ ४७ | ९ १९ १६ ३९ | ७ २५ २८ ३८ | १० |
| ११ | ०० २६ ०० ३८ | ०४ १४ ५६ ५१ | ०९ १७ १५ ०१ | ०० २० ११ ४३ | ०३ १६ ११ २६ | ११ २९ २९ ०० | ०२ ०३ १२ ११ | ०१ ०६ १४ ५८ | १० ०८ ३७ ०७ | ९ १९ १६ ४९ | ७ २५ २७ १९ | ११ |
| १२ | ०० २६ ५८ ३५ | ०४ २९ ०२ ५६ | ०९ १७ ४९ ०२ | ०० १९ ३८ ३१ | ०३ १६ १७ ४८ | ०० ०० ४१ ४३ | ०२ ०३ १८ ५८ | ०१ ०६ ११ ४७ | १० ०८ ३८ २५ | ९ १९ १६ ५८ | ७ २५ २५ ५८ | १२ |
| १३ | ०० २७ ५६ ३० | ०५ १३ ३३ २९ | ०९ १८ २२ ५५ | ०० १९ ०७ ४७ | ०३ १६ २४ १९ | ०० ०१ ५४ २६ | ०२ ०३ २५ ४७ | ०१ ०६ ०८ ३६ | १० ०८ ३९ ३९ | ९ १९ १७ ०५ | ७ २५ २४ ३६ | १३ |
| १४ | ०० २८ ५४ २४ | ०५ २८ २४ ३९ | ०९ १८ ५६ ३९ | ०० १८ ३९ ५९ | ०३ १६ ३० ५८ | ०० ०३ ०७ १० | ०२ ०३ ३२ ३९ | ०१ ०६ ०५ २५ | १० २८ ४० ५१ | ९ १९ १७ ०९ | ७ २५ २३ १४ | १४ |
| १५ | ०० २९ ५२ १६ | ०६ १३ २९ ५७ | ०९ १९ ३० १४ | ०० १८ १५ ३३ | ०३ १६ ३७ ४६ | ०० ०४ १९ ५४ | ०२ ०३ ३९ ३४ | ०१ ०६ ०२ १५ | १० ०८ ४२ ०० | व.९ १९ १७ १२ | ७ २५ २१ ५० | १५ |
| १६ | ०१ ०० ५० ०६ | ०६ २८ ४० ५३ | ०९ २० ०३ ४२ | ०० १७ ५४ ४९ | ०३ १६ ४४ ४१ | ०० ०५ ३२ ३९ | ०२ ०३ ४६ ३२ | ०१ ०५ ५९ ०४ | १० ०८ ४३ ०६ | ९ १९ १७ १३ | ७ २५ २० २६ | १६ |
| १७ | ०१ ०१ ४७ ५५ | ०७ १३ ४८ ०२ | ०९ २० ३७ ०१ | ०० १७ ३८ ०४ | ०३ १६ ५१ ४५ | ०० ०६ ४५ २५ | ०२ ०३ ५३ ३२ | ०१ ०५ ५५ ५३ | १० ०८ ४४ ०९ | ९ १९ १७ १२ | ७ २५ १९ ०० | १७ |
| १८ | ०१ ०२ ४५ ४३ | ०७ २८ ४२ २८ | ०९ २१ १० १० | ०० १७ २५ ३१ | ०३ १६ ५८ ५७ | ०० ०७ ५८ ११ | ०२ ०४ ०० ३४ | ०१ ०५ ५२ ४२ | १० ०८ ४५ १० | ९ १९ १७ ०९ | ७ २५ १७ ३४ | १८ |
| १९ | ०१ ०३ ४३ २९ | ०८ १३ १६ ५६ | ०९ २१ ४३ ०९ | ०० १७ १७ २१ | ०३ १७ ०६ १६ | ०० ०९ १० ५९ | ०२ ०४ ०७ ३९ | ०१ ०५ ४९ ३१ | १० ०८ ४६ ०७ | ९ १९ १७ ०४ | ७ २५ १६ ०७ | १९ |
| २० | ०१ ०४ ४१ १४ | ०८ २७ २६ ४२ | ०९ २२ १५ ५९ | मा० १७ १३ ३९ | ०३ १७ १३ ४३ | ०० १० २३ ४६ | ०२ ०४ १४ ४६ | ०१ ०५ ४६ २० | १० ०८ ४७ ०२ | ९ १९ १६ ५७ | ७ २५ १४ ४० | २० |
| २१ | ०१ ०५ ३८ ५८ | ०९ ११ ०९ ४२ | ०९ २२ ४८ ३९ | ०० १७ १४ २९ | ०३ १७ २१ १८ | ०० ११ ३६ ३५ | ०२ ०४ २१ ५५ | ०१ ०५ ४३ ०९ | १० ०८ ४७ ५४ | ९ १९ १६ ४८ | ७ २५ १३ ११ | २१ |
| २२ | ०१ ०६ ३६ ४१ | ०९ २४ २६ १२ | ०९ २३ २१ ०८ | ०० १७ १९ ५२ | ०३ १७ २९ ०१ | ०० १२ ४९ २४ | ०२ ०४ २९ ०७ | ०१ ०५ ३९ ५९ | १० ०८ ४८ ४३ | ९ १९ १६ ३७ | ७ २५ ११ ४२ | २२ |
| २३ | ०१ ०७ ३४ २२ | १० ०७ १८ २२ | ०९ २३ ५३ २६ | ०० १७ २९ ४८ | ०३ १७ ३६ ५१ | ०० १४ ०२ १५ | ०२ ०४ ३६ २० | ०१ ०५ ३६ ४८ | १० ०८ ४९ ३० | ९ १६ १६ २४ | ७ २५ १० १२ | २३ |
| २४ | ०१ ०८ ३२ ०३ | १० १९ ४९ ३२ | ०९ २४ २५ ३३ | ०० १७ ४४ १५ | ०३ १७ ४४ ४८ | ०० १५ १५ ०६ | ०२ ०४ ४३ ३६ | ०१ ०५ ३३ ३७ | १० ०८ ५० १३ | ९ १९ १६ १० | ७ २५ ०८ ४१ | २४ |
| २५ | ०१ ०९ २९ ४३ | ११ ०२ ०३ ४८ | ०९ २४ ५७ २८ | ०० १८ ०३ ०७ | ०३ १७ ५२ ५२ | ०० १६ २७ ५७ | ०२ ०४ ५० ५४ | ०१ ०५ ३० २६ | १० ०८ ५० ५३ | ९ १९ १५ ५३ | ७ २५ ०७ १० | २५ |
| २६ | ०१ १० २७ २२ | ११ १४ ०५ २४ | ०९ २५ २९ १० | ०० १८ २६ २२ | ०३ १८ ०१ ०४ | ०० १७ ४० ५० | ०२ ०४ ५८ १४ | ०१ ०५ २७ १६ | १० ०८ ५१ ३१ | ९ १९ १५ ३५ | ७ २५ ०५ ३८ | २६ |
| २७ | ०१ ११ २४ ५९ | ११ २५ ५८ ३० | ०९ २६ ०० ४१ | ०० १८ ५३ ५२ | ०३ १८ ०९ २३ | ०० १८ ५३ ४३ | ०२ ०५ ०५ ३६ | ०१ ०५ २४ ०५ | १० ०८ ५२ ०५ | ९ १९ १५ १४ | ७ २५ ०४ ०६ | २७ |
| २८ | ०१ १२ २२ ३६ | ०० ०७ ४६ ५३ | ०९ २६ ३१ ५८ | ०० १९ २५ ३३ | ०३ १८ १७ ४९ | ०० २० ०६ ३६ | ०२ ०५ १२ ५९ | ०१ ०५ २० ५४ | १० ०८ ५२ ३७ | ९ १९ १४ ५२ | ७ २५ ०२ ३३ | २८ |
| २९ | ०१ १३ २० १२ | ०० १९ ३३ ५५ | ०९ २७ ०३ ०३ | ०० २० ०१ १७ | ०३ १८ २६ २२ | ०० २१ १९ ३१ | ०२ ०५ २० २५ | ०१ ०५ १७ ४३ | १० ०८ ५३ ०६ | ९ १९ १४ २८ | ७ २५ ०० ५९ | २९ |
| ३० | ०१ १४ १७ ४७ | ०१ ०१ २२ ३४ | ०९ २७ ३३ ५३ | ०० [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १० ०८ ५३ ३२ | ९ १९ १४ ०२ | ७ २४ ५९ २६ | ३० |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## जून सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।०९"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल | नेपच्यून (वक्री) | प्लूटो (वक्री) | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जून | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | जून |
| १ | ०१ १६ १२ ५३ | ०१ २५ १४ ४३ | ०९ २८ ३४ ५२ | ०० २२ ११ ४६ | ०३ १८ ५२ ४१ | ०० २४ ५८ १७ | ०२ ०५ ४२ ५० | ०१ ०५ ०८ ११ | १० ०८ ५४ १४ | ०९ १९ १३ ०४ | ०७ २४ ५६ १७ | १ |
| २ | ०१ १७ १० २४ | ०२ ०७ २२ २६ | ०९ २९ ०५ ०० | ०० २३ ०२ ३९ | ०३ १९ ०१ ४१ | ०० २६ ११ १४ | ०२ ०५ ५० २२ | ०१ ०५ ०५ ०० | १० ०८ ५४ ३१ | ०९ १९ १२ ३३ | ०७ २४ ५४ ४२ | २ |
| ३ | ०१ १८ ०७ ५४ | ०२ १९ ४० २२ | ०९ २९ ३४ ५२ | ०० २३ ५७ ०६ | ०३ १९ १० ४७ | ०० २७ २४ ११ | ०२ ०५ ५७ ५५ | ०१ ०५ ०१ ४९ | १० ०८ ५४ ४५ | ०९ १९ १२ ०० | ०७ २४ ५३ ०७ | ३ |
| ४ | ०१ १९ ०५ २४ | ०३ ०२ १० २० | १० ०० ०४ २९ | ०० २४ ५४ ५९ | ०३ १९ १९ ५९ | ०० २८ ३७ ०९ | ०२ ०६ ०५ ३० | ०१ ०४ ५८ ३८ | १० ०८ ५४ ५६ | ०९ १९ ११ २४ | ०७ २४ ५१ ३१ | ४ |
| ५ | ०१ २० ०२ ५२ | ०३ १४ ५४ ०९ | १० ०० ३३ ५१ | ०० २५ ५६ १५ | ०३ १९ २९ १८ | ०० २९ ५० ०७ | ०२ ०६ १३ ०५ | ०१ ०४ ५५ २७ | १० ०८ ५५ ०४ | ०९ १९ १० ४८ | ०७ २४ ४९ ५६ | ५ |
| ६ | ०१ २१ ०० १८ | ०३ २७ ५३ ४४ | १० ०१ ०२ ५६ | ०० २७ ०० ४८ | ०३ १९ ३८ ४३ | ०१ ०१ ०३ ०६ | ०२ ०६ २० ४२ | ०१ ०४ ५२ १७ | १० ०८ ५५ ०९ | ०९ १९ १० ०९ | ०७ २४ ४८ २० | ६ |
| ७ | ०१ २१ ५७ ४४ | ०४ ११ १० ५२ | १० ०१ ३१ ४४ | ०० २८ ०८ ३४ | ०३ १९ ४८ १३ | ०१ ०२ १६ ०५ | ०२ ०६ २८ २० | ०१ ०४ ४९ ०६ | १० ०८ ५५ १२ | ०९ १९ ०९ २८ | ०७ २४ ४६ ४४ | ७ |
| ८ | ०१ २२ ५५ ०८ | ०४ २४ ४७ ०० | १० ०२ ०० १६ | ०० २९ १९ ३१ | ०३ १९ ५७ ५० | ०१ ०३ २९ ०५ | ०२ ०६ ३५ ५९ | ०१ ०४ ४५ ५५ | १० ०८ ५५ ११ | ०९ १९ ०८ ४६ | ०७ २४ ४५ ०८ | ८ |
| ९ | ०१ २३ ५२ ३२ | ०५ ०८ ४२ ५१ | १० ०२ २८ ३० | ०१ ०० ३३ ३४ | ०३ २० ०७ ३२ | ०१ ०४ ४२ ०५ | ०२ ०६ ४३ ४० | ०१ ०४ ४२ ४४ | १० ०८ ५५ ०७ | ०९ १९ ०८ ०२ | ०७ २४ ४३ ३१ | ९ |
| १० | ०१ २४ ४९ ५४ | ०५ २२ ५८ ०४ | १० ०२ ५६ २७ | ०१ ०१ ५० ४२ | ०३ २० १७ २० | ०१ ०५ ५५ ०६ | ०२ ०६ ५१ २१ | ०१ ०४ ३९ ३४ | १० ०८ ५५ ०१ | ०९ १९ ०७ १७ | ०७ २४ ४१ ५५ | १० |
| ११ | ०१ २५ ४७ १५ | ०६ ०७ ३० ४४ | १० ०३ २४ ०६ | ०१ ०३ १० ५१ | ०३ २० २७ १३ | ०१ ०७ ०८ ०७ | ०२ ०६ ५९ ०३ | ०१ ०४ ३६ २३ | १० ०८ ५४ ५१ | ०९ १९ ०६ २९ | ०७ २४ ४० १९ | ११ |
| १२ | ०१ २६ ४४ ३५ | ०६ २२ १७ ०६ | १० ०३ ५१ २७ | ०१ ०४ ३३ ५९ | ०३ २० ३७ १२ | ०१ ०८ २१ ०९ | ०२ ०७ ०६ ४५ | ०१ ०४ ३३ १२ | १० ०८ ५४ ३९ | ०९ १९ ०५ ४१ | ०७ २४ ३८ ४३ | १२ |
| १३ | ०१ २७ ४१ ५४ | ०७ ०७ ११ २८ | १० ०४ १८ २८ | ०१ ०६ ०० ०६ | ०३ २० ४७ १६ | ०१ ०९ ३४ १२ | ०२ ०७ १४ २९ | ०१ ०४ ३० ०१ | १० ०८ ५४ २४ | ०९ १९ ०४ ५० | ०७ २४ ३७ ०७ | १३ |
| १४ | ०१ २८ ३९ १२ | ०७ २२ ०६ ३६ | १० ०४ ४५ ११ | ०१ ०७ २९ १० | ०३ २० ५७ २६ | ०१ १० ४७ १५ | ०२ ०७ २२ १३ | ०१ ०४ २६ ५० | १० ०८ ५४ ०६ | ०९ १९ ०३ ५८ | ०७ २४ ३५ ३१ | १४ |
| १५ | ०१ २९ ३६ ३० | ०८ ०६ ५४ ३४ | १० ०५ ११ ३४ | ०१ ०९ ०१ ०९ | ०३ २१ ०७ ४१ | ०१ १२ ०० २० | ०२ ०७ २९ ५८ | ०१ ०४ २३ ३९ | १० ०८ ५३ ४५ | ०९ १९ ०३ ०४ | ०७ २४ ३३ ५५ | १५ |
| १६ | ०२ ०० ३३ ४७ | ०८ २१ २७ ५२ | १० ०५ ३७ ३६ | ०१ १० ३६ ०१ | ०३ २१ १८ ०० | ०१ १३ १३ २५ | ०२ ०७ ३७ ४३ | ०१ ०४ २० २८ | १० ०८ ५३ २१ | ०९ १९ ०२ ०९ | ०७ २४ ३२ २० | १६ |
| १७ | ०२ ०१ ३१ ०३ | ०९ ०५ ४० २६ | १० ०६ ०३ १७ | ०१ १२ १३ ४७ | ०३ २१ २८ २५ | ०१ १४ २६ ३१ | ०२ ०७ ४५ २९ | ०१ ०४ १७ १८ | १० ०८ ५२ ५५ | ०९ १९ ०१ १२ | ०७ २४ ३० ४४ | १७ |
| १८ | ०२ ०२ २८ १९ | ०९ १९ २८ २१ | १० ०६ २८ ३७ | ०१ १३ ५४ २४ | ०३ २१ ३८ ५५ | ०१ १५ ३९ ३८ | ०२ ०७ ५३ १६ | ०१ ०४ १४ ०७ | १० ०८ ५२ २५ | ०९ १९ ०० १४ | ०७ २४ २९ ०९ | १८ |
| १९ | ०२ ०३ २५ ३५ | १० ०२ ५० १० | १० ०६ ५३ ३४ | ०१ १५ ३७ ५० | ०३ २१ ४९ ३० | ०१ १६ ५२ ४६ | ०२ ०८ ०१ ०३ | ०१ ०४ १० ५६ | १० ०८ ५१ ५३ | ०९ १८ ५९ १४ | ०७ २४ २७ ३४ | १९ |
| २० | ०२ ०४ २२ ५० | १० १५ ४६ ४१ | १० ०७ १८ ०८ | ०१ १७ २४ ०३ | ०३ २२ ०० ०९ | ०१ १८ ०५ ५५ | ०२ ०८ ०८ ५० | ०१ ०४ ०७ ४५ | १० ०८ ५१ १८ | ०९ १८ ५८ १३ | ०७ २४ २६ ०० | २० |
| २१ | ०२ ०५ २० ०६ | १० २८ २० ३३ | १० ०७ ४२ १९ | ०१ १९ १३ ०० | ०३ २२ १० ५८ | ०१ १९ १९ ०५ | ०२ ०८ १६ ३८ | ०१ ०४ ०४ ३४ | १० ०८ ५० ४० | ०९ १८ ५७ १० | ०७ २४ २४ २६ | २१ |
| २२ | ०२ ०६ १७ २१ | ११ १० ३५ ४१ | १० ०८ ०६ ०५ | ०१ २१ ०४ ३८ | ०३ २२ २१ ४३ | ०१ २० ३२ १७ | ०२ ०८ २४ २६ | ०१ ०४ ०१ २४ | १० ०८ ५० ०० | ०९ १८ ५६ ०६ | ०७ २४ २२ ५२ | २२ |
| २३ | ०२ ०७ १४ ३५ | ११ २२ ३६ ४६ | १० ०८ २९ २५ | ०१ २२ ५८ ५० | ०३ २२ ३२ ३६ | ०१ २१ ४५ २९ | ०२ ०८ ३२ १४ | ०१ ०३ ५८ १३ | १० ०८ ४९ १७ | ०९ १८ ५५ ०० | ०७ २४ २१ १९ | २३ |
| २४ | ०२ ०८ ११ ५० | ०० ०४ २८ ४४ | १० ०८ ५२ २० | ०१ २४ ५५ ३२ | ०३ २२ ४३ ३४ | ०१ २२ ५८ ४२ | ०२ ०८ ४० ०२ | ०१ ०३ ५५ ०२ | १० ०८ ४८ ३१ | ०९ १८ ५३ ५३ | ०७ २४ १९ ४६ | २४ |
| २५ | ०२ ०९ ०९ ०५ | ०० १६ १६ २६ | १० ०९ १४ ४८ | ०१ २६ ५४ ३६ | ०३ २२ ५४ ३७ | ०१ २४ ११ ५६ | ०२ ०८ ४७ ५० | ०१ ०३ ५१ ५१ | १० ०८ ४७ ४२ | ०९ १८ ५२ ४४ | ०७ २४ १८ १३ | २५ |
| २६ | ०२ १० ०६ १९ | ०० २८ ०४ २१ | १० ०९ ३६ ४९ | ०१ २८ ५५ ५१ | ०३ २३ ०५ ४४ | ०१ २५ २५ ११ | ०२ ०८ ५५ ३९ | ०१ ०३ ४८ ४१ | १० ०८ ४६ ५१ | ०९ १८ ५१ ३४ | ०७ २४ १६ ४२ | २६ |
| २७ | ०२ ११ ०३ ३४ | ०१ ०९ ५६ २९ | १० ०९ ५८ २२ | ०२ ०० ५९ ०९ | ०३ २३ १६ ५५ | ०१ २६ ३८ २८ | ०२ ०९ ०३ २७ | ०१ ०३ ४५ ३० | १० ०८ ४५ ५६ | ०९ १८ ५० २३ | ०७ २४ १५ १० | २७ |
| २८ | ०२ १२ ०० ४८ | ०१ २१ ५६ १२ | १० १० १९ २६ | ०२ ०३ ०४ १६ | ०३ २३ २८ १० | ०१ २७ ५१ ४५ | ०२ ०९ ११ १५ | ०१ ०३ ४२ १९ | १० ०८ ४५ ०० | ०९ १८ ४९ ११ | ०७ २४ १३ ४० | २८ |
| २९ | ०२ १२ ५८ ०२ | ०२ ०४ ०६ ०७ | १० १० ४० ०१ | ०२ ०५ १० ५९ | ०३ २३ ३९ २९ | ०१ २९ ०५ ०३ | ०२ ०९ १९ ०३ | ०१ ०३ ३९ ०८ | १० ०८ ४४ ०० | ०९ १८ ४७ ५७ | ०७ २४ १२ १० | २९ |
| ३० | ०२ १३ ५५ १६ | ०२ १६ २८ ०५ | १० ११ ०० ०५ | ०२ ०७ १९ ०३ | ०३ २३ ५० ५२ | ०२ ०० १८ २३ | ०२ ०९ २६ ५० | ०१ ०३ ३५ ५७ | १० ०८ ४२ ५८ | ०९ १८ ४६ ४२ | ०७ २४ १० ४० | ३० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## जुलाई सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।०६"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल ( वक्री ) | नेपच्यून ( वक्री ) | प्लूटो ( वक्री ) | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जुलाई | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | जुलाई |
| १ | ०२ १४ ५२ २९ | ०२ २९ ०३ ०९ | १० ११ १९ ३९ | ०२ ०९ २८ ११ | ०३ २४ ०२ २० | ०२ ०१ ३१ ४३ | ०२ ०९ ३४ ३८ | ०१ ०३ ३२ ४६ | १० ०८ ४१ ५४ | ०९ १८ ४५ २६ | ०७ २४ ०९ १२ | १ |
| २ | ०२ १५ ४९ ४३ | ०३ ११ ५१ ४५ | १० ११ ३८ ४१ | ०२ ११ ३८ ०६ | ०३ २४ १३ ५१ | ०२ ०२ ४५ ०४ | ०२ ०९ ४२ २४ | ०१ ०३ २९ ३५ | १० ०८ ४० ४६ | ०९ १८ ४४ ०९ | ०७ २४ ०७ ४४ | २ |
| ३ | ०२ १६ ४६ ४६ | ०३ २४ ५३ ५१ | १० ११ ५७ ११ | ०२ १३ ४८ ३१ | ०३ २४ २५ २५ | ०२ ०३ ५८ २६ | ०२ ०९ ५० ११ | ०१ ०३ २६ २५ | १० ०८ ३९ ३७ | ०९ १८ ४२ ५० | ०७ २४ ०६ १७ | ३ |
| ४ | ०२ १७ ४४ ०९ | ०४ ०८ ०९ १२ | १० १२ १५ ०८ | ०२ १५ ५९ ०९ | ०३ २४ ३७ ०४ | ०२ ०५ ११ ४९ | ०२ ०९ ५७ ५७ | ०१ ०३ २३ १४ | १० ०८ ३८ २४ | ०९ १८ ४१ ३० | ०७ २४ ०४ ५१ | ४ |
| ५ | ०२ १८ ४१ २२ | ०४ २१ ३७ ३० | १० १२ ३२ ३२ | ०२ १८ ०९ ४३ | ०३ २४ ४८ ४५ | ०२ ०६ २५ १३ | ०२ १० ०५ ४२ | ०१ ०३ २० ०३ | १० ०८ ३७ १० | ०९ १८ ४० १० | ०७ २४ ०३ २५ | ५ |
| ६ | ०२ १९ ३८ ३४ | ०५ ०५ १८ २६ | १० १२ ४९ २२ | ०२ २० १९ ५७ | ०३ २५ ०० ३१ | ०२ ०७ ३८ ३७ | ०२ १० १३ २६ | ०१ ०३ १६ ५२ | १० ०८ ३५ ५३ | ०९ १८ ३८ ४८ | ०७ २४ ०२ ०१ | ६ |
| ७ | ०२ २० ३५ ४६ | ०५ १९ ११ ४२ | १० १३ ०५ ३७ | ०२ २२ २९ ३६ | ०३ २५ १२ १९ | ०२ ०८ ५२ ०३ | ०२ १० २१ १० | ०१ ०३ १३ ४२ | १० ०८ ३४ ३३ | ०९ १८ ३७ २५ | ०७ २४ ०० ३७ | ७ |
| ८ | ०२ २१ ३२ ५८ | ०६ ०३ १६ ४९ | १० १३ २१ १७ | ०२ २४ ३८ २७ | ०३ २५ २४ ११ | ०२ १० ०५ २९ | ०२ १० २८ ५३ | ०१ ०३ १० ३१ | १० ०८ ३३ ११ | ०९ १८ ३६ ०१ | ०७ २३ ५९ १४ | ८ |
| ९ | ०२ २२ ३० १० | ०६ १७ ३२ ४९ | १० १३ ३६ २१ | ०२ २६ ४६ १७ | ०३ २५ ३६ ०६ | ०२ ११ १८ ५६ | ०२ १० ३६ ३५ | ०१ ०३ ०७ २० | १० ०८ ३१ ४७ | ०९ १८ ३४ ३६ | ०७ २३ ५७ ५३ | ९ |
| १० | ०२ २३ २७ २१ | ०७ ०१ ५७ ५२ | १० १३ ५० ४९ | ०२ २८ ५२ ५५ | ०३ २५ ४८ ०४ | ०२ १२ ३२ २५ | ०२ १० ४४ १६ | ०१ ०३ ०४ ०९ | १० ०८ ३० २० | ०९ १८ ३३ १० | ०७ २३ ५६ ३२ | १० |
| ११ | ०२ २४ २४ ३३ | ०७ १६ २८ ५५ | १० १४ ०४ ४० | ०३ ०० ५८ १३ | ०३ २६ ०० ०६ | ०२ १३ ४५ ५४ | ०२ १० ५१ ५६ | ०१ ०३ ०० ५८ | १० ०८ २८ ५२ | ०९ १८ ३१ ४४ | ०७ २३ ५५ १२ | ११ |
| १२ | ०२ २५ २१ ४४ | ०८ ०१ ०१ ३३ | १० १४ १७ ५३ | ०३ ०३ ०२ ०३ | ०३ २६ १२ १० | ०२ १४ ५९ २४ | ०२ ११ ५९ ३५ | ०१ ०२ ५७ ४७ | १० ०८ २७ २१ | ०९ १८ ३० १६ | ०७ २३ ५३ ५४ | १२ |
| १३ | ०२ २६ १८ ५६ | ०८ १५ ३० १४ | १० १४ ३० २७ | ०३ ०५ ०४ २० | ०३ २६ २४ १७ | ०२ १६ १२ ५६ | ०२ ११ ०७ १४ | ०१ ०२ ५४ ३६ | १० ०८ २५ ४७ | ०९ १८ २८ ४८ | ०७ २३ ५२ ३६ | १३ |
| १४ | ०२ २७ १६ ०७ | ०८ २९ ४८ ५२ | १० १४ ४२ २२ | ०३ ०७ ०४ ५८ | ०३ २६ ३६ २७ | ०२ १७ २६ २८ | ०२ ११ १४ ५० | ०१ ०२ ५१ २६ | १० ०८ २४ १२ | ०९ १८ २७ १९ | ०७ २३ ५१ २० | १४ |
| १५ | ०२ २८ १३ १९ | ०९ १३ ५१ ४५ | १० १४ ५३ ३७ | ०३ ०९ ०३ ५५ | ०३ २६ ४८ ३९ | ०२ १८ ४० ०२ | ०२ ११ २२ २६ | ०१ ०२ ४८ १५ | १० ०८ २२ ३५ | ०९ १८ २५ ४९ | ०७ २३ ५० ०५ | १५ |
| १६ | ०२ २९ १० ३२ | ०९ २७ ३४ २७ | १० १५ ०४ ११ | ०३ ११ ०१ ०६ | ०३ २७ ०० ५५ | ०२ १९ २३ ३७ | ०२ ११ ३० ०१ | ०१ ०२ ४५ ०४ | १० ०८ २० ५५ | ०९ १८ २४ १८ | ०७ २३ ४८ ५१ | १६ |
| १७ | ०३ ०० ०७ ४५ | १० १० ५४ २० | १० १५ १४ ०३ | ०३ १२ ५६ ३२ | ०३ २७ १३ १३ | ०२ २१ ०७ १३ | ०२ ११ ३७ ३४ | ०१ ०२ ४१ ५३ | १० ०८ १९ १३ | ०९ १८ २२ ४७ | ०७ २३ ४७ ३८ | १७ |
| १८ | ०३ ०१ ०४ ५८ | १० २३ ५० ५४ | १० १५ २३ १२ | ०३ १४ ५० ०९ | ०३ २७ २५ ३३ | ०२ २२ २० ५० | ०२ ११ ४५ ०५ | ०१ ०२ ३८ ४२ | १० ०८ १७ ३० | ०९ १८ २१ १५ | ०७ २३ ४६ २६ | १८ |
| १९ | ०३ ०२ ०२ १२ | ११ ०६ २५ ३९ | १० १५ ३१ ३८ | ०३ १६ ४१ ५८ | ०३ २७ ३७ ५६ | ०२ २३ ३४ २९ | ०२ १२ ५२ ३६ | ०१ ०२ ३५ ३२ | १० ०८ १५ ४४ | ०९ १८ १९ ४३ | ०७ २३ ४५ १६ | १९ |
| २० | ०३ ०२ ५९ २७ | ११ १८ ४१ ४२ | १० १५ ३९ २० | ०३ १८ ३१ ५७ | ०३ २७ ५० २१ | ०२ २४ ४८ ०९ | ०२ १२ ०० ०५ | ०१ ०२ ३२ २१ | १० ०८ १३ ५७ | ०९ १८ १८ ०९ | ०७ २३ ४४ ०७ | २० |
| २१ | ०३ ०३ ५६ ४२ | ०० ०० ४३ २२ | १० १५ ४६ १६ | ०३ २० २० ०८ | ०३ २८ ०२ ४९ | ०२ २६ ०१ ५० | ०२ १२ ०७ ३२ | ०१ ०२ २९ १० | १० ०८ १२ ०७ | ०९ १८ १६ ३५ | ०७ २३ ४२ ५९ | २१ |
| २२ | ०३ ०४ ५३ ५९ | ०० १२ ३५ ४१ | १० १५ ५२ २८ | ०३ २२ ०६ २९ | ०३ २८ १५ १९ | ०२ २७ १५ ३२ | ०२ १२ १४ ५८ | ०१ ०२ २६ ०० | १० ०८ १० १६ | ०९ १८ १५ ०१ | ०७ २३ ४१ ५३ | २२ |
| २३ | ०३ ०५ ५१ १६ | ०० २४ २३ ५८ | १० १५ ५७ ५३ | ०३ २३ ५१ ०२ | ०३ २८ २७ ५२ | ०२ २८ २९ १६ | ०२ १२ २२ २२ | ०१ ०२ २२ ४९ | १० ०८ ०८ २३ | ०९ १८ १३ २६ | ०७ २३ ४० ४८ | २३ |
| २४ | ०३ ०६ ४८ ३३ | ०१ ०६ १३ ३१ | १० १६ ०२ ३१ | ०३ २५ ३३ ४७ | ०३ २८ ४० २६ | ०२ २९ ४३ ०१ | ०२ १२ २९ ४४ | ०१ ०२ १९ ३८ | १० ०८ ०६ २८ | ०९ १८ ११ ५१ | ०७ २३ ३९ ४४ | २४ |
| २५ | ०३ ०७ ४५ ५२ | ०१ १८ ०९ १५ | १० १६ ०६ २२ | ०३ २७ १४ ४३ | ०३ २८ ५३ ०३ | ०३ ०० ५६ ४८ | ०२ १२ ३७ ०४ | ०१ ०२ १६ २७ | १० ०८ ०४ ३१ | ०९ १८ १० १५ | ०७ २३ ३८ ४२ | २५ |
| २६ | ०३ ०८ ४३ ११ | ०२ ०० १५ ३० | १० १६ ०९ २६ | ०३ २८ ५३ ५२ | ०३ २९ ०५ ४१ | ०३ ०२ १० ३६ | ०२ १२ ४४ २३ | ०१ ०२ १३ १६ | १० ०८ ०२ ३३ | ०९ १८ ०८ ३९ | ०७ २३ ३७ ४१ | २६ |
| २७ | ०३ ०९ ४० ३२ | ०२ १२ ३७ ४१ | १० १६ ११ ४२ | ०४ ०० ३१ १३ | ०३ २९ १८ २२ | ०३ ०३ २४ २४ | ०२ १२ ५१ ३९ | ०१ ०२ १० ०५ | १० ०८ ०० ३३ | ०९ १८ ०७ ०२ | ०७ २३ ३६ ४२ | २७ |
| २८ | ०३ १० ३७ ५३ | ०२ २५ १२ ०५ | १० १६ १३ ०९ | ०४ ०२ ०६ ४७ | ०३ २९ ३१ ०४ | ०३ ०४ ३८ १५ | ०२ १२ ५८ ५४ | ०१ ०२ ०६ ५४ | १० ०७ ५८ ३२ | ०९ १८ ०५ २५ | ०७ २३ ३५ ४४ | २८ |
| २९ | ०३ ११ ३५ १५ | ०३ ०८ ०५ ३९ | [illegible] १६ १३ ४९ | ०४ ०३ ४० ३३ | ०३ २९ ४३ ४९ | ०३ ०५ ५२ ०६ | ०२ १३ ०६ ०६ | ०१ ०२ ०३ ४४ | १० ०७ ५६ २९ | ०९ १८ ०३ ४८ | ०७ २३ ३४ ४७ | २९ |
| ३० | ०३ १२ ३२ ३७ | ०३ २१ १६ ०१ | १० १६ १३ ४० | ०४ [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १० ०७ ५४ २४ | ०९ १८ ०२ ११ | ०७ २३ ३३ ५३ | ३० |
| ३१ | ०३ १३ ३० ०१ | ०४ ०४ ४१ ३६ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## अगस्त सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' १२"

| ता. अगस्त | सूर्य रा. अं. क. वि. | चन्द्र रा. अं. क. वि. | मंगल (वक्री) रा. अं. क. वि. | बुध रा. अं. क. वि. | गुरु रा. अं. क. वि. | शुक्र रा. अं. क. वि. | शनि रा. अं. क. वि. | राहु रा. अं. क. वि. | हर्शल (वक्री) रा. अं. क. वि. | नेपच्यून (वक्री) रा. अं. क. वि. | प्लूटो (वक्री) रा. अं. क. वि. | ता. अगस्त |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ०३ १४ २७ २५ | ०४ १८ १९ ५९ | १० १६ १० ५८ | ०४ ०८ ११ ०१ | ०४ ०० २२ ११ | ०३ ०९ ३३ ४७ | ०२ १३ २७ ३० | ०१ ०१ ५४ ११ | १० ०७ ५० ११ | ०९ १७ ५८ ५५ | ०७ २३ ३२ ०८ | १ |
| २ | ०३ १५ २४ ४९ | ०५ ०२ ०८ २५ | १० १६ ०८ २६ | ०४ ०९ ३७ ३० | ०४ ०० ३५ ०२ | ०३ १० ४७ ४२ | ०२ १३ ३४ ३४ | ०१ ०१ ५१ ०१ | १० ०७ ४८ ०२ | ०९ १७ ५७ १७ | ०७ २३ ३१ १८ | २ |
| ३ | ०३ १६ २२ १५ | ०५ १६ ०४ १८ | १० १६ ०५ ०६ | ०४ ११ ०२ ०७ | ०४ ०० ४७ ५३ | ०३ १२ ०१ ३९ | ०२ १३ ४१ ३४ | ०१ ०१ ४७ ५० | १० ०७ ४५ ५२ | ०९ १७ ५५ ३९ | ०७ २३ ३० २९ | ३ |
| ४ | ०३ १७ १९ ४१ | ०६ ०० ०५ ३० | १० १६ ०१ ०० | ०४ १२ २४ ५१ | ०४ ०१ ०० ४७ | ०३ १३ १५ ३७ | ०२ १३ ४८ ३३ | ०१ ०१ ४४ ३९ | १० ०७ ४३ ४१ | ०९ १७ ५४ ०१ | ०७ २३ २९ ४२ | ४ |
| ५ | ०३ १८ १७ ०७ | ०६ १४ १० २८ | १० १५ ५६ ०८ | ०४ १३ ४५ ३९ | ०४ ०१ १३ ४१ | ०३ १४ २९ ३५ | ०२ १३ ५५ २८ | ०१ ०१ ४१ २८ | १० ०७ ४१ २९ | ०९ १७ ५२ २३ | ०७ २३ २८ ५७ | ५ |
| ६ | ०३ १९ १४ ३५ | ०६ २८ १८ ०८ | १० १५ ५० ३१ | ०४ १५ ०४ २८ | ०४ ०१ २६ ३६ | ०३ १५ ४३ ३५ | ०२ १४ ०२ २२ | ०१ ०१ ३८ १८ | १० ०७ ३९ १५ | ०९ १७ ५० ४५ | ०७ २३ २८ १४ | ६ |
| ७ | ०३ २० १२ ०३ | ०७ १२ २७ ३१ | १० १५ ४४ १० | ०४ १६ २१ १६ | ०४ ०१ ३९ ३३ | ०३ १६ ५७ ३५ | ०२ १४ ०९ १२ | ०१ ०१ ३५ ०७ | १० ०७ ३७ ०१ | ०९ १७ ४९ ०७ | ०७ २३ २७ ३२ | ७ |
| ८ | ०३ २१ ०९ ३१ | ०७ २६ ३७ १७ | १० १५ ३७ ०५ | ०४ १७ ३६ ०० | ०४ ०१ ५२ ३१ | ०३ १८ ११ ३७ | ०२ १४ १६ ०० | ०१ ०१ ३१ ५६ | १० ०७ ३४ ४६ | ०९ १७ ४७ २९ | ०७ २३ २६ ५२ | ८ |
| ९ | ०३ २२ ०७ ०१ | ०८ १० ४५ २२ | १० १५ २९ १८ | ०४ १८ ४८ ३६ | ०४ ०२ ०५ २९ | ०३ १९ २५ ३९ | ०२ १४ २२ ४५ | ०१ ०१ २८ ४५ | १० ०७ ३२ २९ | ०९ १७ ४५ ५१ | ०७ २३ २६ १३ | ९ |
| १० | ०३ २३ ०४ ३१ | ०८ २४ ४८ ५० | १० १५ २० ४९ | ०४ १९ ५८ ५९ | ०४ ०२ १८ २९ | ०३ २० ३९ ४३ | ०२ १४ २९ २७ | ०१ ०१ २५ ३४ | १० ०७ ३० १२ | ०९ १७ ४४ १३ | ०७ २३ २५ ३७ | १० |
| ११ | ०३ २४ ०२ ०२ | ०९ ०८ ४४ ०१ | १० १५ ११ ४० | ०४ २१ ०७ ०६ | ०४ ०२ ३१ २९ | ०३ २१ ५३ ४७ | ०२ १४ ३६ ०६ | ०१ ०१ २२ २३ | १० ०७ २७ ५४ | ०९ १७ ४२ ३६ | ०७ २३ २५ ०२ | ११ |
| १२ | ०३ २४ ५९ ३५ | ०९ २२ २६ ५८ | १० १५ ०१ ५१ | ०४ २२ १२ ५० | ०४ ०२ ४४ ३० | ०३ २३ ०७ ५२ | ०२ १४ ४२ ४२ | ०१ ०१ १९ १३ | १० ०७ २५ ३५ | ०९ १७ ४० ५९ | ०७ २३ २४ २९ | १२ |
| १३ | ०३ २५ ५७ ०८ | १० ०५ ५४ ०९ | १० १४ ५१ २४ | ०४ २३ १६ ०५ | ०४ ०२ ५७ ३२ | ०३ २४ २१ ५९ | ०२ १४ ४९ १५ | ०१ ०१ १६ ०२ | १० ०७ २३ १६ | ०९ १७ ३९ २२ | ०७ २३ २३ ५८ | १३ |
| १४ | ०३ २६ ५४ ४३ | १० १९ ०३ ०१ | १० १४ ४० २१ | ०४ २४ १६ ४६ | ०४ ०३ १० ३४ | ०३ २५ ३६ ०६ | ०२ १४ ५५ ४५ | ०१ ०१ १२ ५१ | १० ०७ २० ५५ | ०९ १७ ३७ ४५ | ०७ २३ २३ २८ | १४ |
| १५ | ०३ २७ ५२ १९ | ११ ०१ ५२ २९ | १० १४ २८ ४१ | ०४ २५ १४ ४५ | ०४ ०३ २३ ३७ | ०३ २६ ५० १५ | ०२ १५ ०२ १२ | ०१ ०१ ०९ ४० | १० ०७ १८ ३५ | ०९ १७ ३६ ०९ | ०७ २३ २३ ०० | १५ |
| १६ | ०३ २८ ४९ ५६ | ११ १४ २३ ०६ | १० १४ १६ २९ | ०४ २६ ०९ ५४ | ०४ ०३ ३६ ४१ | ०३ २८ ४० २५ | ०२ १५ ०८ ३५ | ०१ ०१ ०६ ३० | १० ०७ १६ १३ | ०९ १७ ३४ ३३ | ०७ २३ २२ ३४ | १६ |
| १७ | ०३ २९ ४७ ३५ | ११ २६ ३७ ०२ | १० १४ ०३ ४४ | ०४ २७ ०२ ०४ | ०४ ०३ ४९ ४५ | ०३ २९ १८ ३६ | ०२ १५ १४ ५५ | ०१ ०१ ०३ १९ | १० ०७ १३ ५१ | ०९ १७ ३२ ५८ | ०७ २३ २२ १० | १७ |
| १८ | ०४ ०० ४५ १५ | ०० ०८ ३७ ४३ | १० १३ ०५ २९ | ०४ २७ ५१ ०६ | ०४ ०४ ०२ ४९ | ०४ ०० ३२ ४७ | ०२ १५ २१ १२ | ०१ ०१ ०० ०८ | १० ०७ ११ २९ | ०९ १७ ३१ २२ | ०७ २३ २१ ४८ | १८ |
| १९ | ०४ ०१ ४२ ५७ | ०० २० २९ ३८ | १० १३ ३६ ४६ | ०४ २८ ३६ ४९ | ०४ ०४ १५ ५४ | ०४ ०१ ४७ ०० | ०२ १२ २७ २६ | ०१ ०० ५६ ५८ | १० ०७ ०९ ०६ | ०९ १७ २९ ४८ | ०७ २३ २१ २८ | १९ |
| २० | ०४ ०२ ४० ४१ | ०१ ०२ १७ ५५ | १० १३ २२ ३८ | ०४ २९ १९ ०२ | ०४ ०४ २८ ५९ | ०४ ०३ ०१ १५ | ०२ १५ ३३ ३६ | ०१ ०० ५३ ४७ | १० ०७ ०६ ४३ | ०९ १७ २८ १४ | ०७ २३ २१ ०९ | २० |
| २१ | ०४ ०३ ३८ २६ | ०१ १४ ०८ ०२ | १० १३ ०८ ०६ | ०४ २९ ५७ ३४ | ०४ ०४ ४२ ०४ | ०४ ०४ १५ ३० | ०२ १५ ३९ ४२ | ०१ ०० ५० ३६ | १० ०७ ०४ २० | ०९ १७ २६ ४० | ०७ २३ २० ५३ | २१ |
| २२ | ०४ ०४ ३६ १२ | ०१ २६ ०५ २६ | १० १२ ५३ १२ | ०५ ०० ३२ ११ | ०४ ०४ ५५ ०९ | ०४ ०५ २९ ४६ | ०२ १५ ४५ ४५ | ०१ ०० ४७ २५ | १० ०७ ०१ ५६ | ०९ १७ २५ ०७ | ०७ २३ २० ५८ | २२ |
| २३ | ०४ ०५ ३४ ०१ | ०२ ०८ १५ १४ | १० १२ ३८ ०१ | ०५ ०१ ०२ ३९ | ०४ ०५ ०८ १४ | ०४ ०६ ४४ ०३ | ०२ १५ ५१ ४४ | ०१ ०० ४४ १४ | १० ०६ ५९ ३३ | ०९ १७ २३ ३५ | ०७ २३ २० २५ | २३ |
| २४ | ०४ ०६ ३१ ५१ | ०२ २० ४१ ४९ | १० १२ २२ ३३ | ०५ ०१ २८ ४४ | ०४ ०५ २१ २० | ०४ ०७ ५८ २२ | ०२ १५ ५७ ४० | ०१ ०० ४१ ०३ | १० ०६ ५७ ०९ | ०९ १७ २२ ०३ | ०७ २३ २० १४ | २४ |
| २५ | ०४ ०७ २९ ४२ | ०३ ०३ २८ २२ | १० १२ ०६ ५३ | ०५ ०१ ५० १२ | ०४ ०५ ३४ २५ | ०४ ०९ १२ ४१ | ०२ १६ ०३ ३१ | ०१ ०० ३७ ५३ | १० ०६ ५४ ४५ | ०९ १७ २० ३२ | ०७ २३ २० ०५ | २५ |
| २६ | ०४ ०८ २७ ३६ | ०३ १६ ३६ ३१ | १० ११ ५१ ०२ | ०५ ०२ ०६ ४६ | ०४ ०५ ४७ ३० | ०४ १० २७ ०१ | ०२ १६ ०९ १९ | ०१ ०० ३४ ४२ | १० ०६ ५२ २१ | ०९ १७ १९ ०२ | ०७ २३ १९ ५८ | २६ |
| २७ | ०४ ०९ २५ ३१ | ०४ ०० ०६ ०० | १० ११ ३५ ०४ | ०५ ०२ १८ १२ | ०४ ०६ ०० ३५ | ०४ ११ ४१ २२ | ०२ १६ १५ ०३ | ०१ ०० ३१ ३१ | १० ०६ ४९ ५७ | ०९ १७ १७ ३३ | ०७ २३ १९ ५३ | २७ |
| २८ | ०४ १० २३ २७ | ०४ १३ ५४ ३४ | १० ११ १९ ०३ | ०५ ०२ २४ १४ | ०४ ०६ १३ ४० | ०४ १२ ५५ ४४ | ०२ १६ २० ४२ | ०१ ०० २८ २१ | १० ०६ ४७ ३४ | ०९ १७ १६ ०४ | ०७ २३ १९ ५० | २८ |
| २९ | ०४ ११ २१ २५ | ०४ २७ ५८ २० | १० ११ ०३ ०० | ०५ ०२ २४ ३९ | ०४ ०६ २६ ४४ | ०४ १४ १० ०७ | ०२ १६ २६ १८ | ०१ ०० २५ १० | १० ०६ ४५ १० | ०९ १७ १४ ३६ | ०७ २३ १९ ४८ | २९ |
| ३० | ०४ १२ १९ २५ | ०५ १२ १२ १९ | १० १० ४६ ५९ | ०५ ०२ १९ १२ | ०४ ०६ ३९ ४७ | ०४ १५ २४ ३० | ०२ १६ ३१ ४९ | ०१ ०० २१ ५९ | १० ०६ ४२ ४७ | ०९ १७ १३ ०९ | ०७ २३ १९ ४९ | ३० |
| ३१ | ०४ १३ १७ २६ | ०५ २६ ३१ १८ | १० १० ३१ ०३ | ०५ ०२ ०७ ४५ | ०४ ०६ ५२ ५० | ०४ १६ ३८ ५५ | ०२ १६ ३७ १६ | ०१ ०० १८ ४८ | १० ०६ ४० २४ | ०९ १७ ११ ४३ | ०७ २३ १९ ५२ | ३१ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## सितम्बर सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।१५"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल ( वक्री ) | बुध ( वक्री ) | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल ( वक्री ) | नेपच्यून ( वक्री ) | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सितं. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | सितं. |
| १ | ०४ १४ १५ २८ | ०६ १० ५० ३९ | १० १० १५ १५ | ०५ ०१ ५० ०८ | ०४ ०७ ०५ ५३ | ०४ १७ ५३ १९ | ०२ १६ ४२ ३८ | ०१ ०० १५ ३८ | १० ०६ ३८ ०२ | ०९ १७ १० १८ | ०७ २३ १९ ५६ | १ |
| २ | ०४ १५ १३ ३२ | ०६ २५ ०६ ५३ | १० ०९ ५९ ३९ | ०५ ०१ २६ २१ | ०४ ०७ १८ ५४ | ०४ १९ ०७ ४५ | ०२ १६ ४७ ५७ | ०१ ०० १२ २७ | १० ०६ ३५ ४० | ०९ १७ ०८ ५४ | ०७ २३ २० ०३ | २ |
| ३ | ०४ १६ ११ ३७ | ०७ ०९ १७ ४४ | १० ०९ ४४ १६ | ०५ ०० ५६ २४ | ०४ ०७ ३१ ५५ | ०४ २० २२ ११ | ०२ १६ ५३ १० | ०१ ०० ०९ १६ | १० ०६ ३३ १९ | ०९ १७ ०७ ३१ | ०७ २३ २० ११ | ३ |
| ४ | ०४ १७ ०९ ४३ | ०७ २३ २१ ५८ | १० ०९ २९ ११ | ०५ ०० २० २९ | ०४ ०७ ४४ ५५ | ०४ २१ ३६ ३७ | ०२ १६ ५८ २० | ०१ ०० ०६ ०५ | १० ०६ ३० ५८ | ०९ १७ ०६ ०९ | ०७ २३ २० २२ | ४ |
| ५ | ०४ १८ ०७ ५१ | ०८ ०७ १८ ५४ | १० ०९ १४ २४ | ०४ २९ ३८ ५३ | ०४ ०७ ५७ ५४ | ०४ २२ ५१ ०४ | ०२ १७ ०३ २४ | ०१ ०० ०२ ५५ | १० ०६ २८ ३८ | ०९ १७ ०४ ४८ | ०७ २३ २० ३४ | ५ |
| ६ | ०४ १९ ०६ ०० | ०८ २१ ०७ ५७ | १० ०८ ६० ०० | ०४ २८ ५२ ०२ | ०४ ०८ १० ५२ | ०४ २४ ०५ ३२ | ०२ १७ ०८ २५ | ०० २९ ५९ ४४ | १० ०६ २६ १८ | ०९ १७ ०३ २९ | ०७ २३ २० ४९ | ६ |
| ७ | ०४ २० ०४ ११ | ०९ ०४ ४८ १५ | १० ०८ ४५ ५९ | ०४ २८ ०० ३४ | ०४ ०८ २३ ४९ | ०४ २५ २० ०० | ०२ १७ १३ २० | ०० २९ ५६ ३३ | १० ०६ २३ ५९ | ०९ १७ ०२ १० | ०७ २३ २१ ०५ | ७ |
| ८ | ०४ २१ ०२ २३ | ०९ १८ १८ ३४ | १० ०८ ३२ २५ | ०४ २७ ०५ १७ | ०४ ०८ ३६ ४५ | ०४ २६ ३४ २८ | ०२ १७ १८ ११ | ०० २९ ५३ २२ | १० ०६ २१ ४२ | ०९ १७ ०० ५२ | ०७ २३ २१ २३ | ८ |
| ९ | ०४ २२ ०० ३७ | १० ०१ ३७ १९ | १० ०८ १९ १९ | ०४ २६ ०७ ०९ | ०४ ०८ ४९ ३९ | ०४ २७ ४८ ५७ | ०२ १७ २२ ५७ | ०० २९ ५० ११ | १० ०६ १९ २५ | ०९ १६ ५९ ३६ | ०७ २३ २१ ४४ | ९ |
| १० | ०४ २२ ५८ ५२ | १० १४ ४२ ५६ | १० ०८ ०६ ४३ | ०४ २५ ०७ १७ | ०४ ०९ ०२ ३३ | ०४ २९ ०३ २६ | ०२ १७ २७ ३८ | ०० २९ ४७ ०१ | १० ०६ १७ ०८ | ०९ १६ ५८ २१ | ०७ २३ २२ ०६ | १० |
| ११ | ०४ २३ ५७ ०९ | १० २७ ३४ ०६ | १० ०७ ५४ ३९ | ०४ २४ ०६ ५७ | ०४ ०९ १५ २५ | ०५ ०० १७ ५६ | ०२ १७ ३२ १४ | ०० २९ ४३ ५० | १० ०६ १४ ५३ | ०९ १६ ५७ ०७ | ०७ २३ २२ ३० | ११ |
| १२ | ०४ २४ ५५ २८ | ११ १० १० ११ | १० ०७ ४३ ०९ | ०४ २३ ०७ ३१ | ०४ ०९ २८ १५ | ०५ ०१ ३२ २६ | ०२ १७ ३६ ४५ | ०० २९ ४० ३९ | १० ०६ १२ ३९ | ०९ १६ ५५ ५५ | ०७ २३ २२ ५६ | १२ |
| १३ | ०४ २५ ५३ ४९ | ११ २२ ३१ ३१ | १० ०७ ३२ १४ | ०४ २२ १० २३ | ०४ ०९ ४१ ०४ | ०५ ०२ ४६ ५७ | ०२ १७ ४१ १२ | ०० २९ ३७ २९ | १० ०६ १० २६ | ०९ १६ ५४ ४४ | ०७ २३ २३ २४ | १३ |
| १४ | ०४ २६ ५२ १२ | ०० ०४ ३९ ३२ | १० ०७ २१ ५६ | ०४ २१ १६ ५५ | ०४ ०९ ५३ ५२ | ०५ ०४ ०१ २९ | ०२ १७ ४५ ३३ | ०० २९ ३४ १८ | १० ०६ ०८ १४ | ०९ १६ ५३ ३४ | ०७ २३ २३ ५४ | १४ |
| १५ | ०४ २७ ५० ३७ | ०० १६ ३६ ४८ | १० ०७ १२ १७ | ०४ २० २८ ३० | ०४ १० ०६ ३८ | ०५ ०५ १६ ०१ | ०२ १७ ४९ ४९ | ०० २९ ३१ ०७ | १० ०६ ०६ ०४ | ०९ १६ ५१ २५ | ०७ २३ २४ २६ | १५ |
| १६ | ०४ २८ ४९ ०४ | ०० २८ २६ ५३ | १० ०७ ०३ १७ | ०४ १९ ४६ १९ | ०४ १० १९ २२ | ०५ ०६ ३० ३३ | ०२ १७ ५४ ०० | ०० २९ २७ ५७ | १० ०६ ०३ ५४ | ०९ १६ ५१ १८ | ०७ २३ २५ ०० | १६ |
| १७ | ०४ २९ ४७ ३३ | ०१ १० १४ ०८ | १० ०६ ५४ ५८ | ०४ १९ ११ २७ | ०४ १० ३२ ०४ | ०५ ०७ ४५ ०६ | ०२ १७ ५८ ०५ | ०० २९ २४ ४६ | १० ०६ ०१ ४६ | ०९ १६ ५० १२ | ०७ २३ २५ ३६ | १७ |
| १८ | ०५ ०० ४६ ०४ | ०१ २२ ०३ ३१ | १० ०६ ४७ २१ | ०४ १८ ४४ ४७ | ०४ १० ४४ ४५ | ०५ ०८ ५९ ४० | ०२ १८ ०२ ०५ | ०० २९ २१ ३५ | १० ०५ ५९ ३९ | ०९ १६ ४९ ०८ | ०७ २३ २६ १४ | १८ |
| १९ | ०५ ०१ ४४ ३८ | ०२ ०४ ०० १९ | १० ०६ ४० २७ | ०४ १८ २७ ०० | ०४ १० ५७ २४ | ०५ १० १४ १४ | ०२ १८ ०६ ०० | ०० २९ १८ २४ | १० ०५ ५७ ३४ | ०९ १६ ४८ ०५ | ०७ २३ २६ ५३ | १९ |
| २० | ०५ ०२ ४३ १३ | ०२ १६ ०९ ५३ | १० ०६ ३४ १८ | ०४ १८ १८ ३६ | ०४ ११ १० ०० | ०५ ११ २८ ४९ | ०२ १८ ०९ ५० | ०० २९ १५ १३ | १० ०५ ५५ ३० | ०९ १६ ४७ ०४ | ०७ २३ २७ ३५ | २० |
| २१ | ०५ ०३ ४१ ५१ | ०२ २८ ३७ १४ | १० ०६ २८ ५४ | [illegible] १८ १९ ५२ | ०४ ११ २२ ३५ | ०५ १२ ४३ २४ | ०२ १८ १३ ३४ | ०० २९ १२ ०३ | १० ०५ ५३ २७ | ०९ १६ ४६ ०४ | ०७ २३ २८ १९ | २१ |
| २२ | ०५ ०४ ४० ३१ | ०३ ११ २६ ३१ | १० ०६ २४ १५ | ०४ १८ ३० ५२ | ०४ ११ ३५ ०८ | ०५ १३ ५८ ०० | ०२ १८ १७ १२ | ०० २९ ०८ ५२ | १० ०५ ५१ २७ | ०९ १६ ४५ ०६ | ०७ २३ २९ ०४ | २२ |
| २३ | ०५ ०५ ३९ १३ | ०३ २४ ४० ३३ | १० ०६ २० २३ | ०४ १८ ५१ ३२ | ०४ ११ ४७ ३८ | ०५ १५ १२ ३६ | ०२ १८ २० ४५ | ०० २९ ०५ ४१ | १० ०५ ४९ २७ | ०९ १६ ४४ ०९ | ०७ २३ २९ ५१ | २३ |
| २४ | ०५ ०६ ३७ ५८ | ०४ ०८ २० ०८ | १० ०६ १७ १९ | ०४ १९ २१ ३८ | ०४ १२ ०० ०६ | ०५ १६ २७ १२ | ०२ १८ २४ १२ | ०० २९ ०२ ३० | १० ०५ ४७ ३० | ०९ १६ ४३ १४ | ०७ २३ ३० ४१ | २४ |
| २५ | ०५ ०७ ३६ ४४ | ०४ २२ २३ ४३ | १० ०६ १५ ०२ | ०४ २० ०० ४८ | ०४ १२ १२ ३१ | ०५ १७ ४१ ४९ | ०२ १८ २७ ३३ | ०० २८ ५९ २० | १० ०५ ४५ ३४ | ०९ १६ ४२ २१ | ०७ २३ ३१ ३२ | २५ |
| २६ | ०५ ०८ ३५ ३२ | ०५ ०६ ४७ १९ | १० ०६ १३ ३३ | ०४ २० ४८ ३२ | ०४ १२ २४ ५४ | ०५ १८ ५६ २६ | ०२ १८ ३० ४८ | ०० २८ ५६ ०९ | १० ०५ ४३ ४० | ०९ १६ ४१ २९ | ०७ २३ ३२ २५ | २६ |
| २७ | ०५ ०९ ३४ २३ | ०५ २१ २४ ५३ | [illegible] ०६ १२ ५२ | ०४ २१ ४४ १८ | ०४ १२ ३७ १५ | ०५ २० ११ ०४ | ०२ १८ ३३ ५८ | ०० २८ ५२ ५८ | १० ०५ ४१ ४७ | ०९ १६ ४० ३९ | ०७ २३ ३३ २० | २७ |
| २८ | ०५ १० ३३ १५ | ०६ ०६·०९ ११ | १० ०६ १३ ०१ | ०४ २२ ४७ २८ | ०४ १२ ४९ ३२ | ०५ २१ २५ ४२ | ०२ १८ ३७ ०१ | ०० २८ ४९ ४८ | १० ०५ ३९ ५७ | ०९ १६ ३९ ५० | ०७ २३ ३४ १६ | २८ |
| २९ | ०५ ११ ३२ ०९ | ०६ २० ५२ ५५ | १० ०६ १३ ५८ | ०४ २३ ५७ २० | ०४ १३ ०१ ४७ | ०५ २२ ४० २० | ०२ १८ ३९ [illegible] | ०० २८ ४६ ३७ | १० ०५ ३८ ०९ | ०९ १६ ३९ ०४ | ०७ २३ ३५ १५ | २९ |
| ३० | ०५ १२ ३१ ०६ | ०७ ०५ २९ ४८ | १० ०६ १५ ४४ | ०४ २५ १३ १६ | ०४ १३ १३ ५९ | ०५·२३ ५४ ५८ | ०२ १८ ४२ ५० | ०० २८ ४३ २६ | १० ०५ ३६ २२ | ०९ १६·३८ ११ | ०७ २३ ३६ १५ | ३० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



## अक्टूबर सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।१९"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल (वक्री) | नेपच्यून (वक्री) | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्टू. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अक्टू. |
| १ | ०५ १३ ३० ०३ | ०७ १९ ५५ १५ | १० ०६ १८ १८ | ०४ २६ ३४ ३२ | ०४ १३ २६ ०८ | ०५ २५ ०९ ३६ | ०२ १८ ४५ ३६ | ०० २८ ४० १५ | १० ०५ ३४ ३८ | ०९ १६ ३७ ३५ | ०७ २३ ३७ १७ | १ |
| २ | ०५ १४ २९ ०३ | ०८ ०४ ०६ २९ | १० ०६ २१ ४१ | ०४ २८ ०० २९ | ०४ १३ ३८ १४ | ०५ २६ २४ १४ | ०२ १८ ४८ १५ | ०० २८ ३७ ०५ | १० ०५ ३२ ५५ | ०९ १६ ३६ ५४ | ०७ २३ ३८ २१ | २ |
| ३ | ०५ १५ २८ ०४ | ०८ १८ ०२ १९ | १० ०६ २५ ५२ | ०४ २९ ३० २८ | ०४ १३ ५० १७ | ०५ २७ ३८ ५२ | ०२ १८ ५० ४८ | ०० २८ ३३ ५४ | १० ०५ ३१ १५ | ०९ १६ ३६ १४ | ०७ २३ ३९ २७ | ३ |
| ४ | ०५ १६ २७ ०७ | ०९ ०१ ४२ ३७ | १० ०६ ३० ५० | ०५ ०१ ०३ ५२ | ०४ १४ ०२ १६ | ०५ २८ ५३ ३० | ०२ १८ ५३ १५ | ०० २८ ३० ४३ | १० ०५ २९ ३७ | ०९ १६ ३५ ३६ | ०७ २३ ४० ३५ | ४ |
| ५ | ०५ १७ २६ १२ | ०९ १५ ०७ ५० | १० ०६ ३६ ३४ | ०५ ०२ ४० ०९ | ०४ १४ १४ १२ | ०६ ०० ०८ ०९ | ०२ १८ ५५ ३६ | ०० २८ २७ ३२ | १० ०५ २८ ०१ | ०९ १६ ३५ ०० | ०७ २३ ४१ ४४ | ५ |
| ६ | ०५ १८ २५ १९ | ०९ २८ १८ ३९ | १० ०६ ४३ ०५ | ०५ ०४ १८ ४७ | ०४ १४ २६ ०५ | ०६ ०१ २२ ४७ | ०२ १८ ५७ ५१ | ०० २८ २४ २१ | १० ०५ २६ २७ | ०९ १६ ३४ २६ | ०७ २३ ४२ ५५ | ६ |
| ७ | ०५ १९ २४ २७ | १० ११ १५ ४७ | १० ०६ ५० २२ | ०५ ०५ ५९ १८ | ०४ १४ ३७ ५५ | ०६ ०२ ३७ २५ | ०२ १८ ५९ ५९ | ०० २८ २१ ११ | १० ०५ २४ ५६ | ०९ १६ ३३ ५४ | ०७ २३ ४४ ०८ | ७ |
| ८ | ०५ २० २३ ३७ | १० २३ ५९ ५५ | १० ०६ ५८ २३ | ०५ ०७ ४१ १९ | ०४ १४ ४९ ४० | ०६ ०३ ५२ ०३ | ०२ १९ ०२ ०१ | ०० २८ १८ ०० | १० ०५ २३ २७ | ०९ १६ ३३ २३ | ०७ २३ ४५ २३ | ८ |
| ९ | ०५ २१ २२ ४९ | ११ ०६ ३१ ४० | १० ०७ ०७ ०८ | ०५ ०९ २४ २८ | ०४ १५ ०१ २३ | ०६ ०५ ०६ ४० | ०२ १९ ०३ ५७ | ०० २८ १४ ४९ | १० ०५ २२ ०० | ०९ १६ ३२ ५५ | ०७ २३ ४६ ३९ | ९ |
| १० | ०५ २२ २२ ०३ | ११ १८ ५१ ४४ | १० ०७ १६ ३७ | ०५ ११ ०८ २६ | ०४ १५ १३ ०१ | ०६ ०६ २१ १८ | ०२ १९ ०५ ४६ | ०० २८ ११ ३९ | १० ०५ २० ३६ | ०९ १६ ३२ २८ | ०७ २३ ४७ ५७ | १० |
| ११ | ०५ २३ २१ १९ | ०० ०१ ०१ ०२ | १० ०७ २६ ४८ | ०५ १२ ५२ ५८ | ०४ १५ २४ ३६ | ०६ ०७ ३५ ५६ | ०२ १९ ०७ २९ | ०० २८ ०८ २८ | १० ०५ १९ १४ | ०९ १६ ३२ ०३ | ०७ २३ ४९ १६ | ११ |
| १२ | ०५ २४ २० ३८ | ०० १३ ०१ ०० | १० ०७ ३७ ४० | ०५ १४ ३७ ५० | ०४ १५ ३६ ०७ | ०६ ०८ ५० ३४ | ०२ १९ ०९ ०६ | ०० २८ ०५ १७ | १० ०५ १७ ५५ | ०९ १६ ३१ ४० | ०७ २३ ५० ३८ | १२ |
| १३ | ०५ २५ १९ ५८ | ०० २४ ५३ ३७ | १० ०७ ४९ १४ | ०५ १६ २२ ५१ | ०४ १५ ४७ ३४ | ०६ १० ०५ १२ | ०२ १९ १० ३६ | ०० २८ ०२ ०७ | १० ०५ १६ ३७ | ०९ १६ ३१ १९ | ०७ २३ ५२ ०० | १३ |
| १४ | ०५ २६ १९ २० | ०१ ०६ ४१ ३३ | १० ०८ ०१ २९ | ०५ १८ ०७ ५१ | ०४ १५ ५८ ५७ | ०६ ११ १९ ५० | ०२ १९ ११ ५९ | ०० २७ ५८ ५६ | १० ०५ १५ २३ | ०९ १६ ३१ ०० | ०७ २३ ५३ २५ | १४ |
| १५ | ०५ २७ १८ ४५ | ०१ १८ २८ ०७ | १० ०८ १४ २३ | ०५ १९ ५२ ४३ | ०४ १६ १० १५ | ०६ १२ ३४ २८ | ०२ १९ १३ १६ | ०० २७ ५५ ४५ | १० ०५ १४ ११ | ०९ १६ ३० ४३ | ०७ २३ ५४ ५१ | १५ |
| १६ | ०५ २८ १८ १२ | ०२ ०० १७ १५ | १० ०८ २७ ५६ | ०५ २१ ३७ १९ | ०४ १६ २१ ३० | ०६ १३ ४९ ०६ | ०२ १९ १४ २६ | ०० २७ ५२ ३४ | १० ०५ १३ ०२ | ०९ १६ ३० २८ | ०७ २३ ५६ १८ | १६ |
| १७ | ०५ २९ १७ ४१ | ०२ १२ १३ २१ | १० ०८ ४२ ०७ | ०५ २३ २१ ३६ | ०४ १६ ३२ ४० | ०६ १५ ०३ ४५ | ०२ १९ १५ ३० | ०० २७ ४९ २३ | १० ०५ ११ ५५ | ०९ १६ ३० १५ | ०७ २३ ५७ ४८ | १७ |
| १८ | ०६ ०० १७ १३ | ०२ २४ २१ ११ | १० ०८ ५६ ५६ | ०५ २५ ०५ २८ | ०४ १६ ४३ ४६ | ०६ १६ १८ २३ | ०२ १९ १६ २७ | ०० २७ ४६ १३ | १० ०५ १० ५१ | ०९ १६ ३० ०४ | ०७ २३ ५९ १८ | १८ |
| १९ | ०६ ०१ १६ ४७ | ०३ ०६ ४५ ३८ | १० ०९ १२ २१ | ०५ २६ ४८ ५४ | ०४ १६ ५४ ४८ | ०६ १७ ३३ ०२ | ०२ १९ १७ १८ | ०० २७ ४३ ०२ | १० ०५ ०९ ४९ | ०९ १६ २९ ५४ | ०७ २४ ०० ५१ | १९ |
| २० | ०६ ०२ १६ २३ | ०३ १९ ३१ १५ | १० ०९ २८ २३ | ०५ २८ ३१ ४९ | ०४ १७ ०५ ४४ | ०६ १८ ४७ ४० | ०२ १९ १८ ०१ | ०० २७ ३९ ५१ | १० ०५ ०८ ५० | ०९ १६ २९ ४७ | ०७ २४ ०२ २४ | २० |
| २१ | ०६ ०३ १६ ०१ | ०४ ०२ ४१ ४६ | १० ०९ ४५ ०१ | ०६ ०० १४ १३ | ०४ १७ १६ ३६ | ०६ २० ०२ १९ | ०२ १९ १८ ३८ | ०० २७ ३६ ४० | १० ०५ ०७ ५४ | ०९ १६ २९ ४२ | ०७ २४ ०४ ०० | २१ |
| २२ | ०६ ०४ १५ ४२ | ०४ १६ १९ २७ | १० १० ०२ १४ | ०६ ०१ ५६ ०४ | ०४ १७ २७ २४ | ०६ २१ १६ ५८ | ०२ १९ १९ ०९ | ०० २७ ३३ ३० | १० ०५ ०७ ०१ | मा.०९ १६ २९ ३९ | ०७ २४ ०५ ३६ | २२ |
| २३ | ०६ ०५ १५ २४ | ०५ ०० २४ २८ | १० १० २० ०१ | ०६ ०३ ३७ २२ | ०४ १७ ३८ ०६ | ०६ २२ ३१ ३७ | ०२ १९ १९ ३२ | ०० २७ ३० १९ | १० ०५ ०६ ११ | ०९ १६ २९ ३८ | ०७ २४ ०७ १४ | २३ |
| २४ | ०६ ०६ १५ ०९ | ०५ १४ ५४ २२ | १० १० ३८ २२ | ०६ ०५ १८ ०६ | ०४ १७ ४८ ४३ | ०६ २३ ४६ १५ | ०२ १९ १९ ४९ | ०० २७ २७ ०८ | १० ०५ ०५ २३ | ०९ १६ २९ ३८ | ०७ २४ ०८ ५४ | २४ |
| २५ | ०६ ०७ १४ ५६ | ०५ २९ ४४ ०१ | १० १० ५७ १६ | ०६ ०६ ५८ १६ | ०४ १७ ५९ १५ | ०६ २५ ०० ५४ | मा.०२ १९ १९ ५९ | ०० २७ २३ ५८ | १० ०५ ०४ ३८ | ०९ १६ २९ ४१ | ०७ २४ १० ३५ | २५ |
| २६ | ०६ ०८ १४ ४६ | ०६ १४ ४५ ५७ | १० ११ १६ ४२ | ०६ ०८ ३७ ५३ | ०४ १८ ०९ ४२ | ०६ २६ १५ ३३ | ०२ १९ २० ०२ | ०० २७ २० ४७ | १० ०५ ०३ ५६ | ०९ १६ २९ ४६ | ०७ २४ १२ १७ | २६ |
| २७ | ०६ ०९ १४ ३७ | ०६ २९ ५१ १७ | १० ११ ३६ ४१ | ०६ १० १६ ५७ | ०४ १८ २० ०३ | ०६ २७ ३० १२ | ०२ १९ १९ ५८ | ०० २७ १७ ३६ | १० ०५ ०३ १७ | ०९ १६ २९ ५३ | ०७ २४ १४ ०१ | २७ |
| २८ | ०६ १० १४ २९ | ०७ १४ ५१ ०९ | १० ११ ५७ ११ | ०६ ११ ५५ २८ | ०४ १८ ३० १९ | ०६ २८ ४४ ५१ | ०२ १९ १९ ४८ | ०० २७ १४ २५ | १० ०५ ०२ ४१ | ०९ १६ ३० ०२ | ०७ २४ १५ ४६ | २८ |
| २९ | ०६ ११ १४ २४ | ०७ २९ ३७ ५२ | १० १२ १८ ११ | ०६ १३ ३३ २७ | ०४ १८ ४० ३० | ०६ २९ ५९ २९ | ०२ १९ १९ ३१ | ०० २७ ११ १४ | १० ०५ ०२ ०७ | ०९ १६ ३० १३ | ०७ २४ १७ ३२ | २९ |
| ३० | ०६ १२ १४ २० | ०८ १४ ०५ ५२ | १० १२ ३९ ४१ | ०६ १५ १० ५४ | ०४ १८ ५० ३४ | ०७ ०१ १४ ०८ | ०२ १९ १९ ०७ | ०० २७ ०८ ०३ | १० ०५ ०१ ३७ | ०९ १६ ३० २६ | ०७ २४ १९ २० | ३० |
| ३१ | ०६ १३ १४ १८ | ०८ २८ ११ ५९ | १० १३ ०१ ४० | ०६ १६ ४७ ५० | ०४ १९ ०० ३३ | ०७ ०२ २८ ४६ | ०२ १९ १८ ३७ | ०० २७ ०४ ५३ | १० ०५ ०१ १० | ०९ १६ ३० ४१ | ०७ २४ २१ ०९ | ३१ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## सितम्बर सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।१५"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल ( वक्री ) | बुध ( वक्री ) | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल ( वक्री ) | नेपच्यून ( वक्री ) | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सितं. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | सितं. |
| १ | ०४ १४ १५ २८ | ०६ १० ५० ३९ | १० १० १५ १५ | ०५ ०१ ५० ०८ | ०४ ०७ ०५ ५३ | ०४ १७ ५३ १९ | ०२ १६ ४२ ३८ | ०१ ०० १५ ३८ | १० ०६ ३८ ०२ | ०९ १७ १० १८ | ०७ २३ १९ ५६ | १ |
| २ | ०४ १५ १३ ३२ | ०६ २५ ०६ ५३ | १० ०९ ५९ ३९ | ०५ ०१ २६ २१ | ०४ ०७ १८ ५४ | ०४ १९ ०७ ४५ | ०२ १६ ४७ ५७ | ०१ ०० १२ २७ | १० ०६ ३५ ४० | ०९ १७ ०८ ५४ | ०७ २३ २० ०३ | २ |
| ३ | ०४ १६ ११ ३७ | ०७ ०९ १७ ४४ | १० ०९ ४४ १६ | ०५ ०० ५६ २४ | ०४ ०७ ३१ ५५ | ०४ २० २२ ११ | ०२ १६ ५३ १० | ०१ ०० ०९ १६ | १० ०६ ३३ १९ | ०९ १७ ०७ ३१ | ०७ २३ २० ११ | ३ |
| ४ | ०४ १७ ०९ ४३ | ०७ २३ २१ ५८ | १० ०९ २९ ११ | ०५ ०० २० २९ | ०४ ०७ ४४ ५५ | ०४ २१ ३६ ३७ | ०२ १६ ५८ २० | ०१ ०० ०६ ०५ | १० ०६ ३० ५८ | ०९ १७ ०६ ०९ | ०७ २३ २० २२ | ४ |
| ५ | ०४ १८ ०७ ५१ | ०८ ०७ १८ ५४ | १० ०९ १४ २४ | ०४ २९ ३८ ५३ | ०४ ०७ ५७ ५४ | ०४ २२ ५१ ०४ | ०२ १७ ०३ २४ | ०१ ०० ०२ ५५ | १० ०६ २८ ३८ | ०९ १७ ०४ ४८ | ०७ २३ २० ३४ | ५ |
| ६ | ०४ १९ ०६ ०० | ०८ २१ ०७ ५७ | १० ०८ ६० ०० | ०४ २८ ५२ ०२ | ०४ ०८ १० ५२ | ०४ २४ ०५ ३२ | ०२ १७ ०८ २५ | ०० २९ ५९ ४४ | १० ०६ २६ १८ | ०९ १७ ०३ २९ | ०७ २३ २० ४९ | ६ |
| ७ | ०४ २० ०४ ११ | ०९ ०४ ४८ १५ | १० ०८ ४५ ५९ | ०४ २८ ०० ३४ | ०४ ०८ २३ ४९ | ०४ २५ २० ०० | ०२ १७ १३ २० | ०० २९ ५६ ३३ | १० ०६ २३ ५९ | ०९ १७ ०२ १० | ०७ २३ २१ ०५ | ७ |
| ८ | ०४ २१ ०२ २३ | ०९ १८ १८ ३४ | १० ०८ ३२ २५ | ०४ २७ ०५ १७ | ०४ ०८ ३६ ४५ | ०४ २६ ३४ २८ | ०२ १७ १८ ११ | ०० २९ ५३ २२ | १० ०६ २१ ४२ | ०९ १७ ०० ५२ | ०७ २३ २१ २३ | ८ |
| ९ | ०४ २२ ०० ३७ | १० ०१ ३७ १९ | १० ०८ १९ १९ | ०४ २६ ०७ ०९ | ०४ ०८ ४९ ३९ | ०४ २७ ४८ ५७ | ०२ १७ २२ ५७ | ०० २९ ५० ११ | १० ०६ १९ २५ | ०९ १६ ५९ ३६ | ०७ २३ २१ ४४ | ९ |
| १० | ०४ २२ ५८ ५२ | १० १४ ४२ ५६ | १० ०८ ०६ ४३ | ०४ २५ ०७ १७ | ०४ ०९ ०२ ३३ | ०४ २९ ०३ २६ | ०२ १७ २७ ३८ | ०० २९ ४७ ०१ | १० ०६ १७ ०८ | ०९ १६ ५८ २१ | ०७ २३ २२ ०६ | १० |
| ११ | ०४ २३ ५७ ०९ | १० २७ ३४ ०६ | १० ०७ ५४ ३९ | ०४ २४ ०६ ५७ | ०४ ०९ १५ २५ | ०५ ०० १७ ५६ | ०२ १७ ३२ १४ | ०० २९ ४३ ५० | १० ०६ १४ ५३ | ०९ १६ ५७ ०७ | ०७ २३ २२ ३० | ११ |
| १२ | ०४ २४ ५५ २८ | ११ १० १० ११ | १० ०७ ४३ ०९ | ०४ २३ ०७ ३१ | ०४ ०९ २८ १५ | ०५ ०१ ३२ २६ | ०२ १७ ३६ ४५ | ०० २९ ४० ३९ | १० ०६ १२ ३९ | ०९ १६ ५५ ५५ | ०७ २३ २२ ५६ | १२ |
| १३ | ०४ २५ ५३ ४९ | ११ २२ ३१ ३१ | १० ०७ ३२ १४ | ०४ २२ १० २३ | ०४ ०९ ४१ ०४ | ०५ ०२ ४६ ५७ | ०२ १७ ४१ १२ | ०० २९ ३७ २९ | १० ०६ १० २६ | ०९ १६ ५४ ४४ | ०७ २३ २३ २४ | १३ |
| १४ | ०४ २६ ५२ १२ | ०० ०४ ३९ ३२ | १० ०७ २१ ५६ | ०४ २१ १६ ५५ | ०४ ०९ ५३ ५२ | ०५ ०४ ०१ २९ | ०२ १७ ४५ ३३ | ०० २९ ३४ १८ | १० ०६ ०८ १४ | ०९ १६ ५३ ३४ | ०७ २३ २३ ५४ | १४ |
| १५ | ०४ २७ ५० ३७ | ०० १६ ३६ ४८ | १० ०७ १२ १७ | ०४ २० २८ ३० | ०४ १० ०६ ३८ | ०५ ०५ १६ ०१ | ०२ १७ ४९ ४९ | ०० २९ ३१ ०७ | १० ०६ ०६ ०४ | ०९ १६ ५२ २५ | ०७ २३ २४ २६ | १५ |
| १६ | ०४ २८ ४९ ०४ | ०० २८ २६ ५३ | १० ०७ ०३ १७ | ०४ १९ ४६ १९ | ०४ १० १९ २२ | ०५ ०६ ३० ३३ | ०२ १७ ५४ ०० | ०० २९ २७ ५७ | १० ०६ ०३ ५४ | ०९ १६ ५१ १८ | ०७ २३ २५ ०० | १६ |
| १७ | ०४ २९ ४७ ३३ | ०१ १० १४ ०८ | १० ०६ ५४ ५८ | ०४ १९ ११ २७ | ०४ १० ३२ ०४ | ०५ ०७ ४५ ०६ | ०२ १७ ५८ ०५ | ०० २९ २४ ४६ | १० ०६ ०१ ४६ | ०९ १६ ५० १२ | ०७ २३ २५ ३६ | १७ |
| १८ | ०५ ०० ४६ ०४ | ०१ २२ ०३ ३१ | १० ०६ ४७ २१ | ०४ १८ ४४ ४७ | ०४ १० ४४ ४५ | ०५ ०८ ५९ ४० | ०२ १८ ०२ ०५ | ०० २९ २१ ३५ | १० ०५ ५९ ३९ | ०९ १६ ४९ ०८ | ०७ २३ २६ १४ | १८ |
| १९ | ०५ ०१ ४४ ३८ | ०२ ०४ ०० १९ | १० ०६ ४० २७ | ०४ १८ २७ ०० | ०४ १० ५७ २४ | ०५ १० १४ १४ | ०२ १८ ०६ ०० | ०० २९ १८ २४ | १० ०५ ५७ ३४ | ०९ १६ ४८ ०५ | ०७ २३ २६ ५३ | १९ |
| २० | ०५ ०२ ४३ १३ | ०२ १६ ०९ ५३ | १० ०६ ३४ १८ | ०४ १८ १८ ३६ | ०४ ११ १० ०० | ०५ ११ २८ ४९ | ०२ १८ ०९ ५० | ०० २९ १५ १३ | १० ०५ ५५ ३० | ०९ १६ ४७ ०४ | ०७ २३ २७ ३५ | २० |
| २१ | ०५ ०३ ४१ ५१ | ०२ २८ ३७ १४ | १० ०६ २८ ५४ | [illegible] १८ १९ ५२ | ०४ ११ २२ ३५ | ०५ १२ ४३ २४ | ०२ १८ १३ ३४ | ०० २९ १२ ०३ | १० ०५ ५३ २७ | ०९ १६ ४६ ०४ | ०७ २३ २८ १९ | २१ |
| २२ | ०५ ०४ ४० ३१ | ०३ ११ २६ ३१ | १० ०६ २४ १५ | ०४ १८ ३० ५२ | ०४ ११ ३५ ०८ | ०५ १३ ५८ ०० | ०२ १८ १७ १२ | ०० २९ ०८ ५२ | १० ०५ ५१ २७ | ०९ १६ ४५ ०६ | ०७ २३ २९ ०४ | २२ |
| २३ | ०५ ०५ ३९ १३ | ०३ २४ ४० ३३ | १० ०६ २० २३ | ०४ १८ ५१ ३२ | ०४ ११ ४७ ३८ | ०५ १५ १२ ३६ | ०२ १८ २० ४५ | ०० २९ ०५ ४१ | १० ०५ ४९ २७ | ०९ १६ ४४ ०९ | ०७ २३ २९ ५१ | २३ |
| २४ | ०५ ०६ ३७ ५८ | ०४ ०८ २० ०८ | १० ०६ १७ १९ | ०४ १९ २१ ३८ | ०४ १२ ०० ०६ | ०५ १६ २७ १२ | ०२ १८ २४ १२ | ०० २९ ०२ ३० | १० ०५ ४७ ३० | ०९ १६ ४३ १४ | ०७ २३ ३० ४१ | २४ |
| २५ | ०५ ०७ ३६ ४४ | ०४ २२ २३ ४३ | १० ०६ १५ ०२ | ०४ २० ०० ४८ | ०४ १२ १२ ३१ | ०५ १७ ४१ ४९ | ०२ १८ २७ ३३ | ०० २८ ५९ २० | १० ०५ ४५ ३४ | ०९ १६ ४२ २१ | ०७ २३ ३१ ३२ | २५ |
| २६ | ०५ ०८ ३५ ३२ | ०५ ०६ ४७ १९ | १० ०६ १३ ३३ | ०४ २० ४८ ३२ | ०४ १२ २४ ५४ | ०५ १८ ५६ २६ | ०२ १८ ३० ४८ | ०० २८ ५६ ०९ | १० ०५ ४३ ४० | ०९ १६ ४१ २९ | ०७ २३ ३२ २५ | २६ |
| २७ | ०५ ०९ ३४ २३ | ०५ २१ २४ ५३ | [illegible] ०६ १२ ५२ | ०४ २१ ४४ १८ | ०४ १२ ३७ १५ | ०५ २० ११ ०४ | ०२ १८ ३३ ५८ | ०० २८ ५२ ५८ | १० ०५ ४१ ४७ | ०९ १६ ४० ३९ | ०७ २३ ३३ २० | २७ |
| २८ | ०५ १० ३३ १५ | ०६ ०६ ०९ ११ | १० ०६ १३ ०१ | ०४ २२ ४७ २८ | ०४ १२ ४९ ३२ | ०५ २१ २५ ४२ | ०२ १८ ३७ ०१ | ०० २८ ४९ ४८ | १० ०५ ३९ ५७ | ०९ १६ ३९ ५० | ०७ २३ ३४ १६ | २८ |
| २९ | ०५ ११ ३२ ०९ | ०६ २० ५२ ५५ | १० ०६ १३ ५८ | ०४ २३ ५७ २० | ०४ १३ ०१ ४७ | ०५ २२ ४० २० | ०२ १८ ३९ [illegible] | ०० २८ ४६ [illegible] | १० ०५ ३८ ०९ | ०९ १६ ३९ ०४ | ०७ २३ ३५ १५ | २९ |
| ३० | ०५ १२ ३१ ०६ | ०७ ०५ २९ ४८ | १० ०६ १५ ४४ | ०४ २५ १३ १६ | ०४ १३ १३ ५९ | ०५ २३ ५४ ५८ | ०२ १८ ४२ ५० | ०० २८ ४३ २६ | १० ०५ ३६ २२ | ०९ १६ ३८ ११ | ०७ २३ ३६ [illegible] | |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल | नेपच्यून | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १० ०५ ३९ ५७ | ०९ १६ ३९ ५० | ०७ २३ ३४ १६ | २८ |
| २९ | ०५ ११ ३२ ०९ | ०६ २० ५२ ५५ | १० ०६ १३ [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १० ०५ ३८ ०९ | ०९ १६ ३९ ०४ | ०७ २३ ३५ १५ | २९ |
| ३० | ०५ १२ ३१ ०६ | ०७ ०५ २९ ४८ | १० ०६ १५ ४४ | ०४ २५ १३ १६ | ०४ १३ १३ ५९ | ०५ २३ ५४ ५८ | ०२ १८ ४२ ५० | ०० २८ ४३ २६ | १० ०५ ३६ २२ | ०९ १६ ३८ १९ | ०७ २३ ३६ १५ | ३० |



## अक्टूबर सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५४' १९"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | हर्शल (वक्री) | नेपच्यून (वक्री) | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अक्टू. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | अक्टू. |
| १ | ०५ १३ ३० ०३ | ०७ १९ ५५ १५ | १० ०६ १८ १८ | ०४ २६ ३४ ३२ | ०४ १३ २६ ०८ | ०५ २५ ०९ ३६ | ०२ १८ ४५ ३६ | ०० २८ ४० १५ | १० ०५ ३४ ३८ | ०९ १६ ३७ ३५ | ०७ २३ ३७ १७ | १ |
| २ | ०५ १४ २९ ०३ | ०८ ०४ ०६ २९ | १० ०६ २१ ४१ | ०४ २८ ०० २९ | ०४ १३ ३८ १४ | ०५ २६ २४ १४ | ०२ १८ ४८ १५ | ०० २८ ३७ ०५ | १० ०५ ३२ ५५ | ०९ १६ ३६ ५४ | ०७ २३ ३८ २१ | २ |
| ३ | ०५ १५ २८ ०४ | ०८ १८ ०२ १९ | १० ०६ २५ ५२ | ०४ २९ ३० २८ | ०४ १३ ५० १७ | ०५ २७ ३८ ५२ | ०२ १८ ५० ४८ | ०० २८ ३३ ५४ | १० ०५ ३१ १५ | ०९ १६ ३६ १४ | ०७ २३ ३९ २७ | ३ |
| ४ | ०५ १६ २७ ०७ | ०९ ०१ ४२ ३७ | १० ०६ ३० ५० | ०५ ०१ ०३ ५२ | ०४ १४ ०२ १६ | ०५ २८ ५३ ३० | ०२ १८ ५३ १५ | ०० २८ ३० ४३ | १० ०५ २९ ३७ | ०९ १६ ३५ ३६ | ०७ २३ ४० ३५ | ४ |
| ५ | ०५ १७ २६ १२ | ०९ १५ ०७ ५० | १० ०६ ३६ ३४ | ०५ ०२ ४० ०९ | ०४ १४ १४ १२ | ०६ ०० ०८ ०९ | ०२ १८ ५५ ३६ | ०० २८ २७ ३२ | १० ०५ २८ ०१ | ०९ १६ ३५ ०० | ०७ २३ ४१ ४४ | ५ |
| ६ | ०५ १८ २५ १९ | ०९ २८ १८ ३९ | १० ०६ ४३ ०५ | ०५ ०४ १८ ४७ | ०४ १४ २६ ०५ | ०६ ०१ २२ ४७ | ०२ १८ ५७ ५१ | ०० २८ २४ २१ | १० ०५ २६ २७ | ०९ १६ ३४ २६ | ०७ २३ ४२ ५५ | ६ |
| ७ | ०५ १९ २४ २७ | १० ११ १५ ४७ | १० ०६ ५० २२ | ०५ ०५ ५९ १८ | ०४ १४ ३७ ५५ | ०६ ०२ ३७ २५ | ०२ १८ ५९ ५९ | ०० २८ २१ ११ | १० ०५ २४ ५६ | ०९ १६ ३३ ५४ | ०७ २३ ४४ ०८ | ७ |
| ८ | ०५ २० २३ ३७ | १० २३ ५९ ५५ | १० ०६ ५८ २३ | ०५ ०७ ४१ १९ | ०४ १४ ४९ ४० | ०६ ०३ ५२ ०३ | ०२ १९ ०२ ०१ | ०० २८ १८ ०० | १० ०५ २३ २७ | ०९ १६ ३३ २३ | ०७ २३ ४५ २३ | ८ |
| ९ | ०५ २१ २२ ४९ | ११ ०६ ३१ ४० | १० ०७ ०७ ०८ | ०५ ०९ २४ २८ | ०४ १५ ०१ २३ | ०६ ०५ ०६ ४० | ०२ १९ ०३ ५७ | ०० २८ १४ ४९ | १० ०५ २२ ०० | ०९ १६ ३२ ५५ | ०७ २३ ४६ ३९ | ९ |
| १० | ०५ २२ २२ ०३ | ११ १८ ५१ ४४ | १० ०७ १६ ३७ | ०५ ११ ०८ २६ | ०४ १५ १३ ०१ | ०६ ०६ २१ १८ | ०२ १९ ०५ ४६ | ०० २८ ११ ३९ | १० ०५ २० ३६ | ०९ १६ ३२ २८ | ०७ २३ ४७ ५७ | १० |
| ११ | ०५ २३ २१ १९ | ०० ०१ ०१ ०२ | १० ०७ २६ ४८ | ०५ १२ ५२ ५८ | ०४ १५ २४ ३६ | ०६ ०७ ३५ ५६ | ०२ १९ ०७ २९ | ०० २८ ०८ २८ | १० ०५ १९ १४ | ०९ १६ ३२ ०३ | ०७ २३ ४९ १६ | ११ |
| १२ | ०५ २४ २० ३८ | ०० १३ ०१ ०० | १० ०७ ३७ ४० | ०५ १४ ३७ ५० | ०४ १५ ३६ ०७ | ०६ ०८ ५० ३४ | ०२ १९ ०९ ०६ | ०० २८ ०५ १७ | १० ०५ १७ ५५ | ०९ १६ ३१ ४० | ०७ २३ ५० ३८ | १२ |
| १३ | ०५ २५ १९ ५८ | ०० २४ ५३ ३७ | १० ०७ ४९ १४ | ०५ १६ २२ ५१ | ०४ १५ ४७ ३४ | ०६ १० ०५ १२ | ०२ १९ १० ३६ | ०० २८ ०२ ०७ | १० ०५ १६ ३७ | ०९ १६ ३१ १९ | ०७ २३ ५२ ०० | १३ |
| १४ | ०५ २६ १९ २० | ०१ ०६ ४१ ३३ | १० ०८ ०१ २९ | ०५ १८ ०७ ५१ | ०४ १५ ५८ ५७ | ०६ ११ १९ ५० | ०२ १९ ११ ५९ | ०० २७ ५८ ५६ | १० ०५ १५ २३ | ०९ १६ ३१ ०० | ०७ २३ ५३ २५ | १४ |
| १५ | ०५ २७ १८ ४५ | ०१ १८ २८ ०७ | १० ०८ १४ २३ | ०५ १९ ५२ ४३ | ०४ १६ १० १५ | ०६ १२ ३४ २८ | ०२ १९ १३ १६ | ०० २७ ५५ ४५ | १० ०५ १४ ११ | ०९ १६ ३० ४३ | ०७ २३ ५४ ५१ | १५ |
| १६ | ०५ २८ १८ १२ | ०२ ०० १७ १५ | १० ०८ २७ ५६ | ०५ २१ ३७ १९ | ०४ १६ २१ ३० | ०६ १३ ४९ ०६ | ०२ १९ १४ २६ | ०० २७ ५२ ३४ | १० ०५ १३ ०२ | ०९ १६ ३० २८ | ०७ २३ ५६ १८ | १६ |
| १७ | ०५ २९ १७ ४१ | ०२ १२ १३ २१ | १० ०८ ४२ ०७ | ०५ २३ २१ ३६ | ०४ १६ ३२ ४० | ०६ १५ ०३ ४५ | ०२ १९ १५ ३० | ०० २७ ४९ २३ | १० ०५ ११ ५५ | ०९ १६ ३० १५ | ०७ २३ ५७ ४८ | १७ |
| १८ | ०६ ०० १७ १३ | ०२ २४ २१ ११ | १० ०८ ५६ ५६ | ०५ २५ ०५ २८ | ०४ १६ ४३ ४६ | ०६ १६ १८ २३ | ०२ १९ १६ २७ | ०० २७ ४६ १३ | १० ०५ १० ५१ | ०९ १६ ३० ०४ | ०७ २३ ५९ १८ | १८ |
| १९ | ०६ ०१ १६ ४७ | ०३ ०६ ४५ ३८ | १० ०९ १२ २१ | ०५ २६ ४८ ५४ | ०४ १६ ५४ ४८ | ०६ १७ ३३ ०२ | ०२ १९ १७ १८ | ०० २७ ४३ ०२ | १० ०५ ०९ ४९ | ०९ १६ २९ ५४ | ०७ २४ ०० ५१ | १९ |
| २० | ०६ ०२ १६ २३ | ०३ १९ ३१ १५ | १० ०९ २८ २३ | ०५ २८ ३१ ४९ | ०४ १७ ०५ ४४ | ०६ १८ ४७ ४० | ०२ १९ १८ ०१ | ०० २७ ३९ ५१ | १० ०५ ०८ ५० | ०९ १६ २९ ४७ | ०७ २४ ०२ २४ | २० |
| २१ | ०६ ०३ १६ ०१ | ०४ ०२ ४१ ४६ | १० ०९ ४५ ०१ | ०६ ०० १४ १३ | ०४ १७ १६ ३६ | ०६ २० ०२ १९ | ०२ १९ १८ ३८ | ०० २७ ३६ ४० | १० ०५ ०७ ५४ | ०९ १६ २९ ४२ | ०७ २४ ०४ ०० | २१ |
| २२ | ०६ ०४ १५ ४२ | ०४ १६ १९ २७ | १० १० ०२ १४ | ०६ ०१ ५६ ०४ | ०४ १७ २७ २४ | ०६ २१ १६ ५८ | ०२ १९ १९ ०९ | ०० २७ ३३ ३० | १० ०५ ०७ ०१ | मा. ०९ १६ २९ ३९ | ०७ २४ ०५ ३६ | २२ |
| २३ | ०६ ०५ १५ २४ | ०५ ०० २४ २८ | १० १० २० ०१ | ०६ ०३ ३७ २२ | ०४ १७ ३८ ०६ | ०६ २२ ३१ ३७ | ०२ १९ १९ ३२ | ०० २७ ३० १९ | १० ०५ ०६ ११ | ०९ १६ २९ ३८ | ०७ २४ ०७ १४ | २३ |
| २४ | ०६ ०६ १५ ०९ | ०५ १४ ५४ २२ | १० १० ३८ २२ | ०६ ०५ १८ ०६ | ०४ १७ ४८ ४३ | ०६ २३ ४६ १५ | ०२ १९ १९ ४९ | ०० २७ २७ ०८ | १० ०५ ०५ २३ | ०९ १६ २९ ३८ | ०७ २४ ०८ ५४ | २४ |
| २५ | ०६ ०७ १४ ५६ | ०५ २९ ४४ ०१ | १० १० २७ १६ | ०६ ०६ ५८ १६ | ०४ १७ ५९ १५ | ०६ २५ ०० ५४ | व. ०२ १९ १९ ५९ | ०० २७ २३ ५८ | १० ०५ ०४ ३८ | ०९ १६ २९ ४१ | ०७ २४ १० ३५ | २५ |
| २६ | ०६ ०८ १४ ४६ | ०६ १४ ४५ ५७ | १० ११ १६ ४२ | ०६ ०८ ३७ ५३ | ०४ १८ ०९ ४२ | ०६ २६ १५ ३३ | ०२ १९ २० ०२ | ०० २७ २० ४७ | १० ०५ ०३ ५६ | ०९ १६ २९ ४६ | ०७ २४ १२ १७ | २६ |
| २७ | ०६ ०९ १४ ३७ | ०६ २९ ५१ १७ | १० ११ ३६ ४१ | ०६ १० १६ ५७ | ०४ १८ २० ०३ | ०६ २७ ३० १२ | ०२ १९ १९ ५८ | ०० २७ १७ ३६ | १० ०५ ०३ १७ | ०९ १६ २९ ५३ | ०७ २४ १४ ०१ | २७ |
| २८ | ०६ १० १४ २९ | ०७ १४ ५१ ०९ | १० ११ ५७ ११ | ०६ ११ ५५ २८ | ०४ १८ ३० १९ | ०६ २८ ४४ ५१ | ०२ १९ १९ ४८ | ०० २७ १४ २५ | १० ०५ ०२ ४१ | ०९ १६ ३० ०२ | ०७ २४ १५ ४६ | २८ |
| २९ | ०६ ११ १४ २४ | ०७ २९ ३७ ५२ | १० १२ १८ ११ | ०६ १३ ३३ २७ | ०४ १८ ४० ३० | ०६ २९ ५९ २९ | ०२ १९ १९ ३१ | ०० २७ ११ १४ | १० ०५ ०२ ०७ | ०९ १६ ३० १३ | ०७ २४ १७ ३२ | २९ |
| ३० | ०६ १२ १४ २० | ०८ १४ ०५ ५२ | १० १२ ३९ ४१ | ०६ १५ १० ५४ | ०४ १८ ५० ३४ | ०७ ०१ १४ ०८ | ०२ १९ १९ ०७ | ०० २७ ०८ ०३ | १० ०५ ०१ ३७ | ०९ १६ ३० २६ | ०७ २४ १९ २० | ३० |
| ३१ | ०६ १३ १४ १८ | ०८ २८ ११ ५९ | १० १३ ०१ ४० | ०६ १६ ४७ ५० | ०४ १९ ०० ३३ | ०७ ०२ २८ ४६ | ०२ १९ १८ ३७ | ०० २७ ०४ ५३ | १० ०५ ०१ १० | ०९ १६ ३० ४१ | ०७ २४ २१ ०९ | ३१ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## नवम्बर सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।२३"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु ( वक्री ) | शुक्र | शनि ( वक्री ) | राहु | हर्शल ( वक्री ) | नेपच्यून | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नवं. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | नवं. |
| १ | ०६ १४ १४ १८ | ०९ ११ ५५ १८ | १० १३ २४ ०७ | ०६ १८ २४ १७ | ०४ १९ १० २६ | ०७ ०३ ४३ २४ | ०२ १९ १७ ५९ | ०० २७ ०१ ४२ | १० ०५ ०० ४५ | ०९ १६ ३० ५९ | ०७ २४ २२ ५९ | १ |
| २ | ०६ १५ १४ १९ | ०९ २५ १६ ३२ | १० १३ ४७ ०१ | ०६ २० ०० १६ | ०४ १९ २० १३ | ०७ ०४ ५८ ०१ | ०२ १९ १७ १५ | ०० २६ ५८ ३१ | १० ०५ ०० २४ | ०९ १६ ३१ १८ | ०७ २४ २४ ५० | २ |
| ३ | ०६ १६ १४ २२ | १० ०८ १७ ३२ | १० १४ १० २३ | ०६ २१ ३५ ४७ | ०४ १९ २९ ५४ | ०७ ०६ १२ ३८ | ०२ १९ १६ २५ | ०० २६ ५५ २० | १० ०५ ०० ०६ | ०९ १६ ३१ ३९ | ०७ २४ २६ ४३ | ३ |
| ४ | ०६ १७ १४ २६ | १० २१ ०० ४५ | १० १४ ३४ १० | ०६ २३ १० ५१ | ०४ १९ ३९ २९ | ०७ ०७ २७ १५ | ०२ १९ १५ २८ | ०० २६ ५२ ०९ | १० ०४ ५९ ५० | ०९ १६ ३२ ०३ | ०७ २४ २८ ३७ | ४ |
| ५ | ०६ १८ १४ ३२ | ११ ०३ २८ ५६ | १० १४ ५८ २२ | ०६ २४ ४५ ३० | ०४ १९ ४८ ५७ | ०७ ०८ ४१ ५१ | ०२ १९ १४ २४ | ०० २६ ४८ ५९ | १० ०४ ५९ ३८ | ०९ १६ ३२ २८ | ०७ २४ ३० ३१ | ५ |
| ६ | ०६ १९ १४ ३९ | ११ १५ ४४ ४२ | १० १५ २२ ५९ | ०६ २६ १९ ४५ | ०४ १९ ५८ १९ | ०७ ०९ ५६ २७ | ०२ १९ १३ १३ | ०० २६ ४५ ४८ | १० ०४ ५९ २९ | ०९ १६ ३२ ५५ | ०७ २४ ३२ २७ | ६ |
| ७ | ०६ २० १४ ४९ | ११ २७ ५० ३२ | १० १५ ४७ ५९ | ०६ २७ ५३ ३६ | ०४ २० ०७ ३५ | ०७ ११ ११ ०३ | ०२ १९ ११ ५६ | ०० २६ ४२ ३७ | १० ०४ ५९ २३ | ०९ १६ ३३ २५ | ०७ २४ ३४ २४ | ७ |
| ८ | ०६ २१ १५ ०० | ०० ०९ ४८ ३९ | १० १६ १३ २२ | ०६ २९ २७ ०४ | ०४ २० १६ ४४ | ०७ १२ २५ ३८ | ०२ १९ १० ३३ | ०० २६ ३९ २७ | मा.१० ०४ ५९ १९ | ०९ १६ ३३ ५६ | ०७ २४ ३६ २२ | ८ |
| ९ | ०६ २२ १५ १२ | ०० २१ ४१ ०७ | १० १६ ३९ ०८ | ०७ ०१ ०० ११ | ०४ २० २५ ४६ | ०७ १३ ४० १३ | ०२ १९ ०९ ०३ | ०० २६ ३६ १६ | १० ०४ ५९ १९ | ०९ १६ ३४ ३० | ०७ २४ ३८ २१ | ९ |
| १० | ०६ २३ १५ २७ | ०१ ०३ ३० ०० | १० १७ ०५ १६ | ०७ ०२ ३२ ५६ | ०४ २० ३४ ४२ | ०७ १४ ५४ ४८ | ०२ १९ ०७ २७ | ०० २६ ३३ ०५ | १० ०४ ५९ २२ | ०९ १६ ३५ ०५ | ०७ २४ ४० २१ | १० |
| ११ | ०६ २४ १५ ४३ | ०१ १५ १५ २९ | १० १७ ३१ ४४ | ०७ ०४ ०५ २१ | ०४ २० ४३ ३१ | ०७ १६ ०९ २२ | ०२ १९ ०५ ४४ | ०० २६ २९ ५४ | १० ०४ ५९ २८ | ०९ १६ ३५ ४२ | ०७ २४ ४२ २२ | ११ |
| १२ | ०६ २५ १६ ०१ | ०१ २७ ०५ ५६ | १० १७ ५८ ३४ | ०७ ०५ ३७ २६ | ०४ २० ५२ १३ | ०७ १७ २३ ५६ | ०२ १९ ०३ ५५ | ०० २६ २६ ४३ | १० ०४ ५९ ३७ | ०९ १६ ३६ २२ | ०७ २४ ४४ २४ | १२ |
| १३ | ०६ २६ १६ २० | ०२ ०८ ५८ ०५ | १० १८ २५ ४४ | ०७ ०७ ०९ ११ | ०४ २१ ०० ४७ | ०७ १८ ३८ ३० | ०२ १९ ०२ ०० | ०० २६ २३ ३३ | १० ०४ ५९ ४९ | ०९ १६ ३७ ०३ | ०७ २४ ४६ २७ | १३ |
| १४ | ०६ २७ १६ ४२ | ०२ २० ५६ ५९ | १० १८ ५३ १३ | ०७ ०८ ४० ३८ | ०४ २१ ०९ १५ | ०७ १९ ५३ ०३ | ०२ १८ ५९ ५८ | ०० २६ २० २२ | १० ०५ ०० ०४ | ०९ १६ ३७ ४७ | ०७ २४ ४८ ३१ | १४ |
| १५ | ०६ २८ १७ ०६ | ०३ ०३ ०६ ०८ | १० १९ २१ ०१ | ०७ १० ११ ४६ | ०४ २१ १७ ३५ | ०७ २१ ०७ ३७ | ०२ १८ ५७ ५० | ०० २६ १७ ११ | १० ०५ ०० २२ | ०९ १६ ३८ ३२ | ०७ २४ ५० ३५ | १५ |
| १६ | ०६ २९ १७ ३१ | ०३ १५ २९ २१ | १० १९ ४९ ०९ | ०७ ११ ४२ ३६ | ०४ २१ २५ ४८ | ०७ २२ २२ १० | ०२ १८ ५५ ३६ | ०० २६ १४ ०० | १० ०५ ०० ४३ | ०९ १६ ३९ १९ | ०७ २४ ५२ ४१ | १६ |
| १७ | ०७ ०० १७ ५८ | ०३ २८ १० ३६ | १० २० १७ ३४ | ०७ १३ १३ ०६ | ०४ २१ ३३ ५३ | ०७ २३ ३६ ४३ | ०२ १८ ५३ १६ | ०० २६ १० ४९ | १० ०५ ०१ ०८ | ०९ १६ ४० ०९ | ०७ २४ ५४ ४७ | १७ |
| १८ | ०७ ०१ १८ २८ | ०४ ११ १३ ३६ | १० २० ४६ १८ | ०७ १४ ४३ १८ | ०४ २१ ४१ ५१ | ०७ २४ ५१ १५ | ०२ १८ ५० ५० | ०० २६ ०७ ३९ | १० ०५ ०१ ३५ | ०९ १६ ४१ ०० | ०७ २४ ५६ ५४ | १८ |
| १९ | ०७ ०२ १८ ५९ | ०४ २४ ४१ २४ | १० २१ १५ १९ | ०७ १६ १३ १० | ०४ २१ ४९ ४१ | ०७ २६ ०५ ४८ | ०२ १८ ४८ १८ | ०० २६ ०४ २८ | १० ०५ ०२ ०५ | ०९ १६ ४१ ५३ | ०७ २४ ५९ ०२ | १९ |
| २० | ०७ ०३ १९ ३१ | ०५ ०८ ३५ ४७ | १० २१ ४४ ३७ | ०७ १७ ४२ ४१ | ०४ २१ ५७ २३ | ०७ २७ २० २० | ०२ १८ ४५ ४० | ०० २६ ०१ १७ | १० ०५ ०२ ३९ | ०९ १६ ४२ ४८ | ०७ २५ ०१ १० | २० |
| २१ | ०७ ०४ २० ०६ | ०५ २२ ५६ ३५ | १० २२ १४ १२ | ०७ १९ ११ ५० | ०४ २२ ०४ ५७ | ०७ २८ ३४ ५२ | ०२ १८ ४२ ५५ | ०० २५ ५८ ०६ | १० ०५ ०३ १५ | ०९ १६ ४३ ४५ | ०७ २५ ०३ १९ | २१ |
| २२ | ०७ ०५ २० ४२ | ०६ ०७ ४१ ०६ | १० २२ ४४ ०३ | ०७ २० ४० ३५ | ०४ २२ १२ २३ | ०७ २९ ४९ २३ | ०२ १८ ४० ०६ | ०० २५ ५४ ५६ | १० ०५ ०३ ५५ | ०९ १६ ४४ ४४ | ०७ २५ ०५ २९ | २२ |
| २३ | ०७ ०६ २१ २० | ०६ २२ ४३ ४९ | १० २३ १४ ११ | ०७ २२ ०८ ५४ | ०४ २२ १९ ४० | ०८ ०१ ०३ ५५ | ०२ १८ ३७ १० | ०० २५ ५१ ४५ | १० ०५ ०४ ३८ | ०९ १६ ४५ ४५ | ०७ २५ ०७ ४० | २३ |
| २४ | ०७ ०७ २२ ०० | ०७ ०७ ५६ ४२ | १० २३ ४४ ३४ | ०७ २३ ३६ ४६ | ०४ २२ २६ ४९ | ०८ ०२ १८ २६ | ०२ १८ ३४ ०९ | ०० २५ ४८ ३४ | १० ०५ ०५ २३ | ०९ १६ ४६ ४७ | ०७ २५ ०९ ५१ | २४ |
| २५ | ०७ ०८ २२ ४० | ०७ २३ १० ०४ | १० २४ १५ १३ | ०७ २५ ०४ ०५ | ०४ २२ ३३ ५० | ०८ ०३ ३२ ५७ | ०२ १८ ३१ ०३ | ०० २५ ४५ २३ | १० ०५ ०६ १२ | ०९ १६ ४७ ५२ | ०७ २५ १२ ०२ | २५ |
| २६ | ०७ ०९ २३ २३ | ०८ ०८ १४ ०२ | १० २४ ४६ ०७ | ०७ २६ ३० ५० | ०४ २२ ४० ४२ | ०८ ०४ ४७ २७ | ०२ १८ २७ ५१ | ०० २५ ४२ १२ | १० ०५ ०७ ०४ | ०९ १६ ४८ ५८ | ०७ २५ १४ १५ | २६ |
| २७ | ०७ १० २४ ०६ | ०८ २३ ०० ०६ | १० २५ १७ १४ | ०७ २७ ५६ ५६ | ०४ २२ ४७ २५ | ०८ ०६ ०१ ५६ | ०२ १८ २४ ३३ | ०० २५ ३९ ०१ | १० ०५ ०७ ५९ | ०९ १६ ५० ०७ | ०७ २५ १६ २७ | २७ |
| २८ | ०७ ११ २४ ५० | ०९ ०७ २२ ०९ | १० २५ ४८ ३७ | ०७ २९ २२ १६ | ०४ २२ ५४ ०० | ०८ ०७ १६ २५ | ०२ १८ २१ ११ | ०० २५ ३५ ५० | १० ०५ ०८ ५७ | ०९ १६ ५१ १७ | ०७ २५ १८ ४१ | २८ |
| २९ | ०७ १२ २५ ३६ | ०९ २१ १७ ०१ | १० २६ २० १३ | ०८ ०० ४६ ४६ | ०४ २३ ०० २५ | ०८ ०८ ३० ५४ | ०२ १८ १७ ४३ | ०० २५ ३२ ३९ | १० ०५ ०९ ५८ | ०९ १६ ५२ २९ | ०७ २५ २० ५४ | २९ |
| ३० | ०७ १३ २६ २२ | १० ०४ ४४ १९ | १० २६ ५२ ०३ | ०८ ०२ १० १७ | ०४ २३ ०६ ४२ | ०८ ०९ ४५ २१ | ०२ १८ १४ ११ | ०० २५ २९ २९ | १० ०५ ११ ०२ | ०९ १६ ५३ ४२ | ०७ २५ २३ ०८ | ३० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २९ | ०७ १२ २५ ३६ | ०९ २१ १७ ०१ | १० २६ २० [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ०९ ५८ | ०९ १६ ५२ २९ | ०७ २५ २० ५४ | २९ |
| ३० | ०७ १३ २६ २२ | १० ०४ ४४ १९ | १० २६ ५२ ०३ | ०८ ०२ १० १७ | ०४ २३ ०६ ४२ | ०८ ०९ ४५ २१ | ०२ १८ १४ ११ | ०० २५ २९ २९ | १० ०५ ११ ०२ | ०९ १६ ५३ ४२ | ०७ २५ २३ ०८ | ३० |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## दिसम्बर सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° १५४' १२८"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि ( वक्री ) | राहु | हर्शल | नेपच्यून | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिसं. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | दिसं. |
| १ | ०७ १४ २७ १० | १० १७ ४५ ५३ | १० २७ २४ ०५ | ०८ ०३ ३२ ४१ | ०४ २३ १२ ४९ | ०८ १० ५९ ४८ | ०२ १८ १० ३४ | ०० २५ २६ १८ | १० ०५ १२ ०९ | ०९ १६ ५४ ५८ | ०७ २५ २५ २३ | १ |
| २ | ०७ १५ २७ ५८ | ११ ०० २४ ५९ | १० २७ ५६ १९ | ०८ ०४ ५३ ४७ | ०४ २३ १८ ४७ | ०८ १२ १४ १४ | ०२ १८ ०६ ५२ | ०० २५ २३ ०७ | १० ०५ १३ १९ | ०९ १६ ५६ १५ | ०७ २५ २७ ३८ | २ |
| ३ | ०७ १६ २८ ४७ | ११ १२ ४५ ४२ | १० २८ २८ ४६ | ०८ ०६ १३ २५ | ०४ २३ २४ ३६ | ०८ १३ २८ ३९ | ०२ १८ ०३ ०५ | ०० २५ १९ ५६ | १० ०५ १४ ३२ | ०९ १६ ५७ ३४ | ०७ २५ २९ ५३ | ३ |
| ४ | ०७ १७ २९ ३८ | ११ २४ ५२ १९ | १० २९ ०१ २४ | ०८ ०७ ३१ २० | ०४ २३ ३० १५ | ०८ १४ ४३ ०३ | ०२ १७ ५९ १४ | ०० २५ १६ ४६ | १० ०५ १५ ४७ | ०९ १६ ५८ ५५ | ०७ २५ ३२ ०८ | ४ |
| ५ | ०७ १८ ३० २९ | ०० ०६ ४९ ०२ | १० २९ ३४ १४ | ०८ ०८ ४७ १६ | ०४ २३ ३५ ४५ | ०८ १५ ५७ २६ | ०२ १७ ५५ १९ | ०० २५ १३ ३५ | १० ०५ १७ ०६ | ०९ १७ ०० १७ | ०७ २५ ३४ २४ | ५ |
| ६ | ०७ १९ ३१ २१ | ०० १८ ३९ ३६ | ११ ०० ०७ १४ | ०८ १० ०० ५५ | ०४ २३ ४१ ०६ | ०८ १७ ११ ४८ | ०२ १७ ५१ १९ | ०० २५ १० २४ | १० ०५ १८ २७ | ०९ १७ ०१ ४१ | ०७ २५ ३६ ४० | ६ |
| ७ | ०७ २० ३२ १४ | ०१ ०० २७ १९ | ११ ०० ४० २५ | ०८ ११ ११ ५६ | ०४ २३ ४६ १७ | ०८ १८ २६ ०९ | ०२ १७ ४७ १६ | ०० २५ ०७ १३ | १० ०५ १९ ५२ | ०९ १७ ०३ ०७ | ०७ २५ ३८ ५६ | ७ |
| ८ | ०७ २१ ३३ ०७ | ०१ १२ १४ ५७ | ११ ०१ १३ ४६ | ०८ १२ १९ ५४ | ०४ २३ ५१ १७ | ०८ १९ ४० २९ | ०२ १७ ४३ ०८ | ०० २५ ०४ ०३ | १० ०५ २१ १९ | ०९ १७ ०४ ३४ | ०७ २५ ४१ १२ | ८ |
| ९ | ०७ २२ ३४ ०२ | ०१ २४ ०४ ५१ | ११ ०१ ४७ १७ | ०८ १३ २४ २३ | ०४ २३ ५६ ०९ | ०८ २० ५४ ४८ | ०२ १७ ३८ ५७ | ०० २५ ०० ५२ | १० ०५ २२ ४९ | ०९ १७ ०६ ०३ | ०७ २५ ४३ २८ | ९ |
| १० | ०७ २३ ३४ ५८ | ०२ ०५ ५९ ०० | ११ ०२ २० ५७ | ०८ १४ २४ ४९ | ०४ २४ ०० ५० | ०८ २२ ०९ ०६ | ०२ १७ ३४ ४१ | ०० २४ ५७ ४१ | १० ०५ २४ २२ | ०९ १७ ०७ ३३ | ०७ २५ ४५ ४५ | १० |
| ११ | ०७ २४ ३५ ५४ | ०२ १७ ५९ ०८ | ११ ०२ ५४ ४७ | ०८ १५ २० ३९ | ०४ २४ ०५ २१ | ०८ २३ २३ २३ | ०२ १७ ३० २३ | ०० २४ ५४ ३० | १० ०५ २५ ५७ | ०९ १७ ०९ ०५ | ०७ २५ ४८ ०१ | ११ |
| १२ | ०७ २५ ३६ ५२ | ०३ ०० ०७ ०० | ११ ०३ २८ ४६ | ०८ १६ ११ १० | ०४ २४ ०९ ४२ | ०८ २४ ३७ ३९ | ०२ १७ २६ ०१ | ०० २४ ५१ १९ | १० ०५ २७ ३६ | ०९ १७ १० ३९ | ०७ २५ ५० १८ | १२ |
| १३ | ०७ २६ ३७ ५१ | ०३ १२ २४ २६ | ११ ०४ ०२ ५४ | ०८ १६ ५५ ४१ | ०४ २४ १३ ५२ | ०८ २५ ५१ ५३ | ०२ १७ २१ ३५ | ०० २४ ४८ ०८ | १० ०५ २९ १७ | ०९ १७ १२ १४ | ०७ २५ ५२ ३५ | १३ |
| १४ | ०७ २७ ३८ ५१ | ०३ २४ ५३ ३५ | ११ ०४ ३७ १० | ०८ १७ ३३ २२ | ०४ २४ १७ ५३ | ०८ २७ ०६ ०७ | ०२ १७ १७ ०७ | ०० २४ ४४ ५७ | १० ०५ ३१ ०० | ०९ १७ १३ ५१ | ०७ २५ ५४ ५१ | १४ |
| १५ | ०७ २८ ३९ ५१ | ०४ ०७ ३६ ५५ | ११ ०५ ११ ३५ | ०८ १८ ०३ २२ | ०४ २४ २१ ४२ | ०८ २८ २० २० | ०२ १७ १२ ३५ | ०० २४ ४१ ४७ | १० ०५ ३२ ४७ | ०९ १७ १५ २९ | ०७ २५ ५७ ०८ | १५ |
| १६ | ०७ २९ ४० ५३ | ०४ २० ३७ ०२ | ११ ०५ ४६ ०८ | ०८ १८ २४ ५० | ०४ २४ २५ २२ | ०८ २९ ३४ ३१ | ०२ १७ ०८ ०१ | ०० २४ ३८ ३६ | १० ०५ ३४ ३६ | ०९ १७ १७ ०८ | ०७ २५ ५९ २४ | १६ |
| १७ | ०८ ०० ४१ ५६ | ०५ ०३ ५६ ३२ | ११ ०६ २० ४९ | ०८ १८ ३६ ५२ | ०४ २४ २८ ५० | ०९ ०० ४८ ४१ | ०२ १७ ०३ २३ | ०० २४ ३५ २५ | १० ०५ ३६ २८ | ०९ १७ १८ ४९ | ०७ २६ ०१ ४१ | १७ |
| १८ | ०८ ०१ ४३ ०० | ०५ १७ ३७ ३९ | ११ ०६ ५५ ३८ | ०८ १८ ३८ ३९ | ०४ २४ ३२ ०८ | ०९ ०२ ०२ ५० | ०२ १६ ५८ ४४ | ०० २४ ३२ १४ | १० ०५ ३८ २२ | ०९ १७ २० ३१ | ०७ २६ ०३ ५७ | १८ |
| १९ | ०८ ०२ ४४ ०४ | ०६ ०१ ४१ ४० | ११ ०७ ३० ३५ | ०८ १८ २९ २७ | ०४ २४ ३५ १५ | ०९ ०३ १६ ५८ | ०२ १६ ५४ ०१ | ०० २४ २९ ०४ | १० ०५ ४० १९ | ०९ १७ २२ १५ | ०७ २६ ०६ १३ | १९ |
| २० | ०८ ०३ ४५ १० | ०६ १६ ०८ १८ | ११ ०८ ०५ ४० | ०८ १८ ०८ ४७ | ०४ २४ ३८ ११ | ०९ ०४ ३१ ०५ | ०२ १६ ४९ १७ | ०० २४ २५ ५३ | १० ०५ ४२ १९ | ०९ १७ २४ ०० | ०७ २६ ०८ २९ | २० |
| २१ | ०८ ०४ ४६ १६ | ०७ ०० ५४ ५७ | ११ ०८ ४० ५२ | ०८ १७ ३६ २४ | ०४ २४ ४० ५७ | ०९ ०५ ४५ १० | ०२ १६ ४४ ३० | ०० २४ २२ ४२ | १० ०५ ४४ २१ | ०९ १७ २५ ४७ | ०७ २६ १० ४४ | २१ |
| २२ | ०८ ०५ ४७ २३ | ०७ १५ ५६ १७ | ११ ०९ १६ ११ | ०८ १६ ५२ २९ | ०४ २४ ४३ ३१ | ०९ ०६ ५९ १४ | ०२ १६ ३९ ४२ | ०० २४ १९ ३१ | १० ०५ ४६ २६ | ०९ १७ २७ ३५ | ०७ २६ १२ ५९ | २२ |
| २३ | ०८ ०६ ४८ ३१ | ०८ ०१ ०४ २५ | ११ ०९ ५१ ३७ | ०८ १५ ५७ ३९ | ०४ २४ ४५ ५३ | ०९ ०८ १३ १७ | ०२ १६ ३४ ५२ | ०० २४ १६ २० | १० ०५ ४८ ३३ | ०९ १७ २९ २४ | ०७ २६ १५ १४ | २३ |
| २४ | ०८ ०७ ४९ ३९ | ०८ १६ ०९ ४८ | ११ १० २७ ११ | ०८ १४ ५३ ०५ | ०४ २४ ४८ ०५ | ०९ ०९ २७ १८ | ०२ १६ ३० ०० | ०० २४ १३ ०९ | १० ०५ ५० ४३ | ०९ १७ ३१ १४ | ०७ २६ १७ २९ | २४ |
| २५ | ०८ ०८ ५० ४८ | ०९ ०१ ०२ ४३ | ११ ११ ०२ ५१ | ०८ १३ ४० ३० | ०४ २४ ५० ०५ | ०९ १० ४१ १७ | ०२ १६ २५ ०७ | ०० २४ ०९ ५८ | १० ०५ ५२ ५५ | ०९ १७ ३३ ०६ | ०७ २६ १९ ४३ | २५ |
| २६ | ०८ ०९ ५१ ५७ | ०९ १५ ३४ ५४ | ११ ११ ३८ ३८ | ०८ १२ २२ ०५ | ०४ २४ ५१ ५४ | ०९ ११ ५५ १५ | ०२ १६ २० १३ | ०० २४ ०६ ४७ | १० ०५ ५५ ०९ | ०९ १७ ३४ ५९ | ०७ २६ २१ ५७ | २६ |
| २७ | ०८ १० ५३ ०६ | ०९ २९ ४० ३९ | ११ १२ १४ ३१ | ०८ ११ ०० २५ | ०४ २४ ५३ ३२ | ०९ १३ ०९ ११ | ०२ १६ १५ १८ | ०० २४ ०३ ३६ | १० ०५ ५७ २६ | ०९ १७ ३६ ५३ | ०७ २६ २४ ११ | २७ |
| २८ | ०८ ११ ५४ १५ | १० १३ १७ २८ | ११ १२ ५० ३१ | ०८ ०९ ३८ १३ | ०४ २४ ५४ ५८ | ०९ १४ २३ ०४ | ०२ १६ १० २२ | ०० २४ ०० २६ | १० ०५ ५९ ४५ | ०९ १७ ३८ ४८ | ०७ २६ २६ २४ | २८ |
| २९ | ०८ १२ ५५ २४ | १० २६ २५ ४६ | ११ १३ २६ ३६ | ०८ ०८ १८ १२ | ०४ २४ ५६ १३ | ०९ १५ ३६ ५६ | ०२ १६ ०५ २५ | ०० २३ ५७ १५ | १० ०६ ०२ ०७ | ०९ १७ ४० ४४ | ०७ २६ २८ ३६ | २९ |
| ३० | ०८ १३ ५६ ३३ | ११ ०९ ०८ १९ | ११ १४ ०२ ४६ | ०८ ०७ ०२ ५२ | ०४ २४ ५७ १६ | ०९ १६ ५० ४६ | ०२ १६ ०० २८ | ०० २३ ५४ ०४ | १० ०६ ०४ ३० | ०९ १७ ४२ ४१ | ०७ २६ ३० ४८ | ३० |
| ३१ | ०८ १४ ५७ ४२ | ११ २१ २९ २५ | ११ १४ ३९ ०३ | ०८ ०५ ५४ २० | ०४ २४ ५८ ०८ | ०९ १८ ०४ ३३ | ०२ १५ ५५ ३१ | ०० २३ ५० ५३ | १० ०६ ०६ ५६ | ०९ १७ ४४ ४० | ०७ २६ ३३ ०० | ३१ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## जनवरी सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।३३"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध ( वक्री ) | गुरु | शुक्र | शनि ( वक्री ) | राहु | हर्शल | नेपच्यून | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | जन. |
| १ | ०८ १५ ५८ ५१ | ०० ०३ ३४ ०९ | ११ १५ १५ २४ | ०८ ०४ ५४ ११ | ०४ २४ ५८ ४८ | ०९ १९ १८ १७ | ०२ १५ ५० ३३ | ०० २३ ४७ ४३ | १० ०६ ०९ २५ | ०९ १७ ४६ ३९ | ०७ २६ ३५ १० | १ |
| २ | ०८ १६ ५९ ५९ | ०० १५ २७ ५० | ११ १५ ५१ ५० | ०८ ०४ ०३ ३४ | ०४ २४ ५९ १७ | ०९ २० ३२ ०० | ०२ १५ ४५ ३६ | ०० २३ ४४ ३२ | १० ०६ ११ ५५ | ०९ १७ ४८ ४० | ०७ २६ ३७ २१ | २ |
| ३ | ०८ १८ ०१ ०८ | ०० २७ १५ ३१ | ११ १६ २८ २२ | ०८ ०३ २३ ०५ | ०४ २४ ५९ ३४ | ०९ २१ ४५ ३९ | ०२ १५ ४० ३९ | ०० २३ ४१ २१ | १० ०६ १४ २७ | ०९ १७ ५० ४१ | ०७ २६ ३९ ३० | ३ |
| ४ | ०८ १९ ०२ १६ | ०१ ०९ ०१ ४९ | ११ १७ ०४ ५७ | ०८ ०२ ५२ ५९ | ०४ २४ ५९ ३९ | ०९ २२ ५९ १६ | ०२ १५ ३५ ४२ | ०० २३ ३८ १० | १० ०६ १७ ०२ | ०९ १७ ५२ ४४ | ०७ २६ ४१ ३९ | ४ |
| ५ | ०८ २० ०३ २४ | ०१ २० ५० ४० | ११ १७ ४१ ३८ | ०८ ०२ ३३ ०६ | ०४ २४ ५९ ३३ | ०९ २४ १२ ५० | ०२ १५ ३० ४६ | ०० २३ ३४ ५९ | १० ०६ १९ ३८ | ०९ १७ ५४ ४७ | ०७ २६ ४३ ४७ | ५ |
| ६ | ०८ २१ ०४ ३२ | ०२ ०२ ४५ १२ | ११ १८ १८ २२ | ०८ ०२ २३ ०५ | व. २४ ५९ १६ | ०९ २५ २६ २२ | ०२ १५ २५ ५० | ०० २३ ३१ ४८ | १० ०६ २२ १७ | ०९ १७ ५६ ५१ | ०७ २६ ४५ ५४ | ६ |
| ७ | ०८ २२ ०५ ४० | ०२ १४ ४७ ४४ | ११ १८ ५५ ११ | ०८ ०२ २२ २४ | ०४ २४ ५८ ४६ | ०९ २६ ३९ ५० | ०२ १५ २० ५५ | ०० २३ २८ ३७ | १० ०६ २४ ५७ | ०९ १७ ५८ ५६ | ०७ २६ ४८ ०१ | ७ |
| ८ | ०८ २३ ०६ ४८ | ०२ २६ ५९ ४८ | ११ १९ ३२ ०३ | मा. ०२ ३० २३ | ०४ २४ ५८ ०६ | ०९ २७ ५३ १६ | ०२ १५ १६ ०२ | ०० २३ २५ २७ | १० ०६ २७ ४० | ०९ १८ ०१ ०२ | ०७ २६ ५० ०७ | ८ |
| ९ | ०८ २४ ०७ ५६ | ०३ ०९ २२ १४ | ११ २० ०९ ०० | ०८ ०२ ४६ २२ | ०४ २४ ५७ १३ | ०९ २९ ०६ ३८ | ०२ १५ ११ १० | ०० २३ २२ १६ | १० ०६ ३० २४ | ०९ १८ ०३ ०९ | ०७ २६ ५२ १२ | ९ |
| १० | ०८ २५ ०९ ०३ | ०३ २१ ५५ २९ | ११ २० ४६ ०० | ०८ ०३ ०९ ३८ | ०४ २४ ५६ १० | १० ०० १९ ५८ | ०२ १५ ०६ १९ | ०० २३ १९ ०५ | १० ०६ ३३ १० | ०९ १८ ०५ १६ | ०७ २६ ५४ १६ | १० |
| ११ | ०८ २६ १० ११ | ०४ ०४ ३९ ५२ | ११ २१ २३ ०४ | ०८ ०३ ३९ ३१ | ०४ २४ ५४ ५४ | १० ०१ ३३ १४ | ०२ १५ ०१ २९ | ०० २३ १५ ५४ | १० ०६ ३५ ५८ | ०९ १८ ०७ २५ | ०७ २६ ५६ १९ | ११ |
| १२ | ०८ २७ ११ १८ | ०४ १७ ३५ ४९ | ११ २२ ०० ११ | ०८ ०४ १५ २२ | ०४ २४ ५३ २७ | १० ०२ ४६ २७ | ०२ १४ ५६ ४२ | ०० २३ १२ ४३ | १० ०६ ३८ ४८ | ०९ १८ ०९ ३३ | ०७ २६ ५८ २१ | १२ |
| १३ | ०८ २८ १२ २५ | ०५ ०० ४४ ०४ | ११ २२ ३७ २२ | ०८ ०४ ५६ ३६ | ०४ २४ ५१ ४९ | १० ०३ ५९ ३७ | ०२ १४ ५१ ५६ | ०० २३ ०९ ३३ | १० ०६ ४१ ४० | ०९ १८ ११ ४३ | ०७ २७ ०० २३ | १३ |
| १४ | ०८ २९ १३ ३२ | ०५ १४ ०५ ३८ | ११ २३ १४ ३६ | ०८ ०५ ४२ ३९ | ०४ २४ ४९ ५९ | १० ०५ १२ ४४ | ०२ १४ ४७ १२ | ०० २३ ०६ २२ | १० ०६ ४४ ३३ | ०९ १८ १३ ५३ | ०७ २७ ०२ २३ | १४ |
| १५ | ०९ ०० १४ ३९ | ०५ २७ ४१ ५० | ११ २३ ५१ ५४ | ०८ ०६ ३३ ०२ | ०४ २४ ४७ ५७ | १० ०६ २५ ४७ | ०२ १४ ४२ ३० | ०० २३ ०३ ११ | १० ०६ ४७ २८ | ०९ १८ १६ ०४ | ०७ २७ ०४ २२ | १५ |
| १६ | ०९ ०१ १५ ४६ | ०६ ११ ३३ ५३ | ११ २४ २९ १५ | ०८ ०७ २७ १८ | ०४ २४ ४५ ४४ | १० ०७ ३८ ४७ | ०२ १४ ३७ ५१ | ०० २३ ०० ०० | १० ०६ ५० २४ | ०९ १८ १८ १६ | ०७ २७ ०६ २१ | १६ |
| १७ | ०९ ०२ १६ ५३ | ०६ २५ ४२ २६ | ११ २५ ०६ ३९ | ०८ ०८ २५ ०३ | ०४ २४ ४३ २० | १० ०८ ५१ ४३ | ०२ १४ ३३ १४ | ०० २२ ५६ ५० | १० ०६ ५३ २२ | ०९ १८ २० २८ | ०७ २७ ०८ १८ | १७ |
| १८ | ०९ ०३ १८ ०० | ०७ १० ०६ ५४ | ११ २५ ४४ ०६ | ०८ ०९ २५ ५५ | ०४ २४ ४० ४४ | १० १० ०४ ३६ | ०२ १४ २८ ४० | ०० २२ ५३ ३९ | १० ०६ ५६ २२ | ०९ १८ २२ ४० | ०७ २७ १० १४ | १८ |
| १९ | ०९ ०४ १९ ०६ | ०७ २४ ४४ ४४ | ११ २६ २१ ३६ | ०८ १० २९ ३७ | ०४ २४ ३७ ५७ | १० ११ १७ २५ | ०२ १४ २४ ०९ | ०० २२ ५० २८ | १० ०६ ५९ २३ | ०९ १८ २४ ५३ | ०७ २७ १२ १० | १९ |
| २० | ०९ ०५ २० १२ | ०८ ०९ ३१ ०५ | ११ २६ ५९ १० | ०८ ११ ३५ ५१ | ०४ २४ ३४ ५९ | १० १२ ३० १० | ०२ १४ १९ ४० | ०० २२ ४७ १७ | १० ०७ ०२ २६ | ०९ १८ २७ ०७ | ०७ २७ १४ ०४ | २० |
| २१ | ०९ ०६ २१ १८ | ०८ २४ १८ ५७ | ११ २७ ३६ ४६ | ०८ १२ ४४ २२ | ०४ २४ ३१ ५० | १० १३ ४२ ५१ | ०२ १४ १५ १५ | ०० २२ ४४ ०६ | १० ०७ ०५ ३० | ०९ १८ २९ २१ | ०७ २७ १५ ५६ | २१ |
| २२ | ०९ ०७ २२ २३ | ०९ ०९ ०० ०९ | ११ २८ १४ २६ | ०८ १३ ५४ ५८ | ०४ २४ २८ ३० | १० १४ ५५ २९ | ०२ १४ १० ५४ | ०० २२ ४० ५५ | १० ०७ ०८ ३६ | ०९ १८ ३१ ३५ | ०७ २७ १७ ४८ | २२ |
| २३ | ०९ ०८ २३ २७ | ०९ २३ २६ ३६ | ११ २८ ५२ ०८ | ०८ १५ ०७ २८ | ०४ २४ २४ ५९ | १० १६ ०८ ०२ | ०२ १४ ०६ ३५ | ०० २२ ३७ ४४ | १० ०७ ११ ४३ | ०९ १८ ३३ ५० | ०७ २७ १९ ३८ | २३ |
| २४ | ०९ ०९ २४ ३१ | १० ०७ ३१ ४० | ११ २९ २९ ५२ | ०८ १६ २१ ४२ | ०४ २४ २१ १७ | १० १७ २० ३१ | ०२ १४ ०२ २१ | ०० २२ ३४ ३३ | १० ०७ १४ ५१ | ०९ १८ ३६ ०५ | ०७ २७ २१ २७ | २४ |
| २५ | ०९ १० २५ ३३ | १० २१ ११ १२ | ०० ०० ०७ ४० | ०८ १७ ३७ ३१ | ०४ २४ १७ २४ | १० १८ ३२ ५५ | ०२ १३ ५८ १० | ०० २२ ३१ २३ | १० ०७ १८ ०१ | ०९ १८ ३८ २१ | ०७ २७ २३ १५ | २५ |
| २६ | ०९ ११ २६ ३५ | ११ ०४ २३ ५० | ०० ०० ४५ ३० | ०८ १८ ५४ ४८ | ०४ २४ १३ २२ | १० १९ ४५ १४ | ०२ १३ ५४ ०३ | ०० २२ २८ १२ | १० ०७ २१ १२ | ०९ १८ ४० ३६ | ०७ २७ २५ ०२ | २६ |
| २७ | ०९ १२ २७ ३६ | ११ १७ १० ५२ | ०० ०१ २३ २२ | ०८ २० १३ २६ | ०४ २४ ०९ ०८ | १० २० ५७ २८ | ०२ १३ ५० ०० | ०० २२ २५ ०१ | १० ०७ २४ २४ | ०९ १८ ४२ ५२ | ०७ २७ २६ ४७ | २७ |
| २८ | ०९ १३ २८ ३५ | ११ २९ ३५ ३५ | ०० ०२ ०१ १६ | ०८ २१ ३३ २० | ०८ २४ ०४ ४५ | १० २२ ०९ ३८ | ०२ १३ ४६ ०१ | ०० २२ २१ ५१ | १० ०७ २७ ३७ | ०९ १८ ४५ ०८ | ०७ २७ २८ ३१ | २८ |
| २९ | ०९ १४ २९ ३४ | ०० ११ ४२ ४२ | ०० ०२ ३९ १२ | ०८ २२ ५४ २५ | ०४ २४ ०० १२ | १० २३ २१ ४२ | ०२ १३ ४२ ०७ | ०० २२ १८ ४० | १० ०७ ३० ५१ | ०९ १८ ४७ २५ | ०७ २७ ३० १३ | २९ |
| ३० | ०९ १५ ३० ३१ | ०० २३ ३७ ३६ | ०० ०३ १७ १० | ०८ २४ १६ ३७ | ०४ २३ ५५ २९ | १० २४ ३३ ४० | ०२ १३ ३८ १७ | ०० २२ १५ २९ | १० ०७ ३४ ०६ | ०९ १८ ४९ ४१ | ०७ २७ ३१ ५४ | ३० |
| ३१ | ०९ १६ ३१ २७ | ०१ ०५ २५ ५६ | ०० ०३ ५५ १० | ०८ २५ ३९ ५३ | ०४ २३ ५० ३६ | १० २५ ४५ ३३ | ०२ १३ ३४ ३२ | ०० २२ १२ १८ | १० ०७ ३७ २२ | ०९ १८ ५१ ५८ | ०७ २७ ३३ ३४ | ३१ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३० | ०९ १५ ३० ३१ | ०० २३ ३७ ३६ | ०० ०३ [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] ३४ ०६ | ०९ १८ ४९ ४१ | ०७ २७ ३१ ५४ | ३० |
| ३१ | ०९ १६ ३१ २७ | ०१ ०५ २५ ५६ | ०० ०३ ५५ १० | ०८ २५ ३९ ५३ | ०४ २३ ५० ३६ | १० २५ ४५ ३३ | ०२ १३ ३४ ३२ | ०० २२ १२ १८ | १० ०७ ३७ २२ | ०९ १८ ५१ ५८ | ०७ २७ ३३ ३४ | ३१ |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

## फरवरी सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ।५४' ।३९"

| ता. | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु ( वक्री ) | शुक्र | शनि ( वक्री ) | राहु | हर्शल | नेपच्यून | प्लूटो | ता. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फर. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | रा. अं. क. वि. | फर. |
| १ | ०९ १७ ३२ २२ | ०१ १७ १३ १० | ०० ०४ ३३ ११ | ०८ २७ ०४ ०८ | ०४ २३ ४५ ३४ | १० २६ ५७ २० | ०२ १३ ३० ५१ | ०० २२ ०९ ०८ | १० ०७ ४० ३९ | ०९ १८ ५४ १४ | ०७ २७ ३५ १२ | १ |
| २ | ०९ १८ ३३ १५ | ०१ २९ ०४ १७ | ०० ०५ ११ १४ | ०८ २८ २९ २२ | ०४ २३ ४० २२ | १० २८ ०९ ०१ | ०२ १३ २७ १६ | ०० २२ ०५ ५७ | १० ०७ ४३ ५७ | ०९ १८ ५६ ३१ | ०७ २७ ३६ ४९ | २ |
| ३ | ०९ १९ ३४ ०८ | ०२ ११ ०३ ३० | ०० ०५ ४९ १९ | ०८ २९ ५५ ३१ | ०४ २३ ३५ ०२ | १० २९ २० ३६ | ०२ १३ २३ ४५ | ०० २२ ०२ ४६ | १० ०७ ४७ १६ | ०९ १८ ५८ ४७ | ०७ २७ ३८ २४ | ३ |
| ४ | ०९ २० ३४ ५९ | ०२ २३ १४ ०५ | ०० ०६ २७ २५ | ०९ ०१ २२ ३४ | ०४ २३ २९ ३२ | ११ ०० ३२ ०५ | ०२ १३ २० १९ | ०० २१ ५९ ३५ | १० ०७ ५० ३६ | ०९ १९ ०१ ०४ | ०७ २७ ३९ ५८ | ४ |
| ५ | ०९ २१ ३५ ४९ | ०३ ०५ ३८ ०९ | ०० ०७ ०५ ३२ | ०९ ०२ ५० ३० | ०४ २३ २३ ५४ | ११ ०१ ४३ २७ | ०२ १३ १६ ५८ | ०० २१ ५६ २४ | १० ०७ ५३ ५७ | ०९ १९ ०३ २१ | ०७ २७ ४१ ३० | ५ |
| ६ | ०९ २२ ३६ ३७ | ०३ १८ १६ ३८ | ०० ०७ ४३ ४१ | ०९ ०४ १९ १७ | ०४ २३ १८ ०८ | ११ ०२ ५४ ४३ | ०२ १३ १३ ४२ | ०० २१ ५३ १३ | १० ०७ ५७ १८ | ०९ १९ ०५ ३७ | ०७ २७ ४३ ०१ | ६ |
| ७ | ०९ २३ ३७ २५ | ०४ ०१ ०९ २२ | ०० ०८ २१ ५१ | ०९ ०५ ४८ ५५ | ०४ २३ १२ १३ | ११ ०४ ०५ ५३ | ०२ १३ १० ३२ | ०० २१ ५० ०३ | १० ०८ ०० ४० | ०९ १९ ०७ ५४ | ०७ २७ ४४ ३० | ७ |
| ८ | ०९ २४ ३८ ११ | ०४ १४ १५ २१ | ०० ०९ ०० ०२ | ०९ ०७ १९ २३ | ०४ २३ ०६ ११ | ११ ०५ १६ ५५ | ०२ १३ ०७ २७ | ०० २१ ४६ ५२ | १० ०८ ०४ ०३ | ०९ १९ १० १० | ०७ २७ ४५ ५७ | ८ |
| ९ | ०९ २५ ३८ ५६ | ०४ २७ ३३ ०६ | ०० ०९ ३८ १४ | ०९ ०८ ५० ४० | ०४ २३ ०० ०० | ११ ०६ २७ ५० | ०२ १३ ०४ २८ | ०० २१ ४३ ४१ | १० ०८ ०७ २६ | ०९ १९ १२ २६ | ०७ २७ ४७ २३ | ९ |
| १० | ०९ २६ ३९ ४० | ०५ ११ ०१ ०६ | ०० १० १६ २६ | ०९ १० २२ ४८ | ०४ २२ ५३ ४२ | ११ ०७ ३८ ३८ | ०२ १३ ०१ ३४ | ०० २१ ४० ३१ | १० ०८ १० ५० | ०९ १९ १४ ४२ | ०७ २७ ४८ ४७ | १० |
| ११ | ०९ २७ ४० २३ | ०५ २४ ३८ ०८ | ०० १० ५४ ४० | ०९ ११ ५५ ४४ | ०४ २२ ४७ १६ | ११ ०८ ४९ १९ | ०२ १२ ५८ ४५ | ०० २१ ३७ २० | १० ०८ १४ १४ | ०९ १९ १६ ५८ | ०७ २७ ५० १० | ११ |
| १२ | ०९ २८ ४१ ०५ | ०६ ०८ २३ ३१ | ०० ११ ३२ ५५ | ०९ १३ २९ ३० | ०४ २२ ४० ४४ | ११ ०९ ५९ ५३ | ०२ १२ ५६ ०३ | ०० २१ ३४ ०९ | १० ०८ १७ ३९ | ०९ १९ १९ १३ | ०७ २७ ५१ ३१ | १२ |
| १३ | ०९ २९ ४१ ४५ | ०६ २२ १७ ०१ | ०० १२ ११ ११ | ०९ १५ ०४ ०६ | ०४ २२ ३४ ०४ | ११ ११ १० १९ | ०२ १२ ५३ २६ | ०० २१ ३० ५८ | १० ०८ २१ ०४ | ०९ १९ २१ २८ | ०७ २७ ५२ ५० | १३ |
| १४ | १० ०० ४२ २५ | ०७ ०६ १८ ३७ | ०० १२ ४९ २९ | ०९ १६ ३९ ३३ | ०४ २२ २७ १८ | ११ १२ २० ३८ | ०२ १२ ५० ५५ | ०० २१ २७ ४७ | १० ०८ २४ ३० | ०९ १९ २३ ४३ | ०७ २७ ५४ ०७ | १४ |
| १५ | १० ०१ ४३ ०४ | ०७ २० २८ ०१ | ०० १३ २७ ४७ | ०९ १८ १५ ५० | ०४ २२ २० २६ | ११ १३ ३० ४९ | ०२ १२ ४८ ३० | ०० २१ २४ ३७ | १० ०८ २७ ५६ | ०९ १९ २५ ५७ | ०७ २७ ५५ २३ | १५ |
| १६ | १० ०२ ४३ ४१ | ०८ ०४ ४४ ०३ | ०० १४ ०६ ०६ | ०९ १९ ५२ ५९ | ०४ २२ १३ २८ | ११ १४ ४० ५२ | ०२ १२ ४६ ११ | ०० २१ २१ २६ | १० ०८ ३१ २२ | ०९ १९ २८ ११ | ०७ २७ ५६ ३७ | १६ |
| १७ | १० ०३ ४४ १८ | ०८ १९ ०४ १५ | ०० १४ ४४ २६ | ०९ २१ ३० ५९ | ०४ २२ ०६ २४ | ११ १५ ५० ४७ | ०२ १२ ४३ ५९ | ०० २१ १८ १५ | १० ०८ ३४ ४९ | ०९ १९ ३० २५ | ०७ २७ ५७ ५० | १७ |
| १८ | १० ०४ ४४ ५३ | ०९ ०३ २४ ४० | ०० १५ २२ ४७ | ०९ २३ ०९ ५२ | ०४ २१ ५९ १४ | ११ १७ ०० ३४ | ०२ १२ ४१ ५२ | ०० २१ १५ ०४ | १० ०८ ३८ १६ | ०९ १९ ३२ ३८ | ०७ २७ ५९ ०० | १८ |
| १९ | १० ०५ ४५ २६ | ०९ १७ ४० ०७ | ०० १६ ०१ ०९ | ०९ २४ ४९ ३९ | ०४ २१ ५१ ५९ | ११ १८ १० १२ | ०२ १२ ३९ ५२ | ०० २१ ११ ५३ | १० ०८ ४१ ४३ | ०९ १९ ३४ ५१ | ०७ २८ ०० ०९ | १९ |
| २० | १० ०६ ४५ ५९ | १० ०१ ४४ ५७ | ०० १६ ३९ ३२ | ०९ २६ ३० २० | ०४ २१ ४४ ४० | ११ १९ १९ ४२ | ०२ १२ ३७ ५८ | ०० २१ ०८ ४२ | १० ०८ ४५ १० | ०९ १९ ३७ ०३ | ०७ २८ ०१ १६ | २० |
| २१ | १० ०७ ४६ २९ | १० १५ ३३ ५५ | ०० १७ १७ ५५ | ०९ २८ ११ ५५ | ०४ २१ ३७ १६ | ११ २० २९ ०२ | ०२ १२ ३६ १० | ०० २१ ०५ ३२ | १० ०८ ४८ ३८ | ०९ १९ ३९ १५ | ०७ २८ ०२ २१ | २१ |
| २२ | १० ०८ ४६ ५८ | १० २९ ०३ ०३ | ०० १७ ५६ २० | ०९ २९ ५४ २७ | ०४ २१ २९ ४८ | ११ २१ ३८ १४ | ०२ १२ ३४ २९ | ०० २१ ०२ २१ | १० ०८ ५२ ०५ | ०९ १९ ४१ २६ | ०७ २८ ०३ २४ | २२ |
| २३ | १० ०९ ४७ २६ | ११ १२ १० १७ | ०० १८ ३४ ४५ | १० ०१ ३७ ५५ | ०४ २१ २२ १६ | ११ २२ ४७ १६ | ०२ १२ ३२ ५४ | ०० २० ५९ १० | १० ०८ ५५ ३३ | ०९ १९ ४३ ३६ | ०७ २८ ०४ २५ | २३ |
| २४ | १० १० ४७ ५१ | ११ २४ ५५ ३५ | ०० १९ १३ १० | १० ०३ २२ २१ | ०४ २१ १४ ४१ | ११ २३ ५६ ०७ | ०२ १२ ३१ २६ | ०० २० ५६ ०० | १० ०८ ५९ ०० | ०९ १९ ४५ ४६ | ०७ २८ ०५ २५ | २४ |
| २५ | १० ११ ४८ १५ | ०० ०७ २० ५४ | ०० १९ ५१ ३६ | १० ०५ ०७ ४५ | ०४ २१ ०७ ०३ | ११ २५ ०४ ४९ | ०२ १२ ३० ०५ | ०० २० ५२ ४९ | १० ०९ ०२ २७ | ०९ १९ ४७ ५५ | ०७ २८ ०६ २२ | २५ |
| २६ | १० १२ ४८ ३७ | ०० १९ २९ ४० | ०० २० ३० ०३ | १० ०६ ५४ ०७ | ०४ २० ५९ २२ | ११ २६ १३ २० | ०२ १२ २८ ५० | ०० २० ४९ ३८ | १० ०९ ०५ ५४ | ०९ १९ ५० ०४ | ०७ २८ ०७ १८ | २६ |
| २७ | १० १३ ४८ ५७ | ०१ ०१ २६ २७ | ०० २१ ०८ ३० | १० ०८ ४१ २९ | ०४ २० ५१ ३८ | ११ २७ २१ ४१ | ०२ १२ २७ ४१ | ०० २० ४६ २८ | १० ०९ ०९ २१ | ०९ १९ ५२ ११ | ०७ २८ ०८ १२ | २७ |
| २८ | १० १४ ४९ १५ | ०१ १३ १६ २६ | ०० २१ ४६ ५७ | १० १० २९ ५१ | ०४ २० ४३ ५३ | ११ २८ २९ ५० | ०२ १२ २६ ४० | ०० २० ४३ १७ | १० ०९ १२ ४८ | ०९ १९ ५४ १८ | ०७ २८ ०९ ०४ | २८ |
| २९ | १० १५ ४९ ३१ | ०१ २५ ०५ ०७ | ०० २२ २५ २५ | १० १२ १९ १२ | ०४ २० ३६ ०५ | ११ २९ ३७ ४८ | ०२ १२ २५ ४५ | ०० २० ४० ०६ | १० ०९ १६ १५ | ०९ १९ ५६ २५ | ०७ २८ ०९ ५३ | २९ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## मार्च सन् २००४ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५४' ।४३"

| ता. मार्च | सूर्य<br>रा. अं. क. वि. | चन्द्र<br>रा. अं. क. वि. | मंगल<br>रा. अं. क. वि. | बुध<br>रा. अं. क. वि. | गुरु ( वक्री )<br>रा. अं. क. वि. | शुक्र<br>रा. अं. क. वि. | शनि ( वक्री )<br>रा. अं. क. वि. | राहु<br>रा. अं. क. वि. | हर्शल<br>रा. अं. क. वि. | नेपच्यून<br>रा. अं. क. वि. | प्लूटो<br>रा. अं. क. वि. | ता. मार्च |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १० १६ ४९ ४५ | ०२ ०६ ५७ ५३ | ०० २३ ०३ ५२ | १० १४ ०९ ३२ | ०४ २० २८ १७ | ०० ०० ४५ ३४ | ०२ १२ २४ ५६ | ०० २० ३६ ५५ | १० ०९ १९ ४१ | ०९ १९ ५८ ३० | ०७ २८ १० ४१ | १ |
| २ | १० १७ ४९ ५७ | ०२ १८ ५९ ४४ | ०० २३ ४२ २० | १० १६ ०० ५१ | ०४ २० २० २७ | ०० ०१ ५३ ०८ | ०२ १२ २४ १५ | ०० २० ३३ ४४ | १० ०९ २३ ०६ | ०९ २० ०० ३४ | ०७ २८ ११ २७ | २ |
| ३ | १० १८ ५० ०७ | ०३ ०१ १४ ५७ | ०० २४ २० ४८ | १० १७ ५३ ०७ | ०४ २० १२ ३६ | ०० ०३ ०० २९ | ०२ १२ २३ ४० | ०० २० ३० ३३ | १० ०९ २६ ३२ | ०९ २० ०२ ३८ | ०७ २८ १२ १२ | ३ |
| ४ | १० १९ ५० १४ | ०३ १३ ४६ ४६ | ०० २४ ५९ १६ | १० १९ ४६ १९ | ०४ २० ०४ ४६ | ०० ०४ ०७ ३८ | ०२ १२ २३ ११ | ०० २० २७ २३ | १० ०९ २९ ५७ | ०९ २० ०४ ४१ | ०७ २८ १२ ५४ | ४ |
| ५ | १० २० ५० २० | ०३ २६ ३७ ०५ | ०० २५ ३७ ४४ | १० २१ ४० २५ | ०४ १९ ५६ ५५ | ०० ०५ १४ ३३ | ०२ १२ २२ ५० | ०० २० २४ १२ | १० ०९ ३३ २१ | ०९ २० ०६ ४२ | ०७ २८ १३ ३४ | ५ |
| ६ | १० २१ ५० २४ | ०४ ०९ ४६ १७ | ०० २६ १६ ११ | १० २३ ३५ २१ | ०४ १९ ४९ ०४ | ०० ०६ २१ १६ | ०२ १२ २२ ३५ | ०० २० २१ ०१ | १० ०९ ३६ ४५ | ०९ २० ०८ ४३ | ०७ २८ १४ १२ | ६ |
| ७ | १० २२ ५० २६ | ०४ २३ १३ १० | ०० २६ ५४ ३९ | १० २५ ३१ ०४ | ०४ १९ ४१ १४ | ०० ०७ २७ ४४ | मा०२ १२ २२ २७ | ०० २० १७ ५१ | १० ०९ ४० ०९ | ०९ २० १० ४३ | ०७ २८ १४ ४८ | ७ |
| ८ | १० २३ ५० २६ | ०५ ०६ ५५ १९ | ०० २७ ३३ ०६ | १० २७ २७ २७ | ०४ १९ ३३ २५ | ०० ०८ ३३ ५८ | ०२ १२ २२ २६ | ०० २० १४ ४० | १० ०९ ४३ ३२ | ०९ २० १२ ४२ | ०७ २८ १५ २३ | ८ |
| ९ | १० २४ ५० २५ | ०५ २० ४९ २३ | ०० २८ ११ ३४ | १० २९ २४ २५ | ०४ १९ २५ ३७ | ०० ०९ ३९ ५८ | ०२ १२ २२ ३१ | ०० २० ११ २९ | १० ०९ ४६ ५४ | ०९ २० १४ ४० | ०७ २८ १५ ५५ | ९ |
| १० | १० २५ ५० २१ | ०६ ०४ ५१ ४५ | ०० २८ ५० ०१ | ११ ०१ २१ ५० | ०४ १९ १७ ५१ | ०० १० ४५ ४३ | ०२ १२ २२ ४३ | ०० २० ०८ १९ | १० ०९ ५० १५ | ०९ २० १६ ३७ | ०७ २८ १६ २५ | १० |
| ११ | १० २६ ५० १६ | ०६ १८ ५९ ०३ | ०० २९ २८ २८ | ११ ०३ १९ ३१ | ०४ १९ १० ०६ | ०० ११ ५१ १३ | ०२ १२ २३ ०२ | ०० २० ०५ ०८ | १० ०९ ५३ ३६ | ०९ २० १८ ३२ | ०७ २८ १६ ५४ | ११ |
| १२ | १० २७ ५० ०९ | ०७ ०३ ०८ ३४ | ०१ ०० ०६ ५५ | ११ ०५ १७ १८ | ०४ १९ ०२ २४ | ०० १२ ५६ २७ | ०२ १२ २३ २७ | ०० २० ०१ ५७ | १० ०९ ५६ ५६ | ०९ २० २० २७ | ०७ २८ १७ २० | १२ |
| १३ | १० २८ ५० ०० | ०७ १७ १८ १५ | ०१ ०० ४५ २२ | ११ ०७ १४ ५७ | ०४ १८ ५४ ४५ | ०० १४ ०१ २६ | ०२ १२ २३ ५९ | ०० १९ ५८ ४६ | १० १० ०० १५ | ०९ २० २२ २० | ०७ २८ १७ ४४ | १३ |
| १४ | १० २९ ४९ ५० | ०८ ०१ २६ ३६ | ०१ ०१ २३ ४९ | ११ ०९ १२ १३ | ०४ १८ ४७ ०८ | ०० १५ ०६ ०८ | ०२ १२ २४ ३८ | ०० १९ ५५ ३५ | १० १० ०३ ३४ | ०९ २० २४ १३ | ०७ २८ १८ ०७ | १४ |
| १५ | ११ ०० ४९ ३८ | ०८ १५ ३२ २० | ०१ ०२ ०२ १६ | ११ ११ ०८ ४९ | ०४ १८ ३९ ३४ | ०० १६ १० ३५ | ०२ १२ २५ २४ | ०० १९ ५२ २५ | १० १० ०६ ५१ | ०९ २० २६ ०४ | ०७ २८ १८ २७ | १५ |
| १६ | ११ ०१ ४९ २५ | ०८ २९ ३४ ०१ | ०२१०२ ४० ४२ | ११ १३ ०४ २३ | ०४ १८ ३२ ०४ | ०० १७ १४ ४४ | ०२ १२ २६ १६ | ०० १९ ४९ १४ | १० १० १० ०८ | ०९ २० २७ ५४ | ०७ २८ १८ ४५ | १६ |
| १७ | ११ ०२ ४९ १० | ०९ १३ २९ ४७ | ०१ ०३ १९ ०९ | ११ १४ ५८ ३५ | ०४ १८ २४ ३८ | ०० १८ १८ ३५ | ०२ १२ २७ १५ | ०० १९ ४६ ०३ | १० १० १३ २४ | ०९ २० २९ ४२ | ०७ २८ १९ ०१ | १७ |
| १८ | ११ ०३ ४८ ५३ | ०९ २७ १७ २३ | ०१ ०३ ५७ ३६ | ११ १६ ५१ ०१ | ०४ १८ १७ १५ | ०० १९ २२ ०९ | ०२ १२ २८ २१ | ०० १९ ४२ ५२ | १० १० १६ ३८ | ०९ २० ३१ ३० | ०७ २८ १९ १६ | १८ |
| १९ | ११ ०४ ४८ ३४ | १० १० ५४ १४ | ०१ ०४ ३६ ०३ | ११ १८ ४१ १६ | ०४ १८ ०९ ५८ | ०० २० २५ २५ | ०२ १२ २९ ३३ | ०० १९ ३९ ४२ | १० १० १९ ५२ | ०९ २० ३३ १६ | ०७ २८ १९ २८ | १९ |
| २० | ११ ०५ ४८ १४ | १० २४ १७ ५० | ०१ ०५ १४ २९ | ११ २० २८ ५३ | ०४ १८ ०२ ४५ | ०० २१ २८ २१ | ०२ १२ ३० ५२ | ०० १९ ३६ ३१ | १० १० २३ ०४ | ०९ २० ३५ ०१ | ०७ २८ १९ ३८ | २० |

## उज्जैन में महाकुम्भ स्नानादिपर्वदिन सन् २००४ ई.

आगामी वर्ष वैशाख मास में गुरु सिंह राशि में होने से उज्जैन में कुम्भ पर्व का सुयोग बनेगा। जिसे सिंहस्थपर्व के नाम से भी जाना जाता है।

- ❖ **चैत्री पूर्णिमा-श्री हनुमान जयंती**—ता. ५ अप्रैल सन् २००४ ई. सोमवार
- ❖ **मेष संक्रांति ( बैशाखी पर्व )**—ता. १३ अप्रैल सन् २००४ ई. मंगलवार
- ❖ **सोमवती अमावस्या**—ता. १९ अप्रैल सन् २००४ ई. सोमवार
- ❖ **अक्षय तृतीया स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त**—ता. २२ अप्रैल सन् २००४ ई. गुरुवार
- ❖ **वैशाखी पूर्णिमा, खग्रास चन्द्रग्रहण**—ता. ४ मई सन् २००४ ई. मंगलवार

## अर्धकुम्भ स्नान मेला हरिद्वार सन् २००४ ई.

उज्जैन में सिहस्थ पर्व जब होता है तब हरिद्वार में अर्धकुम्भ स्नान मेला लगता है। स्नानार्थी श्री गंगातट पर पुण्यार्जन से सौख्य समृद्धि का अनुभव करते हैं।

- ❖ **चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती**—ता. ५ अप्रैल सन् २००४ ई. सोमवार
- ❖ **मेष संक्रांति ( बैशाखी पर्व )**—ता. १३ अप्रैल सन् २००४ ई. मंगलवार
- ❖ **सोमवती अमावस्या**—ता. १९ अप्रैल सन् २००४ ई. सोमवार
- ❖ **अक्षय तृतीया स्वयं सिद्धि मुहूर्त्त**—ता. २२ अप्रैल सन् २००४ ई. गुरुवार
- ❖ **वैशाखी पूर्णिमा, खग्रास चन्द्रग्रहण**—ता. ४ मई सन् २००४ ई. मंगलवार

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
❖ अक्षय तृतीया स्वयं सिद्धि मुहूर्त — ता. २२ अप्रैल सन् २००४ ई. गुरुवार
❖ वैशाखी पूर्णिमा, खग्रास चन्द्रग्रहण — ता. ४ मई सन् २००४ ई. मंगलवार



# चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २ से १६ अप्रैल सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २६ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसन्त ऋतु

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | १ | बु | ५२ | २८ | २७ | १२ | रे | ४८ | १२ | २५ | २९ | ऐं | ३८ | २२ | २१ | ३३ | कि | १९ | २७ | १३ | ५९ | ३१ | ४ | ६ | १२ | १८ | ३८ | २० | २९ | 2 | मे. २०।१९ | ११ | १७ | ५६ | ३० | [illegible] | ६ | ३७ | १९ | १३ | नव संवत्सरारम्भः, नवरात्रारंभः, घटस्थापन-गुड़ी पड़वा, वर्षफल A |
| १३ | २ | गु | ५८ | ५७ | २९ | ४६ | अ | ५५ | ५३ | २८ | ३२ | वै | ४० | ४६ | २२ | ३० | बा | २५ | ४१ | १६ | २७ | ३१ | ८ | ६ | ११ | १८ | ३८ | २१ | ३० | 3 | मेष | ११ | १८ | ५५ | ४३ | १० | ७ | ५ | २० | ५ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, सिंधारा, श्री झूलेलाल जयंती, चेटी B |
| १४ | ३ | शु | ६० | ० | — | — | भ | ६० | ० | — | — | वि | ४३ | २७ | २३ | ३३ | तै | ३२ | २० | १९ | ६ | ३१ | १३ | ६ | १० | १८ | ३९ | २२ | स१ | 4 | मेष | ११ | १९ | ५४ | ५३ | ८ | ७ | ३४ | २० | ५८ | सफर मु. मास २ प्रा., गणगौरी पूजा, मत्स्य जयंती, अरुंधती व्रत, C |
| १५ | ३ | श | ५ | ४४ | ८ | २६ | भ | ३ | ५२ | ७ | ४२ | प्री | ४६ | ९ | २४ | ३६ | ग | ५ | ४४ | ८ | २६ | ३१ | १७ | ६ | ९ | १८ | ४० | २३ | २ | 5 | वृ. १८।१९ | ११ | २० | ५४ | १ | ६ | ८ | ६ | २१ | ५२ | भद्रा २१।४६ से, तृतीया वृद्धि, विनायक ४ व्रत, पश्चिमोदयं बुध १७।१८, D |
| १६ | ४ | र | १२ | २२ | ११ | ४ | कृ | ११ | ४४ | १० | ४९ | आ | ४८ | ३४ | २५ | ३३ | वि | १२ | २२ | ११ | ४ | ३१ | २१ | ६ | ८ | १८ | ४० | २४ | ३ | 6 | वृष | ११ | २१ | ५३ | ७ | ४ | ८ | ४१ | २२ | ४७ | भद्रा ११।४ तक, श्री लक्ष्मी पूजारंभ, श्री रामजन्मोत्सव प्रा., उ.पा. E |
| १७ | ५ | चं | १८ | २५ | १३ | २८ | रो | १९ | २ | १३ | ४४ | सौ | ५० | २० | २६ | १५ | बा | १८ | २५ | १३ | २८ | ३१ | २५ | ६ | ६ | १८ | ४१ | २५ | ४ | 7 | मि. २७।१ | ११ | २२ | ५२ | ११ | १ | ९ | २१ | २३ | ४३ | स्कन्द षष्ठी, हय पंचमी व्रत, डोलोत्सव, कल्पादि ५, शनि मृगशिर F |
| १८ | ६ | मं | २३ | २३ | १५ | २७ | मृ | २५ | १९ | १६ | १३ | शो | ५१ | ८ | २६ | ३३ | तै | २३ | २३ | १५ | २७ | ३१ | ३० | ६ | ५ | १८ | ४१ | २६ | ५ | 8 | मिथुन | ११ | २३ | ५१ | १२ | [illegible] | १० | ६ | २४ | ० | पू.भा. में शुक्र १३।२८ |
| १९ | ७ | बु | २६ | ४९ | १६ | ४८ | आ | ३० | ७ | १८ | ७ | अ | ५० | ३७ | २६ | १९ | व | २६ | ४९ | १६ | ४८ | ३१ | ३१ | ६ | ४ | १८ | ४२ | २७ | ६ | 9 | मिथुन | ११ | २४ | ५० | ११ | ५७ | १० | ५७ | २४ | ३८ | भद्रा १६।४८ से २९।१२ तक, जैन आयंबिल ओली प्रा., मेला माईसर खाना, G |
| २० | ८ | गु | २८ | २१ | १७ | २४ | पुन | ३३ | ४ | १९ | १७ | सु | ४८ | ३४ | २५ | २९ | ब | २८ | २१ | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ६ | ३ | १८ | ४२ | २८ | ७ | 10 | क. १३।६ | ११ | २५ | ४९ | ८ | ५५ | ११ | ५४ | २५ | ३१ | दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति दुर्गा पूजन |
| २१ | ९ | शु | २७ | ४७ | १७ | ९ | पु | ३३ | ५८ | १९ | ३७ | धृ | ४४ | ५१ | २३ | ५९ | कौ | २७ | ४७ | १७ | ९ | ३१ | ४२ | ६ | २ | १८ | ४३ | २९ | ८ | 11 | कर्क | ११ | २६ | ४८ | ३ | ५२ | १२ | ५५ | २६ | २० | मकर में मंगल २८।३३, श्री राम नवमी, राम जन्मोत्सव, नवरात्रि समाप्ति |
| २२ | १० | श | २५ | ४ | १६ | ३ | श्ले | ३२ | ४७ | १९ | ८ | शू | ३९ | २७ | २१ | ४८ | ग | २५ | ४ | १६ | ३ | ३१ | ४६ | ६ | १ | १८ | ४३ | ३० | ९ | 12 | सिं. १९।८ | ११ | २७ | ४६ | ५५ | ५० | १३ | ५९ | २७ | ६ | भद्रा २७।१२ से, ज्वालामुखी योग १६।३ तक |
| २३ | ११ | र | २० | २२ | १४ | ९ | म | २९ | ३९ | १७ | ५२ | गं | ३२ | २९ | १९ | ० | वि | २० | २२ | १४ | ९ | ३१ | ५० | ६ | ० | १८ | ४४ | ३१ | १० | 13 | सिंह | ११ | २८ | ४५ | ४५ | ४८ | १५ | ४ | २७ | ४७ | भद्रा १४।९ तक, कामदा एकादशी व्रत सबका, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव, H |
| २४ | १२ | चं | १३ | ५६ | ११ | ३३ | पू.फा | २४ | ५१ | १५ | ५५ | वृ | २४ | १० | १५ | ३९ | बा | १३ | ५६ | ११ | ३३ | ३१ | ५४ | ५ | ५९ | १८ | ४५ | [illegible] | ११ | 14 | क. २१।११ | ११ | २९ | ४४ | ३३ | ४५ | १६ | १० | २८ | २६ | अश्विनी मेष में सूर्यः ११।४९ संक्रांति पुण्य मु. ३० उठी, प्रदोष व्रत, J |
| २५ | १३ | मं | ६ | ७ | ८ | २५ | उ.फा | १८ | ४४ | १३ | २८ | ध्रु | १४ | ४६ | ११ | ५२ | तै | ६ | ७ | ८ | २५ | ३१ | ५८ | ५ | ५८ | १८ | ४५ | २ | १२ | 15 | कन्या | ०० | ० | ४३ | १८ | ४३ | १७ | १७ | २९ | २ | भद्रा २८।५३ से, महावीर जयंती जैन, दमनक १४, मीनाक्षी कल्याणम् |
| ० | १४ | मं | ५७ | १७ | २८ | ५३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | चतुर्दशी क्षयः |
| २६ | १५ | बु | ४७ | ५६ | २५ | ७ | ह | ११ | ४५ | १० | ३९ | व्या | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वि | २२ | ४० | १५ | १ | ३२ | ३ | ५ | ५७ | १८ | ४६ | ३ | १३ | 16 | तु. २१।१० | ०० | १ | ४२ | १ | ४२ | १८ | २५ | २९ | ३९ | भद्रा १५।१ तक, शुक्र मीन में २०।३३, सत्यव्रत पूर्णिमा पुण्यं, श्री हनुमान K |

A श्रवण, गौतम जयंती, आर्य समाज स्थापना दिवस, अश्विनी मेष में बुध १४।४९, पंचक समाप्ति २५।२९, मेला चीमान् नानकसर (पंजाब) B चण्ड उत्सव सिंध सम्प्रदाय C मनोरथ ३, आंदोलन तृतीया (बिहार), सौभाग्य शयन व्रत D मार्गी गुरु २१।२४ E में मंगल १८।४२ F ३ मिथुन में २०।१० G भरणी में बुध २६।३८ H पाम सण्डे J हरिदमनोत्सव अनंग १३, बैशाखी (पंजाब), डॉ. अम्बेडकर जयंती K जयंती, मेला सालासर (राज.), मन्वादि १५, बैशाख स्नानारम्भ, जैन आयंबिल ओली समाप्त, सिद्धांचल यात्रा मेला मानकपुर शरीफ रोपड़, मैत्री पूर्णिमा

**चैत्र शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १० अप्रैल** । दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं। **ता. १६ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | २ | ८ | ० | ३ | १० | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २५ | २५ | २८ | १३ | १४ | २२ | ० | ७ | ७ | ७ | १८ | २५ |
| ४९ | ५७ | ४७ | ३१ | १३ | ० | ११ | ५३ | ५३ | ३६ | ५६ | ५७ |
| ८ | ४३ | ४४ | ४ | ३ | ४४ | ७ | ३१ | ३१ | ० | १४ | ५६ |
| ५८ | ७७१ | ३६ | ९० | १ | ७२ | ४ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| ५५ | ४४ | ५३ | ८ | १३ | १६ | ४७ | ११ | ११ | ३३ | ८ | ३६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | मा | मा | व |
| ठ | अ | ठ | ठ | ठ | ठ | ठ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

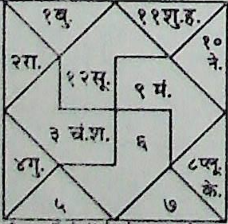


नूतन विक्रम सम्वत का प्रारम्भ बुधवार से होना वर्ष में व्यवसायों व उपज हेतु शुभ फल सूचक है। वर्षारम्भ में शनि का मिथुन राशि पर होना पक्ष में पूर्वी व दक्षिणी प्रान्तों में तूफान, भूकम्प, चक्रवात आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। यथा— **मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥** अतः अरब, ईरान, अफगानिस्तान, पाकिस्तानादि यवन राष्ट्रों में आपसी कलह, शासकों में तनाव बन कर कहीं युद्ध उन्माद बढ़ेगा। पंजाब, राजस्थान, गुजरात तथा काश्मीर के सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य संघर्ष एवं जनता में भय वृद्धि रहेगी। पक्षान्त में सूर्य-गुरु-मंगल तीनों का उच्च राशि में होना केन्द्रीय सरकार में किसी महत्वपूर्ण निर्णय का विश्व के राष्ट्रों में सम्मान पूर्वक स्वागत होगा। **तेजी मन्दी विचार**— पक्षारम्भ में चौपाये, चीनी, औषधियां तथा गेहूं में तेजी रहेगी। **बुधेऽश्विन्यां तु पीड्यन्ते गोधूमाश्च यवादयः। इक्षु दुग्ध रसादीनां समर्घं च घृतादिषु॥** मेष सं. मु. ३० जौ, चावल, चना में मन्दी फलप्रद है। सोना, चांदी, ताम्बा आदि धातुएं तेज। मशीनी अथवा लोहे के सामान में अस्थिरता बनकर तेजी होगी। गुवार, मूंग, मोंठ और उड़द, सरसों, मूंगफली, अरण्ड एवं सोयाबिन तेलों में तेजी चलेगी। पक्ष में घी, दूध, गुड़ व शक्कर आदि रस पदार्थों में मन्दी रहेगी। **आकाश लक्षण**— पक्ष में शुक्ला पंचमी को रोहिणी सप्तमी आर्द्रा व नवमी पुष्य नक्षत्र का संयोग उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली व पंजाब के कई स्थानों पर वर्षाकारी योग है। कुछ स्थानों पर ओला वर्षा से फसलों को हानि होने के योग हैं। दक्षिण व पूर्वी प्रान्तों में तूफानी वायुवेग अथवा चक्रवात का भय व्याप्त होगा। **शकुन विचार**— **चैत्र सुदी जो पंचमी, दक्षिण पूर्व बाय। वर्षा भी होवे कछु भादो तेज बिकाय॥** चैत्र मास में वर्षा होने पर वर्षाकाल (चातुर्मास) में वर्षा की प्रायशः कमी रहती है। **चैत्र सुदी त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान। आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान॥**

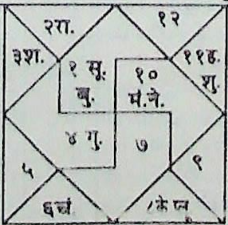


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ५ | ९ | ० | ३ | १० | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| १ | २० | २ | २१ | १४ | २९ | ० | ७ | ७ | ७ | १९ | २५ |
| ४२ | ३ | २८ | १६ | २३ | १४ | ४१ | ३४ | ३४ | ५० | २ | ५३ |
| १ | ४५ | ११ | १५ | ३ | ३७ | २ | २७ | २७ | ४६ | ३५ | ५७ |
| ५८ | ११२ | ६ | ५८ | २ | ७२ | ५ | ३ | ३ | २ | ० | ० |
| ४२ | ३८ | ३१ | ४२ | १९ | २३ | १५ | ११ | ११ | २० | ५७ | ४६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | मा | मा | व |
| ठ | अ | ठ | ठ | ठ | ठ | ठ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# बैशाख कृष्ण पक्ष-२ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. १७ अप्रैल से १ मई सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २७ चैत्र से ११ बैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, वसन्त-ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| ग.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दैं. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | क्रांति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चै २७ | १ | गु | ३८ | ३० | २१ | २० | चि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | व | ४३ | २६ | २३ | १८ | बा | १३ | १३ | ११ | १३ | ३२ | ७ | ५ | ५६ | १८ | ४६ | ४ | १४ | 17 | तुला | ० | २ | ४० | ४३ | [illegible] | १९ | ३५ | ६ | १७ | |
| २८ | २ | शु | २९ | २२ | १७ | ६० | वि | ५० | २ | २५ | ५५ | सि | ३३ | ८ | १९ | १० | तै | ३ | ५३ | ७ | २८ | ३२ | ११ | ५ | ५५ | १८ | ४७ | ५ | १५ | 18 | वृ. [illegible] | ० | ३ | ३९ | २२ | ३८ | २० | ४६ | ६ | ५७ | भद्रा २७।५५ से, गुड फ्राईडे |
| २९ | ३ | श | २० | ५७ | १४ | १७ | अनु | ४८ | ० | २३ | ३० | ब्र | २३ | २९ | १५ | १७ | वि | २० | ५७ | १४ | १७ | ३२ | १५ | ५ | ५४ | १८ | ४८ | ६ | १६ | 19 | वृश्चिक | ० | ४ | ३८ | ० | ३५ | २१ | ५७ | ७ | ४२ | भद्रा १४।१७ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रतम्, अनुसूया जयंती, उ.भा. A |
| ३० | ४ | र | १३ | ३७ | ११ | २० | ज्ये | ३९ | १२ | २१ | ३३ | वरि | १४ | ४३ | ११ | ४६ | बा | १३ | ३७ | ११ | २० | ३२ | १९ | ५ | ५३ | १८ | ४८ | ७ | १७ | 20 | ध. २१।३३ | ० | ५ | ३६ | ३५ | ३५ | २३ | ६ | ८ | ३२ | सायन वृष में सूर्य प्रवेश १७।५३, ईस्टर सण्डे |
| वै १ | ५ | चं | ७ | ४० | ८ | ५६ | मू | ३५ | ५३ | २० | १३ | प | ७ | ६ | ८ | ४२ | तै | ७ | ४० | ८ | ५६ | ३२ | २३ | ५ | ५२ | १८ | ४९ | ८ | १८ | 21 | धनु | ० | ६ | ३५ | १० | ३२ | २४ | ० | ९ | २८ | गुरु तेग बहादुर जयंती (प्रा.मत से), राष्ट्रीय बैशाख मासारम्भ, B |
| २ | ६ | मं | ३ | १८ | ७ | १० | पू.षा | ३४ | १५ | १९ | ३३ | शि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | व | ३ | १८ | ७ | १० | ३२ | २६ | ५ | ५१ | १८ | ४९ | ९ | १९ | 22 | म. [illegible] | ० | ७ | ३३ | ४२ | ३१ | २४ | ९ | १० | २८ | भद्रा ७।१० से १८।३३ तक, चेहल्लुम शहीद करबला (मु.) |
| ३ | ७ | बु | ० | ४१ | ६ | ६ | उ.षा | ३४ | २१ | १९ | ३४ | मा | ५२ | २१ | २६ | ४६ | ब | ० | ४१ | ६ | ६ | ३२ | ३० | ५ | ५० | १८ | ५० | १० | २० | 23 | मकर | ० | ८ | ३२ | १३ | २९ | २५ | ५ | ११ | ३० | गुरु अर्जुनदेव जयंती (प्रा. मत से), शीतला पूजन (बूढ़ा बासौड़ा), C |
| ० | ८ | बु | ५९ | ४७ | २९ | ४५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अष्टमी क्षय: |
| ४ | ९ | गु | ६० | ० | — | — | श्र | ३६ | १० | २० | १७ | शुभ | ५० | १३ | २५ | ५४ | तै | ३० | २ | १७ | ४२ | ३२ | ३४ | ५ | ४९ | १८ | ५० | ११ | २१ | 24 | मकर | ० | ९ | ३० | ४२ | २८ | २५ | ५४ | १२ | ३२ | |
| ५ | ९ | शु | ० | ४१ | ६ | ४ | ध | ३९ | ३५ | २१ | ३८ | शु | ४९ | २० | २५ | ३२ | ग | ० | ४१ | ६ | ४ | ३२ | ३८ | ५ | ४८ | १८ | ५१ | १२ | २२ | 25 | कुं. ८।५३ | ० | १० | २९ | १० | २६ | २६ | ३५ | १३ | ३१ | भद्रा १८।२८ से, नवमी वृद्धि, पंचक प्रा. ८।५३ से |
| ६ | १० | श | ३ | ७ | ७ | २ | शत | ४४ | २३ | २३ | ३२ | ब | ४९ | ३१ | २५ | ३५ | वि | ३ | ७ | ७ | २ | ३२ | ४२ | ५ | ४७ | १८ | ५२ | १३ | २३ | 26 | कुंभ | ० | ११ | २७ | ३६ | २४ | २७ | ११ | १४ | २८ | भद्रा ७।२ तक, वरूथिनी एकादशी व्रत स्मार्त, बुध पश्चिम में D |
| ७ | ११ | र | ६ | ५३ | ८ | ३१ | पू.भा | ५० | १९ | २५ | ५४ | ऐं | ५० | ३६ | २६ | १ | बा | ६ | ५३ | ८ | ३१ | ३२ | ४६ | ५ | ४६ | १८ | ५२ | १४ | २४ | 27 | मी. १९।१६ | ० | १२ | २६ | ० | २३ | २७ | ४३ | १५ | २३ | वरूथिनी एकादशी व्रत वैष्णव, श्री वल्लभाचार्य जयंती, E |
| ८ | १२ | चं | ११ | ४४ | १० | २७ | उ.भा | ५७ | ८ | २८ | ३६ | वै | ५२ | २३ | २६ | ४२ | तै | ११ | ४४ | १० | २७ | ३२ | ४९ | ५ | ४५ | १८ | ५३ | १५ | २५ | 28 | मीन | ० | १३ | २४ | २३ | २१ | २८ | १२ | १६ | १६ | मंगल श्रवण में १७।५६, सोम प्रदोष व्रत |
| ९ | १३ | मं | १७ | २४ | १२ | ४२ | रे | ६० | ० | — | — | वि | ५४ | ४० | २७ | ३६ | व | १७ | २४ | १२ | ४२ | ३२ | ५३ | ५ | ४४ | १८ | ५३ | १६ | २६ | 29 | मीन | ० | १४ | २२ | ४४ | १९ | २८ | ४० | १७ | ८ | भद्रा १२।४२ से २५।५५ तक, मास शिवरात्रि व्रत |
| १० | १४ | बु | २३ | ३८ | १५ | ११ | रे | ४ | ३५ | ७ | ३३ | प्री | ५७ | १५ | २८ | ३७ | श | २३ | ३८ | १५ | ११ | ३२ | ५७ | ५ | ४३ | १८ | ५४ | १७ | २७ | 30 | मे. ७।३३ | ० | १५ | २१ | ३ | १८ | २९ | ८ | १८ | ० | पंचक समा. ७।३३, रेवती में शुक्र १५।३२, आखिरी चहार शम्बा (मु.) |
| ११ | ३० | गु | ३० | १० | १७ | ४६ | अ | १२ | २२ | १० | ३९ | आ | ६० | ० | — | — | ना | ३० | १० | १७ | ४६ | ३३ | ० | ५ | ४२ | १८ | ५५ | १८ | २८ | M1 | मेष | ० | १६ | १९ | २१ | १६ | २९ | ३७ | १८ | ५३ | मई मास ५ प्रा. ता. ३१, देवपितृकार्य अमावस्या, श्री शुकदेव F |

A में शुक्र १४।५०, व्यतिपात पुण्यं B ग्रीष्म ऋतु प्रा. C ठंडा (बासी) भोजन करना चाहिए। बाबू कुंवर सिंह दिवस (बिहार), कालाष्टमी
D अस्त २२।३५, सुव्रत नाथ जन्म जैन, वक्री बुध १४।३०, अगस्त अस्त ९।४० E सूर्य भरणी में २७।४२ F जयंती, मेला पिंजोर (हरियाणा), शहादते इमाम हसन मु., विश्व मजदूर दिवस

**बैशाख कृ. ७ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ अप्रैल [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १ मई ❖ बैशाख कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

ता. २३ अप्रैल

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ९ | ९ | ० | ३ | ११ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ८ | २ | ६ | २६ | १४ | ७ | १ | ७ | ७ | ८ | १९ | २५ |
| ३२ | १३ | ४२ | ४ | ४२ | ४१ | १९ | १२ | १२ | ६ | ८ | ४८ |
| १३ | २१ | २४ | ५ | ५४ | ४३ | २० | ११ | ११ | २० | ३६ | १ |
| ५८ | [illegible] | ३६ | १७ | ३ | ७२ | ५ | ३ | ३ | २ | ० | ० |
| २९ | ४६ | १ | २१ | ३२ | ३१ | ४५ | ११ | ११ | ४ | ४४ | ५७ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | मा | मा | व |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| ३ अश्वि. | २ उ.षा. | ४ उ.षा. | ४ भरणी | ४ पुष्य | २ उ.भा. | ३ मृग. | ४ कृति. | २ अनु. | १ शत. | ३ श्रवण | ३ ज्ये. |

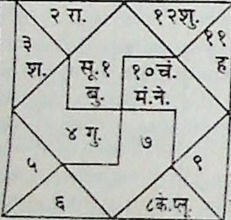


बैशाख मास में पांच गुरुवार होना शास्त्रों में नेष्ट फलकारी बताया है। यता—यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धञ्च जायते॥ तदनुसार पाश्चात्य राष्ट्रों अमेरिका, ब्रिटेन, स्वीडन, नार्वे तथा यूरोप के राष्ट्रों में सैन्य संघर्ष से जन हानि होगी। देश के मध्य भाग में कर्मचारी अथवा जन आन्दोलन से सत्तारूढ़ पार्टी में चिन्ता व्याप्त रहेगी। उच्चराशिस्थ शुक्र से मंत्रीमण्डल में आपसी ताल मेल बनकर विदेशी आयात निर्यात हेतु नवीन अधिनियम से देश का विकास कार्य प्रगतिप्रद होगा। यथा—मीन राशिगते शुक्रे सुभिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी सुख संयुक्ता भविष्यति न संशयः॥

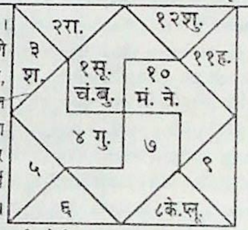


ता. १ मई

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ९ | ० | ३ | ११ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| १६ | १० | ११ | २५ | १५ | १७ | २ | ६ | ६ | ८ | १९ | २५ |
| १९ | ४७ | २३ | ४६ | १५ | २२ | ७ | ४६ | ४६ | २१ | १३ | ३९ |
| २१ | ५ | ५६ | ४४ | ५२ | १८ | १० | ४६ | ४६ | ४५ | ३४ | ४२ |
| ५८ | ७०७ | ३५ | २४ | ४ | ७२ | १० | ३ | ३ | १ | ० | १ |
| १६ | २८ | १५ | १६ | ५१ | ३८ | १५ | ११ | ११ | ४४ | २८ | ९ |
| मा | मा | मा | व | मा | मा | मा | व | व | मा | मा | व |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| १ भरणी | ४ अश्वि. | १ श्रवण | ४ भरणी | ४ पुष्य | १ रेवती | ३ मृग. | ४ कृति. | २ अनु. | १ शत. | ३ श्रवण | ३ ज्ये. |

**तेजी मन्दी विचार**—पक्ष प्रारम्भ में सरसों, चना, जौ, ज्वार में मन्दी रहेगी। कृष्णा १० को बुध अस्त एवं वक्र गति होने से गुड़, शक्कर, चीनी, रुई, कपास व सूती वस्त्रों में तेजी कारक है। भरणी सूर्य प्रवेश रविवार को रसायनिक पदार्थों, ताम्बा, सोना व चान्दी में तेजीप्रद है। शेयर बाजारों में उछाले की तेजी से व्यापारियों में स्फूर्ति का समावेश होगा। गेहूं, चावल, मूंग, मोंठ आदि में मन्दी रहे। यथा—**श्रुतौ च रोगो बहुधान्य योगो भूम्यां न पश्चाज्जलदागमश्च। स्याद वासवे वासववत्समृद्धिर्धान्यैः समर्घं गुड़ शर्करादि॥** श्रवण का मंगल गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थों में मन्दी सूचक है। **आकाश लक्षण**—पक्ष में बादलचाल एवं तूफानी हवाओं का जोर रहेगा। शनि मंगल का षडाष्टक योग तापमान तेज व गर्मी का प्रकोपकारी है। पर्वतीय क्षेत्रों पर कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होवे। हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, अरुणाचल, बंगाल तथा तमिलनाडू एवं कर्नाटका में कुछ स्थानों पर वर्षा होगी। मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश में बादल चाल एवं बूंदाबांदी होगी। हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, [illegible] या को यदि तूफानी हवायें चलें या आंधी हो तो अन्नादि के भाव तेज होते हैं। बैशाख बदी ११ को आकाश में बादल बनें तो आगे उपज उत्तम होती है। यथा—बैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघ को जान। धान्य बीज खेती करो उत्तम संवत मान॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...पर्वतीय क्षेत्रों पर कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होवे। हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, अरुणाचल, ... तमिलनाडु एवं कर्नाटक में कुछ स्थानों पर वर्षा होगी। मध्य प्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश में बादल चाल एवं बूंदाबांदी होगी। हरियाणा, ... महाराष्ट्रादि प्रान्तों में गर्मी का प्रकोप तेज रहेगा। **शकुन विचार**—अमावस्या को यदि तूफानी हवायें चलें या आंधी हो तो अन्नादि के भाव तेज होते हैं। बैशाख बदी ११ को आकाश में बादल बनें तो आगे उपज उत्तम होती है। यथा—**बैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघ को जान। धान्य बीज खेती करो उत्तम संवत् मान॥**



# बैशाख शुक्ल पक्ष-३

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २ से १६ मई सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १२ से २६ बैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | ति | वा | तिथि घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | १ | शु | ३६ | ४३ | २० | २३ | भ | २० | १५ | १३ | ४८ | आ | ० | १ | ५ | ४२ | किं | ३ | २९ | ७ | ५ | ३३ | ४ |
| १३ | २ | श | ४३ | २ | २२ | ५३ | कृ | २७ | ५८ | १६ | ५२ | सौ | २ | ४० | ६ | ४५ | बा | ९ | ५७ | ९ | ३९ | ३३ | ८ |
| १४ | ३ | र | ४८ | ४७ | २५ | ११ | रो | ३५ | १३ | १९ | ४५ | शो | ५ | २ | ७ | ४१ | तै | १६ | १ | १२ | ४ | ३३ | ११ |
| १५ | ४ | चं | ५३ | ३९ | २७ | ७ | मृ | ४१ | ४१ | २२ | २० | अ | ६ | ५५ | ८ | २५ | व | २१ | २१ | १४ | १२ | ३३ | १५ |
| १६ | ५ | मं | ५७ | १९ | २८ | ३४ | आ | ४७ | ४ | २४ | २८ | सु | ८ | ५ | ८ | ५२ | ब | २५ | ४० | १५ | ५४ | ३३ | १८ |
| १७ | ६ | बु | ५९ | ३० | २९ | २६ | पुन | ५१ | ४ | २६ | ३ | धृ | ८ | १६ | ८ | ५६ | कौ | २८ | ३७ | १७ | ५ | ३३ | २२ |
| १८ | ७ | गु | ५९ | ५८ | २९ | ३६ | पु | ५३ | २५ | २६ | ५९ | शू | ७ | १६ | ८ | ३१ | ग | २९ | ५८ | १७ | ३६ | ३३ | २५ |
| १९ | ८ | शु | ५८ | ३६ | २९ | ३ | श्ले | ५३ | ५८ | २७ | १२ | गं | ४ | ५४ | ७ | ३४ | वि | २९ | ३२ | १७ | २५ | ३३ | २८ |
| २० | ९ | श | ५५ | २३ | २७ | ४५ | म | ५२ | ४३ | २६ | ४१ | वृ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | बा | २७ | १४ | १६ | २९ | ३३ | ३१ |
| २१ | १० | र | ५० | २६ | २५ | ४५ | पूफा | ४९ | ४३ | २५ | २८ | व्या | ४९ | ६ | २५ | १३ | तै | २३ | ८ | १४ | ५० | ३३ | ३५ |
| २२ | ११ | चं | ४३ | ५७ | २३ | ९ | उफा | ४५ | ११ | २३ | २९ | ह | ४१ | ८ | २२ | १ | व | १७ | २३ | १२ | ३१ | ३३ | ३८ |
| २३ | १२ | मं | ३६ | १२ | २० | २ | ह | ३९ | २४ | २१ | १९ | व | ३२ | ८ | १८ | २५ | ब | १० | १३ | ९ | ३९ | ३३ | ४१ |
| २४ | १३ | बु | २७ | ३२ | १६ | ३४ | चि | ३२ | ४३ | १८ | ३८ | सि | २२ | २० | १४ | २९ | कौ | १ | ५८ | ६ | २० | ३३ | ४४ |
| २५ | १४ | गु | १८ | २० | १२ | ५२ | स्वा | २५ | ३२ | १५ | ४५ | व्य | १२ | ३ | १० | २२ | ब | १८ | २० | १२ | ५२ | ३३ | ४७ |
| २६ | १५ | शु | ९ | ० | ९ | ८ | वि | १८ | १६ | १२ | ५० | वरि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ब | ९ | ० | ९ | ८ | ३३ | ५० |

| रा.मि. | स्टैं.टा. सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | संदर्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | ५ | ४२ | १८ | ५५ | १९ | २९ | 2 | वृ. २०।३४ | ० | १७ | १७ | ३७ | [illegible] | ६ | ८ | १९ | ४७ | देव दामोदर पुण्यम् |
| १३ | ५ | ४१ | १८ | ५६ | २० | ३० | 3 | वृष | ० | १८ | १५ | ५१ | १३ | ६ | ४२ | २० | ४२ | चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, कृत्तिका ३ में राहु, अनुराधा १ में केतु ११।४८ |
| १४ | ५ | ४० | १८ | ५६ | २१ | १.अ. | 4 | वृष | ० | १९ | १४ | ४ | १० | ७ | २० | २१ | ३८ | रवि-उल-अव्वल मु.मास ३ प्रा., **अक्षय तृतीया, परशुराम ज.,** A |
| १५ | ५ | ३९ | १८ | ५७ | २२ | २ | 5 | मि. ९।५ | ० | २० | १२ | १४ | ९ | ८ | ३ | २२ | ३३ | भद्रा १४।१२ से २७।७ तक, **विनायक ४ व्रत** |
| १६ | ५ | ३८ | १८ | ५८ | २३ | ३ | 6 | मिथुन | ० | २१ | १० | २३ | ७ | ८ | ५२ | २३ | २७ | **श्री आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जयंती,** श्री सूरदास जयंती-B |
| १७ | ५ | ३८ | १८ | ५८ | २४ | ४ | 7 | क. ११।४३ | ० | २२ | ८ | ३० | ५ | ९ | ४६ | २४ | ० | **श्री रामानुजाचार्य जयंती, श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती** |
| १८ | ५ | ३७ | १८ | ५९ | २५ | ५ | 8 | कर्क | ० | २३ | ६ | ३५ | ३ | १० | ४४ | २४ | १६ | भद्रा २९।३६ से, **गंगा सप्तमी,** गंगोत्पत्ति दिवस, गंगा पूजन |
| १९ | ५ | ३६ | १८ | ५९ | २६ | ६ | 9 | सिं. २७।११ | ० | २४ | ४ | ३८ | १ | ११ | ४५ | २५ | २ | भद्रा १७।२५ तक, **श्री दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती** |
| २० | ५ | ३५ | १९ | ० | २७ | ७ | 10 | सिंह | ० | २५ | २ | ३९ | [illegible] | १२ | ४८ | २५ | ४३ | **सीता नवमी,** महावीर स्वामी केवल ज्ञान जैन |
| २१ | ५ | ३५ | १९ | १ | २८ | ८ | 11 | सिंह | ० | २६ | ० | ३८ | ५७ | १३ | ५१ | २६ | २१ | सूर्य कृत्तिका में २१।४९, अश्विनी मेष में शुक्र १५।४४ |
| २२ | ५ | ३४ | १९ | १ | २९ | ९ | 12 | कं. ७।४ | ० | २६ | ५८ | ३५ | ५५ | १४ | ५५ | २६ | ५७ | भद्रा १२।३१ से २३।९ तक, **मोहिनी एकादशी व्रत सबका,** D |
| २३ | ५ | ३३ | १९ | २ | ३० | १० | 13 | कन्या | ० | २७ | ५६ | ३० | ५४ | १६ | १ | २७ | ३२ | रुकमणी द्वादशी |
| २४ | ५ | ३३ | १९ | २ | ३१ | ११ | 14 | तु. ८।९ | ० | २८ | ५४ | २४ | ५२ | १७ | ९ | २८ | ८ | **प्रदोष व्रत, नृसिंह चतुर्दशी, अशोक त्रिरात्री व्रत प्रा.** |
| २५ | ५ | ३२ | १९ | ३ | [illegible] | १२ | 15 | तुला | ० | २९ | ५२ | १६ | ५० | १८ | ११ | २८ | ४७ | भद्रा १२।५२ से २३।०० तक, **कूर्म ज.-सत्यव्रत-पूर्णिमा व्रत,** E |
| २६ | ५ | ३२ | १९ | ४ | २ | १३ | 16 | वृ. ७।३३ | १ | ० | ५० | ६ | ४९ | १९ | ३२ | २९ | २९ | **बुध पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्य**-बैशाख स्नान पूर्ति, पीपल पूजनम्, F |

A त्रेता युगादि कल्पादि मातंगी ज., **बद्री केदारनाथ यात्रा,** जैन वर्षीतम तप समापन B रामानुजाचार्य दक्षिण भारते D मृगशिरा ४ में शनि १०।९ E **सूर्य वृष में** ८।४२, **संक्रांति पुण्य मु. १५ बैठी,** आश्लेषा १ में गुरु १३।१८, वक्री नेपच्यून १८।३०, **छिन्नमस्ता ज.,** गुरु अमरदास जयंती (प्रा. मत से), व्यतिपात १०।२२ तक, ईद-ए-मिलाद, **बारहवफात,** ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रा. जैन F यम प्रीत्यर्थ जल कुम्भ दान-बैशाख पूर्णिमा

**बैशाख शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ मई** | **दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं।** | **ता. १६ मई ❖ बैशाख शु. १५ शुक्र** प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | ९ | ० | ३ | ११ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २४ | १८ | १६ | २१ | १५ | २७ | २ | ६ | ६ | ८ | १४ | २५ |
| ४ | १ | ६ | २३ | ५१ | ३ | ५८ | २१ | २१ | ३४ | १६ | २४ |
| ३८ | १८ | ३६ | १५ | ७ | ३६ | ४६ | १९ | १९ | २५ | २६ | ५७ |
| ५८ | [illegible] | ३४ | ३६ | ६ | ७२ | ६ | ३ | ३ | १ | ० | १ |
| १ | २१ | १६ | २८ | ५ | ८२ | ४१ | ११ | ११ | २३ | १३ | १९ |
| मा | मा | मा | व | मा | मा | मा | व | व | मा | मा | व |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |

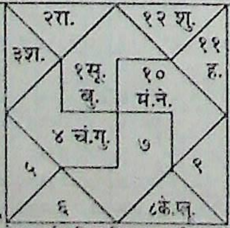


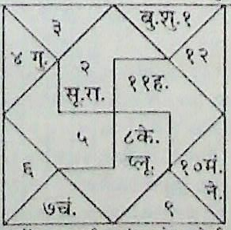


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ | ९ | ० | ३ | ० | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ० | २८ | २० | १७ | १६ | ५ | ३ | ५ | ५ | ८ | १९ | २५ |
| ५० | ४० | ३ | ५४ | ४४ | ३२ | ४६ | ५२ | ५९ | ४३ | १७ | २० |
| ६ | ५३ | ४२ | ४९ | ४१ | ३९ | ३२ | ४ | ४ | ६ | १३ | २६ |
| ५७ | [illegible] | ३३ | १६ | ७ | ७२ | ७ | ३ | ३ | १ | ० | १ |
| ४९ | ९ | १९ | ४५ | ४ | ४६ | ० | ११ | ११ | ३ | १ | २६ |
| मा | मा | मा | व | मा | मा | मा | व | व | मा | व | व |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |

शनिवार को चन्द्रदर्शन प्रजा में रोगोपद्रव कारक है। रोहिणी नक्षत्र युता अक्षय तृतीया वर्षा व उपज हेतु श्रेष्ठ फलप्रद है। पक्षान्त में रवि राहु योग से राजनैतिक गतिविधियां तेज होंगी। नव निर्वाचन घोषणा या निर्णय बनने से नेताओं व प्रजा में उत्तेजना बनेगी। विदेशी राष्ट्रों के नेताओं का आगमन भी होगा। अफ्रीका व अरब राष्ट्रों की कूटनीतियों के दुष्प्रभाव से देश के कई भागों में आतंकवादी घटनाओं का भय बढ़ेगा। मेष का शुक्र भी चौपायों बालकों, वृद्धों में रोग वृद्धिप्रद है। यथा—**दैत्यगुरुर्यदा मेषे सर्वधान्य महर्घता। महिषी पशु पीड़ा च मेघ वर्षा भविष्यति॥** गुरुवारी संक्रांति **जीवः क्षत्रिय जीवनाशनकरः** के अनुसार नेष्ट फलप्रद है। अनेक स्थानों पर उपद्रवी आतंक बढ़ेगा। **तेजी मंदी विचार**—शनिवार को चन्द्रदर्शन मु. ४५ से रुई, कपास, सूत में तेजी का झटका तथा गेहूं, चावल, जौ, ज्वार, मूंग, मोंठ आदि धान्य भावों में गिरावट कारक है। चना, सरसों, मूंगफली तथा पीत वस्तुओं सोना, पीतल आदि धातुओं में तेजी रहेगी। वृष संक्रांति मु. १५ धान्यों में तेजी तथा गुड़ चीनी, शक्कर तेजी कारक है। **भौम क्षेत्रे भार्गवे च धान्यानां च महर्घता। चतुष्पदानां नाशश्च शंखस्य च महर्घता॥** बादाम, अखरोट, काजू, किशमिश आदि मेवा सामान में पक्षान्त में तेजी होगी। प्लास्टिक, इलास्टिक, रबड़ के सामान में घटाबढ़ी। शेयर बाजारों में अस्थिरता होकर तेजी का रुख बनेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष पूर्वार्ध में तूफानी हवाएं, लू व गर्मी का प्रकोप रहेगा। पक्षान्त में बुध शुक्र युति से आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब व दिल्ली के कुछ क्षेत्रों में तेज वायु के साथ सामान्य वर्षा योग कारक है। **मेषे बुधास्तं भुवने सुभिक्षं** के अनुसार सुभिक्ष का संचार रहेगा। **शकुन विचार**—बैशाख सुदी की नन्दा-भद्रा व जया तिथियों में बादल गर्जना अथवा वायु के साथ वर्षा होना खरीफ की फसलों की उत्तम उपज होती है। यथा—**बैशाखे बादल पचरंग। अथवा चमके बिजली संग॥ तो अनेक धन जल बरसाई। सावन में बहु अन्न निपजाई॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. १७ से ३१ मई सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २७ बैशाख से १० ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| ता. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घं | मि | सूर्योदय उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि | रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि. रा | अं | क | वि | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि | अस्त घं | मि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | शु | ५१ | ५४ | २९ | २९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ० ० ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | प्रतिपदा क्षय: |
| २७ | २ | श | ५१ | २९ | २६ | ७ | अनु | ११ | २० | १० | ३ | सि | ४१ | ३४ | २२ | ९ | तै | २५ | ३५ | १५ | ४५ | ३३ | ५३ | ५ | ३१ | १९ | ४ | ३ | १४ | 17 | वृश्चिक | १ | १ | ४७ | ५५ | [illegible] | २० | ४४ | ६ | १७ | बुध पूर्व में उदय १२।१३ |
| २८ | ३ | र | ४४ | ६ | २३ | ९ | ज्ये | ५ | १० | ७ | ३५ | सि | ३२ | ३८ | १८ | ३४ | व | १७ | ३९ | १२ | ३४ | ३३ | ५६ | ५ | ३१ | १९ | ५ | ४ | १५ | 18 | ध. [illegible] | १ | २ | ४५ | ४३ | ४६ | २१ | ५३ | ७ | १२ | भद्रा १२।३४ से २३।९ तक, श्री नारद जयंती, श्री आनन्दमयी A |
| २९ | ४ | चं | ३८ | ७ | २० | ४५ | मू | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ता | २४ | ४६ | १५ | २५ | ब | १० | ५६ | ९ | ५२ | ३३ | ५९ | ५ | ३० | १९ | ५ | ५ | १६ | 19 | धनु | १ | ३ | ४३ | २९ | ४५ | २२ | ५४ | ८ | १२ | कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| ३० | ५ | मं | ३३ | ४८ | १९ | १ | उ.षा | ५४ | ४७ | २७ | २४ | शुभ | १८ | १५ | १२ | ४७ | कौ | ५ | ४५ | ७ | ४७ | ३४ | १ | ५ | ३० | १९ | ६ | ६ | १७ | 20 | म. ९।५३ | १ | ४ | ४१ | १४ | ४४ | २३ | ४८ | ९ | १६ | मार्गी बुध २०।३, ईद ए-मौलाद मु. |
| ३१ | ६ | बु | ३१ | २२ | १८ | २ | श्र | ५४ | ५४ | २७ | २७ | शु | १३ | १२ | १० | ४६ | ग | २ | २१ | ६ | २५ | ३४ | ४ | ५ | २९ | १९ | ७ | ७ | १८ | 21 | मकर | १ | ५ | ३८ | ५८ | ४३ | २४ | ० | १० | २० | भद्रा १८।२ से, धनिष्ठा में मंगल २८।४०, सायन मिथुन में सूर्य प्रवेश १७।२ |
| १ | ७ | गु | ३० | ५४ | १७ | ५० | ध | ५६ | ५८ | २८ | १६ | ब्र | ९ | ४४ | ९ | २२ | वि | ० | ५४ | ५ | ५० | ३४ | ७ | ५ | २९ | १९ | ७ | ८ | १९ | 22 | कुं. १५।४५ | १ | ६ | ३६ | ४१ | ४१ | २४ | ३३ | ११ | २२ | भद्रा ५।५० तक, पंचक प्रा. १५।४५ से, शुक्र भर. में १५।३५, B |
| २ | ८ | शु | ३२ | २३ | १८ | २५ | शत | ६० | ० | — | — | ऐं | ७ | ५० | ८ | ३६ | बा | १ | २५ | ६ | २ | ३४ | ९ | ५ | २८ | १९ | ८ | ९ | २० | 23 | कुम्भ | १ | ७ | ३४ | २२ | ४१ | २५ | १२ | १२ | २२ | कालाष्टमी, मेला चानाणी माता, दादूदयाल पुण्यम |
| ३ | ९ | श | २५ | ३६ | १९ | ४२ | शत | ० | ५२ | ५ | ४९ | वै | ७ | २२ | ८ | २५ | तै | ३ | ४८ | ६ | ५९ | ३४ | ११ | ५ | २८ | १९ | ८ | १० | २१ | 24 | मी. २५।२३ | १ | ८ | ३२ | ३ | ४० | २५ | ४५ | १३ | १८ | |
| ४ | १० | र | ४० | १७ | २१ | ३४ | पू.भा | ६ | २० | ७ | ५९ | वि | ८ | ८ | ८ | ४३ | व | ७ | ४८ | ८ | ३४ | ३४ | १४ | ५ | २७ | १९ | ९ | ११ | २२ | 25 | मीन | १ | ९ | २९ | ४३ | ३९ | २६ | १५ | १४ | ११ | भद्रा ८।३४ से २१।३४ तक, सूर्य रोहिणी में प्रवेश १८।७ |
| ५ | ११ | च | ५६ | ० | २३ | ५१ | उ.भा | १३ | ० | १० | ३९ | प्री | ९ | ५२ | ९ | २४ | ब | १३ | ३ | १० | ४० | ३४ | १६ | ५ | २७ | १९ | ९ | १२ | २३ | 26 | मीन | १ | १० | २७ | २२ | ३७ | २६ | ४४ | १५ | ३ | अपरा एकादशी व्रत सबका |
| ६ | १२ | मं | ५२ | २० | २६ | २३ | रे | २० | २९ | १३ | ३८ | आयु | १२ | १५ | १० | २१ | कौ | १९ | ७ | १३ | ६ | ३४ | १८ | ५ | २७ | १९ | १० | १३ | २४ | 27 | मे. १३।३८ | १ | ११ | २४ | ५९ | ३७ | २७ | ११ | १५ | ५५ | पंचक समा. १३।३८, मधुसूदन द्वादशी, श्री अनन्तनाथ जन्म जैन, C |
| ७ | १३ | बु | ५८ | ५२ | २८ | ५९ | अ | २८ | २१ | १६ | ४७ | सौ | १४ | ५९ | ११ | २६ | ग | २५ | ३६ | १५ | ४१ | ३४ | २१ | ५ | २६ | १९ | ११ | १४ | २५ | 28 | मेष | १ | १२ | २२ | ३६ | ३६ | २७ | ४० | १६ | ४८ | भद्रा २८।५९ से, प्रदोष व्रत |
| ८ | १४ | गु | ६० | ० | — | — | भ | ३६ | १२ | १९ | ५५ | शो | १७ | ४५ | १२ | ३२ | वि | ३२ | ५ | १८ | १६ | ३४ | २३ | ५ | २६ | १९ | ११ | १५ | २६ | 29 | वृ. २६।४१ | १ | १३ | २० | १२ | ३५ | २८ | १० | १७ | ४१ | भद्रा १८।१६ तक, मास शिवरात्रि, वट सावित्री व्रतारंभ |
| ९ | १४ | शु | ५ | १४ | ७ | ३१ | कृ. | ४३ | ४२ | २२ | ५५ | अति | २० | १९ | १३ | ३४ | श | ५ | १४ | ७ | ३१ | ३४ | २५ | ५ | २६ | १९ | १२ | १६ | २७ | 30 | वृष | १ | १४ | १७ | ४७ | ३३ | २८ | ४३ | १८ | ३६ | चतुर्दशी वृद्धि, चौ. चरण सिंह पुण्य दिवस, पितृकार्य अमावस्या |
| १० | ३० | श | ११ | ५ | ९ | ५२ | रो | ५० | ३५ | २५ | ४० | सु | २२ | २८ | १४ | २५ | ना | ११ | ५ | ९ | ५२ | ३४ | २७ | ५ | २६ | १९ | १२ | १७ | २८ | 31 | वृष | १ | १५ | १५ | २० | ३३ | २९ | १९ | १९ | ३२ | देवकार्य अमा., भावुका ३०, शनि जन्म दि., वट सावित्री व्रत, D |

A मां जयंती, वाद्य यंत्र वीणादि दान दिवस B राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास प्रारम्भ C श्री जवाहरलाल नेहरू पुण्य दिवस D सूर्य ग्रहणम्

ज्येष्ठ कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २३ मई [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. ३१ मई ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १० | ९ | ० | ३ | ० | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ७ | ७ | २३ | १७ | १७ | १४ | ४ | ५ | ५ | ८ | १९ | २५ |
| ३४ | १८ | ५३ | २९ | ३६ | २ | ३६ | ३६ | ३६ | ४९ | १६ | १० |
| २२ | २२ | २६ | ४८ | ५१ | १५ | २० | ४८ | ४८ | ३० | २४ | १२ |
| ५७ | ७११ | ३२ | १६ | ७ | ७२ | ७ | ३ | ३ | ० | ० | १ |
| ४१ | १० | ७ | २७ | ५७ | ४१ | १६ | ११ | ११ | ४३ | १४ | ३१ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | मा | व | व |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

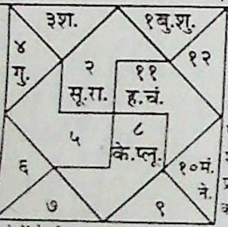


मास में पांच शनिवार विश्व के राजनैतिक स्तर में विशेष उतार-चढ़ाव करने का कारक है। ब्रिटेन, अमेरिका, रूस आदि शक्तिशाली राष्ट्रों में आपसी खिंचाव बनेगा। चीन, अरब राष्ट्रों व जापान, अफ्रीकी देशों में जन आन्दोलन और तनाव बढ़ेंगे। **शनेश्च पंचकं दृष्टवा पाताले कंपते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्नि दाहो महर्घता॥** दक्षिण प्रान्तों में शासकों में आपसी मतभेद बढ़कर जनतन्त्र में आक्रोश भाव बढ़ाने की प्रक्रिया से सत्तारूढ़ पार्टी में अस्थिरता होगी। फसलों को जीवों, कीटाणुओं से हानि और पक्ष में तूफानी गर्म हवाओं से रोगादि प्राकृतिक प्रकोपों से जीवन जन हानि कारक योग है। पर्वतीय क्षेत्रों पर भूकंप का भय व्याप्त रहेगा। **मेषे बुधस्योदयतो गवादि चतुष्पदानां महतीह पीड़ा। तीडादीना धान्य महर्घता च वृषेतिवृष्टिर्मिथुन न वर्षा॥** वर्षा की न्यूनता रहेगी। **तेजी मन्दी विचार**—प्रतिपदा का क्षय मूंगफली, सरसों, सोयाबिन व अरण्ड के तेलों में उछाले की तेजी फलप्रद है। मार्गी बुध कृ. ५ से रुई कपास, सूत, वस्त्रादि में तेजी तथा गुड़, शक्कर, चीनी, रस पदार्थ तेज रहें। चना, चावल, जौ, ज्वार, मूंग, मोंठ व उड़द में मन्दी के बाद तेजी होगी। रासायनिक पदार्थों, किराणा सामान, धनियां, सूंठ, लूंग आदि सामान में उतार-चढ़ाव रहेगा। शेयर भावों में तेजी रहेगी। शनिवारी ३० को ग्रहण होना लोहा, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल व स्टील सामान में तेजी संचार कारक है। **आकाश लक्षण**—पक्ष प्रारम्भ में गर्म वायु की लू से जीवों, चौपायों को हानि रहेगी। दक्षिणी व पूर्वी प्रान्तों में तूफान अथवा चक्रवात भय रहेगा। गुजरात, राजस्थान व पंजाब के पश्चिमी क्षेत्रों में आंधियां चलकर अंधड़ बढ़ेगा। पक्षान्त में बादलचाल तेज होकर समुद्र तटीय क्षेत्रों पर खण्ड वर्षा हो [illegible] कारक है। **ज्येष्ठ मासे त्वामावस्या [illegible] दिवा सुदी वा विशम। आकाशे दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टिर्भयावहा॥** जेठ बदी ५ तिथि को दक्षिण की हवा चलने पर घी, तेलों में आगे तेजी [illegible]

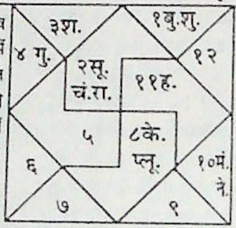


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ९ | ० | ३ | ० | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| १५ | १३ | २८ | २१ | १८ | २३ | ५ | ५ | ५ | ८ | १९ | २४ |
| १५ | १५ | ४ | २४ | ४३ | ४५ | ३५ | ११ | ११ | ५३ | १३ | ५७ |
| २० | २५ | ३० | ३० | ४८ | २१ | २० | १२ | १२ | ५४ | ३४ | ५२ |
| ५७ | ७११ | ३० | ४७ | ८ | ७२ | ७ | ३ | ३ | ० | ० | ० |
| ३३ | १८ | २२ | १६ | ५३ | ५६ | ३० | ११ | ११ | २० | ३० | ४४ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | मा | व | व |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| रोहि. | रोहि. | धनि. | भर. | आश्ले. | भर. | मृग. | कृत्ति. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

संचार में तेजी संचार कारक है। आकाश लक्षण—पक्ष प्रारम्भ में गर्म वायु की लू से जीवों, चौपायों को हानि रहेगी। दक्षिणी व [illegible] सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल व स्टील
बढ़ेगा। पक्षान्त में बादलचाल तेज होकर समुद्र तटीय क्षेत्रों पर खण्डवर्षा होगी। शकुन विचार—ज्येष्ठ मास में वर्षा होना अथवा बादल चाल होना वर्षा काल समय में अनावृष्टि कारक है। ज्येष्ठ मासे त्वामावस्या [illegible] दिवा सुदी वा विशम। आकाशे [illegible] राजस्थान व पंजाब के पश्चिमी क्षेत्रों में आंधियां चलकर अंधड़
दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टिर्भयावहा॥ जेठ बदी ५ तिथि को दक्षिण की हवा चलने पर घी, तेलों में आगे तेजी फलप्रद होती है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



# ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष–५ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. १ से १४ जून सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ११ से २४ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ज्ये. ११ | १ | र | १६ | १२ | ११ | ५४ | मृ | ५६ | ३९ | २८ | ५ | धृ | २४ | २ | १५ | २ | ब | १६ | १२ | ११ | ५४ | ३४ | २८ | ५ | २५ | १९ | १३ | १८ | २९ | 1 | मि. १४।५५ | १ | १६ | १२ | ५३ | [illegible] | ६ | १ | २० | २९ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, जून मास ६ प्रा. ता. ३०, करिदिनं, A |
| १२ | २ | चं | २० | २४ | १३ | ३४ | आ | ६० | ० | — | — | शू | २४ | ५२ | १५ | २२ | कौ | २० | २४ | १३ | ३४ | ३४ | ३० | ५ | २५ | १९ | १३ | १९ | [illegible] | 2 | मिथुन | १ | १७ | १० | २४ | ३० | ६ | ४९ | २१ | २३ | रवि उस्सानी मु. मास ४ प्रा., शुक्र कृत्तिका में १४।५८ |
| १३ | ३ | मं | २३ | ३० | १४ | ४९ | आ | १ | ४३ | ६ | ६ | गं | २४ | ५२ | १५ | २२ | ग | २३ | ३० | १४ | ४९ | ३४ | ३२ | ५ | २५ | १९ | १४ | २० | २ | 3 | क. २५।१० | १ | १८ | ७ | ५४ | ३० | ७ | ४१ | २२ | १४ | भद्रा २७।१६ से, मंगल कुंभ में प्र. २५।५१, रंभाव्रत, विनायक B |
| १४ | ४ | बु | २५ | २५ | १५ | ३५ | पु | ५ | ४० | ७ | ४१ | वृ | २३ | ५५ | १४ | ५९ | वि | २५ | २५ | १५ | ३५ | ३४ | ३४ | ५ | २५ | १९ | १४ | २१ | ३ | 4 | कर्क | १ | १९ | ५ | २४ | २८ | ८ | ३८ | २३ | १ | भद्रा १५।३५ तक, शनि पश्चिम में अस्त १९।५९ |
| १५ | ५ | गु | २६ | १ | १५ | ४९ | पु | ८ | २२ | ८ | ४६ | धु | २१ | ५८ | १४ | १२ | बा | २६ | १ | १५ | ४९ | ३४ | ३५ | ५ | २५ | १९ | १५ | २२ | ४ | 5 | कर्क | १ | २० | २ | ५२ | २६ | ९ | ३८ | २३ | ४३ | कृत्तिका में बुध २१।५४, वृष में शुक्र प्रवेश ८।४५, श्रुति पंचमी जैन |
| १६ | ६ | शु | २५ | १५ | १५ | ३१ | श्ले | ९ | ४५ | ९ | १९ | व्या | १८ | ५६ | १२ | ५९ | तै | २५ | १५ | १५ | ३१ | ३४ | ३७ | ५ | २४ | १९ | १५ | २३ | ५ | 6 | सिं. ९।१९ | १ | २१ | ० | १८ | २६ | १० | ३९ | २४ | ० | हर्षल वक्री २६।३५, अरण्य षष्ठी व्रत (बंगाल), जामित्री ६ (बंगाल) |
| १७ | ७ | श | २३ | ४ | १४ | ३८ | म | ९ | ४५ | ९ | १८ | ह | १४ | ४६ | ११ | १९ | व | २३ | ४ | १४ | ३८ | ३४ | ३८ | ५ | २४ | १९ | १६ | २४ | ६ | 7 | सिंह | १ | २१ | ५७ | ४४ | २४ | ११ | ४१ | २४ | २१ | भद्रा १४।३८ से २५।५९ तक, विन्ध्यवासिनी पूजा |
| १८ | ८ | र | १९ | ३० | १३ | १२ | पूफा | ८ | २२ | ८ | ४५ | व | ९ | २८ | ९ | १२ | ब | १९ | ३० | १३ | १२ | ३४ | ३९ | ५ | २४ | १९ | १६ | २५ | ७ | 8 | कं. १४।३२ | १ | २२ | ५५ | ८ | २४ | १२ | ४३ | २४ | ५६ | सूर्य मृगशिरा में प्रवेश १५।५४, शनि आर्द्रा में १८।३, बुध वृष में १८।४४ |
| १९ | ९ | चं | १४ | ३६ | ११ | १५ | उफा | ५ | ३८ | ७ | ४० | सि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | कौ | १४ | ३६ | ११ | १५ | ३४ | ४० | ५ | २४ | १९ | १६ | २६ | ८ | 9 | कन्या | १ | २३ | ५२ | ३२ | २२ | १३ | ४५ | २५ | ३० | श्री माहेश्वरी नवमी, व्यतिपात पुण्यम्, श्री वटुक भैरव जयंती |
| २० | १० | मं | ८ | ३१ | ८ | ४९ | ह | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वरि | ४७ | २७ | २४ | २३ | ग | ८ | ३१ | ८ | ४९ | ३४ | ४२ | ५ | २४ | १९ | १७ | २७ | ९ | 10 | तु. १७।४ | १ | २४ | ४९ | ५४ | २१ | १४ | ५० | २६ | ४ | भद्रा १९।२६ से, श्री गंगा दशहरा, **निर्जला एका. व्रत** (स्मार्त), C |
| २१ | ११ | बु | १ | २५ | ५ | ५८ | स्वा | ५० | ५६ | २५ | ४७ | परि | ३८ | २९ | २० | ४८ | वि | १ | २५ | ५ | ५८ | ३४ | ४३ | ५ | २४ | १९ | १७ | २८ | १० | 11 | तुला | १ | २५ | ४७ | १५ | २० | १५ | ५७ | २६ | ४० | भद्रा ५।५८ तक, **निर्जला एकादशी व्रत वैष्णव,** मेला बहिरे D |
| ० | १२ | बु | ५३ | ३३ | २६ | ४९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | द्वादशी क्षय: D भटिण्डा (पंजाब) E **पूर्णिमा व्रत** |
| २२ | १३ | गु | ४५ | १३ | २३ | २९ | वि | ४४ | ४० | २३ | १६ | शिव | २९ | ४ | १७ | २ | कौ | १९ | २५ | १३ | १० | ३४ | ४३ | ५ | २४ | १९ | १८ | २९ | ११ | 12 | वृ. १७।५५ | १ | २६ | ४४ | ३५ | १९ | १७ | ६ | २७ | १९ | **प्रदोष व्रत,** वट सावित्री व्रत प्रा. (गुजरात), **फातिहा यजदहूम** (मु.) |
| २३ | १४ | शु | ३६ | ४४ | २० | ६ | अनु | ३८ | १५ | २० | ४२ | सि | १९ | २६ | १३ | ११ | ग | १० | ५८ | ९ | ४८ | ३४ | ४४ | ५ | २४ | १९ | १८ | ३० | १२ | 13 | वृश्चिक | १ | २७ | ४१ | ५४ | १८ | १८ | १८ | २८ | ४ | भद्रा २०।६ से, शुक्र रोहिणी में १३।५९, चम्पक १४ (बंगाल), E |
| २४ | १५ | श | २८ | २८ | १६ | ४८ | ज्ये | ३२ | ४ | १८ | १४ | सा | ९ | ५२ | ९ | २१ | वि | २ | ३३ | ६ | २५ | ३४ | ४५ | ५ | २४ | १९ | १८ | ३१ | १३ | 14 | ध. १८।१४ | १ | २८ | ३९ | १२ | १८ | १९ | २९ | २८ | ५५ | भद्रा ६।२५ तक, **सत्यव्रत, सन्त कबीर जयंती,** वट सावित्री व्रत F |

**A गंगा दशाश्वमेध स्नानारंभ** B ४, महाराणा प्रताप जयंती, मेला हल्दी घाटी (राज.), गुरु अर्जुनदेव बलिदान दिवस C गंगा दशाश्वमेध स्नान पूर्ति, श्री सेतुबन्ध रामेश्वर प्रतिष्ठा दिवस, रामेश्वरम् यात्रा दर्शन पूजनादि, मेला हरिद्वार F पूर्ति (गुजरात), मन्वादि देव स्नान पूजा (बंगाल व उड़ीसा), पूर्णिमा पुण्य, ज्येष्ठी पूर्णिमा, ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ति जैन

**ज्येष्ठ शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ८ जून**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | १० | ० | ३ | १ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २२ | २४ | २ | २९ | १९ | ३ | ६ | ४ | ४ | ८ | १९ | २४ |
| ५५ | ४७ | ० | १९ | ५७ | २९ | ३५ | ४५ | ४५ | ५५ | ८ | ४५ |
| ८ | ० | १६ | ३१ | ५० | ५ | ५९ | ५५ | ५५ | ११ | ४६ | ८ |
| ५७ | [illegible] | २८ | ७४ | ९ | ७३ | ७ | ३ | ३ | ० | ० | १ |
| २४ | ५१ | १४ | ३ | ४२ | ० | ४१ | ११ | ११ | ४ | ४४ | ३७ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | अ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

**।दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं।**

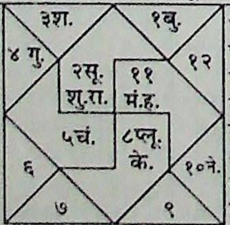


पक्षान्त में एक राशि पर चार ग्रहों का योग है। अतः सीमावर्ती क्षेत्रों पर सैन्य संघर्ष तथा मुस्लिम राष्ट्रों, ईरान, ईराक, अफगानिस्तान एवं तुर्की आदि में घरेलू फसाद होकर शासकों में चिन्ताएं बढ़ेंगी। यथा—**एक राशौ यदायान्ति चत्वार पंचखेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वारुधिरेण जलेन वा॥** पूर्वी प्रान्तों में साम्प्रदायिक दंगे और जन आन्दोलन बढ़ेंगे। केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में आपसी फूट से शासकीय विघटन बनेगा। **कृष्णो वृद्धिर्भयं शुक्ले मंदार्ककुज संक्रमः। प्रजाभीर्विजला मेघा पर चक्रं विनिर्दिशेत्॥** देश के राजनेताओं में निर्वाचन जागरूकता बढ़ेगी। **तेजी मन्दी विचार**—रविवार को चन्द्रदर्शन मु. ३० से गेहूं, जौ, चना, चावल के भावों में घटाबढ़ी चलेगी। कुंभे मंगल शु. ३ बाद मिर्च, मसाले के सामान, औषधियां आदि कैमिकल सामान, चीनी, गुड़, शक्कर तथा सूती वस्त्रों में तेजी कारक है। **भू सुतः कुंभ राशिस्थः सर्व धान्य महर्घता। एवं प्रजायते ह्यर्घ लोकमध्ये तु निर्भयम्॥** वक्री हर्षल मंगल के साथ युत होने से शेयर बाजार, सोना तथा कागज व्यवसाय में आश्चर्यजनक तेजी कारक है। लोहे व कलपुर्जों के सामान में तेजी रहेगी। पक्षान्त में मूंग, मोंठ, चना आदि दालवाना तेज व घृत तेलों और चीनी, गुड़, शक्कर आदि रस पदार्थों में मन्दी का झटका रहेगा। **आकाश लक्षण**—शु. ८ मृगे सूर्य से पक्षान्त में तेज धूप व गर्मी के बाद कई स्थानों पर वर्षा होगी। बंगाल, आसाम, उड़ीसा, पूर्वी आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु के क्षेत्रों में वर्षा होगी। महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिमी मध्य प्रदेश, दक्षिणी राजस्थान में खण्डवर्षा तथा दिल्ली, हरियाणा, उत्तरी राजस्थान व पंजाब क्षेत्रों में कहीं-कहीं सामान्य वर्षा व बादल चाल से तापमान में गिरावट होगी। **शकुन विचार**—ज्येष्ठ सुदी ५ को बादल चाल व दक्षिणी वायु चले तो चार बाद तेजी का संचार होता है। जेठ सुदी के तापमान बढ़े तो वर्षा काल में वर्षा उत्तम होती है। यथा—**ज्येष्ठ मास जो तपै निराशा। तो जानो बिरखा की आशा॥**

**ता. १४ जून ❖ ज्येष्ठ शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

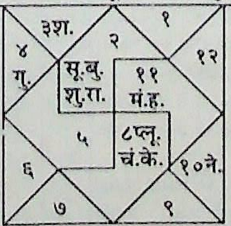


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ | १० | १ | ३ | १ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २८ | २२ | ४ | ७ | २० | १० | ७ | ४ | ४ | ८ | १९ | २४ |
| ३९ | ६ | ४५ | २९ | ५७ | ४७ | २२ | २६ | २६ | ५४ | ३ | ३५ |
| १२ | ३६ | ११ | १० | २६ | १५ | १३ | ५० | ५० | ६ | ५८ | ३१ |
| ५७ | ८८७ | २६ | ९१ | १० | ७३ | ७ | ३ | ३ | ० | ० | १ |
| १८ | ५८ | २३ | ५९ | १५ | ५ | ४५ | ११ | ११ | २१ | ५४ | ३६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | अ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. १५ से २९ जून सन् २००३ ई., रा. मिति २५ ज्येष्ठ से ८ आषाढ़ तक। रवि उत्तर-दक्षिणायने, उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

| रा. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | १ | र | २० | ४७ | १३ | ४३ | मू | २६ | ३० | १६ | ० | शुभ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | कौ | २० | ४७ | १३ | ४३ |
| २६ | २ | चं | १४ | ५ | ११ | २ | पू.षा | २१ | ५६ | १४ | ११ | ब्र | ४४ | ४३ | २३ | १७ | ग | १४ | ५ | ११ | २ |
| २७ | ३ | मं | ८ | ४१ | ८ | ५३ | उ.षा | १८ | ४६ | १२ | ५५ | ऐं | ३८ | २७ | २० | ४७ | वि | ८ | ४१ | ८ | ५३ |
| २८ | ४ | बु | ४ | ५० | ७ | २३ | श्र | १७ | १७ | १२ | २० | वै | ३३ | ३८ | १८ | ५२ | बा | ४ | ५० | ७ | २३ |
| २९ | ५ | गु | ३ | ६ | ६ | ३९ | धनि | १७ | ४२ | १२ | २० | वि | ३० | २५ | १७ | ३५ | तै | ३ | ६ | ६ | ३९ |
| ३० | ६ | शु | ३ | २० | ६ | ४३ | शत | २० | ७ | १३ | २८ | प्री | २८ | ४७ | १६ | ५६ | व | ३ | २५ | ६ | ४३ |
| ३१ | ७ | श | ५ | २३ | ७ | ३४ | पू.भा | २४ | २८ | १५ | ११ | आ | २८ | ३९ | १६ | ५३ | ब | ५ | २३ | ७ | ३४ |
| १ | ८ | र | ९ | १३ | ९ | ८ | उ.भा | ३० | १९ | १७ | ३३ | सौ | २९ | ४७ | १७ | २० | कौ | ९ | १७ | ९ | ८ |
| २ | ९ | चं | [illegible] | ३४ | ११ | १५ | रे | ३७ | २४ | २० | २३ | शो | ३१ | ५२ | १८ | ११ | ग | १४ | ३४ | ११ | १५ |
| ३ | १० | मं | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | अ | ४५ | ७ | २३ | २२ | अति | ३४ | ३० | १९ | १४ | वि | २० | ४२ | १३ | ४३ |
| ४ | ११ | बु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | भ | ५२ | ५० | २६ | ३७ | सु | ३७ | १६ | २० | २१ | बा | २७ | २ | १६ | १८ |
| ५ | १२ | गु | ३३ | २१ | १८ | ० | कृ | [illegible] | ० | — | — | धृ | ३९ | ४८ | २१ | २२ | कौ | ० | १८ | ५ | ३४ |
| ६ | १३ | शु | २८ | ५२ | २१ | ० | कृ | ० | २२ | ५ | ३५ | शू | ४१ | ४८ | २२ | १० | ग | ६ | १३ | ७ | ५६ |
| ७ | १४ | श | ४३ | २५ | २२ | ४९ | रो | ६ | ५९ | ८ | १५ | गं | ४३ | १ | २२ | ३९ | वि | ११ | १७ | ९ | ५८ |
| ८ | ३० | र | [illegible] | [illegible] | २४ | १० | मृ | १२ | ३४ | १० | २९ | वृ | ४३ | १९ | २२ | ४७ | चतु | १५ | १५ | ११ | ३३ |

| दिनांक अं. | दिनमान घ | प | स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | प्र. | मु. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं | मि | अस्त घं | मि | निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | ३४ | ४५ | ५ | २४ | १९ | १९ | १ | १४ | धनु | १ | २२ | ३६ | ३० | [illegible] | २० | ३६ | ५ | ५३ | सूर्य मिथुन में प्रवेश १५।२१, संक्रांति पुण्यम मु. ३० सूर्तो, A |
| 16 | ३४ | ४६ | ५ | २४ | १९ | १९ | २ | १५ | म. १९।१९ | २ | ० | ३३ | ४७ | १६ | २१ | ३५ | ६ | ५६ | भद्रा २१।५३ से, गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती |
| 17 | ३४ | ४६ | ५ | २४ | १९ | १९ | ३ | १६ | मकर | २ | १ | ३१ | ३ | १६ | २२ | २६ | ८ | २ | भद्रा ८।५३ तक, **कृष्ण चतुर्थी व्रत** |
| 18 | ३४ | ४७ | ५ | २५ | १९ | १९ | ४ | १७ | कुं. १८।११ | २ | २ | २८ | १९ | १६ | २३ | ८ | ९ | ८ | **पंचक प्रारम्भ** २४।१९ से, मंगल शतभिषा में १६।२५ |
| 19 | ३४ | ४७ | ५ | २५ | १९ | २० | ५ | १८ | कुम्भ | २ | ३ | २५ | ३५ | १५ | २३ | ४८ | १० | १० | |
| 20 | ३४ | ४७ | ५ | २५ | १९ | २० | ६ | १९ | कुम्भ | २ | ४ | २२ | ५० | १६ | २४ | ० | ११ | ९ | भद्रा ६।४३ से १९।३ तक |
| 21 | ३४ | ४८ | ५ | २५ | १९ | २० | ७ | २० | मी. ८।४१ | २ | ५ | २० | ६ | १५ | २४ | १६ | १२ | ४ | सायन कर्क में सूर्य प्र. २५।१, **कालाष्टमी, रवि दक्षिणायन,** B |
| 22 | ३४ | ४८ | ५ | २५ | १९ | २० | ८ | २१ | मीन | २ | ६ | १७ | २१ | १४ | २४ | ४६ | १२ | ५७ | सूर्य आर्द्रा में प्रवेश १५।००, बुध पूर्व में अस्त २३।३६, C |
| 23 | ३४ | ४७ | ५ | २६ | १९ | २१ | ९ | २२ | मे. २०।२३ | २ | ७ | १४ | ३५ | १५ | २५ | १४ | १३ | ४९ | भ. २४।२७ से, **पंचक समाप्त** २०।२३, मृगशिरा में बुध ९।५४ |
| 24 | ३४ | ४७ | ५ | २६ | १९ | २१ | १० | २३ | मेष | २ | ८ | ११ | ५० | १५ | २५ | ४२ | १४ | ४२ | भद्रा १३।४३ तक, शुक्र मृगशिरा में १२।२२ |
| 25 | ३४ | ४७ | ५ | २६ | १९ | २१ | ११ | २४ | मेष | २ | ९ | ९ | ५ | १४ | २६ | ११ | १५ | ३४ | **योगिनी एकादशी व्रत सबका, गोपद्म व्रतोद्यापन** |
| 26 | ३४ | ४७ | ५ | २६ | १९ | २१ | १२ | २५ | वृ. ९।२३ | २ | १० | ६ | १९ | १५ | २६ | ४३ | १६ | २९ | बुध मिथुन में १८।२ |
| 27 | ३४ | ४६ | ५ | २७ | १९ | २१ | १३ | २६ | वृष | २ | ११ | ३ | ३४ | १४ | २७ | १८ | १७ | २५ | भद्रा ११।० से, **प्रदोष व्रत,** आश्लेषा ३ में गुरु १२।५६ |
| 28 | ३४ | ४६ | ५ | २७ | १९ | २१ | १४ | २७ | मि. २१।२५ | २ | १२ | ० | ४८ | १४ | २७ | ५८ | १८ | २१ | भद्रा ९।५८ तक, **मास शिवरात्री** |
| 29 | ३४ | ४५ | ५ | २७ | १९ | २१ | १५ | २८ | मिथुन | २ | १२ | ५८ | २ | १४ | २८ | १४ | १९ | १५ | शुक्र मिथुन में २३।२९, बुध आर्द्रा में २२।१३, देवपितृकार्य अमावस्या |

A बुध रोहिणी में २०।२९, वट सावित्री व्रत पारणा B वर्षा ऋतु प्रा. C राष्ट्रीय आषाढ़ मासारम्भ, मेला भून्तर (हि.प्र.)

आषाढ़ कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २२ जून ।दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं। ता. २९ जून ❖ आषाढ़कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ११ | १० | १ | ३ | १ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ६ | १० | ८ | २२ | २२ | २० | ८ | ४ | ४ | ८ | १८ | २४ |
| २० | ३५ | ६ | ४ | २१ | ३२ | २६ | १ | १ | ५० | ५६ | २२ |
| २१ | ४१ | ५ | ३८ | ४३ | १७ | २६ | २४ | २४ | ० | ६ | ५२ |
| ५७ | [illegible] | २२ | ७१ | १० | ७३ | ७ | ३ | ३ | ० | १ | १ |
| [illegible] | ५ | २० | १२ | ५३ | १२ | ४८ | ११ | ११ | ४३ | ६ | ३३ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

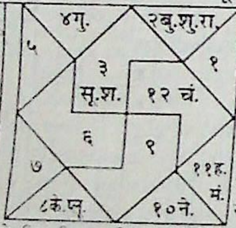


शनि सूर्य का एक राशि पर योग तथा मास में ५ रविवार होना पाश्चात्य राष्ट्रों जो विशेष शक्तिशाली राष्ट्र हैं वहां पर आतंकवादी हरकतों से हानि व भय व्याप्त होगा। यूरोप के कई देशों में भी जनाक्रोश बढ़ेगा। **संक्रान्तिरादित्य दिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेरतीव। धान्यं महर्घं ह्याति रौद्र वार्ता प्रजा भवेद् दुःखित हीन दीना॥** केन्द्र स्थल व उत्तर प्रदेश व बिहार के क्षेत्रों में जनता में क्रौधत्व स्थिति बढ़कर तोड़फोड़, अग्निकाण्ड अथवा बारुदादि से धन हानि रहेगी। उग्रवादी ताकतों का दुष्प्रभाव बढ़कर शासकों के लिए चिन्तन शीलता बढ़ने के योग है। **तेजी मन्दी विचार**—रविवारी संक्रांति मु. ३० से जौ, ज्वार, चावल, मूंग, मोंठ में उतार चढ़ाव व चना में तेजी कारक है। पक्ष में चीनी, शक्कर भावों में घटाबढ़ी होकर मन्दी का रुख रहे। शेयर भावों में तेजी चलेगी। चान्दी में गिरावट सोना में तेजी। **मिथुने भास्करे याते कार्पासः कन्दमूलकम्। तिलाश्च सर्वधान्यानि महर्घाणि स्युरेव हि॥** अतः वस्त्र, रुई, कपास एवं तेलों में तेजी रहेगी। रबड़, प्लास्टिक के सामान में उठाव बनेगा। बारदाना, मेवा सामान, किसमिस, बादाम, काजू, अखरोट आदि तेज होंगे। **आकाश लक्षण**—सूर्य के आगे व पीछे दोनं तरफ सौम्य ग्रह होने से राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा एवं दिल्ली प्रदेशों में सामान्य वर्षा होगी। बादल चाल प्रायः रहकर उमस रहेगी। दक्षिणी प्रान्तों व आसाम, बंगाल प्रान्तों में प्रलयंकारी वर्षा से मार्गावरोधक स्थितियां बनेंगी। पक्षान्त में तापमान में पुनः तेजी होगी। जिससे जीवों में रोगोपद्रव बढ़ें [illegible] अष्टमी व नवमी के दिन बादल गाज हो या बिजली चमक तो सुभिक्ष होता है और श्रेष्ठ फसल पैदा होकर मंदी का संचार होता है। यथा—**बदी षाढ़ नव आठवीं मेघ छिपावे चन्द।** [illegible]

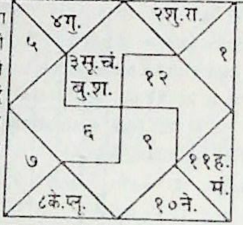


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | २ | १० | २ | ३ | १ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| १२ | ४ | १० | ५ | २३ | २० | ९ | ३ | ३ | ८ | १८ | २४ |
| ५८ | ६ | ४० | १० | ३९ | ५ | १९ | ३० | ३९ | ४४ | ४७ | १२ |
| २ | ७ | १ | ५९ | २९ | ३ | ३ | ८ | ८ | ० | ५७ | १० |
| ५७ | ७० | २० | १२८ | ११ | ७३ | ७ | ३ | ३ | १ | १ | १ |
| १४ | ५८ | ४ | ४ | २३ | २० | ४७ | ११ | ११ | २ | १५ | ३० |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | अ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

स राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा एवं दिल्ली प्रदेशों में सामान्य वर्षा होगी। ... आकाश लक्षण—सूर्य के आगे व पीछे दोनं तरफ सौम्य ग्रह होने
पक्षान्त में तापमान में पुन: तेजी होगी। जिससे जीवों में रोगोपद्रव बढ़ेंगे। शकुन विचार—आषाढ़ वदी अष्टमी व नवमी के दिन बादल चाल हो या बिजली चमके तो सुभिक्ष होता है और श्रेष्ठ फसल पैदा होकर मंदी का संचार ... में प्रलयंकारी वर्षा से मार्गावरोधक स्थितियां बनेंगी।



# आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ३० जून से १३ जुलाई सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ९ से २२ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तरगोले, वर्षा ऋतु।

| ग. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घं | मि | सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं | मि | अस्त घं | मि | निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भू | १ | चं | ४८ | ५५ | २५ | २ | आ | १६ | ५८ | १२ | १५ | ध्रु | ४२ | ४१ | २२ | ३२ | कि | १८ | ०० | १२ | ४० | ३४ | ४४ | ५ | २८ | १९ | २१ | १६ | २९ | 30 | मिथुन | २ | १३ | ५५ | १६ | [illegible] | ५ | ३६ | २० | १० | |
| १० | २ | मं | ४९ | ५१ | २५ | २४ | पुन | २० | ११ | १३ | ३२ | व्या | ४१ | ५ | २१ | ५४ | बा | ११ | ३१ | १३ | १७ | ३४ | ४३ | ५ | २८ | १९ | २१ | १७ | ३० | J1 | क. ७।१६ | २ | १४ | ५२ | २९ | १४ | ६ | ३३ | २० | ५९ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, जुलाई मास ७ ता. ३१, श्री जगदीश A |
| ११ | ३ | बु | ४९ | ३७ | २५ | १९ | पु | २२ | १४ | १४ | २२ | ह | ३८ | ३४ | २० | ५४ | तै | १९ | ५१ | १३ | २५ | ३४ | ४३ | ५ | २८ | १९ | २१ | १८ | [illegible] | 2 | कर्क | २ | १५ | ४९ | ४३ | १३ | ७ | ३३ | २१ | ४३ | जमादि-उल-अव्वल मु. मास. ५ प्रा. |
| १२ | ४ | गु | ४८ | १९ | २४ | ४८ | श्ले | २३ | ११ | १४ | ४५ | व | ३५ | ११ | १९ | ३३ | व | १९ | ५ | १३ | ७ | ३४ | ४२ | ५ | २९ | १९ | २१ | १९ | २ | 3 | सिं. १४।१० | २ | १६ | ४६ | ५६ | १३ | ८ | ३४ | २२ | २३ | भद्रा १३।७ से २४।४८ तक, विनायक ४ व्रत |
| १३ | ५ | शु | ४६ | २ | २३ | ५४ | म | २३ | ९ | १४ | ४५ | मि | ३१ | ० | १७ | ५३ | ब | १७ | १७ | १२ | २४ | ३४ | ४० | ५ | २९ | १९ | २१ | २० | ३ | 4 | सिंह | २ | १७ | ४४ | ९ | १३ | ९ | ३६ | २२ | ५९ | स्कन्द ५, हेरा पंचमी ( उड़ीसा ), आर्द्रा २ में शनि १३।२३ |
| १४ | ६ | श | ४२ | ४९ | २२ | ३७ | पूफा | २० | १० | १४ | २१ | व्य | २६ | ३ | १५ | ५५ | कौ | १४ | ३१ | ११ | १८ | ३४ | ३९ | ५ | ३० | १९ | २१ | २१ | ४ | 5 | कं. २०।१२ | २ | १८ | ४१ | २२ | १२ | १० | ३७ | २३ | ३२ | व्यतिपात पुण्यम्, कुमार षष्ठी, बुध पुनर्वसु में २५।४९, शुक्र B |
| १५ | ७ | र | ३८ | ४४ | २१ | ० | उफा | २० | १८ | १३ | ३७ | वरि | २० | २४ | १३ | ४० | ग | १० | ५२ | ९ | ५१ | ३४ | ३८ | ५ | ३० | १९ | २१ | २२ | ५ | 6 | कन्या | २ | १९ | ३८ | ३४ | १२ | ११ | ३८ | २४ | ० | भद्रा २१।०० से, विवस्वत ७, सूर्य पूजा, श्री महावीर कल्याणांक, C |
| १६ | ८ | चं | ३३ | ५२ | १९ | ३ | ह | १७ | ३७ | १२ | ३३ | परि | १४ | ४ | ११ | ८ | वि | ६ | २४ | ८ | ४ | ३४ | ३७ | ५ | ३० | १९ | २१ | २३ | ६ | 7 | तु. २३।४५ | २ | २० | ३५ | ४६ | १२ | १२ | ४० | २४ | ५ | भद्रा ८।४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा) |
| १७ | ९ | मं | २८ | १७ | १६ | ५० | चि | १४ | २२ | ११ | १२ | शि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | बा | १ | ९ | ५ | ५९ | ३४ | ३५ | ५ | ३१ | १९ | २१ | २४ | ७ | 8 | तुला | २ | २१ | ३२ | ५८ | १२ | १३ | ४४ | २४ | ३९ | **भडुली नवमी,** कन्दर्प ९, शुद्र नवमी, मेला शरीफ भवानी (का.) |
| १८ | १० | बु | २२ | ४ | १४ | २१ | स्वा | १० | ७ | ९ | ३४ | सा | ५१ | ४३ | २६ | १३ | ग | २२ | ४ | १४ | २१ | ३४ | ३४ | ५ | ३१ | १९ | २१ | २५ | ८ | 9 | वृ. २६।१३ | २ | २२ | ३० | १० | ११ | १४ | ५० | २५ | १६ | भद्रा २५।२ से, गिरिजा पूजा १०, उल्टा रथ (उड़ीसा) D |
| १९ | ११ | गु | १५ | २२ | ११ | ४१ | वि | ५ | ३१ | ७ | ४४ | शुभ | ४३ | २७ | २२ | ५५ | वि | १५ | २२ | ११ | ४१ | ३४ | ३२ | ५ | ३२ | १९ | २१ | २६ | ९ | 10 | वृश्चिक | २ | २३ | २७ | २१ | १२ | १५ | ५९ | २५ | ५६ | भद्रा ११।४१ तक, **देवशयनी एकादशी व्रत सबका,** बुध कर्क E |
| २० | १२ | शु | ८ | २३ | ८ | ५३ | अनु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शु | ३५ | ३ | १९ | ३४ | बा | ८ | २३ | ८ | ५३ | ३४ | ३० | ५ | ३२ | १९ | २० | २७ | १० | 11 | ध. २७।४७ | २ | २४ | २४ | ३३ | ११ | १७ | ९ | २६ | ४३ | **प्रदोष व्रत,** जया पार्वती व्रतारंभ, हरिवासर ५।४७ तक |
| २१ | १३ | श | १ | २० | ६ | ५ | मू | ५० | ४७ | २५ | ५२ | ब्र | २६ | ४४ | १६ | १४ | तै | १ | २० | ६ | ५ | ३४ | २९ | ५ | ३३ | १९ | २० | २८ | ११ | 12 | धनु | २ | २५ | २१ | ४४ | १२ | १८ | १७ | २७ | ३६ | भद्रा २७।२२ से, **मेला ज्वाला मुखी ( का. ),** चौमासी चौदस F |
| ० | १४ | श | ५४ | ३४ | २७ | २२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | चतुर्दशी क्षय: |
| २२ | १५ | र | ४८ | ११ | २४ | ५३ | पू.षा | ४६ | ३१ | २४ | १० | ऐं | १८ | ४३ | १३ | ३ | वि | २१ | २० | १४ | ५ | ३४ | २७ | ५ | ३३ | १९ | २० | २९ | १२ | 13 | धनु | २ | २६ | १८ | ५६ | ११ | १९ | ११ | २८ | ३७ | भद्रा १४।५ तक, **सत्यव्रत-गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा,** वायु G |

**A** रथयात्रा जगन्नाथ पुरी ( उड़ीसा ) **B** आर्द्रा में प्रवेश १०।२१, कृत्तिका २ में राहु विशाखा ४ में केतु ८।३२ **C** जैन अट्ठाई प्रा., सूर्य पुन. में प्रवेश १४।३० **D** पुनर्यात्रा बहुधा यात्रा, मन्वादि, आशा दसमी व्रत **E** में १८।१९, **चातुर्मास व्रत** नियमादि प्रारम्भ, अजमेर दादा मेला प्रा., जिनदत्त सूरी जयंती जैन **F** जैन, बुध पुष्य में प्रवेश ९।१ **G** परीक्षा सायं, मनसा पूजारंभ (बंगाल), मेला नैमिषारण्य, सन्यासियों का चातुर्मास व्रतादि, नियमादि प्रारम्भ, पूर्णिमा व्रत, पुण्य मन्वादि आषाढ़ी पूर्णिमा

आषाढ़ शु. ८ चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ७ जुलाई **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** ता. १३ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ रवि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ५ | १० | २ | ३ | २ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २० | १९ | १३ | २२ | २५ | ८ | १० | ३ | ३ | ८ | १८ | २४ |
| ३५ | ११ | ५ | २९ | २२ | ५२ | २१ | १३ | १३ | ३४ | ३७ | ० |
| ४६ | ४२ | ३७ | ३६ | १९ | ३ | १० | ४२ | ४२ | ३३ | २५ | ३७ |
| ५७ | [illegible] | १५ | [illegible] | ११ | ७२ | ७ | ३ | ३ | १ | १ | १ |
| ११ | ९ | ४० | ५१ | ५२ | २६ | ४३ | ११ | ११ | २२ | २४ | २३ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | अ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

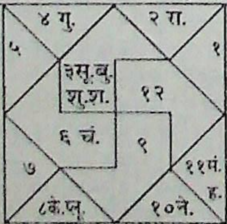


पक्षारंभ में चार ग्रहों का योग चीन, जापान, वियतनाम, रूस, तिब्बत, वर्मा आदि राष्ट्रों में भूकम्प, भूस्खलन आदि प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन हानि का योगकारक है। व्यवसायों के प्रति मनुष्यों में विशेष जागृति होकर विदेशी आयात निर्यात की भाग दौड़ का दौर चलेगा। दक्षिणी प्रान्तों में वाहन यान दुर्घटनाएं बढ़ेंगी। आतंकवादी गतिविधियों से जनता में भयवृद्धि रहेगी। **एक राशी गता होते सौम्यशुक्र दिनाधिपा: । सर्वधान्य महर्घत्वं मेघा स्वल्प जलप्रदा ॥** शुक्र गुरु के द्विर्द्वादश योग से शासकों में भय बढ़ा हुआ रहेगा। सत्तारूढ़ पार्टी में बौखलाहट होकर नवीन कानून व्यवस्था के प्रति जागरुकता बनेगी। ईंधन, पैट्रोल, डीजल तेल आदि के प्रति शासकीय दल चिन्तित रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**—मूंग, मोंठ, गेहूं, जौ, चावल में पक्षारंभ में तेजी रहकर बाद में मन्दी होवे। चन्द्रदर्शन मु. ३० से तिल, मूंगफली, सोयाबीन व तुरई तेलों व वेजीटेबल में तेजी कारक है। **शशिसुते पुनर्वसौकार्पासे सूत्र मन्दता। जनेषु सर्व सुयोग: पुष्ये राज्ञां भयं जन: ॥** अत: वस्त्रों, रुई, कपास आदि धागे से निर्मित वस्तुओं में मन्दी चलेगी। पक्ष मध्य से शेयर बाजार भावों में अस्थिरता होकर गिरावट होगी। लोहा, सोना, तांबा, चांदी में मन्दा का रुख होगा। **आकाश लक्षण**— बादल चाल रहकर भी वर्षा की खेंच रहेगी। तापमान की वृद्धि होगी। सूर्य शनि का योग पक्ष में वर्षा रुकावट फलप्रद है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, उड़ीसा के पूर्वी क्षेत्र, बंगाल व आसाम में वर्षा तथा राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, मध्य प्रदेशादि में वर्षावरोध रहेगा। गुजरात, हिमाचल प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश व उत्तरी पूर्वी महाराष्ट्र में सामान्य वर्षा होगी। **शकुन विचार**— आषाढ़ सुदी नवमी के दिन बादल दर्शन अथवा वर्षा लक्षण न बनने पर फसलों के उत्पादन (उपज) में संशय प्राय: होता है व मंहगाई बढ़ती है। **आषाढ़ नवमी दिनानां बादल ना बीज। हल फाड़ ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥**

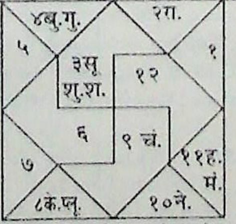


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | ८ | १० | ३ | ३ | २ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २६ | १५ | १४ | ५ | २६ | १६ | ११ | २ | २ | ८ | १८ | २३ |
| १८ | ३० | ३० | ४ | २४ | १२ | ७ | ५४ | ५४ | २५ | २८ | ५२ |
| ५६ | १४ | २७ | २० | १७ | ५६ | १४ | ३६ | ३६ | ४७ | ४८ | ३६ |
| ५७ | [illegible] | ११ | ११० | १२ | ७३ | ७ | ३ | ३ | १ | १ | १ |
| ११ | ३८ | ५५ | ३८ | १० | ३२ | ३६ | ११ | ११ | ३५ | २९ | १६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | अ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# श्रावण कृष्ण पक्ष-८ श्री सं. २०६० शाके १९२५

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आ. २३ | १ | चं | ४२ | ५९ | २२ | ४६ | उ.षा | ४३ | ९ | २२ | ४९ | वै | ११ | १९ | १० | ५ | बा | १५ | ३१ | ११ | ४६ | ३४ | २५ | ५ | ३४ | १९ | २० | ३० | १३ | 14 |
| २४ | २ | मं | ३८ | ५५ | २१ | ८ | श्र | ४१ | १ | २१ | ५९ | वि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | तै | १० | ४६ | ९ | ५३ | ३४ | २३ | ५ | ३४ | १९ | १९ | ३१ | १४ | 15 |
| २५ | ३ | बु | ३६ | २४ | २० | ८ | ध | ४० | २८ | २१ | ४६ | आ | ५५ | १७ | २७ | ४२ | व | ७ | २६ | ८ | ३३ | ३४ | २१ | ५ | ३५ | १९ | १९ | श्रा. | १५ | 16 |
| २६ | ४ | गु | ३५ | ४० | १९ | ५१ | शत | ४१ | ४१ | २२ | १६ | सौ | ५२ | ४१ | २६ | ४० | ब | ५ | ४७ | ७ | ५४ | ३४ | १९ | ५ | ३५ | १९ | १९ | २ | १६ | 17 |
| २७ | ५ | शु | ३६ | ५२ | २० | २१ | पू.भा | ४४ | ४७ | २३ | ३० | शो | ५१ | ३५ | २६ | १४ | को | ६ | १ | ८ | ० | ३४ | १६ | ५ | ३६ | १९ | १८ | ३ | १७ | 18 |
| २८ | ६ | श | ३९ | ५४ | २१ | ३४ | उ.भा | ४९ | ३९ | २५ | २८ | अ | ५१ | ५४ | २६ | २२ | ग | ८ | ९ | ८ | ५२ | ३४ | १४ | ५ | ३६ | १९ | १८ | ४ | १८ | 19 |
| २९ | ७ | र | ४४ | ३२ | २३ | २६ | रे | ५६ | ० | २८ | १ | सु | ५३ | २३ | २६ | ५८ | वि | १२ | २ | १० | २६ | ३४ | १२ | ५ | ३७ | १९ | १८ | ५ | १९ | 20 |
| ३० | ८ | चं | ५० | १९ | २५ | ४५ | अ | ६० | ० | — | — | धृ | ५५ | ४१ | २७ | ५४ | बा | १७ | १८ | १२ | ३३ | ३४ | ९ | ५ | ३७ | १९ | १७ | ६ | २० | 21 |
| ३१ | ९ | मं | ५६ | ३८ | २८ | १७ | अ | ३ | २१ | ६ | ५८ | शू | ५८ | २२ | २८ | ५९ | तै | २३ | २६ | १५ | ० | ३४ | ४ | ५ | ३८ | १९ | १७ | ७ | २१ | 22 |
| श्रा | १० | बु | ६० | ० | — | — | भ | ११ | ६ | १० | ५ | गं | ६० | ० | — | — | व | २९ | ४६ | १७ | ३० | ३४ | ४ | ५ | ३९ | १९ | १६ | ८ | २२ | 23 |
| २ | १० | गु | २ | ४९ | ६ | ४७ | कृ. | १८ | ३७ | १३ | ६ | गं | ० | ५४ | ६ | १ | वि | २ | ४९ | ६ | ४७ | ३४ | २ | ५ | ३९ | १९ | १६ | ९ | २३ | 24 |
| ३ | ११ | शु | ८ | १८ | ८ | ५९ | रो | २५ | १९ | १५ | ४७ | वृ | २ | ५७ | ६ | ५० | बा | ८ | १८ | ८ | ५९ | ३३ | ५९ | ५ | ४० | १९ | १५ | १० | २४ | 25 |
| ४ | १२ | श | १२ | ३९ | १० | ४४ | मृ | ३० | ५० | १८ | ० | ध्रु | ४ | ७ | ७ | १९ | तै | १२ | ३९ | १० | ४४ | ३३ | ५६ | ५ | ४० | १९ | १५ | ११ | २५ | 26 |
| ५ | १३ | र | १५ | ३२ | ११ | ५४ | आ | ३४ | ५३ | १९ | ३८ | व्या | ४ | ११ | ७ | २१ | व | १५ | ३२ | ११ | ५४ | ३३ | ५३ | ५ | ४१ | १९ | १४ | १२ | २६ | 27 |
| ६ | १४ | चं | १६ | ५४ | १२ | २७ | पुन | ३७ | २८ | २० | ४० | ह | ३ | ४ | ६ | ५५ | श | १६ | ५४ | १२ | २७ | ३३ | ५१ | ५ | ४१ | १९ | १४ | १३ | २७ | 28 |
| ७ | ३० | मं | १६ | ४६ | १२ | २४ | पु | ३८ | ३७ | २१ | ९ | व | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ना | १६ | ४६ | १२ | २४ | ३३ | ४८ | ५ | ४२ | १९ | १३ | १४ | २८ | 29 |

| अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | [illegible] | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | ता. १४ से २९ जुलाई सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २३ आषाढ़ से ७ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु। निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है। |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | म. ५।४७ | २ | २७ | १६ | ७ | [illegible] | २० | १४ | ५ | ४२ | श्रावण सोमवार व्रत, शनि पूर्व में उदय १९।२४, आश्लेषा ४ में A |
| 15 | मकर | २ | २८ | १३ | १९ | १३ | २१ | ० | ६ | ४८ | अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल), मंगला गौरी पूजन A गुरु १३।२६ |
| 16 | कुं. ९।४७ | २ | २९ | १० | ३२ | १३ | २१ | ४० | ७ | ५३ | भद्रा ८।३३ से २०।८ तक, **पंचक प्रारम्भ** ९।४७ से, शुक्र पुन. B |
| 17 | कुंभ | ३ | ० | ७ | ४५ | १३ | २२ | १५ | ८ | ५५ | **कृष्ण चतुर्थी व्रत**, संक्रांति पुण्य |
| 18 | मी. १३।८ | ३ | १ | ४ | ५८ | १४ | २२ | ४६ | ९ | ५३ | **नाग पंचमी** (मरुस्थल व बंगाल में), बुध पश्चिम में उदय २५।९, C |
| 19 | मीन | ३ | २ | २ | १२ | १५ | २३ | १५ | १० | ४८ | भद्रा २१।३४ से **पूर्वास्त शुक्र २६ जुलाई** |
| 20 | मे. २८।१९ | ३ | २ | ५९ | २७ | १५ | २३ | ४१ | ११ | ४१ | भद्रा १०।२६ तक, **पंचक समा.** २८।१, सूर्य पुष्य में प्रवेश १४।७ |
| 21 | मेष | ३ | ३ | ५६ | ४२ | १७ | २४ | ० | १२ | ३४ | **कालाष्टमी, श्रावण सोमवार व्रत** |
| 22 | मेष | ३ | ४ | ५३ | ५९ | १७ | २४ | १२ | १३ | २७ | मंगला गौरी पूजन, गुरु हरिकिशन जयंती, केर पूजा (त्रिपुरा) |
| 23 | वृ. १६।५१ | ३ | ५ | ५१ | १६ | १७ | २४ | ४२ | १४ | २० | भद्रा १७।३० से, सायन सूर्य सिंह में ११।५४, रा. श्रावण मासारंभ, D |
| 24 | वृष | ३ | ६ | ४८ | ३३ | १९ | २५ | १६ | १५ | १५ | भद्रा ६।४७ तक, दशमी वृद्धि, **कामदा एकादशी व्रत स्मार्त**, E |
| 25 | मि. २८।५८ | ३ | ७ | ४५ | ५२ | १९ | २५ | ५४ | १६ | १२ | **कामदा एकादशी व्रत वैष्णव** E शुक्र कर्क में प्रवेश ११।१ |
| 26 | मिथुन | ३ | ८ | ४३ | ११ | २१ | २६ | ३८ | १७ | ८ | **शनि प्रदोष**, बुध मघा सिंह में २१।४६, शुक्र पुष्य में २८।४, F |
| 27 | मिथुन | ३ | ९ | ४० | ३२ | २१ | २७ | २७ | १८ | २ | भद्रा ११।५४ से २४।१५ तक, **मास शिवरात्री व्रत** |
| 28 | क. १४।२८ | ३ | १० | ३७ | ५३ | २२ | २८ | २३ | १८ | ५४ | **श्रावण सोमवार व्रत** |
| 29 | कर्क | ३ | ११ | ३५ | १५ | २२ | २९ | २३ | १९ | ४० | **देवपितृकार्य ३०, हरियाली अमा.,** सरस माधुरी ज., चितलगी, G |

B में ७।३६, सूर्य कर्क में प्र. २६।१५ मु. १५ वैठी, **सौर श्रावण मासारम्भ** C बुध आश्लेषा में प्र. २९।५ D लोकमान्य तिलक जयंती F बुध मघा सिंह में २१।४६, **शुक्र पूर्व में अस्त** २७।१७ G मंगला गौरी पूजन, मंगल वक्री १२।३३

**श्रावण कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २१ जुलाई** **[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]** **ता. २९ जुलाई ❖ श्रावण कृष्ण ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ० | १० | ३ | ३ | २ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ३ | ० | १५ | २० | २८ | २६ | १२ | २ | २ | ८ | १८ | २३ |
| ५६ | ४३ | ४६ | २० | २ | १ | ७ | २९ | २९ | १२ | १६ | ४२ |
| ४२ | २२ | १६ | ८ | ४९ | ५० | ३२ | १० | १० | ७ | ३५ | ५९ |
| ५७ | [illegible] | ६ | १०६ | १२ | ७३ | ७ | ३ | ३ | १ | १ | १ |
| १७ | १९ | १२ | २१ | ३० | ४२ | २६ | ११ | ११ | ५१ | ३४ | ६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| पुष्य | अश्वि. | [illegible] | [illegible] | [illegible] | पुन. | आर्द्रा | [illegible] | विशा. | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

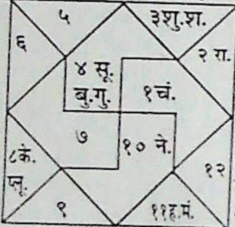


मास में पांच सोमवार व पांच मंगलवार मिश्रित फलकारक है। पूर्वी प्रान्तों व राष्ट्रों में भूकम्प व भूमि स्खलन, अति वृष्टि, तूफानादि प्राकृतिक आपदा विशेष प्रायः रहेगी। बर्मा, जापान, चीन, तिब्बत व भूटानादि देशों में पर्वत विखण्डनकारी योगप्रद है। पक्षान्त में गुरु शुक्र एक राशि पर होना नेप्टफल प्रद है। यथा— **गुरुशुक्रौ यदैकस्थो नरयुद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥** पाश्चात्य देशों में शासकों में आपसी तनाव बढ़ेगा। जिससे युद्धादिक संभावनाओं का जनता में भय रहेगा। देश के राजनेताओं में पद लोलुपता बढ़कर जनता को साम्प्रदायिक व धार्मिक उदंगल हेतु प्रोत्साहित कर स्वकीय स्वार्थ की पूर्ति में अग्रगणी होंगे। मध्य भाग में बारूद विस्फोट, अग्निकाण्ड तथा कई क्षेत्रों में अनावश्यक अपवाद से जन हानि संभव है। तेजी मन्दी विचार—शनि का उदय, रुई, कपास, सूती वस्त्रों में मन्दी। लोहा सामान, चाय, कॉफी, अफीम, तम्बाकू, रेशमी वस्त्रों में तेजी कारक है।

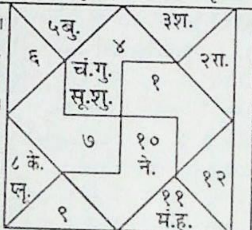


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १० | ४ | ३ | ३ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ११ | ८ | १६ | ३ | २९ | ५ | १३ | २ | २ | ७ | १८ | २३ |
| ३५ | ५ | १३ | ४० | ४३ | ५२ | ६ | ३ | ३ | ५६ | ३ | ३४ |
| १५ | ३९ | ४९ | ३३ | ४९ | ६ | ६ | ४४ | ४४ | २९ | ४८ | ४७ |
| ५७ | [illegible] | ० | ९१ | १२ | ७३ | ७ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| २२ | २२ | ९ | ५८ | ४५ | ५३ | ११ | ११ | ११ | ५ | ३७ | ५४ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | उ | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| पुष्य | पुष्य | [illegible] | मघा | [illegible] | पुष्य | आर्द्रा | [illegible] | विशा. | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

कृ. ५ बुधोदय से चावल, चना, मूंग, मोंठ, बाजरा, जौ, ज्वार में मन्दी और घी, सभी तेलों तथा गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थ तेज होंगे। **सिंह राशि बुधः स्याच्चेत् सर्वधान्य महर्घता। सुवर्ण देव दारुश्च महर्घ प्रभवेत्तदा॥** कृ. १२ बाद सिंहे बुध से सोना, चांदी, चन्दन तथा धान्य भावों और शेयर बाजारों में तेजी रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्षारंभ से हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, पंजाब, गुजरात, उ.प्र. में वर्षा सामान्य होगी। गुजरात, महाराष्ट्र, म.प्र. व आंध्र प्रदेश में वायु वेग के साथ वर्षा उत्तम होगी। आसाम, बंगाल, बिहार, तमिलनाडु, कर्नाटका में अतिवृष्टि से बाढ़, तूफानी हवायें तेज रहेंगी। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश आदि क्षेत्रों में भूस्खलन से हानि संभव है। **शकुन विचार**— श्रावण वदी ४ को यदि वर्षा हो तो उस वर्ष फसलों की उपज श्रेष्ठ हो कर सभी वस्तुएं सस्ती होती हैं। यथा—**श्रावण पहली चौथ में जो मेघा बरसाय। तो भाषे यों भड्डली साल सवाई जाय॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

वदि ४ को यदि वर्षा हो तो उस वर्ष फसलों की उपज श्रेष्ठ हो कर सभी वस्तुएं सस्ती होती हैं। … हिमाचल प्रदेश आदि क्षेत्रों में भूस्खलन से हानि संभव है। शकुन विचार— श्रावण … सवाई जाय॥



# श्रावण शुक्ल पक्ष-९ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ३० जुलाई से १२ अगस्त सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २१ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | | चन्द्रोदय दिल्ली घं. | मि. | चन्द्रास्त घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्रा. ८ | १ | बु | १५ | २० | ११ | ५० | श्ले | ३८ | ३४ | २१ | ८ | व्य | ५३ | ३ | २६ | ५६ | ब | १५ | २० | ११ | ५० | ३३ | ४५ | ५ | ४२ | १९ | १२ | १५ | २९ | 30 | सिं. [illegible] | ३ | १२ | ३२ | ३७ | २४ | ६ | २५ | २० | २२ |
| ९ | २ | गु | १२ | ४७ | १० | ५० | म | ३७ | ३० | २० | ४३ | वरि | ४७ | ५७ | २४ | ५४ | कौ | १२ | ४७ | १० | ५० | ३३ | ४२ | ५ | ४३ | १९ | १२ | १६ | " | 31 | सिंह | ३ | १३ | ३० | १ | २४ | ७ | २८ | २१ | ० |
| १० | ३ | शु | ९ | २२ | ९ | २९ | पूफा | ३५ | ३९ | १९ | ५९ | परि | ४२ | १४ | २२ | ३७ | ग | ९ | २२ | ९ | २९ | ३३ | ३९ | ५ | ४४ | १९ | ११ | १७ | २ | A1 | कं. [illegible] | ३ | १४ | २७ | २५ | २४ | ८ | ३१ | २१ | ३५ |
| ११ | ४ | श | ५ | १८ | ७ | ५१ | उफा | ३३ | १५ | १९ | २ | शि | ३६ | ५ | २० | १० | वि | ५ | १८ | ७ | ५१ | ३३ | ३५ | ५ | ४४ | १९ | १० | १८ | ३ | 2 | कन्या | ३ | १५ | २४ | ४९ | २६ | ९ | ३३ | २२ | ८ |
| १२ | ५ | र | ० | ४४ | ६ | २ | ह | ३० | २६ | १७ | ५५ | सि | २९ | ३६ | १७ | ३५ | बा | ० | ४४ | ६ | २ | ३३ | ३२ | ५ | ४५ | १९ | १० | १९ | ४ | 3 | तु. [illegible] | ३ | १६ | २२ | १५ | २६ | १० | ३५ | २२ | ४२ |
| ० | ६ | र | ५५ | ५२ | २८ | ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ० ० ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| १३ | ७ | चं | ५० | ४३ | २६ | २ | चि | २७ | २० | १६ | ४१ | सा | २२ | ५३ | १४ | ५४ | ग | २३ | १८ | १५ | ५ | ३३ | २९ | ५ | ४५ | १९ | ९ | २० | ५ | 4 | तुला | ३ | १७ | १९ | ४१ | २६ | ११ | ३७ | २३ | १७ |
| १४ | ८ | मं | ४५ | २४ | २३ | ५५ | स्वा | २४ | २ | १५ | २३ | शुभ | १५ | ५९ | १२ | ९ | वि | १८ | ४ | १२ | ५९ | ३३ | २६ | ५ | ४६ | १९ | ८ | २१ | ६ | 5 | तुला | ३ | १८ | १७ | ७ | २८ | १२ | ४२ | २३ | ५५ |
| १५ | ९ | बु | ३९ | ५७ | २१ | ४५ | वि | २० | ३५ | १४ | ० | शु | ८ | ५८ | ९ | २२ | बा | १२ | ४० | १० | ५० | ३३ | २२ | ५ | ४६ | १९ | ७ | २२ | ७ | 6 | वृ. ८।०१ | ३ | १९ | १४ | ३५ | २८ | १३ | ४९ | २४ | ० |
| १६ | १० | गु | ३४ | २७ | १९ | ३४ | अनु | १७ | ३ | १२ | ३६ | ब्र | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | तै | ७ | ११ | ८ | ३९ | ३३ | १९ | ५ | ४७ | १९ | ६ | २३ | ८ | 7 | वृश्चिक | ३ | २० | १२ | ३ | २८ | १४ | ५६ | २४ | ३८ |
| १७ | ११ | शु | २८ | ५९ | १७ | २३ | ज्ये | १३ | ३२ | ११ | १२ | वै | ४७ | ४४ | २४ | ५३ | व | १ | ४१ | ६ | २८ | ३३ | १६ | ५ | ४७ | १९ | ६ | २४ | ९ | 8 | ध. ११।१२ | ३ | २१ | ९ | ३१ | ३० | १६ | ३ | २५ | २७ |
| १८ | १२ | श | २३ | ४३ | १५ | १७ | मू | १० | ९ | ९ | ५२ | वि | ४० | ५४ | २२ | ९ | बा | २३ | ४३ | १५ | १७ | ३३ | १२ | ५ | ४८ | १९ | ५ | २५ | १० | 9 | धनु | ३ | २२ | ७ | १ | ३० | १७ | ७ | २६ | २४ |
| १९ | १३ | र | १८ | ५० | १३ | २१ | पू.षा | ७ | ६ | ८ | ३९ | प्री | ३४ | २६ | १९ | ३५ | तै | १८ | ५० | १३ | २६ | ३३ | ९ | ५ | ४९ | १९ | ४ | २६ | ११ | 10 | म. १४।१३ | ३ | २३ | ४ | ३१ | ३१ | १८ | ३ | २७ | २६ |
| २० | १४ | चं | १४ | ३६ | ११ | ३९ | उ.षा | ४ | ३८ | ७ | ४० | आ | २८ | ३३ | १७ | १४ | व | १४ | ३६ | ११ | ३९ | ३३ | ५ | ५ | ४९ | १९ | ३ | २७ | १२ | 11 | मकर | ३ | २४ | २ | २ | ३३ | १८ | ५३ | २८ | ३१ |
| २१ | १५ | मं | ११ | १६ | १० | २० | श्र | ३ | १ | ७ | २ | सौ | २३ | २७ | १५ | १३ | ब | ११ | १६ | १० | २० | ३३ | २ | ५ | ५० | १९ | २ | २८ | १३ | 12 | कुं. १८।१३ | ३ | २४ | ५९ | ३५ | ३३ | १९ | ३५ | २९ | ३६ |

- 30: चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घता, व्यतिपात पुण्यम्, नक्त व्रतारंभ, सोमेश्वर A
- 31: जमादि-उस्सानी मु. मास. ६ प्रा., सिंधारा
- 1: भद्रा २० ।४२ से, मधुश्रवा ( छोटी ) तीज, हरियाली ३, लोकमान्य B
- 2: भद्रा ७ ।५१ तक, नाग पंचमी देशाचारे, तक्षक भित्ति चित्रित C
- 3: सूर्य आश्लेषा में १२ ।५६, अश्वत्थ मारुति ६, कल्कि जयंती, D
- 0: षष्ठी क्षय: F नयना देवी व चिंतपूर्णी हि.प्र.
- 4: भद्रा २६ ।२ से, बुध पू.फा. में २१ ।५०, गोस्वामी तुलसीदास E
- 5: भद्रा १२ ।५९ तक, श्री दुर्गाष्टमी, मंगला गौरी पूजन, मेला F
- 6: शुक्र आश्लेषा में प्र. २३ ।४८
- 7: **पश्चिमास्त गुरु ९ अगस्त**
- 8: भद्रा ६ ।२८ से १७ ।२३ तक, पवित्रा एकादशी व्रत सबका
- 9: शनि प्रदोष व्रत, गुरु अस्त पश्चिम में १२ ।३७
- 10: G सोमवार व्रत
- 11: भद्रा ११ ।३९ से २२ ।५६ तक, सत्यव्रत-पूर्णिमा व्रत, श्रावण G
- 12: पंचक प्रा. १८ ।५३ से, श्री गायत्री ज., पूर्णिमा पुण्य, श्रावणी H

A पूजा, मघा १ सिंह में गुरु ११ ।५६, आर्द्रा ३ में शनि २९ ।२९ B तिलक पुण्यम्, विनायक ४ व्रत, दूर्वा गणपति व्रत, अगस्त मास ८ ता. ३१ C नाग पूजन, अमरनाथ यात्रा, जीवंतिका पूजन D वर्ण भृयाल ६ E जयंती, शीतला पूजन सिंध, भानु सप्तमी, श्रावण सोमवार व्रत H उपाकर्म, रक्षाबन्धन, अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), झूलन यात्रा समापन, श्रावणी पूर्णिमा, मंगलागौरी पूजन

## श्रावण शु. ८ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ५ अगस्त [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं।] ता. १२ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. ५ अगस्त:

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ६ | १० | ४ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| १८ | १४ | १५ | १३ | १ | १४ | १३ | १ | १ | ७ | १७ | २३ |
| १७ | १० | ५६ | ४५ | १३ | २९ | ५५ | ४१ | ४१ | ४१ | ५२ | २८ |
| ७ | २८ | ८ | ३९ | ४१ | ३५ | २८ | २८ | २८ | २९ | २३ | ५७ |
| ५७ | ८६३ | ५ | ७८ | १२ | ७४ | ६ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| २८ | ४० | ३७ | ४९ | ५५ | ० | ५४ | ११ | ११ | १४ | ३८ | ४३ |
| मा | मा | व | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | अ | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

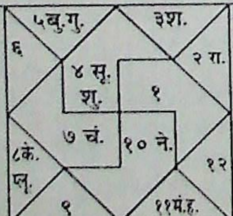


गुरु मंगल का सम सप्तक योग तथा गुरु पर शनि की दृष्टि होना मुस्लिम राष्ट्रों—अरब, ईरान, ईराक तथा पाकिस्तान, अफगानिस्तान राष्ट्रों में शासकों के आपसी मतान्तर बनकर विग्रह बढ़ेगा। सिंह राशि में गुर्वास्त होना भी शास्त्रों में राजकीयादि उपद्रवकारी लिखा है। यथा—**सिंह गुरो अस्तं याति नृप युद्धं तथा भवेत्। लोकं धनादि नाशं च भविष्यति न संशयः॥** कहीं किसी शासक का निधन अथवा पद परिवर्तन होगा। यथा—**यत्र मासे महीसूंनो जायन्ते पंचवासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** पश्चिमोत्तर प्रान्तों में नवीन क्रान्ति का उदय होकर जन उपद्रव से शासकों में भय की वृद्धि होगी। विपक्ष बल सबल होगा। पर्वतीय प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोपों से जनधन की क्षति होने के योग हैं। **तेजी मन्दी विचार**—बुधवार को चन्द्रदर्शन मु. १५ से गेहूं, जौ, चना, चावल, ज्वार, गुवार, मूंग, मोंठ में तेजी रहेगी। सिंह का गुरु पीली वस्तुओं में तथा चौपायों में तेजी प्रद है। गुड़, शक्कर, चीनी आदि रस पदार्थों में मन्दी होगी। कृ. ७ पू.षा. में बुध से शेयर भावों, सूती वस्त्रों, रुई, कपास व बारदाना में मन्दी रहेगी। **चन्द्रसुतो पूफायदि क्षेत्रबाधान्नमन्दता।** के अनुसार पक्षान्त में धान्यों में मन्दी होवे। **आकाश लक्षण**—पक्ष में दक्षिणी पूर्वी प्रान्तों में तूफानी हवाओं के साथ अति वर्षण से हानि होगी। राजस्थान, गुजरात, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब आदि प्रान्तों में उत्तम वर्षा कारी फल योग है। **यदा सिंहे गुरुश्चैव सुभिक्षं तत्र जायते। मेघाश्च प्रबलास्तत्र बहुसस्या च मेदिनी॥** अतः प्रायः सभी प्रान्तों में मध्यम वर्षा होगी। **शकुन विचार**—श्रावण सुदी ५ को वर्षा हो तथा वायु वेग हो तो धान्य की उपज में कमी रहती है तथा मंहगाई बढ़ती है। यथा—**श्रावण उजली पंचमी जो बिरखा दरशाय। ताप्र जु सूखे मेह नहीं तृण अन्न तेज बिकाय॥** श्रावण की पूर्णिमा को वर्षा होना उत्तम फसल उपज फलप्रद होती है।

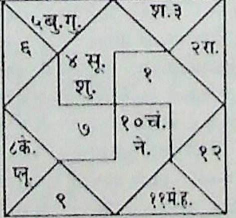


ता. १२ अगस्त:

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ९ | १० | ४ | ४ | ३ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २४ | २२ | १५ | २२ | २ | २३ | १४ | १ | १ | ७ | १७ | २३ |
| ५९ | २६ | १ | १२ | ४४ | ७ | ४२ | १९ | १९ | २५ | ४० | २४ |
| ३५ | ५८ | ५१ | ५० | ३० | ५२ | ४२ | १३ | १३ | ३५ | ५९ | २९ |
| ५७ | ८०७ | १० | ६३ | १३ | ७४ | ६ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| २३ | ११ | २७ | १५ | २ | ७ | ३३ | ११ | ११ | १९ | ३७ | ३१ |
| मा | मा | व | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | अ | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# भाद्रपद कृष्ण पक्ष-१० श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. १३ से २७ अगस्त सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २२ श्रावण से ५ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा-शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| ता. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | रवि स्पष्ट (५ घं. ३० मि.) रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदय (दिल्ली) घं. | मि. | चन्द्रास्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| श्रा.२२ | १ | बु | ९ | ७ | ९ | २९ | ध | २ | ३२ | ६ | ५१ | शो | १९ | २२ | १३ | ३५ | कौ | १ | ७ | ९ | २९ | ३२ | ५८ | ५ | ५० | १९ | १ | २९ | १४ | 13 | कुंभ | ३ | २५ | ५७ | ८ | कृ. | २० | ११ | ६ | ३९ | अशून्य शयन २ व्रत, मनसा पूजा समाप्ति (बंगाल) |
| २३ | २ | गु | ८ | २५ | ९ | १३ | शत | ३ | २७ | ७ | १४ | अति | १६ | २७ | १२ | २६ | ग | ८ | २५ | ९ | १३ | ३२ | ५४ | ५ | ५१ | १९ | १ | ३० | १५ | 14 | मी. २५।०६ | ३ | २६ | ५४ | ४३ | ३६ | २० | ४४ | ७ | ३९ | भद्रा २१।१९ से, सिंधारा, मघा २ में गुरु २३।४९ |
| २४ | ३ | शु | ९ | २१ | ९ | ३६ | पूभा | ५ | ५८ | ८ | १४ | सु | १४ | ५१ | ११ | ४८ | वि | ९ | २१ | ९ | ३६ | ३२ | ५१ | ५ | ५१ | १९ | ० | ३१ | १६ | 15 | मीन | ३ | २७ | ५२ | १९ | ३७ | २१ | १४ | ८ | ३६ | भद्रा ९।३६ तक, भारतीय स्वतंत्रता दिवस, कृष्ण चतुर्थी व्रत, A |
| २५ | ४ | श | ११ | ५९ | १० | ३९ | उभा | १० | ७ | ९ | ५५ | धृ | १४ | ३३ | ११ | ४१ | बा | ११ | ५९ | १० | ३९ | ३२ | ४७ | ५ | ५२ | १८ | ५९ | ३२ | १७ | 16 | मीन | ३ | २८ | ४९ | ५६ | ३९ | २१ | ४३ | ९ | ३१ | रक्षा पंचमी, अश्वत्थ मारुति पूजा, बुध उ.फा. में १९।११ |
| २६ | ५ | र | १६ | ११ | १२ | २१ | रे | १५ | ४८ | १२ | १२ | शू | १५ | २८ | १२ | ४ | तै | १६ | ११ | १२ | २१ | ३२ | ४३ | ५ | ५२ | १८ | ५८ | भा.१ | १८ | 17 | मे. १२।१२ | ३ | २९ | ४७ | ३५ | ४० | २२ | ११ | १० | २५ | पंचक समा. १२।१२, चन्द्र षष्ठी, उभी छठ, श्री माधव देव तिथि B |
| २७ | ६ | चं | २१ | ३९ | १४ | ३३ | अ | २२ | ४२ | १४ | ५८ | गं | १७ | २१ | १२ | ४९ | व | २१ | ३९ | १४ | ३३ | ३२ | ४० | ५ | ५३ | १८ | ५७ | २ | १९ | 18 | मेष | ४ | ० | ४५ | १५ | ४२ | २२ | ४१ | ११ | १८ | भद्रा १४।३३ से २७।४६ तक, हल षष्ठी, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत |
| २८ | ७ | मं | २७ | ५३ | १७ | ३ | भ | ३० | २९ | १८ | १ | वृ | १९ | ५१ | १३ | ५० | ब | २७ | ५३ | १७ | ३ | ३२ | ३६ | ५ | ५३ | १८ | ५६ | ३ | २० | 19 | वृ. २८।४८ | ४ | १ | ४२ | ५७ | ४४ | २३ | १४ | १२ | ११ | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त, मेला द्रोण दनकौर (उ.प्र.), C |
| २९ | ८ | बु | ३४ | १४ | १९ | ३६ | कृ | ३८ | १ | २१ | ६ | धु | २२ | २९ | १४ | ५३ | बा | १ | ५ | ६ | २० | ३२ | ३२ | ५ | ५४ | १८ | ५५ | ४ | २१ | 20 | वृष | ४ | २ | ४० | ४१ | ४५ | २३ | ५० | १३ | ६ | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव, दुर्वाष्टमी व्रत |
| ३० | ९ | गु | ४० | २ | २१ | ५५ | रो | ४५ | ९ | २३ | ५८ | व्या | २४ | ४७ | १५ | ४९ | तै | ७ | १४ | ८ | ४८ | ३२ | २८ | ५ | ५४ | १८ | ५४ | ५ | २२ | 21 | वृष | ४ | ३ | ३८ | २६ | ४६ | २४ | ० | १४ | १ | गोगा नवमी, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), बुध कन्या में ७।६ |
| ३१ | १० | शु | ४४ | ४० | २३ | ४७ | मृ | ५१ | ८ | २६ | २२ | ह | २६ | १७ | १६ | २६ | व | १२ | ३० | १० | ५५ | ३२ | २४ | ५ | ५५ | १८ | ५३ | ६ | २३ | 22 | मि. १३।१४ | ४ | ४ | ३६ | १२ | ४९ | २४ | ३१ | १४ | ५७ | भद्रा १०।५५ से २३।४७ तक |
| भा.१ | ११ | श | ४७ | ४३ | २५ | १ | आ | ५५ | ३३ | २८ | ९ | व | २६ | ३२ | १६ | ३५ | ब | १६ | २४ | १२ | २९ | ३२ | २० | ५ | ५६ | १८ | ५२ | ७ | २४ | 23 | मिथुन | ४ | ५ | ३४ | १ | ५० | २५ | १७ | १५ | ५२ | अजा एकादशी व्रत सबका, सायन कन्या में सूर्य १०।५८, D |
| २ | १२ | र | ४८ | ५८ | २५ | ३१ | पुन | ५८ | १२ | २९ | १३ | सि | २५ | ३९ | १६ | १२ | कौ | १८ | ३४ | १३ | २२ | ३२ | १६ | ५ | ५६ | १८ | ५१ | ८ | २५ | 24 | क. २३।१२ | ४ | ६ | ३१ | ५१ | ५१ | २६ | १० | १६ | ४५ | वत्स द्वादशी, महा द्वादशी व्रत, जैन पर्युषण पर्वारंभ, अश्वत्थमारुति पूजन |
| ३ | १३ | चं | ४८ | २४ | २५ | १८ | पु | ५९ | ५ | २९ | ३५ | व्य | २३ | १३ | १५ | १४ | ग | १८ | ५४ | १३ | ३० | ३२ | १३ | ५ | ५७ | १८ | ५० | ९ | २६ | 25 | कर्क | ४ | ७ | २९ | ४२ | ५४ | २७ | ८ | १७ | ३३ | भद्रा २५।१८ से, सोम प्रदोष, कैलाश यात्रा २ दिन, व्यतिपात पुण्यम् |
| ४ | १४ | मं | ४६ | १० | २४ | २५ | श्ले | ५८ | २२ | २९ | १८ | वरि | १९ | २४ | १३ | ४३ | वि | १७ | २८ | १२ | ५६ | ३२ | ९ | ५ | ५७ | १८ | ४९ | १० | २७ | 26 | सिं. २९।१८ | ४ | ८ | २७ | ३६ | ५५ | २८ | १० | १८ | १७ | भद्रा १२।५६ तक, मास शिवरात्रि, अघोरा १४ |
| ५ | ३० | बु | ४२ | ३१ | २२ | ५८ | म | ५६ | १८ | २८ | २९ | परि | १४ | १९ | ११ | ४१ | च | १४ | २९ | ११ | ४५ | ३२ | ५ | ५ | ५८ | १८ | ४७ | ११ | २८ | 27 | सिंह | ४ | ९ | २५ | ३१ | ५६ | २९ | १४ | १८ | ५७ | देवपितृकार्य अमावस्या, कुशोत्पाटनी ३० (ॐ हुं फट स्वाहा) E |

A कज्जली तीज, सातूड़ी तीज, बहुला ४ व्रत, जीवंतिका पूजन B (आसाम), सूर्य मघा सिंह में प्र. १०।४१, शुक्र मघा सिंह में १८।५४, संक्रांति पुण्य मु. ३० सूती C संत ज्ञानेश्वर जयंती, कालाष्टमी D शरद ऋतु प्रा., राष्ट्रीय भाद्रपद मासारंभ E मंत्र से, पिठौरी ३०, सती पूजन-मन्वादि अग्रज वंशे कल्पसूत्र पाठ जैन, मेला सुथरेशाह दिल्ली, वृषभोत्वस

**भाद्रपद कृ. ८ बुध प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० अग.** [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] **ता. २७ अगस्त ❖ भाद्रपद कृ. ३० बुध प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १ | १० | ४ | ४ | ४ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| २ | २ | १३ | २९ | ४ | ३ | १५ | ० | ० | ७ | १७ | २३ |
| ४० | १७ | २२ | १९ | २८ | १ | ३३ | ५३ | ५३ | ६ | २८ | २१ |
| ४१ | ५५ | ३८ | २ | ५२ | १५ | ३६ | ४७ | ४७ | ४३ | १४ | ९ |
| ५७ | ७० | १४ | ३८ | १३ | ७४ | ६ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| ४५ | ७ | ३२ | ३२ | ५ | १५ | ६ | ११ | ११ | २३ | ३४ | १६ |
| मा | मा | व | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | उ | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| १ | १ | ३ | १ | १ | १ | ३ | १ | ४ | १ | ३ | ३ |
| मघा | कृत्ति. | हस्त | उ.फा. | मघा | मघा | आर्द्रा | कृत्ति. | विशा. | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

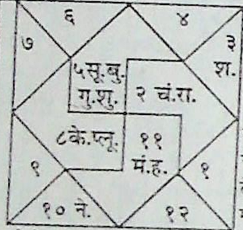


सिंह राशि पर चार ग्रहों का योग जिस पर शनि-मंगल की दृष्टि देश के महान पुरुषों या प्रधान शासकों के लिए कष्टप्रद है। शक्तिशाली राष्ट्रों—रूस, चीन, अमेरिका तथा ईराक, ब्रिटेन में आतंकवाद का भय, शासकों में आपसी मतभेद उभरेगा। सैनिक गतिविधियों में गति बढ़ेगी। भाद्रपद की कृष्ण चतुर्थी शनिवारी नेष्ट फलप्रद है। यथा—**शनौ भाद्रपदे कृष्णो चतुर्थी यदि जायते। देश भंगश्च दुर्भिक्षं लोके भिक्षाऽपि दुर्लभा:॥** केन्द्रीय मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होकर विकास कार्यों के प्रति नवीन व्यवस्था बनेगी। आयात्-निर्यात् कामों की प्रगति बढ़ेगी। टेक्नोलोजिकल व मशीनरी पुर्जों की नवीन उपलब्धि से व्यापारियों में आर्थिक प्रगति होगी। पूर्वी प्रान्तों में कहीं उग्रवादी घटनाओं का जागरण होगा। प्राकृतिक विपत्तियां पर्वतीय प्रान्तों में बढ़कर मार्गावरोध व क्षति कारक योग है। **तेजी मन्दी विचार**— पक्ष में रविवारी संक्रांति मु. ३० रबड़, प्लास्टिक तथा कैमीकल सामान व जीरा, हल्दी, धाणा आदि किराणा सामान में तेजी प्रद है। रुई, सूत, कपास व सूती वस्त्रों में मन्दी चलेगी। मूंग, मोंठ, चना, जौ में घटाबढ़ी रहकर मन्दी रहेगी। कृ. ९ कन्या में बुध से सोना, चांदी व गुड़, शक्कर, चीनी में तेजी रहेगी। यथा—कन्या राशिगते ज्ञेहि कांचनं शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठे दलेल्लाभं पुन: शस्तो भविष्यति॥ अमावस्या बुधवारी शेयर बाजारों में अस्थिरता कारक है। **आकाश लक्षण**— पक्षारम्भ में धूप तेज, तापमान की वृद्धि रहेगी। पूर्वी प्रान्तों में प्रलयंकारी वर्षा रहेगी। पक्षान्त में कहीं-कहीं वर्षा तथा मध्य प्रदेश के प्रान्तों में उमस की प्रताड़ना बढ़ेगी। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर व पंजाब के उत्तरी भाग में ओला वर्षा संभव है। **शकुन विचार**— भादव वदी १३ को प्रदोष काल में उत्तरी बादल आकर यदि बरसे तो प्रजा में सुख व शांति बढ़ती है। भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्र के बाहर [illegible] दर। [illegible]

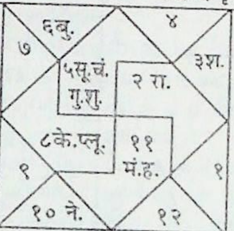


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ४ | १० | ५ | ४ | ४ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| ९ | ० | ११ | २ | ६ | ११ | १६ | ० | ० | ६ | १७ | २३ |
| २५ | ६ | ३५ | १८ | ० | ४१ | १५ | ३१ | ३१ | ४९ | १७ | १९ |
| ३१ | ० | ४ | १२ | ३५ | २२ | ३ | ३१ | ३१ | ५७ | ३३ | ५३ |
| ५७ | ८४ | १६ | ६ | १३ | ७४ | ५ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| ५६ | ३४ | १ | २ | ५ | २२ | ३९ | ११ | ११ | २३ | २९ | ३ |
| मा | मा | व | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | व |
| उ | उ | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| ३ | १ | १ | १ | १ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | ३ | १ |
| मघा | मघा | हस्त | उ.फा. | मघा | मघा | आर्द्रा | कृत्ति. | विशा. | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

[illegible] मध्य प्रदेश के प्रान्तों में उमस का प्रताड़ना बढ़ेगी। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर व पंजाब के उत्तरी भाग में [illegible] तापमान की वृद्धि रहेगी। पूर्वी प्रान्तों में प्रलयंकारी वर्षा रहेगी। पश्चात्
तो प्रजा में सुख व शांति बढ़ती है। भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्र [illegible] दिखाई दें पर आगे वर्षा उत्तम होती है। यथा—दो कुण्डल शशि के रहे इक पासे इक दूर। [illegible] १३ को प्रदोष काल में उत्तरी बादल आकर यदि बरसे



# भाद्रपद शुक्ल पक्ष-११

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २८ अगस्त से १० सितं. सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ६ से १९ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | ति | वा | तिथि घ | तिथि प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | दिनमान घ | दिनमान प | सूर्योदय घं | सूर्योदय मि | सूर्यास्त घं | सूर्यास्त मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | [illegible] | चन्द्रोदय दिल्ली घं. | मि. | चन्द्रास्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भा.६ | १ | गु | ३७ | ४६ | २१ | ४ | पूफा | ५३ | १४ | २७ | १६ | शि | ८ | १४ | ९ | १६ | किं | १० | १५ | १० | ४ | ३२ | १ | ५ | ५८ | १८ | ४६ | १२ | २९ | 28 | सिंह | ४ | १० | २३ | २७ | [illegible] | ६ | १८ | १९ | ३४ | शुक्र पू.फा. में १३।२०, प्लूटो मार्गी २३।३०, बुध वक्री १७।३० |
| ७ | २ | शु | ३२ | १५ | १८ | ५३ | उफा | ४१ | २९ | २५ | ४६ | सि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | बा | ५ | ४ | ८ | ० | ३१ | ५७ | ५ | ५९ | १८ | ४५ | १३ | ३० | 29 | कं.८।५४ | ४ | ११ | २१ | २५ | [illegible] | ७ | २२ | २० | ८ | चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, नक्त व्रतोद्यापन, तेलाधर तप जैन, A |
| ८ | ३ | श | २६ | १७ | १६ | ३० | ह | ४५ | २२ | २४ | ८ | शुभ | ४६ | २१ | २४ | ३१ | ग | २६ | १७ | १६ | ३० | ३१ | ५३ | ५ | ५९ | १८ | ४४ | १४ | च. | 30 | कन्या | ४ | १२ | १९ | २५ | १ | ८ | २६ | २० | ४२ | भद्रा २७।१७ से, रजब मु. मास ७ प्रा., मघा ३ में गुरु ६।५०, B |
| ९ | ४ | र | २० | ९ | १४ | ३ | चि | ४१ | ११ | २२ | २८ | शु | ३८ | ३८ | २१ | २७ | वि | २० | ९ | १४ | ३ | [illegible] | ४९ | ६ | ० | १८ | ४३ | १५ | २ | 31 | तु.११।१८ | ४ | १३ | १७ | २६ | २ | ९ | ३० | २१ | १७ | भद्रा १४।३ तक, सूर्य पू.फा. में ६।३४, वक्री हर्षल धनि. में ९।३८, C |
| १० | ५ | च | १४ | ५ | ११ | ३८ | स्वा | ३७ | ८ | २० | ५१ | व | २१ | १ | १८ | २४ | बा | १४ | ५ | ११ | ३८ | ३१ | ४४ | ६ | ० | १८ | ४२ | १६ | ३ | S1 | तुला | ४ | १४ | १५ | २८ | ४ | १० | ३५ | २१ | ५५ | ऋषि पंचमी व्रत, जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष), क्षमावणी पर्व जैन, D |
| ११ | ६ | मं | ८ | १५ | ९ | १९ | वि | ३३ | २२ | १९ | २२ | ऐं | २३ | ३८ | १५ | २८ | तै | ८ | १५ | ९ | १९ | ३१ | ४० | ६ | १ | १८ | ४१ | १७ | ४ | 2 | वृ.१३।४३ | ४ | १५ | १३ | ३२ | ५ | ११ | ४२ | २२ | ३७ | ललिता षष्ठी, सूर्य ६, बलदेव छठ, मेला व्रजमण्डल, E |
| १२ | ७ | बु | २ | ४६ | ७ | ८ | अनु | ३० | ० | १८ | १ | वै | १६ | ३३ | १२ | ३८ | व | २ | ४६ | ७ | ८ | ३१ | ३६ | ६ | १ | १८ | ४० | १८ | ५ | 3 | वृश्चिक | ४ | १६ | ११ | ३७ | ६ | १२ | ४९ | २३ | २४ | भद्रा ७।८ से १८।६ तक, बुध पश्चिम में अस्त ९।२३, श्री दुर्गाष्टमी, F |
| ० | ८ | बु | ५७ | ४४ | २९ | ७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १८ | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अष्टमी क्षय: **पूर्वोदय गुरु: ४ सितम्बर** |
| १३ | ९ | गु | ५३ | ९ | २७ | १७ | ज्ये | २७ | ५ | १६ | ५२ | वि | ९ | ४९ | ९ | ५७ | बा | २५ | २२ | १६ | ११ | ३१ | ३२ | ६ | २ | १८ | ३९ | १९ | ६ | 4 | ध.१६।५२ | ४ | १७ | ९ | ४३ | ८ | १३ | ५६ | २४ | ० | वक्री बुध सिंह में प्र. १७।४३, गुरु उदय पूर्व में ६।४०, श्री चन्द्र G |
| १४ | १० | शु | ४९ | ६ | २५ | ४० | मू | २४ | ३९ | १५ | ५४ | प्री | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | तै | २१ | ३ | १४ | २७ | ३१ | २८ | ६ | २ | १८ | ३७ | २० | ७ | 5 | धनु | ४ | १८ | ७ | ५१ | ९ | १५ | ० | २४ | १७ | दशावतार १० व्रत, मेला रामदेव रुचिणा (राज.), मूल नक्षत्र में H |
| १५ | ११ | श | ४५ | ३८ | २४ | १८ | पू.षा | २२ | ४७ | १५ | ९ | सौ | ५२ | ११ | २६ | ५५ | व | १७ | १७ | १२ | ५७ | ३१ | २४ | ६ | ३ | १८ | ३६ | २१ | ८ | 6 | म.२१।० | ४ | १९ | ६ | ० | ११ | १५ | ५७ | २५ | १६ | भद्रा १२।५७ से २४।१८ तक, कृत्तिका १ मेष में राहु विशा. ३ तुला J |
| १६ | १२ | र | ४२ | ५२ | २३ | १२ | उ.षा | २१ | ३२ | १४ | ४० | शो | ४७ | २० | २४ | ५९ | ब | १४ | ९ | ११ | ४३ | ३१ | २० | ६ | ३ | १८ | ३५ | २२ | ९ | 7 | मकर | ४ | २० | ४ | ११ | १२ | १६ | ४८ | २६ | ११ | श्री वामन ज., भुवनेश्वरी ज., हरिवासर १४।४० से २३।१२ तक |
| १७ | १३ | च | ४० | ५५ | २२ | २५ | श्र | २१ | ४ | १४ | २९ | अति | ४३ | ९ | २३ | १९ | कौ | ११ | ४६ | १० | ४६ | ३१ | १६ | ६ | ४ | १८ | ३४ | २३ | १० | 8 | कुं.२६।३२ | ४ | २१ | २ | २३ | १४ | १७ | ३१ | २७ | २३ | पंचक प्रा. २६।३२ से, वक्री बुध पू.फा. में १६।४, शुक्र उ.फा. K |
| १८ | १४ | मं | ३९ | ५७ | २२ | ३ | ध | २१ | ३० | १४ | ४० | सु | ३९ | ४५ | २१ | ५८ | ग | १० | १७ | १० | ११ | ३१ | ११ | ६ | ४ | १८ | ३३ | २४ | ११ | 9 | कुम्भ | ४ | २२ | ० | ३७ | १५ | १८ | ९ | २८ | २६ | भद्रा २२।३ से, अनन्त १४ व्रत, मेला सोडल (जालन्धर) |
| १९ | १५ | बु | ४० | ८ | २२ | ८ | शत | २३ | १ | १५ | १७ | धृ | ३७ | १५ | २० | ५९ | वि | ९ | ५३ | १० | २ | ३१ | ७ | ६ | ५ | १८ | ३१ | २५ | १२ | 10 | कुम्भ | ४ | २२ | ५८ | ५२ | १७ | १८ | ४३ | २९ | २७ | भद्रा १०।२ तक, शुक्र कन्या में प्र. २३।४३, सत्यव्रत, पूर्णिमा. |

A मेला रामदेव रुचिणा (राज.) B हरितालिका ३, मन्वादि, वाराह ज., गौरी तृतीया, अगस्त उदय ६।३९ C आर्द्रा ४ शनि १८।१९, श्री गणेश जन्म चतुर्थी, कलंकी ४, पत्थर चौथ, चन्द्रदर्शन निषेध, सामगानां श्रावणी कर्म, गणेशजन्मोत्सव (महाराष्ट्र), जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) D सितं. मास १ ता. ३० E मुक्ता भरण ७, सन्तान ७, अपराजित ७ F राधाष्टमी, दूर्वाष्टमी, दधीचि ज., महालक्ष्मी व्रतारम्भ, अनु. नक्षत्र में ज्येष्ठा गौरी आवाहन G ९ (उदासीन संप्रदाय), अदुःख ९ व्रत, ज्येष्ठा गौरी पूजा, भागवत सप्ताहारम्भ H ज्येष्ठा गौरी विसर्जन J में केतु ७।५४, पद्मा एका. व्रत सबका, जलझूलनी मेला, चारभुजा नाथ गढ़भोर (राज.) K में ७।१७, सोम प्रदोष व्रत, गोत्रिरात्री व्रतारंभ, ओणम थीरु-ओणम् L पूर्ण्यं, गोत्रिरात्रि व्रत व भागवत सप्ताह समा., प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध, सन्यासियों का चातुर्मास्य पूर्ण, महालयारंभ

**भाद्रपद शु. ७ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ सितं. ।दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं। ता. १० सितम्बर ❖ भाद्रपद शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ७ | १० | ५ | ४ | ४ | २ | १ | ७ | १० | ९ | ७ |
| १६ | ९ | ९ | ० | ७ | २० | १६ | ० | ० | ६ | १७ | २३ |
| ११ | १७ | ४४ | ५६ | ३१ | २२ | ५३ | ९ | ९ | ३३ | ७ | २० |
| ३७ | ४४ | १६ | २४ | ५५ | ११ | १० | १६ | १६ | १९ | ३१ | ११ |
| ५८ | [illegible] | १५ | ३५ | १३ | ७४ | ५ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| ६ | १४ | ५ | ५५ | ० | २६ | १० | ११ | ११ | २१ | २२ | ११ |
| मा | मा | व | व | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | अ | उ | उ | अ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

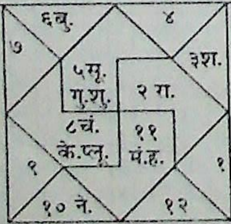


प्लूटो का मार्गी होना व चार ग्रहों का सिंह राशि पर योग विश्व के अनेक भागों में प्राकृतिक विघटन कारक है। उत्तरी पूर्वी राष्ट्रों में पर्वतीय क्षेत्रों पर भूकम्प से कई शृंखलाएं भूमिल होंगी तथा तूफानी हवाओं का जोर रहेगा। यथा—गुरु भृगु भानु देवगुरु जब होवे इक ठौर। घात योग के कारणे धूल उड़े चहुं ओर॥ भाद्रपद मास में गुरु का उदय राजनयकों में आपसी कलह व फूट कारक है। अग्निकाण्ड व बारूद कांडों से जनता भयभीत होगी। यथा—भाद्रे अभ्युदय याति सुरगुरु संयोगतः। अनावृष्टिर्भयं

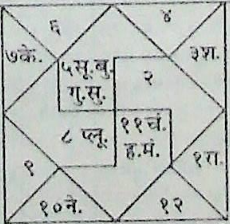


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | १० | १० | ४ | ४ | ४ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २२ | १४ | ८ | २५ | ९ | २२ | १७ | २९ | २९ | ६ | १६ | २३ |
| ५८ | ४२ | ६ | ७ | २ | ३ | २७ | ४७ | ४७ | १७ | ५८ | २२ |
| ५२ | ५६ | ४३ | १७ | ३३ | २६ | ३८ | १ | १ | ८ | २१ | ६ |
| ५८ | [illegible] | १२ | ६० | १२ | ७४ | ४ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| १७ | १० | ०४ | २० | ५२ | ३० | ३६ | ११ | ११ | १५ | १७ | २४ |
| मा | मा | व | व | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | अ | उ | अ | उ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

**वह्नि धान्य नाशं तदा भवेत्॥** बिहार, बंगाल, आसाम आदि पूर्वी प्रान्तों में नवीन क्रान्ति जागृत होकर उदंगल होने के योग हैं। तेजी **मन्दी विचार**—प्रतिपदा गुरुवार को वक्री बुध व मार्गी प्लूटो तथा तिथि २ को चन्द्रदर्शन शुक्रवार को होने से जौ, ज्वार, गुवार, घी, चना, मूंग, मोठ तथा उड़द आदि दलहन व धान्यों में मन्दी रहेगी। शु. ४ रविवार पू.फा. में सूर्य व वक्री हर्षल धनिष्ठा में गुड़, शक्कर, चांदी, अलसी, मूंगफली व सरसों, सोयाबिन तेलों में तेजी फलप्रद है। पक्षान्त में कन्या का शुक्र चान्दी, सोना, चावल व शेयर बाजार भावों में मन्दी कारक रहेगा। पक्ष में मशीनों के कल पुर्जे, वाहनों, लोहे के सामान, स्टील में तूफानी तेजी के योग हैं। कैमीकल सामान, रंगरोगन, औषधियों में घटाबढ़ी रहेगी। **आकाश लक्षण**—दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश में आकाश साफ रह कर तापमान की वृद्धि रहेगी। गुजरात, महाराष्ट्र हिमाचल प्रदेश व काश्मीर क्षेत्रीय इलाकों में तेज हवाएं व वर्षा योग है। बंगाल, बिहार, मणीपुर, आसाम, अरुणाचल में ओला वृष्टि व तूफानों से धन हानि संभव है। **शकुन विचार**—भाद्रपद की पूर्णिमा को बादल चाल होना आगे धान्यों में मन्दी कारक होता है। भाद्रपद मास में चित्रा, स्वाती, विशाखा नक्षत्रों में वर्षा न होने पर आगे वर्षा की न्यूनता रहती है। यथा—**यदि भाद्रपदे मासि चित्रा स्वाती विशाखके। ना हति वर्षति पर्जन्यो शान्त मेघान्विनिर्देशेत्॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# आश्विन कृष्ण पक्ष-१२ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ११ से २६ सितं. सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २० भाद्रपद से ४ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिणगोले, शरद ऋतु।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २० | १ | गु | ४१ | ३८ | २२ | ४४ | पू.भा | २५ | ४६ | १६ | २३ | शू | ३५ | ४७ | २० | २४ | बा | १० | ४३ | १० | २२ |
| २१ | २ | शु | ४४ | ३२ | २३ | ५४ | उ.भा | २९ | ५१ | १८ | २ | गं | ३५ | २२ | २० | २४ | तै | १२ | ५४ | ११ | १५ |
| २२ | ३ | श | ४८ | ४७ | २५ | ३७ | रे | ३५ | १६ | २० | १३ | वृ | ३६ | १ | २० | ३० | व | १६ | २९ | १२ | ४२ |
| २३ | ४ | र | ५४ | १३ | २७ | ४८ | अ | ४१ | ५२ | २२ | ५१ | धु | ३७ | ३६ | २१ | ९ | ब | २१ | २२ | १४ | ३९ |
| २४ | ५ | चं | ६० | ० | — | — | भ | ४९ | २० | २५ | ५१ | व्या | ३९ | ५३ | २२ | ४ | कौ | २७ | १६ | १७ | २ |
| २५ | ५ | मं | ० | २८ | ६ | १९ | कृ | ५७ | १० | २८ | ५९ | ह | ४२ | ३१ | २३ | ८ | तै | ० | २८ | ६ | १९ |
| २६ | ६ | बु | ७ | २ | ८ | ५७ | रो | ६० | ० | — | — | व | ४५ | ५ | २४ | १० | व | ७ | २ | ८ | ५७ |
| २७ | ७ | गु | १३ | १६ | ११ | २७ | रो | ४ | ४६ | ८ | ३ | सि | ४७ | ८ | २५ | ० | ब | १३ | १६ | ११ | २७ |
| २८ | ८ | शु | १८ | ३४ | १३ | ३४ | मृ | ११ | ३३ | १० | ४६ | व्य | ४८ | १३ | २५ | २६ | कौ | १८ | ३४ | १३ | ३४ |
| २९ | ९ | श | २२ | २१ | १५ | ६ | आ | १६ | ५६ | १२ | ५६ | वरि | ४८ | ० | २५ | २१ | ग | २२ | २१ | १५ | ६ |
| ३० | १० | र | २४ | १६ | १५ | ५३ | पुन | २० | ३२ | १४ | २३ | प | ४६ | १५ | २४ | ४० | वि | २४ | १६ | १५ | ५३ |
| ३१ | ११ | चं | २४ | १० | १५ | ५० | पु | २२ | १० | १५ | २ | शि | ४२ | ५५ | २३ | २० | बा | २४ | १० | १५ | ५० |
| १ | १२ | मं | २२ | ३ | १५ | ० | श्ले | २१ | ५० | १४ | ५५ | सि | ३८ | १ | २१ | २३ | तै | २२ | ३ | १५ | ० |
| २ | १३ | बु | १८ | ९ | १३ | २७ | म | १९ | ४३ | १४ | ५ | सा | ३१ | ४३ | १८ | ५३ | व | १८ | ९ | १३ | २७ |
| ३ | १४ | गु | १२ | ४४ | ११ | १८ | पू.फा | १६ | ७ | १२ | ३९ | शुभ | २४ | १६ | १५ | ५५ | श | १२ | ४४ | ११ | १८ |
| ४ | ३० | शु | ६ | ११ | ८ | ४१ | उ.फा | ११ | २४ | १० | ४६ | शु | १५ | ५७ | १२ | ३५ | ना | ६ | ११ | ८ | ४१ |

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| दिनांक अं. | दिनमान घ | प | स्टैं.टा. सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | प्र. | मु. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घ. | मि. | अस्त घं. | मि. | संदर्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | ३१ | ३ | ६ | ५ | १८ | ३० | २६ | १३ | मी. १०।४ | ४ | २३ | ५७ | ९ | २० | १९ | १३ | ६ | २५ | जन्म दिन हजरत अली, प्रतिपदा श्राद्धम् |
| 12 | ३० | ५९ | ६ | ६ | १८ | २९ | २७ | १४ | मीन | ४ | २४ | ५५ | २८ | २१ | १९ | ४२ | ७ | २० | द्वितीया श्राद्धम्, अशून्य शयन २ व्रत A २४।३०, तृतीया श्राद्धम् |
| 13 | ३० | ५५ | ६ | ६ | १८ | २८ | २८ | १५ | मे. २०।१३ | ४ | २५ | ५३ | ४९ | २३ | २० | ११ | ८ | १५ | भद्रा १२।४२ से २५।३७ तक, पंचक समा. २०।१३, सूर्य उ.फा. में A |
| 14 | ३० | ५० | ६ | ७ | १८ | २७ | २९ | १६ | मेष | ४ | २६ | ५२ | १२ | २५ | २० | ४१ | ९ | ८ | मघा ४ में गुरु १८।२, चतुर्थी श्राद्धम्, कृष्ण चतुर्थी व्रतम्, दशरथ B |
| 15 | ३० | ४६ | ६ | ७ | १८ | २६ | ३० | १७ | मेष | ४ | २७ | ५० | ३७ | २७ | २१ | १२ | १० | २ | पंचमी श्राद्धम्, भा. इन्जीनियर्स दिवस |
| 16 | ३० | ४२ | ६ | ८ | १८ | २४ | ३१ | १८ | वृ. ८।३८ | ४ | २८ | ४९ | ४ | २९ | २१ | ४६ | १० | ५७ | पंचमी वृद्धि. चन्दन छट, षष्ठी श्राद्धम् |
| 17 | ३० | ३८ | ६ | ८ | १८ | २३ | आ१ | १९ | वृष | ४ | २९ | ४७ | ३३ | ३१ | २२ | २५ | ११ | ५२ | भद्रा ८।५७ से २२।१४ तक, सूर्य कन्या में प्र. १०।३६, संक्रांति C |
| 18 | ३० | ३४ | ६ | ८ | १८ | २२ | २ | २० | मि. २१।२८ | ५ | ० | ४६ | ४ | ३४ | २३ | ९ | १२ | ४८ | शुक्र हस्त में २४।५६, सप्तमी श्राद्धम्, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण |
| 19 | ३० | २९ | ६ | ९ | १८ | २१ | ३ | २१ | मिथुन | ५ | १ | ४४ | ३८ | ३५ | २३ | ५८ | १३ | ४२ | वक्री मंगल धनिष्ठा में ७।१२, अष्टमी श्राद्धम्, कालाष्टमी, D |
| 20 | ३० | २५ | ६ | ९ | १८ | २० | ४ | २२ | मिथुन | ५ | २ | ४३ | १३ | ३८ | २४ | ० | १४ | ३५ | भद्रा २७।३५ से, बुध पूर्व में उदय ७।३५, नवमी श्राद्धम्, मातृ E |
| 21 | ३० | २१ | ६ | १० | १८ | १८ | ५ | २३ | क. ८।५ | ५ | ३ | ४१ | ५१ | ४० | २४ | ५३ | १५ | २४ | भ. १५।५३ तक, बुधमार्गी २३।३, दशमी श्राद्धम्, गुरुनानक देव F |
| 22 | ३० | १७ | ६ | १० | १८ | १७ | ६ | २४ | कर्क | ५ | ४ | ४० | ३१ | ४२ | २५ | ५३ | १६ | १० | इन्दिरा एकादशी व्रत सबका, एकादशी श्राद्धम् |
| 23 | ३० | १२ | ६ | ११ | १८ | १६ | ७ | २५ | सिं. १४।५५ | ५ | ५ | ३९ | १३ | ४५ | २६ | ५५ | १६ | ५१ | भौम प्रदोष व्रत, द्वादशी श्राद्धम्, सन्यासी श्राद्ध, त्रिस्पृशा-G |
| 24 | ३० | ८ | ६ | ११ | १८ | १५ | ८ | २६ | सिंह | ५ | ६ | ३७ | ५८ | ४६ | २७ | ५९ | १७ | २८ | भद्रा १३।२७ से २४।२६ तक, त्रयोदशी श्राद्धम्, कलियुगादि H |
| 25 | ३० | ४ | ६ | १२ | १८ | १४ | ९ | २७ | क. १८।१३ | ५ | ७ | ३६ | ४४ | ४८ | २९ | ३ | १८ | ४ | चतुर्दशी श्राद्ध ११।१८ तक, विषाग्नि शस्त्रादि मृतकों का श्राद्ध, J |
| 26 | ३० | ० | ६ | १२ | १८ | १२ | १० | २८ | कन्या | ५ | ८ | ३५ | ३२ | ५१ | ३० | ८ | १८ | ३९ | मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., कलश स्थापना, अग्रसेन ज. |

B ललिता व्रत, भा. हिन्दी दिवस C मु. ४५ बैठी, सप्तमी श्राद्धम्, विश्वकर्मा पूजा, सौर आश्विन मास प्रा. D जीवित्पुत्रिका ८ व्रत, व्यतिपात पुण्यं E नवमी, सौभाग्यवती श्राद्ध, भूदान जयंती F शहीद दिवस (प्रा. मत से) G महाद्वादशी व्रत, सायन तुला में सूर्य १६।३७, भारतीय आश्विन मासारंभ, दक्षिण गोल प्रा. H तिथि, मास शिवरात्रि व्रत, मघा त्रयोदशी श्राद्ध J देवपितृकार्याऽमावस्या, सर्वपितृ श्राद्धम्, पितृ विसर्जन, श.ब्बे मिराज मु.

**आश्विन कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १९ सितं.** [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] **ता. २६ सितं. ❖ आश्विन कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | १० | ४ | ४ | ५ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| १ | ४ | ६ | १८ | १० | १० | १८ | २९ | २९ | ५ | १६ | २३ |
| ४४ | ० | ४० | २७ | ५७ | २४ | ६ | १८ | १८ | ५७ | ४८ | २६ |
| ३८ | १९ | २७ | ० | २४ | २४ | ० | २४ | २४ | ३४ | ५ | ५३ |
| ५८ | ७२१ | ६ | ८ | १२ | ७४ | ३ | ३ | ३ | २ | १ | ० |
| ३५ | ३४ | ९ | २४ | ३६ | ३५ | ५० | ११ | ११ | ४ | १ | ४२ |
| मा | मा | व | व | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| २ उ.फा. | ४ मृगा. | १ शत. | २ पू.फा. | ४ मघा | १ हस्त | ४ आर्द्रा | १ कृत्ति. | ३ विशा. | ४ धनि. | ३ श्रवण | ३ ज्ये. |

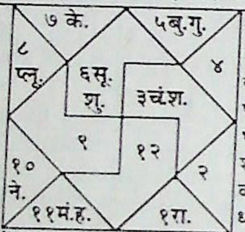


सूर्य के केन्द्र में शनि तथा मंगल से षडाष्टक योग होना अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अमेरिका व श्रीलंका आदि दक्षिणी गोलार्द्ध के राष्ट्रों में जन उपद्रव कलह तथा शासकों में आपसी तनावकारी फलप्रद है। बुध का उदय दक्षिणी पश्चिमी प्रान्तों में प्राकृतिक भूकम्प-तूफान व चक्रवात आदि घटनाओं से क्षति कारक है। शास्त्र कथनानुसार फल इस प्रकार है। यथा—**नोत्पात परित्यक्तः कदाचिदपि चन्द्रजो वृजन्त्युदयम्। जलदहन यवन भय कृत् धान्यार्घक्षय विवृद्धयै वा॥** पितृपक्ष में तिथि वृद्धि यवन राष्ट्रों में गृह कलह बढ़कर आतंकवादी घटनाएं बढ़ने के योग कारक है। **आश्विने हि तृतीयायां यदि भौम शनैश्चरौ। तदात्वग्निभयं विद्यादथवान्न महर्घता॥** शनिवारी तृतीया भी जनाक्रोश एवं धान्यादि में मंहगाई बढ़ाने वाली फलप्रद है। **तेजी मन्दी विचार**—उ.फा. में सूर्य से पक्ष में गेहूं, मूंग, मोंठ, चावल, चना तथा चीनी, गुड़ में तेजी कारक है। शेयर भावों, मशीनरी सामान, सोना, चांदी, ताम्बा आदि धातुएं मन्दी रहेंगी। सूत कपास, रुई व सूती वस्त्रों में मन्दी होगी। रेशमी वस्त्र, ऊनी वस्त्र, ऊन में तेजी का रुख होगा। मार्गी बुध कृ. १० से नशीले पदार्थ चाय, काफी, अफीम आदि में तेजी रहेगी। **आकाश लक्षण**—पक्ष कहीं कहीं सामान्य वर्षा होगी। वायुवेग का प्रकोप रहेगा। हिमाचल प्रदेश, काश्मीर व बिहार के क्षेत्रों में वर्षा होगी। राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली व गुजरात, उत्तर प्रदेश में कहीं-कहीं खण्ड वृष्टि तथा कहीं तापमान में अधिकता से तपत व उम्मस का वातावरण रहेगा। **शकुन विचार**—आश्विन कृष्णा दशमी से द्वादशी तक मेघाच्छन्न बिजली गर्जना होने पर आगे गेहूं आदि अनाज में तेजी होती है। यथा—**दशमी अरु एकादशी अथवा द्वादशी जान। घन गरजे बिजली खीवैं गेहूं तेज पिछान॥** आश्विन बदी ४ तिथि को [illegible] की उपज उत्तम होती है।

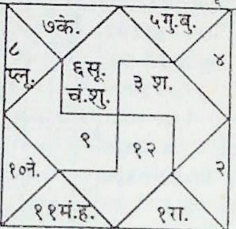


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | १० | ४ | ४ | ५ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ८ | ६ | ६ | २० | १२ | १८ | १८ | २८ | २८ | ५ | १६ | २३ |
| ३५ | ४७ | १३ | ४८ | २४ | ५६ | ३० | ५६ | ५६ | ४३ | ४१ | ३२ |
| ३२ | १९ | ३३ | ३२ | ५४ | २६ | ४८ | ९ | ९ | ४० | २९ | २५ |
| ५८ | ८०७ | ० | ५५ | १२ | ७४ | ३ | ३ | ३ | १ | ० | ० |
| ५१ | ३४ | ४१ | ४६ | २१ | ३८ | १० | ११ | ११ | ५३ | ५० | ५५ |
| मा | मा | व | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| ४ उ.फा. | ४ उ.फा. | ४ धनि. | ३ पू.फा. | ४ मघा | ३ हस्त | ४ आर्द्रा | १ कृत्ति. | ३ विशा. | ४ धनि. | ३ श्रवण | ३ ज्ये. |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जान। घन गरजे बिजली खीवैं गेहूं तेज पिछान॥ ... होती है। यथा—दशमी अरु एकादशी अथवा द्वादशी ... फसलों की उपज उत्तम होती है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# आश्विन शुक्ल पक्ष-१३

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २७ सितं. से १० अक्टू. सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ५ से १८ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | प्र | मु | दिनांक अं | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १ | शु | ५८ | ५४ | २९ | ४६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | प्रतिपदा क्षय: **पश्चिमोदय शुक्र ४ अक्टू.** |
| आ.५ | २ | श | ५१ | १३ | २६ | ४२ | ह | ५ | ५८ | ८ | ३६ | ब | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | बा | २५ | ४ | १६ | १५ | २९ | ५५ | ६ | १३ | १८ | ११ | ११ | २९ | 27 | तु. १९।५८ | ५ | ९ | ३४ | २३ | [illegible] | ७ | १४ | १९ | १४ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, सूर्य हस्त में १५।५७, मंगल मार्गी १२।३६ |
| ६ | ३ | र | ४३ | ३१ | २३ | ३८ | चि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वै | ४८ | ५० | २५ | ४५ | तै | १७ | २० | १३ | १० | २९ | ५१ | ६ | १४ | १८ | १० | १२ | शा. | 28 | तुला | ५ | १० | ३३ | १५ | ५४ | ८ | २१ | १९ | ५२ | **शावान मु. मास ८ प्रा.** |
| ७ | ४ | चं | ३६ | ८ | २० | ४१ | वि | ४९ | १० | २५ | ५४ | वि | ३९ | ५१ | २२ | १४ | व | ९ | ४६ | १० | ८ | २९ | ४७ | ६ | १४ | १८ | ९ | १३ | २ | 29 | वृ. २०।५५ | ५ | ११ | ३२ | ९ | ५७ | ९ | २१ | २० | ३३ | भद्रा १०।८ से २०।४१ तक, शुक्र चित्रा में १८।१६, विनायक ४ |
| ८ | ५ | मं | २९ | २० | १७ | ५१ | अनु | ४४ | २७ | २४ | २ | प्री | ३१ | ३७ | १८ | ५४ | ब | २ | ३८ | ७ | १८ | २९ | ४३ | ६ | १५ | १८ | ८ | १४ | ३ | 30 | वृश्चिक | ५ | १२ | ३१ | ६ | ५७ | १० | ३९ | २१ | १९ | पू.फा. १ में गुरु १७।२३, **उपांग ललिता ५ व्रत**, ललिता पंचमी |
| ९ | ६ | बु | २३ | २९ | १५ | ३५ | ज्ये | ४० | ३४ | २२ | २९ | आ | २३ | ५५ | १५ | ४९ | तै | २३ | १९ | १५ | ३५ | २९ | ३८ | ६ | १५ | १८ | ६ | १५ | ४ | 01 | ध. २२।५९ | ५ | १३ | ३० | ३ | [illegible] | ११ | ४८ | २२ | १२ | बुध उत्तरा फाल्गुनी में ७।४, **अक्टूबर मास १० ता. ३१** |
| १० | ७ | गु | १८ | १३ | १३ | ३३ | मूल | ३७ | ३८ | २१ | १९ | सौ | १६ | ५७ | १३ | २ | व | १८ | १३ | १३ | ३३ | २९ | ३४ | ६ | १६ | १८ | ५ | १६ | ५ | 2 | धनु | ५ | १४ | २९ | ३ | १ | १२ | ५४ | २३ | १० | भद्रा १३।३३ से २४।४१ तक, **सरस्वती आवाहन**, अन्नपूर्णा A |
| ११ | ८ | शु | १४ | ९ | ११ | ५६ | पू.षा | ३५ | ४४ | २० | ३४ | शो | १० | ४९ | १० | ३६ | ब | १४ | ९ | ११ | ५६ | २९ | ३० | ६ | १६ | १८ | ४ | १७ | ६ | 3 | म. २६।२७ | ५ | १५ | २८ | ४ | ३ | १३ | ५४ | २४ | ० | बुध कन्या में प्रवेश १३।११, **सरस्वती पूजनम्, दुर्गाष्टमी**, B |
| १२ | ९ | श | ११ | ९ | १० | ४४ | उ.षा | ३४ | ५५ | २० | १५ | अति | ५ | ३३ | ८ | ३० | कौ | ११ | ९ | १० | ४४ | २९ | २६ | ६ | १७ | १८ | ३ | १८ | ७ | 4 | मकर | ५ | १६ | २७ | ७ | ५ | १४ | ४६ | २४ | १२ | शुक्र तुला में प्रवेश २६।५३, **शुक्र पश्चिम में उदय १४।४३**, C |
| १३ | १० | र | ९ | १६ | १० | ० | श्र | ३५ | ११ | २० | २१ | सु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ग | ९ | १६ | १० | ० | २९ | २१ | ६ | १७ | १८ | २ | १९ | ८ | 5 | मकर | ५ | १७ | २६ | १२ | ७ | १५ | ३१ | २५ | १६ | भद्रा २१।४७ से, बुध पूर्व में अस्त १५।२४, **विजया दशमी** D |
| १४ | ११ | चं | ८ | २९ | ९ | ४१ | ध | ३६ | ३२ | २० | ५४ | शू | ५४ | ५१ | २८ | १८ | वि | ८ | २९ | ९ | ४१ | २९ | १७ | ६ | १८ | १८ | १ | २० | ९ | 6 | कुं. ८।३५ | ५ | १८ | २५ | १९ | ८ | १६ | १० | २६ | १९ | भद्रा ९।४१ तक, **पंचक प्रा. ८।३५ से, पापांकुशा एका. व्रत** E |
| १५ | १२ | मं | ८ | ५० | ९ | ५० | शत | ३८ | ५८ | २१ | ५४ | गं | ५३ | १३ | २७ | ३५ | बा | ८ | ५० | ९ | ५० | २९ | १३ | ६ | १८ | १८ | ० | २१ | १० | 7 | कुम्भ | ५ | १९ | २४ | २७ | १० | १६ | ४४ | २७ | १७ | मंगल शतभिषा में ८।१२, **भौम प्रदोष व्रत** |
| १६ | १३ | बु | १० | १८ | १० | २६ | पू.भा | ४२ | ३० | २३ | १९ | वृ | ५२ | १८ | २७ | १४ | तै | १० | १८ | १० | २६ | २९ | ९ | ६ | १९ | १७ | ५८ | २२ | ११ | 8 | मी. १६।५५ | ५ | २० | २३ | ३७ | १२ | १७ | १५ | २८ | १७ | वायु सेना दिवस E सबका, भरत मिलाप |
| १७ | १४ | गु | १२ | ५४ | ११ | २९ | उ.भा | ४७ | ७ | २५ | १० | ध्रु | ५२ | १५ | २७ | १३ | व | १२ | ५४ | ११ | २९ | २९ | ५ | ६ | १९ | १७ | ५७ | २३ | १२ | 9 | मीन | ५ | २१ | २२ | ४९ | १४ | १७ | ४४ | २९ | १२ | भद्रा ११।२९ से २४।११ तक, बुध हस्त में १३।४४, **शरद पूर्णिमा**, F |
| १८ | १५ | शु | १६ | ३८ | १२ | ५९ | रे | ५२ | ४७ | २७ | २७ | व्या | ५३ | २ | २७ | ३३ | ब | १६ | ३८ | १२ | ५९ | २९ | ० | ६ | २० | १७ | ५६ | २४ | १३ | 10 | मे. २७।२७ | ५ | २२ | २२ | ३ | १६ | १८ | १२ | ३० | ७ | **पंचक समा.** २७।२७, सूर्य चित्रा में २८।५८, शुक्र स्वा. में ११।३१, G |

A परिक्रमा १३।३३ से, **श्री महात्मागांधी व लाल बहादुर शास्त्री ज.** B **भद्रकल्यावतार**, अन्नपूर्णा परिक्रमा ११।५६ तक, जैन आयंबिल ओली प्रा., मेला ज्वालामुखी, तारा देवी (हि.प्र.), **महाष्टमी**
C **सरस्वती बलिदान, महानवमी, दुर्गा नवमी, नवरात्र पूर्ण** D (रावण दाह), **सरस्वती विसर्जनम्**, अपराजिता व शमी पूजन, अस्त्र शस्त्र पूजा, बौद्धावतार १०, श्री माधवाचार्य ज. F **पूर्णिमा व्रत**, कोजागरी व्रत
G **सत्यव्रत पूर्णिमा पुण्यं, महर्षि वाल्मीकि ज.**, कार्तिक स्नान प्रा., जैन आयंबिल ओली समा.

**आश्विन शु. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ अक्टू. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. १० अक्टू. ❖ आश्विन शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ८ | १० | ४ | ४ | ५ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| १५ | १८ | ६ | २९ | १३ | २७ | १८ | २८ | २८ | ५ | १६ | २३ |
| २८ | २ | २५ | ३० | ५० | ३८ | ५० | ३३ | ३३ | ३१ | ३६ | ३९ |
| ४ | १९ | ५२ | २८ | १७ | ५२ | ४८ | ५४ | ५४ | १५ | १६ | २७ |
| ५९ | ८३० | ४ | ९३ | ११ | ७४ | २ | ३ | ३ | १ | ० | १ |
| ३ | १८ | ५८ | २४ | ५९ | ३८ | २७ | ११ | ११ | ३८ | ३८ | ८ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | अ | उ | उ | उ | अ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

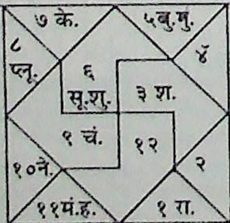


शुक्ल प्रतिपदा का क्षय और कन्या राशि में शुक्र का उदय होना मध्य एशिया, ईरान, ईराक, चीन और जापान आदि राष्ट्रों में बम विस्फोट, बारूदी विस्फोट से शासकों में चिन्ता बढ़ेगी। प्रधान शासकों पर घातक हमलों से भय वृद्धि रहेगी। यथा—**शुक्रोदयं च कन्यायां श्रीमन्तं नृपपीडनम्। पृथिव्यां धान्य नाशस्यादल्प वृष्टि प्रजा भयम्॥** केन्द्रीय शासकों में आपसी मतभेद उभर कर जान माल हानि का भय रहेगा। प्रान्तीय सरकारों के प्रति प्रधान शासक चिंतित होंगे। शुक्र का मनुष्य में उदय स्त्री शासक राष्ट्रों तथा गुजरात, कच्छ, भुज व महाराष्ट्र के क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदा बन कर कृषि को हानि होने के योग कारक है। यथा—**मनुष्य गणभे शुक्रोदये सौराष्ट्रे विग्रह। कलिंग देशे स्त्री राज्ये मध्यमं वर्षमुच्यते॥** कर्मचारी गणों के आन्दोलन का आतंक बार-बार पैदा होगा। **तेजी मन्दी विचार**—चन्द्रदर्शन मु. ३० शनिवार को होने से गेहूं, मूंग, मोंठ, चावल, चना में घटाबढ़ी चलेगी। सोयाबिन, अरण्ड, मूंगफली व तुरई के तेलों में तेजी होगी। शु. ८ को कन्या बुध

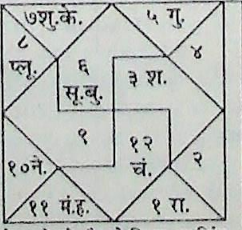


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ११ | १० | ५ | ४ | ६ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २२ | १८ | ७ | ११ | १५ | ६ | १९ | २८ | २८ | ५ | १६ | २३ |
| २२ | ५१ | १६ | ८ | १३ | २१ | ५ | ११ | ११ | २० | ३२ | ४७ |
| ३ | ४४ | ३७ | २६ | १ | १८ | ४६ | ३९ | ३९ | ३६ | २८ | ५७ |
| ५९ | ७२१ | १० | १०४ | ११ | ७४ | १ | ३ | ३ | १ | ० | १ |
| १६ | १८ | ११ | ३२ | ३५ | ३८ | ४३ | ११ | ११ | २२ | २५ | १९ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

से ऊनी व सूती वस्त्रों, रुई, कपास के भाव तेज। शेयर भावों में घटाबढ़ी होकर मन्दा हो। सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील और लोहा सामान में तेजी का संचार होगा। शुक्रोदय शु. ९ बाद गुड़, शक्कर, चीनी में विशेष तेजी के योग हैं। कागज के सामान व रबड़, प्लास्टिक वस्तुओं में मन्दी होवे। **आकाश लक्षण**—शुक्ला ९ के बाद दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र व राजस्थान, हरियाणा, पंजाब प्रान्तों में सामान्य वर्षा के योग हैं। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आन्ध्रा आदि प्रदेशों में बादल चाल रहेगी। मौसम में परिवर्तन तथा तापमान में गिरावट होगी। बंगाल की खाड़ी, आसाम, अरुणाचल प्रदेशादि क्षेत्रों पर वायुवेग के साथ तेज वर्षा रहेगी। **शकुन विचार**—शरद पूर्णिमा को साफ चन्द्रदर्शन रहने पर अग्रिम फसल की उपज श्रेष्ठ होती है। सुदी तिथि अष्टमी व नवमी को वर्षा हो तो प्रजा सुखी होती है। यथा—**सातें आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राजा प्रजा दोनों सुखी संशय सब मिट जाय॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ११ से २५ अक्टूबर सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १९ आश्विन से ३ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले, शरद-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | [illegible] | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं | मि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | १ | श | २१ | २५ | १४ | ५५ | अ | ५९ | २५ | ३० | ६ | ह | ५८ | ३३ | २८ | १० | कौ | २१ | २५ | १४ | ५५ | २८ | ५६ | ६ | २१ | १७ | ५५ | २५ | १४ | 11 | मेष | ५ | २३ | २१ | १९ | [illegible] | १८ | ४१ | ७ | ० | अशून्य शयन २ व्रत |
| २० | २ | र | २७ | ८ | १७ | २२ | भ | ६० | ० | — | — | व | ५६ | ४१ | २९ | २ | ग | २७ | ८ | १७ | २२ | २८ | ५२ | ६ | २१ | १७ | ५४ | २६ | १५ | 12 | मेष | ५ | २४ | २० | ३८ | २० | १९ | ११ | ७ | ५८ | गुरु रामदास जयंती (प्रा. मत से), शब-ए-बारात मु. |
| २१ | ३ | चं | ३२ | ३२ | १९ | ४६ | भ | ६ | ४६ | ९ | ४ | मि | ५९ | १३ | ३० | ३ | व | ० | १५ | ६ | २८ | २८ | ४८ | ६ | २२ | १७ | ५३ | २७ | १६ | 13 | वृ. १५।५१ | ५ | २५ | १९ | ५८ | २२ | १९ | ४५ | ८ | ४९ | भद्रा ६।२८ से १६।२९ तक |
| २२ | ४ | मं | ४० | १५ | २२ | २८ | कृ | १४ | ३६ | १२ | १३ | व्य | ६० | ० | — | — | ब | ६ | ५२ | ९ | ७ | २८ | ४४ | ६ | २२ | १७ | ५२ | २८ | १७ | 14 | वृष | ५ | २६ | १९ | २० | २५ | २० | २२ | ९ | ४४ | व्यतिपात पुण्यं, कृष्ण चतुर्थी व्रत, करक ४, करवा चौथ व्रत,A |
| २३ | ५ | बु | ४६ | ४९ | २५ | ६ | रो | २२ | २८ | १५ | २२ | व्य | १ | ५० | ७ | ७ | कौ | १३ | ३४ | ११ | ४९ | २८ | ४० | ६ | २३ | १७ | ५१ | २९ | १८ | 15 | मि. २८।५३ | ५ | २७ | १८ | ४५ | २७ | २१ | ३ | १० | ३९ | श्री पद्म प्रभु जयंती (जैन) |
| २४ | ६ | गु | ५२ | ४२ | २७ | २८ | मृ | २९ | ५२ | १८ | २० | वरि | ४ | १३ | ८ | ५ | ग | १९ | ५२ | १४ | २० | २८ | ३५ | ६ | २४ | १७ | ५० | ३० | १९ | 16 | मिथुन | ५ | २८ | १८ | १२ | २९ | २१ | ५० | ११ | ३४ | भद्रा २७।२८ से, बुध चित्रा में २९।८, स्कन्द षष्ठी |
| २५ | ७ | शु | ५७ | २२ | २९ | २१ | आ | ३६ | १६ | २० | ५५ | परि | ५ | ५९ | ८ | ४८ | वि | २५ | १२ | १६ | २९ | २८ | ३१ | ६ | २४ | १७ | ४९ | का१ | २० | 17 | मिथुन | ५ | २९ | १७ | ४१ | ३२ | २२ | ४२ | १२ | २७ | भद्रा १६।२९ तक, सूर्य तुला में प्र. २२।३४, संक्रांति मु. ४५ बैठी.B |
| २६ | ८ | श | ६० | ० | — | — | पुन | ४१ | १३ | २२ | ५४ | शि | ६ | ४६ | ९ | ७ | बा | २९ | ५ | १८ | ५३ | २८ | २७ | ६ | २५ | १७ | ४८ | २ | २१ | 18 | क. १६।२८ | ६ | ० | १७ | १३ | ३४ | २३ | ३८ | १३ | १७ | कालाष्टमी, अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान मथुरा |
| २७ | ८ | र | ० | २१ | ६ | ३६ | पु | ४४ | २१ | २४ | १० | सि | ६ | १४ | ८ | ५५ | कौ | ० | २१ | ६ | ३४ | २८ | २३ | ६ | २५ | १७ | ४७ | ३ | २२ | 19 | कर्क | ६ | १ | १६ | ४७ | ३६ | २४ | ० | १४ | ३ | अष्टमी वृद्धि |
| २८ | ९ | चं | १ | २४ | ७ | ० | श्ले | ४५ | २९ | २४ | ३८ | मा | ४ | १० | ८ | ६ | ग | १ | २४ | ७ | ० | २८ | १९ | ६ | २६ | १७ | ४६ | ४ | २३ | 20 | सिं. २६।३० | ६ | २ | १६ | २३ | ३८ | २४ | ३८ | १४ | ४४ | भद्रा १८।५४ से, बुध तुला में प्र. २६।१०, शुक्र विशाखा में २८।४६ |
| २९ | १० | मं | ० | २२ | ६ | ३६ | म | ४४ | ३४ | २४ | १६ | शु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वि | ० | २२ | ६ | ३६ | २८ | १५ | ६ | २७ | १७ | ४५ | ५ | २४ | 21 | सिंह | ६ | ३ | १६ | १ | ४१ | २५ | ४० | १५ | २२ | भद्रा ६।३६ तक, रमा एकादशी व्रत स्मार्त |
| ० | ११ | मं | ५७ | १९ | २९ | २२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | एकादशी क्षयः |
| ३० | १२ | बु | ५२ | २३ | २७ | २५ | पूफा | ४१ | ४७ | २३ | १० | ब | ४८ | २० | २५ | ४८ | कौ | २५ | ३ | १६ | २९ | २८ | ११ | ६ | २७ | १७ | ४४ | ६ | २५ | 22 | कं. २८।४७ | ६ | ४ | १५ | ४१ | ४२ | २६ | ४२ | १५ | ५८ | नेपच्यून मार्गी २१।५७, रमा एकादशी व्रत वैष्णव, गोवत्स पूजा |
| का १ | १३ | गु | ४५ | ५४ | २४ | ४० | उफा | ३७ | २३ | २१ | ५५ | ग | ४० | १४ | २२ | ३४ | ग | १९ | १८ | १४ | ११ | २८ | ७ | ६ | २८ | १७ | ४३ | ७ | २६ | 23 | कन्या | ६ | ५ | १५ | २४ | ४५ | २७ | ४६ | १६ | ३२ | भद्रा २४।४९ से, प्रदोष व्रत, धन तेरस, धन्वन्तरी जयंती., यम C |
| २ | १४ | शु | २८ | १२ | २१ | ४५ | ह | ३१ | ४३ | १९ | २० | वै | ३१ | ६ | १८ | ५५ | वि | १२ | ९ | ११ | २० | २८ | ३ | ६ | २९ | १७ | ४२ | ८ | २७ | 24 | तु. १९।५४ | ६ | ६ | १५ | ९ | ४७ | २८ | ५१ | १७ | ७ | भद्रा ११।२० तक, रूप चतुर्दशी नरक चौदस, मास शिवरात्रि,D |
| ३ | ३० | श | २९ | ४२ | १८ | २२ | चि | २५ | १२ | १६ | ३४ | वि | २१ | १५ | १४ | ५९ | च | ४ | ० | ८ | ५ | २७ | ५९ | ६ | २९ | १७ | ४१ | ९ | २८ | 25 | तुला | ६ | ७ | १४ | ५६ | ५० | २९ | ५८ | १७ | ४४ | शनि वक्री २१।२२, देव पितृकार्याऽमावस्या, महालक्ष्मी पूजन,E |

A दशरथ चौथ B पू.फा. २ में गुरु २२।१४, सौर कार्तिक मासारंभ C दीपदानं, महामना मालवीय पुण्य दिवस, सायन वृश्चिक में सूर्य २५।५९, भारतीय कार्तिक मास प्रारम्भ, हेमन्त ऋतु प्रारम्भ D दीपदान, सूर्य स्वाति में १५।२९, बुध स्वाति में २५।७ E दीपावली, कमला जयंती, महावीर निर्वाण दिवस जैन

कार्तिक कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ अक्टू. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २५ अक्टू. ❖ कार्तिक कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | [illegible] | १० | ५ | ४ | ६ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ० | २८ | ८ | २५ | १६ | १६ | १९ | २७ | २७ | ५ | १६ | २३ |
| [illegible] | २९ | ५६ | ५ | ४३ | १८ | १६ | ४६ | ४६ | १० | ३० | ५० |
| [illegible] | ११ | ५६ | २८ | ४६ | २२ | २७ | १३ | १३ | ५१ | ४ | १८ |
| ५९ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ११ | ७४ | ० | ३ | ३ | ? | ० | ? |
| [illegible] | २७ | [illegible] | २६ | २ | ३९ | ५१ | ११ | ११ | २ | १० | ३३ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| ३ | २ | १ | १ | २ | ३ | ४ | १ | ३ | ४ | २ | ३ |
| चित्रा | पुन. | कृत्ति. | चित्रा | पू.फा. | विशाखा | आर्द्रा | कृत्ति. | विशा. | धनि. | श्रवण | [illegible] |

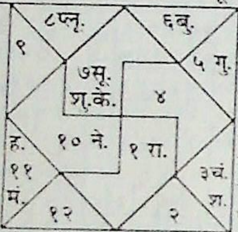


कृष्ण प्रतिपदा शनिवारी, दीपावली को एक राशि पर ४ ग्रह योग शनिवार होना ब्रिटेन, यूरोप, अरब राष्ट्रों व अफ्रीका आदि राष्ट्रों में अराजकता, हिंसक घटनाएं तथा शासकों को मानसिक भय रहेगा। पक्षान्त में तुला का बुध विश्व में उत्पात व युद्धोन्माद कारक है। यथा—**यदा तुला राशिस्थो निशाकर सुतस्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता॥** प्रान्तीय राज्यों में कर्मचारी आन्दोलन, नेताओं में उत्तेजना बन कर नव निर्वाचन जन्य वातावरण बनेगा। पूर्वी प्रान्तों में अमानवीय घटनाएं होकर शासक भयभीत होंगे।

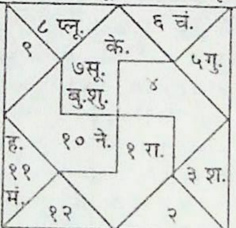


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ५ | १० | ६ | ४ | ६ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ७ | २९ | १० | ६ | १७ | २५ | १९ | २७ | २७ | ५ | १६ | २४ |
| १४ | ४४ | ५७ | ५८ | ५९ | ० | १९ | २३ | २३ | ४ | २९ | १० |
| ५६ | १ | १६ | १६ | १५ | ५४ | ५९ | ५८ | ५८ | ३८ | ४१ | ३५ |
| ५९ | [illegible] | १९ | ९९ | १० | ७४ | ० | ३ | ३ | ० | ० | १ |
| ५० | ५६ | २६ | ३७ | २७ | ३९ | ३ | ११ | ११ | ४२ | ५ | ४२ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| १ | २ | २ | १ | २ | २ | ४ | १ | ३ | ४ | २ | ३ |
| विशाखा | चित्रा | कृत्ति. | विशाखा | पू.फा. | विशा. | आर्द्रा | कृत्ति. | विशा. | धनि. | श्रवण | कृत्ति. |

**तेजी मन्दी विचार**—पक्षारंभ में मूंगफली, अरण्ड, सरसों आदि के तेलों में तेजी होगी। गेहूं, चावल, जौं, ज्वार में मन्दा रहे। कृ. ७ बाद तुला सूर्य से सोना, चांदी, मूंग, मोठ, गुवार, चना व मक्की में तेजी होगी। पक्षान्त काल में रसायनिक वस्तु, रबड़, प्लास्टिक की वस्तुएं तथा रेशमी व ऊनी वस्त्रों में तेजी होगी। शेयर बाजारों में घटाबढ़ी होकर तेजी का रुख रहेगा। मेवा, बादाम, काजू, किसमिस, अखरोट के भावों में अस्थिरता, मशीनरी कलपुर्जों व लोह के सामान में तेजी रहेगी। वक्री शनि चाय, अफीम, तम्बाकू आदि नशीले पदार्थों व औषधियों में तेजी कारक है। **प्राग्द्वारेषु चरन्नविपुत्रो नक्षत्रेषु करोति च वक्रम्। दुर्भिक्षं कुरुते भयमुग्रं मित्राणां च विरोधमवृष्टिम्॥** **आकाश लक्षण**—पक्षारंभ में पूर्वी प्रान्तों बंगाल, आसाम, बिहार, अरुणाचल, मेघालय आदि प्रान्तों तथा समुद्र तटीय नगरों में तूफान के साथ वर्षा होगी। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हरियाणा व पंजाब के भागों में खण्ड वर्षा होगी। पक्षान्त में शीत वृद्धि तथा तेज वायु का प्रकोप रहेगा। राजस्थान व गुजरात के उत्तरी क्षेत्रों में तापमान में गिरावट होगी। **शकुन विचार**—कार्तिक कृष्ण एकादशी को वर्षा होने से अग्रिम वर्षा काल में उत्तम वर्षा होती है। यथा—**कार्तिक बदी एकादशी बादल वर्षा होय। षाढ़ मास वर्षा अधिक धान उगाओ बोय॥** कृष्णा द्वादशी को बादल चाल होने से श्रावणी कालीन फसल की उपज श्रेष्ठ होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २६ अक्टू. से ९ नवं. सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १८ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घं | मि | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदय दिल्ली घं. | मि. | चन्द्रास्त घं | मि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| का | १ | र | २० | ४८ | १४ | ४९ | स्वा | १८ | १४ | १३ | ४८ | प्री | ११ | १ | १० | ५५ | ब | २० | ४८ | १४ | ४९ | २७ | ५५ | ६ | ३० | १७ | ४० | १० | २९ | 26 | वृ. २१।४६ | ६ | ८ | १४ | ४६ | [illegible] | ७ | ७ | १८ | २४ | चन्द्रदर्शन मु. ४५, समर्थता, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा, चित्रगुप्त पूजा, A |
| ५ | २ | चं | ११ | ५४ | ११ | १६ | वि | ११ | १६ | ११ | १ | आ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | कौ | ११ | ५४ | ११ | १६ | २७ | ५१ | ६ | ३१ | १७ | ३९ | ११ | रम | 27 | वृश्चिक | ६ | ९ | १४ | ३७ | ५२ | ८ | १८ | १९ | ९ | रमजान मु. मास ९ प्रा., भैय्या दूज-यम द्वितीया, यमुना स्नान, रोजा प्रा. मु. |
| ६ | ३ | मं | ३ | २५ | ७ | ५३ | अनु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | शो | ४१ | १५ | २३ | १ | ग | ३ | २५ | ७ | ५३ | २७ | ४७ | ६ | ३१ | १७ | ३८ | १२ | २ | 28 | ध. ३०।५ | ६ | १० | १४ | २९ | ५५ | ९ | ३१ | २० | १ | भद्रा १८।१८ से, २८।४८ तक, शुक्र वृश्चिक में प्र. २१।४०, विनायक B |
| ० | ४ | मं | ५५ | ४२ | २८ | ४८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | चतुर्थी क्षय: B ४ व्रत, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ ३ दिन का (बिहार) |
| ७ | ५ | बु | ४९ | १ | २६ | ८ | मू | ५४ | ८ | २८ | ११ | अति | [illegible] | [illegible] | १९ | ३४ | ब | २२ | ११ | १५ | २५ | २७ | ४४ | ६ | ३२ | १७ | ३८ | १३ | ३ | 29 | धनु | ६ | ११ | १४ | २४ | ५६ | १० | ४१ | २१ | ० | पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), गुरु गोविन्द सिंह C |
| ८ | ६ | गु | ४३ | ३९ | २४ | ० | पू.षा | ५० | ४३ | २६ | ५० | सु | २४ | ५३ | १६ | ३० | कौ | १६ | ०८ | १३ | ० | २७ | ४० | ६ | ३३ | १७ | ३७ | १४ | ४ | 30 | धनु | ६ | १२ | १४ | २० | ५८ | ११ | ४६ | २२ | ३ | सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ (बिहार), सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ण |
| ९ | ७ | शु | ३९ | ४६ | २२ | २८ | उ.षा | ४८ | ४७ | २६ | ४ | धृ | १८ | २३ | १२ | ५५ | ग | ११ | ३० | ११ | ९ | २७ | ३६ | ६ | ३३ | १७ | ३६ | १५ | ५ | 31 | म. ८।४ | ६ | १३ | १४ | १८ | [illegible] | १२ | ४३ | २३ | ८ | भद्रा २२।२८ से, शुक्र अनुराधा में २१।५९, जलराम ज., कल्पादि ७, D |
| १० | ८ | श | ३७ | ३० | २१ | ३४ | श्र | ४८ | २६ | २५ | ५६ | शू | १३ | ७ | ११ | ४९ | वि | ८ | २५ | ९ | ५६ | २७ | ३२ | ६ | ३४ | १७ | ३५ | १६ | ६ | N1 | मकर | ६ | १४ | १४ | १८ | १ | १३ | ३१ | २४ | ० | भद्रा ९।५६ तक, बुध विशाखा में २९।२७, गोपाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, E |
| ११ | ९ | र | ३६ | ५१ | २१ | १२ | ध | ४९ | ३९ | २६ | २७ | गं | ९ | ८ | १० | १४ | बा | ६ | ५८ | ९ | २२ | २७ | २९ | ६ | ३५ | १७ | ३४ | १७ | ७ | 2 | कुं. १४।७ | ६ | १५ | १४ | १९ | ३ | १४ | १२ | २४ | १२ | पंचक प्रा. १४।७ से, आंवला नवमी, अक्षय ९, कूष्माण्ड ९, कृत F |
| १२ | १० | चं | ३७ | ४७ | २१ | ४२ | शत | ५२ | २२ | २७ | ३३ | वृ | ५ | २४ | ९ | ९ | तै | ७ | ७ | ९ | २६ | २७ | २५ | ६ | ३६ | १७ | ३४ | १८ | ८ | 3 | कुंभ | ६ | १६ | १४ | २२ | ४ | १४ | ४७ | २५ | १४ | रवि दशमी A द्यूत क्रीड़ा दिवस, गोसंवर्धन सप्ताहारम्भ |
| १३ | ११ | मं | ४० | ८ | २२ | ४० | पू.भा | ५६ | २६ | २९ | ११ | ध्रु | ४ | ५० | ८ | ३३ | ब | ८ | ४६ | १० | ७ | २७ | २१ | ६ | ३६ | १७ | ३३ | १९ | ९ | 4 | मी. २२।४४ | ६ | १७ | १४ | २६ | ६ | १५ | १९ | २६ | १२ | भद्रा १०।७ से २२।४० तक, देव प्रबोधिनी एकादशी व्रत (सबका), G |
| १४ | १२ | बु | ४३ | ४६ | २४ | ८ | उ.भा | ६० | ० | — | — | व्या | ४ | १९ | ८ | २१ | ब | ११ | ४८ | ११ | २० | २७ | १८ | ६ | ३७ | १७ | ३२ | २० | १० | 5 | मीन | ६ | १८ | १४ | ३२ | ७ | १५ | ४८ | २७ | ८ | हरिवासराऽभावः, मन्वादि १२, कालिदास ज. H वैरागी नवोदर (पंजाब) |
| १५ | १३ | गु | ४८ | २८ | २६ | १ | उ.भा | १ | ३९ | ७ | १७ | ह | ४ | ४२ | ८ | ३१ | कौ | १५ | ५९ | १३ | २ | २७ | १४ | ६ | ३८ | १७ | ३१ | २१ | ११ | 6 | मीन | ६ | १९ | १४ | ३९ | १० | १६ | १५ | २८ | २ | सूर्य विशाखा में २३।३६, पू.फा. ३ में गुरु १०।२३, प्रदोष व्रत, मेला वीर H |
| १६ | १४ | शु | ५४ | २ | २८ | १५ | रे | ७ | ५० | ९ | ४७ | व | ५ | ५० | ८ | ५९ | ग | २१ | ९ | १५ | ६ | २७ | १० | ६ | ३९ | १७ | ३१ | २२ | १२ | 7 | मे. ९।४७ | ६ | २० | १४ | ४९ | ११ | १६ | ४४ | २८ | ५५ | भद्रा २८।२५ से, पंचक समा. ९।४७, मार्गी हर्षल २१।३, भरणी ४ में राहु J |
| १७ | १५ | श | ६० | ० | — | — | अ | १४ | ४७ | १२ | ३४ | सि | ७ | ३३ | ९ | ४१ | वि | २७ | ३ | १७ | २९ | २७ | ७ | ६ | ३९ | १७ | ३० | २३ | १३ | 8 | मेष | ६ | २१ | १५ | ० | १२ | १७ | १३ | २९ | ४८ | भद्रा १७।२९ तक, बुध वृश्चिक में प्र. १३।५९, सत्यव्रत पूर्णिमा मेला, K |
| १८ | १५ | र | ० | १२ | ६ | ४५ | भ | २२ | १६ | १५ | ३५ | व्य | ९ | ४२ | १० | ३३ | ब | ० | १२ | ६ | ४५ | २७ | ४ | ६ | ४० | १७ | ३० | २४ | १४ | 9 | वृ. २२।५१ | ६ | २२ | १५ | १२ | १५ | १७ | ४५ | ६ | ४२ | पूर्णिमा वृद्धि, पूर्णिमा पुण्यं, व्यतिपात पुण्यम् |

C [illegible] (प्रा. मत से) D अष्टान्हिक जैन व्रतारम्भ, सहस्त्रार्जुन जयंती, सरदार पटेल जन्म दि., श्रीमती इन्दिरा गांधी पुण्य दिवस E गौ पूजा, यव धान्यादि दान, गौशाला निर्माण, गोसंवर्धन सप्ताह समाप्त, नवम्बर मास ११ ता. ३० F युगादि नवमी, [illegible] भातृ पूजा, मथुरा परिक्रमा G तुलसी विवाह, भीष्म पंचकारंभ, चातुर्मास व्रत नियमादि समाप्ति, मेला पुष्कर (राज.), पुण्डर पुर यात्रा (महाराष्ट्र) J विशाखा २ में केतु २८।४६, बैकुण्ठ १४, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिवस, चौमासी चौदस जैन

## कार्तिक शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ♦ ता. १ नवंबर

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ९ | १० | ६ | ४ | ७ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| १४ | ११ | ३३ | १८ | १९ | ३ | १९ | २७ | २७ | ५ | १६ | २८ |
| १४ | ५५ | २४ | २४ | १० | ४३ | १७ | १ | १ | ० | ३० | २२ |
| १८ | १८ | ७ | १७ | २६ | २४ | ५९ | ४२ | ४२ | ४५ | ५९ | ५९ |
| ६० | ८०१ | २२ | ९५ | ९ | ७४ | ० | ३ | ३ | ० | ० | ०१ |
| १ | १४ | ५४ | ५९ | ४७ | ३७ | ४४ | ११ | ११ | २१ | १९ | ५१ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | व | मा | मा |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

## [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

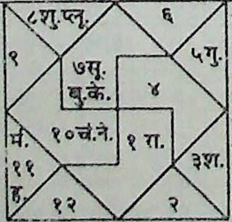


रविवार को चन्द्रदर्शन व शनिवार को ग्रहण होना शासकों तथा प्रजा में भयवृद्धि प्रद है। देश के मध्य भाग में आतंकवादी घटनाओं से जनता त्रस्त होगी। सत्तारूढ़ दल में अस्थिरता एवं भय की वृद्धि होगी। ग्रस्तास्त चंद्रग्रहण सत्ता परिवर्तनकारी फलप्रद है। यथा— ग्रस्तोदितौ च ग्रस्तास्तौ धान्य भूपाल नाशकौ। सर्वग्रस्तौ सूर्य चन्द्रौ दुर्भिक्ष मरण प्रदौ॥ मुस्लिम राष्ट्रों की उग्रता के दुष्प्रभाव से पाश्चात्य राष्ट्रों में चिन्ता बढ़ेगी। प्रधान शासकों को कष्ट एवं आतंकित रहेंगे। क्रूरा वक्रा यदा काले सौम्याः शीघ्रास्तु चागताः। अनावृष्टिश्च दुर्भिक्षं नृपराष्ट्र भयंकराः॥ पश्चिमी राष्ट्रों में जनता आतंकित एवं बड़े राष्ट्रों में कहीं बारूद विस्फोट अथवा आणविक विस्फोट से हानि होगी। तेजी मन्दी विचार— चन्द्रदर्शन मु. ४५ से मोंठ, मूंग, बाजरा, गुवार में मन्दी रहेगी। वृश्चिके शुक्र से कृ. ३ से गुड़, शक्कर, चीनी, घी आदि रस पदार्थों तथा मेवा सामान, काजू, बादाम व अखरोट, किसमिस तेज रहेगी। शु. ७ से शेयर बाजार, कैमीकल सामान और प्लास्टिक सामान, रुई, सूत, कपास व बारदाना में तेजी रहेगी। वस्त्रों, चांदी, सोना में झटके की तेजी बनेगी। देश में आयात निर्यात का जोर रहेगा। आकाश लक्षण— शु. ३ के बाद बादल चाल के साथ शीत वायु का प्रकोप बढ़ेगा। पर्वतीय क्षेत्रों भूटान, बंगाल, हिमाचल प्रदेश आदि क्षेत्रों पर हिमपात अथवा ओलावृष्टि होगी। मध्य भारत में वायु वेग विशेष रहेगा। पंजाब, दिल्ली, हरियाणा, आदि क्षेत्रों में शीत बढ़कर, तापमान में गिरावट होगी। शकुन विचार— कार्तिक शुक्ला एकादशी को वर्षा होने पर आषाढ़ मास में आगे उत्तम वर्षा होती है। यथा— कार्तिक सुदी एकादशी बादल बिजुलि जोई। तौ आषाढ़ में भड्डुली बिरखा उत्तम होई॥ शुक्ला पूर्णिमा को वर्षा होना धान्य भावों में तेजी कारक होता है।

## ता. ९ नवं. ♦ कार्तिक शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

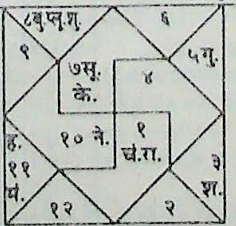


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ० | १० | ७ | ४ | ७ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २२ | २१ | १६ | १ | २० | १३ | १९ | २६ | २६ | ४ | १५ | २४ |
| १५ | ४१ | ३९ | ० | २५ | ४० | ९ | ३६ | ३६ | ५९ | ३४ | ३४ |
| १२ | ७ | ८ | ११ | ४६ | १३ | ३ | १६ | १६ | १९ | ३० | २१ |
| ६० | ७०८ | २६ | ९२ | ८ | ७४ | १ | ३ | ३ | ० | ० | २ |
| १५ | ५३ | ८ | ४५ | ५६ | ३५ | ३६ | ११ | ११ | ३ | ३५ | ० |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

K कार्तिक स्नान समा., पुष्कर राज व रेणुका तीर्थ गढ़गंगा, भीष्म पंचका समा., नानक ज., जैन अष्टान्हिक व्रत पूर्ति, निंबार्काचार्य जयंती, रथयात्रा जैन, चन्द्र ग्रहण ग्रस्तास्त, देव दीवाली।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. १० से २३ नवम्बर सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १९ कार्तिक से २ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

| रा. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | स्टैं.टा. सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. कार्तिक | मु. रमजान | अं. नवम्बर | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | [illegible] | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| का.१९ | १ | चं | ६ | ४८ | ९ | २४ | कृ | ३० | ३ | १८ | ४२ | वरि | १२ | ८ | ११ | ३२ | कौ | ६ | ४८ | ९ | २४ | २७ | ० | ६ | ४१ | १७ | २९ | २५ | १५ | 10 | वृष | ६ | २३ | १५ | २७ | [illegible] | १८ | २० | ७ | ३३ |
| २० | २ | मं | १३ | ३० | १२ | ६ | रो | ३७ | ४९ | २१ | ५० | प | १४ | ३७ | १२ | ३२ | ग | १३ | ३० | १२ | ६ | २६ | ५७ | ६ | ४२ | १७ | २८ | २६ | १६ | 11 | वृष | ६ | २४ | १५ | ४३ | १८ | १९ | ० | ८ | ३३ |
| २१ | ३ | बु | २० | २ | १४ | ४३ | मृ | ४५ | १८ | २४ | ५० | शि | १६ | ५७ | १३ | २९ | वि | २० | २ | १४ | ४३ | २६ | ५३ | ६ | ४२ | १७ | २८ | २७ | १७ | 12 | मि. ११।२१ | ६ | २५ | १६ | १ | १९ | १९ | ४५ | ९ | २८ |
| २२ | ४ | गु | २६ | १ | १७ | ८ | आ | ५२ | ९ | २७ | ३५ | सि | १८ | ५४ | १४ | १७ | बा | २६ | १ | १७ | ८ | २६ | ५० | ६ | ४३ | १७ | २८ | २८ | १८ | 13 | मिथुन | ६ | २६ | १६ | २० | २२ | २० | ३५ | १० | २२ |
| २३ | ५ | शु | ३१ | ६ | १९ | १० | पुन | ५७ | ५८ | २९ | ५५ | सा | २० | ११ | १४ | ४८ | तै | ३१ | ६ | २९ | १० | २६ | ४७ | ६ | ४४ | १७ | २७ | २९ | १९ | 14 | क. २३।२३ | ६ | २७ | १६ | ४२ | २४ | २१ | ३० | ११ | १२ |
| २४ | ६ | श | ३४ | ५४ | २० | ४२ | पु | ६० | ० | — | — | शुभ | २० | ३४ | १४ | ५८ | ग | ३ | ९ | ८ | २ | २६ | ४४ | ६ | ४५ | १७ | २६ | ३० | २० | 15 | कर्क | ६ | २८ | १७ | ६ | २५ | २२ | २७ | ११ | ५९ |
| २५ | ७ | र | ३७ | ६ | २१ | ३६ | पु | २ | २५ | ७ | ४३ | शु | १९ | ४६ | १४ | ४० | वि | ६ | १२ | ९ | १४ | २६ | ४१ | ६ | ४६ | १७ | २६ | मा१ | २१ | 16 | कर्क | ६ | २९ | १७ | ३१ | २७ | २३ | २७ | १२ | ४१ |
| २६ | ८ | चं | ३७ | २९ | २१ | ४६ | श्ले | ५ | १४ | ८ | ५२ | ब | १७ | ३७ | १३ | ४९ | बा | ७ | ३१ | ९ | ४७ | २६ | ३८ | ६ | ४६ | १७ | २६ | २ | २२ | 17 | सिं. ८।५२ | ७ | ० | १७ | ५८ | ३० | २४ | ० | १३ | १८ |
| २७ | ९ | मं | ३५ | ५५ | २१ | ९ | म | ६ | १४ | ९ | १७ | ऐं | १३ | ५९ | १२ | २३ | तै | ६ | ५६ | ९ | ३३ | २६ | ३५ | ६ | ४७ | १७ | २५ | ३ | २३ | 18 | सिंह | ७ | १ | १८ | २८ | ३१ | २४ | २७ | १३ | ५४ |
| २८ | १० | बु | ३२ | २० | १९ | ४७ | पूफा | ५ | २० | ८ | ५६ | वै | ८ | ५० | १० | २० | व | ४ | २४ | ८ | ३४ | २६ | ३२ | ६ | ४८ | १७ | २५ | ४ | २४ | 19 | कं. १४।४४ | ७ | २ | १८ | ५९ | ३२ | २५ | २८ | १४ | २७ |
| २९ | ११ | गु | २७ | १२ | १७ | ४२ | हस्त | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ब | ० | १ | ६ | ४९ | २६ | २९ | ६ | ४९ | १७ | २४ | ५ | २५ | 20 | कन्या | ७ | ३ | १९ | ३१ | ३५ | २६ | ३० | १५ | ० |
| ३० | १२ | शु | २० | २४ | १४ | ५९ | चि | ५२ | ३१ | २७ | ५० | आ | ४५ | ८ | २४ | ५३ | तै | २० | २४ | १४ | ५९ | २६ | २६ | ६ | ५० | १७ | २४ | ६ | २६ | 21 | तु. १७।२ | ७ | ४ | २० | ६ | ३६ | २७ | ३४ | १५ | ३५ |
| मा.१ | १३ | श | १२ | २२ | ११ | ४७ | स्वा | ४५ | ४५ | २५ | ९ | सौ | ३५ | ९ | २० | ५४ | व | १२ | २२ | ११ | ४७ | २६ | २३ | ६ | ५० | १७ | २४ | ७ | २७ | 22 | तुला | ७ | ५ | २० | ४२ | ३८ | २८ | ४० | १६ | १३ |
| २ | १४ | र | ३ | २९ | ८ | १५ | वि | ३८ | २४ | २२ | १३ | शो | २४ | ३५ | १६ | ४१ | श | ३ | २९ | ८ | १५ | २६ | २१ | ६ | ५१ | १७ | २४ | ८ | २८ | 23 | वृ. १६।५७ | ७ | ६ | २१ | २० | ४० | २९ | ५१ | १६ | ५५ |
| ० | ३० | र | ५४ | ९ | २८ | ३१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ० ० ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

- बुध अनुराधा में १७।४३, अशून्य शयन २ व्रत
- भद्रा २५।२६ से, शुक्र ज्येष्ठा में १५।२२, सौभाग्य सुन्दरी व्रत
- भद्रा १४।४३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
- सुविधानाथ ज. व दीक्षा दिवस जैन, पं. जवाहर लाल नेहरू A
- भद्रा २०।४२ से, A ज., बाल दिवस, बाल मेला (दिल्ली)
- भद्रा ९।१४ तक, सूर्य वृश्चिक में प्र. २२।२२ मु. १५ बैठी, B
- श्री काल भैरवाष्टमी-प्रथमाष्टमी (उड़ीसा), भैरव जी दर्शन पूजन D वैतरणी व्रत
- भद्रा ८।३४ से १९।४७ तक, सूर्य अनुराधा में २९।४२, बुध ज्ये. C
- बुध पश्चिम में उदय ११।१३, उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, D
- प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य तिथि, जुमा-तुल-विदा मु.
- भद्रा ११।४७ से २२।३ तक, शुक्र मूल धनु में प्रवेश ८।५५, E
- देव पितृकार्याऽमावस्या, श्री बालाजी ज., मेला पुरमण्डल F
- अमावस्या क्षय:

B संक्रांति पुण्य, पू.भा. में मंगल १४।४२, सहादत हजरत अली मु., सौर मार्गशीर्ष मास प्रा. C में १२।४२, श्री महावीर स्वामी दीक्षा दिवस (जैन), श्रीमती इन्दिरा गांधी जन्म दि
E मास शिवरात्रि व्रत, सायन धनु में सूर्य २३।३३, भारतीय मार्गशीर्ष प्रा., शब-ए-कद्र मु. F देविका स्नान (जम्मू)

## मार्गशीर्ष कृ. ८ चन्द्र प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ नवं. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं] ता. २३ नवं. ❖ मार्गशीर्ष कृ. १४ रवि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

ता. १७ नवं.:

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ३ | १० | ७ | ४ | ७ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ० | २८ | २० | १३ | २१ | २३ | १८ | २६ | २६ | ५ | १६ | २४ |
| १७ | १० | १७ | १३ | ३३ | ३६ | ५३ | १० | १० | १ | ४० | ५४ |
| ५८ | २६ | ३४ | ६ | ५३ | ४३ | १६ | ४९ | ४९ | ८ | ९ | ४७ |
| ६० | [illegible] | २८ | २० | ७ | ७४ | २ | ३ | ३ | ० | ० | २ |
| ३० | ० | ४४ | १२ | ५८ | ३२ | २६ | ११ | ११ | २७ | ५१ | ७ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| विशा. ४ | आश्लेषा ४ | पू.भा. १ | अनु. ३ | पू.फा. ३ | ज्येष्ठा ३ | आर्द्रा ४ | भरणी ४ | विशा. २ | धनि. ४ | श्रवण ३ | ज्येष्ठा ३ |

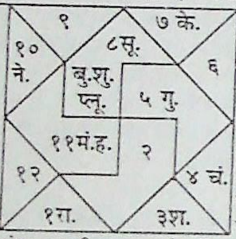


वक्री शनि के साथ सूर्य का षडाष्टक योग तथा अमावस्या का क्षय चीन, जापान, भूटान, नेपाल, बर्मा तथा पूर्वी प्रान्तों में भूकम्प, भूस्खलन अथवा तूफानादि प्राकृतिक-प्रकोपकारी फलप्रद है। दक्षिणी प्रदेशों में अग्निकाण्ड, बारूद विस्फोट आदि गतिविधि रहकर पक्षान्त में शांति होगी। मास में पांच सोमवार शुभ सूचक हैं। यथा—सोमस्य पंचवारा स्तु यत्रकाले भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा:॥ अत: प्रजा में भय निवृत्ति हेतु शासकों द्वारा कठोर कदम उठाकर सुरक्षा व्यवस्था में सुधार बनेगा। केन्द्र में शासक नीति की सबलता का देश में सम्मान बढ़ेगा। प्राकृतिक आपदा हेतु नियन्त्रक उपचार बढ़ेंगे। तेजी मन्दी विचार—कृष्ण १ अनु. बुध से चीनी, गुड़, शक्कर, घी, तथा ऊन के वस्त्रों में तेजी होगी। मोंठ, मूंग, गुवार, बाजरा के भावों में घटाबढ़ी व अस्थिरता रहेगी। वृश्चिक संक्रांति १५ मु. चावल, गेहूं, जौ,ज्वार व चना में तेजी कारक है। पक्ष उत्तरार्ध में सरसों, सोयाबिन, मूंगफली, एरण्ड आदि तेलों में, वनस्पति घी तथा शेयर बाजार में उछाले की तेजी चलेगी। फसलों में कीट उपद्रव वश धान्य भाव तेज होंगे। चौपायों में तेजी होगी। प्लास्टिक, लोहा सामान में गिरावट। सोना तेज, चांदी में घटाबढ़ी रहकर मन्दी रहेगी। आकाश लक्षण—पक्षारंभ में बुध-शुक्र का योग वर्षा कारक है। हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली के कई भागों में वर्षा होगी। राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्रादि प्रदेशों में सामान्यत: खण्ड वृष्टि होगी। पक्ष में बादल चाल, धुन्ध एवं वायु तीव्रता से शीत वृद्धि रहेगी। मौसम में शरद का परिवर्तन बनेगा। शकुन विचार—मृगशिर वदी १४ व अमावस्या को बादल दर्शन होने पर आगे घास व अनाज के भाव तेज रहते हैं। कृष्णा ७ को आकाश साफ रहे तो वैशाख मास से धान्य भाव मन्दे रहते हैं। यथा—मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां निर्मल चेद् दिवानिशम्। धान्यं समर्घ वैशाखे साधनतायां मुर्हता॥

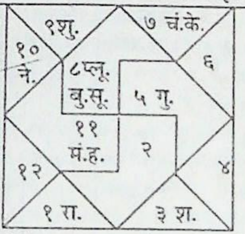


ता. २३ नवं.:

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ६ | १० | ७ | ४ | ८ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ६ | २२ | २३ | २२ | २२ | १ | १८ | २५ | २५ | ५ | १६ | २५ |
| २१ | ४३ | १४ | ८ | १९ | ३ | ३७ | ५१ | ५१ | ४ | ४५ | ७ |
| २० | ४९ | ११ | ५४ | ४० | ५५ | १० | ४५ | ४५ | ३८ | ४५ | ४० |
| ६० | [illegible] | ३० | ८७ | ७ | ७४ | ३ | ३ | ३ | ० | १ | २ |
| ४० | ५३ | २३ | ५२ | ९ | ३१ | १ | ११ | ११ | ४५ | २ | ११ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| अनु. १ | विशा. १ | पू.भा. १ | ज्येष्ठा २ | पू.फा. ३ | मूल १ | आर्द्रा ४ | भरणी ४ | विशा. २ | धनि. ४ | श्रवण ३ | ज्येष्ठा ३ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

...शकुन विचार—मृगशिर वदी १४ व अमावस्या को बादल दर्शन होने पर आगे घास व अनाज के भाव तेज रहते हैं। कृष्णा ७ को आकाश साफ रहे तो वैशाख मास से धान्य भाव मन्दे रहते हैं। यथा—मार्गशीर्षस्य सप्तम्यां निर्मल ...





# मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१७ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २४ नवं. से ८ दिसम्बर सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १७ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायणे, दक्षिण गोले, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | दिनमान प | स्टैं.टा. सूर्योदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं | मि | अस्त घं | मि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| [illegible] | १ | चं | ४४ | ४५ | २४ | ४६ | अनु | ३० | ५१ | ११ | १२ | अति | १३ | ४७ | १२ | २३ | कि | १९ | २४ | १४ | ३८ | २६ | १८ | ६ | ५२ | १७ | २३ | ९ | २९ | 24 | वृश्चिक | ७ | ७ | २२ | ० | [illegible] | ७ | ४ | १७ | ४५ | रुद्र व्रत ( पीड़िया व्रत ) |
| ४ | २ | मं | ३५ | ४३ | २१ | १० | ज्ये | २३ | ३४ | १६ | १९ | सु | .. | .. | .. | .. | बा | १० | ८ | १० | ५६ | २६ | १६ | ६ | ५३ | १७ | २३ | १० | ३० | 25 | ध. १६।१९ | ७ | ८ | २२ | ४० | ४३ | ८ | १८ | १८ | ४२ | चन्द्रदर्शन मु. ३०, समता कारक |
| ५ | ३ | बु | २७ | ३० | १७ | ५४ | मू | १७ | ० | १३ | ४२ | शू | ४३ | २१ | २४ | १४ | तै | १ | २८ | ७ | २९ | २६ | १३ | ६ | ५४ | १७ | २३ | ११ | शव | 26 | धनु | ७ | ९ | २३ | २३ | ४३ | ९ | २८ | १९ | ४५ | भद्रा २८।२६ से, शव्वाल मु. मास १० प्रा., ईद-उल-फितर ईद A |
| ६ | ४ | गु | २० | २९ | १५ | ६ | पू.षा | ११ | ३३ | ११ | ३२ | गं | ३४ | ५५ | २० | ५२ | वि | २० | २९ | १५ | ६ | २६ | ११ | ६ | ५४ | १७ | २३ | १२ | २ | 27 | म. १।१६ | ७ | १० | २४ | ६ | ४४ | १० | ३१ | २० | ५२ | भद्रा १५।६ तक, संत घासीदास जयंती |
| ७ | ५ | शु | १५ | ० | १२ | ५५ | उ.षा | ७ | ३४ | ९ | ५७ | वृ | २७ | ४८ | १८ | २ | बा | १५ | ० | १२ | ५५ | २६ | ९ | ६ | ५५ | १७ | २३ | १३ | ३ | 28 | मकर | ७ | ११ | २४ | ५० | ४६ | ११ | २५ | २२ | ० | बुध मूल धनु में प्रवेश १६।१२, नाग पंचमी (दक्षिण भारते), B |
| ८ | ६ | श | ११ | २१ | ११ | २८ | श्र | ५ | २२ | ९ | ५ | ध्रु | २२ | १० | १५ | ४८ | तै | ११ | २१ | ११ | २८ | २६ | ६ | ६ | ५६ | १७ | २३ | १४ | ४ | 29 | कुं. २०।५६ | ७ | १२ | २५ | ३६ | ४६ | १२ | १० | २३ | ५ | पंचक प्रा. २०।५६ से, चम्पा षष्ठी व्रत, स्कन्द ६, गुहा छठ, C |
| ९ | ७ | र | ९ | ४० | १० | ४९ | ध | ५ | ४ | ८ | ५९ | व्या | १८ | ६ | १४ | ११ | व | ९ | ४० | १० | ४९ | २६ | ४ | ६ | ५७ | १७ | २२ | १५ | ५ | 30 | कुम्भ | ७ | १३ | २६ | २२ | ४८ | १२ | ४४ | २४ | ० | भद्रा १०।४९ से २२।४८ तक, मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती, D |
| १० | ८ | चं | १० | २ | १० | ५८ | शत | ६ | ४६ | ९ | ४० | ह | २५ | २७ | १३ | १२ | ब | १० | २ | १० | ५८ | २६ | २ | ६ | ५८ | १७ | २२ | १६ | ६ | D1 | मी. २८।४० | ७ | १४ | २७ | १० | ४८ | १३ | २१ | २४ | ५ | महानन्दा नवमी, दिसम्बर मा. १२ ता. ३१ |
| ११ | ९ | मं | १२ | १८ | ११ | ५४ | पू.भा | १० | १८ | ११ | ६ | व | १४ | ३४ | १२ | ४८ | कौ | १२ | १८ | ११ | ५४ | २६ | ० | ६ | ५८ | १७ | २२ | १७ | ७ | 2 | मीन | ७ | १५ | २७ | ५८ | ४९ | १३ | ५१ | २५ | ३ | शुक्र पूर्वाषाढ़ा में २६।४३, पू.फा. ४ में गुरु ९।३९, कल्पादि ९ |
| १२ | १० | बु | १६ | १५ | १३ | २९ | उ.भा | १५ | २७ | १३ | १० | सि | १४ | ४७ | १२ | ५४ | ग | १६ | १५ | १३ | २९ | २५ | ५८ | ६ | ५९ | १७ | २२ | १८ | ८ | 3 | मीन | ७ | १६ | २८ | ४७ | ५१ | १४ | १९ | २५ | ५८ | भद्रा २६।२९ से, सूर्य ज्येष्ठा में ९।५६, श्री अमरनाथ जन्म व E |
| १३ | ११ | गु | २१ | ३१ | १५ | ३६ | रे | २१ | ५१ | १५ | ४४ | व्य | १५ | ५९ | १३ | २३ | वि | २१ | ३१ | १५ | ३६ | २५ | ५६ | ७ | ० | १७ | २३ | १९ | ९ | 4 | मे. १५।४४ | ७ | १७ | २९ | ३८ | ५१ | १४ | ४७ | २६ | ५१ | भद्रा १५।३६ तक, पंचक समाप्त १५।४४, मोक्षदा एकादशी F |
| १४ | १२ | शु | २७ | ४१ | १८ | ५ | अ | २९ | ७ | १८ | ३९ | वरि | १७ | ५३ | १४ | १० | बा | २७ | ४१ | १८ | ५ | २५ | ५५ | ७ | १ | १७ | २३ | २० | १० | 5 | मेष | ७ | १८ | ३० | २९ | ५२ | १५ | १६ | २७ | ४४ | मंगल मीन में प्रवेश २४।१५, अखंड द्वादशी-व्यंजन द्वादशी |
| १५ | १३ | श | ३४ | २१ | २० | ४६ | भ | ३६ | ५० | २१ | ४५ | परि | २० | ११ | १५ | ६ | कौ | ० | ५८ | ७ | २५ | २५ | ५३ | ७ | १ | १७ | २३ | २१ | ११ | 6 | वृ. २८।३३ | ७ | १९ | ३१ | २१ | ५३ | १५ | ४७ | २८ | ३७ | शनि प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, गुरु ग्रंथ साहिब व वार्षिक G |
| १६ | १४ | र | ४१ | ८ | २३ | २९ | कृ | ४४ | ३९ | २४ | ५४ | शि | २२ | ३८ | १६ | ५ | ग | ७ | ४४ | १० | ८ | २५ | ५२ | ७ | २ | १७ | २३ | २२ | १२ | 7 | वृष | ७ | २० | ३२ | १४ | ५३ | १६ | २१ | २९ | ३१ | भद्रा २३।२९ से, पिशाचमोचन श्राद्ध, त्रिपुर भैरव ज., संभवनाथ ज. |
| १७ | १५ | चं | ४७ | ४४ | २६ | ८ | रो | ५२ | १७ | २७ | ५७ | सि | २५ | ० | १७ | ३ | वि | १४ | २८ | १२ | ५० | २५ | ५० | ७ | ३ | १७ | २३ | २३ | १३ | 8 | वृष | ७ | २१ | ३३ | ७ | ५५ | १६ | ५९ | ३० | २७ | भद्रा १२।५० तक, बुध पू.षा. में २७।५०, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, H |

A ( मु. ), विनायक ४ व्रत B गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस ( प्रा. मत से ), श्री राम विवाहोत्सव C मूलक रूपिणी छठ ( बंगाल ), श्री राम कलेवा D श्री दुर्गाष्टमी, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
E मोक्ष दिन जैन, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस F व्रत सबका, मौनी एकादशी ( जैन ), श्री गीता जयंती, मातंगी जयंती, वैकुण्ठ एकादशी, मेला जोड़ ३ दिन का प्रारम्भ ( पंजाब )
G उत्सव, मेला जोड़ पूर्ण H पूर्णिमा पुण्यं, श्री दत्तात्रेय जयंती, अन्नपूर्णा जयंती

**मार्गशीर्ष शु. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ दिसंबर [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १० | १० | ८ | ८ | ८ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| १४ | १७ | २७ | ३ | २३ | १० | १८ | २५ | २५ | ५ | १६ | २५ |
| २७ | ४५ | २४ | ३२ | १२ | ५९ | १० | २६ | २६ | १२ | ५४ | २५ |
| १० | ५३ | ५ | ४१ | ४० | ४८ | ३४ | १८ | १८ | ९ | ५८ | २३ |
| ६० | ७९१ | ३२ | ८१ | ५ | ७४ | ३ | ३ | ३ | १ | १ | २ |
| ४८ | ६ | १४ | ६ | ५८ | २६ | ४२ | ११ | ११ | १० | १२ | १५ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | अ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

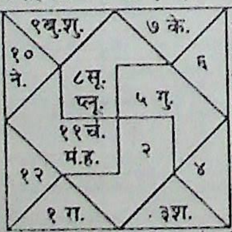


पक्ष में शनि से शुक्र बुध का सम सप्तक योग है जिसका फल शास्त्रकारों ने इस प्रकार लिखा है। यथा—क्रूराणांसह सौम्यश्च यदि स्यात्सप्त सप्तकम्। अनावृष्टिस्तदा ज्ञेया लोक पीडा महत्यपि॥ अतः विश्व में रोग वृद्धि एवं भूकम्पादि प्राकृतिक आपदा बढ़कर जान माल की हानि से प्रजा में भय वृद्धि होगी। अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका व आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में जन उपद्रव, अराजकता व गृह कलह उभरने के योग हैं। मंगलवार को चन्द्रदर्शन पश्चिमी प्रान्तों में साम्प्रदायिक उदंगल और अनेक आन्दोलन से शासन सत्ता में चिन्ता वृद्धि प्रद है। मीने मंगल से देश के अधिकतर भागों में रोगोपद्रव बढ़ने का कारक है। तेजी मन्दी विचार— मंगलवार को चन्द्रदर्शन मसाले की वस्तुओं, मिर्च, लौंग, काली मिर्च, तेजपत्ता आदि किराना वस्तुओं में तेजी कारक है। गेहूं, जौ, चावल, चना, मूंग, उड़द, बाजरा के भावों में घटाबढ़ी, अस्थिरता का वातावरण रहेगा। गुड़, चीनी, शक्कर में तेजी रहेगी। वस्त्र व्यवसायी तेजी से आनन्दित होंगे। सोने में उछाल की तेजी तथा शेयर बाजारों की तेजी के कारण गर्मी रहेगी। मीन के मंगल से चारा घास तथा चौपायों में तेजी होगी। यथा— मीन राशि कुजश्चैव तृणं काष्ठं चतुष्पदम्। महर्घं जायते सर्वं गृह्यते तत्र पण्डितै॥ अतः घास चारा व अन्न का संग्रह व्यापारियों को लाभप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण**— बुध शुक्र का योग अनेक स्थानों पर अतिवर्षा से हानि कारक है। हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश आदि प्रदेशों में लम्बे समय लगातार बादल चाल व खण्ड वर्षा के साथ शीत वात रहेगी। पर्वतीय क्षेत्रों पर हिमपात एवं तूफानी हवाओं से हानि योग प्रद है। बंगाल, बिहार, उड़ीसा व आन्ध्र के क्षेत्रों में उमस की स्थिति बढ़ी हुई रहेगी। **शकुन विचार**— कृष्णा अष्टमी को बादल चाल या वर्षा होने पर अग्रिम ज्येष्ठ व आषाढ़ मास में उत्तम वर्षा होती है। यथा— अगहन सुदि अष्टमी दिनां बादल वर्षा होय। चौमासा बरसे सही संशय करो न कोय॥

**ता. ८ दिसं. ❖ मार्ग. शु. १५ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

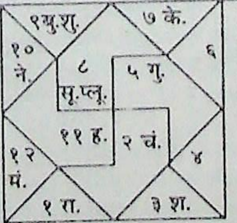


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १ | ११ | ८ | ४ | ८ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २१ | १२ | १ | १२ | २३ | १९ | १७ | २५ | २५ | ५ | १७ | २५ |
| ३३ | १४ | १३ | १९ | ५१ | ४० | ४३ | ४ | ४ | २१ | ४ | ४१ |
| ७ | ५७ | ४६ | ५४ | १७ | २९ | ८ | ३ | ३ | १९ | ३४ | १२ |
| ६० | ७०९ | ३३ | ६४ | ४ | ७४ | ४ | ३ | ३ | १ | १ | २ |
| ५५ | ५४ | ३१ | २९ | ५२ | १९ | ११ | ११ | ११ | ३० | २९ | १६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# पौष कृष्ण पक्ष–१८ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ९ से २३ दिसम्बर सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १८ मार्ग. से २ पौष तक। रवि दक्षि.-उत्तरायणे, दक्षिण गोले, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| ता. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घं | मि | स्टैं.टा. सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | १ | मं | ५२ | [illegible] | २८ | २७ | मृ | ५९ | २८ | ३० | ५१ | सा | २७ | ५ | १७ | ५४ | बा | २० | ५२ | १५ | २४ | २५ | ४९ | ७ | ३ | १७ | २३ | २४ | १४ | 9 | मि. १०।२६ | ७ | २२ | ३४ | २ | [illegible] | १७ | ४३ | ७ | २२ | |
| १९ | २ | बु | ५९ | २३ | ३० | ४९ | आ | ६० | ० | — | — | शुभ | २८ | ४५ | १८ | ३४ | तै | २६ | ४३ | १७ | ४५ | २५ | ४८ | ७ | ४ | १७ | २३ | २५ | १५ | 10 | मिथुन | ७ | २३ | ३४ | ५८ | ५६ | १८ | ३१ | ८ | १७ | |
| २० | ३ | गु | ६० | ० | — | — | आ | ५ | ५९ | ९ | २९ | शु | २९ | ५१ | १९ | १ | व | ३१ | ४१ | १९ | ४८ | २५ | ४६ | ७ | ५ | १७ | २३ | २६ | १६ | 11 | क. २१।१५ | ७ | २४ | ३५ | ५४ | ५८ | १९ | २५ | ९ | ९ | भद्रा १९।४८ से, मंगल उ. भाद्रपदा में २३।२०, उर्स मेला A |
| २१ | ३ | शु | ४ | १ | ८ | ४२ | पुन | ११ | ४४ | ११ | ४७ | ब | ३० | १७ | १९ | १२ | वि | ४ | १ | ८ | ४२ | २५ | ४५ | ७ | ६ | १७ | २४ | २७ | १७ | 12 | कर्क | ७ | २५ | ३६ | ५२ | ५९ | २० | २१ | ९ | ५७ | भद्रा ८।४२ तक, तृतीया वृद्धि. कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| २२ | ४ | श | ७ | ४१ | १० | ११ | पु | १६ | ३० | १३ | ४२ | ऐ | २२ | ५४ | १९ | ४ | बा | ७ | ४१ | १० | ११ | २५ | ४४ | ७ | ६ | १७ | २४ | २८ | १८ | 13 | कर्क | ७ | २६ | ३७ | ५२ | [illegible] | २१ | २० | १० | ४० | शुक्र उ.षा. में २१।४ |
| २३ | ५ | र | १० | १० | ११ | २१ | श्ले | २० | ७ | १५ | २० | वै | २८ | ३४ | १८ | ३३ | तै | १० | १० | ११ | २१ | २५ | ४४ | ७ | ७ | १७ | २४ | २९ | १९ | 14 | सिं. १५।१० | ७ | २७ | ३८ | ५१ | ० | २२ | १९ | ११ | १८ | |
| २४ | ६ | चं | ११ | १९ | ११ | ३९ | म | २२ | २५ | १६ | ६ | वि | २६ | ११ | १७ | ३६ | व | ११ | १९ | ११ | ३९ | २५ | ४३ | ७ | ८ | १७ | २४ | ३० | २० | 15 | सिंह | ७ | २८ | ३९ | ५१ | २ | २३ | १८ | ११ | ५३ | भद्रा ११।३९ से २३।४० तक |
| २५ | ७ | मं | १० | ५९ | ११ | ३२ | पूफा | २३ | १६ | १६ | २७ | प्री | २२ | ३७ | १६ | ११ | ब | १० | ५९ | ११ | ३२ | २५ | ४२ | ७ | ८ | १७ | २५ | पौ१ | २१ | 16 | कं. २२।२६ | ७ | २९ | ४० | ५३ | ३ | २४ | ० | १२ | २६ | सूर्य मूल धनु में प्रवेश १३।१, संक्रांति पुण्य मु. ३० बैठी, B |
| २६ | ८ | बु | ९ | ४ | १० | ४६ | उफा | २२ | ३५ | १६ | ११ | आ | १७ | ४९ | १४ | १७ | कौ | ९ | ४ | १० | ४६ | २५ | ४२ | ७ | ९ | १७ | २५ | २ | २२ | 17 | कन्या | ८ | ० | ४० | ५६ | ४ | २४ | १७ | १२ | ५८ | बुध वक्री २२।००, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिनसागर पुण्य तिथि |
| २७ | ९ | गु | ५ | ३४ | ९ | २३ | ह | २० | २० | १५ | १७ | सौ | ११ | ४६ | ११ | ५२ | ग | ५ | ३४ | ९ | २३ | २५ | ४१ | ७ | ९ | १७ | २६ | ३ | २३ | 18 | तु. २६।३७ | ८ | १ | ४३ | ० | ४ | २५ | १८ | १३ | ३० | भद्रा २०।२७ से |
| २८ | १० | शु | ० | ३१ | ७ | २२ | चि | १६ | ३६ | १३ | ४८ | शो | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वि | ० | ३१ | ७ | २२ | २५ | ४१ | ७ | १० | १७ | २६ | ४ | २४ | 19 | तुला | ८ | २ | ४४ | ४ | ६ | २६ | २१ | १४ | ५ | भद्रा ७।२२ तक, बुध पश्चिम में अस्त २७।४५, सफला एकादशी C |
| ० | ११ | शु | ५४ | ६ | २८ | ४८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | एकादशी क्षय: |
| २९ | १२ | श | ४६ | ३१ | २५ | ४७ | स्वा | ११ | ३३ | ११ | ४८ | सु | ४६ | ५० | २५ | ५५ | कौ | २० | ५६ | १५ | २१ | २५ | ४० | ७ | १० | १७ | २७ | ५ | २५ | 20 | वृ. २८।१० | ८ | ३ | ४५ | १० | ६ | २७ | २७ | १४ | [illegible] | सफला एकादशी व्रत वैष्णव |
| ३० | १३ | र | ३८ | ४ | २२ | २५ | वि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | धृ | ३६ | ५० | २१ | ५५ | ग | १२ | २२ | १२ | ८ | २५ | ४० | ७ | ११ | १७ | २७ | ६ | २६ | 21 | वृश्चिक | ८ | ४ | ४६ | १६ | ७ | २८ | ३७ | १५ | २९ | भद्रा २२।२५ से, प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु ज. जैन |
| पौ१ | १४ | चं | २९ | ८ | १८ | ५१ | ज्ये | ५१ | २७ | २७ | ४६ | शू | २६ | २५ | १७ | ४५ | वि | ३ | ३८ | ८ | ३९ | २५ | ४० | ७ | ११ | १७ | २८ | ७ | २७ | 22 | ध. २०।४६ | ८ | ५ | ४७ | २३ | ८ | २९ | ५० | १६ | २१ | भद्रा ८।३९ तक, वक्री शनि आर्द्रा ३ में १६।३१, मास शिवरात्री D |
| २ | ३० | मं | २० | ७ | १५ | १५ | मू | ४४ | २३ | २४ | ५७ | गं | १५ | ५४ | १३ | ३४ | ना | २० | ७ | १५ | १५ | २५ | ४० | ७ | १२ | १७ | २८ | ८ | २८ | 23 | धनु | ८ | ६ | ४८ | ३१ | ८ | ३१ | २ | १७ | २२ | देव पितृकार्याऽमावस्या, वकुला अमावस्या ( उड़ीसा ) |

A निजामुद्दीन ( दिल्ली ) B गुरु गोविन्द सिंह जयंती ( सिरोमणी कमेटी अमृतसर अनुसार ), मकर में शुक्र प्रवेश १३।४५. सौर पौष मासारम्भ, मलमास प्रा.
C व्रत स्मार्त, श्री पार्श्वनाथ जयंती जैन D व्रत, सायन मकर में सूर्य १२।५४, रा. पौष मासारंभ, रवि उत्तरायणे शिशिर ऋतु प्रा.

**पौष कृ. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ दिसं. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ५ | ११ | ८ | ४ | ९ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ० | ३ | ६ | १८ | २४ | ० | १७ | २४ | २४ | ५ | १७ | २६ |
| ४१ | ५६ | २० | ३६ | २८ | ४८ | ३ | ३५ | ३५ | ३६ | १८ | १ |
| ५६ | ३२ | ४९ | ५२ | ५० | ४१ | २३ | २५ | २५ | २८ | ४९ | ४१ |
| ६१ | [illegible] | ३४ | १ | ३ | ७४ | ४ | ३ | ३ | १ | १ | २ |
| ४ | ७ | ४९ | ४७ | १८ | ९ | ३९ | ११ | ११ | ५४ | ४२ | १६ |
| मा | मा | मा | मा | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| मूल | उ.फा. | उ.भा. | पू.भा. | पू.फा. | उ.षा. | आर्द्रा | भरणी | विशा. | धनि. | श्रवण | चित्रा |

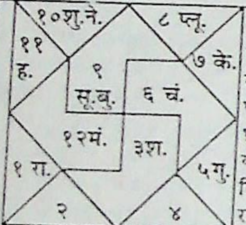


सूर्य का मंगल से केन्द्र योग तथा शनि के साथ सम सप्तक योग यवन राष्ट्रों, अफगानिस्तान, तुर्की, ईरान, ईराक व चीन आदि राष्ट्रों में शासक विरोधी तत्व बढ़कर रक्तपात, उत्पात एवं हिंसक घटनाएं बढ़कर प्रजा में दहशत बढ़ेगी। धनु राशि पर बुध का गोचर भ्रमण भी शासकों में झगड़े व चतुष्पदों की हानि योग कारक है। यथा—धनेमीनेबुधो याति मारयति मृगान्गजान्। राजा विरोधकृत्तत्र चान्यथा न भविष्यति॥ मंगलवारी ३० व संक्रांति राजनायकों नेताओं व शासकों में विग्रह आपसी फूट होकर विग्रहकारी फलप्रद है। यथा—यत्र मासेऽर्के संक्रान्ति शनि भानु कुजे हनि। तदा भवति दुर्भिक्षं तथा स्याद्राज विग्रहः॥ फसलों पर भी जीव जन्तु रोगों आदि प्राकृतिक दुष्प्रभाव बनकर हानि होगी। **तेजी मन्दी विचार**—चना, मूंग, मोंठ, गेहूं, चावल व जौ के भावो में तेजी के बाद मंदी चलेगी। कृ. ३ उ.भा. मंगल से तिल व तेल, गुड़, शक्कर, चीनी, सरसों, सोयाबिन, मूंगफली में तेजी रेहगी। कृ. ८ बुध वक्री से शेयर बाजार भावों तथा रुई, कपास, सूत एवं वस्त्रों में मन्दी का झटका रहेगा। सोना, चांदी मन्दा। लोहे के सामान पीतल, ताम्बा में तेजी। केमीकल सामान, रंग-रोगन आदि में तेजी चलेगी। **आकाश लक्षण**—उत्तरी पूर्वी प्रान्तों भूटान, बंगाल, हिमाचल प्रदेश आदि में तेज हवाओं के साथ हिमपात तथा मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, दिल्ली क्षेत्रों में कहीं-कहीं वर्षा खण्ड रूप में होगी। गुजरात, महाराष्ट्र, कर्णाटका, तमिलनाडु में सामान्य वर्षा होगी। पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में बादल चाल धुन्ध के साथ शरद हवाएं [illegible] की अर्धरात्रि यदि बादल चाल अथवा वर्षा हो तो आगे चातुर्मास में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यथा—पौष अंधेरी सातैं आठैं। रात अंधेरी बादल काठैं॥ तौ चौमासा बरसे पानी। उपजे धान [illegible]

**ता. २३ दिसं. ❖ पौष कृ. ३० मंगल प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

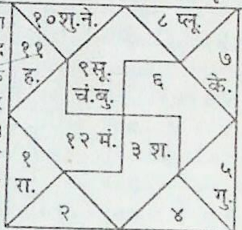


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | ११ | ८ | ४ | ९ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ६ | १ | ९ | १५ | २४ | ८ | १६ | २४ | २४ | ५ | १७ | २६ |
| ४८ | ४ | ५१ | ५७ | ४५ | १३ | ३४ | १६ | १६ | ४८ | २९ | १५ |
| ३१ | २५ | ३७ | ३९ | ५३ | १७ | ५२ | २० | २० | ३३ | २७ | १४ |
| ६१ | [illegible] | ३५ | ६४ | २ | ७४ | ४ | ३ | ३ | २ | १ | २ |
| ८ | २३ | ३४ | ३४ | १२ | १ | ५२ | ११ | ११ | १० | ५० | १५ |
| मा | मा | मा | व | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| मूल | मूल | उ.भा. | पू.भा. | पू.भा. | उ.षा. | आर्द्रा | भरणी | विशा. | धनि. | श्रवण | चित्रा |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पूर्वी प्रान्तों भूटान, बंगाल, हिमाचल प्रदेश आदि में तेज हवाओं के साथ हिमपात तथा ... तेजी। केमीकल सामान, रंग-रोगन आदि में तेजी चलेगी। आकाश लक्षण—उत्तरी पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में बादल चाल धुन्ध के साथ शरद हवाय चलेगी। शकुन विचार—पौष बदी तिथि ७ व ८ की अर्धरात्रि में यदि बादाल चाल अथवा वर्षा हो तो आगे चातुर्मास में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यथा—पौष अंधेरी सातैं आठैं। रात अंधेरी बादल काठैं॥ तौ चौमासा बरसे पानी। उपजे धान करो मनमानी॥ ... गुजरात, महाराष्ट्र, कर्णाटका, तमिलनाडु में सामान्य वर्षा होगी।



# पौष शुक्ल पक्ष-११ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २४ दिसं. २००३ से ७ जन. सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १७ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | ति | वा | तिथि घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | रवि स्पष्ट रा | अं | क | वि | | चन्द्रोदय घं | मि | चन्द्रास्त घं | मि | विवरण |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | बु | ११ | २७ | ११ | ४७ | पू.षा | ३७ | ५३ | २२ | २२ | वृ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ब | ११ | २७ | ११ | ४७ | २५ | ४० | ७ | १२ | १७ | २९ | ९ | २९ | 24 | म. २७।१८ | ८ | ७ | ४९ | ३९ | [illegible] | ८ | १० | १८ | २९ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, शुक्र श्रवण में १६।७ |
| ४ | २ | गु | ३ | ३५ | ८ | ३९ | उ.षा | ३२ | २४ | २० | ११ | व्या | ४७ | २२ | २६ | १० | कौ | ३ | ३५ | ८ | ३९ | २५ | ४१ | ७ | १३ | १७ | २९ | १० | जि. | 25 | मकर | ८ | ८ | ५० | ४८ | ९ | ९ | १० | १९ | ३९ | जिल्काद मु. मास ११ प्रा., वक्री बुध मूल में ११।५६, क्रिसमस डे.A |
| ० | ३ | गु | ५६ | ५८ | ३० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | तृतीया क्षय: |
| ५ | ४ | शु | ५१ | ५८ | २८ | १ | श्र | २८ | २२ | १८ | ३४ | ह | ३९ | ५७ | २३ | १२ | व | २६ | १४ | १६ | ५५ | २५ | ४१ | ७ | १३ | १७ | ३० | ११ | २ | 26 | कुं. ३०।१ | ८ | ९ | ५१ | ५७ | ९ | १० | १ | २० | ४७ | भद्रा १६।५५ से २८।१ तक, पंचक प्रा. ३०।२, विनायक ४ |
| ६ | ५ | श | ४८ | ५६ | २६ | ४८ | ध | २६ | ९ | १७ | ४१ | व | ३४ | २ | २० | ५१ | ब | २० | ११ | १५ | १८ | २५ | ४२ | ७ | १४ | १७ | ३० | १२ | ३ | 27 | कुम्भ | ८ | १० | ५३ | ६ | ९ | १० | ४३ | २१ | ५२ | |
| ७ | ६ | र | ४४ | ३ | २६ | २७ | शत | २५ | ५८ | १७ | ३७ | सिद्धि | २९ | ४८ | १९ | ९ | कौ | १८ | १२ | १४ | ३१ | २५ | ४२ | ७ | १४ | १७ | ३१ | १३ | ४ | 28 | कुम्भ | ८ | ११ | ५४ | १५ | ९ | ११ | १९ | २२ | ५३ | B (प्रा. मत से), श्री राजेन्द्र सुरिश्वर जन्म पुण्य जैन, व्यतिपात पुण्यं |
| ८ | ७ | चं | ४१ | २४ | २७ | ० | पू.भा | २७ | ५६ | १८ | २५ | व्य | २७ | १७ | १८ | ९ | ग | १८ | २७ | १४ | ३७ | २५ | ४३ | ७ | १४ | १७ | ३२ | १४ | ५ | 29 | मी. ११।४ | ८ | १२ | ५५ | २४ | ९ | ११ | ५१ | २३ | ५० | भद्रा २७।० से सूर्य पू.षा. में १५।१०, श्री गुरु गोविन्द सिंह जयंतीB |
| ९ | ८ | मं | ५२ | ४६ | २८ | २१ | उ.भा | ३१ | ५७ | २० | २ | वरि | २६ | २४ | १७ | ४८ | वि | २० | ५० | १५ | ३५ | २५ | ४४ | ७ | १५ | १७ | ३२ | १५ | ६ | 30 | मीन | ८ | १३ | ५६ | ३३ | ९ | १२ | २१ | २४ | ० | भद्रा १५।३५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भौमाष्टमी, श्री शाकंभरी यात्रा |
| १० | ९ | बु | ५७ | ५१ | ३० | २४ | रे | ३७ | ४२ | २२ | २० | प | २६ | ५४ | १८ | १ | बा | २५ | ७ | १७ | १८ | २५ | ४४ | ७ | १५ | १७ | ३३ | १६ | ७ | 31 | मे. २२।२० | ८ | १४ | ५७ | ४२ | ९ | १२ | ४९ | २४ | ४५ | पंचक समा. २२।२०, ईशाई नववर्ष की पूर्व संध्या का पर्व, न्यु इयर इव |
| ११ | १० | गु | ६० | ० | — | — | अ | ४४ | ४५ | २५ | ९ | शि | २८ | २९ | १८ | ३९ | तै | ३० | ५२ | १९ | ३६ | २५ | ४५ | ७ | १५ | १७ | ३४ | १७ | ८ | J1 | मेष | ८ | १५ | ५८ | ५१ | ९ | १३ | १८ | २५ | ३८ | शाम्ब दशमी (उड़ीसा), जनवरी मा. १ ता. ३१ सन् २००४ ई. प्रा. |
| १२ | १० | शु | ४ | ६ | ८ | ५८ | भ | ५२ | ३१ | २८ | १६ | सि | ३० | ४४ | १९ | ३३ | ग | ४ | ६ | ८ | ५४ | २५ | ४७ | ७ | १६ | १७ | ३४ | १८ | ९ | 2 | मेष | ८ | १६ | ५९ | ५९ | ९ | १३ | ४८ | २६ | ३१ | भद्रा २२।१६ से, दशमी वृद्धि, बुध पूर्व में उदय २७।३० |
| १३ | ११ | श | १० | ५८ | ११ | ३९ | कृ | ६० | ० | — | — | सा | ३३ | १६ | २० | ३४ | वि | १० | ५८ | ११ | ३९ | २५ | ४८ | ७ | १६ | १७ | ३५ | १९ | १० | 3 | वृ. ११।४ | ८ | १८ | १ | ८ | ८ | १४ | २१ | २७ | २५ | भद्रा ११।३९ तक, मंगल रेव. में १३।९, गुरु वक्री २१।२६, पवित्रा C |
| १४ | १२ | र | १७ | ५३ | १४ | २५ | कृ | ० | २७ | ७ | २७ | शुभ | ३५ | ४२ | २१ | ३३ | बा | १७ | ५३ | १४ | २५ | २५ | ४९ | ७ | १६ | १७ | ३६ | २० | ११ | 4 | वृष | ८ | १९ | २ | १६ | ८ | १४ | ५८ | २८ | २० | शुक्र धनिष्ठा में १२।१६, प्रदोष व्रत |
| १५ | १३ | चं | २४ | २१ | १७ | १ | रो | ८ | ५ | १० | ३० | शु | ३७ | ४५ | २२ | २२ | तै | २४ | २१ | १७ | १ | २५ | ५० | ७ | १६ | १७ | ३६ | २१ | १२ | 5 | मि. २३।५७ | ८ | २० | ३ | २४ | ८ | १५ | ४० | २९ | १६ | |
| १६ | १४ | मं | ३० | ३ | १९ | १८ | मृ | १५ | ४ | १३ | १८ | ब्र | ३९ | ११ | २२ | ५७ | व | ३० | ३ | १९ | १८ | २५ | ५२ | ७ | १६ | १७ | ३७ | २२ | १३ | 6 | मिथुन | ८ | २१ | ४ | ३२ | ८ | १६ | २७ | ३० | ११ | भद्रा १९।१८ से, ऐपीफेनी डे |
| १७ | १५ | बु | ३४ | ४८ | २१ | १२ | आ | २१ | ११ | १५ | ४५ | ऐं | ३९ | ५४ | २३ | १४ | वि | २ | ३३ | ८ | १८ | २५ | ५३ | ७ | १७ | १७ | ३८ | २३ | १४ | 7 | मिथुन | ८ | २२ | ५ | ४० | ८ | १७ | १२ | ३१ | ४ | भद्रा ८।१८ तक, बुध मार्गी २७।३३, पूर्णिमा व्रत पुण्यं, सत्यव्रत,D |

A बड़ा दिन, ईसा जयंती, श्री यतीन्द्र सुरीश्वर पुण्यं, त्रिस्तुति जैन, पं. मदनमोहन मालवीय जयंती C (पुत्रदा) एकादशी व्रत (सबका), मन्वादि ११ वैकुण्ठ एकादसी (द.भा. में)

D माघ स्नान प्रा., शाकम्भरी जयंती, काशी घाट दशाश्वमेध स्नानारंभ

**पौष शु. ८ मंगल प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० दिसं. [दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ११ | ११ | ८ | ४ | ९ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| १३ | २ | १४ | ७ | २४ | १६ | १६ | २३ | २३ | ६ | १७ | २६ |
| ५६ | ८ | २ | २ | ५७ | ५० | ० | ५४ | ५४ | ४ | ४२ | ३० |
| ३३ | १९ | ४६ | ५२ | १६ | ४६ | २८ | ४ | ४ | ३० | ४१ | ४८ |
| [illegible] | [illegible] | २६ | ५८ | ० | ७३ | ४ | ३ | ३ | २ | १ | २ |
| [illegible] | [illegible] | १७ | ३२ | ५२ | ४३ | ५७ | ११ | ११ | २६ | ५९ | १२ |
| [illegible] | मा | मा | व | मा | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| [illegible] | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

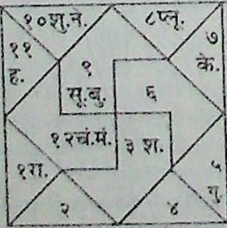


शनि व बुध का सम सप्तक बैठकर वक्री होना तथा शनिवारी एकादशी कहीं किसी प्रधान शासक अथवा महान पुरुष का निधन अथवा पद त्याग योगप्रद है। यथा—एकादश्यां शनौ तस्मिन् छत्र भंगोऽथवा भुवि। नगर ग्राम भंगस्याद वैरि चौराद्युपद्रवै॥ वक्री मूल नक्षत्र में बुध का आगमन देश के अनेक भावों में धार्मिक व साम्प्रदायिक उपद्रवों से आतंक वृद्धिप्रद है। शासकों में आपसी कलह होकर मंत्रीमण्डल में विवाद व हंगामों का वातावरण बार-बार रहेगा। जिससे विकास जन्य कामों में रुकावटें रहेंगी। तेजी

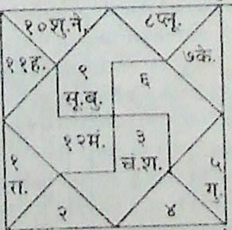


**ता. ७ जन. ❖ पौष शु. १५ बुध प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | २ | ११ | ८ | ४ | ९ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २२ | १४ | १८ | २ | २४ | २६ | १५ | २३ | २३ | ६ | १७ | २६ |
| ५ | ४७ | ५५ | २२ | ५८ | ३९ | २० | २८ | २८ | २४ | ५८ | ४८ |
| ४० | ४४ | १२ | २४ | ४६ | ५० | ५५ | ३७ | ३७ | ५७ | ५६ | १ |
| ६१ | [illegible] | ३६ | ७ | ० | ७३ | ४ | ३ | ३ | २ | २ | २ |
| ८ | ४ | ५२ | ५९ | ४० | २६ | ५३ | ११ | ११ | ४३ | ०६ | ६ |
| मा | मा | मा | व | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

**मन्दी विचार**—चन्द्रदर्शन मु. ३० गेहूं, चना, मौंठ, मूंग, बाजरा में घटाबढ़ी फलकारक है। शु. ३ का क्षय: व मूल में वक्री बुध आने से तिल मूंगफली, अलसी, सरसों व एरण्ड तथा तेलों में तेजी रहेगी। शेयर भावों में अस्थिरता, केमीकल पदार्थों में मन्दी के बाद तेजी होगी। शु. १० वृद्धि व बुधोदय के बाद चना, चावल, गेहूं, मौंठ, बाजरा, मूंग में तेजी होगी। मिर्च तथा मसाले के सामान ऊनी वस्त्र और चांदी में तेजी का रुख रहेगा। **आकाश लक्षण**—पक्ष में बादल चाल रहेगी। मकरे शुक्र होने से समुद्र तटवर्ती क्षेत्रों पर तूफान व चक्रवात का उत्पात होगा। उत्तर प्रदेश, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, पूर्वोत्तर राजस्थान में सामान्य वर्षा तथा ओस की धुन्ध का वातावरण रहेगा। हिमपात व ओला वर्षा से सर्दी बढ़कर ठिठुरन तेज रहेगी। हवाओं का प्रवाह प्रायश: सर्वत्र रहेगा। पक्षान्त में शीत तेज होगा। **शकुन विचार**—पौष सुदी सप्तमी के दिन आकाश साफ रहे वर्षा न हो तो आगे आर्द्रा नक्षत्र के सूर्यकाल में अति वर्षाकारी फल होता है। यथा—**पौष मास की सप्तमी जो पाणी नहीं देय। तौ आर्द्रा बरसे सही जलथल एक करेय॥** पौष सुदी १४ को यदि वर्षा हो तो आषाढ़ मास में वर्षा उत्तम होकर धान्य भाव मन्दे होते हैं। यथा—**पौष सुदी चौदश दिनां बिजुली या घनघोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोले दादुर मोर॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# माघ कृष्ण पक्ष-२० श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ८ से २१ जनवरी सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १८ पौष से १ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| ग.मि. | तिथि ति | तिथि वा | तिथि घ | तिथि प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | नक्षत्र न | नक्षत्र घ | नक्षत्र प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | योग यो | योग घ | योग प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | करण क | करण घ | करण प | स्टैं.टा. घं | स्टैं.टा. मि | दिनमान घ | दिनमान प | सूर्योदय घं | सूर्योदय मि | सूर्यास्त घं | सूर्यास्त मि | दिनांक प्र. | दिनांक मु. | दिनांक अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा | अं | क | वि | | चन्द्रोदय घं | चन्द्रोदय मि | चन्द्रास्त घं | चन्द्रास्त मि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | १ | गु | ३८ | ३१ | २२ | ४१ | पुन | २६ | १९ | १७ | ४८ | वै | ३९ | ५० | २३ | १३ | बा | ६ | ४७ | १० | ० | २५ | ५५ | ७ | १७ | १७ | ३९ | २४ | १५ | 8 | क. ११।६० | ८ | २३ | ६ | ४८ | [illegible] | [illegible] | १६ | ७ | ५४ | A वरद चतुर्थी, मेला मस्तुआणां (पंजाब) |
| १९ | २ | शु | ४१ | ११ | २३ | ४५ | पु | ३० | २८ | १९ | २८ | वि | ३८ | ५२ | २२ | ५२ | तै | ९ | ५९ | ११ | १६ | २५ | ५७ | ७ | १७ | १७ | ३९ | २५ | १६ | 9 | कर्क | ८ | २४ | ७ | ५६ | ७ | १९ | १४ | ८ | ३९ | शुक्र कुंभ में प्रवेश २२।५८ |
| २० | ३ | श | ४२ | ५० | २४ | २५ | श्ले | ३३ | ३७ | २० | ४४ | प्री | ३७ | २१ | २२ | १३ | व | १२ | ८ | १२ | ८ | २५ | ५८ | ७ | १७ | १७ | ४० | २६ | १७ | 10 | सिं. २०।४४ | ८ | २५ | ९ | ३ | ८ | २० | १४ | ९ | १९ | भद्रा १२।८ से २४।२५ तक |
| २१ | ४ | र | ४२ | २८ | २४ | ४० | म | ३५ | ४८ | २१ | ३६ | आ | ३४ | ५७ | २१ | १६ | ब | १३ | १७ | १२ | ३६ | २६ | ० | ७ | १७ | १७ | ४१ | २७ | १८ | 11 | सिंह | ८ | २६ | १० | ११ | ७ | २१ | १३ | ९ | ५५ | सूर्य उ.षा. में १७।१३, कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ, A |
| २२ | ५ | चं | ४३ | ६ | २४ | ३१ | पूफा | ३७ | ० | २२ | ५ | सौ | ३१ | ४७ | २० | ० | कौ | १३ | २५ | १२ | ३९ | २६ | २ | ७ | १७ | १७ | ४२ | २८ | १९ | 12 | कं. २८।४८ | ८ | २७ | ११ | १८ | ७ | २२ | १२ | १० | २९ | शत. में हर्षल १५।३५, भरणी ३ में राहु विशाखा १ में केतु ३०।५४ |
| २३ | ६ | मं | ४१ | ४१ | २३ | ५७ | उफा | ३७ | १२ | २२ | १० | शो | २७ | ४८ | १८ | २४ | ग | १२ | ३१ | १२ | १७ | २६ | ४ | ७ | १७ | १७ | ४३ | २९ | २० | 13 | कन्या | ८ | २८ | १२ | २५ | ७ | २३ | ११ | ११ | ० | भद्रा २३।५७ से, लोहड़ी ( पंजाब ) |
| २४ | ७ | बु | ३९ | ११ | २२ | ५७ | ह | ३६ | २७ | २१ | ४९ | अति | २२ | ५९ | १६ | २९ | वि | १० | २४ | ११ | ३० | २६ | ७ | ७ | १७ | १७ | ४३ | माघ १ | २१ | 14 | कन्या | ८ | २९ | १३ | ३२ | ७ | २४ | ० | ११ | ३१ | भद्रा ११।३० तक, सूर्य मकर में प्रवे. २३।४५, संक्रांति मु. ३० B |
| २५ | ८ | गु | ३५ | ३५ | २१ | ३१ | चि | ३४ | २६ | २१ | २ | सु | १७ | १९ | १४ | १२ | बा | ७ | ३१ | १० | १७ | २६ | ९ | ७ | १७ | १७ | ४४ | २ | २२ | 15 | तु. ९।२९ | ९ | ० | १४ | ३९ | ७ | २४ | ११ | १२ | ४ | शुक्र शतभिषा में १०।११, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध |
| २६ | ९ | शु | ३० | ५३ | १९ | ३८ | स्वा | ३१ | २५ | १९ | ५१ | धृ | १० | ४५ | ११ | ३५ | तै | ३ | २२ | ८ | ३७ | २६ | ११ | ७ | १७ | १७ | ४५ | ३ | २३ | 16 | तुला | ९ | १ | १५ | ४६ | ७ | २५ | १४ | १२ | ४० | भ. ३०।३२ से |
| २७ | १० | श | २५ | ८ | १७ | २० | वि | २७ | २३ | १८ | १४ | शू | ३/५५ | ११/९ | ८/२९ | ४७/२० | वि | २५ | ८ | १७ | २० | २६ | १४ | ७ | १६ | १७ | ४६ | ४ | २४ | 17 | वृ. १२।४० | ९ | २ | १६ | ५३ | ७ | २६ | २० | १३ | २० | भद्रा १७।२० तक |
| २८ | ११ | र | १८ | ३० | १४ | ४० | अनु | २२ | २८ | १६ | १६ | वृ | ४६ | १९ | २५ | ४८ | बा | १८ | ३० | १४ | ४० | २६ | १६ | ७ | १६ | १७ | ४७ | ५ | २५ | 18 | वृश्चिक | ९ | ३ | १८ | ० | ६ | २७ | २९ | १४ | ७ | षटतिला एकादशी व्रत ( सबका ) |
| २९ | १२ | चं | ११ | ११ | ११ | ४४ | ज्ये | १६ | ५४ | १४ | २ | ध्रु | ३७ | ४ | २२ | ६ | तै | ११ | ११ | ११ | ४४ | २६ | १९ | ७ | १६ | १७ | ४८ | ६ | २६ | 19 | ध. १४।२ | ९ | ४ | १९ | ६ | ६ | २८ | ४० | १५ | ३ | सोम प्रदोष व्रत, वंजुली महाद्वादशी व्रत, श्री शीतल नाथ ज. जैन |
| ३० | १३ | मं | ३ | २८ | ८ | ३९ | मू | १० | ५९ | ११ | ३९ | व्या | २७ | ३८ | १८ | १९ | व | ३ | २८ | ८ | ३९ | २६ | २१ | ७ | १६ | १७ | ४८ | ७ | २७ | 20 | धनु | ९ | ५ | २० | १२ | ६ | २९ | ४९ | १६ | ६ | भद्रा ८।३९ से १९।६ तक, मास शिवरात्रि व्रत, रटन्ति कालिका C |
| ० | १४ | मं | ५५ | ४४ | २९ | ३३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ० ० ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | चतुर्दशी क्षय: |
| १ | ३० | बु | ४८ | २२ | २६ | ३७ | पूषा | ५/५१ | ५/४८ | १/३२ | २८/७ | ह | १८ | २० | १४ | ३५ | च | २१ | ५१ | १६ | ३ | २६ | २४ | ७ | १६ | १७ | ४९ | ८ | २८ | 21 | म. १४।४४ | ९ | ६ | २१ | १८ | ५ | ३० | ५२ | १७ | १४ | बुध पू.षा. में १७।४२, देवपितृकार्याऽमावस्या-मौनी अमावस्या, D |

B बैठी, मकर संक्रांति पुण्य, सौर माघ मासारंभ, मल मास समाप्ति, स्वामी विवेकानन्द ज., श्री रामानन्दाचार्य ज., पोंगल पर्व (दक्षिण भारत), गंगा सागर यात्रा, माघ बिहु (आसाम), तिल संक्रांति
C पूजन, सायन कुम्भ में सूर्य २३।३२, मेरु त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ कल्याणक जैन D द्वापर युगादि, विशाल मेला हरिद्वार व प्रयागराज, राष्ट्रीय माघ मासारंभ

माघ कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ जनवरी

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ५ | ११ | ८ | ४ | १० | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ० | २७ | २३ | ६ | २४ | ६ | १४ | २३ | २३ | ६ | १८ | २७ |
| १४ | ४१ | ५१ | ३३ | ४७ | २५ | ४२ | ३ | ३ | ४७ | १६ | ४ |
| ३९ | ५० | ५४ | २ | ५७ | ४७ | ३० | ११ | ११ | २८ | ४ | २२ |
| ६१ | ८३ | ३७ | ५४ | २ | ७३ | ४ | ३ | ३ | २ | २ | १ |
| ७ | ३ | २१ | १६ | १३ | ० | ३९ | ११ | ११ | ५६ | १२ | ५९ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| उ.षा. | चित्रा | रेवती | मूल | पू.फा. | धनि. | आर्द्रा | भरणी | विशा. | शत. | श्रवण | ज्येष्ठा |

[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]

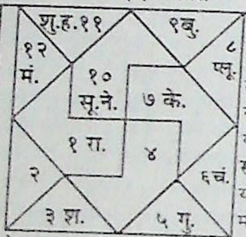


कृष्ण चतुर्दशी का क्षय तथा शुक्र का कुंभ राशि में भ्रमण होना मुस्लिम राष्ट्रों, ईरान, ईराक, पाकिस्तान, अफगानिस्तान आदि राष्ट्रों में शासकों के विरोधी तत्व पैदा होकर उपद्रव व विग्रह होंगे। बड़ी शक्तियों के समावेश से विश्व की प्रजा भयभीत रहेगी। यथा—घट मीन गते शुक्रे दुर्भिक्षं प्रचुरं भवेत्। मेदिनी दुख संयुक्ता जायते नात्र संशयः॥ सूर्य का गुरु तथा शनि से षडाष्टक योग होने से प्रान्तीय राज्यों में परिवर्तन तथा राजनायकों में आपसी मतभेद उभरकर विवाद होंगे। उत्तरी प्रान्तों में प्राकृतिक आपदाओं से जन धन हानि होगी। **तेजी मन्दी विचार**—कृ. ४ उ.षा. में सूर्य से गुड़, चीनी, शक्कर मन्दा तथा मुंगफली, तिल, सरसों में तेजी होगी। वस्त्रों, सूत, रुई, कपास, बिनौला में मन्दी रहेगी। सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल व जस्ता, स्टील के सामान में तेजी रहेगी। पक्षान्त में रसायनिक सामान, शेयर बाजार, मशीनरी सामान में तेजी होगी। गेहूं, जौ, चावल, चना, मोंठ, मूंग, गुवार में घटाबढ़ी के बाद मन्दा रहेगा। मकर संक्रांति मु. ३० भावों में समता कारक है। शनि का वक्र रहना चाय, अफीम, तम्बाकू व नशीली वस्तुओं में अस्थिरता फल कारक है। **आकाश लक्षण**—गुरुवारी प्रतिपदा पहाड़ी क्षेत्रों पर हिमपात तथा तूफानी हवाओं से रोग वृद्धिप्रद है। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरी बिहार, भूटान व आसाम में बादलचाल, वायुवेग तथा बर्फ गिरने के योग हैं। कहीं कहीं सामान्य वर्षा से देश के मध्य भाग तक शीतवृद्धि व ठिठुरन तेज रहेगी। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में आकाशीय स्थिति विकृत प्रायः व धूमिल रहेगी। **शकुन विचार**—माघ वदी तिथि ७ को यदि बिजली चमके तो आगे चातुर्मास में वर्षा श्रेष्ठ होती है। यथा—**माघ अन्धेरी सप्तमी, मेह बिजु दमकन्त। मास चार बरसै सही मत ना सोचै कन्त।**

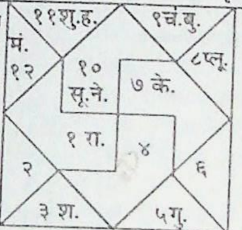


ता. २१ जनवरी ❖ माघ कृ. ३० बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ८ | ११ | ८ | ४ | १० | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ६ | २४ | २७ | १२ | २४ | १३ | १४ | २२ | २२ | ७ | १८ | २७ |
| २१ | १८ | ३६ | ४४ | ३१ | ४२ | १५ | ४४ | ४४ | ५ | २९ | १५ |
| १८ | ५७ | ४६ | २२ | ५० | ५१ | १५ | ६ | ६ | ३० | २१ | ५६ |
| ६१ | ८४१ | ३७ | ७० | ३ | ७२ | ४ | ३ | ३ | ३ | २ | १ |
| ५ | १२ | ४० | ३६ | २० | ३८ | २१ | ११ | ११ | ६ | १८ | ५२ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | अ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| उ.षा. | पू.षा. | रेवती | मूल | पू.फा. | शत. | आर्द्रा | भरणी | विशा. | शत. | श्रवण | ज्येष्ठा |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

हरियाणा, राजस्थान, पंजाब, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में आकाशीय स्थिति विकल प्राय: व भ्रमित [illegible] कहीं कहीं सामान्य वर्षा से देश के मध्य भाग तक शीतवृद्धि व ठिठुरन तेज रहेगी। दिल्ली,
सप्तमी, मेह बिजु दमकन्त। मास चार बरसै सही मत ना मिथ्या कन्त॥ Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS [illegible] चातुर्मास में वर्षा श्रेष्ठ होती है। यथा—माघ अन्धेरी



आर्यभट्ट पंचांगम्

# माघ शुक्ल पक्ष-२१ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २२ जनवरी से ६ फरवरी सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २ से १७ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं.टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| माघ २ | १ | गु | ४१ | ४९ | २३ | ५९ | श्र | ५५ | ५ | २२ | १७ | व | ९ | २९ | ११ | ३ | कि | १४ | ५८ | १३ | १५ |
| ३ | २ | शु | ३६ | २९ | २१ | ५१ | ध | ५१ | ५० | २७ | ५१ | सि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | बा | ८ | ५८ | १० | ५० |
| ४ | ३ | श | ३२ | ४६ | २० | २१ | शत | ५० | १७ | २७ | २१ | वरी | ४८ | ५१ | २६ | ४७ | तै | ४ | २४ | ९ | ० |
| ५ | ४ | र | ३० | ५९ | १९ | ३८ | पूभा | ५० | ४० | २७ | ३१ | परि | ४४ | ५० | २५ | १० | व | १ | ३७ | ७ | ५३ |
| ६ | ५ | चं | ३१ | १९ | १९ | ४६ | उभा | ५३ | ९ | २८ | ३० | शि | ४२ | २९ | २४ | १४ | ब | ० | ५३ | ७ | ३५ |
| ७ | ६ | मं | ३३ | ४७ | २० | ४४ | रे | ५७ | ३६ | ३० | १६ | सि | ४१ | ४४ | २३ | ५५ | कौ | २ | १८ | ८ | ९ |
| ८ | ७ | बु | ३८ | ९ | २२ | २९ | अ | ६० | ० | — | — | सा | ४२ | २३ | २४ | १० | ग | ५ | ४५ | ९ | ३१ |
| ९ | ८ | गु | ४३ | ५८ | २४ | ४८ | अ | ३ | ४६ | ८ | ४३ | शुभ | ४४ | ६ | २४ | ५१ | वि | १० | ५५ | ११ | ३५ |
| १० | ९ | शु | ५० | ३९ | २७ | २८ | भ | ११ | ५ | ११ | ३८ | शु | ४६ | २७ | २५ | ४७ | बा | १७ | १६ | १४ | ७ |
| ११ | १० | श | ५७ | ३१ | ३० | १२ | कृ | १८ | ५७ | १४ | ४७ | ब्र | ४८ | ५९ | २६ | ४७ | तै | २४ | ७ | १६ | ५१ |
| १२ | ११ | र | ६० | ० | — | — | रो | २६ | ४४ | १७ | ५३ | ऐं | ५१ | १३ | २७ | ४० | व | ३० | ४२ | १९ | ३१ |
| १३ | ११ | चं | ३ | ५७ | ८ | ४५ | मृ | ३३ | ५१ | २० | ४३ | वै | ५२ | ४९ | २८ | १८ | वि | ३ | ५७ | ८ | ४५ |
| १४ | १२ | मं | ९ | २४ | १० | ५६ | आ | ३९ | ५५ | २३ | ८ | वि | ५३ | ३२ | २८ | ३५ | बा | ९ | २४ | १० | ५६ |
| १५ | १३ | बु | १३ | ३६ | १२ | ३६ | पुन | ४४ | ४४ | २५ | ३ | प्री | ५३ | १४ | २८ | २७ | तै | १३ | ३६ | १२ | ३६ |
| १६ | १४ | गु | १६ | २६ | १३ | ४३ | पु | ४८ | १४ | २६ | २६ | आ | ५१ | ५४ | २७ | ५५ | व | १६ | २६ | १३ | ४३ |
| १७ | १५ | शु | १७ | ५६ | १४ | १९ | श्ले | ५० | ३० | २७ | २० | सौ | ४९ | ३६ | २६ | ५९ | ब | १७ | ५६ | १४ | १९ |

| दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदय दिल्ली घं. | मि. | चन्द्रास्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २६ | २७ | ७ | १५ | १७ | १० | ९ | २९ | 22 | मकर | ९ | ७ | २२ | २३ | [illegible] | ७ | ४७ | १८ | २४ | श्री वल्लभाचार्य जयंती (दक्षिण भारत) G ईद-उल-जुहा बकरीद मु. |
| २६ | २९ | ७ | १५ | १७ | ५१ | १० | ३० | 23 | कुं. १६।३४ | ९ | ८ | २३ | २७ | ४ | ८ | ३४ | १९ | ३२ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, पंचक प्रा. १६।३४ से, नेताजी सुभाष A |
| २६ | ३२ | ७ | १५ | १७ | ५२ | ११ | वि | 24 | कुंभ | ९ | ९ | २४ | ३१ | २ | ९ | १३ | २० | ३६ | जिल्हिज मु. मास. १२ प्रा., मंगल अश्विनी मेष में प्र. २४।३८, सूर्य B |
| २६ | ३५ | ७ | १४ | १७ | ५३ | १२ | २ | 25 | मी. २१।२४ | ९ | १० | २५ | ३३ | २ | ९ | ४८ | २१ | ३६ | भद्रा ७।५३ से १९।३८ तक, विनायक ४, वरद ४, कुन्द ४, तिल ४, C |
| २६ | ३८ | ७ | १४ | १७ | ५३ | १३ | ३ | 26 | मीन | ९ | ११ | २६ | ३५ | १ | १० | १९ | २२ | ३३ | शुक्र पू.भा. में १०।२५, बसन्त पंचमी, सरस्वती पूजा तक्षक पूजा, D |
| २६ | ४१ | ७ | १४ | १७ | ५४ | १४ | ४ | 27 | मे. ३०।१६ | ९ | १२ | २७ | ३६ | [illegible] | १० | ४८ | २३ | २८ | पंचक समाप्त ३०।१६ H श्राद्ध तर्पण हवन, कल्पादि १२ |
| २६ | ४५ | ७ | १३ | १७ | ५५ | १५ | ५ | 28 | मेष | ९ | १३ | २८ | ३५ | ५९ | ११ | १७ | २४ | ० | भद्रा २२।२९ से, आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी, अचल ७, चन्द्रभागा ७, E |
| २६ | ४८ | ७ | १३ | १७ | ५६ | १६ | ६ | 29 | मेष | ९ | १४ | २९ | ३४ | ५७ | ११ | ४७ | २४ | २२ | भद्रा ११।३५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी C श्री गणेश पूजा (बंगाल) |
| २६ | ५१ | ७ | १२ | १७ | ५७ | १७ | ७ | 30 | वृ. १८।१५ | ९ | १५ | ३० | ३१ | ५६ | १२ | १९ | २५ | १७ | श्री महानन्दा नवमी, श्री महात्मा गाँधी पुण्य दि., श्री हरसू ब्रह्मदेव F |
| २६ | ५४ | ७ | १२ | १७ | ५८ | १८ | ८ | 31 | वृष | ९ | १६ | ३१ | २७ | ५५ | १२ | ५५ | २६ | ११ | बुध उ.षा. में २२।४० A चन्द्र बोस ज., व्यतिपात पुण्यं |
| २६ | ५८ | ७ | ११ | १७ | ५८ | १९ | ९ | F1 | वृष | ९ | १७ | ३२ | २२ | ५३ | १३ | ३५ | २७ | ७ | भद्रा १९।३१ से, जया एकादशी व्रत स्मार्त, हज्ज, फरवरी मास २ ता. २९ |
| २७ | १ | ७ | ११ | १७ | ५९ | २० | १० | 2 | मि. ७।५१ | ९ | १८ | ३३ | १५ | ५३ | १४ | २० | २८ | २ | भद्रा ८।४५ तक, बुध मकर में प्रवेश ३०।४५, जया एकादशी व्रत वै., G |
| २७ | ४ | ७ | १० | १८ | ० | २१ | ११ | 3 | मिथुन | ९ | १९ | ३४ | ८ | ५१ | १५ | ११ | २८ | ५७ | शुक्र मीन में प्र. १८।४३, भौम प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी, भीष्म तर्पण, H |
| २७ | ८ | ७ | १० | १८ | १ | २२ | १२ | 4 | क. १८।३७ | ९ | २० | ३४ | ५९ | ५० | १६ | ६ | २९ | ४८ | वक्री शनि आर्द्रा २ में १७।२६, मेला पंचखण्ड पीठ विराटनगर (राज.), J |
| २७ | १२ | ७ | ९ | १८ | २ | २३ | १३ | 5 | कर्क | ९ | २१ | ३५ | ४९ | ४८ | १७ | ५ | ३० | ३५ | भद्रा १३।४३ से २६।५ तक, पू.फा. ३ में वक्री गुरु २७।३४, पूर्णिमा व्रत, K |
| २७ | १५ | ७ | ८ | १८ | २ | २४ | १४ | 6 | सिं. २७।२० | ९ | २२ | ३६ | ३७ | ४८ | १८ | ६ | ७ | १८ | सूर्य धनि. में २२।३८, शुक्र उ.भा. में १४।२, माघी पूर्णिमा पुण्यं, सत्यव्रत L |

B श्रवण में १९।२८, गौरी तृतीया D भारतीय गणतन्त्र दिवस ५५वाँ वर्ष E श्री माधवाचार्य जयंती, मन्वादि ७, लाला लाजपतराय जयंती F पुण्यं (चैनपुरा व रोहतास) J मेला जैसलमेर (राज.) ३ दिन का, गुरु हरराय जयंती (प्रा. मत से) K श्री जीतेन्द्र नाथ रथयात्रा जैन, श्री रामचरण स्नेही जयंती L माघ स्नान पूर्ण, श्री रविदास जयंती, ललिता जयंती, वेणेश्वर मेला (बासवाड़ा), भैरवी जयंती

**[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

**माघ शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ जनवरी**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ० | ० | ८ | ४ | १० | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| १४ | ११ | २ | २२ | २४ | २३ | १३ | २२ | २२ | ७ | १८ | २७ |
| २९ | ४२ | ३९ | ५४ | ० | २१ | ४२ | १८ | १८ | ३० | ४७ | ३० |
| ३४ | ४२ | २ | २५ | १२ | ४२ | ७ | ४० | ४० | ५१ | २५ | १३ |
| ६० | [illegible] | ३७ | ८२ | ४ | ७१ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | १ |
| ५७ | ५४ | ५८ | १२ | ४३ | ५ | ५० | ११ | ११ | १५ | १६ | ४१ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | अ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

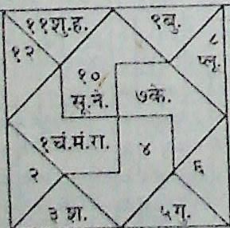


गहु मंगल का एक राशि पर योग तथा मास में ५ गुरुवार होना पश्चिमी राष्ट्रों अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप व ग्रीनलैण्ड आदि राष्ट्रों में युद्धोन्माद एवं शासकों में तनाव योगप्रद है। यथा—राहुरंगारकश्चैक राशि ऋक्ष गतौ तथा। महाभयं च सस्यानां न च वृष्टिः प्रजायते॥ केन्द्रीय मन्त्री मण्डल में परिवर्तन होकर पश्चान्त में विकास कार्यों की योजना बनेगी। विपक्षी दलों का सहयोग होगा तथा साम्प्रदायिक विपत्तियों से बचाव के आसार बढ़ेंगे। दक्षिणी प्रान्तों में आतंकवादी गतिविधियां बढ़ेंगी। जिसका शासक कठोरता से निवारण करेंगे। तेजी मन्दी विचार— शुक्रवार को चन्द्रदर्शन चीनी, गुड़, शक्कर, चना, मूंग, मोठ व चावल में घटाबढ़ी के बाद तेजी कारक है। शु. ५ पू.भा. शुक्र से चांदी, सोना, रुई, कपास, बिनौला व सूती वस्त्र तेज। शु. ११ सोमे मकरे बुध से जीरा, धनियां, मसाले के सामान तथा केमीकल सामान में तेजी रहे। शेयर बाजारों में उछाले की तेजी। प्लास्टिक सामान, स्टील सामान में तेजी होगी। बादाम, अखरोट, किसमिस, काजू, पिस्ता आदि मेवा सामान में मन्दी बनेगी। आकाश लक्षण—पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरी पूर्वी राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश में बादल चाल के साथ छुटपुट वर्षा रहेगी। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश, भूटान व बंगाल के क्षेत्रों में हिमपात व वर्षा होगी। पक्ष पूर्वार्द्ध में वायु वेग से शीत वृद्धि अथवा शीत लहर रहेगी। पश्चान्त में मौसम परिवर्तन लक्षण उभरेंगे। शकुन विचार—माघ सुदी २ व ३ तिथि को यदि वर्षा हो तो आगे चौमासा में वर्षा की कमी रहकर भय बढ़ता है। यथा—माघ उजाली दूज या, तीज रहे जल धार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार॥

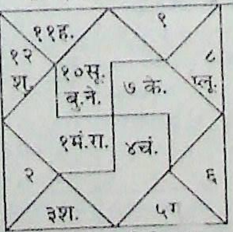


**ता. ६ फरवरी ❖ माघ शु. १५ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट**

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ३ | ० | ९ | ४ | ११ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २२ | १८ | ७ | ४ | २३ | २ | १३ | २१ | २१ | ७ | १९ | २७ |
| ३६ | १६ | ४३ | १९ | १८ | ५४ | १३ | ५३ | ५३ | ५७ | ५ | ४३ |
| ३७ | ३८ | ४१ | १७ | ८ | ४३ | ४२ | १३ | १३ | १८ | ३७ | १ |
| ६० | [illegible] | ३८ | ८९ | ५ | ७१ | ३ | ३ | ३ | ३ | २ | १ |
| ४८ | ४४ | १० | ३८ | ५५ | १० | १० | ११ | ११ | २२ | १७ | २९ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ७ से २० फरवरी सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १८ माघ से १ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | १ | श | १८ | १२ | १४ | २५ | म | ५१ | ४० | २७ | ४८ | शो | ४६ | २५ | २५ | ४२ | कौ | १८ | १२ | १४ | २५ | २७ | १९ |
| १९ | २ | र | १७ | २६ | १४ | ५ | पू.फा | ५१ | ५५ | २७ | ५३ | अति | ४२ | ३० | २४ | ७ | ग | १७ | २६ | १४ | ५ | २७ | २२ |
| २० | ३ | चं | १५ | ४७ | १३ | २५ | उ.फा | ५१ | २४ | २७ | ४० | सु | ३७ | ५७ | २२ | १७ | वि | १५ | ४७ | १३ | २५ | २७ | २६ |
| २१ | ४ | मं | १३ | २४ | १२ | २७ | ह | ५० | १४ | २७ | ११ | धृ | ३२ | ५१ | २० | १४ | बा | १३ | २४ | १२ | २७ | २७ | ३० |
| २२ | ५ | बु | १० | २३ | ११ | १४ | चि | ४८ | २९ | २६ | २९ | शू | २७ | १६ | १७ | ५९ | तै | १० | २३ | ११ | १४ | २७ | ३४ |
| २३ | ६ | गु | ६ | ४७ | ९ | ४७ | स्वा | ४६ | ११ | २५ | ३३ | गं | २१ | १४ | १५ | ३४ | व | ६ | ४७ | ९ | ४७ | २७ | ३७ |
| २४ | ७ | शु | २ | ३७ | ८ | ६ | वि | ४३ | २२ | २४ | २४ | वृ | १४ | ४६ | १२ | ५८ | ब | २ | ३७ | ८ | ६ | २७ | ४१ |
| ० | ८ | शु | ५[illegible] | [illegible]४ | ३० | १३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| २५ | ९ | श | [illegible] | ३३ | [illegible] | ८ | अनु | ४० | १ | २३ | ३ | ध्रु | ७ | ५३ | १० | १२ | तै | २५ | २३ | १७ | १२ | २७ | ४५ |
| २६ | १० | र | ४७ | ६ | २५ | ५२ | ज्ये | ३६ | १५ | २१ | ३२ | व्या | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | व | १९ | ५८ | १५ | १ | २७ | ४९ |
| २७ | ११ | चं | ४१ | १२ | २३ | ३० | मू | ३२ | ९ | १९ | ५३ | व | ४५ | २ | २५ | ४ | ब | १४ | ११ | १२ | ४१ | २७ | ५३ |
| २८ | १२ | मं | ३५ | १३ | २१ | ५ | पू.षा | २७ | ५७ | १८ | ११ | सि | ३७ | १६ | २१ | ५४ | कौ | ८ | १३ | १० | १७ | २७ | ५७ |
| २९ | १३ | बु | २९ | २५ | १८ | ४५ | उ.षा | २३ | ५३ | १६ | ३२ | व्य | २९ | ३३ | १८ | ४९ | ग | २ | १७ | ७ | ५४ | २८ | ० |
| ३० | १४ | गु | २४ | ७ | १६ | ३७ | श्र | २० | १७ | १५ | ५ | वरि | २२ | १५ | १५ | ५२ | श | २४ | ७ | १६ | ३७ | २८ | ५ |
| फा१ | ३० | शु | १९ | ४० | १४ | ४९ | ध | १७ | ३० | १३ | ५७ | परि | १५ | ३८ | १३ | १२ | ना | १९ | ४० | १४ | ४९ | २८ | ९ |

| स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु | अं | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं | मि | अस्त घं | मि | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ८ | १८ | ३ | २५ | १५ | 7 | सिंह | ९ | २३ | ३७ | २५ | [illegible] | १९ | ६ | ७ | ५६ | |
| ७ | ७ | १८ | ४ | २६ | १६ | 8 | सिंह | ९ | २४ | ३८ | ११ | ४५ | २० | ६ | ८ | ३१ | भद्रा २५।४८ से |
| ७ | ६ | १८ | ५ | २७ | १७ | 9 | कं.९।५२ | ९ | २५ | ३८ | ५६ | ४४ | २१ | ६ | ९ | ३ | भद्रा १३।२५ तक, बुध श्रवण में २३।३५, कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| ७ | ६ | १८ | ५ | २८ | १८ | 10 | कन्या | ९ | २६ | ३९ | ४० | ४३ | २२ | ६ | ९ | ३४ | |
| ७ | ५ | १८ | ६ | २९ | १९ | 11 | तु.१४।५२ | ९ | २७ | ४० | २३ | ४२ | २३ | ८ | १० | ६ | |
| ७ | ४ | १८ | ७ | ३० | २० | 12 | तुला | ९ | २८ | ४१ | ५ | ४० | २४ | ० | १० | ४१ | भद्रा ९।४७ से २०।५८ तक |
| ७ | ३ | १८ | ८ | फा | २१ | 13 | वृ.१८।१६ | ९ | २९ | ४१ | ४५ | ४० | २४ | १२ | ११ | [illegible] | सूर्य कुंभ में १२।४३, संक्रांति पुण्य मु. ४५ बैठी, कालाष्टमी, A |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | अष्टमी क्षयः |
| ७ | २ | १८ | ९ | २ | २२ | 14 | वृश्चिक | १० | ० | ४२ | २५ | ३९ | २५ | १८ | १२ | [illegible] | मंगल भरणी में २४।३८, समर्थ गुरु रामदास जयंती, वेलेंटाइन डे |
| ७ | २ | १८ | ९ | ३ | २३ | 15 | ध.२१।३१ | १० | १ | ४३ | ४ | ३७ | २६ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | भद्रा १५।१ से २५।५२ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती ज., B |
| ७ | १ | १८ | १० | ४ | २४ | 16 | धनु | १० | २ | ४३ | ४१ | ३७ | २७ | ३४ | [illegible] | [illegible] | विजया एकादशी व्रत ( सबका ) |
| ७ | ० | १८ | ११ | ५ | २५ | 17 | म.२३।१५ | १० | ३ | ४४ | १८ | ३५ | २८ | ३० | [illegible] | [illegible] | शुक्र रेवती में २२।२६ |
| ६ | ५९ | १८ | ११ | ६ | २६ | 18 | मकर | १० | ४ | ४४ | ५३ | ३३ | २९ | ३५ | १६ | ३ | भद्रा १८।४५ से २९।३२ तक, बुध धनि. में ७।५७, प्रदोष व्रत, C |
| ६ | ५८ | १८ | १२ | ७ | २७ | 19 | कुं.२६।२८ | १० | ५ | ४५ | २६ | ३३ | ३० | २४ | [illegible] | [illegible] | पंचक प्रा. २६।२८ से, सूर्य शत. में २७।८, शिव खप्पर पूजा, D |
| ६ | ५७ | १८ | १३ | ८ | २८ | 20 | कुंभ | १० | ६ | ४५ | ५९ | ३० | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | देवपितृकार्यामावस्या, राष्ट्रीय फाल्गुन मासारंभ- आर्य E |

A सीताष्टमी, जानकी जयंती, अष्टका श्राद्ध, सौर फाल्गुन मासारंभ, बुध पूर्व में अस्त १०।५० B आर्य समाज सप्ताहारंभ C महाशिवरात्रि व्रत, द्वादश ज्योतिर्लिंग पूजनार्चन व रुद्राभिषेक, श्री वैद्यनाथ जयंती, व्यतिपात पुण्य D श्री वासुदेव पूज्य ज. (जैन), सायन मीन में सूर्य १३।४०, वसन्त ऋतु प्रारंभ E समाज सप्ताह सम[illegible]

**[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

फाल्गुन कृ. ७ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ फरवरी

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ९ | ६ | ० | ९ | ४ | ११ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २९ | [illegible] | १२ | १५ | २२ | ११ | १२ | २१ | २१ | ८ | १९ | २७ |
| ४१ | १७ | ११ | ४ | ३४ | १० | ५३ | ३० | ३० | २१ | २१ | ५२ |
| ४५ | १ | ११ | ६ | ४ | १९ | २६ | ५८ | ५८ | ४ | २८ | ५० |
| ६० | [illegible] | ३८ | ९५ | ६ | ७० | २ | ३ | ३ | ३ | २ | १ |
| ४० | ३६ | १८ | २७ | ४६ | १२ | ३१ | ११ | ११ | २६ | १५ | १७ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| धनि. | विशा. | अश्विनी | श्रवण | पू.फा. | उ.भ. | आर्द्रा | भरणी | विशा. | शत. | श्रवण | ज्येष्ठा |

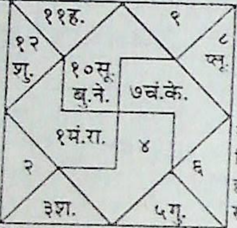


मास में पांच शनिवार व शुक्रवार की संक्रांति होने से मिश्रित फल रहेंगे। पूर्वी राष्ट्रों में बर्मा, भूटान, चीन, जापान में भूमि कम्प बारम्बार बनेगा। उत्तरी प्रान्तों के पर्वतीय क्षेत्रों में प्राकृतिक आपदाओं से जन जीवन अस्त व्यस्त रहेगा। श[illegible] नक्षत्र में अल्प गतिकाल में वक्र रहना कहीं किसी प्रधान शासक का निधन सूचक है। यथा—वक्र गतो रविसुतोऽथ धरा सुतो वा हस्ते तथैवपितृदैवत रौद्रभेषु। छत्रस्य भंगपतन भावि सैनिकानां सर्वत्र लोक मरणं खलु शास्त्र संघैः॥ पश्चिमी सीमाओं पर सैनिक गतिविधियां तेज रहेंगी। देश की शिक्षा व व्यवसायिक स्थितियों में नवीन परिवर्तन से दृढ़ता बनेगी। आयात निर्यात के नए कानूनों का जनता को श्रेष्ठ लाभ बनेगा। कर्मचारी वर्ग का सहयोग उत्तम रूप में होगा। **तेजी मन्दी विचार**— श्रवण का बुध पक्ष में मोठ, बाजरा, गुवार, मूंगफली, तिल में तेजी फलकारक है। चना, सरसों, अलसी, सोयाबिन, सूत, कपास, रूई, बिनौला में मन्दा रहेगा। शेयर भावों, गुड़, चीनी, शक्कर, घी में घटाबढ़ी होकर मन्दा रहेगा। पक्ष में चौपायों, मशीनरी सामान व रेशमी वस्त्रों में तेजी होगी। [illegible] के तेल, कपड़ा, घास व चारे में तेजी का रुख रहेगा। पश्चात में कुंभ सूर्य कृ. ७ बाद सोना, चांदी, पीतल व ताम्बा तेज। मूंग, मोंठ आदि दलहन बाजरा में मन्दी का रुख बनेगा। **आकाश लक्षण**— सूर्य मकर में रहने तक बादलचाल व वायु वेग तेज रहकर शरद हवायें विशेष रहेंगी। पश्चात में महाराष्ट्र, कर्णाटका, तमिलनाडु में वर्षा तथा मध्य व उत्तरी भारत में मौसम शुष्क प्रायः रहेगा। कहीं कहीं उत्तरी प्रान्तों में छुटपुट खण्ड वर्षा होगी। **शकुन विचार**— फाल्गुन बदी द्वितीया तिथि को यदि आकाश साफ रहे तो आगे श्रावण-भाद्रपद मास में श्रेष्ठ वर्षा हो तथा उपज उत्तम होती है। यथा—फाल्गुन बदी सु दौज दिन, बादल होय न बीज। सावण बरसे भादवो साजन खेलो तीज॥

ता. २० फर. ❖ फाल्गुन कृ. ३० शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

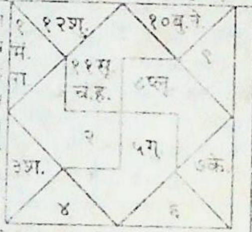


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | १० | ० | ९ | ४ | ११ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ६ | १ | १६ | २६ | २१ | [illegible] | १२ | २१ | २१ | ८ | १९ | २८ |
| ४५ | ४४ | ३९ | ३० | [illegible] | [illegible] | ३७ | ८ | ८ | ४५ | ३७ | १ |
| ५० | [illegible] | ३२ | २० | [illegible] | ४२ | ५८ | ४२ | ४२ | १० | ३० | १६ |
| [illegible] | [illegible] | ३८ | [illegible] | ७ | [illegible] | १ | ३ | ३ | ३ | २ | १ |
| [illegible] | [illegible] | २३ | [illegible] | २४ | २० | ४८ | ११ | ११ | २८ | १२ | ५ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | भरणी | [illegible] | [illegible] | [illegible] | आर्द्रा | भरणी | विशा. | शत. | श्रवण | ज्येष्ठा |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# फाल्गुन शुक्ल पक्ष-२३

श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. २१ फरवरी से ६ मार्च सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति २ से १६ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा.मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदय घं | मि | सूर्यास्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | रवि स्पष्ट रा. | अं. | क. | वि. | [illegible] | चन्द्रोदय घं. | मि. | चन्द्रास्त घं. | मि. | निम्नांकित संदर्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फा.२ | १ | श | १६ | २६ | १३ | ३१ | शत | १५ | ५३ | १३ | १८ | शि | ९ | ५६ | २० | ५५ | ब | १६ | २६ | १३ | ३१ | २८ | १३ | ६ | ५६ | १८ | १४ | ९ | २९ | 21 | कुंभ | १० | ७ | ४६ | २९ | [illegible] | ७ | ४३ | १९ | १९ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, बुध कुम्भ में प्रवेश ३०।४८ |
| ३ | २ | र | १४ | ४२ | १२ | ४८ | पूभा | १५ | ४६ | १३ | १४ | सि | ५ | २५ | ९ | ६ | कौ | १४ | ४२ | १२ | ४८ | २८ | १७ | ६ | ५५ | १८ | १४ | १० | मु | 22 | मी. ७।१९ | १० | ८ | ४६ | ५८ | २८ | ८ | १५ | २० | १८ | मुहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२५ प्रा., फुलरिया दूज, A |
| ४ | ३ | चं | १४ | ४५ | १२ | ४८ | उभा | १७ | २२ | १३ | ५१ | सा | २ | १७ | ७ | ४९ | ग | १४ | ४५ | १२ | ४८ | २८ | २१ | ६ | ५५ | १८ | १५ | ११ | २ | 23 | मीन | १० | ९ | ४७ | २६ | २५ | ८ | ४६ | २१ | १५ | भद्रा २५।५ से. पं. लेखराम वीर तृतीया, विनायक चतुर्थी व्रत |
| ५ | ४ | मं | १६ | ३९ | १३ | ३३ | रे | २० | ४६ | १५ | १२ | शुभ | ० | ३५ | ७ | ७ | वि | १६ | ३९ | १३ | ३३ | २८ | २५ | ६ | ५४ | १८ | १६ | १२ | ३ | 24 | मे. १५।१२ | १० | १० | ४७ | ५१ | २४ | ९ | १५ | २२ | ११ | भद्रा १३।३३ तक, पंचक समा. १५।१२, संत चतुर्थी ( उड़ीसा ) |
| ६ | ५ | बु | २० | २३ | १५ | २ | अ | २५ | ५४ | १७ | १४ | शु | ० | १७ | ६ | ५९ | बा | २० | २३ | १५ | २ | २८ | २९ | ६ | ५३ | १८ | १६ | १३ | ४ | 25 | मेष | १० | ११ | ४८ | १५ | २२ | ९ | ४६ | २३ | ६ | बुध शत. में २६।२०, याज्ञवल्क्य जयंती |
| ७ | ६ | गु | २५ | ३७ | १७ | ७ | भ | ३२ | २७ | १९ | ५१ | ब्र | १ | १४ | ७ | २१ | तै | २५ | ३७ | १७ | ७ | २८ | ३४ | ६ | ५२ | १८ | १७ | १४ | ५ | 26 | वृ. २६।३४ | १० | १२ | ४८ | ३७ | २० | १० | १६ | २४ | ० | गौरूपिणी षष्ठी ( बंगाल ) C मार्च मास ३ ता. ३१ |
| ८ | ७ | शु | ३१ | ५४ | १९ | ३६ | कृ | ३९ | ५६ | २२ | ४९ | ऐं | ३ | ६ | ८ | ५ | ब | ३१ | ५४ | १९ | ३६ | २८ | ३८ | ६ | ५१ | १८ | १८ | १५ | ६ | 27 | वृष | १० | १३ | ४८ | ५७ | १८ | १० | ५१ | २४ | १ | भद्रा १९।३६ से, D ( सक्का ), ताजिया मु. |
| ९ | ८ | श | ३८ | ३५ | २२ | १६ | रो | ४७ | ४३ | २५ | ५५ | वै | ५ | ३० | ९ | २ | वि | ५ | १५ | ८ | ५६ | २८ | ४२ | ६ | ५० | १८ | १८ | १६ | ७ | 28 | वृष | १० | १४ | ४९ | १५ | १६ | ११ | २९ | २४ | ५७ | भद्रा ८।५६ तक, श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, होलाष्टक B |
| १० | ९ | र | ४४ | ५८ | २४ | ४८ | मृ | ५५ | ९ | २८ | ५२ | वि | ७ | ५६ | ९ | ५९ | बा | ११ | ५२ | ११ | ३४ | २८ | ४६ | ६ | ४९ | १८ | १९ | १७ | ८ | 29 | मि. १५।१६ | १० | १५ | ४९ | ३१ | १४ | १२ | १२ | २५ | ५२ | शुक्र अश्विनी मेष में १३।२२, ऋषभनाथ ज. जैन |
| ११ | १० | चं | ५० | २८ | २६ | ५९ | आ | ६० | ० | — | — | प्री | ९ | ५७ | १० | ४७ | तै | १७ | ५३ | १३ | ५७ | २८ | ५० | ६ | ४८ | १८ | २० | १८ | ९ | M1 | मिथुन | १० | १६ | ४९ | ४५ | १२ | १३ | १ | २६ | ४७ | मेला श्री श्याम जी खाटू ( राज. ) प्रा. ३ दिन का, रवि दशमी, C |
| १२ | ११ | मं | ५४ | ३६ | २८ | ३७ | आ | १ | ४२ | ७ | २७ | आ | ११ | २० | ११ | १४ | व | २२ | ४५ | १५ | ५२ | २८ | ५५ | ६ | ४७ | १८ | २० | १९ | १० | 2 | क. २०।३ | १० | १७ | ४९ | ५७ | १० | १३ | ५४ | २७ | ३९ | भद्रा १५।५२ से २८।३७ तक, आमलकी एकादशी व्रत D |
| १३ | १२ | बु | ५७ | ८ | २९ | ३७ | पुन | ६ | ५२ | ९ | ३० | सौ | ११ | १६ | ११ | १६ | ब | २६ | ६ | १७ | १२ | २८ | ५९ | ६ | ४५ | १८ | २१ | २० | ११ | 3 | कर्क | १० | १८ | ५० | ७ | ७ | १४ | ५२ | २८ | २८ | गोविन्द द्वादशी, मेला श्री खाटू श्यामजी ( राज. ) पूर्ति |
| १४ | १३ | गु | ५७ | ५९ | २९ | ५६ | पु | १० | २७ | १० | ५५ | शो | १० | ८ | १० | ४८ | कौ | २७ | ४७ | १७ | ५१ | २९ | ३ | ६ | ४४ | १८ | २२ | २१ | १२ | 4 | कर्क | १० | १९ | ५० | १४ | ५ | १५ | ५२ | २९ | १२ | सूर्य पू.भा. में ९।२४, बुध पू.भा. में ८।२४, वक्री गुरु पू.फा. २ E |
| १५ | १४ | शु | ५७ | १५ | २९ | ३७ | श्ले | १२ | २६ | ११ | ४२ | अ | ७ | ४३ | ९ | ४९ | ग | २७ | ४९ | १७ | ५१ | २९ | ७ | ६ | ४३ | १८ | २२ | २२ | १३ | 5 | सिं. ११।४७ | १० | २० | ५० | २० | ४ | १६ | ५३ | २९ | ५२ | भद्रा २९।३७ से, E में २४।५१, प्रदोष व्रत |
| १६ | १५ | श | ५५ | १ | २८ | ४६ | म | १२ | ५६ | १२ | ५३ | सु | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | वि | २६ | २३ | १७ | १५ | २९ | ११ | ६ | ४२ | १८ | २३ | २३ | १४ | 6 | सिंह | १० | २१ | ५० | २४ | २ | १७ | १५ | ३० | २९ | भद्रा १७।१५ तक, मंगल कृत्तिका में २०।२२, पूर्णिमा व्रत, F |

A श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती B प्रा., श्री दादूदयाल जयंती, अष्टान्हिक व्रत प्रा. जैन F सत्यव्रत, होलिका दहन, मन्वादि १५, चैतन्य महाप्रभु जयंती, अष्टान्हिक व्रत समाप्ति जैन, होलाष्टक समाप्त

**[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

फाल्गुन शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ फर.

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | १ | ० | १० | ४ | ११ | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २८ | १३ | २१ | १० | २० | २८ | १२ | २० | २० | ९ | १९ | २८ |
| ४९ | १६ | ४६ | २९ | ४३ | २९ | २६ | ४३ | ४३ | १२ | ५४ | ९ |
| १५ | २६ | ५७ | ५१ | ५३ | ५० | ४० | १७ | १७ | ४८ | १८ | ४ |
| ६० | ७०८ | ३८ | ११९ | ७ | [illegible] | ० | ३ | ३ | ३ | २ | ० |
| १६ | ४९ | २८ | २१ | ४८ | ५८ | ५५ | ११ | ११ | २७ | ७ | ४९ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | अ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

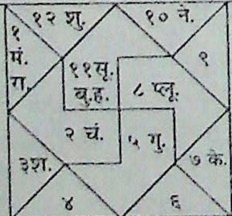


शनिवार को चन्द्रदर्शन होना कहीं महान पुरुष अथवा शासक का निधन सूचक है। यथा—जो शशि उगे सोम शनि यह अचंभो जोई। छत्र परै दिन तीस मंह कैकण मंहिगो होई॥ राहु मंगल तथा शुक्र का एक राशि पर योग पाश्चात्य राष्ट्रों में युद्ध उन्माद बढ़ कर प्रजा में भय वृद्धि का फलप्रद है। पाकिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान, इराक तथा यूरोप देशों में शासकों की क्रूर नीतियों का दुष्प्रभाव बढ़कर हिंसा, हत्याएं व बारूद विस्फोट, अग्निकांड होंगे। यथा—मंगलो राहु शुक्रौ च ग्रहा यदि त्रयस्मेषे। परस्परं नृपैर्युद्धं रुधिरैः पूरिता मही॥ देश की सीमावर्ती क्षेत्रीय सेनाओं में सतर्कता एवं गतिरोध बनेगा। राजनेताओं तथा प्रधान शासकों में चिन्ता वृद्धि होकर आत्म रक्षण कार्यवाहियों पर [illegible] श्रम पूर्ण कार्य किया जायेगा। तेजी मन्दी विचार—कुम्भ में बुध का प्रवेश चना, मूंग, मोठ आदि दलहन अनाजों में मन्दी कारक है। गेहूं, चावल, जौ, ज्वार में तेजी रहेगी। सरसों, मूंगफली व तिल आदि तेलों में घटाबढ़ी चलेगी। चरस, भांग, कॉफी, चाय एवं तम्बाकू के बाजारों में तेजी रहेगी। रसायनिक पदार्थों, शेयर भावों और वाहनादि मशीनरी सामान तेज होंगे। बादाम, काजू, किसमिस, अखरोट, कालीमिर्च, लौंग आदि किराणा सामान में उछाले की तेजी रहेगी। सोना मन्दा रहेगा। आकाश लक्षण—रवि से आगे शुक्र का भ्रमण पक्षारम्भ में वर्षा कारक है। दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात में सामान्य वर्षा होगी। मंगल-शुक्र का योग पक्षान्त में तापमान में वृद्धि तथा तेज हवाओं का कारक है। मौसम परिवर्तित होकर गर्मी बढ़ेगी। शकुन विचार—फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा के दिन बादलों की गर्जना अथवा वर्षा होना अग्रिम आश्विन मास में धान्यों में तेजी कारक होता है। यथा—फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जै वर्षा होय। धान्य सातवां मास में निश्चय मंहगा होय॥

ता. ६ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

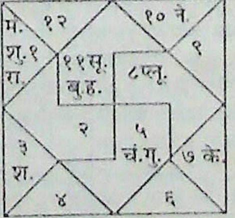


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ४ | ० | १० | ४ | ० | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २१ | ९ | २६ | २३ | १९ | ६ | १२ | २० | २० | ९ | २० | २८ |
| ५० | ४६ | १६ | ३५ | ४९ | २१ | २२ | २१ | २१ | ३६ | ८ | १४ |
| २४ | १७ | ११ | २१ | ४ | १६ | ३५ | १ | १ | ४५ | ४३ | १२ |
| ६० | ८०५ | ३८ | ११५ | ७ | [illegible] | ० | ३ | ३ | ३ | २ | ० |
| २ | ५३ | २८ | ४३ | ५० | २८ | ८ | ११ | ११ | २६ | ० | ३६ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | व | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# चैत्र कृष्ण पक्ष-२४ श्री सं. २०६० शाके १९२५

ता. ७ मार्च से २० मार्च सन् २००४ ई., राष्ट्रीय मिति १७ से ३० फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसंत ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

| रा. मि. | तिथि ति | वा | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | नक्षत्र न | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | योग यो | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | करण क | घ | प | स्टैं.टा. घं | मि | दिनमान घ | प | सूर्योदयास्त (स्टैं.टा.) उदय घं | मि | अस्त घं | मि | दिनांक प्र. | मु. | अं. | चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि. | दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा. | अं. | क. | वि. | गति | चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं. | मि. | अस्त घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १७ | १ | र | ५१ | ५६ | २७ | २८ | पूफा | १२ | ९ | ११ | ३३ | शू | ५३ | ५० | २८ | १३ | बा | २३ | ४२ | १६ | १० | २९ | १६ | ६ | ४१ | १८ | २३ | २४ | १५ | 7 | कं. १७।२४ | १० | २२ | ५० | २६ | [illegible] | १८ | ५१ | ७ | २ | शनि मार्गी १२।४९, वसन्त प्रतिपदा, वसन्तोत्सव, छारेंडी, धूलि वन्दन |
| १८ | २ | चं | ४७ | ५३ | २५ | ४९ | उफा | १० | २२ | १० | ४९ | गं | ४७ | ३८ | २५ | ४३ | तै | २० | १ | १४ | ४१ | २९ | २० | ६ | ४० | १८ | २४ | २५ | १६ | 8 | कन्या | १० | २३ | ५० | २६ | [illegible] | १९ | ५७ | ७ | ३५ | कलमदान, पूजा देशाचारे, संत तुकाराम ज., विश्व महिला दिवस |
| १९ | ३ | मं | ४३ | १४ | २३ | ५७ | ह | ७ | ४९ | ९ | ४७ | वृ | ४० | ५८ | २३ | २ | व | १५ | ३८ | १२ | ५४ | २९ | २४ | ६ | ३९ | १८ | २५ | २६ | १७ | 9 | तु. २१।११ | १० | २४ | ५० | २५ | ५६ | २१ | ० | ८ | ७ | भद्रा १२।५४ से २३।५७ तक, बुध मीन में प्रवेश १२।४७ |
| २० | ४ | बु | ३८ | १३ | २१ | ५५ | चि | ४ | ४७ | ८ | ३३ | ध्रु | ३४ | ० | २० | १४ | ब | १० | ४७ | १० | ५७ | २९ | २९ | ६ | ३८ | १८ | २५ | २७ | १८ | 10 | तुला | १० | २५ | ५० | २१ | ५५ | २२ | ४ | ८ | ४१ | बुध उ.भा. में २९।३६, **कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ** |
| २१ | ५ | गु | ३३ | ० | १९ | ४९ | स्वा | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | व्या | २६ | ५२ | १७ | २१ | कौ | ५ | ३९ | ८ | ५२ | २९ | ३३ | ६ | ३७ | १८ | २६ | २८ | १९ | 11 | वृ. २४।९ | १० | २६ | ५० | १६ | ५३ | २३ | ११ | ९ | १८ | मंगल वृष में प्र. २५।११, रंग पंचमी, श्री जयंती |
| २२ | ६ | शु | २७ | ४४ | १७ | ४१ | अनु | ५४ | ३० | २८ | २४ | ह | १९ | ४० | १४ | २८ | ग | ० | २४ | ६ | ४५ | २९ | ३७ | ६ | ३६ | १८ | २६ | २९ | २० | 12 | वृश्चिक | १० | २७ | ५० | ९ | ५१ | २४ | ० | १० | ० | भद्रा १७।४१ से २८।३८ तक, शुक्र भर. में १४।१२, भर. २ में राहु A |
| २३ | ७ | श | २२ | ३१ | १५ | ३५ | ज्ये | ५१ | ७ | २७ | १ | व | १२ | ३१ | ११ | ३५ | ब | २२ | ३१ | १५ | ३५ | २९ | ४२ | ६ | ३४ | १८ | २७ | ३० | २१ | 13 | ध. २७।१ | १० | २८ | ५० | ० | ५० | २४ | १९ | १० | ४८ | **शीतला सप्तमी,** मेला शीतला माता कुराली (पंजाब) |
| २४ | ८ | र | १७ | २४ | १३ | ३१ | मू | ४७ | ५३ | २५ | ४३ | सि | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | कौ | १७ | २४ | १३ | ३१ | २९ | ४६ | ६ | ३३ | १८ | २८ | चैत्र | २२ | 14 | धनु | १० | २९ | ४९ | ५० | ४८ | २५ | २७ | ११ | ४३ | **सूर्य मीन में प्र. ९।३५, संक्रांति मु. ३० उठी, सौर चैत्र मासारंभ,** B |
| २५ | ९ | चं | १२ | २९ | ११ | ३२ | पू.षा | ४४ | ५४ | २४ | ३० | वरि | ५१ | ४४ | २७ | १४ | ग | १२ | २९ | ११ | ३२ | २९ | ५० | ६ | ३२ | १८ | २८ | २ | २३ | 15 | म. ३०।१३ | ११ | ० | ४९ | ३८ | ४७ | २६ | ३१ | १२ | ४५ | भद्रा २२।३५ से, C व्रत (सब्रका) |
| २६ | १० | मं | ७ | ५२ | ९ | ४० | उ.षा | ४२ | १७ | २३ | २६ | प | ४५ | २० | २४ | ३९ | वि | ७ | ५२ | ९ | ४० | २९ | ५४ | ६ | ३१ | १८ | २९ | ३ | २४ | 16 | मकर | ११ | १ | ४९ | २५ | ४५ | २७ | २९ | १३ | ५१ | भद्रा ९।४० तक, **दश माता व्रत** D पर्व २१।५८ से २९।१९ तक |
| २७ | ११ | बु | ३ | ३९ | ७ | ५७ | श्र | ४० | ९ | २२ | ३४ | शि | ३९ | २० | २२ | १४ | बा | ३ | ३९ | ७ | ५७ | २९ | ५९ | ६ | ३० | १८ | २९ | ४ | २५ | 17 | मकर | ११ | २ | ४९ | १० | ४३ | २८ | १९ | १४ | ५७ | सूर्य उ.भा. में १७।५४, बुध रेवती में २७।८, **पापमोचनी एकादशी** C |
| २८ | १२ | गु | ० | १ | ६ | २९ | ध | ३८ | ४३ | २१ | ५८ | सि | ३३ | ५३ | २० | २ | तै | ० | १ | ६ | २९ | ३० | ३ | ६ | २९ | १८ | ३० | ५ | २६ | 18 | कुं. १०।१३ | ११ | ३ | ४८ | ५३ | ४१ | २९ | ३ | १६ | २ | भद्रा २९।१९ से, **पंचक प्रा.** १०।१३ से, **प्रदोष व्रत,** वारुणी D |
| ० | १३ | गु | ५७ | ४ | २९ | १९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | 0 | ००० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | त्रयोदशी क्षयः |
| २९ | १४ | शु | ५५ | १० | २८ | ३२ | शत | ३८ | १० | २१ | ४३ | सा | २९ | ९ | १८ | ७ | वि | २६ | ० | १६ | ५२ | ३० | ७ | ६ | २८ | १८ | ३१ | ६ | २७ | 19 | कुंभ | ११ | ४ | ४८ | ३४ | ४० | २९ | ४० | १७ | ५ | भद्रा १६।५२ तक, बुध पश्चिम में उदय २४।२, **मास शिवरात्री** E |
| ३० | ३० | श | ५४ | २६ | २८ | १३ | पू.भा | ३८ | ४३ | २१ | ५६ | शुभ | २५ | १७ | १६ | ३३ | च | २४ | ४० | १६ | १८ | ३० | १२ | ६ | २६ | १८ | ३१ | ७ | २८ | 20 | मी. १५।५० | ११ | ५ | ४८ | १४ | ३७ | ३० | १३ | १८ | ४ | **देव पितृकार्याऽमावस्या** मन्वादि, सायन मेष में सूर्य १२।३९. F |

A स्वाति ४ में केतु २४।२२, एकनाथ षष्ठी B कालाष्टमी, शीतलाष्टमी (बासी भोजन करना चाहिए) E व्रत, मेला पृथूदक पिहोवा (हरि.) F रवि उत्तर गोल प्रा., चांद्र संवत्सर २०६० समाप्त ॥ शुभम॥

**[दोनों कुण्डलियां सूर्योदय काल की हैं]**

चैत्र कृ. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १४ मार्च

| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ८ | १ | ११ | ४ | ० | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| २९ | १ | १ | ९ | १८ | १५ | १२ | १९ | १९ | १० | २० | २८ |
| ४९ | २६ | २३ | १२ | ४७ | ६ | २४ | ५५ | ५५ | ३ | २४ | १८ |
| ५० | ३६ | ४९ | १३ | ८ | ८ | ३८ | ३५ | ३५ | ३४ | १३ | ७ |
| ५९ | ८८ | ३८ | ११६ | ७ | ६४ | ० | ३ | ३ | ३ | १ | ० |
| ४८ | ४४ | २७ | ३६ | ३४ | २७ | ४६ | ११ | ११ | १७ | ५१ | २० |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | मा | व | व | मा | मा | मा |
| उ | उ | उ | अ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ |
| पू.भा. | मूल | कृत्ति. | उ.भा. | पू.फा. | भरणी | आर्द्रा | भरणी | स्वाति | शत. | श्रवण | ज्येष्ठा |

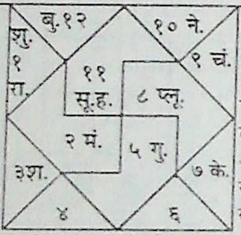


कृष्णा प्रतिपदा व संक्रांति संक्रमण होना शासकों हेतु विवादकता, मतभेद होकर युद्धोन्मादकारी फलकारी है। यथा—**संक्रांतिरादित्य दिने न शस्ता करोति युद्धं नृपतेस्तीव। धान्यं महर्घं ह्यति रौद्र वार्ता प्रजा भवेत् दुखित हीन दीना ॥** नेताओं में आपसी तनाव होकर अनेक आन्दोलन, विग्रह तथा तोड़फोड़ व हानिकारक घटनाओं से जनता में आक्रोश व भयवृद्धि रहेगी। देश की कई प्रान्तीय सत्तारूढ़ पार्टियों में विघटन बनेंगे। केन्द्र सरकार के अथक प्रयासोपरान्त भी निर्वाचन जन्य स्थितियां उभरेंगी। पूर्व व दक्षिण के प्रान्तों में धार्मिक अथवा साम्प्रदायिक दंगे उभरकर शासकों को चिन्ता बढ़ेगी। सूर्य का गुरु से समसप्तक योग विद्वानों एवं उच्च वर्ग वालों हेतु कष्ट फलप्रद है। **तेजी मन्दी विचार**—शनि मार्गी से नशीले पदार्थ मन्दे। रुई, सूत, कपास, बिनौला में तेजी रहेगी। मीने बुध कृ. ३ से गुड़, चीनी, शक्कर, गेहूं, चावल, जौ, ज्वार, मूंग, मोंठ में तेजी कारक है। कृ. ८ मीने सूर्य से चना, सरसों, मूंगफली, तिल में मन्दा तथा सूती वस्त्र, रसायनिक पदार्थों, औषधियों में तेजी फलप्रद है। पक्ष में शेयर बाजार में घटाबढ़ी के बाद गिरावट होगी। चान्दी सोना आदि धातुओं में मन्दी का रुख रहेगा। **आकाश लक्षण**—मीन बुध पक्ष में बादल चाल होकर ओला वर्षा कारक है। पक्षान्त में कुछ स्थानों पर महाराष्ट्र, तमिलनाडु व बंगाल में वर्षा रहेगी। पश्चिमोत्तर राज्यों में बादल चाल तथा मध्य भाग में खण्ड वर्षा योगप्रद है। **शकुन विचार**—चैत्र वदी अष्टमी के दिन अथवा चतुर्दशी तिथि को बादलों की घटाएं होकर उत्तरी वायु चले तो अग्रिम संवत्सर में श्रेष्ठ उपज व वर्षा होती है। यथा [illegible] भवेत ॥

ता. २० मार्च ❖ चैत्र कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

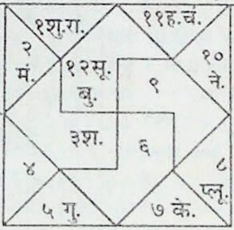


| सू | चं | मं | बु | गु | शु | श | रा | के | ह | ने | प्लू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ११ | १० | १ | ११ | ४ | ० | २ | ० | ६ | १० | ९ | ७ |
| ५ | २४ | ५ | २० | १८ | २१ | १२ | १९ | १९ | १० | २० | २८ |
| ४८ | १७ | १४ | २८ | २ | २८ | ३० | ३६ | ३६ | २३ | ३५ | १९ |
| १४ | ५० | २९ | ५३ | ४५ | २१ | ५२ | ३१ | ३१ | ४ | १ | ३८ |
| ५९ | ७४ | ३८ | १०४ | ७ | ६२ | १ | ३ | ३ | ३ | १ | ० |
| ३७ | १७ | २७ | ३२ | ८ | ३७ | २६ | ११ | ११ | १२ | ४३ | ८ |
| मा | मा | मा | मा | व | मा | मा | व | व | मा | मा | मा |
| उ | अ | उ | उ | उ | उ | उ | अ | अ | — | — | — |
| २ | ३ | ३ | २ | २ | ३ | २ | २ | ४ | २ | ४ | ४ |
| उ.भा. | पू.भा. | कृत्ति. | रेवती | पू.फा. | भरणी | आर्द्रा | भरणी | स्वाति | शत. | श्रवण | ज्येष्ठा |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

व बंगाल में वर्षा रहेगी। पश्चिमोत्तर राज्यों में बादल [illegible] चतुर्दशी तिथि को बादलों की घटाएं होकर उत्तरी
वायु चले तो अग्रिम संवत्सर में श्रेष्ठ उपज व वर्षा होती है। यथा— [illegible] कृष्ण पक्ष चतुर्दश्यामष्टमी तिथौ। तत्राभ्रमनरो वायुः शुभायनत्सरो भवेत॥

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२ से १६ अप्रैल तक)

| अप्रैल | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घटा | मिनट | योग | घटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | १ | बु | २७ | १२ | रे | २५ | २९ | ऐं | २१ | ३३ | मे. २५।२९ | नव संवत्सरारम्भः, नवरात्रारंभः, घटस्थापन-गुड़ी पड़वा, गौतम A |
| 3 | २ | गु | २९ | ४६ | अ | २८ | ३२ | वै | २२ | ३० | मेष | चन्द्रदर्शन मु. ३०, सिंधारा, श्री झूलेलाल जयंती |
| 4 | ३ | शु | — | — | भ | — | — | वि | २३ | ३३ | मेष | सफर मु. मास २ प्रा., गणगौरी पूजा, मत्स्य जयंती, मनोरथ ३, B |
| 5 | ३ | श | ८ | २६ | भ | ७ | ४२ | प्री | २४ | ३६ | वृ. १४।२९ | भद्रा २१।४६ से, विनायक ४ व्रत, पश्चिमोदयं बुध १७।२८, C |
| 6 | ४ | र | ११ | ४ | कृ | १० | ४९ | आ | २५ | ३३ | वृष | भद्रा ११।४ तक, श्री लक्ष्मी पूजारंभ, उ.षा. में मंगल १८।४२ |
| 7 | ५ | चं | १३ | २८ | रो | १३ | ४४ | सौ | २६ | २५ | मि. २७।२ | स्कन्द षष्ठी, हय पंचमी व्रत, डोलोत्सव, कल्पादि ५, शनि मृग. D |
| 8 | ६ | मं | १५ | २७ | मृ | १६ | १३ | शो | २६ | ३३ | मिथुन | पू.भा. में शुक्र १३।२४ B सौभाग्य शयन व्रत C मार्गी गुरु २१।२४ |
| 9 | ७ | बु | १६ | ४८ | आ | १८ | ७ | अ | २६ | १९ | मिथुन | भद्रा १६।४८ से २९।१२ तक, जैन आयंबिल ओली प्रा., भरणी में E |
| 10 | ८ | गु | १७ | २४ | पुन | १९ | १७ | सु | २५ | २९ | क. १३।६ | दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति दुर्गा पूजन D ३ मिथुन में २०।१० |
| 11 | ९ | शु | १७ | ९ | पु | १९ | ३७ | धृ | २३ | ५९ | कर्क | मकर में मंगल २८।३३, श्री राम नवमी, नवरात्रि समाप्ति |
| 12 | १० | श | १६ | ३ | श्ले | १९ | ८ | शू | २१ | ४८ | सिं. १९।८ | भद्रा २७।१२ से, ज्वालामुखी योग १६।३ तक E बुध २६।३८ |
| 13 | ११ | र | १४ | ९ | म | १७ | ५२ | गं | १९ | ० | सिंह | भद्रा १४।९ तक, कामदा एका. व्रत सबका, लक्ष्मीकान्त दोलोत्सव |
| 14 | १२ | चं | ११ | ३३ | पू.फा | १५ | ५५ | वृ | १५ | ३९ | क. २१।२१ | अश्वि. मेष में सूर्यः ११।४९, संक्रांति पुण्य, प्रदोष व्रत, बैशाखी पं. |
| 15 | १३ | मं | ८ | २५ | उ.फा | १३ | २८ | ध्रु | ११ | ५२ | कन्या | भद्रा २८।५३ से, महावीर जयंती जैन, मीनाक्षी कल्याणम् |
| 0 | १४ | मं | २८ | ५३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | चतुर्दशी क्षय: A ज., अश्वि. मेष में बुध १४।४९, पंचक समा. २५।२९ |
| 16 | १५ | बु | २५ | ७ | ह | १० | ३९ | व्या | ७/२० | ४८/३३ | तु. २१।१० | भद्रा १५।१ तक, शुक्र मीन में २०।३३, सत्यव्रत पू., श्री हनुमान जयंती |

## बैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०६० (१७ अप्रैल से १ मई तक)

| अप्रैल | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घटा | मिनट | योग | घटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 17 | १ | गु | २१ | २० | चि | ७/२८ | ४०/४२ | व | २३ | १८ | तुला | B बासौड़ा), बाबू कुंवर सिंह दिवस (बिहार), कालाष्टमी |
| 18 | २ | शु | १७ | ४० | वि | २५ | ५५ | सि | १९ | १० | वृ. २०।३५ | भद्रा २७।५५ से, गुड फ्राईडे A १४।५०, व्यतिपात पुण्यं |
| 19 | ३ | श | १४ | १७ | अनु | २३ | ३० | व्य | १५ | १७ | वृश्चिक | भद्रा १४।१७ तक, कृष्णा चतुर्थी व्रतम्, उ.भा. में शुक्र A |
| 20 | ४ | र | ११ | २० | ज्ये | २१ | ३३ | वरि | ११ | ४६ | ध. २१।३३ | सायन वृष में सूर्य प्रवेश १७।५३, ईस्टर सण्डे |
| 21 | ५ | चं | ८ | ५६ | मू | २० | १३ | प | ८ | ४२ | धनु | गुरु तेग बहादुर जयंती (प्रा.मत से), राष्ट्रीय बैशाख मासारम्भ |
| 22 | ६ | मं | ७ | १० | पू.षा | १९ | ३३ | शि | ५/२८ | ४०/.. | म. २५।२९ | भद्रा ७।१० से १८।३३ तक, चेहल्लुम शहीद करबला (मु.) |
| 23 | ७ | बु | ६ | ६ | उ.षा | १९ | ३४ | सा | २६ | ४६ | मकर | गुरु अर्जुनदेव जयंती (प्रा. मत से), शीतला पूजन (बूढ़ा B |
| 0 | ८ | बु | २९ | ४५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | अष्टमी क्षय:C में अस्त २२।३५, सुव्रत नाथ जन्म जैन, D |
| 24 | ९ | गु | — | — | श्र | २० | १७ | शुभ | २५ | ५४ | मकर | D वक्री बुध १४।३०, अगस्त अस्त ९।४० |
| 25 | ९ | शु | ६ | ४ | ध | २१ | ३८ | शु | २५ | ३२ | कुं. ८।५३ | भद्रा १८।२८ से, पंचक प्रा. ८।५३ से E सूर्य भरणी में २७।४२ |
| 26 | १० | श | ७ | २ | शत | २३ | ३२ | ब | २५ | ३५ | कुंभ | भद्रा ७।२ तक, वरूथिनी एका. व्रत स्मार्त, बुध पश्चिम C |
| 27 | ११ | र | ८ | ३१ | पू.भा | २५ | १४ | ऐं | २६ | १ | मी. १९।१६ | वरूथिनी एकादशी व्रत वै., श्री वल्लभाचार्य जयंती, E |
| 28 | १२ | चं | १० | २७ | उ.भा | २८ | ३६ | वै | २६ | ४२ | मीन | मंगल श्रवण में १७।५६, सोम प्रदोष व्रत |
| 29 | १३ | मं | १२ | ४२ | रे | — | — | वि | २७ | ३६ | मीन | भद्रा १२।४२ से २५।५५ तक F पिंजोर (हरि.), मजदूर दिवस |
| 30 | १४ | बु | १५ | ११ | रे | ७ | ३३ | प्री | २८ | ३७ | मे. ७।३३ | पंचक समा. ७।३३, रेव. में शुक्र १५।३२, आखिरी चहार शम्बा (मु.) |
| M1 | ३० | गु | १७ | ४६ | अ | १० | ३९ | आ | — | — | मेष | देवपितृकार्य अमावस्या, श्री शुकदेव जयंती, मेला F |

## बैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२ से १६ मई तक)

| मई | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घटा | मिनट | योग | घटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2 | १ | शु | २० | २३ | भ | १३ | ४८ | आ | ५ | ४२ | वृ. २०।३८ | देव दामोदर पुण्यम् A यात्रा, जैन वर्षीतप तप समापन |
| 3 | २ | श | २२ | ५३ | कृ | १६ | ५२ | सौ | ६ | ४५ | वृष | चन्द्रदर्शन मु. ४५, कृतिका ३ में राहु, अनुराधा १ में केतु ११।४८ |
| 4 | ३ | र | २५ | ११ | रो | १९ | ४५ | शो | ७ | ४१ | वृष | रबि-उल-अव्वल प्रा., अक्षय तृतीया, परशुराम ज., बद्रीकेदारनाथ A |
| 5 | ४ | चं | २७ | ७ | मृ | २२ | २० | अ | ८ | २५ | मि. ९।५ | भद्रा १४।१२ से २७।७ तक, विनायक ४ व्रत B में शनि १०।९ |
| 6 | ५ | मं | २८ | ३४ | आ | २४ | २८ | सु | ८ | ५२ | मिथुन | श्री आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य जयंती, रामानुजाचार्य दक्षिण भारते |
| 7 | ६ | बु | २९ | २६ | पुन | २६ | ३ | धृ | ८ | ५६ | क. १९।४३ | श्री रामानुजाचार्य जयंती, श्री रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती |
| 8 | ७ | गु | २९ | ३६ | पु | २६ | ५९ | शू | ८ | ३१ | कर्क | भद्रा २९।३६ से, गंगा सप्तमी D वक्री नेपच्यून १८।३०, छिन्नमस्ता E |
| 9 | ८ | शु | २९ | ३ | श्ले | २७ | १२ | गं | ७ | ३४ | सिं. २७।१२ | भद्रा १७।२५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती |
| 10 | ९ | श | २७ | ४५ | म | २६ | ४१ | वृ | ५/२० | २/.. | सिंह | सीता नवमी, महावीर स्वामी केवल ज्ञान जैन F जिनवर व्रत प्रा. जैन |
| 11 | १० | र | २५ | ४५ | पू.फा | २५ | २८ | व्या | २५ | १३ | सिंह | सूर्य कृतिका में २१।४९, अश्विनी मेष में शुक्र १५।४४ |
| 12 | ११ | चं | २३ | ९ | उ.फा | २३ | २९ | ह | २२ | १ | कं. ७।४ | भद्रा १२।३१ से २३।९ तक, मोहिनी एकादशी व्रत सबका, मृगशिरा ४ B |
| 13 | १२ | मं | २० | २ | ह | २१ | १९ | व | १८ | २५ | कन्या | रुक्मणी द्वादशी E ज., व्यतिपात १०।२२ तक, बाराहवफात, ज्येष्ठ F |
| 14 | १३ | बु | १६ | ३४ | चि | १८ | ३८ | सि | १४ | २९ | तु. ८।९ | प्रदोष व्रत, नृसिंह चतुर्दशी, अशोक त्रिरात्री व्रत प्रा. |
| 15 | १४ | गु | १२ | ५२ | स्वा | १५ | ४५ | व्य | १० | २२ | तुला | भद्रा १२।५२ से २३।०० तक, कूर्म ज., सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, सूर्य C |
| 16 | १५ | शु | ९ | ८ | वि | १२ | ५० | वरि | ५/.. | ३१/. | वृ. ७।३३ | बुध पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्य, यम प्रीत्यर्थ जल कुम्भ दान |
| | | | | | | | | | | | | C वृष में ८।४२, संक्रांति पुण्य मु. १५ बैठी, आश्ले. १ में गुरु १३।१८, D |

## ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०६० (१७ से ३१ मई तक)

| मई | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घटा | मिनट | योग | घटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | १ | शु | २९ | २९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | प्रतिपदा क्षय: A मां जयंती |
| 17 | २ | श | २६ | ७ | अनु | १० | ३ | शि | २२ | ९ | वृश्चिक | बुध पूर्व में उदय १२।१३ B राष्ट्रीय ज्येष्ठ मास प्रारम्भ |
| 18 | ३ | र | २३ | ९ | ज्ये | ७ | ३५ | सि | १८ | ३४ | ध. ७।३५ | भद्रा १२।३४ से २३।९ तक, श्री नारद ज., श्री आनन्दमयी A |
| 19 | ४ | चं | २० | ४५ | मू | ५/२८ | ३३/८ | सा | १५ | २५ | धनु | कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| 20 | ५ | मं | १९ | १ | उ.षा | २७ | २४ | शुभ | १२ | ४७ | म. ९।४३ | मार्गी बुध २०।३, ईद-ए-मौलाद मु. |
| 21 | ६ | बु | १८ | २ | श्र | २७ | २७ | शु | १० | ४६ | मकर | भद्रा १८।२ से, धनिष्ठा में मंगल २८।४०, सायन मिथुन में सूर्य प्र. १७।२ |
| 22 | ७ | गु | १७ | ५० | ध | २८ | १६ | ब्र | ९ | २२ | कुं. १५।४५ | भद्रा ५।५० तक, पंचक प्रा. १५।४५ से, शुक्र भर. में १५।३५, B |
| 23 | ८ | शु | १८ | २५ | शत | — | — | ऐं | ८ | ३६ | कुम्भ | कालाष्टमी, मेला चानाणी माता, दादूदयाल पुण्यम |
| 24 | ९ | श | १९ | ४२ | शत | ५ | ४९ | वै | ८ | २५ | मी. २५।२३ | |
| 25 | १० | र | २१ | ३४ | पू.भा | ७ | ५९ | वि | ८ | ४३ | मीन | भद्रा ८।३४ से २१।३४ तक, सूर्य रोहिणी में प्रवेश १८।१७ |
| 26 | ११ | चं | २३ | ५१ | उ.भा | १० | ३९ | प्री | ९ | २४ | मीन | अपरा एकादशी व्रत सबका |
| 27 | १२ | मं | २६ | २३ | रे | १३ | ३८ | आयु | १० | २१ | मे. १३।३८ | पंचक समा. १३।३८, मधुसूदन १२, श्री अनन्तनाथ जन्म जैन |
| 28 | १३ | बु | २८ | ५९ | अ | १६ | ४७ | सौ | ११ | २६ | मेष | भद्रा २८।५९ से, प्रदोष व्रत |
| 29 | १४ | गु | — | — | भ | १९ | ५५ | शो | १२ | ३२ | वृ. २६।४१ | भद्रा १८।१६ तक, वट सावित्री व्रतारंभ |
| 30 | १४ | शु | ७ | ३१ | कृ. | २२ | ५५ | अति | १३ | ३४ | वृष | पितृकार्य अमावस्या D व्रत, सूर्य ग्रहणम् |
| 31 | ३० | श | ९ | ५२ | रो | २५ | ४० | सु | १४ | २५ | वृष | देवकार्य अमा., भावुका ३०, शनि जन्म दि., वट सावित्री D |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

## ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०६० (१ से १४ जून तक)

| जून | तिथि | वार | घं. | मि. | नक्षत्र | घं. | मि. | योग | घं. | मि. | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | १ | र | ११ | ५४ | मृ | २८ | ५ | धु | २५ | २ | मि. १४।५५ | चन्द्रदर्शन मु. ३०, करिदिन A गुरु अर्जुनदेव बलि. दि. |
| 2 | २ | चं | १३ | ३४ | आ | — | — | शू | २५ | २२ | मिथुन | रवि उस्सानी प्रा., शुक्र कृत्तिका में १४।५८ |
| 3 | ३ | मं | १४ | ४२ | आ | ६ | ६ | गं | २५ | २२ | क. २५।६० | भद्रा २७।१६ से, मंगल कुंभ में प्र. २५।५१, विनायक ४, A |
| 4 | ४ | बु | १५ | ३५ | पु | ७ | ४१ | वृ | २४ | ५९ | कर्क | भद्रा १५।३५ तक, शनि पश्चिम में अस्त १९।५९ |
| 5 | ५ | गु | १५ | ४९ | पु | ८ | ४६ | ध्रु | २४ | १२ | कर्क | कृत्तिका में बुध २१।५४, वृष में शुक्र प्र. ८।४५, श्रुति पंचमी जैन |
| 6 | ६ | शु | १५ | ३१ | श्ले | ९ | १९ | व्या | १२ | ५९ | सिं. ९।१९ | हर्षल वक्री २६।३५, अरण्य षष्ठी व्रत (बं.), जामित्री ६ (बंगाल) |
| 7 | ७ | श | १४ | ३८ | म | ९ | १८ | ह | ११ | १९ | सिंह | भद्रा १४।३८ से २५।५९ तक, विन्ध्यवासिनी पूजा |
| 8 | ८ | र | १३ | १२ | पूफा | ८ | ४५ | व | ९ | २२ | कं. १४।३२ | सूर्य मृग. में प्रवेश १५।५४, शनि आर्द्रा में १८।३, बुध वृष में १८।४४ |
| 9 | ९ | चं | ११ | १५ | उफा | ७ | ४० | सि | ५/२० | ४/५२ | कन्या | श्री माहेश्वरी नवमी, व्यतिपात पुण्यम्, श्री वटुक भैरव जयंती |
| 10 | १० | मं | ८ | ४९ | ह | ५/२८ | ५/५ | वरी | २४ | २३ | तु. १९।४ | भद्रा १९।२६ से, गंगा दशहरा, निर्जला एका. व्रत (स्मार्त), B |
| 11 | ११ | बु | ५ | ५८ | स्वा | २५ | ४७ | परि | २० | ४८ | तुला | भद्रा ५।५८ तक, निर्जला एकादशी व्रत वै., मेला बहिरे C |
| 0 | १२ | बु | २६ | ४९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | द्वादशी क्षय: B मेला हरिद्वार C भटिण्डा (पंजाब) D पूर्णिमा व्रत |
| 12 | १३ | गु | २३ | २९ | वि | २३ | १६ | शिव | १७ | २ | वृ. १०।५५ | प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रत प्रा. (गुज.), फातिहा यजदहूम (मु.) |
| 13 | १४ | शु | २० | ६ | अनु | २० | ४२ | सि | १३ | ११ | वृश्चिक | भद्रा २०।६ से, शुक्र रोहिणी में १३।५९, चम्पक १४ (बंगाल), D |
| 14 | १५ | श | १६ | ४८ | ज्ये | १८ | १४ | सा | ९ | २१ | ध. १८।१४ | भद्रा ६।२५ तक, सत्यव्रत, वट सावित्री व्रत पूर्ति (गुजरात), E |
| | | | | | | | | | | | | E पूर्णिमा पुण्य, ज्येष्ठ जिनवर व्रत पूर्ति जैन |

## आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०६० (१५ से २९ जून तक)



| जून | तिथि | वार | घं. | मि. | नक्षत्र | घं. | मि. | योग | घं. | मि. | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 15 | १ | र | १३ | ४३ | मू | १६ | ० | शुभ | [illegible] | [illegible] | धनु | सूर्य मिथुन में प्रवेश १५।२१, संक्रांति पुण्यम मु. ३० सूती, A |
| 16 | २ | चं | ११ | २ | पू.षा | १४ | ११ | ब | २३ | १७ | म. ११।१९ | भद्रा २१।५३ से, गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती |
| 17 | ३ | मं | ८ | ५३ | उ.षा | १२ | ५५ | ऐं | २० | ४७ | मकर | भद्रा ८।५३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| 18 | ४ | बु | ७ | २३ | श्र | १२ | २० | वै | १८ | ५२ | कुं. २४।११ | पंचक प्रारम्भ २४।१९ से, मंगल शतभिषा में १६।२५ |
| 19 | ५ | गु | ६ | ३९ | धनि | १२ | २० | वि | १७ | ३५ | कुम्भ | A बुध रोहिणी में २०।२९, वट सावित्री व्रत पारणा |
| 20 | ६ | शु | ६ | ४३ | शत | १३ | २८ | प्री | १६ | ५६ | कुम्भ | भद्रा ६।४३ से १९।३ तक B आषाढ़ मासारम्भ |
| 21 | ७ | श | ७ | ३४ | पू.भा | १५ | ११ | आ | १६ | ५३ | मी. ८।३१ | सायन कर्क में सूर्य प्र. २५।१, कालाष्टमी |
| 22 | ८ | र | ९ | ८ | उ.भा | १७ | ३३ | सौ | १७ | २० | मीन | सूर्य आर्द्रा में प्र. १५।००, बुध पूर्व में अस्त २३।३६, राष्ट्रीय B |
| 23 | ९ | चं | ११ | १५ | रे | २० | २३ | शो | १८ | ११ | मे. २०।२३ | भ. २४।२७ से, पंचक समाप्त २०।२३, मृगशिरा में बुध ९।५४ |
| 24 | १० | मं | १३ | ४३ | अ | २३ | २९ | अति | १९ | १४ | मेष | भद्रा १३।४३ तक, शुक्र मृगशिरा में १२।२९ |
| 25 | ११ | बु | १६ | १८ | भ | २६ | ३७ | सु | २० | २१ | मेष | योगिनी एकादशी व्रत सबका, गोपद्म व्रतोद्यापन |
| 26 | १२ | गु | १८ | ४७ | कृ | — | — | धृ | २१ | २२ | वृ. ९।१३ | बुध मिथुन में १८।२ |
| 27 | १३ | शु | २१ | ० | कृ | ५ | ३५ | शू | २२ | १० | वृष | भद्रा ११।० से, प्रदोष व्रत, आश्लेषा ३ में गुरु १२।५६ |
| 28 | १४ | श | २२ | ४९ | रो | ८ | १५ | गं | २२ | ३९ | मि. २१।२५ | भद्रा ९।५८ तक |
| 29 | ३० | र | २४ | १० | मृ | १० | २९ | वृ | २२ | ४७ | मिथुन | शुक्र मिथुन में २३।२९, बुध आर्द्रा में २२।१३, देवपितृकार्य अमावस्या |

## आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०६० (३० जून से १३ जुलाई तक)

| जुला. | तिथि | वार | घं. | मि. | नक्षत्र | घं. | मि. | योग | घं. | मि. | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | १ | चं | २५ | २ | आ | १२ | १५ | ध्रु | २२ | ३२ | मिथुन | B चातुर्मास व्रत नियमादि प्रारम्भ, जिनदत्त सूरी जयंती जैन |
| J1 | २ | मं | २५ | २४ | पुन | १३ | ३२ | व्या | २१ | ५४ | क. ७।१६ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, श्री जगदीश रथयात्रा-पुरी (उड़ीसा) |
| 2 | ३ | बु | २५ | १९ | पु | १४ | २२ | ह | २० | ५४ | कर्क | जमादि-उल-अव्वल प्रा. A २ में राहु विशा. ४ में केतु ८।३२ |
| 3 | ४ | गु | २४ | ४८ | श्ले | १४ | ४५ | व | १९ | ३३ | सिं. १४।४५ | भद्रा १३।७ से २४।४८ तक, विनायक ४ व्रत C बुध पुष्य में प्रवेश ९।१ |
| 4 | ५ | शु | २३ | ५४ | म | १४ | ४५ | सि | १७ | ५३ | सिंह | स्कन्द ५, हेरा पंचमी (उड़ीसा), आर्द्रा २ में शनि १३।२३ |
| 5 | ६ | श | २२ | ३७ | पूफा | १४ | २१ | व्य | १५ | ५५ | कं. २०।१२ | कुमार षष्ठी, बुध पुन. में २५।४९, शुक्र आर्द्रा में प्र. १०।२१, कृत्तिका A |
| 6 | ७ | र | २१ | ० | उफा | १३ | ३७ | वरि | १३ | ४० | कन्या | भद्रा २१।०० से, सूर्य पूजा, जैन अट्ठाई प्रा., सूर्य पुन. में प्रवेश १४।३० |
| 7 | ८ | चं | १९ | ३ | ह | १२ | ३३ | परि | ११ | ८ | तु. २३।५५ | भद्रा ८।४ तक, श्री दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा (त्रिपुरा) |
| 8 | ९ | मं | १६ | ५० | चि | ११ | १२ | शि | ८/२९ | २२/२३ | तुला | भडुली नवमी, कन्दर्प ९, शुद्र नवमी, मेला शरीफ भवानी (का.) |
| 9 | १० | बु | १४ | २१ | स्वा | ९ | ३४ | सा | २६ | १३ | वृ. २६।१३ | भद्रा २५।२ से, गिरिजा पूजा १०, उल्टा रथ (उड़ीसा), आशा दसमी व्रत |
| 10 | ११ | गु | ११ | ४१ | वि | ७ | ४४ | शुभ | २२ | ५५ | वृश्चिक | भद्रा ११।४१ तक, देवशयनी एका. व्रत सबका, बुध कर्क में १८।१९, B |
| 11 | १२ | शु | ८ | ५३ | अनु | ५/२० | ००/०० | शु | १९ | ३४ | ध. २७।४७ | प्रदोष व्रत, जया पार्वती व्रतारंभ, हरिवासर ५।४७ तक |
| 12 | १३ | श | ६ | ५ | मू | २५ | ५२ | ब | १६ | १४ | धनु | भद्रा २७।२२ से, मेला ज्वाला मुखी (का.), चौमासी चौदस जैन, C |
| 0 | १४ | श | २७ | २२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ०'० | चतुर्दशी क्षय: D पूजारंभ (बंगाल), मेला नैमिषारण्य, पूर्णिमा व्रत |
| 13 | १५ | र | २४ | ५३ | पू.षा | २४ | १० | ऐं | १३ | ३ | धनु | भद्रा १४।५ तक, सत्यव्रत-गुरु पूर्णिमा, व्यास पूजा, मनसा D |

## श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०६० (१४ से २९ जुलाई तक)

| जुला. | तिथि | वार | घं. | मि. | नक्षत्र | घं. | मि. | योग | घं. | मि. | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 14 | १ | चं | २२ | ४६ | उ.षा | २२ | ४२ | वै | २० | ५ | म. ५।४७ | शनि पूर्व में उदय ११।२४, आश्लेषा ४ में गुरु १३।२६ |
| 15 | २ | मं | २१ | ८ | श्र | २१ | ५९ | वि | [illegible] | [illegible] | मकर | अशून्य शयन २ व्रत (बंगाल), मंगला गौरी पूजन |
| 16 | ३ | बु | २० | ८ | ध | २१ | ४६ | आ | २७ | ४२ | कुं. ९।४७ | भद्रा ८।३३ से २०।८ तक, पंचक प्रारम्भ ९।४७ से, शुक्र पुन. में ७।३६, A |
| 17 | ४ | गु | १९ | ५१ | शत | २२ | १६ | सौ | २६ | ४० | कुंभ | कृष्ण चतुर्थी व्रत, संक्रांति पुण्य |
| 18 | ५ | शु | २० | २१ | पू.भा | २३ | ३० | शो | २६ | १४ | मी. १७।४ | नाग पंचमी (मरुस्थल व बंगाल में), बुध पश्चिम में उदय २५।१, B |
| 19 | ६ | श | २१ | ३४ | उ.भा | २५ | २४ | अ | २६ | २२ | मीन | भद्रा २१।३४ से B बुध आश्लेषा में प्र. २९।५ |
| 20 | ७ | र | २३ | २६ | रे | २८ | १ | सु | २६ | ५८ | मे. २८।१ | भद्रा १०।२६ तक, पंचक समा. २८।१, सूर्य पुष्य में प्रवेश १४।७ |
| 21 | ८ | चं | २५ | ४५ | अ | — | — | धृ | २७ | ५४ | मेष | कालाष्टमी C सिंह में २१।४६, शुक्र पूर्व में अस्त २७।१७ |
| 22 | ९ | मं | २८ | १७ | अ | ६ | ५८ | शू | २८ | ५१ | मेष | मंगला गौरी पूजन, गुरु हरिकिशन जयंती, केर पूजा (त्रिपुरा) |
| 23 | १० | बु | — | — | भ | १० | ५ | गं | — | — | वृ. १६।५१ | भद्रा १७।३० से, सायन सूर्य सिंह में ११।५८, रा. श्रावण मासारंभ |
| 24 | १० | गु | ६ | ४७ | कृ. | १३ | ६ | ग | ६ | १ | वृष | भद्रा ६।४७ तक, कामदा एकादशी व्रत स्मार्त, शुक्र कर्क में प्रवेश ११।१ |
| 25 | ११ | शु | ८ | ५९ | रो | १५ | ४७ | वृ | ६ | ५० | मि. २८।४८ | कामदा एकादशी व्रत वैष्णव |
| 26 | १२ | श | १० | ४४ | मृ | १८ | ० | ध्रु | ७ | १९ | मिथुन | शनि प्रदोष, बुध मघा सिंह में २१।४६, शुक्र पुष्य में २८।६, बुध मघा C |
| 27 | १३ | र | ११ | ५४ | आ | १९ | ३८ | व्या | ७ | २१ | मिथुन | भद्रा ११।५४ से २४।१५ तक D गौरी पूजन, मंगल वक्री १२।३३ |
| 28 | १४ | चं | १२ | २७ | पुन | २० | ४० | ह | ६ | ५५ | क. १४।२८ | A सूर्य कर्क में प्र. २६।१५ मु. १५ बैठी, सौर श्रावण मासारम्भ |
| 29 | ३० | मं | १२ | २४ | पु | २१ | ९ | व | [illegible] | [illegible] | कर्क | देवपितृकार्य ३०, हरियाली अमा., सरस माधुरी ज., [illegible] D |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



## श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०६० (३० जुलाई से १२ अगस्त तक)

| जुला. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 30 | १ | बु | ११ | ५० | श्ले | २१ | ८ | व्य | २६ | ५६ | सिं. २१४ | चन्द्रदर्शन मु. १५, नक्त व्रतारंभ, सोमेश्वर पूजा, मघा १ सिंह में गुरु A |
| 31 | २ | गु | १० | ५० | म | २० | ४३ | वरि | २४ | ५४ | सिंह | जमादि-उस्सानी प्रा., सिंधारा A ११।५६, आर्द्रा ३ में शनि २९।२९ |
| A1 | ३ | शु | ९ | २९ | पूफा | १९ | ५९ | परि | २२ | ३७ | कं. २५।१६ | भद्रा २०।४२ से, मधुश्रवा छोटी तीज, हरियाली ३, विनायक ४ व्रत, B |
| 2 | ४ | श | ७ | ५१ | उफा | १९ | २ | शि | २० | १० | कन्या | भद्रा ७।५१ तक, नाग पंचमी देशाचारे, तक्षक भित्ति चित्रित नाग पूजन, C |
| 3 | ५ | र | ६ | २ | ह | १७ | ५५ | सि | १७ | ३५ | तु. २०।१० | सूर्य आश्लेषा में १२।५६, अश्वत्थ मारुति ६, कल्कि जयंती |
| 0 | ६ | र | २८ | ५ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | षष्ठी क्षय: B दूर्वा गणपति व्रत C अमरनाथ यात्रा, जीवंतिका पूजन |
| 4 | ७ | चं | २६ | २ | चि | १६ | ४१ | सा | १४ | ५४ | तुला | भद्रा २६।२ से, बुध पू.फा. में २१।५०, शीतला पूजन सिंध, भानु सप्तमी |
| 5 | ८ | मं | २३ | ५५ | स्वा | १५ | २३ | शुभ | १२ | ९ | तुला | भद्रा १२।५९ तक, श्री दुर्गाष्टमी, मंगला गौरी पूजन, मेला नयना देवी D |
| 6 | ९ | बु | २१ | ४५ | वि | १४ | ० | शु | ९ | २२ | वृ. ८।२१ | शुक्र आश्लेषा में प्र. २३।४८ D व चिंतपूर्णी हि.प्र. |
| 7 | १० | गु | १९ | ३८ | अनु | १२ | ३६ | ब्र | ६ / ३० | ३२ / ५० | वृश्चिक | |
| 8 | ११ | शु | १७ | २३ | ज्ये | ११ | १२ | वै | २८ | ५३ | ध. ११।१२ | भद्रा ६।२८ से १७।२३ तक, पवित्रा एकादशी व्रत सबका |
| 9 | १२ | श | १५ | १७ | मू | ९ | ५२ | वि | २२ | ९ | धनु | शनि प्रदोष व्रत, गुरु अस्त पश्चिम में १२।३७ |
| 10 | १३ | र | १३ | २१ | पू.षा | ८ | ३९ | प्री | १९ | ३५ | म. १६।१३ | E अमरनाथ दर्शन (काश्मीर), झूलन यात्रा समापन, मंगलागौरी पूजन |
| 11 | १४ | चं | ११ | ३९ | उ.षा | ७ | ४० | आ | १७ | १४ | मकर | भद्रा ११।३९ से २२।५६ तक, सत्यव्रत-पूर्णिमा व्रत |
| 12 | १५ | मं | १० | २० | श्र | ७ | २ | सौ | १५ | १३ | कुं. १८।०३ | पंचक प्रा. १८।५३ से, श्री गायत्री ज., पूर्णिमा पुण्य, रक्षाबन्धन, E |

## भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०६० (१३ से २७ अगस्त तक)

| अग. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 13 | १ | बु | ९ | २९ | ध | ६ | ५१ | शो | १३ | ३५ | कुंभ | अशून्य शयन २ व्रत, मनसा पूजा समा. (बंगा.) C संक्रांति पुण्य मु. ३० सूर्य |
| 14 | २ | गु | ९ | १३ | शत | ७ | १४ | अति | १२ | २६ | मी. २५।५६ | भद्रा २१।१९ से, सिंधारा, मघा २ में गुरु २३।४९ |
| 15 | ३ | शु | ९ | ३६ | पू.भा | ८ | १४ | सु | ११ | ४८ | मीन | भद्रा ९।३६ तक, भा. स्वतंत्रता दि., कृष्ण चतुर्थी व्रत, कज्जली तीज, A |
| 16 | ४ | श | १० | ३९ | उ.भा | ९ | ५५ | धृ | ११ | ४१ | मीन | रक्षा पंचमी, अश्वत्थ मारुति पूजा, बुध उ.फा. में १९।११ |
| 17 | ५ | र | १२ | २१ | रे | १२ | १२ | शू | १२ | ४ | मे. १२।१२ | पंचक समा. १२।१२, चन्द्र षष्ठी, उभो छठ, श्री माधव देव तिथि B |
| 18 | ६ | चं | १४ | ३३ | अ | १४ | ५८ | गं | १२ | ४९ | मेष | भद्रा १४।३३ से २७।४६ तक, हल व ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत |
| 19 | ७ | मं | १७ | ३ | भ | १८ | १ | वृ | १३ | ५० | वृ. २४।४८ | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी स्मार्त, मेला द्रोण दनकौर (उ.प्र.), कालाष्टमी |
| 20 | ८ | बु | १९ | ३६ | कृ | २१ | ६ | ध्रु | १४ | ५३ | वृष | श्रीकृष्ण जन्माष्टमी वैष्णव, दुर्वाष्टमी व्रत |
| 21 | ९ | गु | २१ | ५५ | रो | २३ | ५८ | व्या | १५ | ४९ | वृष | गोगा नवमी, गोकुलाष्टमी (नन्दोत्सव), बुध कन्या में ७।६ |
| 22 | १० | शु | २३ | ४७ | मृ | २६ | २२ | ह | १६ | २६ | मि. १३।१४ | भद्रा १०।५५ से २३।४७ तक A सातुड़ी तीज, बहुला ४ व्रत |
| 23 | ११ | श | २५ | १ | आ | २८ | ९ | व | १६ | ३५ | मिथुन | अजा एका. व्रत सब., सायन कन्या में सूर्य १०।५८, शा. भाद्रपद मासारंभ |
| 24 | १२ | र | २५ | ३१ | पुन | २९ | १३ | सि | १६ | १२ | क. २३।१ | वत्स द्वादशी, महा द्वादशी व्रत, जैन पर्युषण पर्वारंभ, अश्वत्थमारुति पूजन |
| 25 | १३ | चं | २५ | १८ | पु | २९ | ३५ | व्य | १५ | १४ | कर्क | भद्रा २५।१८ से, सोम प्रदोष, कैलाश यात्रा २ दिन, व्यतिपात पुण्यम् |
| 26 | १४ | मं | २४ | २५ | श्ले | २९ | १८ | वरि | १३ | ४३ | सिं. २९।१८ | भद्रा १२।५६ तक, अघोरा १४ |
| 27 | ३० | बु | २२ | ५८ | म | २८ | २९ | परि | ११ | ४१ | सिंह | देवपितृकार्य अमावस्या, पिठौरी ३०, सती पूजन मन्वादि |
| | | | | | | | | | | | | B (आसाम), सूर्य मघा सिंह में प्र. १०।४१, शुक्र मघा सिंह में १८।५८, C |

## भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२८ अगस्त से १० सितंबर तक)

| अग. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 28 | १ | गु | २१ | ४ | पूफा | २७ | १६ | शि | ९ | १६ | सिंह | शुक्र पू.फा. में १३।२०, प्लूटो मार्गी २३।३०, बुध वक्री १७।३० |
| 29 | २ | शु | १८ | ५३ | उफा | २५ | ४६ | सि | ६ / ३० | ३१ / ५१ | कं. ८।०८ | चन्द्रदर्शन मु. ४५, नक्त व्रतोद्यापन, तेलाधर तप जैन |
| 30 | ३ | श | १६ | ३० | ह | २४ | ८ | शुभ | २४ | ३१ | कन्या | भद्रा २७।२७ से, रज्जब प्रा., मघा ३ में गुरु ६।५०, हरितालिका ३, मन्वादि, A |
| 31 | ४ | र | १४ | ३ | चि | २२ | २८ | शु | २१ | २७ | तु. ११।१८ | भद्रा १४।३ तक, सूर्य पू.फा. में ६।३४, वक्री हर्षल धनि. में ९।३८, आर्द्रा ४B |
| S1 | ५ | चं | ११ | ३८ | स्वा | २० | ५१ | ब्र | १८ | २४ | तुला | ऋषि पंचमी व्रत, जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष), क्षमावणी पर्व जैन |
| 2 | ६ | मं | ९ | १९ | वि | १९ | २२ | ऐं | १५ | २८ | वृ. १३।४३ | ललिता षष्ठी, मूर्य ६, बलदेव छठ, मे. ब्रजमण्डल, मुक्ताभरण ७, सन्तान C |
| 3 | ७ | बु | ७ | ८ | अनु | १८ | १ | वै | १२ | ३८ | वृश्चिक | भद्रा ७।८ से १८।६ तक, बुध पश्चिम में अस्त ९।२३, दूर्वाष्टमी, महालक्ष्मी D |
| 0 | ८ | बु | २९ | ७ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | अष्टमी क्षय: A वाराह ज., गौरी ३. अगस्त उ. ६।३९ C ७, अपराजित ७ |
| 4 | ९ | गु | २७ | १७ | ज्ये | १६ | ५२ | वि | ९ | ५७ | ध. १६।५२ | वक्री बुध सिंह में प्र. १७।४३, गुरु उदय पूर्व में ६।३०, अदुःख ९ व्रत |
| 5 | १० | शु | २५ | ४० | मू | १५ | ५८ | प्री | ६ / २० | ७ / ११ | धनु | दशावतार १० व्रत B शनि १८।१९, गणेशजन्मोत्सव (महा.), जैन संवत्सरी (चतुर्थी पक्ष) |
| 6 | ११ | श | २४ | १८ | पू.षा | १५ | ९ | सौ | २६ | ५५ | म. २१।० | भद्रा १२।५७ से २४।१८ तक, कृत्तिका १ मेष में राहु विशा. ३ तुला में केतु ७।५६, E |
| 7 | १२ | र | २३ | १२ | उ.षा | १४ | ४० | शो | २४ | ५९ | मकर | श्री वामन ज., भुवनेश्वरी ज., हरिवासर १४।४० से २३।१२ तक |
| 8 | १३ | चं | २२ | २५ | श्र | १४ | २९ | अति | २३ | १९ | कुं. २६।३२ | पंचक प्रा. २६।३२ से, वक्री बुध पू.फा. में १६।४, शुक्र उ.फा. में ७।१७, F |
| 9 | १४ | मं | २२ | ३ | ध | १४ | ४० | सु | २१ | ५८ | कुम्भ | भद्रा २२।३ से, अनन्त १४ व्रत, मेला सोढल (जालन्धर) |
| 10 | १५ | बु | २२ | ८ | शत | १५ | १७ | धृ | २० | ५९ | कुम्भ | भद्रा १०।२ तक, शुक्र कन्या में प्र. २३।४३, पूर्णिमा पुण्य, गोत्रिरात्र व्रत G |

D व्रतारम्भ, अनु. नक्षत्र में ज्येष्ठा, गौरी आवाहन E पद्मा एका. व्रत सबका F सोम प्रदोष व्रत G समा., प्रौष्ठपदी पूर्णिमा श्राद्ध

## आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०६० (११ से २६ सितंबर तक)

| सित. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | १ | गु | २२ | ४४ | पू.भा | १६ | २३ | शू | २० | २४ | मी. १०।४ | जन्म दिन हजरत अली, प्रतिपदा श्राद्धम् A तृतीया श्राद्धम् |
| 12 | २ | शु | २३ | ५४ | उ.भा | १८ | २ | गं | २० | २४ | मीन | द्वितीया श्राद्धम्, अशून्य शयन २ व्रत C ८ व्रत, व्यतिपात पुण्यं |
| 13 | ३ | श | २५ | ३७ | रे | २० | १३ | वृ | २० | ३० | मे. २०।१३ | भद्रा १२।४२ से २५।३७ तक, पंचक समा. २०।१३, सूर्य उ.फा. में २४।३०, A |
| 14 | ४ | र | २७ | ४८ | अ | २२ | ५१ | ध्रु | २१ | ९ | मेष | मघा ४ में गुरु १८।२, चतुर्थी श्राद्धम्, कृष्ण चतुर्थी व्रतम्, दशरथ ललिता व्रत |
| 15 | ५ | चं | — | — | भ | २५ | ५१ | व्या | २२ | ४ | मेष | पंचमी श्राद्धम् B सप्तमी श्राद्धम्, विश्वकर्मा पूजा, सौर आश्विन मास प्रा. |
| 16 | ५ | मं | ६ | १९ | कृ | २८ | ५९ | ह | २३ | ८ | वृ. ८।१८ | चन्दन छठ, षष्ठी श्राद्धम् E सायन तुला में सूर्य १६।३७, भा. आश्विन मासारंभ |
| 17 | ६ | बु | ८ | ५७ | रो | — | — | व | २४ | १० | वृष | भद्रा ८।५७ से २२।१४ तक, सूर्य कन्या में प्र. १०।३६, संक्रांति मु. ४५ बैठो, B |
| 18 | ७ | गु | ११ | २७ | रो | ८ | ३ | सि | २५ | ० | मि. २१।२८ | शुक्र हस्त में २४।५६, सप्तमी श्राद्धम्, महालक्ष्मी व्रत पूर्ण D सौभाग्यवती श्राद्ध |
| 19 | ८ | शु | १३ | ३४ | मृ | १० | ४६ | व्य | २५ | २६ | मिथुन | वक्री मंगल धनि. में ७।२२, अष्टमी श्राद्धम्, कालाष्टमी, जीवित्पुत्रिका C |
| 20 | ९ | श | १५ | ६ | आ | १२ | ५६ | वरि | २५ | २१ | मिथुन | भद्रा २७।३५ से, बुध पूर्व में उदय ७।३५, नवमी श्राद्धम्, मातृ नवमी, D |
| 21 | १० | र | १५ | ५२ | पुन | १४ | २३ | प | २४ | ४० | क. ८।५ | भ. १५।५३ तक, बुध मार्गी २३।३, दशमी श्राद्धम् F त्रयोदशी श्राद्ध |
| 22 | ११ | चं | १५ | ५० | पु | १५ | २ | शि | २३ | २० | कर्क | इन्दिरा एकादशी व्रत सबका, एकादशी श्राद्धम् G शब्बे मिराज मु. |
| 23 | १२ | मं | १५ | ० | श्ले | १४ | ५५ | सि | २१ | २३ | सिं. १४।५५ | भौम प्रदोष व्रत, द्वादशी श्राद्धम्, सन्यासी श्राद्ध, त्रिस्पृशा महाद्वादशी व्रत, E |
| 24 | १३ | बु | १३ | २७ | म | १४ | ५ | मा | १८ | ५३ | सिंह | भद्रा १३।२७ से २४।२६ तक, त्रयोदशी श्राद्धम्, कलियुगादि तिथि, मघा F |
| 25 | १४ | गु | ११ | २८ | पूफा | १२ | ३९ | शुभ | १५ | ५५ | क. १८।२३ | चतुर्दशी श्राद्ध ११।२८ तक, देवपितृकार्यामावस्या, सर्वपितृ श्राद्धम्, G |
| 26 | ३० | शु | ८ | ४१ | उफा | १० | ४५ | शु | १२ | ३५ | कन्या | मातामह श्राद्ध, शारदीय नवरात्र प्रा., कलश स्थापना, अग्रसेन ज. |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२७ सितं. से १० अक्टू. तक)

| सित. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार टै.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 0 | १ | शु | २९ | ४६ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | प्रतिपदा क्षय: ◆ १३।३३, महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री ज. |
| 27 | २ | श | २६ | ४२ | ह | ८ | ३६ | ब | [illegible] | [illegible] | तु. ११।२८ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, सूर्य हस्त में १५।५७. मंगल मार्गी १२।३६ |
| 28 | ३ | र | २३ | ३८ | चि | [illegible] | [illegible] | वै | २५ | ४५ | तुला | शावान प्रा. A अन्नपूर्णा परि. ११।५६ तक, जैन आयंबिल ओली प्रा., महाष्टमी |
| 29 | ४ | चं | २० | ४१ | वि | २५ | ५४ | वि | २२ | १४ | वृ. २०।१५ | भद्रा १०।४ से २०।४१ तक, शुक्र चित्रा में १८।१६, विनायक ४ B महानवमी |
| 30 | ५ | मं | १७ | ५९ | अनु | २४ | २ | प्री | १८ | ५४ | वृश्चिक | पू.फा. १ में गुरु १७।२२, उपांग ललिता ५ व्रत C भरत मिलाप |
| 01 | ६ | बु | १५ | ३५ | ज्ये | २२ | २९ | आ | १५ | ४९ | ध. २२।२९ | बुध उत्तरा फाल्गुनी में ७।४ D व्रत, कोजागरी व्रत |
| 2 | ७ | गु | १३ | ३३ | मूल | २१ | १९ | सौ | १३ | २ | धनु | भद्रा १३।३३ से २४।४१ तक, सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा ◆ |
| 3 | ८ | शु | ११ | ५६ | पू.षा | २० | ३४ | शो | १० | ३६ | म. २६।५० | बुध कन्या में प्र. १३।११. सरस्वती पूजनम्, दुर्गाष्टमी, भद्रकल्यावतार, A |
| 4 | ९ | श | १० | ४४ | उ.षा | २० | १५ | अति | ८ | ३० | मकर | शुक्र तुला में प्र. २६।५३, शुक्र पश्चिम में उदय १४।४३, सरस्वती बलि., B |
| 5 | १० | र | १० | ० | श्र | २० | २१ | सु | [illegible] | [illegible] | मकर | भद्रा २१।४७ से, बुध पूर्व में अस्त १५।२४, विजया दशमी, बौद्धावतार १० |
| 6 | ११ | चं | ९ | ४१ | ध | २० | ५४ | धृ | २८ | १८ | कुं. ८।३५ | भद्रा ९।४१ तक, पंचक प्रा. ८।३५ से. पापांकुशा एका. व्रत सबका, C |
| 7 | १२ | मं | ९ | ५० | शत | २१ | ५४ | गं | २७ | ३५ | कुम्भ | मंगल शतभिषा में ८।१२, भौम प्रदोष व्रत |
| 8 | १३ | बु | १० | २६ | पू.भा | २३ | १९ | वृ | २७ | १४ | मी. १६।५५ | वायु सेना दिवस E सत्यव्रत, महर्षि वाल्मीकि ज., जैन आयंबिल ओली समा. |
| 9 | १४ | गु | ११ | २९ | उ.भा | २५ | १० | ध्रु | २७ | १३ | मीन | भद्रा ११।२९ से २४।११ तक, बुध हस्त में १३।०४, शरद पूर्णिमा, पूर्णिमा D |
| 10 | १५ | शु | १२ | ५९ | रे | २७ | २७ | व्या | २७ | ३३ | मे. २७।२७ | पंचक समा. २७।२७, सूर्य चित्रा में २८।५८, शुक्र स्वा. में ११।३१, E |

## कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०६० (११ से २५ अक्टूबर तक)



| अक्टू. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार टै.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 11 | १ | श | १४ | ५५ | अ | ३० | ६ | ह | २८ | १० | मेष | अशून्य शयन २ व्रत A २ में गुरु २२।१४, सौर कार्तिक मासारंभ |
| 12 | २ | र | १७ | १२ | भ | — | — | व | २९ | २ | मेष | गुरु रामदास जयंती (प्रा. मत से), शब-ए-बारात मु. |
| 13 | ३ | चं | १९ | ४६ | भ | ९ | ४ | सि | ३० | ३ | वृ. १५।५१ | भद्रा ६।२८ से १६।२९ तक B सूर्य २५।५९, भा. कार्तिक मास प्रारम्भ |
| 14 | ४ | मं | २२ | २८ | कृ | १२ | १३ | व्य | — | — | वृष | व्यतिपात पुण्य, कृष्ण चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत |
| 15 | ५ | बु | २५ | ६ | रो | १५ | २२ | व्य | ७ | ७ | मि. २८।५३ | श्री पद्म प्रभु जयंती ( जैन ) C बुध स्वाति में २५।७ |
| 16 | ६ | गु | २७ | २८ | मृ | १८ | २० | वरि | ८ | ५ | मिथुन | भद्रा २७।२८ से, बुध चित्रा में २१।४, स्कन्द षष्ठी |
| 17 | ७ | शु | २९ | २१ | आ | २० | ५५ | परि | ८ | ४८ | मिथुन | भद्रा १६।२९ तक, सूर्य तुला में प्र. २२।३४, संक्रांति मु. ४५ बैठी, पू.फा. A |
| 18 | ८ | श | — | — | पुन | २२ | ५४ | शि | ९ | ७ | क. १६।२८ | कालाष्टमी, अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान मथुरा |
| 19 | ८ | र | ६ | ३४ | पु | २४ | १० | सि | ८ | ५५ | कर्क | Dकमला जयंती, महावीर निर्वाण दिवस जैन |
| 20 | ९ | चं | ७ | ० | श्ले | २४ | ३८ | सा | ८ | ६ | सिं. २४।३७ | भद्रा १८।५४ से, बुध तुला में प्र. २६।१०, शुक्र विशाखा में २८।०६ |
| 21 | १० | मं | ६ | ३६ | म | २४ | १६ | शु | [illegible] | [illegible] | सिंह | भद्रा ६।३६ तक, रमा एकादशी व्रत स्मार्त |
| 0 | ११ | मं | २९ | २२ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | एकादशी क्षय: |
| 22 | १२ | बु | २७ | २५ | पू.फा | २३ | १० | ब्र | २५ | ४८ | कं. २८।०७ | नेपच्यून मार्गी २१।५७, रमा एकादशी व्रत वैष्णव, गोवत्स पूजा |
| 23 | १३ | गु | २४ | ४९ | उ.फा | २१ | २५ | ऐं | २२ | ३४ | कन्या | भद्रा २४।४९ से, प्रदोष व्रत, धन तेरस, यम दीपदान, सायन वृश्चिक में B |
| 24 | १४ | शु | २१ | ४५ | ह | १९ | १० | वै | १८ | ५५ | तु. २९।५४ | भद्रा ११।२० तक, रूप चतुर्दशी, नरक चौदस, सूर्य स्वाति में १५।२९, C |
| 25 | ३० | श | १८ | २२ | चि | १६ | ३४ | वि | १४ | ५९ | तुला | शनि वक्री २१।२२, देव पितृकार्याऽमावस्या, महालक्ष्मी पूजन, दीपावली, D |

## कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२६ अक्टू. से ९ नवं. तक)

| अक्टू. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार टै.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 25 | १ | र | १४ | ४९ | स्वा | १३ | ४८ | प्री | १० | ५५ | वृ. २१।४२ | चन्द्रदर्शन मु. ४५, अन्नकूट, गोवर्धन पूजा A ४ व्रत, सूर्य षष्ठी व्रत प्रा. |
| 27 | २ | चं | ११ | १६ | वि | ११ | १ | आ | [illegible] | [illegible] | वृश्चिक | रमजान प्रा., भैय्या दूज-यम द्वितीया, रोजा प्रा. मु. |
| 28 | ३ | मं | ७ | ५३ | अनु | [illegible] | [illegible] | शो | २३ | १ | ध. ३०।५ | भद्रा १८।२८ से, २८।४८ तक, शुक्र वृश्चिक में प्र. २९।४०, विनायक A |
| 0 | ४ | मं | २८ | ४८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | चतुर्थी क्षय: C विशाखा २ में केतु २८।०६, बैकुण्ठ १४, चौमासी चौदस जैन |
| 29 | ५ | बु | २६ | ८ | मू | २८ | ११ | अति | १९ | ३४ | धनु | सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन) B भीष्म पंचकारंभ, चातुर्मास समा. |
| 30 | ६ | गु | २४ | ० | पू.षा | २६ | ५० | सु | १६ | ३० | धनु | सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ ( बिहार ), सूर्य षष्ठी व्रत पूर्ण |
| 31 | ७ | शु | २२ | २८ | उ.षा | २६ | ४ | धृ | १३ | ५५ | म. ८।३५ | भद्रा २२।२८ से, शुक्र अनु. में २१।५९, कल्पादि ७, अष्टान्हिक जैन व्रतारम्भ |
| N1 | ८ | श | २१ | ३४ | श्र | २५ | ५६ | शू | ११ | ४१ | मकर | भद्रा ९।५६ तक, बुध विशाखा में २१।२७, गोपाष्टमी, गौ पूजा |
| 2 | ९ | र | २१ | १९ | ध | २६ | २७ | गं | १० | १४ | कुं. १४।७ | पंचक प्रा. १४।७ से, आंवला नवमी, कृत युगादि नवमी, जगत धातृ पूजा |
| 3 | १० | चं | २१ | ४२ | शत | २७ | ३३ | वृ | ९ | ९ | कुंभ | रवि दशमी D भीष्म पंचका समा., जैन अष्टान्हिक व्रत पूर्ति, E |
| 4 | ११ | मं | २२ | ४० | पू.भा | २९ | ११ | ध्रु | ८ | ३३ | मी. २२।४४ | भद्रा १०।७ से २२।४० तक, देव प्रबोधिनी एका. व्रत सर्वे., तुलसी विवाह, B |
| 5 | १२ | बु | २४ | ८ | उ.भा | — | — | व्या | ८ | २१ | मीन | हरिवासराऽभाव:, मन्वादि १२ E चन्द्र ग्रहण ग्रस्तास्त, देव दीवाली |
| 6 | १३ | गु | २६ | १ | उ.भा | ७ | १७ | ह | ८ | ३१ | मीन | सूर्य विशाखा में २३।३६, पू.फा. ३ में गुरु १०।२३, प्रदोष व्रत |
| 7 | १४ | शु | २८ | २५ | रे | ९ | ४७ | व | ८ | ५९ | मे. ९।४७ | भद्रा २८।१५ से, पंचक समा. ९।४७, मार्गी हर्षल २१।३, भरणी ४ में राहु, C |
| 8 | १५ | श | — | — | अ | १२ | ३४ | सि | ९ | ४१ | मेष | भद्रा १७।२९ तक, बुध वृश्चिक में प्र. १३।५९, सत्यव्रत पूर्णिमा, नानक ज., D |

## मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०६० (१० से २३ नवंबर तक)

| नवं. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार टै.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 10 | १ | चं | ९ | २४ | कृ | १८ | ४२ | वरि | ११ | ३२ | वृष | बुध अनुराधा में १७।४३, अशून्य शयन २ व्रत |
| 11 | २ | मं | १२ | ६ | रो | २१ | ५० | प | १२ | ३२ | वृष | भद्रा २५।२६ से, शुक्र ज्येष्ठा में १५।२२, सौभाग्य सुन्दरी व्रत |
| 12 | ३ | बु | १४ | ४३ | मृ | २४ | ५० | शि | १३ | २९ | मि. ११।११ | भद्रा १४।४३ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| 13 | ४ | गु | १७ | ८ | आ | २७ | ३५ | सि | १४ | १७ | मिथुन | A में मंगल १४।४२, सहादत हजरत अली मु., सौर मार्गशीर्ष मास प्रा. |
| 14 | ५ | शु | १९ | १० | पुन | २९ | ५५ | सा | १४ | ४८ | क. २३।२३ | सुविधानाथ ज. व दीक्षा दिवस जैन, बाल मेला (दिल्ली) |
| 15 | ६ | श | २० | ४२ | पु | — | — | शुभ | १४ | ५८ | कर्क | भद्रा २०।४२ से, B श्री महावीर स्वामी दीक्षा दिवस ( जैन ) |
| 16 | ७ | र | २१ | ३६ | पु | ७ | ४३ | शु | १४ | ४० | कर्क | भद्रा ९।१४ तक, सूर्य वृश्चिक में प्र. २२।२२ मु. १५ बैठी, संक्रांति पु., पू.भा. A |
| 17 | ८ | चं | २१ | ४६ | श्ले | ८ | ५२ | ब्र | १३ | ४९ | सिं. ८।५२ | काल भैरवाष्टमी-प्रथमाष्टमी ( उड़ीसा ), भैरव जी दर्शन पूजन |
| 18 | ९ | मं | २१ | ९ | म | ९ | १७ | ऐं | १२ | २३ | सिंह | C सूर्य २३।३३, भारतीय मार्गशीर्ष प्रा., शब-ए कद्र मु. |
| 19 | १० | बु | १९ | ४७ | पू.फा | ८ | ५६ | वै | १० | २० | कं. १४।४४ | भद्रा ८।३४ से १९।४७ तक, सूर्य अनुराधा में २१।४२, बुध ज्ये. में १२।४२, B |
| 20 | ११ | गु | १७ | ४२ | उ.फा | [illegible] | [illegible] | वि | [illegible] | [illegible] | कन्या | बुध पश्चिम में उदय ११।१३, उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, वैतरणी व्रत |
| 21 | १२ | शु | १४ | ५९ | चि | २७ | ५० | आ | २४ | ५३ | तु. १७।१ | प्रदोष व्रत, संत ज्ञानेश्वर पुण्य तिथि, जुमा-तुल-विदा मु. |
| 22 | १३ | श | ११ | ४७ | स्वा | २५ | ९ | सौ | २० | ५४ | तुला | भद्रा ११।४७ से २२।३ तक, शुक्र मूल धनु में प्रवेश ८।५५, सायन धनु में C |
| 23 | १४ | र | ८ | १५ | वि | २२ | १३ | शो | १६ | ४१ | वृ. १६।५७ | देव पितृकार्याऽमावस्या, बालाजी ज., बे. पुरमण्डल देविका स्नान ( ज. ) |
| 0 | ३० | र | २८ | ३१ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | अमावस्या क्षय: |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



## मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२४ नवं. से ८ दिसं. तक)

| तारी. | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | १ | चं | २४ | ४६ | अनु | १९ | १२ | अति | १२ | २३ | वृश्चिक | रुद्र व्रत (पींड़िया व्रत) A बलिदान दिवस (प्रा. मत से) B छठ (बंगाल) |
| 25 | २ | मं | २१ | १० | ज्ये | १६ | १९ | सु | ८/२८ | ९/. | ध. १६।१९ | चन्द्रदर्शन मु. ३०, समता कारक C बलिदान दिवस D मौनी एकादशी (जैन) |
| 26 | ३ | बु | १७ | ५४ | मू | १३ | ४२ | धृ | २४ | १४ | धनु | भद्रा २८।२६ से, शव्वाल प्रा., ईद-उल-फित्र ईद (मु.), विनायक ४ व्रत |
| 27 | ४ | गु | १५ | ६ | पू.षा | ११ | ३२ | गं | २० | ५२ | म. १०।१६ | भद्रा १५।६ तक |
| 28 | ५ | श | १२ | ५५ | उ.षा | ९ | ५७ | वृ | १८ | २ | मकर | बुध मूल धनु में प्र. १६।१२, नाग पंचमी (दक्षिण भारत), गुरु तेग बहादुर A |
| 29 | ६ | श | ११ | २८ | श्र | ९ | ५ | ध्रु | १५ | ४८ | कुं. २०।१६ | पंचक प्रा. २०।५६ से, चम्पा षष्ठी व्रत, गुहा छठ, मूलक रूपिणी B |
| 30 | ७ | र | १० | ४९ | ध | ८ | ५९ | व्या | १४ | ११ | कुम्भ | भद्रा १०।४९ से २२।४८ तक, मित्र सप्तमी, श्री दुर्गाष्टमी, स्वामी श्रद्धानन्द C |
| D1 | ८ | चं | १० | ५८ | शत | ९ | ४० | ह | १३ | १२ | मी. २८।६० | महानन्दा नवमी E पुण्यं, श्री दत्तात्रेय जयंती, अन्नपूर्णा जयंती |
| 2 | ९ | मं | ११ | ५४ | पू.भा | ११ | ६ | व | १२ | ४८ | मीन | शुक्र पूर्वाषाढ़ा में २६।४३, पू.फा. ४ में गुरु ९।३९, कल्पादि ९ |
| 3 | १० | बु | १३ | २९ | उ.भा | १३ | १० | सि | १२ | ५४ | मीन | भद्रा २६।२९ से, सूर्य ज्येष्ठा में ९।५६, श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दिन जैन |
| 4 | ११ | गु | १५ | ३६ | रे | १५ | ४४ | व्य | १३ | २३ | मे. १५।४६ | भद्रा १५।३६ तक, पंचक समा. १५।४४, मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, D |
| 5 | १२ | शु | १८ | ५ | अ | १८ | ३९ | वरि | १४ | १० | मेष | मंगल मीन में प्रवेश २४।१५, अखंड द्वादशी-व्यंजन द्वादशी |
| 6 | १३ | श | २० | ४६ | भ | २१ | ४५ | परि | १५ | ६ | वृ. २८।३३ | शनि प्रदोष व्रत, अनंग त्रयोदशी, गुरु ग्रंथ साहिब व वार्षिक उत्सव |
| 7 | १४ | र | २३ | २९ | कृ | २४ | ५४ | शि | १६ | ५ | वृष | भद्रा २३।२९ से, पिशाचमोचन श्राद्ध, त्रिपुर भैरव ज., संभवनाथ ज. |
| 8 | १५ | चं | २६ | ८ | रो | २७ | ५७ | सि | १७ | ३ | वृष | भद्रा १२।५० तक, बुध पू.षा. में २७।५०, पूर्णिमा व्रत, सत्यव्रत, पूर्णिमा E |

## पौष कृष्ण पक्ष सं. २०६० (९ से २३ दिसंबर तक)

| तारी. | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 9 | १ | मं | २८ | ३७ | मृ | ३० | ५१ | सा | १७ | ५४ | मि. १७।१६ | A गुरु गोविन्द सिंह जयंती, मकर में शुक्र प्रवेश १३।४५, B |
| 10 | २ | बु | ३० | ४९ | आ | — | — | शुभ | १८ | ३४ | मिथुन | B सौर पौष मासारम्भ, मलमास प्रा. |
| 11 | ३ | गु | — | — | आ | ९ | २९ | शु | १९ | १ | क. २९।१५ | भद्रा १९।४८ से, मंगल उ. भाद्रपदा में २३।२०, |
| 12 | ३ | शु | ८ | ४२ | पुन | ११ | ४७ | ब्र | १९ | १२ | कर्क | भद्रा ८।४२ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| 13 | ४ | श | १० | ११ | पु | १३ | ४२ | ऐं | १९ | ४ | कर्क | शुक्र उ.षा. में २१।४ |
| 14 | ५ | र | ११ | ११ | श्ले | १५ | १० | वै | १८ | ३३ | सिं. १५।१० | C व्रत स्मार्त, श्री पार्श्वनाथ जयंती जैन |
| 15 | ६ | चं | ११ | ३९ | म | १६ | ६ | वि | १७ | ३६ | सिंह | भद्रा ११।३९ से २३।४० तक |
| 16 | ७ | मं | ११ | ३२ | पू.फा | १६ | २७ | प्री | १६ | ११ | कं. २२।२६ | सूर्य मूल धनु में प्रवेश १३।१, संक्रांति पुण्य मु. ३० बैठी, A |
| 17 | ८ | बु | १० | ४६ | उ.फा | १६ | १४ | आ | १४ | १७ | कन्या | बुध वक्री २२।००, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, जिनसागर पुण्य तिथि |
| 18 | ९ | गु | ९ | २३ | ह | १५ | १७ | सौ | ११ | ५२ | तु. २६।१७ | भद्रा २०।२७ से |
| 19 | १० | शु | ७ | २२ | चि | १३ | ४८ | शो | ८/२९ | १२/३४ | तुला | भद्रा ७।२२ तक, बुध पश्चिम में अस्त २७।४५, सफला एका. C |
| 0 | ११ | शु | २८ | ४८ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | एकादशी क्षय: D मकर में सूर्य १२।५४, रा. पौष मासारंभ |
| 20 | १२ | श | २५ | ४७ | स्वा | ११ | ४८ | सु | २५ | ५५ | वृ. २८।१० | सफला एकादशी व्रत वैष्णव |
| 21 | १३ | र | २२ | २५ | वि | ९/३० | २९/३४ | धृ | २१ | ५५ | वृश्चिक | भद्रा २२।२५ से, प्रदोष व्रत, श्री चन्द्र प्रभु ज. जैन |
| 22 | १४ | चं | १८ | ५१ | ज्ये | २७ | ४६ | शू | १७ | ४५ | ध. २७।१६ | भद्रा ८।३९ तक, वक्री शनि आर्द्रा ३ में १६।३१, सायन D |
| 23 | ३० | मं | १५ | १५ | मू | २४ | ५७ | गं | १३ | ३४ | धनु | देव पितृकार्याऽमावस्या, वकुला अमावस्या (उड़ीसा) |

## पौष शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२४ दिसंबर से ७ जनवरी तक)

| तारी. | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 24 | १ | बु | ११ | ४७ | पू.षा | २२ | २२ | वृ | ९/२८ | २९/३० | म. २७।१८ | चन्द्रदर्शन मु ३०, शुक्र श्रवण में १६।७ |
| 25 | २ | गु | ८ | ३९ | उ.षा | २० | ११ | ध्रु/व्या | २६ | १० | मकर | जिल्काद प्रा., वक्री बुध मूल में ११।५६, क्रिसमस डे, बड़ा दिन, A |
| 0 | ३ | गु | ३० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | तृतीया क्षय: A ईसा जयंती, श्री यतीन्द्र सुरीश्वर पुण्यं, त्रिस्तुति जैन |
| 26 | ४ | शु | २८ | १ | श्र | १८ | ३४ | ह | २३ | १२ | कुं. ३०।१२ | भद्रा १६।५५ से २८।१ तक, पंचक प्रा. ३०।१२, विनायक ४ |
| 27 | ५ | श | २६ | ४८ | ध | १७ | ४१ | व | २० | ५१ | कुम्भ | |
| 28 | ६ | र | २६ | २७ | शत | १७ | ३७ | सिद्धि | १९ | ९ | कुम्भ | B (प्रा. मत से), श्री राजेन्द्र सुरिश्वर जन्म पुण्य जैन, व्यतिपात पुण्यं |
| 29 | ७ | चं | २७ | ० | पू.भा | १८ | २५ | व्य | १८ | ९ | मी. १२।४ | भद्रा २७।० से, सूर्य पू.षा. में १५।२०, श्री गुरु गोविन्द सिंह जयंती B |
| 30 | ८ | मं | २८ | २१ | उ.भा | २० | २ | वरि | १७ | ४८ | मीन | भद्रा १५।३५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भौमाष्टमी, श्री शाकंभरी यात्रा |
| 31 | ९ | बु | ३० | २४ | रे | २२ | २० | प | १८ | १ | मे. २२।२० | पंचक समा. २२।२० |
| J1 | १० | गु | — | — | अ | २५ | ९ | शि | १८ | ३९ | मेष | शाम्ब दसमी (उड़ीसा) |
| 2 | १० | शु | ८ | ५४ | भ | २८ | १६ | सि | १९ | ३३ | मेष | भद्रा २२।१६ से, बुध पूर्व में उदय २७।३० |
| 3 | ११ | श | ११ | ३९ | कृ | — | — | सा | २० | ३४ | वृ. ११।१६ | भद्रा ११।३९ तक, मंगल रेव. में १३।९, गुरु वक्री २९।२६, पवित्रा C |
| 4 | १२ | र | १४ | २५ | कृ | ७ | २७ | शुभ | २१ | ३३ | वृष | शुक्र धनिष्ठा में १२।१६, प्रदोष व्रत |
| 5 | १३ | चं | १७ | १ | रो | १० | ३० | शु | २२ | २२ | मि. २३।२७ | C एकादशी व्रत (सबका), मन्वादि ११, वैकुण्ठ एका. (द.भा. में) |
| 6 | १४ | मं | १९ | १८ | मृ | १३ | १८ | ब्र | २२ | ५७ | मिथुन | भद्रा १९।१८ से, ऐपीफेनी डे D माघ स्नान प्रा., शाकम्भरी जयंती |
| 7 | १५ | बु | २१ | १२ | आ | १५ | ४५ | ऐं | २३ | १४ | मिथुन | भद्रा ८।१८ तक, बुध मार्गी २७।३३, पूर्णिमा व्रत पुण्यं, सत्यव्रत, D |

## माघ कृष्ण पक्ष सं. २०६० (८ से २१ जनवरी तक)

| तारी. | तिथि | वार | घटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.टा. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 8 | १ | गु | २२ | ४१ | पुन | १७ | ४८ | वै | २३ | १३ | क. ११।२० | A मेला मस्तुआणां (पंजाब) |
| 9 | २ | शु | २३ | ४५ | पु | १९ | २८ | वि | २२ | ५२ | कर्क | शुक्र कुंभ में प्रवेश २२।५८ E द्वापर युगादि, राष्ट्रीय माघ मासारंभ |
| 10 | ३ | श | २४ | २५ | श्ले | २० | ४४ | प्री | २२ | १३ | सिं. २०।४४ | भद्रा १२।४ से २४।२५ तक |
| 11 | ४ | र | २४ | ४० | म | २१ | ३६ | आ | २१ | १६ | सिंह | सूर्य उ.षा. में १७।१३, कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ, वरद चतुर्थी, A |
| 12 | ५ | चं | २४ | ३१ | पू.फा | २२ | ५ | सौ | २० | ० | कं. २८।४ | शत. में हर्षल १५।३५, भरणी ३ में राहु विशाखा १ में केतु ३०।५४ |
| 13 | ६ | मं | २३ | ५७ | उ.फा | २२ | १० | शो | १८ | २४ | कन्या | भद्रा २३।५७ से, लोहड़ी (पंजाब) |
| 14 | ७ | बु | २२ | ५७ | ह | २१ | ४९ | अति | १६ | २९ | कन्या | भद्रा ११।३० तक, सूर्य मकर में प्रवे. २३।४५, संक्रांति मु. ३० B |
| 15 | ८ | गु | २१ | ३१ | चि | २१ | ३ | सु | १४ | १२ | तु. ९।२९ | शुक्र शतभिषा में १०।११, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध |
| 16 | ९ | शु | १९ | ३८ | स्वा | १९ | ५१ | धृ | ११ | ३५ | तुला | भ. ३०।३२ से B बैठी, मकर संक्रांति पुण्य, सौर माघ मासारंभ, C |
| 17 | १० | श | १७ | २० | वि | १८ | १४ | शू | ८/२९ | ३५/२० | वृ. १२।६० | भद्रा १७।२० तक C पोंगल पर्व द.भा., माघ बिहु आसाम, तिल सं. |
| 18 | ११ | र | १४ | ४० | अनु | १६ | १६ | वृ | २५ | ४८ | वृश्चिक | षटतिला एकादशी व्रत (सबका) |
| 19 | १२ | चं | ११ | ४४ | ज्ये | १४ | २ | ध्रु | २२ | ६ | ध. १४।१ | सोम प्रदोष व्रत, वंजुली महाद्वादशी व्रत, श्री शीतल नाथ ज. जैन |
| 20 | १३ | मं | ८ | ३९ | मू | ११ | ३९ | व्या | १८ | १९ | धनु | भद्रा ८।३९ से १९।६ तक, रटन्ति कालिका पूजन, सायन कुम्भ में D |
| 0 | १४ | मं | २९ | ३३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | चतुर्दशी क्षय:D सूर्य २३।३२, मेरु १३ (जैन), आदिनाथ कल्याणक जैन |
| 21 | ३० | बु | २६ | ३७ | पू.षा | ९/३१ | ४८/७ | ह | १४ | ३५ | म. १४।४४ | बुध पू.षा. में १७।४२, देवपितृकार्याऽमावस्या-मौनी अमावस्या, E |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## माघ शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२२ जन. से ६ फर. तक)

| ता. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 22 | १ | गु | २३ | ५९ | ध | २९ | १७ | व | ११ | ३ | मकर | F माघ स्नान पूर्ण. श्री रविदास जयंती, ललिता जयंती, भैरवी जयंती |
| 23 | २ | शु | २१ | ५१ | श | २७ | ५९ | सि | : | : | कुं. १६।२४ | चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक, पंचक प्रा. १६।२४ से, व्यतिपात पुण्यं |
| 24 | ३ | श | २० | २१ | शत | २७ | २१ | वरि | २६ | ४७ | कुंभ | जिल्हिज प्रा., मंगल अश्विनी मेष में प्र. २४।३८, सूर्य श्रवण में १९।२८, A |
| 25 | ४ | र | १९ | ३८ | पू.भा | २७ | ३१ | परि | २५ | १० | मी. [illegible] | भद्रा ७।५३ से ११।२८ तक, विनायक ४, वरद ४, कुन्द ४, तिल ४,B |
| 26 | ५ | चं | १९ | ४६ | उ.भा | २८ | ३० | शि | २४ | १४ | मीन | शुक्र पू.भा. में १०।२५, वसन्त पंचमी, भारतीय गणतन्त्र दिवस |
| 27 | ६ | मं | २० | ४४ | रे | ३० | १६ | सि | २३ | ५५ | मे. ३०।१६ | पंचक समाप्त ३०।१६ A गौरी तृतीया B श्री गणेश पूजा (बंगाल) |
| 28 | ७ | बु | २२ | २९ | अ | — | — | सा | २४ | १० | मेष | भद्रा २२।२९ से, आरोग्य ७, रथ ७, अचल ७, चन्द्रभागा ७, मन्वादि ७ |
| 29 | ८ | गु | २४ | ४८ | अ | ८ | ४३ | शुभ | २४ | ५१ | मेष | भद्रा ११।३५ तक, श्री दुर्गाष्टमी, भीष्माष्टमी |
| 30 | ९ | शु | २७ | २८ | भ | ११ | ३८ | शु | २५ | ४७ | वृ. १८।[illegible] | श्री महानन्दा नवमी, श्री हरसू ब्रह्मदेव पुण्यं (नैनपुरा व रोहतास) |
| 31 | १० | श | ३० | १२ | कृ | १४ | ४७ | ब्र | २६ | ४७ | वृष | बुध उ.षा. में २२।४० C ईद-उल-जुहा बकरीद मु. |
| F1 | ११ | र | — | — | रो | १७ | ५३ | ऐं | २७ | ४० | वृष | भद्रा १९।३१ से, जया एकादशी व्रत स्मार्त, हज्ज D हवन, कल्पादि १२ |
| 2 | ११ | चं | ८ | ४५ | मृ | २० | ४३ | वै | २८ | १८ | मि. ७।२१ | भद्रा ८।४५ तक, बुध मकर में प्रवेश ३०।४५, जया एकादशी व्रत वै., C |
| 3 | १२ | मं | १० | ५६ | आ | २३ | ८ | वि | २८ | ३५ | मिथुन | शुक्र मीन में प्र. १८।४३, प्रदोष व्रत, भीष्मद्वादशी, भीष्म तर्पण, श्राद्ध तर्पणD |
| 4 | १३ | बु | १२ | ३६ | पुन | २५ | ३ | प्री | २८ | २७ | क. १८।[illegible] | वक्री शनि आर्द्रा २ में १७।२६ E श्री जीतेन्द्र नाथ रथयात्रा जैन |
| 5 | १४ | गु | १३ | ४३ | पु | २६ | २६ | आ | २७ | ५५ | कर्क | भद्रा १३।४३ से २६।५ तक, पू.फा. ३ में वक्री गुरु २७।३४, पूर्णिमा व्रत, E |
| 6 | १५ | शु | १४ | १९ | श्ले | २७ | २० | सौ | २६ | ५९ | सिं. [illegible] | सूर्य धनि. में २२।३८, शुक्र उ.भा. में १४।२, माघी पूर्णिमा पुण्यं, सत्यव्रत, F |

## फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०६० (७ से २० फरवरी तक)

| ता. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | १ | श | १४ | २५ | म | २७ | ४८ | शो | २५ | ४२ | सिंह | A सीताष्टमी, जानकी ज., अष्टका श्राद्ध, सौर फाल्गुन मासारंभ,B |
| 8 | २ | र | १४ | ५ | पू.फा | २७ | ५३ | अति | २४ | ७ | सिंह | भद्रा २५।४८ से B बुध पूर्व में अस्त १०।५० C समाज सप्ताहारंभ |
| 9 | ३ | चं | १३ | २५ | उ.फा | २७ | ४० | सु | २२ | १७ | कं. ९।५२ | भद्रा. १३।२५ तक, बुध श्रवण में २३।३५. कृष्ण चतुर्थी व्रत |
| 10 | ४ | मं | १२ | २७ | ह | २७ | ११ | धृ | २० | १४ | कन्या | D महाशिवरात्रि व्रत, द्वादश ज्योतिर्लिंग पूजनार्चन व रुद्राभिषेक, E |
| 11 | ५ | बु | ११ | १४ | चि | २६ | २९ | शू | १७ | ५९ | तु. १४।[illegible] | F श्री वासुदेव पूज्य ज. (जैन), सायन मीन में सूर्य १३।४० |
| 12 | ६ | गु | ९ | ४७ | स्वा | २५ | ३३ | गं | १५ | ३४ | तुला | भद्रा ९।४७ से २०।५८ तक |
| 13 | ७ | शु | ८ | ६ | वि | २४ | २४ | वृ | १२ | ५८ | वृ. १८।[illegible] | सूर्य कुंभ में १२।४३, संक्रांति पुण्य मु. ४५ बैठी, कालाष्टमी, A |
| 0 | ८ | शु | ३० | १३ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | अष्टमी क्षय: E श्री वैद्यनाथ जयंती, व्यतिपात पुण्य |
| 14 | ९ | श | २८ | ८ | अनु | २३ | ३ | ध्रु | १० | १२ | वृश्चिक | मंगल भरणी में २४।३८, समर्थ गुरु रामदास जयंती |
| 15 | १० | र | २५ | ५२ | ज्ये | २१ | ३२ | व्या | [illegible] | [illegible] | ध. २१।३२ | भद्रा १५।१ से २५।५२ तक, स्वामी दयानन्द सरस्वती ज., आर्य C |
| 16 | ११ | चं | २३ | ३० | मू | १९ | ५३ | व | २५ | ४ | धनु | विजया एकादशी व्रत (सबका) |
| 17 | १२ | मं | २१ | ५ | पू.षा | १८ | ११ | सि | २१ | ५४ | म. २३।४० | शुक्र रेवती में २२।२६ |
| 18 | १३ | बु | १८ | ४५ | उ.षा | १६ | ३२ | व्य | १८ | ४९ | मकर | भद्रा १८।४५ से २९।३९ तक, बुध धनि. में ७।५७, प्रदोष व्रत, D |
| 19 | १४ | गु | १६ | ३७ | श्र | १५ | ५ | वरि | १५ | ५२ | कुं. २६।२८ | पंचक प्रा. २६।२८ से, सूर्य शत. में २७।४, शिव खप्पर पूजा, F |
| 20 | ३० | शु | १४ | ४९ | ध | १३ | ५७ | परि | १३ | १२ | कुंभ | देवपितृकार्याऽमावस्या, राष्ट्रीय फाल्गुन मासारंभ |

## फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०६० (२१ फर. से ६ मार्च तक)

| ता. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 21 | १ | श | १३ | ३१ | शत | १३ | १८ | शि | २० | ५५ | कुंभ | चन्द्रदर्शन मु. ३०, बुध कुम्भ में प्रवेश ३०।४८ A परमहंस जयंती |
| 22 | २ | र | १२ | ४८ | पू.भा | १३ | १४ | सि | ९ | ६ | मी. ७।२१ | मुहर्रम हिजरी सन् १४२५ प्रा., फुलरिया दूज, श्री रामकृष्णA |
| 23 | ३ | चं | १२ | ४८ | उ.भा | १३ | ५१ | सा | ७ | ४९ | मीन | भद्रा २५।५ से, पं. लेखराम वीर तृतीया, विनायक चतुर्थी व्रत |
| 24 | ४ | मं | १३ | ३३ | रे | १५ | १२ | शुभ | ७ | ७ | मे. १५।१२ | भद्रा १३।३३ तक, पंचक समा. १५।१२, संत चतुर्थी (उड़ीसा) |
| 25 | ५ | बु | १५ | २ | अ | १७ | १४ | शु | ६ | ५९ | मेष | बुध शत. में २६।२० C (सबका), ताजिया मु. |
| 26 | ६ | गु | १७ | ७ | भ | १९ | ५१ | ब्र | ७ | २१ | वृ. २६।३४ | गौरूपिणी षष्ठी (बंगाल) B व्रत प्रा. जैन |
| 27 | ७ | शु | १९ | ३६ | कृ | २२ | ४९ | ऐं | ८ | ५ | वृष | भद्रा १९।३६ से, |
| 28 | ८ | श | २२ | १६ | रो | २५ | ५५ | वै | ९ | २ | वृष | भद्रा ८।५६ तक, श्री दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, अष्टान्हिक B |
| 29 | ९ | र | २४ | ४८ | मृ | २८ | ५२ | वि | ९ | ५९ | मि. १५।[illegible] | शुक्र अश्विनी मेष में १३।२२, ऋषभनाथ ज. जैन |
| M1 | १० | चं | २६ | ५९ | आ | — | — | प्री | १० | ४७ | मिथुन | मेला श्री श्याम जी खाटू (राज.) प्रा. ३ दिन का, रवि दशमी |
| 2 | ११ | मं | २८ | ३७ | आ | ७ | २७ | आ | ११ | १४ | क. [illegible] | भद्रा १५।५२ से २८।३७ तक, आमलकी एकादशी व्रत C |
| 3 | १२ | बु | २९ | ३७ | पुन | ९ | ३० | सौ | ११ | १६ | कर्क | गोविन्द द्वादशी, मेला श्री खाटू श्यामजी (राज.) पूर्ति |
| 4 | १३ | गु | २९ | ५६ | पु | १० | ५५ | शो | १० | ४८ | कर्क | सूर्य पू.भा. में ९।२४, बुध पू.भा. में ८।२४, वक्री गुरु पू.फा. २D |
| 5 | १४ | शु | २९ | ३७ | श्ले | ११ | ४२ | अ | ९ | ४९ | सिं. [illegible] | भद्रा २९।३७ से, D में २४।५१, प्रदोष व्रत |
| 6 | १५ | श | २८ | ४६ | म | १२ | ५३ | सु | [illegible] | [illegible] | सिंह | भद्रा १७।१५ तक, मंगल कृत्तिका में २०।२२, पूर्णिमा व्रत, E |

## चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०६० (७ से २० मार्च तक)

| ता. | तिथि | वार | घंटा | मिनट | नक्षत्र | घंटा | मिनट | योग | घंटा | मिनट | चन्द्र संचार घं.मि. | भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 7 | १ | र | २७ | २८ | पू.फा | ११ | ३३ | शू | २८ | १३ | कं. १७।२४ | शनि मार्गी १२।४९, बसन्त प्रतिपदा, छारेंडी, धूलि वन्दन |
| 8 | २ | चं | २५ | ४९ | उ.फा | १० | ४९ | गं | २५ | ४३ | कन्या | कलमदान, पूजा देशाचारे, विश्व महिला दिवस |
| 9 | ३ | मं | २३ | ५७ | ह | ९ | ४७ | वृ | २३ | २ | तु. २१।[illegible] | भद्रा १२।५४ से २३।५७ तक, बुध मीन में प्रवेश १२।४७ |
| 10 | ४ | बु | २१ | ५५ | चि | ८ | ३३ | ध्रु | २० | १४ | तुला | बुध उ.भा. में २९।३६, कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ |
| 11 | ५ | गु | १९ | ४९ | स्वा | [illegible] | [illegible] | व्या | १७ | २१ | वृ. [illegible] | मंगल वृष में प्र. २५।११, रंग पंचमी, श्री जयंती |
| 12 | ६ | शु | १७ | ४१ | अनु | २८ | २४ | ह | १४ | २८ | वृश्चिक | भद्रा १७।४१ से २८।३८ तक, शुक्र भर. में १४।१२, भर. २ में राहु स्वाति A |
| 13 | ७ | श | १५ | ३५ | ज्ये | २७ | १ | व | ११ | ३५ | ध. २७।[illegible] | शीतला सप्तमी, मेला शीतला माता कुरली (पंजाब) |
| 14 | ८ | र | १३ | ३१ | मू | २५ | ४३ | सि | [illegible] | [illegible] | धनु | सूर्य मीन में प्र. ९।३५, संक्रांति मु. ३० उठी, सौर चैत्र मासारंभ,B |
| 15 | ९ | चं | ११ | ३२ | पू.षा | २४ | ३० | वरि | २७ | १४ | म. ३०।२३ | भद्रा २२।३५ से, A ४ में केतु २४।२२, एकनाथ षष्ठी |
| 16 | १० | मं | ९ | ४० | उ.षा | २३ | २६ | प | २४ | ३९ | मकर | भद्रा ९।४० तक, दश माता व्रत B कालाष्टमी, शीतलाष्टमी |
| 17 | ११ | बु | ७ | ५७ | श्र | २२ | ३४ | शि | २२ | १४ | मकर | सूर्य उ.भा. में १७।५४, बुध रेवती में २७।४, पापमोचनी एका. व्रत (सबका) |
| 18 | १२ | गु | ६ | २९ | ध | २१ | ५८ | सि | २० | २ | कुं. १०।२३ | भद्रा २९।१९ से, पंचक प्रा. १०।२३ से, प्रदोष व्रत, वारुणी पर्व २१।५८ C |
| 0 | १३ | गु | २९ | १९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० ० ० | त्रयोदशी क्षय: C से २९।१९ तक |
| 19 | १४ | शु | २८ | ३२ | शत | २१ | ४३ | सा | १८ | ७ | कुंभ | भद्रा १६।५२ तक, बुध पश्चिम में उदय २४।२० |
| 20 | ३० | श | २८ | १३ | पू.भा | २१ | [illegible] | शुभ | १६ | ३३ | मी. [illegible] | देव पितृकार्यो अमावस्या मन्वादि, [illegible] मेष में [illegible] |



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# भौगोलिक परिचय

## अक्षांश-रेखांश-रविक्रान्ति

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् दिल्ली भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश को भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसे करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदले झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को चढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३.५° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानि दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था. इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अतः भारत में शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहां से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहाँ के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए हैं और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर सारिणी पृ. ९८ तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ९७ पर दी हुई है।

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश हैं, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वहीं हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखाँशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है. मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ता के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घंटे आगे था और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में यह स्टैण्डर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घं. ३० मिनट आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५-३० घंटा आगे है और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है, उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, वेलजियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैण्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, वल्गेरिया आदि देशों का समय दो घण्टे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४ घंटे ३० मिनट तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा वर्मा ६ घंटे ३० मिनट आगे है। थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घंटे के क्षेत्र में हैं। चीन, होंगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, वोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासऐंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५ घंटा ३० मिनट का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५ घंटे ३० मिनट का अन्तर ८२.३० रेखांश पर आता है (८२.३०×४=३३० मि.=५ घंटा ३० मिनट)। भारत में ८२.३० अक्षांश इलाहाबाद, अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा, मछलीपट्टम् आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिये जाते हैं और तत्पश्चात् उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२.३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७×४=२१.०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२.३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५.१३ है, जो ८२.३० से २.४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२.४३×४=१०.५२)= १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।



अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ ९९ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। मानचित्र में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान मानचित्र में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

| स्थान | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | स्टै. अन्तर | देशान्तर | स्थान | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | स्टै. अन्तर | देशान्तर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धौलपुर | २६-४२ | ७७।५३ | -१८-२८ | +२-४० | करौली | २६-३८ | ७७।०५ | -२१-४० | +०-३२ |
| ग्वालियर | २६-१४ | ७८-१० | -१७-२० | +३-४८ | भिण्ड | २६-४० | ७८-५० | -१८-४० | +२-२८ |

## लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्रायः १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रातः के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रातः पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

५२ सैकिण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

**उदाहरण**—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अत: तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

## लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

**उदाहरण**—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक के अक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

| | घं.मि. |
|---|---|
| सारिणी से प्राप्त १५ जुलाई को वृश्चिक समाप्त | १७।१४ |
| देशान्तर ऋण लेने से धन किया | + ०।१४ |
| (१३ मिनट ४८ सेकंड आधे से अधिक होने से १४ लिये) | = १७।२८ |
| मध्यम लग्न समाप्त | = १७।२८ |

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने —१७ मिनट दिये हैं।

| | |
|---|---|
| मध्यम लग्न समाप्ति | = १७।२८ |
| दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान | —०।१७ |
| | १७।११ |

**अत: नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७ बजकर ११ मिनट पर होगा।**

## नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

## श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

| लग्न अक्षांश | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | +३२ | +४१ | +३६ | +२३ | +४ | -१५ | -३२ | -४१ | -३६ | -२३ | -४ | +१५ |
| ९ | +३० | +३९ | +३५ | +२२ | +४ | -१५ | -३० | -३९ | -३५ | -२२ | -४ | +१५ |
| १० | +२९ | +३७ | +३३ | +२१ | +४ | -१४ | -२९ | -३७ | -३३ | -२१ | -४ | +१४ |
| ११ | +२८ | +३५ | +३१ | +२० | +४ | -१४ | -२८ | -३५ | -३१ | -२० | -४ | +१४ |
| १२ | +२६ | +३३ | +३० | +१९ | +४ | -१३ | -२६ | -३३ | -३० | -१९ | -४ | +१३ |
| १३ | +२५ | +३२ | +२८ | +१८ | +३ | -१२ | -२५ | -३२ | -२८ | -१८ | -३ | +१२ |
| १४ | +२३ | +३० | +२७ | +१७ | +३ | -१२ | -२३ | -३० | -२७ | -१७ | -३ | +१२ |
| १५ | +२२ | +२८ | +२५ | +१६ | +३ | -११ | -२२ | -२८ | -२५ | -१६ | -३ | +११ |
| १६ | +२१ | +२४ | +२३ | +१५ | +३ | -१० | -२१ | -२६ | -२३ | -१५ | -३ | +१० |
| १७ | +१९ | +२४ | +२१ | +१४ | +३ | -९ | -१९ | -२४ | -२१ | -१४ | -३ | +९ |
| १८ | +१८ | +२२ | +२० | +१३ | +२ | -९ | -१८ | -२३ | -२० | -१३ | -२ | +९ |
| १९ | +१६ | +२० | +१८ | +१२ | +२ | -८ | -१६ | -२१ | -१८ | -१२ | -२ | [illegible] |
| २० | +१५ | +१८ | +१६ | +११ | +२ | -७ | -१५ | -१९ | -१६ | -११ | -२ | +७ |
| २१ | +१३ | +१६ | +१४ | +१० | +२ | -६ | -१३ | -१७ | -१४ | -१० | -२ | +६ |
| २२ | +१२ | +१४ | +१२ | +८ | +२ | -५ | -१२ | -१५ | -१२ | -९ | -२ | +५ |
| २३ | +१० | +१२ | +१० | +७ | +१ | -५ | -१० | -१२ | -१० | -७ | -१ | +५ |
| २४ | +८ | +१० | +८ | +६ | +१ | -४ | -८ | -१० | -८ | -६ | -१ | +४ |
| २५ | +७ | +८ | +७ | +५ | +१ | -३ | -६ | -८ | -६ | -५ | -१ | +३ |
| २६ | +५ | +५ | +५ | +३ | +१ | -२ | -५ | -६ | -५ | -४ | -१ | +२ |
| २७ | +३ | +३ | +३ | +२ | +१ | -१ | -३ | -४ | -३ | -३ | -१ | +१ |
| २८ | +१ | +१ | +१ | +१ | ० | -१ | -१ | -१ | -१ | -१ | ० | +१ |
| २९ | ० | -१ | -१ | -१ | ० | ० | ० | +१ | +१ | ० | ० | ० |
| ३० | -२ | -३ | -३ | -२ | ० | +१ | +२ | +३ | +३ | +१ | ० | -१ |
| ३१ | -४ | -६ | -५ | -३ | ० | +२ | +४ | +६ | +५ | +२ | ० | -२ |
| ३२ | -६ | -८ | -८ | -५ | ० | +३ | +६ | +८ | +८ | +४ | ० | -३ |
| ३३ | -८ | -११ | -१० | -६ | -१ | +३ | +८ | +११ | +१० | +५ | +१ | -४ |
| ३४ | -१० | -१३ | -१३ | -८ | -१ | +४ | +१० | +१३ | +१३ | +७ | +१ | -५ |
| ३५ | -१२ | -१६ | -१५ | -९ | -१ | +५ | +१२ | +१६ | +१५ | +८ | +१ | -६ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ २८ | ८ ५४ | १० ३० | १२ २४ | १४ ३८ | १६ ५८ | १९ १५ | २१ ३२ | २३ ५२ | २ ०९ | ४ १३ | ५ ५५ |
| २ | ७ २४ | ८ ५० | १० २६ | १२ २० | १४ ३४ | १६ ५४ | १९ ११ | २१ २८ | २३ ४८ | २ ०५ | ४ ०९ | ५ ५१ |
| ३ | ७ २० | ८ ४६ | १० २२ | १२ १६ | १४ ३० | १६ ५० | १९ ०७ | २१ २४ | २३ ४४ | २ ०१ | ४ ०५ | ५ ४७ |
| ४ | ७ १६ | ८ ४२ | १० १८ | १२ १२ | १४ २६ | १६ ४६ | १९ ०३ | २१ २० | २३ ४० | १ ५७ | ४ ०१ | ५ ४३ |
| ५ | ७ १२ | ८ ३८ | १० १४ | १२ ०८ | १४ २२ | १६ ४२ | १८ ५९ | २१ १६ | २३ ३६ | १ ५३ | ३ ५७ | ५ ३९ |
| ६ | ७ ०८ | ८ ३४ | १० १० | १२ ०४ | १४ १८ | १६ ३८ | १८ ५५ | २१ १२ | २३ ३२ | १ ४९ | ३ ५३ | ५ ३५ |
| ७ | ७ ०४ | ८ ३० | १० ०६ | १२ ०० | १४ १४ | १६ ३४ | १८ ५१ | २१ ०८ | २३ २८ | १ ४५ | ३ ४९ | ५ ३१ |
| ८ | ७ ०० | ८ २६ | १० ०२ | ११ ५६ | १४ १० | १६ ३० | १८ ४७ | २१ ०४ | २३ २४ | १ ४१ | ३ ४५ | ५ २७ |
| ९ | ६ ५६ | ८ २२ | ९ ५८ | ११ ५२ | १४ ०६ | १६ २६ | १८ ४३ | २१ ०० | २३ २० | १ ३७ | ३ ४१ | ५ २३ |
| १० | ६ ५२ | ८ १८ | ९ ५४ | ११ ४८ | १४ ०२ | १६ २२ | १८ ३९ | २० ५६ | २३ १६ | १ ३३ | ३ ३७ | ५ १९ |
| ११ | ६ ४८ | ८ १४ | ९ ५० | ११ ४४ | १३ ५८ | १६ १८ | १८ ३५ | २० ५२ | २३ १२ | १ २९ | ३ ३३ | ५ १५ |
| १२ | ६ ४४ | ८ १० | ९ ४६ | ११ ४० | १३ ५४ | १६ १४ | १८ ३१ | २० ४८ | २३ ०८ | १ २५ | ३ २९ | ५ ११ |
| १३ | ६ ४० | ८ ०६ | ९ ४२ | ११ ३६ | १३ ५० | १६ १० | १८ २७ | २० ४४ | २३ ०४ | १ २१ | ३ २५ | ५ ०७ |
| १४ | ६ ३६ | ८ ०२ | ९ ३८ | ११ ३२ | १३ ४६ | १६ ०६ | १८ २३ | २० ४० | २३ ०० | १ १७ | ३ २१ | ५ ०३ |
| १५ | ६ ३२ | ७ ५८ | ९ ३४ | ११ २८ | १३ ४२ | १६ ०२ | १८ १९ | २० ३६ | २२ ५६ | १ १३ | ३ १७ | ४ ५९ |
| १६ | ६ २८ | ७ ५४ | ९ ३० | ११ २४ | १३ ३८ | १५ ५८ | १८ १५ | २० ३२ | २२ ५२ | १ ०९ | ३ १३ | ४ ५५ |
| १७ | ६ २४ | ७ ५० | ९ २६ | ११ २० | १३ ३४ | १५ ५४ | १८ ११ | २० २८ | २२ ४८ | १ ०५ | ३ ०९ | ४ ५१ |
| १८ | ६ २० | ७ ४६ | ९ २२ | ११ १६ | १३ ३० | १५ ५० | १८ ०७ | २० २४ | २२ ४४ | १ ०१ | ३ ०५ | ४ ४७ |
| १९ | ६ १६ | ७ ४२ | ९ १८ | ११ १२ | १३ २६ | १५ ४६ | १८ ०३ | २० २० | २२ ४० | ० ५७ | ३ ०१ | ४ ४३ |
| २० | ६ १२ | ७ ३८ | ९ १४ | ११ ०८ | १३ २२ | १५ ४२ | १७ ५९ | २० १६ | २२ ३६ | ० ५३ | २ ५७ | ४ ३९ |
| २१ | ६ ०८ | ७ ३४ | ९ १० | ११ ०४ | १३ १८ | १५ ३८ | १७ ५५ | २० १२ | २२ ३२ | ० ४९ | २ ५३ | ४ ३५ |
| २२ | ६ ०४ | ७ ३० | ९ ०६ | ११ ०० | १३ १४ | १५ ३४ | १७ ५१ | २० ०८ | २२ २८ | ० ४५ | २ ४९ | ४ ३१ |
| २३ | ६ ०० | ७ २६ | ९ ०२ | १० ५६ | १३ १० | १५ ३० | १७ ४७ | २० ०४ | २२ २४ | ० ४१ | २ ४५ | ४ २७ |
| २४ | ५ ५६ | ७ २२ | ८ ५८ | १० ५२ | १३ ०६ | १५ २६ | १७ ४३ | २० ०० | २२ २० | ० ३७ | २ ४१ | ४ २३ |
| २५ | ५ ५२ | ७ १८ | ८ ५४ | १० ४८ | १३ ०२ | १५ २२ | १७ ३९ | १९ ५६ | २२ १६ | ० ३३ | २ ३७ | ४ १९ |
| २६ | ५ ४८ | ७ १४ | ८ ५० | १० ४४ | १२ ५८ | १५ १८ | १७ ३५ | १९ ५२ | २२ १२ | ० २९ | २ ३३ | ४ १५ |
| २७ | ५ ४४ | ७ १० | ८ ४६ | १० ४० | १२ ५४ | १५ १४ | १७ ३१ | १९ ४८ | २२ ०८ | ० २५ | २ २९ | ४ ११ |
| २८ | ५ ४० | ७ ०६ | ८ ४२ | १० ३६ | १२ ५० | १५ १० | १७ २७ | १९ ४४ | २२ ०४ | ० २१ | २ २५ | ४ ०७ |
| २९ | ५ ३६ | ७ ०२ | ८ ३८ | १० ३२ | १२ ४६ | १५ ०६ | १७ २३ | १९ ४० | २२ ०० | ० १७ | २ २१ | ४ ०३ |
| ३० | ५ ३२ | ६ ५८ | ८ ३४ | १० २८ | १२ ४२ | १५ ०२ | १७ १९ | १९ ३६ | २१ ५६ | ० १३ | २ १७ | ३ ५९ |
| ३१ | ५ २८ | ६ ५४ | ८ ३० | १० २४ | १२ ३८ | १४ ५८ | १७ १५ | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |

## अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ ५० | ८ २६ | १० २२ | १२ ३५ | १४ ५६ | १७ १३ | १९ २९ | २१ ४९ | ० ०७ | २ १० | ३ ५३ | ५ २१ |
| २ | ६ ४६ | ८ २२ | १० १८ | १२ ३१ | १४ ५२ | १७ ०९ | १९ २५ | २१ ४५ | ० ०३ | २ ०६ | ३ ४९ | ५ १७ |
| ३ | ६ ४२ | ८ १८ | १० १४ | १२ २७ | १४ ४८ | १७ ०५ | १९ २१ | २१ ४१ | २३ ५९ | २ ०२ | ३ ४५ | ५ १३ |
| ४ | ६ ३८ | ८ १४ | १० १० | १२ २३ | १४ ४४ | १७ ०१ | १९ १७ | २१ ३७ | २३ ५५ | १ ५८ | ३ ४१ | ५ ०९ |
| ५ | ६ ३४ | ८ १० | १० ०६ | १२ १९ | १४ ४० | १६ ५७ | १९ १३ | २१ ३३ | २३ ५१ | १ ५४ | ३ ३७ | ५ ०५ |
| ६ | ६ ३० | ८ ०६ | १० ०२ | १२ १५ | १४ ३६ | १६ ५३ | १९ ०९ | २१ २९ | २३ ४७ | १ ५० | ३ ३३ | ५ ०१ |
| ७ | ६ २६ | ८ ०२ | ९ ५८ | १२ ११ | १४ ३२ | १६ ४९ | १९ ०५ | २१ २५ | २३ ४३ | १ ४६ | ३ २९ | ४ ५७ |
| ८ | ६ २२ | ७ ५८ | ९ ५४ | १२ ०७ | १४ २८ | १६ ४५ | १९ ०१ | २१ २१ | २३ ३९ | १ ४२ | ३ २५ | ४ ५३ |
| ९ | ६ १८ | ७ ५४ | ९ ५० | १२ ०३ | १४ २४ | १६ ४१ | १९ ५७ | २१ १७ | २३ ३५ | १ ३८ | ३ २१ | ४ ४९ |
| १० | ६ १४ | ७ ५० | ९ ४६ | ११ ५९ | १४ १९ | १६ ३७ | १८ ५३ | २१ १३ | २३ ३१ | १ ३४ | ३ १७ | ४ ४५ |
| ११ | ६ १० | ७ ४६ | ९ ४२ | ११ ५५ | १४ १५ | १६ ३३ | १८ ४९ | २१ ०९ | २३ २७ | १ ३० | ३ १३ | ४ ४१ |
| १२ | ६ ०६ | ७ ४२ | ९ ३८ | ११ ५१ | १४ ११ | १६ २९ | १८ ४५ | २१ ०५ | २३ २३ | १ २६ | ३ ०९ | ४ ३७ |
| १३ | ६ ०२ | ७ ३८ | ९ ३४ | ११ ४७ | १४ ०७ | १६ २५ | १८ ४१ | २१ ०१ | २३ १९ | १ २२ | ३ ०५ | ४ ३३ |
| १४ | ५ ५८ | ७ ३४ | ९ ३० | ११ ४३ | १४ ०३ | १६ २१ | १८ ३७ | २० ५७ | २३ १५ | १ १८ | ३ ०१ | ४ २९ |
| १५ | ५ ५४ | ७ ३० | ९ २६ | ११ ३९ | १३ ५९ | १६ १७ | १८ ३३ | २० ५३ | २३ ११ | १ १४ | २ ५७ | ४ २५ |
| १६ | ५ ५१ | ७ २७ | ९ २३ | ११ ३६ | १३ ५६ | १६ १४ | १८ ३० | २० ५० | २३ ०८ | १ ११ | २ ५४ | ४ २२ |
| १७ | ५ ४७ | ७ २३ | ९ १९ | ११ ३२ | १३ ५२ | १६ १० | १८ २६ | २० ४६ | २३ ०४ | १ ०७ | २ ५० | ४ १८ |
| १८ | ५ ४३ | ७ १९ | ९ १५ | ११ २८ | १३ ४८ | १६ ०६ | १८ २२ | २० ४२ | २३ ०० | १ ०३ | २ ४६ | ४ १४ |
| १९ | ५ ३९ | ७ १५ | ९ ११ | ११ २४ | १३ ४४ | १६ ०२ | १८ १८ | २० ३८ | २२ ५६ | ० ५९ | २ ४२ | ४ १० |
| २० | ५ ३५ | ७ ११ | ९ ०७ | ११ २० | १३ ४० | १५ ५८ | १८ १४ | २० ३४ | २२ ५२ | ० ५५ | २ ३८ | ४ ०६ |
| २१ | ५ ३१ | ७ ०७ | ९ ०३ | ११ १६ | १३ ३६ | १५ ५४ | १८ १० | २० ३० | २२ ४८ | ० ५१ | २ ३४ | ४ ०२ |
| २२ | ५ २७ | ७ ०३ | ८ ५९ | ११ १२ | १३ ३२ | १५ ५० | १८ ०६ | २० २६ | २२ ४४ | ० ४७ | २ ३० | ३ ५८ |
| २३ | ५ २३ | ६ ५९ | ८ ५५ | ११ ०८ | १३ २८ | १५ ४६ | १८ ०२ | २० २२ | २२ ४० | ० ४३ | २ २६ | ३ ५४ |
| २४ | ५ १९ | ६ ५५ | ८ ५१ | ११ ०४ | १३ २४ | १५ ४२ | १७ ५८ | २० १८ | २२ ३६ | ० ३९ | २ २२ | ३ ५० |
| २५ | ५ १५ | ६ ५१ | ८ ४७ | ११ ० | १३ २० | १५ ३८ | १७ ५४ | २० १४ | २२ ३२ | ० ३५ | २ १८ | ३ ४६ |
| २६ | ५ ११ | ६ ४७ | ८ ४३ | १० ५६ | १३ १६ | १५ ३४ | १७ ५० | २० १० | २२ २८ | ० ३१ | २ १४ | ३ ४२ |
| २७ | ५ ०७ | ६ ४३ | ८ ३९ | १० ५२ | १३ १२ | १५ ३० | १७ ४६ | २० ०६ | २२ २४ | ० २७ | २ १० | ३ ३८ |
| २८ | ५ ०३ | ६ ३९ | ८ ३५ | १० ४८ | १३ ०८ | १५ २६ | १७ ४२ | २० ०२ | २२ २० | ० २३ | २ ०६ | ३ ३४ |
| २९ | ४ ५९ | ६ ३५ | ८ ३१ | १० ४४ | १३ ०४ | १५ २२ | १७ ३८ | १९ ५८ | २२ १६ | ० १९ | २ ०२ | ३ ३० |
| ३० | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | १५ १८ | १७ ३४ | १९ ५४ | २२ १२ | ० १५ | [illegible] | ३ २६ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ २६ | ८ २२ | १० ३६ | १२ ५५ | १५ १३ | १७ ३० | १९ ४९ | २२ ०७ | ० ११ | १ ५३ | ३ २१ | ४ ४६ |
| २ | ६ २२ | ८ १८ | १० ३२ | १२ ५१ | १५ ०९ | १७ २६ | १९ ४५ | २२ ०३ | ० ०७ | १ ४९ | ३ १७ | ४ ४२ |
| ३ | ६ १८ | ८ १४ | १० २८ | १२ ४७ | १५ ०५ | १७ २२ | १९ ४१ | २१ ५९ | ० ०३ | १ ४५ | ३ १३ | ४ ३८ |
| ४ | ६ १४ | ८ १० | १० २४ | १२ ४३ | १५ ०१ | १७ १८ | १९ ३७ | २१ ५५ | २३ ५९ | १ ४१ | ३ ०९ | ४ ३४ |
| ५ | ६ ११ | ८ ०७ | १० २१ | १२ ४० | १४ ५८ | १७ १५ | १९ ३४ | २१ ५२ | २३ ५६ | १ ३८ | ३ ०६ | ४ ३१ |
| ६ | ६ ०७ | ८ ०३ | १० १७ | १२ ३६ | १४ ५४ | १७ ११ | १९ ३० | २१ ४८ | २३ ५२ | १ ३४ | ३ ०२ | ४ २७ |
| ७ | ६ ०३ | ७ ५९ | १० १३ | १२ ३२ | १४ ५० | १७ ०७ | १९ २६ | २१ ४४ | २३ ४८ | १ ३० | २ ५८ | ४ २३ |
| ८ | ५ ५९ | ७ ५५ | १० ०९ | १२ २८ | १४ ४६ | १७ ०३ | १९ २२ | २१ ४० | २३ ४४ | १ २६ | २ ५४ | ४ १९ |
| ९ | ५ ५५ | ७ ५१ | १० ०५ | १२ २४ | १४ ४२ | १६ ५९ | १९ १८ | २१ ३६ | २३ ४० | १ २२ | २ ५० | ४ १५ |
| १० | ५ ५१ | ७ ४७ | १० ०१ | १२ २० | १४ ३८ | १६ ५५ | १९ १४ | २१ ३२ | २३ ३६ | १ १८ | २ ४६ | ४ ११ |
| ११ | ५ ४७ | ७ ४३ | ९ ५७ | १२ १६ | १४ ३४ | १६ ५१ | १९ १० | २१ २८ | २३ ३२ | १ १४ | २ ४२ | ४ ०७ |
| १२ | ५ ४३ | ७ ३९ | ९ ५३ | १२ १२ | १४ ३० | १६ ४७ | १९ ०६ | २१ २४ | २३ २८ | १ १० | २ ३८ | ४ ०३ |
| १३ | ५ ३९ | ७ ३५ | ९ ४९ | १२ ०८ | १४ २६ | १६ ४३ | १९ ०२ | २१ २० | २३ २४ | १ ०६ | २ ३४ | ३ ५९ |
| १४ | ५ ३५ | ७ ३१ | ९ ४५ | १२ ०४ | १४ २२ | १६ ३९ | १८ ५८ | २१ १६ | २३ २० | १ ०२ | २ ३० | ३ ५५ |
| १५ | ५ ३१ | ७ २७ | ९ ४१ | १२ ०० | १४ १८ | १६ ३५ | १८ ५४ | २१ १२ | २३ १६ | ० ५८ | २ २६ | ३ ५१ |
| १६ | ५ २८ | ७ २४ | ९ ३८ | ११ ५७ | १४ १५ | १६ ३२ | १८ ५१ | २१ ०९ | २३ १३ | ० ५५ | २ २३ | ३ ४८ |
| १७ | ५ २४ | ७ २० | ९ ३४ | ११ ५३ | १४ ११ | १६ २८ | १८ ४७ | २१ ०५ | २३ ०९ | ० ५१ | २ १९ | ३ ४४ |
| १८ | ५ २० | ७ १६ | ९ ३० | ११ ४९ | १४ ०७ | १६ २४ | १८ ४३ | २१ ०१ | २३ ०५ | ० ४७ | २ १५ | ३ ४० |
| १९ | ५ १६ | ७ १२ | ९ २६ | ११ ४५ | १४ ०३ | १६ २० | १८ ३९ | २० ५७ | २३ ०१ | ० ४३ | २ ११ | ३ ३६ |
| २० | ५ १२ | ७ ०८ | ९ २२ | ११ ४१ | १३ ५९ | १६ १६ | १८ ३५ | २० ५३ | २२ ५७ | ० ३९ | २ ०७ | ३ ३२ |
| २१ | ५ ०८ | ७ ०४ | ९ १८ | ११ ३७ | १३ ५५ | १६ १२ | १८ ३१ | २० ४९ | २२ ५३ | ० ३५ | २ ०३ | ३ २८ |
| २२ | ५ ०४ | ७ ०० | ९ १४ | ११ ३३ | १३ ५१ | १६ ०८ | १८ २७ | २० ४५ | २२ ४९ | ० ३१ | १ ५९ | ३ २४ |
| २३ | ५ ०० | ६ ५६ | ९ १० | ११ २९ | १३ ४७ | १६ ०४ | १८ २३ | २० ४१ | २२ ४५ | ० २७ | १ ५५ | ३ २० |
| २४ | ४ ५६ | ६ ५२ | ९ ०६ | ११ २५ | १३ ४३ | १६ ०० | १८ १९ | २० ३७ | २२ ४१ | ० २३ | १ ५१ | ३ १६ |
| २५ | ४ ५२ | ६ ४८ | ९ ०२ | ११ २१ | १३ ३९ | १५ ५६ | १८ १५ | २० ३३ | २२ ३७ | ० १९ | १ ४७ | ३ १२ |
| २६ | ४ ४८ | ६ ४४ | ८ ५८ | ११ १७ | १३ ३५ | १५ ५२ | १८ ११ | २० २९ | २२ ३३ | ० १५ | १ ४३ | ३ ०८ |
| २७ | ४ ४४ | ६ ४० | ८ ५४ | ११ १३ | १३ ३१ | १५ ४८ | १८ ०७ | २० २५ | २२ २९ | ० ११ | १ ३९ | ३ ०४ |
| २८ | ४ ४१ | ६ ३७ | ८ ५१ | ११ १० | १३ २८ | १५ ४५ | १८ ०४ | २० २२ | २२ २६ | ० ०८ | १ ३६ | ३ ०१ |
| २९ | ४ ३७ | ६ ३३ | ८ ४७ | ११ ०६ | १३ २४ | १५ ४१ | १८ ०० | २० १८ | २२ २२ | ० ०४ | १ ३२ | २ ५७ |
| ३० | ४ ३३ | ६ २९ | ८ ४३ | ११ ०२ | १३ २० | १५ ३७ | १७ ५६ | २० १४ | २२ १८ | २४ ० | १ २८ | २ ५३ |
| ३१ | ४ २९ | ६ २५ | ८ ३९ | १० ५८ | १३ १६ | १५ ३३ | १७ ५२ | २० १० | २२ १४ | २३ ५६ | १ २४ | २ ४९ |

## जून दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ १९ | ८ ३३ | १० ५३ | १३ १० | १५ २७ | १७ ४७ | २० ०४ | २२ ०८ | २३ ५१ | १ १८ | २ ४४ | ४ २० |
| २ | ६ १५ | ८ २९ | १० ४९ | १३ ०६ | १५ २३ | १७ ४३ | २० ०० | २२ ०४ | २३ ४७ | १ १४ | २ ४० | ४ १६ |
| ३ | ६ ११ | ८ २५ | १० ४५ | १३ ०२ | १५ १९ | १७ ३९ | १९ ५६ | २२ ०० | २३ ४३ | १ १० | २ ३६ | ४ १२ |
| ४ | ६ ०७ | ८ २१ | १० ४१ | १२ ५८ | १५ १५ | १७ ३५ | १९ ५२ | २१ ५६ | २३ ३९ | १ ०६ | २ ३२ | ४ ०८ |
| ५ | ६ ०४ | ८ १८ | १० ३८ | १२ ५५ | १५ १२ | १७ ३२ | १९ ४९ | २१ ५३ | २३ ३६ | १ ०३ | २ २९ | ४ ०५ |
| ६ | ६ ०० | ८ १४ | १० ३४ | १२ ५१ | १५ ०८ | १७ २८ | १९ ४५ | २१ ४९ | २३ ३२ | ० ५९ | २ २५ | ४ ०१ |
| ७ | ५ ५६ | ८ १० | १० ३० | १२ ४७ | १५ ०४ | १७ २४ | १९ ४१ | २१ ४५ | २३ २८ | ० ५५ | २ २१ | ३ ५७ |
| ८ | ५ ५२ | ८ ०६ | १० २६ | १२ ४३ | १५ ० | १७ २० | १९ ३७ | २१ ४१ | २३ २४ | ० ५१ | २ १७ | ३ ५३ |
| ९ | ५ ४८ | ८ ०२ | १० २२ | १२ ३९ | १४ ५६ | १७ १६ | १९ ३३ | २१ ३७ | २३ २० | ० ४७ | २ १३ | ३ ४९ |
| १० | ५ ४४ | ७ ५८ | १० १८ | १२ ३५ | १४ ५२ | १७ १२ | १९ २९ | २१ ३३ | २३ १६ | ० ४३ | २ ०९ | ३ ४५ |
| ११ | ५ ४१ | ७ ५५ | १० १५ | १२ ३२ | १४ ४९ | १७ ०९ | १९ २६ | २१ ३० | २३ १३ | ० ४० | २ ०६ | ३ ४२ |
| १२ | ५ ३७ | ७ ५१ | १० ११ | १२ २८ | १४ ४५ | १७ ०५ | १९ २२ | २१ २६ | २३ ०९ | ० ३६ | २ ०२ | ३ ३८ |
| १३ | ५ ३३ | ७ ४७ | १० ०७ | १२ २४ | १४ ४१ | १७ ०१ | १९ १८ | २१ २२ | २३ ०५ | ० ३२ | १ ५८ | ३ ३४ |
| १४ | ५ २९ | ७ ४३ | १० ०३ | १२ २० | १४ ३७ | १६ ५७ | १९ १४ | २१ १८ | २३ ०१ | ० २८ | १ ५४ | ३ ३० |
| १५ | ५ २५ | ७ ३९ | ९ ५९ | १२ १६ | १४ ३३ | १६ ५३ | १९ १० | २१ १४ | २२ ५७ | ० २४ | १ ५० | ३ २६ |
| १६ | ५ २१ | ७ ३५ | ९ ५५ | १२ १२ | १४ २९ | १६ ४९ | १९ ०६ | २१ १० | २२ ५३ | ० २० | १ ४६ | ३ २२ |
| १७ | ५ १८ | ७ ३२ | ९ ५२ | १२ ०९ | १४ २६ | १६ ४६ | १९ ०३ | २१ ०७ | २२ ५० | ० १७ | १ ४३ | ३ १९ |
| १८ | ५ १४ | ७ २८ | ९ ४८ | १२ ०५ | १४ २२ | १६ ४२ | १८ ५९ | २१ ०३ | २२ ४६ | ० १३ | १ ३९ | ३ १५ |
| १९ | ५ १० | ७ २४ | ९ ४४ | १२ ०१ | १४ १८ | १६ ३८ | १८ ५५ | २० ५९ | २२ ४२ | ० ०९ | १ ३५ | ३ ११ |
| २० | ५ ०६ | ७ २० | ९ ४० | ११ ५७ | १४ १४ | १६ ३४ | १८ ५१ | २० ५५ | २२ ३८ | ० ०५ | १ ३१ | ३ ०७ |
| २१ | ५ ०२ | ७ १६ | ९ ३६ | ११ ५३ | १४ १० | १६ ३० | १८ ४७ | २० ५१ | २२ ३४ | ० ०१ | १ २७ | ३ ०३ |
| २२ | ४ ५८ | ७ १२ | ९ ३२ | ११ ४९ | १४ ०६ | १६ २६ | १८ ४३ | २० ४७ | २२ ३० | २३ ५७ | १ २३ | २ ५९ |
| २३ | ४ ५४ | ७ ०९ | ९ २९ | ११ ४६ | १४ ०३ | १६ २३ | १८ ४० | २० ४४ | २२ २७ | २३ ५४ | १ २० | २ ५६ |
| २४ | ४ ५२ | ७ ०५ | ९ २५ | ११ ४२ | १३ ५९ | १६ १९ | १८ ३६ | २० ४० | २२ २३ | २३ ५० | १ १६ | २ ५२ |
| २५ | ४ ४७ | ७ ०१ | ९ २१ | ११ ३८ | १३ ५५ | १६ १५ | १८ ३२ | २० ३६ | २२ १९ | २३ ४६ | १ १२ | २ ४८ |
| २६ | ४ ४३ | ६ ५७ | ९ १७ | ११ ३४ | १३ ५१ | १६ ११ | १८ २८ | २० ३२ | २२ १५ | २३ ४२ | १ ०८ | २ ४४ |
| २७ | ४ ३९ | ६ ५३ | ९ १३ | ११ ३० | १३ ४७ | १६ ०७ | १८ २४ | २० २८ | २२ ११ | २३ ३८ | १ ०४ | २ ४० |
| २८ | ४ ३५ | ६ ४९ | ९ ०९ | ११ २६ | १३ ४३ | १६ ०३ | १८ २० | २० २४ | २२ ०७ | २३ ३४ | १ ०० | २ ३६ |
| २९ | ४ ३१ | ६ ४५ | ९ ०५ | ११ २२ | १३ ३९ | १५ ५९ | १८ १६ | २० २० | २२ ०३ | २३ ३० | ०० ५६ | २ ३२ |
| ३० | ४ २७ | ६ ४१ | ९ ०१ | ११ १८ | १३ ३५ | १५ ५५ | १८ १२ | २० १६ | २१ ५९ | २३ २६ | ०० ५२ | २ २८ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ ३७ | ८ ५७ | ११ १५ | १३ ३१ | १५ ५१ | १८ ०९ | २० १२ | २१ ५५ | २३ २३ | ० ४८ | २ २४ | ४ २० |
| २ | ६ ३३ | ८ ५३ | ११ ११ | १३ २७ | १५ ४७ | १८ ०५ | २० ०८ | २१ ५१ | २३ १९ | ० ४४ | २ २० | ४ १६ |
| ३ | ६ २९ | ८ ४९ | ११ ०७ | १३ २३ | १५ ४३ | १८ ०१ | २० ०४ | २१ ४७ | २३ १५ | ० ४० | २ १६ | ४ १२ |
| ४ | ६ २५ | ८ ४५ | ११ ०३ | १३ १९ | १५ ३९ | १७ ५७ | २० ०० | २१ ४३ | २३ ११ | ० ३६ | २ १२ | ४ ०८ |
| ५ | ६ २१ | ८ ४१ | १० ५९ | १३ १५ | १५ ३५ | १७ ५३ | १९ ५६ | २१ ३९ | २३ ०७ | ० ३२ | २ ०८ | ४ ०४ |
| ६ | ६ १७ | ८ ३७ | १० ५५ | १३ ११ | १५ ३१ | १७ ४९ | १९ ५२ | २१ ३५ | २३ ०३ | ० २८ | २ ०४ | ४ ०० |
| ७ | ६ १३ | ८ ३३ | १० ५१ | १३ ०७ | १५ २७ | १७ ४५ | १९ ४८ | २१ ३१ | २२ ५९ | ० २४ | २ ०० | ३ ५६ |
| ८ | ६ ०९ | ८ २९ | १० ४७ | १३ ०३ | १५ २३ | १७ ४१ | १९ ४४ | २१ २७ | २२ ५५ | ० २० | १ ५६ | ३ ५२ |
| ९ | ६ ०५ | ८ २५ | १० ४३ | १२ ५९ | १५ १९ | १७ ३७ | १९ ४० | २१ २३ | २२ ५१ | ० १६ | १ ५२ | ३ ४८ |
| १० | ६ ०१ | ८ २१ | १० ३९ | १२ ५५ | १५ १५ | १७ ३३ | १९ ३६ | २१ १९ | २२ ४७ | ० १२ | १ ४८ | ३ ४४ |
| ११ | ५ ५७ | ८ १७ | १० ३५ | १२ ५१ | १५ ११ | १७ २९ | १९ ३२ | २१ १५ | २२ ४३ | ० ०८ | १ ४४ | ३ ४० |
| १२ | ५ ५३ | ८ १३ | १० ३१ | १२ ४७ | १५ ०७ | १७ २५ | १९ २८ | २१ ११ | २२ ३९ | ० ०४ | १ ४० | ३ ३६ |
| १३ | ५ ४९ | ८ ०९ | १० २७ | १२ ४३ | १५ ०३ | १७ २१ | १९ २४ | २१ ०७ | २२ ३५ | २४ ०० | १ ३६ | ३ ३२ |
| १४ | ५ ४५ | ८ ०५ | १० २३ | १२ ३९ | १४ ५९ | १७ १७ | १९ २० | २१ ०३ | २२ ३१ | २३ ५६ | १ ३२ | ३ २८ |
| १५ | ४ ४२ | ८ ०२ | १० २० | १२ ३६ | १४ ५६ | १७ १४ | १९ १७ | २१ ०० | २२ २८ | २३ ५३ | १ २९ | ३ २५ |
| १६ | ५ ३८ | ७ ५८ | १० १६ | १२ ३२ | १४ ५२ | १७ १० | १९ १३ | २० ५६ | २२ २४ | २३ ४९ | १ २५ | ३ २१ |
| १७ | ५ ३४ | ७ ५४ | १० १२ | १२ २८ | १४ ४८ | १७ ०६ | १९ ०९ | २० ५२ | २२ २० | २३ ४५ | १ २१ | ३ १७ |
| १८ | ५ ३० | ७ ५० | १० ०८ | १२ २४ | १४ ४४ | १७ ०२ | १९ ०५ | २० ४८ | २२ १६ | २३ ४१ | १ १७ | ३ १३ |
| १९ | ५ २६ | ७ ४६ | १० ०४ | १२ २० | १४ ४० | १६ ५८ | १९ ०१ | २० ४४ | २२ १२ | २३ ३७ | १ १३ | ३ ०९ |
| २० | ५ २२ | ७ ४२ | १० ०० | १२ १६ | १४ ३६ | १६ ५४ | १८ ५७ | २० ४० | २२ ०८ | २३ ३३ | १ ०९ | ३ ०५ |
| २१ | ५ १८ | ७ ३८ | ९ ५६ | १२ १२ | १४ ३२ | १६ ५० | १८ ५३ | २० ३६ | २२ ०४ | २३ २९ | १ ०५ | ३ ०१ |
| २२ | ५ १४ | ७ ३४ | ९ ५२ | १२ ०८ | १४ २८ | १६ ४६ | १८ ४९ | २० ३२ | २२ ०० | २३ २५ | १ ०१ | २ ५७ |
| २३ | ५ ११ | ७ ३१ | ९ ४९ | १२ ०५ | १४ २५ | १६ ४३ | १८ ४६ | २० २९ | २१ ५७ | २३ २२ | ० ५८ | २ ५३ |
| २४ | ५ ०७ | ७ २७ | ९ ४५ | १२ ०१ | १४ २१ | १६ ३९ | १८ ४२ | २० २५ | २१ ५३ | २३ १८ | ० ५४ | २ ४९ |
| २५ | ५ ०३ | ७ २३ | ९ ४१ | ११ ५७ | १४ १७ | १६ ३५ | १८ ३८ | २० २१ | २१ ४९ | २३ १४ | ० ५० | २ ४५ |
| २६ | ४ ५९ | ७ १९ | ९ ३७ | ११ ५३ | १४ १३ | १६ ३१ | १८ ३४ | २० १७ | २१ ४५ | २३ १० | ० ४६ | २ ४१ |
| २७ | ४ ५५ | ७ १५ | ९ ३३ | ११ ४९ | १४ ०९ | १६ २७ | १८ ३० | २० १३ | २१ ४१ | २३ ०६ | ० ४२ | २ ३७ |
| २८ | ४ ५१ | ७ ११ | ९ २९ | ११ ४५ | १४ ०५ | १६ २३ | १८ २६ | २० ०९ | २१ ३७ | २३ ०२ | ० ३८ | २ ३३ |
| २९ | ४ ४७ | ७ ०७ | ९ २५ | ११ ४१ | १४ ०१ | १६ १९ | १८ २२ | २० ०५ | २१ ३३ | २२ ५८ | ० ३४ | २ २९ |
| ३० | ४ ४३ | ७ ३ | ९ २१ | ११ ३७ | १३ ५७ | १६ १५ | १८ १८ | २० ०१ | २१ २९ | २२ ५४ | ० ३० | २ २५ |
| ३१ | ४ ३९ | ६ ५९ | ९ १७ | ११ ३३ | १३ ५३ | १६ ११ | १८ १४ | १९ ५७ | २१ २५ | २२ ५० | ० २६ | २ २१ |

## अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ६ ५५ | ९ १३ | ११ ३० | १३ ४९ | १६ ०७ | १८ ११ | १९ ५३ | २१ २१ | २२ ४७ | ० २२ | २ १८ | ४ ३१ |
| २ | ६ ५१ | ९ ०९ | ११ २६ | १३ ४५ | १६ ०३ | १८ ०७ | १९ ४९ | २१ १७ | २२ ४३ | ० १८ | २ १४ | ४ २७ |
| ३ | ६ ४७ | ९ ०५ | ११ २२ | १३ ४१ | १५ ५९ | १८ ०३ | १९ ४५ | २१ १३ | २२ ३९ | ० १४ | २ १० | ४ २३ |
| ४ | ६ ४३ | ९ ०१ | ११ १८ | १३ ३७ | १५ ५५ | १७ ५९ | १९ ४१ | २१ ०९ | २२ ३५ | ० १० | २ ०६ | ४ १९ |
| ५ | ६ ४० | ८ ५८ | ११ १५ | १३ ३४ | १५ ५२ | १७ ५६ | १९ ३८ | २१ ०६ | २२ ३२ | ० ०७ | २ ०३ | ४ १६ |
| ६ | ६ ३६ | ८ ५४ | ११ ११ | १३ ३० | १५ ४८ | १७ ५२ | १९ ३४ | २१ ०२ | २२ २८ | ० ०३ | १ ५९ | ४ १२ |
| ७ | ६ ३२ | ८ ५० | ११ ०७ | १३ २६ | १५ ४४ | १७ ४८ | १९ ३० | २० ५८ | २२ २४ | २३ ५९ | १ ५५ | ४ ०८ |
| ८ | ६ २८ | ८ ४६ | ११ ०३ | १३ २२ | १५ ४० | १७ ४४ | १९ २६ | २० ५४ | २२ २० | २३ ५५ | १ ५१ | ४ ०४ |
| ९ | ६ २४ | ८ ४२ | १० ५९ | १३ १८ | १५ ३६ | १७ ४० | १९ २२ | २० ५० | २२ १६ | २३ ५१ | १ ४७ | ४ ०० |
| १० | ६ २० | ८ ३८ | १० ५५ | १३ १४ | १५ ३२ | १७ ३६ | १९ १८ | २० ४६ | २२ १२ | २३ ४७ | १ ४३ | ३ ५६ |
| ११ | ६ १६ | ८ ३४ | १० ५१ | १३ १० | १५ २८ | १७ ३२ | १९ १४ | २० ४२ | २२ ०८ | २३ ४३ | १ ३९ | ३ ५२ |
| १२ | ६ १२ | ८ ३० | १० ४७ | १३ ०६ | १५ २४ | १७ २८ | १९ १० | २० ३८ | २२ ०४ | २३ ३९ | १ ३५ | ३ ४८ |
| १३ | ६ ०८ | ८ २६ | १० ४३ | १३ ०२ | १५ २० | १७ २४ | १९ ०६ | २० ३४ | २२ ०० | २३ ३५ | १ ३१ | ३ ४४ |
| १४ | ६ ०४ | ८ २२ | १० ३९ | १२ ५८ | १५ १६ | १७ २० | १९ ०२ | २० ३० | २१ ५६ | २३ ३१ | १ २७ | ३ ४० |
| १५ | ६ ०० | ८ १८ | १० ३५ | १२ ५४ | १५ १२ | १७ १६ | १८ ५८ | २० २६ | २१ ५२ | २३ २७ | १ २३ | ३ ३६ |
| १६ | ५ ५६ | ८ १४ | १० ३१ | १२ ५० | १५ ०८ | १७ १२ | १८ ५४ | २० २२ | २१ ४८ | २३ २३ | १ १९ | ३ ३२ |
| १७ | ५ ५२ | ८ १० | १० २७ | १२ ४६ | १५ ०४ | १७ ०८ | १८ ५० | २० १८ | २१ ४४ | २३ १९ | १ १५ | ३ २८ |
| १८ | ५ ४८ | ८ ०६ | १० २३ | १२ ४२ | १५ ०० | १७ ०४ | १८ ४६ | २० १४ | २१ ४० | २३ १५ | १ ११ | ३ २४ |
| १९ | ५ ४४ | ८ ०२ | १० १९ | १२ ३८ | १४ ५६ | १७ ०० | १८ ४२ | २० १० | २१ ३६ | २३ ११ | १ ०७ | ३ २० |
| २० | ५ ४० | ७ ५८ | १० १५ | १२ ३४ | १४ ५२ | १६ ५६ | १८ ३८ | २० ०६ | २१ ३२ | २३ ०७ | १ ०३ | ३ १६ |
| २१ | ५ ३७ | ७ ५५ | १० १२ | १२ ३१ | १४ ४९ | १६ ५३ | १८ ३५ | २० ०३ | २१ २९ | २३ ०४ | १ ०० | ३ १३ |
| २२ | ५ ३३ | ७ ५१ | १० ०८ | १२ २७ | १४ ४५ | १६ ४९ | १८ ३१ | १९ ५९ | २१ २५ | २३ ०० | ० ५६ | ३ ०९ |
| २३ | ५ २९ | ७ ४७ | १० ०४ | १२ २३ | १४ ४१ | १६ ४५ | १८ २७ | १९ ५५ | २१ २१ | २२ ५६ | ० ५२ | ३ ०५ |
| २४ | ५ २५ | ७ ४३ | १० ०० | १२ १९ | १४ ३७ | १६ ४१ | १८ २३ | १९ ५१ | २१ १७ | २२ ५२ | ० ४८ | ३ ०१ |
| २५ | ५ २१ | ७ ३९ | ९ ५६ | १२ १५ | १४ ३३ | १६ ३७ | १८ १९ | १९ ४७ | २१ १३ | २२ ४८ | ० ४४ | २ ५७ |
| २६ | ५ १७ | ७ ३५ | ९ ५२ | १२ ११ | १४ २९ | १६ ३३ | १८ १५ | १९ ४३ | २१ ०९ | २२ ४४ | ० ४० | २ ५३ |
| २७ | ५ १३ | ७ ३१ | ९ ४८ | १२ ०७ | १४ २५ | १६ २९ | १८ ११ | १९ ३९ | २१ ०५ | २२ ४० | ० ३६ | २ ४९ |
| २८ | ५ १० | ७ २८ | ९ ४५ | १२ ०४ | १४ २२ | १६ २६ | १८ ०८ | १९ ३६ | २१ ०२ | २२ ३७ | ० ३३ | २ ४६ |
| २९ | ५ ०६ | ७ २४ | ९ ४१ | १२ ०० | १४ १८ | १६ २२ | १८ ०४ | १९ ३२ | २० ५८ | २२ ३३ | ० २९ | २ ४२ |
| ३० | ५ ०२ | ७ २० | ९ ३७ | ११ ५६ | १४ १४ | १६ १८ | १८ ०० | १९ २८ | २० ५४ | २२ २९ | ० २५ | २ ३८ |
| ३१ | ४ ५८ | ७ १६ | ९ ३३ | ११ ५२ | १४ १० | १६ १४ | १७ ५६ | १९ २४ | २० ५० | २२ २५ | ० २१ | २ ३४ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



## सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ १२ | ९ २९ | ११ ४९ | १४ ०६ | १६ १० | १७ ५३ | १९ २० | २० ४६ | २२ २२ | ० १७ | २ ३१ | ४ ५० |
| २ | ७ ०८ | ९ २५ | ११ ४५ | १४ ०२ | १६ ०६ | १७ ४९ | १९ १६ | २० ४२ | २२ १८ | ० १३ | २ २७ | ४ ४६ |
| ३ | ७ ०४ | ९ २१ | ११ ४१ | १३ ५८ | १६ ०२ | १७ ४५ | १९ १२ | २० ३८ | २२ १४ | ० ०९ | २ २३ | ४ ४२ |
| ४ | ७ ०० | ९ १७ | ११ ३७ | १३ ५४ | १५ ५८ | १७ ४१ | १९ ०८ | २० ३४ | २२ १० | ० ०५ | २ १९ | ४ ३८ |
| ५ | ६ ५६ | ९ १३ | ११ ३३ | १३ ५० | १५ ५४ | १७ ३७ | १९ ०४ | २० ३० | २२ ०६ | ० ०१ | २ १५ | ४ ३४ |
| ६ | ६ ५२ | ९ ०९ | ११ २९ | १३ ४६ | १५ ५० | १७ ३३ | १९ ०० | २० २६ | २२ ०२ | २३ ५७ | २ ११ | ४ ३० |
| ७ | ६ ४८ | ९ ०५ | ११ २५ | १३ ४२ | १५ ४६ | १७ २९ | १८ ५६ | २० २२ | २१ ५८ | २३ ५३ | २ ०७ | ४ २६ |
| ८ | ६ ४४ | ९ ०१ | ११ २१ | १३ ३८ | १५ ४२ | १७ २५ | १८ ५२ | २० १८ | २१ ५४ | २३ ४९ | २ ०३ | ४ २२ |
| ९ | ६ ४० | ८ ५७ | ११ १७ | १३ ३४ | १५ ३८ | १७ २१ | १८ ४८ | २० १४ | २१ ५० | २३ ४५ | १ ५९ | ४ १८ |
| १० | ६ ३६ | ८ ५३ | ११ १३ | १३ ३० | १५ ३४ | १७ १७ | १८ ४४ | २० १० | २१ ४६ | २३ ४१ | १ ५५ | ४ १४ |
| ११ | ६ ३२ | ८ ४९ | ११ ०९ | १३ २६ | १५ ३० | १७ १३ | १८ ४० | २० ०६ | २१ ४२ | २३ ३७ | १ ५१ | ४ १० |
| १२ | ६ २७ | ८ ४४ | ११ ०४ | १३ २१ | १५ २५ | १७ ०८ | १८ ३५ | २० ०१ | २१ ३७ | २३ ३२ | १ ४६ | ४ ०५ |
| १३ | ६ २३ | ८ ४० | ११ ०० | १३ १७ | १५ २१ | १७ ०४ | १८ ३१ | १९ ५७ | २१ ३३ | २३ २८ | १ ४२ | ४ ०१ |
| १४ | ६ १९ | ८ ३६ | १० ५६ | १३ १३ | १५ १७ | १७ ०० | १८ २७ | १९ ५३ | २१ २९ | २३ २४ | १ ३८ | ३ ५७ |
| १५ | ६ १५ | ८ ३२ | १० ५२ | १३ ०९ | १५ १३ | १६ ५६ | १८ २३ | १९ ४९ | २१ २५ | २३ २० | १ ३४ | ३ ५३ |
| १६ | ६ ११ | ८ २८ | १० ४८ | १३ ०५ | १५ ०९ | १६ ५२ | १८ १९ | १९ ४५ | २१ २१ | २३ १६ | १ ३० | ३ ४९ |
| १७ | ६ ०७ | ८ २४ | १० ४४ | १३ ०१ | १५ ०५ | १६ ४८ | १८ १५ | १९ ४१ | २१ १७ | २३ १२ | १ २६ | ३ ४५ |
| १८ | ६ ०३ | ८ २० | १० ४० | १२ ५७ | १५ ०१ | १६ ४४ | १८ ११ | १९ ३७ | २१ १३ | २३ ०८ | १ २२ | ३ ४१ |
| १९ | ५ ५९ | ८ १६ | १० ३६ | १२ ५३ | १४ ५७ | १६ ४० | १८ ०७ | १९ ३३ | २१ ०९ | २३ ०४ | १ १८ | ३ ३७ |
| २० | ५ ५५ | ८ १२ | १० ३२ | १२ ४९ | १४ ५३ | १६ ३६ | १८ ०३ | १९ २९ | २१ ०५ | २३ ०० | १ १४ | ३ ३३ |
| २१ | ५ ५१ | ८ ०८ | १० २८ | १२ ४५ | १४ ४९ | १६ ३२ | १७ ५९ | १९ २५ | २१ ०१ | २२ ५६ | १ १० | ३ २९ |
| २२ | ५ ४७ | ८ ०४ | १० २४ | १२ ४१ | १४ ४५ | १६ २८ | १७ ५५ | १९ २१ | २० ५७ | २२ ५२ | १ ०६ | ३ २५ |
| २३ | ५ ४३ | ८ ०० | १० २० | १२ ३७ | १४ ४१ | १६ २४ | १७ ५१ | १९ १७ | २० ५३ | २२ ४८ | १ ०२ | ३ २१ |
| २४ | ५ ३९ | ७ ५६ | १० १६ | १२ ३३ | १४ ३७ | १६ २० | १७ ४७ | १९ १३ | २० ४९ | २२ ४४ | ० ५८ | ३ १७ |
| २५ | ५ ३५ | ७ ५२ | १० १२ | १२ २९ | १४ ३३ | १६ १६ | १७ ४३ | १९ ०९ | २० ४५ | २२ ४० | ० ५४ | ३ १३ |
| २६ | ५ ३१ | ७ ४८ | १० ०८ | १२ २५ | १४ २९ | १६ १२ | १७ ३९ | १९ ०५ | २० ४१ | २२ ३६ | ० ५० | ३ ०९ |
| २७ | ५ २७ | ७ ४४ | १० ०४ | १२ २१ | १४ २५ | १६ ०८ | १७ ३५ | १९ ०१ | २० ३७ | २२ ३२ | ० ४६ | ३ ०५ |
| २८ | ५ २३ | ७ ४० | १० ०० | १२ १७ | १४ २१ | १६ ०७ | १७ ३१ | १८ ५७ | २० ३३ | २२ २८ | ० ४२ | ३ ०१ |
| २९ | ५ १९ | ७ ३६ | ९ ५६ | १२ १३ | १४ १७ | १६ ०४ | १७ २७ | १८ ५३ | २० २९ | २२ २४ | ० ३८ | २ ५७ |
| ३० | ५ १५ | ७ ३२ | ९ ५२ | १२ ०९ | १४ १३ | १५ ५६ | १७ २३ | १८ ४९ | २० २५ | २२ २० | ० ३४ | २ ५३ |

## अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ ३० | ९ ५० | १२ ०८ | १४ ११ | १५ ५४ | १७ २२ | १८ ४७ | २० २३ | २२ १९ | ० ३२ | २ ५२ | ५ ०९ |
| २ | ७ २६ | ९ ४६ | १२ ०४ | १४ ०७ | १५ ५० | १७ १८ | १८ ४३ | २० १९ | २२ १५ | ० २८ | २ ४८ | ५ ०५ |
| ३ | ७ २२ | ९ ४२ | १२ ०० | १४ ०३ | १५ ४६ | १७ १४ | १८ ३९ | २० १५ | २२ ११ | ० २४ | २ ४४ | ५ ०१ |
| ४ | ७ १८ | ९ ३८ | ११ ५६ | १३ ५९ | १५ ४२ | १७ १० | १८ ३५ | २० ११ | २२ ०७ | ० २० | २ ४० | ४ ५७ |
| ५ | ७ १३ | ९ ३३ | ११ ५१ | १३ ५४ | १५ ३७ | १७ ०५ | १८ ३० | २० ०६ | २२ ०२ | ० १५ | २ ३५ | ४ ५२ |
| ६ | ७ ०९ | ९ २९ | ११ ४७ | १३ ५० | १५ ३३ | १७ ०१ | १८ २६ | २० ०२ | २१ ५८ | ० ११ | २ ३१ | ४ ४८ |
| ७ | ७ ०५ | ९ २५ | ११ ४३ | १३ ४६ | १५ २९ | १६ ५७ | १८ २२ | १९ ५८ | २१ ५४ | ० ०७ | २ २७ | ४ ४४ |
| ८ | ७ ०१ | ९ २१ | ११ ३९ | १३ ४२ | १५ २५ | १६ ५३ | १८ १८ | १९ ५४ | २१ ५० | ० ०३ | २ २३ | ४ ४० |
| ९ | ६ ५७ | ९ १७ | ११ ३५ | १३ ३८ | १५ २१ | १६ ४९ | १८ १४ | १९ ५० | २१ ४६ | २३ ५९ | २ १९ | ४ ३६ |
| १० | ६ ५३ | ९ १३ | ११ ३१ | १३ ३४ | १५ १७ | १६ ४५ | १८ १० | १९ ४६ | २१ ४२ | २३ ५५ | २ १५ | ४ ३२ |
| ११ | ६ ४९ | ९ ०९ | ११ २७ | १३ ३० | १५ १३ | १६ ४१ | १८ ०६ | १९ ४२ | २१ ३८ | २३ ५१ | २ ११ | ४ २८ |
| १२ | ६ ४५ | ९ ०५ | ११ २३ | १३ २६ | १५ ०९ | १६ ३७ | १८ ०२ | १९ ३८ | २१ ३४ | २३ ४७ | २ ०७ | ४ २४ |
| १३ | ६ ४१ | ९ ०१ | ११ १९ | १३ २२ | १५ ०५ | १६ ३३ | १७ ५८ | १९ ३४ | २१ ३० | २३ ४३ | २ ०३ | ४ २० |
| १४ | ६ ३७ | ८ ५७ | ११ १५ | १३ १८ | १५ ०१ | १६ २९ | १७ ५४ | १९ ३० | २१ २६ | २३ ३९ | १ ५९ | ४ १६ |
| १५ | ६ ३३ | ८ ५३ | ११ ११ | १३ १४ | १४ ५७ | १६ २५ | १७ ५० | १९ २६ | २१ २२ | २३ ३५ | १ ५५ | ४ १२ |
| १६ | ६ २९ | ८ ४९ | ११ ०७ | १३ १० | १४ ५३ | १६ २१ | १७ ४६ | १९ २२ | २१ १८ | २३ ३१ | १ ५१ | ४ ०८ |
| १७ | ६ २५ | ८ ४५ | ११ ०३ | १३ ०६ | १४ ४९ | १६ १७ | १७ ४२ | १९ १८ | २१ १४ | २३ २७ | १ ४७ | ४ ०४ |
| १८ | ६ २१ | ८ ४१ | १० ५९ | १३ ०२ | १४ ४५ | १६ १३ | १७ ३८ | १९ १४ | २१ १० | २३ २३ | १ ४३ | ४ ०० |
| १९ | ६ १७ | ८ ३७ | १० ५५ | १२ ५८ | १४ ४१ | १६ ०९ | १७ ३४ | १९ १० | २१ ०६ | २३ १९ | १ ३९ | ३ ५६ |
| २० | ६ १३ | ८ ३३ | १० ५१ | १२ ५४ | १४ ३७ | १६ ०५ | १७ ३० | १९ ०६ | २१ ०२ | २३ १५ | १ ३५ | ३ ५२ |
| २१ | ६ ०९ | ८ २९ | १० ४७ | १२ ५० | १४ ३३ | १६ ०१ | १७ २६ | १९ ०२ | २० ५८ | २३ ११ | १ ३१ | ३ ४८ |
| २२ | ६ ०५ | ८ २५ | १० ४३ | १२ ४६ | १४ २९ | १५ ५७ | १७ २२ | १८ ५८ | २० ५४ | २३ ०७ | १ २७ | ३ ४४ |
| २३ | ६ ०१ | ८ २१ | १० ३९ | १२ ४२ | १४ २५ | १५ ५३ | १७ १८ | १८ ५४ | २० ५० | २३ ०३ | १ २३ | ३ ४० |
| २४ | ५ ५७ | ८ १७ | १० ३५ | १२ ३८ | १४ २१ | १५ ४९ | १७ १४ | १८ ५० | २० ४६ | २२ ५९ | १ १९ | ३ ३६ |
| २५ | ५ ५३ | ८ १३ | १० ३१ | १२ ३४ | १४ १७ | १५ ४५ | १७ १० | १८ ४६ | २० ४२ | २२ ५५ | १ १५ | ३ ३२ |
| २६ | ५ ५० | ८ १० | १० २८ | १२ ३१ | १४ १४ | १५ ४२ | १७ ०७ | १८ ४३ | २० ३९ | २२ ५२ | १ १२ | ३ २९ |
| २७ | ५ ४६ | ८ ०६ | १० २४ | १२ २७ | १४ १० | १५ ३८ | १७ ०३ | १८ ३९ | २० ३५ | २२ ४८ | १ ०८ | ३ २५ |
| २८ | ५ ४२ | ८ ०२ | १० २० | १२ २३ | १४ ०६ | १५ ३४ | १६ ५९ | १८ ३५ | २० ३१ | २२ ४४ | १ ०४ | ३ २१ |
| २९ | ५ ३८ | ७ ५८ | १० १६ | १२ १९ | १४ ०२ | १५ ३० | १६ ५५ | १८ ३१ | २० २७ | २२ ४० | १ ०० | ३ १७ |
| ३० | ५ ३४ | ७ ५४ | १० १२ | १२ १५ | १३ ५८ | १५ २६ | १६ ५१ | १८ २७ | २० २३ | २२ ३६ | ० ५६ | ३ १३ |
| ३१ | ५ ३० | ७ ५० | १० ०८ | १२ ११ | १३ ५४ | १५ २२ | १६ ४७ | १८ २३ | २० १९ | २२ ३२ | ० ५२ | ३ ०९ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

## नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | तुला | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ ४५ | १० ०३ | १२ ०७ | १३ ४९ | १५ १७ | १६ ४३ | १८ १८ | २० १४ | २२ २८ | ० ४७ | ३ ०५ | ५ २१ |
| २ | ७ ४१ | ९ ५९ | १२ ०३ | १३ ४५ | १५ १३ | १६ ३९ | १८ १४ | २० १० | २२ २४ | ० ४३ | ३ ०१ | ५ १७ |
| ३ | ७ ३७ | ९ ५५ | ११ ५९ | १३ ४१ | १५ ०९ | १६ ३५ | १८ १० | २० ०६ | २२ २० | ० ३९ | २ ५७ | ५ १३ |
| ४ | ७ ३३ | ९ ५१ | ११ ५५ | १३ ३७ | १५ ०५ | १६ ३१ | १८ ०६ | २० ०२ | २२ १६ | ० ३५ | २ ५३ | ५ ०९ |
| ५ | ७ २९ | ९ ४७ | ११ ५१ | १३ ३३ | १५ ०१ | १६ २७ | १८ ०२ | १९ ५८ | २२ १२ | ० ३१ | २ ४९ | ५ ०५ |
| ६ | ७ २५ | ९ ४३ | ११ ४७ | १३ २९ | १४ ५७ | १६ २३ | १७ ५८ | १९ ५४ | २२ ०८ | ० २७ | २ ४५ | ५ ०१ |
| ७ | ७ २१ | ९ ३९ | ११ ४३ | १३ २५ | १४ ५३ | १६ १९ | १७ ५४ | १९ ५० | २२ ०४ | ० २३ | २ ४१ | ४ ५७ |
| ८ | ७ १८ | ९ ३६ | ११ ४० | १३ २२ | १४ ५० | १६ १६ | १७ ५१ | १९ ४७ | २२ ०१ | ० २० | २ ३८ | ४ ५४ |
| ९ | ७ १४ | ९ ३२ | ११ ३६ | १३ १८ | १४ ४६ | १६ १२ | १७ ४७ | १९ ४३ | २१ ५७ | ० १६ | २ ३४ | ४ ५० |
| १० | ७ १० | ९ २८ | ११ ३२ | १३ १४ | १४ ४२ | १६ ०८ | १७ ४३ | १९ ३९ | २१ ५३ | ० १२ | २ ३० | ४ ४६ |
| ११ | ७ ०६ | ९ २४ | ११ २८ | १३ १० | १४ ३८ | १६ ०४ | १७ ३९ | १९ ३५ | २१ ४९ | ० ०८ | २ २६ | ४ ४२ |
| १२ | ७ ०२ | ९ २० | ११ २४ | १३ ०६ | १४ ३४ | १६ ०० | १७ ३५ | १९ ३१ | २१ ४५ | ० ०४ | २ २२ | ४ ३८ |
| १३ | ६ ५८ | ९ १६ | ११ २० | १३ ०२ | १४ ३० | १५ ५६ | १७ ३१ | १९ २७ | २१ ४१ | २४ ०० | २ १८ | ४ ३४ |
| १४ | ६ ५४ | ९ १२ | ११ १६ | १२ ५८ | १४ २६ | १५ ५२ | १७ २७ | १९ २३ | २१ ३७ | २३ ५६ | २ १४ | ४ ३० |
| १५ | ६ ५१ | ९ ०९ | ११ १३ | १२ ५५ | १४ २३ | १५ ४९ | १७ २४ | १९ २० | २१ ३४ | २३ ५३ | २ ११ | ४ २७ |
| १६ | ६ ४७ | ९ ०५ | ११ ०९ | १२ ५१ | १४ १९ | १५ ४५ | १७ २० | १९ १६ | २१ ३० | २३ ४९ | २ ०७ | ४ २३ |
| १७ | ६ ४३ | ९ ०१ | ११ ०५ | १२ ४७ | १४ १५ | १५ ४१ | १७ १६ | १९ १२ | २१ २६ | २३ ४५ | २ ०३ | ४ १९ |
| १८ | ६ ३९ | ८ ५७ | ११ ०१ | १२ ४३ | १४ ११ | १५ ३७ | १७ १२ | १९ ०८ | २१ २२ | २३ ४१ | १ ५९ | ४ १५ |
| १९ | ६ ३५ | ८ ५३ | १० ५७ | १२ ३९ | १४ ०७ | १५ ३३ | १७ ०८ | १९ ०४ | २१ १८ | २३ ३७ | १ ५५ | ४ ११ |
| २० | ६ ३१ | ८ ४९ | १० ५३ | १२ ३५ | १४ ०३ | १५ २९ | १७ ०४ | १९ ०० | २१ १४ | २३ ३३ | १ ५१ | ४ ०७ |
| २१ | ६ २७ | ८ ४५ | १० ४९ | १२ ३१ | १३ ५९ | १५ २५ | १७ ०० | १८ ५६ | २१ १० | २३ २९ | १ ४७ | ४ ०३ |
| २२ | ६ २३ | ८ ४१ | १० ४५ | १२ २७ | १३ ५५ | १५ २१ | १६ ५६ | १८ ५२ | २१ ०६ | २३ २५ | १ ४३ | ३ ५९ |
| २३ | ६ १९ | ८ ३७ | १० ४१ | १२ २३ | १३ ५१ | १५ १७ | १६ ५२ | १८ ४८ | २१ ०२ | २३ २१ | १ ३९ | ३ ५५ |
| २४ | ६ १५ | ८ ३३ | १० ३७ | १२ १९ | १३ ४७ | १५ १३ | १६ ४८ | १८ ४४ | २० ५८ | २३ १७ | १ ३५ | ३ ५१ |
| २५ | ६ ११ | ८ २९ | १० ३३ | १२ १५ | १३ ४३ | १५ ०९ | १६ ४४ | १८ ४० | २० ५४ | २३ १३ | १ ३१ | ३ ४७ |
| २६ | ६ ०८ | ८ २६ | १० ३० | १२ १२ | १३ ४० | १५ ०६ | १६ ४१ | १८ ३७ | २० ५१ | २३ १० | १ २८ | ३ ४४ |
| २७ | ६ ०४ | ८ २२ | १० २६ | १२ ०८ | १३ ३६ | १५ ०२ | १६ ३७ | १८ ३३ | २० ४७ | २३ ०६ | १ २४ | ३ ४० |
| २८ | ६ ०० | ८ १८ | १० २२ | १२ ०४ | १३ ३२ | १४ ५८ | १६ ३३ | १८ २९ | २० ४३ | २३ ०२ | १ २० | ३ ३६ |
| २९ | ५ ५६ | ८ १४ | १० १८ | १२ ०० | १३ २८ | १४ ५४ | १६ २९ | १८ २५ | २० ३९ | २२ ५८ | १ १६ | ३ ३२ |
| ३० | ५ ५२ | ८ १० | १० १४ | ११ ५६ | १३ २४ | १४ ५० | १६ २५ | १८ २१ | २० ३५ | २२ ५४ | १ १२ | ३ २८ |

## दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | वृश्चिक | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ८ ०६ | १० १० | ११ ५३ | १३ २० | १४ ४६ | १६·२२ | १८ १७ | २० ३१ | २२ ५१ | १ ०८ | ३ २५ | ५ ४४ |
| २ | ८ ०२ | १० ०६ | ११ ४९ | १३ १६ | १४ ४२ | १६ १८ | १८ १३ | २० २७ | २२ ४७ | १ ०४ | ३ २१ | ५ ४० |
| ३ | ७ ५८ | १० ०२ | ११ ४५ | १३ १२ | १४ ३८ | १६ १४ | १८ ०९ | २० २३ | २२ ४३ | १ ०० | ३ १७ | ५ ३६ |
| ४ | ७ ५४ | ९ ५८ | ११ ४१ | १३ ०८ | १४ ३४ | १६ १० | १८ ०५ | २० १९ | २२ ३९ | ० ५६ | ३ १३ | ५ ३२ |
| ५ | ७ ५० | ९ ५४ | ११ ३७ | १३ ०४ | १४ ३० | १६ ०६ | १८ १ | २० १५ | २२ ३५ | ० ५२ | ३ ०९ | ५ २८ |
| ६ | ७ ४६ | ९ ५० | ११ ३३ | १३ ०० | १४ २६ | १६ ०२ | १७ ५७ | २० ११ | २२ ३१ | ० ४८ | ३ ०५ | ५ २४ |
| ७ | ७ ४२ | ९ ४६ | ११ २९ | १२ ५६ | १४ २२ | १५ ५८ | १७ ५३ | २० ०७ | २२ २७ | ० ४४ | ३ ०१ | ५ २० |
| ८ | ७ ३९ | ९ ४३ | ११ २६ | १२ ५३ | १४ १९ | १५ ५५ | १७ ५० | २० ०४ | २२ २४ | ० ४१ | २ ५८ | ५ १७ |
| ९ | ७ ३५ | ९ ३९ | ११ २२ | १२ ४९ | १४ १५ | १५ ५१ | १७ ४६ | २० ०० | २२ २० | ० ३७ | २ ५४ | ५ १३ |
| १० | ७ ३१ | ९ ३५ | ११ १८ | १२ ४५ | १४ ११ | १५ ४७ | १७ ४२ | १९ ५६ | २२ १६ | ० ३३ | २ ५० | ५ ०९ |
| ११ | ७ २७ | ९ ३१ | ११ १४ | १२ ४१ | १४ ०७ | १५ ४३ | १७ ३८ | १९ ५२ | २२ १२ | ० २९ | २ ४६ | ५ ०५ |
| १२ | ७ २३ | ९ २७ | ११ १० | १२ ३७ | १४ ०३ | १५ ३९ | १७ ३४ | १९ ४८ | २२ ०८ | ० २६ | २ ४२ | ५ ०१ |
| १३ | ७ १९ | ९ २३ | ११ ०६ | १२ ३३ | १३ ५९ | १५ ३५ | १७ ३० | १९ ४४ | २२ ०४ | ० २१ | २ ३८ | ४ ५७ |
| १४ | ७ १५ | ९ १९ | ११ ०२ | १२ २९ | १३ ५५ | १५ ३१ | १७ २६ | १९ ४० | २२ ०० | ० १७ | २ ३४ | ४ ५३ |
| १५ | ७ ११ | ९ १५ | १० ५८ | १२ २५ | १३ ५१ | १५ २७ | १७ २२ | १९ ३६ | २१ ५६ | ० १३ | २ ३० | ४ ४९ |
| १६ | ७ ०७ | ९ ११ | १० ५४ | १२ २१ | १३ ४७ | १५ २३ | १७ १८ | १९ ३२ | २१ ५२ | ० ०९ | २ २६ | ४ ४५ |
| १७ | ७ ०३ | ९ ०७ | १० ५० | १२ १७ | १३ ४३ | १५ १९ | १७ १४ | १९ २८ | २१ ४८ | ० ०५ | २ २२ | ४ ४१ |
| १८ | ६ ५९ | ९ ०३ | १० ४६ | १२ १३ | १३ ३९ | १५ १५ | १७ १० | १९ २४ | २१ ४४ | ० ०१ | २ १८ | ४ ३७ |
| १९ | ६ ५५ | ८ ५९ | १० ४२ | १२ ०९ | १३ ३५ | १५ ११ | १७ ०६ | १९ २० | २१ ४० | २३ ५७ | २ १४ | ४ ३३ |
| २० | ६ ५१ | ८ ५५ | १० ३८ | १२ ०५ | १३ ३१ | १५ ०७ | १७ ०२ | १९ १६ | २१ ३६ | २३ ५३ | २ १० | ४ २९ |
| २१ | ६ ४७ | ८ ५१ | १० ३४ | १२ ०१ | १३ २७ | १५ ०३ | १६ ५८ | १९ १२ | २१ ३२ | २३ ४९ | २ ०६ | ४ २५ |
| २२ | ६ ४३ | ८ ४७ | १० ३० | ११ ५७ | १३ २३ | १४ ५९ | १६ ५४ | १९ ०८ | २१ २८ | २३ ४५ | २ ०२ | ४ २१ |
| २३ | ६ ४० | ८ ४४ | १० २७ | ११ ५४ | १३ २० | १४ ५६ | १६ ५१ | १९ ०५ | २१ २५ | २३ ४२ | १ ५९ | ४ १८ |
| २४ | ६ ३६ | ८ ४० | १० २३ | ११ ५० | १३ १६ | १४ ५२ | १६ ४७ | १९ ०१ | २१ २१ | २३ ३८ | १ ५५ | ४ १४ |
| २५ | ६ ३२ | ८ ३६ | १० १९ | ११ ४६ | १३ १२ | १४ ४८ | १६ ४३ | १८ ५७ | २१ १७ | २३ ३४ | १ ५१ | ४ १० |
| २६ | ६ २८ | ८ ३२ | १० १५ | ११ ४२ | १३ ०८ | १४ ४४ | १६ ३९ | १८ ५३ | २१ १३ | २३ ३० | १ ४७ | ४ ०६ |
| २७ | ६ २४ | ८ २८ | १० ११ | ११ ३८ | १३ ०४ | १४ ४० | १६ ३५ | १८ ४९ | २१ ०९ | २३ २६ | १ ४३ | ४ ०२ |
| २८ | ६ २० | ८ २४ | १० ०७ | ११ ३४ | १३ ०० | १४ ३६ | १६ ३१ | १८ ४५ | २१ ०५ | २३ २२ | १ ३९ | ३ ५८ |
| २९ | ६ १७ | ८ २१ | १० ०४ | ११ ३१ | १२ ५७ | १४ ३३ | १६ २८ | १८ ४२ | २१ ०२ | २३ १९ | १ ३६ | ३ ५५ |
| ३० | ६ १३ | ८ १७ | १० ०० | ११ २७ | १२ ५३ | १४ २९ | १६ २४ | १८ ३८ | २० ५८ | २३ १५ | १ ३२ | ३ ५१ |
| ३१ | ६ ०९ | ८ १३ | ९ ५६ | ११ २३ | १२ ४९ | १४ २५ | १६ २० | १८ ३४ | २० ५४ | २३ ११ | १ ३८ | ३ ४७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | धन | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ८ ०९ | ९ ५२ | ११ २० | १२ ४५ | १४ २१ | १६ १७ | १८ ३० | २० ५० | २३ ०८ | १ २४ | ३ ४४ | ६ ०१ |
| २ | ८ ०५ | ९ ४८ | ११ १६ | १२ ४१ | १४ १७ | १६ १३ | १८ २६ | २० ४६ | २३ ०४ | १ २० | ३ ४० | ५ ५७ |
| ३ | ८ ०१ | ९ ४४ | ११ १२ | १२ ३७ | १४ १३ | १६ ०९ | १८ २२ | २० ४२ | २३ ०० | १ १६ | ३ ३६ | ५ ५३ |
| ४ | ७ ५७ | ९ ४० | ११ ०८ | १२ ३३ | १४ ०९ | १६ ०५ | १८ १८ | २० ३८ | २२ ५६ | १ १२ | ३ ३२ | ५ ४९ |
| ५ | ७ ५३ | ९ ३६ | ११ ०४ | १२ २९ | १४ ०५ | १६ ०१ | १८ १४ | २० ३४ | २२ ५२ | १ ०८ | ३ २८ | ५ ४५ |
| ६ | ७ ४९ | ९ ३२ | ११ ०० | १२ २५ | १४ ०१ | १५ ५७ | १८ १० | २० ३० | २२ ४८ | १ ०४ | ३ २४ | ५ ४१ |
| ७ | ७ ४५ | ९ २८ | १० ५६ | १२ २१ | १३ ५७ | १५ ५३ | १८ ०६ | २० २६ | २२ ४४ | १ ०० | ३ २० | ५ ३७ |
| ८ | ७ ४२ | ९ २५ | १० ५३ | १२ १८ | १३ ५४ | १५ ५० | १८ ०३ | २० २३ | २२ ४१ | ० ५७ | ३ १७ | ५ ३४ |
| ९ | ७ ३८ | ९ २१ | १० ४९ | १२ १४ | १३ ५० | १५ ४६ | १७ ५९ | २० १९ | २२ ३७ | ० ५३ | ३ १३ | ५ ३० |
| १० | ७ ३४ | ९ १७ | १० ४५ | १२ १० | १३ ४६ | १५ ४२ | १७ ५५ | २० १५ | २२ ३३ | ० ४९ | ३ ०९ | ५ २६ |
| ११ | ७ ३० | ९ १३ | १० ४१ | १२ ०६ | १३ ४२ | १५ ३८ | १७ ५१ | २० ११ | २२ २९ | ० ४५ | ३ ०५ | ५ २२ |
| १२ | ७ २६ | ९ ०९ | १० ३७ | १२ ०२ | १३ ३८ | १५ ३४ | १७ ४७ | २० ०७ | २२ २५ | ० ४१ | ३ ०१ | ५ १८ |
| १३ | ७ २२ | ९ ०५ | १० ३३ | ११ ५८ | १३ ३४ | १५ ३० | १७ ४३ | २० ०३ | २२ २१ | ० ३७ | २ ५७ | ५ १४ |
| १४ | ७ १८ | ९ ०१ | १० २९ | ११ ५४ | १३ ३० | १५ २६ | १७ ३९ | १९ ५९ | २२ १७ | ० ३३ | २ ५३ | ५ १० |
| १५ | ७ १४ | ८ ५७ | १० २५ | ११ ५० | १३ २६ | १५ २२ | १७ ३५ | १९ ५५ | २२ १३ | ० २९ | २ ४९ | ५ ०६ |
| १६ | ७ १० | ८ ५३ | १० २१ | ११ ४६ | १३ २२ | १५ १८ | १७ ३१ | १९ ५१ | २२ ०९ | ० २५ | २ ४५ | ५ ०२ |
| १७ | ७ ०६ | ८ ४९ | १० १७ | ११ ४२ | १३ १८ | १५ १४ | १७ २७ | १९ ४७ | २२ ०५ | ० २१ | २ ४१ | ४ ५८ |
| १८ | ७ ०२ | ८ ४५ | १० १३ | ११ ३८ | १३ १४ | १५ १० | १७ २३ | १९ ४३ | २२ ०१ | ० १७ | २ ३७ | ४ ५४ |
| १९ | ६ ५८ | ८ ४१ | १० ०९ | ११ ३४ | १३ १० | १५ ०६ | १७ १९ | १९ ३९ | २१ ५७ | ० १३ | २ ३३ | ४ ५० |
| २० | ६ ५४ | ८ ३७ | १० ०५ | ११ ३० | १३ ०६ | १५ ०२ | १७ १५ | १९ ३५ | २१ ५३ | ० ०९ | २ २९ | ४ ४६ |
| २१ | ६ ५० | ८ ३३ | १० ०१ | ११ २६ | १३ ०२ | १४ ५८ | १७ ११ | १९ ३१ | २१ ४९ | ० ०५ | २ २५ | ४ ४२ |
| २२ | ६ ४६ | ८ २९ | ९ ५७ | ११ २२ | १२ ५८ | १४ ५४ | १७ ०७ | १९ २७ | २१ ४५ | ० ०१ | २ २१ | ४ ३८ |
| २३ | ६ ४२ | ८ २५ | ९ ५३ | ११ १८ | १२ ५४ | १४ ५० | १७ ०३ | १९ २३ | २१ ४१ | २३ ५७ | २ १७ | ४ ३४ |
| २४ | ६ ३८ | ८ २१ | ९ ४९ | ११ १४ | १२ ५० | १४ ४६ | १६ ५९ | १९ १९ | २१ ३७ | २३ ५३ | २ १३ | ४ ३० |
| २५ | ६ ३४ | ८ १७ | ९ ४५ | ११ १० | १२ ४६ | १४ ४२ | १६ ५५ | १९ १५ | २१ ३३ | २३ ४९ | २ ०९ | ४ २६ |
| २६ | ६ ३० | ८ १३ | ९ ४१ | ११ ०६ | १२ ४२ | १४ ३८ | १६ ५१ | १९ ११ | २१ २९ | २३ ४५ | २ ०५ | ४ २२ |
| २७ | ६ २६ | ८ ०९ | ९ ३७ | ११ ०२ | १२ ३८ | १४ ३४ | १६ ४७ | १९ ०७ | २१ २५ | २३ ४१ | २ ०१ | ४ १८ |
| २८ | ६ २२ | ८ ०५ | ९ ३३ | १० ५८ | १२ ३४ | १४ ३० | १६ ४३ | १९ ०३ | २१ २१ | २३ ३७ | १ ५७ | ४ १४ |
| २९ | ६ १९ | ८ ०२ | ९ ३० | १० ५५ | १२ ३१ | १४ २७ | १६ ४० | १९ ०० | २१ १८ | २३ ३४ | १ ५४ | ४ ११ |
| ३० | ६ १५ | ७ ५८ | ९ २६ | १० ५१ | १२ २७ | १४ २३ | १६ ३६ | १८ ५६ | २१ १४ | २३ ३० | १ ५० | ४ ०७ |
| ३१ | ६ ११ | ७ ५४ | ९ २२ | १० ४७ | १२ २३ | १४ १९ | १६ ३२ | १८ ५२ | २१ १० | २३ २६ | १ ४६ | ४ ०३ |

## फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

| ता. | मकर | कुम्भ | मीन | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ७ ५० | ९ १८ | १० ४४ | १२ १८ | १४ १४ | १६ २८ | १८ ४७ | २१ ०५ | २३ २२ | १ ४१ | ३ ५९ | ६ ०२ |
| २ | ७ ४६ | ९ १४ | १० ४० | १२ १४ | १४ १० | १६ २४ | १८ ४३ | २१ ०१ | २३ १८ | १ ३७ | ३ ५५ | ५ ५८ |
| ३ | ७ ४२ | ९ १० | १० ३६ | १२ १० | १४ ०६ | १६ २० | १८ ३९ | २० ५७ | २३ १४ | १ ३३ | ३ ५१ | ५ ५४ |
| ४ | ७ ३८ | ९ ०६ | १० ३२ | १२ ०६ | १४ ०२ | १६ १६ | १८ ३५ | ३० ५३ | २३ १० | १ २९ | ३ ४७ | ५ ५० |
| ५ | ७ ३५ | ९ ०३ | १० २९ | १२ ०३ | १३ ५९ | १६ १३ | १८ ३२ | २० ५० | २३ ०७ | १ २६ | ३ ४४ | ५ ४७ |
| ६ | ७ ३१ | ८ ५९ | १० २५ | ११ ५९ | १३ ५५ | १६ ०९ | १८ २८ | २० ४६ | २३ ०३ | १ २२ | ३ ४० | ५ ४३ |
| ७ | ७ २७ | ८ ५५ | १० २१ | ११ ५५ | १३ ५१ | १६ ०५ | १८ २४ | २० ४२ | २२ ५९ | १ १८ | ३ ३६ | ५ ३९ |
| ८ | ७ २३ | ८ ५१ | १० १७ | ११ ५१ | १३ ४७ | १६ ०१ | १८ २० | २० ३८ | २२ ५५ | १ १४ | ३ ३२ | ५ ३५ |
| ९ | ७ १९ | ८ ४७ | १० १३ | ११ ४७ | १३ ४३ | १५ ५७ | १८ १६ | २० ३४ | २२ ५१ | १ १० | ३ २८ | ५ ३१ |
| १० | ७ १५ | ८ ४३ | १० ०९ | ११ ४३ | १३ ३९ | १५ ५३ | १८ १२ | २० ३० | २२ ४७ | १ ०६ | ३ २४ | ५ २७ |
| ११ | ७ ११ | ८ ३९ | १० ०५ | ११ ३९ | १३ ३५ | १५ ४९ | १८ ०८ | २० २६ | २२ ४३ | १ ०२ | ३ २० | ५ २३ |
| १२ | ७ ०७ | ८ ३५ | १० ०१ | ११ ३५ | १३ ३१ | १५ ४५ | १८ ०४ | २० २२ | २२ ३९ | ० ५८ | ३ १६ | ५ १९ |
| १३ | ७ ०३ | ८ ३१ | ९ ५७ | ११ ३१ | १३ २७ | १५ ४१ | १८ ०० | २० १८ | २२ ३५ | ० ५४ | ३ १२ | ५ १५ |
| १४ | ६ ५९ | ८ २७ | ९ ५३ | ११ २७ | १३ २३ | १५ ३७ | १७ ५६ | २० १४ | २२ ३१ | ० ५० | ३ ०८ | ५ ११ |
| १५ | ६ ५५ | ८ २३ | ९ ४९ | ११ २३ | १३ १९ | १५ ३३ | १७ ५२ | २० १० | २२ २७ | ० ४६ | ३ ०४ | ५ ०७ |
| १६ | ६ ५१ | ८ १९ | ९ ४५ | ११ १९ | १३ १५ | १५ २९ | १७ ४८ | २० ०६ | २२ २३ | ० ४२ | ३ ०० | ५ ०३ |
| १७ | ६ ४७ | ८ १५ | ९ ४१ | ११ १५ | १३ ११ | १५ २५ | १७ ४४ | २० ०२ | २२ १९ | ० ३८ | २ ५६ | ४ ५९ |
| १८ | ६ ४३ | ८ ११ | ९ ३७ | ११ ११ | १३ ०७ | १५ २१ | १७ ४० | १९ ५८ | २२ १५ | ० ३४ | २ ५२ | ४ ५५ |
| १९ | ६ ३९ | ८ ०७ | ९ ३३ | ११ ०७ | १३ ०३ | १५ १७ | १७ ३६ | १९ ५४ | २२ ११ | ० ३० | २ ४८ | ४ ५१ |
| २० | ६ ३४ | ८ ०२ | ९ २८ | ११ ०२ | १२ ५८ | १५ १२ | १७ ३१ | १९ ४९ | २२ ०६ | ० २५ | २ ४३ | ४ ४६ |
| २१ | ६ ३० | ७ ५८ | ९ २४ | १० ५८ | १२ ५४ | १५ ०८ | १७ २७ | १९ ४५ | २२ ०२ | ० २१ | २ ३९ | ४ ४२ |
| २२ | ६ २६ | ७ ५४ | ९ २० | १० ५४ | १२ ५० | १५ ०४ | १७ २३ | १९ ४१ | २१ ५८ | ० १७ | २ ३५ | ४ ३८ |
| २३ | ६ २२ | ७ ५० | ९ १६ | १० ५० | १२ ४६ | १५ ०० | १७ १९ | १९ ३७ | २१ ५४ | ० १३ | २ ३१ | ४ ३४ |
| २४ | ६ १८ | ७ ४६ | ९ १२ | १० ४६ | १२ ४२ | १४ ५६ | १७ १५ | १९ ३३ | २१ ५० | ० ०९ | २ २७ | ४ ३० |
| २५ | ६ १५ | ७ ४३ | ९ ०९ | १० ४३ | १२ ३९ | १४ ५३ | १७ १२ | १९ ३० | २१ ४७ | ० ०६ | २ २४ | ४ २७ |
| २६ | ६ ११ | ७ ३९ | ९ ०५ | १० ३९ | १२ ३५ | १४ ४९ | १७ ०८ | १९ २६ | २१ ४३ | ० ०२ | २ २० | ४ २३ |
| २७ | ६ ०७ | ७ ३५ | ९ ०१ | १० ३५ | १२ ३१ | १४ ४५ | १७ ०४ | १९ २२ | २१ ३९ | २३ ५८ | २ १६ | ४ १९ |
| २८ | ६ ०३ | ७ ३१ | ८ ५७ | १० ३१ | १२ २७ | १४ ४१ | १७ ०० | १९ १८ | २१ ३५ | २३ ५४ | २ १२ | ४ १५ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

**१. रवि क्रांति**—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

**२. चर**—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

**३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर**—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

**४. वेलान्तर**—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

**५. दिनमान**—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

**उदाहरण**—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

| | | |
|---|---|---|
| | मि. से. | |
| अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर | १०।४८ | |
| अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से | १२।२२ | १२।२२ |
| अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया | | - १०।४८ |
| अंतर | = | १।३४ |

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

| | |
|---|---|
| | मि.से. |
| अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से | ११।२२ |
| अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया | १०।४८ |
| अंतर | =०।३४ |

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

| | |
|---|---|
| | मि.से. |
| अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर | १०।४८ |
| रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन) | +०।१९ |
| अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन) | +०।०५ |
| अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर | ११।१२ |

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

प्राप्त होगा। रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| | घं.मि.से. |
|---|---|
| **सूर्योदय** | ६।००।०० |
| चर | +०।११।१२ |
| लोकल सूर्योदय | ६।११।१२ |
| लोकल सूर्योदय | ६।११।१२ |
| स्टैं. अंतर धन होगा | +०।१३।३६ |
| मध्याह्न सूर्योदय | ६।२४।४८ |
| वेलांतर | —०।१३।२१ |
| स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ। | ६।११।२७ |

| | घं.मि.से. |
|---|---|
| **सूर्यास्त** | ६।००।०० |
| चर | —०।११।१२ |
| लोकल सूर्यास्त | ५।४८।४८ |
| लोकल सूर्यास्त | ५।४८।४८ |
| स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा | +०।१३।३६ |
| मध्याह्न सूर्यास्त | ६।०२।२४ |
| वेलांतर | —०।१३।२१ |
| स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ। | ५।४९।०३ |

**दिनमान** — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११।१२ × ५=५५।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अतः यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

| | |
|---|---|
| मध्याह्न दिनमान | ३०।०० |
| चर पल | —०।५६ |
| दिनमान नागपुर | २९।०४ |

**रात्रिमान—**

| | |
|---|---|
| अहोरात्र | ६०।०० |
| दिनमान | —२९।०४ |
| रात्रिमान | ३०।५६ |

**उदाहरण २**—मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८।५२, रवि क्रांति २३।२६ उत्तर, वेलांतर + १।१४

| | मि.से. |
|---|---|
| अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर | २२।३० |
| (अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से) | +००।०८ |
| रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर | +००।३४ |
| अक्षांश १३।०५ एवं रवि क्रांति २३।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर | २३।१२ |

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

| | घं.मि.से. |
|---|---|
| **सूर्योदय** | ६।००।०० |
| चर | —०।२३।१२ |
| लोकल सूर्योदय | ५।३६।४८ |
| लोकल सूर्योदय | ५।३६।४८ |
| स्टैं. अंतर धन होगा | +०।०८।५२ |
| मध्याह्न सूर्योदय | ५।४५।४० |
| वेलांतर | +०।०१।१४ |
| स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ | ५।४६।५४ |

| | घं.मि.से. |
|---|---|
| **सूर्यास्त** | ६।००।०० |
| चर | +०।२३।१२ |
| लोकल सूर्यास्त | ६।२३।१२ |
| लोकल सूर्यास्त | ६।२३।१२ |
| स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा | +०।०८।५२ |
| मध्याह्न सूर्यास्त | ६।३२।०४ |
| वेलांतर | +०।०१।१४ |
| स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ। | ६।३३।१८ |

**दिनमान-** चर मिनट सेकेण्ड २३।१२×५=११५।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| मध्याह्न दिनमान | ३०।०० | **रात्रिमान—** | अहोरात्र | ६०।०० |
| चर पल | +०१।५६ | | दिनमान | —३१।५६ |
| दिनमान मद्रास | ३१।५६ | | रात्रिमान | २८।०४ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

**उदाहरण** (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रात: ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

| | | घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|
| (१) | २५ जून को जन्म समय | ११ | ३५ | भा.स्टै. टा. |
| (२) | २५ जून का सूर्योदय घटाया | —५ | २६ | '' |
| | | ६ | ०९ | '' |
| | ६।७ का ढाई से गुना किया | ६ | ०९ | |
| | | ३ | ०४ | ३० |
| | इष्टकाल घटी फल विपल में | १५ | २२ | ३० |

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

| | | घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|
| (१) | १० सितम्बर को जन्म समय<br>मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें। | २० | ४५ | भा.स्टै.टा. |
| (२) | १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया | —६ | ०५ | '' |
| | शेष १४-३७ को ढाई गुना किया | १४ | ४० | |
| | | १४ | ४० | |
| | | ७ | २० | ३० |
| (३) | इष्टकाल घटी पल विपल में | ३६ | ४० | ३० |

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

**उदाहरण ( ३ )**—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

| | घं. | मि. | भा.स्टै.टा. |
|---|---|---|---|
| जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर | ५ | २१ | |
| २४ जमा करके लिखा | २९ | २१ | |
| सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया | —७ | ०६ | '' |
| शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये | २२ | १५ शेष | |
| ढाई गुना किया | २२ | १५ | |
| | ११ | ०७ | ३० |
| इष्टकाल—घटी पल विपल में | ५५ | ३७ | ३० |

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## क्रान्त्यंश चर सारिणी

| अक्षांश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| | ४ | ८ | १३ | १७ | २१ | २५ | २९ | ३४ | ३८ | ४२ | ४७ | ५१ | ५५ | ० | ४ | ९ | १३ | १८ | २२ | २७ | ३२ | ३७ | ४२ | ४७ |
| २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | ८ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५० | ५९ | ८ | १६ | २५ | ३३ | ४२ | ५१ | ० | ९ | १८ | २७ | ३७ | ४५ | ५५ | ४ | १४ | २४ | ३४ |
| ३ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ |
| | १३ | २५ | ३८ | ५० | ३ | १६ | २८ | ४१ | ५४ | ७ | २० | ३३ | ४६ | ० | १३ | २७ | ४० | ५५ | ८ | २२ | ३७ | ५१ | ६ | २१ |
| ४ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| | १७ | ३४ | ५० | ७ | २४ | ४१ | ५८ | १२ | २९ | ४८ | ५ | २४ | ४२ | ० | १८ | ३६ | ५४ | १२ | ३१ | ५० | ९ | २९ | ४८ | ८ |
| ५ | ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ |
| | २१ | ४२ | ३ | २४ | ४५ | ७ | २८ | ५० | १० | ३२ | ५४ | १६ | ३८ | ० | २३ | ४५ | ७ | ३१ | ५४ | १९ | ४२ | ६ | ३१ | ५६ |
| ६ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ |
| | २५ | ५० | १६ | ४१ | ६ | ३२ | ५७ | २३ | ४९ | १५ | ४२ | ७ | ३४ | ० | ४७ | ५४ | २२ | ५० | १८ | ४६ | १५ | ४४ | १४ | ४४ |
| ७ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ |
| | २९ | ५९ | २८ | ५८ | २९ | ५७ | २७ | ५७ | २७ | ५८ | २८ | ५९ | ३० | १ | ३२ | ४ | ३६ | ९ | ४२ | १५ | ४८ | २२ | ५७ | ३२ |
| ८ | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ |
| | ३४ | ७ | ४१ | १५ | ४९ | २३ | ५६ | ३१ | ६ | ४१ | १६ | ५१ | २६ | २ | ३८ | १४ | ५१ | २८ | ६ | ४४ | २२ | १ | ४१ | २१ |
| ९ | ० | १ | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| | ३८ | १६ | ५४ | ३३ | ११ | ४९ | २७ | ६ | ४५ | २४ | ४ | ४३ | २३ | ३ | ४४ | २५ | ६ | ४८ | ३० | १३ | ५६ | ४१ | २५ | ११ |
| १० | ० | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | १० | १० | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| | ४२ | २५ | ७ | ५० | ३२ | १५ | ५८ | ४१ | २४ | ८ | ५१ | ३६ | २० | ५ | ५० | ३६ | २३ | ८ | ५५ | ४३ | ३१ | २० | १० | १ |
| ११ | ० | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १८ | १९ |
| | ४७ | ३४ | २० | ७ | ५४ | ४० | २८ | १६ | ३ | ५१ | ४० | २९ | १७ | ७ | ५६ | ४७ | ३८ | २९ | २७ | १४ | ७ | १ | ५६ | ५२ |
| १२ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २० |
| | ५१ | ४२ | ३३ | २४ | १६ | ९ | ५९ | ५० | ४३ | ३६ | २८ | २१ | १५ | ९ | ३ | ५९ | ५४ | २० | ४७ | ४५ | ४३ | ४२ | ४२ | ४३ |
| १३ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| | ५५ | ५१ | ४६ | ४२ | ३८ | ३४ | ३० | २० | २३ | २० | १७ | १५ | १३ | १२ | ११ | ११ | ११ | १२ | १४ | १७ | २० | २५ | ३० | ३६ |
| १४ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २३ | २४ | २५ |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | २ | ३ | ५ | ७ | ९ | १२ | १५ | १९ | २४ | २९ | ३४ | ४२ | २० | ३८ | ८ | ८ | ३६ |
| १५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २१ | २२ | २३ | २४ | २६ | २७ |
| | ४ | ९ | १३ | १७ | २१ | २७ | ३१ | ३८ | ४४ | ५० | ५७ | ४ | १० | १९ | २७ | ३८ | ४८ | ५९ | १० | २४ | ३५ | ५२ | ७ | २१ |

## क्रान्त्यंश चर सारिणी

| अक्षांश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २६ | २७ | २९ |
| | ९ | १८ | २७ | ३६ | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २४ | ३६ | ५२ | ७ | २३ | ४० | ५७ | १७ | ३७ | ५८ | २० |
| १७ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ७ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १४ | १६ | १७ | १९ | २० | २१ | २२ | २४ | २५ | २६ | २८ | २९ | ३१ |
| | १३ | २७ | ४० | ५४ | ८ | २२ | ३६ | ५१ | ६ | २० | ३८ | ५४ | ११ | २९ | ४८ | ७ | २७ | ४८ | १० | ३३ | ५८ | २३ | ५० | १८ |
| १८ | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १७ | १८ | १८ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ |
| | १८ | ३६ | ५१ | १२ | ३१ | ५० | ९ | २८ | ४८ | ८ | २९ | ५० | २२ | ३४ | ५९ | २३ | ४८ | १४ | ४३ | १० | ४१ | १० | ४३ | १६ |
| १९ | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ | ३५ |
| | २३ | ४५ | ८ | ३१ | ५४ | १८ | ३७ | ६ | ३० | ५५ | २१ | ४७ | १४ | ४२ | ११ | ४० | १० | ४२ | १४ | ४८ | २३ | ५९ | ३७ | १६ |
| २० | १ | २ | ४ | ५ | ७ | ८ | १० | ११ | १३ | १४ | १६ | १७ | १९ | २० | २२ | २३ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३२ | ३३ | ३५ | ३७ |
| | २३ | ५५ | २२ | ५० | १६ | ४६ | १५ | ४४ | १३ | ४३ | १४ | ४५ | २७ | ५० | २३ | ५७ | ३३ | १० | ४१ | २७ | ८ | ४९ | ३३ | १८ |
| २१ | १ | ३ | ४ | ६ | ७ | ९ | १० | १२ | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २१ | २३ | २५ | २६ | २८ | ३० | ३२ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ |
| | ३२ | ४ | ३६ | ९ | ४२ | १५ | ४८ | २२ | ५७ | ३१ | ७ | ४३ | २० | ५९ | ३७ | १७ | ५८ | १४ | २३ | ८ | ५४ | ४१ | ३१ | २२ |
| २२ | १ | ३ | ४ | ६ | ८ | ९ | ११ | १३ | १३ | १६ | १७ | १९ | २१ | २३ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ |
| | ३७ | १४ | ५१ | २९ | ६ | ४४ | २२ | १ | ४० | २० | ५९ | ४२ | २५ | ८ | ५२ | ३७ | २३ | ११ | ५९ | ४९ | ४२ | ३५ | ३० | २७ |
| २३ | १ | ३ | ५ | ६ | ८ | १० | ११ | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ |
| | ४२ | २४ | ६ | ४८ | ३२ | १४ | ५७ | ४१ | २५ | १० | ५६ | ४२ | ३० | १८ | ६ | ५६ | ५० | ४३ | ३० | ३३ | ३१ | ३० | ४१ | ३४ |
| २४ | १ | ३ | ५ | ७ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ | ४५ |
| | ४७ | ३४ | २१ | ८ | ५६ | ४४ | ३२ | २१ | ११ | १ | ५२ | ४३ | ३६ | ३० | २४ | २० | १८ | १६ | १६ | १८ | २२ | ४७ | ३४ | ५४ |
| २५ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४३ | ४५ | ४७ |
| | ५२ | ४४ | ३६ | २८ | २१ | १४ | ८ | ५९ | ५७ | ५२ | ४८ | ४५ | ४३ | ४२ | ४३ | ४४ | ४७ | ५२ | ५७ | ५ | १५ | २६ | ४० | ५६ |
| २६ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १५ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४७ | ५० |
| | ५७ | ५४ | ५२ | ४९ | ३७ | ४५ | ४४ | ४३ | ४३ | ४४ | ४६ | ४८ | ५२ | ५६ | २ | ९ | १८ | २८ | ४० | ५४ | १३ | २८ | ४८ | १० |
| २७ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ४० | ४२ | ४५ | ४७ | ४९ | ५२ |
| | २ | ५ | ७ | १० | १३ | ७ | २१ | २६ | ३१ | ३७ | ४४ | ५२ | २ | १२ | २३ | ३६ | ५१ | ६ | २५ | ४५ | ७ | ३२ | ५८ | २७ |
| २८ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २८ | ३० | ३२ | ३५ | ३७ | ३९ | ४२ | ४४ | ४७ | ४९ | ५२ | ५४ |
| | ८ | १२ | २३ | १३ | ४० | ४९ | ५८ | ८ | १९ | ३१ | ४४ | ५७ | १२ | २८ | ४६ | ५ | २५ | ४८ | १२ | ३८ | ६ | ३८ | ११ | ४७ |
| २९ | २ | ४ | ६ | ८ | ११ | १३ | १५ | १७ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३१ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४४ | ४६ | ४९ | ५१ | ५४ | ५७ |
| | १३ | २६ | ४० | ५३ | ७ | २२ | ३७ | ५२ | ९ | २६ | ४४ | ४ | २५ | ४८ | १० | ३५ | २ | २७ | १ | ३३ | ८ | ४६ | २७ | ९ |
| ३० | २ | ४ | ६ | ९ | ११ | १३ | १६ | १८ | २१ | २३ | २५ | २८ | ३० | ३३ | ३५ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४८ | ५१ | ५३ | ५६ | ५९ |
| | १९ | ३७ | ५६ | १५ | ३५ | ५५ | १६ | ३७ | ० | २२ | ४६ | १२ | ३९ | ६ | ३६ | ७ | ४० | १५ | ५२ | ३१ | १३ | ५७ | ४५ | ३५ |
| ३१ | २ | ४ | ७ | ९ | १२ | १४ | १६ | १९ | २१ | २४ | २६ | २९ | ३१ | ३४ | ३७ | ३९ | ४२ | ४५ | ४७ | ५० | ५३ | ५६ | ५९ | ६२ |
| | २४ | ५९ | १३ | ३७ | २ | २९ | ४४ | २३ | ५० | २१ | ५० | २१ | ५४ | २७ | ४ | ४१ | २१ | २ | ४६ | २८ | २० | १२ | ६ | ४ |
| ३२ | २ | ५ | ७ | १० | १२ | १५ | १७ | २० | २२ | २५ | २७ | ३० | ३३ | ३५ | ३८ | ४१ | ४४ | ४६ | ४९ | ५२ | ५५ | ५८ | ६१ | ६४ |
| | ३० | ० | ३० | १ | ३२ | ४ | ३६ | १ | ४३ | १७ | ५४ | ३२ | १० | ४७ | ३३ | १६ | ३ | ५२ | ४२ | ३५ | ३० | ३० | ३१ | ३७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती हैं, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

**उदाहरण (१)**—मान लो आप को २५ जून को प्रात: ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T. (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

| | | घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|
| (१) | २५ जून को जन्म समय | ११ | ३५ | भा.स्टै. टा. |
| (२) | २५ जून का सूर्योदय घटाया | —५ | २६ | '' |
| | | ६ | ०९ | '' |
| | ६।७ का ढाई से गुना किया | ६ | ०९ | |
| | | ३ | ०४ | ३० |
| | इष्टकाल घटी फल विपल में | १५ | २२ | ३० |

**उदाहरण (२)**—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

| | | घं. | मि. | |
|---|---|---|---|---|
| (१) | १० सितम्बर को जन्म समय | २० | ४५ | भा.स्टै.टा. |
| | मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें। | | | |
| (२) | १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया | —६ | ०५ | '' |
| | शेष १४-३७ को ढाई गुना किया | १४ | ४० | |
| | | १४ | ४० | |
| | | ७ | २० | ३० |
| (३) | इष्टकाल घटी पल विपल में | ३६ | ४० | ३० |

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

**उदाहरण (३)**—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

| | घं. | मि. | भा.स्टै.टा. |
|---|---|---|---|
| जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर | ५ | २१ | |
| २४ जमा करके लिखा | २९ | २१ | |
| सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया | —७ | ०६ | '' |
| शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये | २२ | १५ शेष | |
| ढाई गुना किया | २२ | १५ | |
| | ११ | ०७ | ३० |
| इष्टकाल—घटी पल विपल में | ५५ | ३७ | ३० |

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## क्रान्त्यंश चर सारिणी

| अक्षांश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| | ४ | ८ | १३ | १७ | २१ | २५ | २९ | ३४ | ३८ | ४२ | ४७ | ५१ | ५५ | ० | ४ | ९ | १३ | १८ | २२ | २७ | ३२ | ३७ | ४२ | ४७ |
| २ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | ८ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५० | ५९ | ८ | १६ | २५ | ३३ | ४२ | ५१ | ० | ९ | १८ | २७ | ३७ | ४५ | ५५ | ४ | १४ | २४ | ३४ |
| ३ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ |
| | १३ | २५ | ३८ | ५० | ३ | १६ | २८ | ४१ | ५४ | ७ | २० | ३३ | ४६ | ० | १३ | २७ | ४० | ५५ | ८ | २२ | ३७ | ५१ | ६ | २१ |
| ४ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| | १७ | ३४ | ५० | ७ | २४ | ४१ | ५८ | १२ | २९ | ४८ | ५ | २४ | ४२ | ० | १८ | ३६ | ५४ | १२ | ३१ | ५० | ९ | २९ | ४८ | ८ |
| ५ | ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ |
| | २१ | ४२ | ३ | २४ | ४५ | ७ | २८ | ५० | १० | ३२ | ५४ | १६ | ३८ | ० | २३ | ४५ | ७ | ३१ | ५४ | १९ | ४२ | ६ | ३१ | ५६ |
| ६ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ |
| | २५ | ५० | १६ | ४१ | ६ | ३२ | ५७ | २३ | ४९ | १५ | ४२ | ७ | ३४ | ० | ४७ | ५४ | २२ | ५० | १८ | ४६ | १५ | ४४ | १४ | ४४ |
| ७ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ |
| | २९ | ५९ | २८ | ५८ | २९ | ५७ | २७ | ५७ | २७ | ५८ | २८ | ५९ | ३० | १ | ३२ | ४ | ३६ | ९ | ४२ | १५ | ४८ | २२ | ५७ | ३२ |
| ८ | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ |
| | ३४ | ७ | ४१ | १५ | ४९ | २३ | ५६ | ३१ | ६ | ४१ | १६ | ५१ | २६ | २ | ३८ | १४ | ५१ | २८ | ६ | ४४ | २२ | १ | ४१ | २१ |
| ९ | ० | १ | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ | १६ |
| | ३८ | १६ | ५४ | ३३ | ११ | ४९ | २७ | ६ | ४५ | २४ | ४ | ४३ | २३ | ३ | ४४ | २५ | ६ | ४८ | ३० | १३ | ५६ | ४१ | २५ | ११ |
| १० | ० | १ | २ | २ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | १० | १० | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ |
| | ४२ | २५ | ७ | ५० | ३२ | १५ | ५८ | ४१ | २४ | ८ | ५१ | ३६ | २० | ५ | ५० | ३६ | २३ | ८ | ५५ | ४३ | ३१ | २० | १० | १ |
| ११ | ० | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १८ | १९ |
| | ४७ | ३४ | २० | ७ | ५४ | ४० | २८ | १६ | ३ | ५१ | ४० | २९ | १७ | ७ | ५६ | ४७ | ३८ | २९ | २७ | १४ | ७ | १ | ५६ | ५२ |
| १२ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २० |
| | ५१ | ४२ | ३३ | २४ | १६ | ९ | ५९ | ५० | ४३ | ३६ | २८ | २१ | १५ | ९ | ३ | ५९ | ५४ | २० | ४७ | ४५ | ४३ | ४२ | ४२ | ४३ |
| १३ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ |
| | ५५ | ५१ | ४६ | ४२ | ३८ | ३४ | ३० | २० | २३ | २० | १७ | १५ | १३ | १२ | ११ | ११ | ११ | १२ | १४ | १७ | २० | २५ | ३० | ३६ |
| १४ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २३ | २४ | २५ |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | २ | ३ | ५ | ७ | ९ | १२ | १५ | १९ | २४ | २९ | ३४ | ४२ | २० | ३८ | ८ | ८ | ३६ |
| १५ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २१ | २२ | २३ | २४ | २६ | २७ |
| | ४ | ९ | १३ | १७ | २१ | २७ | ३१ | ३८ | ४४ | ५० | ५७ | ४ | १० | १९ | २७ | ३८ | ४८ | ५९ | १० | २४ | ३५ | ५२ | ७ | २१ |

## क्रान्त्यंश चर सारिणी

| अक्षांश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १६ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २६ | २७ | २९ |
| | ९ | १८ | २७ | ३६ | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २४ | ३६ | ५२ | ७ | २३ | ४० | ५७ | १७ | ३७ | ५८ | २० |
| १७ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ७ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १४ | १६ | १७ | १९ | २० | २१ | २२ | २४ | २५ | २६ | २८ | २९ | ३१ |
| | १३ | २७ | ४० | ५४ | ८ | २२ | ३६ | ५१ | ६ | २० | ३८ | ५४ | ११ | २९ | ४८ | ७ | २७ | ४८ | १० | ३३ | ५८ | २३ | ५० | १८ |
| १८ | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ९ | १० | ११ | १३ | १४ | १५ | १७ | १८ | १८ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ |
| | १८ | ३६ | ५१ | १२ | ३१ | ५० | ९ | २८ | ४८ | ८ | २९ | ५० | २२ | ३४ | ५९ | २३ | ४८ | १४ | ४३ | १० | ४१ | १० | ४३ | १६ |
| १९ | १ | २ | ४ | ५ | ६ | ८ | ९ | ११ | १२ | १३ | १५ | १६ | १८ | १९ | २१ | २२ | २४ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३१ | ३३ | ३५ |
| | २३ | ४५ | ८ | ३१ | ५४ | १८ | ३७ | ६ | ३० | ५५ | २१ | ४७ | १४ | ४२ | ११ | ४० | १० | ४२ | १४ | ४८ | २३ | ५९ | ३७ | १६ |
| २० | १ | २ | ४ | ५ | ७ | ८ | १० | ११ | १३ | १४ | १६ | १७ | १९ | २० | २२ | २३ | २५ | २७ | २८ | ३० | ३२ | ३३ | ३५ | ३७ |
| | २३ | ५५ | २२ | ५० | १६ | ४६ | १५ | ४४ | १३ | ४३ | १४ | ४५ | २७ | ५० | २३ | ५७ | ३३ | १० | ४१ | २७ | ८ | ४९ | ३३ | १८ |
| २१ | १ | ३ | ४ | ६ | ७ | ९ | १० | १२ | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २१ | २३ | २५ | २६ | २८ | ३० | ३२ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ |
| | ३२ | ४ | ३६ | ९ | ४२ | १५ | ४८ | २२ | ५७ | ३१ | ७ | ४३ | २० | ५९ | ३७ | १७ | ५८ | १४ | २३ | ८ | ५४ | ४१ | ३१ | २२ |
| २२ | १ | ३ | ४ | ६ | ८ | ९ | ११ | १३ | १३ | १६ | १७ | १९ | २१ | २३ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ |
| | ३७ | १४ | ५१ | २९ | ६ | ४४ | २२ | १ | ४० | २० | ५९ | ४२ | २५ | ८ | ५२ | ३७ | २३ | ११ | ५९ | ४९ | ४२ | ३५ | ३० | २७ |
| २३ | १ | ३ | ५ | ६ | ८ | १० | ११ | १३ | १५ | १७ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ |
| | ४२ | २४ | ६ | ४८ | ३२ | १४ | ५७ | ४१ | २५ | १० | ५६ | ४२ | ३० | १८ | ६ | ५६ | ५० | ४३ | ३० | ३३ | ३१ | ३० | ४१ | ३४ |
| २४ | १ | ३ | ५ | ७ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ३९ | ४१ | ४३ | ४५ |
| | ४७ | ३४ | २१ | ८ | ५६ | ४४ | ३२ | २१ | ११ | १ | ५२ | ४३ | ३६ | ३० | २४ | २० | १८ | १६ | १६ | १८ | २२ | ४७ | ३४ | ५४ |
| २५ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २६ | २८ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४३ | ४५ | ४७ |
| | ५२ | ४४ | ३६ | २८ | २१ | १४ | ८ | ५९ | ५७ | ५२ | ४८ | ४५ | ४३ | ४२ | ४३ | ४४ | ४७ | ५२ | ५७ | ५ | १५ | २६ | ४० | ५६ |
| २६ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १३ | १५ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २७ | ३० | ३२ | ३४ | ३६ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४७ | ५० |
| | ५७ | ५४ | ५२ | ४९ | ३७ | ४५ | ४४ | ४३ | ४३ | ४४ | ४६ | ४८ | ५२ | ५६ | २ | ९ | १८ | २८ | ४० | ५४ | १३ | २८ | ४८ | १० |
| २७ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १६ | १८ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३१ | ३३ | ३५ | ३७ | ४० | ४२ | ४५ | ४७ | ४९ | ५२ |
| | २ | ५ | ७ | १० | १३ | ७ | २१ | २६ | ३१ | ३७ | ४४ | ५२ | २ | १२ | २३ | ३६ | ५१ | ६ | २५ | ४५ | ७ | ३२ | ५८ | २७ |
| २८ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ | १७ | १९ | २१ | २३ | २५ | २८ | ३० | ३२ | ३५ | ३७ | ३९ | ४२ | ४४ | ४७ | ४९ | ५२ | ५४ |
| | ८ | १२ | २३ | १३ | ४० | ४९ | ५८ | ८ | १९ | ३१ | ४४ | ५७ | १२ | २८ | ४६ | ५ | २५ | ४८ | १२ | ३८ | ६ | ३८ | ११ | ४७ |
| २९ | २ | ४ | ६ | ८ | ११ | १३ | १५ | १७ | २० | २२ | २४ | २७ | २९ | ३१ | ३४ | ३६ | ३९ | ४१ | ४४ | ४६ | ४९ | ५१ | ५४ | ५७ |
| | १३ | २६ | ४० | ५३ | ७ | २२ | ३७ | ५२ | ९ | २६ | ४४ | ४ | २५ | ४८ | १० | ३५ | २ | २७ | १ | ३३ | ८ | ४६ | २७ | ९ |
| ३० | २ | ४ | ६ | ९ | ११ | १३ | १६ | १८ | २१ | २३ | २५ | २८ | ३० | ३३ | ३५ | ३८ | ४० | ४३ | ४५ | ४८ | ५१ | ५३ | ५६ | ५९ |
| | १९ | ३७ | ५६ | १५ | ३५ | ५५ | १६ | ३७ | ० | २२ | ४६ | १२ | ३९ | ६ | ३६ | ७ | ४० | १५ | ५२ | ३१ | १३ | ५७ | ४५ | ३५ |
| ३१ | २ | ४ | ७ | ९ | १२ | १४ | १६ | १९ | २१ | २४ | २६ | २९ | ३१ | ३४ | ३७ | ३९ | ४२ | ४५ | ४७ | ५० | ५३ | ५६ | ५९ | ६२ |
| | २४ | ५९ | १३ | ३७ | २ | २९ | ५५ | २३ | ५० | २१ | ५० | २१ | ५४ | २७ | ४ | ४१ | २१ | २ | ४६ | २८ | २० | १२ | ६ | ४ |
| ३२ | २ | ५ | ७ | १० | १२ | १५ | १७ | २० | २२ | २५ | २७ | ३० | ३३ | ३५ | ३८ | ४१ | ४४ | ४६ | ४९ | ५२ | ५५ | ५८ | ६१ | ६४ |
| | ३० | ० | ३० | १ | ३२ | ४ | ३६ | १ | ४३ | १७ | ५४ | ३२ | १० | ४७ | ३३ | १६ | ३ | ५२ | ४२ | ३५ | ३० | ३० | ३१ | ३७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## क्रान्त्यंश — चर सारिणी

| अक्षांश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३३ | २ | ५ | ७ | १० | १३ | १५ | १८ | २० | २३ | २६ | २८ | ३१ | ३४ | ३७ | ४० | ४२ | ४५ | ४८ | ५१ | ५४ | ५७ | ६० | ६३ | ६७ |
| | ३६ | १२ | ४६ | २५ | २ | ३९ | १६ | ५७ | ३७ | १८ | ५९ | ४४ | २९ | १६ | ५ | ५६ | ४८ | ४४ | ४० | ४१ | ४४ | ५१ | ५७ | १३ |
| ३४ | २ | ५ | ८ | १० | १३ | १६ | १९ | २१ | २४ | २७ | ३० | ३२ | ३५ | ३८ | ४१ | ४४ | ४७ | ५० | ५३ | ५६ | ६० | ६३ | ६६ | ६९ |
| | ४२ | २४ | ५ | ४९ | ३२ | १६ | १ | ४५ | ३२ | १९ | ६ | ५८ | ४९ | ४४ | ३९ | ३६ | ३६ | ३७ | ४३ | ५१ | १ | १५ | ३३ | ५४ |
| ३५ | २ | ५ | ८ | ११ | १४ | १६ | १९ | २२ | २५ | २८ | ३१ | ३४ | ३७ | ४० | ४३ | ४६ | ४९ | ५२ | ५५ | ५९ | ६२ | ६५ | ६९ | ७२ |
| | ४८ | ३६ | २५ | १४ | १ | ५३ | ४४ | ३५ | २४ | २२ | १७ | १४ | १३ | १३ | १५ | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ४ | २२ | ४४ | १० | ४० |
| ३६ | २ | ५ | ८ | ११ | १४ | १७ | २० | २३ | २६ | २९ | ३२ | ३५ | ३८ | ४१ | ४४ | ४८ | ५१ | ५४ | ५७ | ६१ | ६४ | ६८ | ७१ | ७५ |
| | ५४ | ४९ | ४४ | ३५ | ३५ | ३१ | २८ | २७ | २६ | २७ | २९ | ३२ | ३७ | ४५ | ५० | ६ | २० | ३७ | ५७ | २० | ४७ | १७ | ५१ | ३० |
| ३७ | ३ | ६ | ९ | १२ | १५ | १८ | २१ | २४ | २७ | ३० | ३३ | ३६ | ४० | ४३ | ४६ | ४९ | ५३ | ५६ | ६० | ६३ | ६७ | ७० | ७४ | ७८ |
| | १ | २ | ३ | ५ | ६ | १० | १४ | १९ | २५ | ३३ | ४१ | ५२ | ५ | १९ | ३६ | ५५ | १७ | ४१ | ७ | ४० | १५ | ५४ | ३९ | २४ |
| ३८ | ३ | ६ | ९ | १२ | १५ | १८ | २२ | २५ | २८ | ३१ | ३४ | ३८ | ४१ | ४४ | ४८ | ५१ | ५५ | ५८ | ६२ | ६६ | ६९ | ७३ | ७७ | ८१ |
| | ८ | १५ | २३ | ३२ | ४१ | ४७ | १ | १३ | २६ | ४१ | ५६ | १४ | ३४ | ५४ | २० | ४७ | १७ | ४९ | २५ | ५ | ४८ | ३६ | २८ | २५ |
| ३९ | ३ | ६ | ९ | १३ | १६ | १९ | २२ | २६ | २९ | ३२ | ३६ | ३९ | ४२ | ४६ | ५० | ५३ | ५७ | ६० | ६४ | ६८ | ७२ | ७६ | ८० | ८४ |
| | १४ | २९ | ४४ | ० | १५ | ३२ | ५० | ८ | २९ | ५० | १४ | ३९ | ५ | ३६ | ८ | ४२ | २० | ५८ | ४६ | ३४ | २६ | २३ | २५ | ३२ |
| ४० | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २७ | ३० | ३४ | ३७ | ४१ | ४४ | ४८ | ५१ | ५५ | ५९ | ६३ | ६७ | ७१ | ७५ | ७९ | ८३ | ८७ |
| | २१ | ४३ | ५ | २७ | ४७ | १४ | ३८ | ४ | ३३ | २ | ३३ | ६ | ४१ | १८ | ५८ | ४१ | २८ | १७ | १० | ६ | १० | १६ | २८ | ४५ |
| ४१ | ३ | ६ | १० | १३ | १७ | २० | २४ | २८ | ३१ | ३५ | ३८ | ४२ | ४६ | ४९ | ५३ | ५७ | ६१ | ६५ | ६९ | ७३ | ७७ | ८२ | ८६ | ९१ |
| | २९ | ५७ | २५ | ५६ | २७ | ५६ | ३० | ४ | ३९ | १६ | ५५ | ३५ | १९ | ५८ | ५३ | ४४ | ३९ | ३८ | ४० | ४७ | ७८ | १५ | ३७ | ५ |
| ४२ | ३ | ७ | १० | १४ | १८ | २१ | २५ | २९ | ३२ | ३६ | ४० | ४४ | ४७ | ५१ | ५५ | ५९ | ६३ | ६८ | ७२ | ७६ | ८० | ८५ | ८९ | ९४ |
| | ३६ | १२ | ४९ | २६ | ० | ४३ | २३ | ५ | ४८ | ३१ | १९ | ६ | ५९ | ५४ | ५१ | ५१ | ५५ | ४ | १५ | ३१ | ५३ | २० | ५३ | ३२ |
| ४३ | ३ | ७ | ११ | १४ | १८ | २२ | २६ | ३० | ३३ | ३७ | ४१ | ४५ | ४९ | ५३ | ५७ | ६२ | ६६ | ७० | ७४ | ७९ | ८३ | ८८ | ९३ | ९८ |
| | ४४ | २८ | १२ | ५७ | ४३ | २७ | १८ | ७ | ५८ | ५१ | ५६ | ४४ | ४४ | ४७ | ५३ | २ | १६ | ३३ | ५५ | २२ | ५४ | ३२ | १६ | ७ |
| ४४ | ३ | ७ | ११ | १५ | १९ | २३ | २७ | ३१ | ३५ | ३९ | ४३ | ४७ | ५१ | ५५ | ५९ | ६४ | ६८ | ७३ | ७७ | ८२ | ८७ | ९१ | ९६ | १०१ |
| | ५२ | ४४ | ३४ | २९ | २३ | १८ | १४ | १० | १२ | १० | १७ | २३ | ३२ | ४० | ५७ | १८ | ४१ | ९ | ४१ | १९ | २ | ५२ | ४८ | ५१ |
| ४५ | ४ | ८१ | १२ | १६ | २० | २४ | २८ | ३२ | ३६ | ४० | ४४ | ४९ | ५३ | ५७ | ६२ | ६६ | ७१ | ७५ | ८० | ८५ | ९० | ९५ | १०० | १०५ |
| | ० | ० | १ | २ | ५ | ४ | १० | १९ | २७ | ३७ | ४७ | ५ | २४ | ४५ | १० | ४० | १३ | ५१ | ३४ | २३ | १८ | १९ | २८ | ४५ |
| ४६ | ४ | ८ | १२ | १६ | २० | २५ | २९ | ३३ | ३७ | ४२ | ४६ | ५० | ५५ | ५९ | ६४ | ६९ | ७३ | ७९ | ८३ | ८८ | ९३ | ९८ | १०४ | १०९ |
| | ९ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ० | १३ | २८ | ४६ | ५ | २७ | ५२ | २१ | ५० | २६ | ६ | ५० | ३९ | ३३ | ३४ | ४१ | ५६ | १८ | ४९ |
| ४७ | ४ | ८ | १२ | १७ | २१ | २५ | ३० | ३४ | ३९ | ४३ | ४८ | ५२ | ५७ | ६२ | ६६ | ७१ | ७६ | ८१ | ८६ | ९१ | ९७ | १०२ | १०८ | ११४ |
| | १८ | ३५ | ५३ | १२ | ३२ | ५१ | १६ | ४० | ७ | ३६ | ८ | ४२ | १७ | २ | ४८ | ३८ | ३३ | ३४ | ४१ | ५० | १४ | ४२ | १९ | ४ |
| ४८ | ४ | ८ | १३ | १७ | २२ | २६ | ३१ | ३५ | ४० | ४५ | ४९ | ५४ | ५९ | ६४ | ६९ | ७४ | ७९ | ८४ | ८९ | ९५ | १०० | १०६ | ११२ | ११८ |
| | २७ | ५३ | २१ | ४९ | १८ | ३९ | २१ | ५५ | ३० | १० | ५२ | ३७ | २६ | १८ | १५ | १७ | २४ | ३६ | ५६ | २२ | १६ | ३९ | ३० | ३२ |
| ४९ | ४ | ९ | १३ | १८ | २३ | २७ | ३२ | ३७ | ४२ | ४६ | ५१ | ५६ | ६१ | ६६ | ७१ | ७७ | ८२ | ८७ | ९३ | ९८ | १०४ | ११० | ११६ | १२३ |
| | ३६ | १३ | ५० | २७ | ५ | ४७ | २९ | १३ | ० | ४९ | ४१ | ३७ | ३६ | ४० | ४९ | ३ | २० | ४८ | ९० | ५८ | ४९ | ४७ | ५५ | १४ |

## क्रान्त्यंश — चर सारिणी

| अक्षांश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५० | ४ | ९ | १४ | १९ | २३ | २८ | ३३ | ३८ | ४३ | ४८ | ५३ | ५८ | ६३ | ६९ | ७४ | ७९ | ८५ | ९१ | ९६ | १०२ | १०८ | ११५ | १२१ | १२८ |
| | ४६ | ३२ | १९ | ७ | ५६ | ४७ | ३९ | ३४ | ३१ | ३१ | ३५ | ४२ | ५३ | ९ | २९ | ५६ | २८ | ४ | ५४ | ५० | ५४ | ८ | ३३ | ११ |
| ५१ | ४ | ९ | १४ | १९ | २४ | २९ | ३४ | ४० | ४५ | ५० | ५५ | ६० | ६६ | ७१ | ७७ | ८२ | ८८ | ९४ | १०० | १०६ | ११३ | ११९ | १२६ | १३३ |
| | ५६ | ५३ | ५१ | ४९ | ४९ | ५० | ५३ | ० | ७ | १८ | ३३ | ५२ | १६ | ४४ | १७ | ५७ | ४४ | ३७ | ३९ | ४७ | ११ | ४३ | २७ | २५ |
| ५२ | ५ | १० | १५ | २० | २५ | ३० | ३६ | ४१ | ४६ | ५२ | ५७ | ६३ | ६८ | ७४ | ८० | ८६ | ९२ | ९८ | १०४ | १११ | ११७ | १२४ | १३१ | १३८ |
| | ७ | १५ | २३ | ३२ | ४३ | ५४ | १० | २७ | ४७ | ७ | ३७ | ९ | ४५ | २६ | १४ | ८ | ६ | १९ | ३६ | ४ | ४३ | ३४ | ३८ | ५८ |
| ५३ | ५ | १० | १५ | २१ | २६ | ३२ | ३७ | ४२ | ४८ | ५४ | ५९ | ६५ | ७१ | ७७ | ८३ | ८९ | ९५ | १०२ | १०८ | ११४ | १२२ | १२९ | १३७ | १४४ |
| | १८ | ३७ | ५७ | १८ | ४० | ४ | ३१ | ५६ | ३२ | ८ | ४८ | ३२ | २२ | १७ | १९ | २८ | ४५ | १० | ४६ | ३२ | ३० | ४१ | ८ | ५२ |
| ५४ | ५ | ११ | १६ | २२ | २७ | ३३ | ३८ | ४४ | ५० | ५६ | ६२ | ६८ | ७४ | ८० | ८६ | ९३ | ९९ | १०६ | ११३ | १२० | १२७ | १३५ | १४३ | १५१ |
| | ३० | १ | ३३ | ४ | ४० | १६ | ५५ | ३७ | ५२ | ११ | ४ | २ | ७ | १७ | ३४ | ० | ३२ | १६ | ९ | १५ | ३४ | ९ | ० | १० |
| ५५ | ५ | ११ | १७ | २२ | २८ | ३४ | ४० | ४६ | ५२ | ५८ | ६४ | ७० | ७६ | ८३ | ९० | ९६ | १०३ | ११० | ११७ | १२५ | १३२ | १४० | १४९ | १५७ |
| | ४३ | २६ | १० | ५६ | ४३ | ३१ | २४ | १८ | १८ | २० | २८ | ४१ | ५९ | ३६ | ० | ४२ | ३३ | ३५ | ४९ | १७ | ५९ | ५८ | १६ | ५६ |
| ५६ | ५ | ११ | १७ | २३ | २९ | ३५ | ४१ | ४८ | ५४ | ६० | ६७ | ७३ | ८० | ८६ | ९३ | १०० | १०७ | ११५ | १२२ | १३० | १३८ | १४७ | १५६ | १६५ |
| | ५६ | ५२ | ५० | ४८ | ४९ | ५१ | ५७ | ७ | १९ | ३५ | ० | २८ | ४ | ४६ | ३८ | ३८ | ३९ | ११ | ४७ | ३८ | ४५ | ११ | ० | १३ |
| ५७ | ६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३७ | ४३ | ५० | ५६ | ६३ | ६९ | ७६ | ८३ | ९० | ९७ | १०४ | ११७ | १२० | १२८ | १३६ | १४४ | १५३ | १६३ | १७३ |
| | १० | २० | ३१ | ४४ | ५६ | १० | ३६ | १ | २८ | १ | ४० | २५ | १८ | १९ | २६ | ४९ | १० | ५ | ५ | २१ | ५६ | ५४ | १६ | ७ |
| ५८ | ६ | १२ | १९ | २५ | ३२ | ३८ | ४५ | ५१ | ५८ | ६५ | ७२ | ७९ | ८६ | ९४ | १०१ | १०९ | ११७ | १२५ | १३३ | १४२ | १५१ | १६१ | १७१ | १८१ |
| | २४ | ४९ | १५ | ४२ | १२ | ४४ | १७ | ५९ | ४४ | ३४ | ३० | २६ | ४४ | ४ | ३४ | १६ | १० | १९ | ४५ | ३२ | ३६ | ८ | ९ | ४६ |
| ५९ | ६ | १३ | २० | २६ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | ६१ | ६८ | ७५ | ८२ | ९० | ९८ | १०५ | ११३ | १२२ | १३० | १३९ | १४९ | १५८ | १६९ | १७९ | १९१ |
| | ४० | २० | १ | ४४ | २९ | १८ | १० | ६ | ६ | १६ | ३० | ५२ | २३ | ४ | ५६ | ५६ | २० | ५६ | ५९ | ८ | ५० | १ | ४७ | १५ |
| ६० | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ६३ | ७१ | ७८ | ८६ | ९४ | १०२ | ११० | ११९ | १२७ | १३७ | १४० | १५६ | १६६ | १७१ | १८९ | २०१ |
| | ५६ | ५२ | ५० | ५० | ४६ | ५७ | ७ | २१ | ४१ | ६ | ४२ | २५ | १७ | २० | ३७ | ५ | ५४ | ० | २७ | १९ | ४१ | ३९ | १८ | ५० |
| ६१ | ७ | १४ | २१ | २८ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ६६ | ७४ | ८२ | ९० | ९८ | १०६ | ११५ | १२४ | १३३ | १४३ | १५३ | १६४ | १७५ | १८७ | १९९ | २१३ |
| | १३ | २७ | ४२ | ५९ | १८ | ४३ | ११ | ४६ | १९ | १२ | ५ | १२ | ११ | ५५ | ३८ | ३६ | ५४ | ३३ | ३७ | ७ | १९ | १० | ५४ | ४५ |
| ६२ | ७ | १५ | २२ | ३० | ३७ | ४५ | ५३ | ६१ | ६९ | ७७ | ८५ | ९४ | १०२ | १११ | १२१ | १३० | १४० | १५० | १६१ | १७२ | १८४ | १९७ | २११ | २२७ |
| | ३२ | ४ | ३८ | १७ | ५० | ३६ | २४ | १६ | १५ | २१ | ४६ | ७ | ५६ | ५१ | ३ | ३२ | २४ | ४० | २६ | ४७ | ५२ | ४९ | ५३ | २७ |
| ६३ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ६४ | ७२ | ८० | ८९ | ९८ | १०७ | ११७ | १२६ | १३७ | १४७ | १५८ | १७० | १८२ | १९२ | २०९ | २२५ | २४३ |
| | ५१ | ४३ | ३७ | ३३ | ३२ | ३७ | ४७ | २ | २६ | ५९ | ४२ | १९ | ४६ | ११ | ५० | ० | २९ | २९ | ४ | २१ | ३२ | ५१ | ४० | ३७ |
| ६४ | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४१ | ४९ | ५८ | ६६ | ७५ | ८४ | ९३ | १०३ | ११२ | १२२ | १३३ | १४४ | १५५ | १६७ | १७९ | १९३ | २०७ | २२३ | २४१ | २६३ |
| | १२ | २५ | ४० | ५८ | २० | ४६ | ११ | ५९ | ४८ | ४६ | ५५ | २१ | ५७ | ५८ | १८ | २ | १६ | ६ | ३८ | ४ | ३८ | ४३ | ५८ | ३७ |
| ६५ | ८ | १७ | २५ | ३४ | ४३ | ५२ | ६१ | ७० | ७९ | ८८ | ९८ | १०८ | ११८ | १२९ | १४० | १५१ | १६३ | १७६ | १९० | २०५ | २२१ | २४० | २६२ | २८९ |
| | ३५ | ११ | ४९ | ३० | १५ | ४ | ४ | १० | २५ | ५२ | ३३ | २४ | ४२ | १७ | १४ | ४७ | ५२ | ४० | २३ | १४ | ३७ | ११ | ११ | १९ |
| ६६ | ८ | १८ | २७ | ३६ | ४५ | ५४ | ६४ | ७३ | ८३ | ९३ | १०३ | ११४ | १२४ | १३६ | १४७ | १६० | १७३ | १८७ | २०२ | २१९ | २३८ | २६० | २८९ | ३५४ |
| | ५९ | ० | २ | ९ | २० | ३७ | १ | ३६ | २२ | १९ | ३३ | ४ | ५६ | १३ | ५७ | ३२ | २८ | २८ | ३६ | १९ | १५ | ३४ | ४४ | ४० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



## रवि क्रान्ति सारिणी

| तारीख | जनवरी दक्षिण अं. क. | फरवरी दक्षिण अं. क. | मार्च दक्षिण अं. क. | अप्रैल उत्तर अं. क. | मई उत्तर अं. क. | जून उत्तर अं. क. | जुलाई उत्तर अं. क. | अगस्त उत्तर अं. क. | सितम्बर उत्तर अं. क. | अक्टूबर दक्षिण अं. क. | नवम्बर दक्षिण अं. क. | दिसम्बर दक्षिण अं. क. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २३ ४ | १७ १८ | ७ ५२ | ४ १४ | १४ ५६ | २१ ५९ | २३ ९ | १८ ९ | ८ २८ | २ ५९ | १४ १६ | २१ ४३ |
| २ | २२ ५९ | १७ १ | ७ २९ | ४ ३८ | १५ १४ | २२ ७ | २३ ५ | १७ ५४ | ८ ७ | ३ २२ | १४ ३५ | २१ ५२ |
| ३ | २२ ५४ | १६ ४४ | ७ ६ | ५ १ | १५ ३२ | २२ १५ | २३ १ | १७ ३९ | ७ ४५ | ३ ४६ | १४ ५४ | २२ १ |
| ४ | २२ ४८ | १६ २७ | ६ ४३ | ५ २५ | १५ ४९ | २२ २२ | २२ ५६ | १७ २३ | ७ २३ | ४ ९ | १५ १३ | २२ १० |
| ५ | २२ ४२ | १६ ९ | ६ २० | ५ ४९ | १६ ७ | २२ २९ | २२ ५१ | १७ ७ | ७ १ | ४ ३२ | १५ ३२ | २२ १८ |
| ६ | २२ ३५ | १५ ५१ | ५ ५७ | ६ १२ | १६ २४ | २२ ३६ | २२ ४५ | १६ ५१ | ६ ३९ | ४ ५५ | १५ ५० | २२ २६ |
| ७ | २२ २८ | १५ ३२ | ५ ३५ | ६ ३५ | १६ ४१ | २२ ४२ | २२ ३९ | १६ ३५ | ६ १६ | ५ १८ | १६ ८ | २२ ३३ |
| ८ | २२ २१ | १५ १३ | ५ १२ | ६ ५८ | १६ ५७ | २२ ४८ | २२ ३३ | १६ १८ | ५ ५४ | ५ ४१ | १६ २६ | २२ ४० |
| ९ | २२ १३ | १४ ५४ | ४ ४९ | ७ २१ | १७ १३ | २२ ५३ | २२ २६ | १६ १ | ५ ३१ | ६ ४ | १६ ४४ | २२ ४६ |
| १० | २२ ५ | १४ ३५ | ४ २६ | ७ ४३ | १७ २९ | २२ ५८ | २२ १९ | १५ ४३ | ५ ९ | ६ २७ | १७ १ | २२ ५२ |
| ११ | २१ ५६ | १४ १५ | ४ ३ | ८ ६ | १७ ४५ | २३ ३ | २२ ११ | १५ २६ | ४ ४६ | ६ ५० | १७ १८ | २२ ५८ |
| १२ | २१ ४७ | १३ ५६ | ३ ४० | ८ २९ | १८ १ | २३ ७ | २२ ३ | १५ ८ | ४ २४ | ७ १२ | १७ ३४ | २३ ३ |
| १३ | २१ ३७ | १३ ३६ | ३ १७ | ८ ५१ | १८ १६ | २३ ११ | २१ ५५ | १४ ५० | ४ १ | ७ ३५ | १७ ५० | २३ ८ |
| १४ | २१ २७ | १३ १६ | २ ५४ | ९ १४ | १८ ३० | २३ १४ | २१ ४६ | १४ ३२ | ३ ३८ | ७ ५७ | १८ ६ | २३ १२ |
| १५ | २१ १६ | १२ ५६ | २ ३१ | ९ ३६ | १८ ४४ | २३ १७ | २१ ३७ | १४ १३ | ३ १५ | ८ २० | १८ २२ | २३ १५ |
| १६ | २१ ५ | १२ ३५ | २ ७ | ९ ५७ | १८ ५८ | २३ २० | २१ २८ | १३ ५४ | २ ५२ | ८ ४२ | १८ ३७ | २३ १८ |
| १७ | २० ५४ | १२ १४ | १ ४४ | १० १८ | १९ १२ | २३ २२ | २१ १८ | १३ ३५ | २ २९ | ९ ४ | १८ ५२ | २३ २१ |
| १८ | २० ४२ | ११ ५३ | १ २१ | १० ३९ | १९ २६ | २३ २४ | २१ ८ | १३ १६ | २ ६ | ९ २५ | १९ ७ | २३ २३ |
| १९ | २० ३० | ११ ३२ | ० ५७ | ११ ० | १९ ३९ | २३ २५ | २० ५८ | १२ ५७ | १ ४२ | ९ ४७ | १९ २१ | २३ २४ |
| २० | २० १८ | ११ ११ | ० ३४ | ११ २१ | १९ ५२ | २३ २६ | २० ४७ | १२ ३७ | १ १९ | १० ९ | १९ ३५ | २३ २५ |
| २१ | २० ५ | १० ४९ | ० १० | ११ ४१ | २० ४ | २३ २७ | २० ३६ | १२ १८ | ० ५६ | १० ३० | १९ ४८ | २३ २६ |
| २२ | १९ ५२ | १० २८ | उ० १४ | १२ २ | २० १७ | २३ २७ | २० २४ | ११ ५८ | ० ३२ | १० ५२ | २० १ | २३ २७ |
| २३ | १९ ३८ | १० ६ | ० ३८ | १२ २२ | २० २९ | २३ २७ | २० १२ | ११ ३८ | ० ९ | ११ १३ | २० १४ | २३ २७ |
| २४ | १९ २४ | ९ ४४ | १ २ | १२ ४२ | २० ४० | २३ २६ | २० ० | ११ १८ | द.० १५ | ११ ३५ | २० २७ | २३ २६ |
| २५ | १९ ९ | ९ २२ | १ २६ | १३ २ | २० ५१ | २३ २५ | १९ ४७ | १० ५७ | ० ३९ | ११ ५६ | २० ३९ | २३ २५ |
| २६ | १८ ५४ | ९ ० | १ ५० | १३ २१ | २१ २ | २३ २३ | १९ ३४ | १० ३६ | १ २ | १२ १७ | २० ५१ | २३ २३ |
| २७ | १८ ३९ | ८ ३८ | २ १४ | १३ ४१ | २१ १२ | २३ २१ | १९ २० | १० १५ | १ २६ | १२ ३८ | २१ २ | २३ २१ |
| २८ | १८ २३ | ८ १६ | २ ३८ | १४ ० | २१ २२ | २३ १९ | १९ ६ | ९ ५४ | १ ४९ | १२ ५८ | २१ १३ | २३ १९ |
| २९ | १८ ७ | ८ ४ | ३ २ | १४ १९ | २१ ३२ | २३ १६ | १८ ५२ | ९ ३३ | २ १२ | १३ १८ | २१ २४ | २३ १६ |
| ३० | १७ ५१ | ० ० | ३ २६ | १४ ३७ | २१ ४१ | २३ १३ | १८ ३८ | ९ १२ | २ ३६ | १३ ३८ | २१ ३४ | २३ १३ |
| ३१ | १७ ३५ | ० ० | ३ ५० | ० ० | २१ ५० | ० ० | १८ २४ | ८ ५ | ० ० | १३ ५७ | ० ० | २३ ९ |

## वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

| तारीख | जनवरी मि. सै. | फरवरी मि. सै. | मार्च मि. सै. | अप्रैल मि. सै. | मई मि. सै. | जून मि. सै. | जुलाई मि. सै. | अगस्त मि. सै. | सितम्बर मि. सै. | अक्टूबर मि. सै. | नवम्बर मि. सै. | दिसम्बर मि. सै. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | + | + | + | + | — | — | + | + | + | — | — | — |
| १ | ३ ३४ | १३ ३८ | १२ ३५ | ४ ७ | २ ५२ | २ २५ | ३ ३३ | ६ १५ | + ९ | १० ७ | १६ २१ | ११ ३ |
| २ | ३ ५२ | १३ ४६ | १२ २३ | ३ ४९ | ३ ० | २ १६ | ३ ४५ | ६ ११ | — १० | १० २७ | १६ २३ | १० ४३ |
| ३ | ४ २० | १३ ५४ | १२ ११ | ३ ३२ | ३ ७ | २ ७ | ३ ५६ | ६ ७ | ० २९ | १० ४६ | १६ २४ | १० १८ |
| ४ | ४ ४८ | १४ ० | ११ ५९ | ३ १४ | ३ १३ | १ ५७ | ४ ८ | ६ २ | ० ४८ | ११ ५ | १६ २४ | ९ ५३ |
| ५ | ५ १६ | १४ ६ | ११ ४६ | २ ५६ | ३ १९ | १ ४७ | ४ १८ | ५ ५७ | १ ८ | ११ २३ | १६ २३ | ९ २८ |
| ६ | ५ ४२ | १४ १० | ११ ३२ | २ ३९ | ३ २४ | १ ३६ | ४ २८ | ५ ५१ | १ २८ | ११ ४३ | १६ २१ | ९ ३ |
| ७ | ६ ९ | १४ १४ | ११ १८ | २ २२ | ३ २९ | १ २५ | ४ ३८ | ५ ४४ | १ ४८ | ११ ५९ | १६ १७ | ८ ३७ |
| ८ | ६ ३५ | १४ १७ | ११ ४ | २ ४ | ३ ३३ | १ १४ | ४ ४८ | ५ ३७ | २ ९ | १२ १६ | १६ १४ | ८ ११ |
| ९ | ७ ० | १४ २० | १० ४९ | १ ४८ | ३ ३६ | १ ३ | ४ ५८ | ५ २९ | २ २९ | १२ ३३ | १६ ९ | ७ ४५ |
| १० | ७ २५ | १४ २१ | १० ३४ | १ ३१ | ३ ३९ | ० ५२ | ५ ७ | ५ २१ | २ ५० | १२ ४९ | १६ ४ | ७ १८ |
| ११ | ७ ४९ | १४ २२ | १० १८ | १ १५ | ३ ४२ | ० ४० | ५ १५ | ५ १२ | ३ ११ | १३ ५ | १५ ५८ | ६ ५१ |
| १२ | ८ १३ | १४ २२ | १० २ | ० ५९ | ३ ४४ | ० २८ | ५ २३ | ५ ३ | ३ ३२ | १३ २१ | १५ ५२ | ६ २३ |
| १३ | ८ ३६ | १४ २१ | ९ ४६ | ० ४३ | ३ ४५ | ० ११ | ५ ३० | ४ ५३ | ३ ५३ | १३ ३६ | १५ ४३ | ५ ५५ |
| १४ | ८ ५८ | १४ २९ | ९ २९ | ० २७ | ३ ४६ | -० ३ | ५ ३७ | ४ ४२ | ४ १४ | १३ ५० | १५ ३४ | ५ २७ |
| १५ | ९ २० | १४ १७ | ९ १२ | + १२ | ३ ४६ | +० ९ | ५ ४४ | ४ ३१ | ४ ३६ | १४ ४ | १५ २५ | ४ ५८ |
| १६ | ९ ४१ | १४ १४ | ८ ५५ | — ३ | ३ ४६ | ० २२ | ५ ५० | ४ २० | ४ ५७ | १४ १७ | १५ १५ | ४ २९ |
| १७ | १० १ | १४ १० | ८ ३८ | ० १७ | ३ ४५ | ० ३४ | ५ ५६ | ४ ८ | ५ १८ | १४ ३० | १५ ४ | ४ ० |
| १८ | १० २१ | १४ ६ | ८ २१ | ० ३१ | ३ ४३ | ० ४८ | ६ १ | ३ ५५ | ५ ४० | १४ ४२ | १४ ५२ | ३ ३१ |
| १९ | १० ४० | १४ १ | ८ ३ | ० ४५ | ३ ४१ | १ १ | ६ ६ | ३ ४२ | ६ १ | १४ ५३ | १४ ३ | ३ २ |
| २० | १० ५८ | १३ ५५ | ७ ४५ | ० ५७ | ३ ३८ | १ १४ | ६ १० | ३ २८ | ६ २२ | १५ ४ | १४ २४ | २ ३२ |
| २१ | ११ १५ | १३ ४८ | ७ २८ | १ ११ | ३ ३५ | १ २७ | ६ १३ | ३ २४ | ६ ४३ | १५ १४ | १४ १० | २ २ |
| २२ | ११ ३२ | १३ ४१ | ७ १० | १ २३ | ३ ३१ | १ ४० | ६ १६ | २ ५९ | ७ ४ | १५ २४ | १३ ५५ | १ ३२ |
| २३ | ११ ४९ | १३ ३४ | ६ ५१ | १ ३५ | ३ २७ | १ ५३ | ६ १९ | २ ४४ | ७ २५ | १५ ३३ | १३ ३९ | १ २ |
| २४ | १२ ४ | १३ २४ | ६ ३३ | १ ४६ | ३ २२ | २ ६ | ६ २१ | २ ३० | ७ ४६ | १५ ४१ | १३ २२ | ० ३२ |
| २५ | १२ १९ | १३ १७ | ६ १५ | १ ५७ | ३ १७ | २ १९ | ६ २३ | २ १३ | ८ ७ | १५ ४९ | १३ ४ | —० २ |
| २६ | १२ ३२ | १३ ७ | ५ ४७ | २ ८ | ३ ११ | २ ३२ | ६ २३ | १ ५६ | ८ २७ | १५ ५६ | १२ ४६ | + २८ |
| २७ | १२ ४५ | १२ ५७ | ५ ३८ | २ १८ | ३ ५ | २ ४४ | ६ २३ | १ ३९ | ८ ४८ | १६ २ | १२ २७ | ० ५८ |
| २८ | १२ ५८ | १२ ४६ | ५ २० | २ २७ | २ ५८ | २ ५७ | ६ २३ | १ २२ | ९ ८ | १६ ७ | १२ ७ | १ २८ |
| २९ | १३ ९ | | ५ २ | २ ३६ | २ ५० | ३ ९ | ६ २२ | १ ४ | ९ २८ | १६ १२ | ११ ४६ | १ ५८ |
| ३० | १३ २० | | ४ ४४ | २ ४४ | २ ४२ | ३ २१ | ६ २० | ० ४६ | ९ ४७ | १६ १६ | ११ २५ | २ २७ |
| ३१ | १३ २९ | | ४ २५ | | २ ३४ | | ६ १८ | ० २८ | | १६ १९ | | २ ५६ |
| | + | + | + | — | — | + | + | + | — | — | — | + |

## वेलान्तर कोष्ठक ( समय समीकरण )

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय बेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में बेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# पंचाग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

**उदाहरण—** दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।१ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

# चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तायांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

उत्तराक्षांशः चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — क्रांति दक्षिण हो तो धन

यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन — उत्तर हो तो ऋण

| क्रान्त्यंश | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| २ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | २ | २ |
| ३ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | २ |
| ४ | ६ | ६ | ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | ३ | २ | २ | २ | १ | १ | १ | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | २ | २ | ३ |
| ५ | ८ | ८ | ७ | ७ | ६ | ६ | ६ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | २ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | ० | १ | २ | २ | २ | ३ | ४ |
| ६ | १० | ९ | ८ | ८ | ८ | ७ | ७ | ६ | ६ | ६ | ५ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ५ |
| ७ | ११ | १० | १० | ९ | ९ | ८ | ८ | ७ | ७ | ७ | ६ | ५ | ५ | ४ | ४ | ३ | २ | २ | १ | १ | ० | ० | १ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ६ |
| ८ | १२ | १२ | १२ | ११ | १० | १० | ९ | ८ | ८ | ७ | ७ | ६ | ६ | ५ | ४ | ४ | ३ | २ | २ | १ | ० | ० | १ | २ | ३ | ३ | ५ | ५ | ६ |
| ९ | १४ | १४ | १३ | १२ | १२ | ११ | ११ | १० | ९ | ८ | ८ | ७ | ६ | ६ | ५ | ४ | ४ | ३ | २ | १ | ० | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ |
| १० | १६ | १६ | १५ | १४ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | २ | ० | १ | २ | २ | ४ | ४ | ६ | ६ | ८ |
| ११ | १८ | १७ | १६ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ४ | ३ | २ | २ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ |
| १२ | १९ | १८ | १८ | १७ | १६ | १५ | १४ | १३ | १२ | ११ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ | ५ | ३ | ३ | २ | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ७ | ८ | ९ |
| १३ | २१ | २० | २० | १८ | १७ | १६ | १६ | १५ | १३ | १२ | १२ | ११ | १० | ८ | ८ | ६ | ६ | ४ | ३ | २ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० |
| १४ | २२ | २२ | २१ | २० | १८ | १८ | १७ | १६ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ६ | ६ | ४ | ३ | २ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ८ | ९ | ११ |
| १५ | २४ | २४ | २२ | २१ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १४ | १३ | १२ | ११ | १० | ८ | ७ | ६ | ४ | ३ | २ | १ | १ | २ | ४ | ५ | ७ | ८ | १० | १२ |
| १६ | २६ | २५ | २४ | २३ | २२ | २० | १९ | १८ | १७ | १६ | १४ | १३ | १२ | १० | ९ | ८ | ६ | ५ | ४ | २ | १ | १ | २ | ४ | ६ | ७ | ९ | ११ | १३ |
| १७ | २८ | २७ | २६ | २४ | २३ | २२ | २० | १९ | १८ | १७ | १५ | १४ | १२ | ११ | १० | ८ | ७ | ५ | ४ | २ | १ | १ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १२ | १४ |
| १८ | ३० | २९ | २७ | २६ | २४ | २३ | २२ | २० | १९ | १८ | १६ | १५ | १३ | १२ | १० | ८ | ७ | ५ | ४ | २ | १ | १ | २ | ४ | ६ | ८ | १० | १३ | १४ |
| १९ | ३२ | ३० | २९ | २८ | २६ | २५ | २३ | २२ | २० | १९ | १७ | १६ | १४ | १२ | ११ | १० | ८ | ६ | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १४ | १५ |
| २० | ३४ | ३२ | ३० | २९ | २८ | २६ | २४ | २३ | २१ | २० | १८ | १६ | १५ | १३ | १२ | १० | ८ | ६ | ४ | ३ | १ | १ | ३ | ५ | ७ | ९ | ११ | १५ | १६ |
| २१ | ३५ | ३४ | ३२ | ३१ | २९ | २७ | २६ | २४ | २२ | २१ | १९ | १७ | १६ | १४ | १२ | १० | ८ | ६ | ५ | ३ | १ | १ | ३ | ५ | ८ | १० | १२ | १५ | १७ |
| २२ | ३७ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २९ | २७ | २५ | २३ | २२ | २० | १८ | १६ | १४ | १२ | ११ | ९ | ६ | ५ | ३ | १ | १ | ३ | ६ | ८ | ११ | १३ | १६ | १८ |
| २३ | ३९ | ३८ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २८ | २७ | २५ | २३ | २१ | १९ | १७ | १५ | १३ | १२ | ९ | ७ | ५ | ३ | १ | १ | ४ | ६ | ९ | ११ | १४ | १६ | १९ |
| २४ | ४२ | ४० | ३८ | ३६ | ३४ | ३२ | ३० | २९ | २७ | २५ | २३ | २१ | १९ | १७ | १४ | १२ | १० | ८ | ६ | ४ | १ | १ | ४ | ६ | ९ | ११ | १४ | १७ | २० |
| | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

## देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|
| अयोध्या | यू.पी. | २६।४८ | ८२।१४ | —१।४ | +२०।०० |
| अक्कलकोट | बम्बई | १७।३३ | ७६।१२ | —२५।१२ | —३।५२ |
| अम्बाला | हरियाणा | ३०।२२ | ७६।४६ | —२२।५६ | —१।५२ |
| आकोला | महाराष्ट्र | २०।४२ | ७७।२ | —२१।५२ | —०।४८ |
| अजमेर | राजस्थान | २६।२७ | ७४।४० | —३१।२० | —१०।१६ |
| अमृतसर | पंजाब | ३१।३८ | ७४।५३ | —३०।२८ | —९।२४ |
| अहमदाबाद | गुजरात | २३।२ | ७२।३७ | —३९।३२ | —१८।२८ |
| अलीगढ़ | यू.पी. | २७।५४ | ७८।५ | —१७।४० | +३।२४ |
| अहमदनगर | महाराष्ट्र | १९।५ | ७४।४४ | —३१।४ | —१०।० |
| अलीगढ़ टोंक | राजस्थान | २५।५८ | ७६।६ | —२५।३६ | —४।३२ |
| अलीबाग | बम्बई | १८।३८ | ७२।५० | —३८।४० | —१७।३६ |
| अलवर | राजस्थान | २७।३४ | ७६।३८ | —२३।२८ | —२।२४ |
| अखनूर | कश्मीर | ३२।५४ | ७४।३५ | —३१।४० | —१०।३६ |
| अनूपशहर | यू.पी. | २८।२१ | ७८।२३ | —१६।२७ | +४।३६ |
| अल्मोड़ा | यू.पी. | २९।३७ | ७९।४० | —११।२० | +९।४४ |
| अमेठी | यू.पी. | २६।८ | ८१।४८ | —२।४८ | +१८।१६ |
| असिनसोल | बंगाल | २३।४२ | ८७।२० | —२०।४० | +४०।२४ |
| अनूपगढ़ | राजस्थान | २९।१० | ७३।१३ | —३७।८ | —१६।४ |
| अकबरपुर | यू.पी. | २६।२६ | ८२।३३ | +०।१२ | +२१।१६ |
| अमरेली | गुजरात | २१।३६ | ७१।१४ | —४५।४ | —२४।० |
| अगरतला | त्रिपुरा | २३।५० | ९१।२३ | +३५।३२ | +५६।३६ |
| अनन्तपुरम | आं.प्रदेश | १४।४१ | ७७।३७ | —१९।३२ | +१।३२ |
| आईजोल | मिजोरम | २३।४५ | ९२।४५ | +४१।० | +६२।४ |
| आहवा | गुजरात | २०।४७ | ७३।४२ | —३५।१२ | —१४।८ |
| आगरा | यू.पी. | २७।११ | ७८।२ | —१७।५२ | +३।१२ |
| आबू | राजस्थान | २४।३६ | ७२।४४ | —३९।४ | —१८।० |
| आजमगढ़ | यू.पी. | २६।६ | ८३।१२ | +२।४८ | +२३।५२ |
| आरा | बिहार | २५।३६ | ८४।४२ | +८।४८ | +२९।५२ |
| औरंगाबाद | बिहार | २४।४४ | ८४।२३ | +७।३२ | +२८।३६ |
| औरंगाबाद | महाराष्ट्र | १९।५२ | ७५।१९ | —२८।४४ | —७।४० |
| ओंगोलु | आंध्र प्र. | १५।३१ | ८०।६ | —९।३६ | +११।२८ |
| इन्दौर | म.प्रदेश | २२।४३ | ७५।५२ | —२६।२८ | —५।२८ |

| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|
| इटावा | यू.पी. | २६।४७ | ७९।२ | —१३।५२ | +७।१२ |
| इम्फाल | मणिपुर | २४।५४ | ९३।५४ | +४५।३६ | +६६।४० |
| इडुंकी | केरल | ९।५१ | ७७।१४ | —२१।४ | ०।० |
| इटानगर | आं. प्रदेश | २६।५४ | ९३।३७ | +४४।२४ | +६५।३२ |
| ईगतपुरी | महाराष्ट्र | १९।४१ | ७३।३५ | —३५।४० | —१४।३६ |
| इटारसी | म.प्रदेश | २२।३७ | ७७।४६ | —१८।५६ | +२।८ |
| इलाहाबाद | यू.पी. | २५।२८ | ८१।५२ | —२।३४ | +१८।३२ |
| उन्नाव | उ. प्र. | २६।३३ | ८०।३० | —८।० | +१३।४ |
| उतरोला | उ. प्र. | २७।१९ | ८२।२८ | —०।८ | +२०।५६ |
| ऊधमपुर | जम्मू | ३२।५५ | ७२।७ | —२९।३२ | —८।२८ |
| उज्जैन | म. प्रदेश | २३।११ | ७५।४४ | —२७।४ | —६।० |
| उदय मण्डलम | तमिलनाडू | ११।१७ | ७६।४४ | —२३।४ | —२।० |
| उदयपुर | राजस्थान | २४।३५ | ७३।४२ | —३५।१२ | —१४।८ |
| उस्मानाबाद | महाराष्ट्र | १८।८ | ७६।५ | —२५।४० | —४।३६ |
| एचिलपुर | महाराष्ट्र | २१।१८ | ७७।३३ | —१९।४८ | +१।१६ |
| एटा कासगंज | उ. प्र. | २७।३५ | ७८।४१ | —१५।१६ | +५।४८ |
| कच्छ भुज | गुजरात | २३।१५ | ६९।४० | —५१।२० | —३०।१६ |
| कन्नौज | उ. प्र. | २७।२ | ७९।५८ | —१०।८ | +१०।५६ |
| कविरत्तिद्वीप | लक्षद्वीप | १०।१७ | ७२।२१ | —४०।३६ | —१९।३२ |
| कलकत्ता | प. बंगाल | २२।३५ | ८८।२४ | +२३।३६ | +४४।४० |
| कपूरथला | पंजाब | ३१।२२ | ७५।१२ | —२८।३२ | —७।२८ |
| करनाल | हरियाणा | २९।४२ | ७७।२ | —२१।५२ | —०।४८ |
| कन्याकुमारी | तमिलनाडू | ८।४ | ७७।३६ | —१९।३६ | +१।२८ |
| कल्पाद | हिमाचल | ३१।४१ | ७९।१० | —१३।२० | +७।४४ |
| करीमनगर | आं. प्र. | १८।२८ | ७९।६ | —१३।३६ | +७।२८ |
| कानपुर | उ. प्र. | २६।२७ | ८०।२१ | —८।३६ | +१२।२८ |
| काठमाण्डो | नेपाल | २७।४२ | ८५।१७ | +११।८ | +३२।१२ |
| कांगड़ा मन्दिर | हिमाचल | ३२।९ | ७६।१८ | —२४।४८ | —३।४४ |
| काशी | उ. प्र. | २५।२० | ८३।० | —२।० | +२३।४ |
| कांचिपुरम | तमिलनाडू | १२।५१ | ७९।५३ | —१०।२८ | +१०।३६ |
| कार्गिल | जम्मू-का. | ३०।३० | ७६।१३ | —२५।८ | —४।४ |
| किसनगढ़ | राजस्थान | २७।५२ | ७०।३४ | —४७।४४ | —२६।४० |

| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|
| किस्तबाड़ | जम्मू | ३३।१२ | ७५।४८ | —२६।४८ | —५।४४ |
| किशनगढ़ जं. | राजस्थान | २७।१० | ७५।२२ | —२८।३२ | —७।२८ |
| कोच्चि | केरल | १०।० | ७६।१५ | —२५।० | —३।५६ |
| कोलगंगा | बिहार | २५।१६ | ८७।१६ | +१९।४ | +४०।८ |
| कोहिमा | नागालैंड | २५।४१ | ९४।० | +४६।० | +६७।४ |
| केलांग | हिमाचल | ३२।४७ | ७७।४ | —२१।३६ | —०।४० |
| कोटा | राजस्थान | २५।११ | ७५।५० | —२६।४० | —५।३६ |
| कोल्हापुर | महाराष्ट्र | १६।४१ | ७४।१३ | —३३।८ | —१२।५ |
| कुशलगढ़ | राजस्थान | २३।८ | ७४।२७ | —३२।१२ | —११।८ |
| कूचबिहार | राजस्थान | २६।२० | ८९।२५ | +२७।४० | +४८।४४ |
| कृष्णा | कर्नाटक | १६।२५ | ७७।१९ | —२०।४४ | +०।२० |
| खम्भम | आं. प्र. | १७।१५ | ८०।११ | —९।१६ | +११।४८ |
| खण्डवा | म.प्र. | २१।५० | ७६।२० | —२४।४० | —३।३६ |
| खेडब्रह्मा | गुजरात | २४।३ | ७३।४ | —३७।३६ | —१६।४० |
| गयाजी | बिहार | २४।४८ | ८५।१ | +१०।४ | +३१।८ |
| ग्वालियर | म.प्र. | २६।१४ | ७८।१० | —१७।२० | +३।४४ |
| गंगापुर | राजस्थान | २६।२९ | ७६।४४ | —२३।४ | —२।० |
| गाजीपुर | उ. प्र. | २५।२६ | ८३।३५ | +४।२० | +२५।२४ |
| गान्तोक | सिक्किम | २७।२० | ८८।२५ | +२४।२० | +४५।२४ |
| गंगानगर | राजस्थान | २९।५२ | ७३।५१ | —३४।३६ | —१३।३२ |
| गोंडा | उ. प्र. | २७।१० | ८१।५८ | —२।१२ | +१८।५२ |
| गोरखपुर | उ. प्र. | २६।४६ | ८३।२६ | —३।३२ | +२४।३६ |
| गोआ | गोआ | २५।१५ | ७३।४७ | —३४।५२ | —१३।४८ |
| गुवाहाटी | असम | २६।११ | ९१।४५ | +३७।० | +५८।४ |
| गुरदासपुर | पंजाब | ३२।३ | ७५।२७ | —२८।१२ | —७।८ |
| गुना | म. प्र. | २४।४० | ७७।३० | —२०।० | —१।४ |
| घाटमशर | उ. प्र. | २६।८ | ८०।११ | —९।१६ | +११।४८ |
| चंडीगढ़ | चण्डीगढ़ | ३०।४० | ७६।५२ | —२२।३२ | —१।२८ |
| चन्दौसी | उ. प्र. | २८।२७ | ७८।४७ | —१४।५२ | +६।१२ |
| चन्द्रपुर | महाराष्ट्र | १९।५६ | ७९।१७ | —१२।५२ | +८।१२ |
| चिलास | जम्मू | ३५।३६ | ७४।७ | —३३।३२ | —१२।२८ |
| चीलो | राजस्थान | २७।२३ | ७३।१६ | —३६।५६ | —१५।५२ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. | नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. | नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चिक्कमगलूर | कर्नाटक | १३।१९ | ७५।४७ | —२६।५२ | —५।४८ | डोंग | राजस्थान | २७।२८ | ७७।२० | —२०।४० | +०।२४ | नागकोविंल | तमिलनाडू | ८।७ | ७७।४७ | —१८।५२ | +२।१२ |
| चित्रकूट | उ. प्र. | २५।१२ | ८०।५४ | —६।२४ | +१४।४० | डेराबाबा | पंजाब | ३२।२ | ७५।४ | —२९।४४ | —८।४० | नीमच | राजस्थान | २४।२८ | ७४।५१ | —३०।३६ | —९।३२ |
| चित्तौड़गढ | राजस्थान | २४।५४ | ७४।४२ | —३१।१२ | —१०।८ | ढाका | बंग्लादेश | २३।४३ | ९०।२५ | +३१।४० | +५२।४४ | नैनीताल | उ. प्र. | २९।२५ | ७९।२७ | —१२।१२ | +८।५२ |
| छपरा | बिहार | २५।४७ | ८४।४७ | +९।८ | +३०।१२ | तलागंग | तलांगंगा | ३२।५६ | ७२।२८ | —४०।८ | —१९।४ | नेपालगंज | नेपालगंज | २८।३ | ८१।३७ | —३।३२ | +१७।३२ |
| छत्तरपुर | म.प्र. | २४।५५ | ७९।३६ | —११।३६ | +९।२८ | तराई | बंगाल | २६।४० | ८८।३० | +२४।० | +४५।४ | नीलगिरी | उड़ीसा | २१।२७ | ८६।४७ | +१७।८ | +३८।१२ |
| छिबरा मऊ | उ. प्र. | २७।१० | ७९।२९ | —१२।४ | +९।० | तेजु | अ. प्रदेश | २७।५४ | ९६।१४ | +५४।५६ | +७६।० | पटना | बिहार | २५।३७ | ८५।१३ | +१०।५२ | +३१।५६ |
| छवराटोंक | राजस्थान | २४।४० | ७६।५१ | —२२।३६ | —१।३२ | तंजाबूर | तमिल. | १०।५१ | ७९।२१ | —१२।३६ | +८।२८ | पठानकोट | पंजाब | ३२।१८ | ७५।४२ | —२७।१२ | —६।८ |
| जगन्नाथपुरी | उड़ीसा | १९।४६ | ८५।५० | +१३।२० | +३४।२४ | तिरूवन्तपुरम | केरल | ८।४४ | ७७।२० | —२०।४० | +०।२४ | पटियाला | पंजाब | ३०।२२ | ७६।२५ | —२४।२० | —३।१६ |
| जबलपुर | म. प्र. | २३।१० | ७९।५८ | —१०।८ | +१०।५६ | तुर -मेघालय | शिलङ्ग | २५।३१ | ९०।१५ | +३१।० | +५२।४ | परलकोट | म. प्र. | १९।४५ | ८०।४६ | —६।५६ | +१४।८ |
| जयपुर | राजस्थान | २६।५५ | ७५।५० | —२६।४० | —५।४० | थानेश्वर | पंजाब | २९।५८ | ७६।५६ | —२२।१६ | —१।१२ | पणजी | गोआ | १५।४१ | ७३।१० | —३७।२० | —१६।१६ |
| जलपाईगुड़ी | बंगाल | २६।३२ | ८८।४४ | +२४।५६ | +४६।० | दतिया | म. प्र. | २५।३९ | ७८।२७ | —१६।१२ | +४।५२ | पालनपुर | गुजरात | २४।११ | ७२।२७ | —४०।१२ | —१९।८ |
| जम्मू | जम्मू का. | ३२।४४ | ७४।५४ | —३०।२४ | —९।२० | दरभंगा | बिहार | २६।१० | ८५।५५ | +१३।४० | +३४।४४ | पाण्डिचेरी | तमिलनाडू | ११।५६ | ७९।४८ | —१०।४८ | +१०।१६ |
| जसवन्तनगर | जसवंतत | २६।५१ | ७८।५५ | —१४।२० | +६।४४ | दार्जलिंग | उ. प्र. | २७।३ | ८८।१७ | +२३।८ | +४४।१२ | पानीपत | हरियाणा | २९।२७ | ७६।५९ | —२२।४ | —१।० |
| जनकपुर | म. प्र. | २३।४२ | ८१।५१ | —२।३६ | —१८।२८ | हिसपुर | असम | २६।२० | ९२।१० | +३८।४० | +५९।४४ | प्रयागराज | उ. प्र. | २५।२५ | ८१।५३ | —२।२८ | +१८।३६ |
| जामनगर | गुजरात | २२।२७ | ७०।५ | —४९।४० | —२८।३६ | दिण्डुक्कल | तमिलनाडू | १०।१३ | ७८।५ | —१७।४० | +३।२४ | पूना | महाराष्ट्र | १८।३१ | ७३।५२ | —३४।३२ | —१३।२८ |
| जालौर | राजस्थान | २५।३५ | ७२।४४ | —३९।४ | —१८।० | दिल्ली | राजधानी | २८।३८ | ७७।१४ | —२१।४ | —०।० | पोर्टब्लेयर | अन्दमान | ११।४४ | ९२।४१ | ४०।४४ | +६१।४८ |
| जूनागढ़ | गुजरात | २१।३२ | ७०।२७ | —४८।१२ | —२७।८ | द्वारका | गुजरात | २२।१६ | ६८।५७ | —५४।१२ | —३३।८ | पुष्करजी | राजस्थान | २६।२८ | ७४।३३ | —३१।४८ | —१०।४४ |
| जोधपुर | राजरात | २६।१९ | ७३।४ | —३७।४४ | —१६।४० | देहरादून | उ. प्र. | ३०।१९ | ७८।४ | —१७।४४ | +३।२० | पेशाबर | प. पाकि. | ३४।१ | ७१।३६ | —४३।३६ | —२२।३२ |
| जौनपुर | उ. प्र. | २५।४३ | ८२।४३ | +०।५२ | +२१।५६ | देशनोक | राजस्थान | २७।५४ | ७३।१६ | —३६।५६ | —१५।५२ | पोरबन्दर | गुजरात | २१।३८ | ६९।३६ | —५१।३६ | —३०।३२ |
| जींद | हरियाणा | २९।१९ | ७६।२३ | —२४।२८ | —३।२४ | देवगढ़ | उड़ीसा | २१।३२ | ८४।४५ | +९।० | +३०।४ | फतेहपुर | उ. प्र. | २७।६ | ७७।४० | —१९।२० | +१।४४ |
| जैसलमेर | राजस्थान | २६।५४ | ७०।५७ | —४६।१२ | —२५।८ | धर्मशाला | हिमाचल | ३२।१६ | ७६।२३ | —२४।२८ | —३।२४ | फरीदकोट | पंजाब | ३०।४० | ७४।४५ | —३१।० | —९।५६ |
| जालन्धर | पंजाब | ३१।१९ | ७५।३५ | —२७।४० | —६।३६ | धर्मपुरी | तमिलनाडू | १२।८ | ७८।११ | —१७।१६ | +३।४८ | फर्रुखाबाद | उ. प्र. | २७।३ | ७९।३७ | —११।३२ | +९।३२ |
| जाफराबाद | सौराष्ट्र | २०।५२ | ७१।२१ | —४४।३६ | —३२।३२ | धारवाड़ | कर्नाटक | १५।२८ | ७५।२ | —२९।५२ | —८।४८ | फतेहपुर | राजस्थान | २७।५२ | ७५।२ | —२९।५२ | —८।४८ |
| झांसी | उ. प्र. | २५।२६ | ७८।३४ | —१५।४४ | +५।२० | धार | म. प्र. | २२।३६ | ७५।१२ | —२९।१२ | —८।८ | फुलेरा | राजस्थान | २६।५२ | ७५।१६ | —२८।५६ | —७।५२ |
| झालावाड़ | राजस्थान | २४।३६ | ७६।९ | —२५।२४ | —४।२० | धौलपुर | राजस्थान | २६।४२ | ७७।५३ | —१८।२८ | +२।३६ | फीरोजपुर | पंजाब | ३०।५७ | ७४।३६ | —३१।३६ | —१०।३२ |
| झुंझुनू | राजस्थान | २८।७ | ७५।२५ | —२८।२० | —७।१६ | धौलागिर | नेपाल | २९।११ | ८३।० | —२१।० | —२३।४ | फैजाबाद | उ. प्र. | २६।४७ | ८२।८ | —१।२८ | +१९।३६ |
| टोंक | राजस्थान | २६।११ | ७५।५० | —२६।४० | —५।३६ | धांग्रंधा | सौराष्ट्र | २२.५९ | ७१।३० | —४४।० | —२२।५६ | फीरोजबाद | उ. प्र. | २७।९ | ७८।२४ | —१६।२४ | +४।४० |
| टेरू | जम्मू | ३६।१४ | ७२।४२ | —३९।१२ | —१८।८ | नवलगढ़ | राजस्थान | २७।५१ | ७५।१२ | —२९।१२ | —८।८ | फूलपुर | उ.प्र. | २५।३२ | ८२।७ | —१।३२ | +१९।३२ |
| टनकपुर | उ. प्र. | २९।९ | ८०।१० | —९।२० | +११।४४ | नसीराबाद | राजस्थान | २६।१८ | ७४।४६ | —३०।५६ | —९।५२ | फाजिलका | पंजाब | ३०।२५ | ७४।३ | —३३।४८ | —१२।४४ |
| टाटानगर | बिहार | २४।४६ | ८६।१३ | +१४।५२ | +३५।५६ | नड़ियाद | गुजरात | २२।४१ | ७२।५२ | —३८।३२ | —१७।२८ | फतेहगढ़ | उ. प्र. | २७।२३ | ७९।३५ | —११।४० | +९।२४ |
| टेहरी | गढ़वाल | ३०।२३ | ७८।३० | —१६।० | +५।४ | नाथद्वारा | राजस्थान | २४।५६ | ७३।४८ | —३४।४८ | —१३।४४ | बक्सर | बिहार | २५।३४ | ८३।५९ | +५।५६ | +२७।० |
| टूंडला जं. | उ. प्र. | २७।१३ | ७८।१३ | —१७।८ | +३।५६ | नाभा | पंजाब | ३०।२२ | ७६।१० | —२५।२० | —४।१६ | बद्रीनाथ | उ. प्र. | ३०।४४ | ७९।३० | —१२।० | +९।४ |
| डायमण्ड | पं. बंगाल | २२।११ | ८४।१२ | +६।४८ | +२७।५२ | नागपुर | महाराष्ट्र | २१।९ | ७९।६ | —१३।३६ | +७।२८ | वरंगल | आं. प्र. | १८।४ | ७९।५३ | —१०।२८ | +१०।३६ |
| डिब्रूगढ़ | असम | २७।२९ | ९४।५६ | +४९।४४ | +७०।४८ | नासिक | महाराष्ट्र | २१।० | ७३।४७ | —३४।५२ | —१३।४८ | बड़ौदा | महाराष्ट्र | २२।१८ | ७३।१२ | —३७।१२ | —१६।८ |
| डूंगरपुर | राजस्थान | २३।५० | ७३।४३ | —३५।८ | —१४।४ | नाचना | राजस्थान | २७।५२ | ७१।५४ | —४२।२४ | —२१।२० | बलिया | उ. प्र. | २४।४४ | ८४।०९ | +६।३६ | +२७।४० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|
| बम्बई | महाराष्ट्र | १८।५५ | ७२।५० | —३८।४० | —१७।३६ |
| बरेली | उ.प्र. | २८।२२ | ७९।२४ | —१२।२४ | +८।४० |
| बद्रीनाथ | कर्नाटक | १५।३४ | ७६।५२ | —२२।३२ | —१।२८ |
| बर्द्धमान | पं. बंगाल | २३।२५ | ८७।५४ | +२१।३६ | +४२।४० |
| बहराइच | उ. प्र. | २७।३४ | ८१।३७ | —३।३२ | +१७।३२ |
| बस्ती | उ.प्र. | २६।४८ | ८२।४६ | +१।४ | +२२।८ |
| ब्यावर | राजस्थान | २६।७ | ७३।५४ | —३४।२४ | —१३।२० |
| वाराणसी | उ. प्र. | २५।२० | ८३।० | +२।० | +२३।४ |
| बासवाड़ा | म. प्रदेश | २३।३३ | ७८।२६ | —१६।१६ | +४।४८ |
| बाराबंकी | उ. प्र. | २६।५६ | ८१।१० | —५।२० | +१५।४४ |
| बालू घाट | प. दिजाज | २५।१४ | ८८।४७ | +२५।८ | +४६।१२ |
| बाँदा | उ. प्र. | २५।२८ | ८०।२१ | —८।३६ | +१२।२८ |
| बांदीकुई | राजस्थान | २७।२६ | ७६।२४ | —२४।२४ | —३।२० |
| बूंदी | राजस्थान | २५।२७ | ७५।४० | —२७।२० | —६।१६ |
| ब्रह्मकुण्ड | अरु. प्रदेश | २७।५६ | ९६।१० | +५४।४० | +७५।४४ |
| बंगलौर | कर्नाटक | १२।५८ | ७७।३५ | —१९।४० | +१।२४ |
| बैतूल | म. प्र. | २१।५१ | ७७।५६ | —१८।१६ | +२।४८ |
| बेलगांव | कर्नाटक | १५।५५ | ७४।३१ | —३१।५६ | —१०।५२ |
| बुलन्दशहर | उ. प्र. | २८।२४ | ७७।५२ | —१८।३ | +२।३२ |
| बिलासपुर | हिमाचल | ३१।१९ | ७६।५० | —२२।४० | —२।३६ |
| बिलासपुर | म. प्र. | २२।५ | ८२।१० | —१।२० | +१९।४४ |
| बिजनौर | उ. प्र. | २९।२३ | ७८।११ | —१७।१६ | +३।४८ |
| बिहार शरीफ | बिहार | २५।११ | ८५।३२ | +१२।८ | +३३।१२ |
| बीकानेर | राजस्थान | २८।१ | ७३।१९ | —२६।४४ | —१५।४० |
| बीजापुर | कर्नाटक | १६।५० | ७५।४२ | —२७।१२ | —६।८ |
| बादर | कर्नाटक | १८।१० | ७७।४७ | —१८।५२ | +२।१२ |
| बीरमगढ़ | गुजरात | २३।० | ७२।१ | —४१।५२ | —२०।४८ |
| बोगरा | बंगलादेश | २४।५१ | ८९।२४ | +२७।२६ | +४८।४० |
| भरतपुर | राजस्थान | २७।१५ | ७७।३० | —२०।० | +१।४ |
| भंडारा | महाराष्ट्र | २१।१० | ७९।४० | —११।२० | +९।४४ |
| भरुच | गुजरात | २१।४१ | ७३।० | —३८।० | —१६।५६ |
| भटिन्डा | पंजाब | ३०।११ | ७४।५७ | —३०।१२ | —९।८ |
| भदोही | उ. प्र. | २५।२४ | ८२।३४ | +०।१६ | +२१।२० |
| भोपाल | म. प्र. | २३।१६ | ७७।२३ | —२०।२८ | +०।३६ |
| भीलवाड़ा | राजस्थान | २४।२१ | ७४।४० | —३१।२० | —१०।१६ |
| भिवानी | हरियाणा | २८।४८ | ७६।८ | —२५।२८ | —४।२४ |
| भावनगर | गुजरात | २१।४४ | ४२।१० | —४२।२० | —२०।१६ |

| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|
| भुवनेश्वर | उड़ीसा | २०।५४ | ८५।५२ | +१३।२८ | +३४।३२ |
| भूसावल | महाराष्ट्र | २१।१२ | ७५।४७ | —२६।५२ | —५।४८ |
| भूटान | भूटान | २७।३० | ९०।० | +३०।० | +५१।४ |
| भुजकच्छ | गुजरात | २३।१५ | ६९।४१ | —५१।१६ | —३०।१२ |
| मथुरा | उ. प्र. | २७।२८ | ७७।४१ | —१९।१६ | +१।४८ |
| मद्रास | तमिलनाडु | १३।५ | ८०।१७ | —८।५२ | +१२।१२ |
| मणीपुर | मणीपुर | २४।२० | ९३।५८ | —४५।५२ | —६६।५६ |
| मण्डी | हि. प्र. | ३१।४३ | ७६।५८ | —२२।८ | —१।४ |
| मल्लपुरम | केरल | ११।४ | ७६।४ | —२५।४४ | —४।४० |
| मालेगांवना | मालेगांव | २०।३१ | ७४।३० | —३२।० | —१०।५६ |
| मुरादाबाद | उ. प्र. | २८।५० | ७८।५० | —१४।४० | +६।२४ |
| मुंगेर | बिहार | २५।२३ | ८६।३० | +१६।० | +३७।४ |
| मुजफ्फरपुर | बिहार | २६।७ | ८५।२७ | +११।४८ | +३२।५२ |
| फुजफ्फराबाद | कश्मीर | ३४।३३ | ७३।२७ | —३६।१२ | —१५।८ |
| मेघालय | शिलांग | २५।५७ | ८२।० | +३८।० | +५९।४ |
| मैसूर | कर्नाटक | १२।२९ | ७६।२० | —२६।२० | —२।१६ |
| मेरठ | उ. प्र. | २९।१ | ७७।४५ | —१९।० | +२।४ |
| मिर्जापुर | उ. प्र. | २५।१० | ८२।३७ | +०।२८ | +२१।३२ |
| मेडतासिटी | राजस्थान | २६।३९ | ७४।३ | —३३।४८ | —१२।४४ |
| यानामा | आं. प्रदेश | १६।४६ | ८२।१३ | —१।८ | +१९।५६ |
| यासिन | केरल | ३६।२१ | ७३।१९ | —३६।४८ | —१२।४४ |
| यवतमाल | महाराष्ट्र | २०।२४ | ७८।८ | —१७।२८ | +३।३६ |
| यादगीर | कर्नाटक | १६।४७ | ७७।८ | —१७।२८ | +३।३६ |
| रतलाम | म. प्र. | २३।१९ | ७५।३ | —२९।४८ | —८।४४ |
| रत्नागिरी | महाराष्ट्र | १६।५९ | ७३।१९ | —३६।४४ | —१५।४० |
| राजकोट | गुजरात | २२।१८ | ७०।५० | —४६।४० | —२५।२६ |
| राजचूर | (कर्ना.) | १६।१२ | ७७।२१ | —२०।३६ | +०।२८ |
| राजमपेट | (आ. प्र.) | १४।१२ | ७९।३४ | —११।४४ | +९।२० |
| रामपुर | (यू.पी.) | २८।४७ | ७९।२ | —१३।५२ | +७।१२ |
| रामेश्वर | (तमिल.) | ९।१७ | ७९।३४ | —११।३४ | +९।२० |
| रायबरेली | (उ. प्र.) | २६।१४ | ८१।१३ | —५।८ | +१५।५६ |
| राजमंड्रि | (आ. प्र.) | १७।५ | ८१।४८ | —२।४८ | +१८।१६ |
| रायपुर | (म. प्र.) | २१।१५ | ८१।३८ | —३।२८ | +१७।३६ |
| राजगढ़ | (म. प्र.) | २४।० | ७६।४४ | —२३।४ | —२।० |
| राजगढ़ | (राज.) | २७।४० | ७६।२४ | —२४।२४ | —३।२० |
| राजनन्द गांव | म.प्र. | २१।१५ | ८१।५ | —५।४० | +१५।१५ |
| रोहतक | (हरियम) | २८।५४ | ७६।३८ | —२३।२८ | —२।२४ |

| नगर | प्रान्त | उत्तर अक्षांश | पूर्व रेखांश | समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से. | दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से. |
|---|---|---|---|---|---|
| रोपड़ | (पंजा.) | ३०।५७ | ७६।३० | —२४।० | —२।५६ |
| लखनऊ | (उ. प्र.) | २६।५१ | ८०।५९ | —६।१४ | +१५।० |
| ललितपुर | (उ. प्र.) | २४।४१ | ७८।२४ | —१६।२४ | +४।४० |
| लुधियाना | पंजाब | ३०।३५ | ७५।५३ | —२६।२८ | —५।२४ |
| शाहजहांपुर | उ. प्र. | २७।५४ | ७९।५७ | —१०।१२ | +१०।५२ |
| शिलांग | (मेघा.) | २५।३४ | ९१।४५ | +३७।३६ | +५८।४० |
| शिवपुरी | (म. प्र.) | २५।३० | ७८।४ | —१३।४४ | +३।२० |
| राजापुर | (म. प्र.) | २३।२४ | ७६।१४ | —२५।४ | —४।० |
| शेरकिला | (काश्मी.) | ३६।७ | ७३।५३ | —३४।२८ | —१३।२४ |
| श्रीनगर | (काश्म.) | ३४।६ | ७४।५१ | —३०।३६ | —९।३२ |
| शिमला | (हिमा.) | ३१।६ | ७७।१० | —२१।२० | —०।१६ |
| संतालपु | (गु.) | २३।४७ | ७०।२८ | —४८।८ | —२७।४ |
| सातारा | (महा.) | १७।४७ | ७३।५४ | —३४।२४ | —१३।२० |
| सागर | (म. प्र.) | २३।५० | ७८।४५ | —१५।० | +६।४ |
| सरदारशहर | (राज.) | २८।२७ | ७४।३० | —३२।० | —१०।५६ |
| सवाईमाधोपुर | (राज.) | २५।५९ | ७६।२४ | —२४।२४ | —३।२० |
| सहारनपुर | (उ. प्र.) | २९।५९ | ७७।२३ | —२०।२८ | +०।३६ |
| सोमनाथ | (गुज.) | २१।१ | ७०।२६ | —४८।१६ | —२७।२२ |
| सोलापुर | (महा.) | १७।४० | ७५।४८ | —३०।४८ | —५।४४ |
| सोलन | (हिमा.) | ३०।५५ | ७७।१९ | —२१।२४ | —०।२० |
| सूरत | (गुज.) | २१।१२ | ७२।५० | —३८।४० | —१७।३६ |
| सिकन्दराबाद | आ. प्र. | १७।२७ | ७८।३३ | —१५।४८ | +५।१६ |
| सिरोही | (राज.) | २४।५६ | ७२।५० | —३८।४० | —१७।३६ |
| सीकर | (राज.) | २७।५१ | ७५।१४ | —२९।४ | —८।० |
| सीतापुर | (उ. प्र.) | २७।३६ | ८०।४० | —७।२० | +१३।४४ |
| हरिद्वार | (उ. प्र.) | २९।५८ | ७८।१३ | —१७।८ | +३।५६ |
| हरदोई | (उ. प्र.) | २७।२३ | ८०।१० | —९।२० | +११।४४ |
| हथुवा | हथुवा | २६।१२ | ८४।५ | +६।२० | +२७।४४ |
| होशंगाबाद | (म. प्र.) | २२।४६ | ७७।४५ | —१९।० | +२।४ |
| हजारीबाद | २४।० | ८५।२३ | +११।३२ | —३२।२७ | —३२।३६ |
| हाजीपुर | (उ.प्र.) | २५।३५ | ८३।११ | +२।४४ | —२३।४८ |
| होशियारपुर | (पंजा.) | ३१।३२ | ७५।५५ | —२६।२० | —५।१६ |
| हौशंगाबाद | (म. प्र.) | २२।४६ | ७७।४३ | —१९।८ | +१।५६ |
| हैदराबाद | (आन्ध्र) | १७।२७ | ७८।३० | —१६।० | +५।४ |
| हिसार | हरियाणा | २९।१४ | ७५।४४ | —२७।४ | —६।० |
| हैद्राबाद | पाकिस्तान | २५।२३ | ६८।२२ | —५६।३२ | —३५।२८ |
| हिंगाटा | (उड़ी.) | २०।२२ | ८५।२ | +१०।४८ | +३१।५२ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

| विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर | राष्ट्र | अक्षांश | रेखांश | क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै. | ग्रीनविच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि. | भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि. | दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै. | साम्पा. संस्कार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वेलिंग्टन | न्यूजीलैंड | ४१।१९द. | १७४।४६पू. | —२०।५६ | +१२।० | +६।३० | +६।३०।८ | —१।३ |
| कानबेर | आस्ट्रेलिया | ३५।१५द. | १४९।८पू. | —३।२८ | " १०।० | " ४।३० | +४।४७।३६ | " ०।४७ |
| आस्ट्रेलिया | दक्षिण | ३२।०द. | १४६।१७पू. | —१४।५२ | " १०।० | " ४।३० | +४।३६।१२ | " ०।४७ |
| टोकियो | जापान | ३५।३९उ. | १३९।४५पू. | +१९।० | " ९।० | " ३।३० | +४।१०।४ | " ०।४४ |
| सेऊल | द. कोरिया | ३७।४०उ. | १२७।० पू. | —३२।० | " ९।० | " ३।३० | +३।२९।४ | " ०।३३ |
| प्योगयांग | उ. कोरिया | ३९।०उ. | १२५।३०पू. | —३८।० | " ९।० | " ३।३० | +३।२३।४ | " ०।३२ |
| फार्मोसा | फार्मोसा | २५।२८उ. | १२१।३२पू. | —५३।५२ | " ९।० | " ३।३० | +२।५७।१२ | " ०।३० |
| फिजीदीप | फिजी | १८।०द. | १७९।०पू. | +६।२६ | " १२।० | " ६।३० | +६।४७।४ | " १।८ |
| पेईचिंग | चीन | ३९।५०उ. | ११६।२०पू. | —१४।४० | " ८।० | " २।३० | +२।३६।२४ | " ०।२६ |
| हांगकांग | हांगकांग | २२।१८उ. | ११४।१०पू. | —२३।२० | " ८।० | " २।३० | +२।२७।४४ | " ०।२२ |
| जकार्ता | इंडोनेशिया | ७।५७द. | ११०।२०पू. | —८।४० | " ७।३० | " २।० | +२।१२।२४ | " ०।२१ |
| सिंगापुर | मलाया | १।१६उ. | १०३।४७पू. | —३४।५२ | " ७।३० | " २।० | +१।४६।१२ | " ०।१७ |
| बेंगकाक | स्याम | १३।४५उ. | १००।३०पू. | —१८।० | " ७।० | " १।३० | +१।३३।४ | " ०।१५ |
| रंगून | ब्रह्मदेश | १६।४८उ. | ९६।८पू. | —५।२८ | " ६।३० | " १।० | +१।१५।३६ | " ०।१२ |
| माडले | " " | २२।०उ. | ९६।५पू. | —५।४० | " ६।३० | " १।० | +१।१५।२४ | " ०।१२ |
| ल्हासा | तिब्बत | २९।४०उ. | ९१।८ पू. | +३४।३२ | " ५।३० | " ०।० | +०।५५।३६ | " ०।९ |
| ढाका | बांग्लादेश | २३।४३उ. | ९०।२५पू. | +१।४० | " ६।० | " ०।३० | +०।५२।४४ | " ०।८ |
| कांडी | सीलोन लंका | ७।१९उ. | ८०।३२पू. | —०।० | " ५।३० | — ०।० | +०।२१।१२ | " ०।२ |
| राज. दिल्ली | भारत | २८।३८उ. | ७७।१४पू. | — २१।४ | " ५।३० | + ०।० | + ०।०।० | " ०।० |
| काबुल | अफगानिस्तान | ३४।३१उ. | ६९।१२पू. | +६।४८ | " ४।३० | — १।०० | —०।३२।८ | +०।५ |
| करांची | प.पाकिस्तान | २४।५१उ. | ६७।०पू. | —३२।० | " ५।० | " ०।३० | —०।४०।५६ | " ०।६ |
| तेहरान | ईरान | ३५।४४उ. | ५१।२७पू. | —४।१२ | " ३।३० | " २।० | —१।४३।८ | " ०।१७ |
| एडन | एडन | १२।५८उ. | ४५।१ पू. | +०।४ | " ३।० | " २।३० | —२।८।५२ | " ०।२० |
| बगदाद | ईराक | ३३।१८उ. | ४४।३०पू. | —२।० | " ३।० | " २।३० | —२।१०।५६ | " ०।२१ |
| अदन | एडन | १३।२५उ. | ४५।०पू. | —०।० | " ३।० | " २।३० | —२।८।५६ | " ०।२० |
| रियाध | सऊदी अरब | २४।५०उ. | ४६।१८पू. | +५।१२ | " ३।० | " २।३० | —२।३।४४ | " ०।१९ |
| मॉस्को | रूस | ५५।४५उ. | ३७।३५पू. | —२९।४० | " ३।० | " २।३० | —२।३८।३६ | " ०।२६ |
| नाइरोबी | पूर्वी अफ्रीका | १।२०द. | ३६।४४पू. | —३३।४ | " २।३० | " ३।० | —२।४२।० | " ०।२७ |
| दमास्कस | सीरिया | ३३।३०उ. | ३६।१८पू. | + २५।१२ | " २।० | " ३।३० | —२।४३।४४ | " ०।२७ |
| अमन | जॉर्डन | ३१।५७उ. | ३५।५७ पू. | +२३।४८ | " २।० | " ३।३० | —२।४५।८ | " ०।२८ |
| जेरुसलेम | इसराइल | ३१।४८उ. | ३५।१२पू. | +२०।४८ | " २।० | " ३।३० | —२।४८।८ | " ०।२८ |
| काहिरा | मिश्र | ३०।२उ. | ३१।१३पू. | +४।५२ | " २।० | " ३।३० | —३।४।४ | " ०।३१ |
| अंकारा | तुर्किस्तान | ३९।५२उ. | ३२।५१पू. | + ११।५६ | " २।० | " ३।३० | — २।५७।० | " ०।३० |
| ट्रांसवालय | दक्षि. अफ्रीका | २५।०द. | २९।०पू. | + ४।० | " २।० | " ३।३० | —३।२२।५६ | " ०।३१ |
| बल्गारिया | यूरोप | ४२।१८उ. | २६।१७पू. | + १४।५२ | " २।० | " ३।३० | —३।२३।४८ | " ०।३३ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] |
| बेलग्रेड | यूगोस्लाविया | ४४।५०उ. | २०।३७पू. | + २२।२८ | + १।० | — ४।३० | —३।४६।२८ | + ०।३८ |
| बुडापेस्ट | हंगरी | ४७।२९उ. | १९।५ पू. | + १६।२० | " १।० | " ४।३० | —३।५२।३६ | " ०।३९ |
| बर्लिन | पूर्वीजर्मनी | ५२।३२उ. | १३।२४पू. | — ६।२४ | " १।० | " ४।३० | " ४।२५।२० | " ०।४२ |
| ट्रिपोली | उत्तरी अफ्रीका | ३२।४५द. | १३।१५पू. | — ७।० | " १।० | " ४।३० | " ४।२५।५६ | " ०।४३ |
| रोम | इटली | ४१।४५उ. | १२।२९पू. | — १०।४ | " १।० | " ४।३० | " ४।१९।० | " ०।४८ |
| यान | पश्चि.जर्मनी | ५०।४३उ. | ७।६पू. | — ३१।३६ | + १।० | " ४।३० | " ४।४०।३२ | " ०।४८ |
| जेनेवा | स्विट्जरलैंड | ४६।४२उ. | ६।९पू. | — ३५।२४ | " १।० | " ४।३० | " ४।४४।२० | " ०।४९ |
| ब्रूसेल्स × | बेल्जियम | ५०।५१उ. | ४।२१पू. | — ४२।३६ | + १।० | — ४।३० | " ४।५१।३२ | " ०।५० |
| पेरिस × | फ्रान्स | ४८।५०उ. | २।२०पू. | — ५०।४० | + १।० | " ४।३० | " ४।५९।३६ | " ०।५१ |
| ग्रीनविच | इंग्लैंड | ५१।२९उ. | रे. शून्य | — ०।० | + ०।० | " ५।३० | " ५।८।५६ | " ०।५१ |
| लंदन | " | ५१।३२उ. | ०।५प. | — ०।२० | — ०।० | " ५।३० | " ५।९।१६ | " ०।५३ |
| मॉड्रिड × | स्पेन | ४०।२५उ. | ३।४५प. | — ७५।० | + १।० | " ४।३० | " ५।२३।५६ | " ०।५४ |
| जिब्राल्टर " | जिब्राल्टर | ३६।७उ. | ५।२२ प. | — ८१।२८ | + १।० | " ४।३० | " ५।३०।२४ | " ०।५७ |
| लिस्बॅन | पुर्तगाल | ३८।४२उ. | ९।१०प. | — ३६।४० | — ०।० | " ५।३० | " ५।४५।३६ | " १।३७ |
| अर्जेण्टाइना | द. अमेरिका | २६।१२द. | ६४।४५प. | + ४१।० | " ५।० | " १०।३० | " ९।२७।५६ | " १।४० |
| न्यूयॉर्क | अमेरिका | ४०।४३उ. | ७४।०प. | + ४।० | " ५।० | " १०।३० | " १०।८।५६ | " १।४० |
| ओटावा | कैनेडा | ४५।२६उ. | ७५।४१प. | — २।४४ | " ५।० | " १०।३० | " १०।११।४० | " १।४० |
| वाशिंगटन | अमेरिका | ३८।४३उ. | ७७।०प. | — ८।० | " ५।० | " १०।० | " १०।१६।५६ | " १।४२ |
| मेक्सिको | मेक्सिको | १९।२५उ. | ९९।२७प. | — ३७।८ | " ६।० | " ११।३० | " ११।४६।८ | " १।५७ |

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

## रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

**समय भेद-** इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच (वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

**वर्तमान समय में-** ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन हो समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घडी के अनुसार [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# चालन कोष्ठक

| मिनट | ० घं. | १ घं. | २ घं. | ३ घं. | ४ घं. | ५ घं. | ६ घं. | ७ घं. | ८ घं. | ९ घं. | १० घं. | ११ घं. | १२ घं. | १३ घं. | १४ घं. | १५ घं. | १६ घं. | १७ घं. | १८ घं. | १९ घं. | २० घं. | २१ घं. | २२ घं. | २३ घं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ० | ४२ | ८३ | १२५ | १६७ | २०८ | २५० | २९२ | ३३३ | ३७५ | ४१७ | ४५८ | ५०० | ५४२ | ५८३ | ६२५ | ६६७ | ७०८ | ७५० | ७९२ | ८३३ | ८७५ | ९१७ | ९५८ |
| १ | १ | ४३ | ८४ | १२६ | १६८ | २०९ | २५१ | २९३ | ३३४ | ३७६ | ४१८ | ४५९ | ५०१ | ५४३ | ५८४ | ६२६ | ६६८ | ७०९ | ७५१ | ७९३ | ८३४ | ८७६ | ९१८ | ९५९ |
| ३ | २ | ४४ | ८५ | १२७ | १६९ | २१० | २५२ | २९४ | ३३५ | ३७७ | ४१९ | ४६० | ५०२ | ५४४ | ५८५ | ६२७ | ६६९ | ७१० | ७५२ | ७९४ | ८३५ | ८७७ | ९१९ | ९६० |
| ४ | ३ | ४५ | ८६ | १२८ | १७० | २११ | २५३ | २९५ | ३३६ | ३७८ | ४२० | ४६१ | ५०३ | ५४५ | ५८६ | ६२८ | ६७० | ७११ | ७५३ | ७९५ | ८३६ | ८७८ | ९२० | ९६१ |
| ६ | ४ | ४६ | ८७ | १२९ | १७१ | २१२ | २५४ | २९६ | ३३७ | ३७९ | ४२१ | ४६२ | ५०४ | ५४६ | ५८७ | ६२९ | ६७१ | ७१२ | ७५४ | ७९६ | ८३७ | ८७९ | ९२१ | ९६२ |
| ७ | ५ | ४७ | ८८ | १३० | १७२ | २१३ | २५५ | २९७ | ३३८ | ३८० | ४२२ | ४६३ | ५०५ | ५४७ | ५८८ | ६३० | ६७२ | ७१३ | ७५५ | ७९७ | ८३८ | ८८० | ९२२ | ९६३ |
| ९ | ६ | ४८ | ८९ | १३१ | १७३ | २१४ | २५६ | २९८ | ३३९ | ३८१ | ४२३ | ४६४ | ५०६ | ५४८ | ५८९ | ६३१ | ६७३ | ७१४ | ७५६ | ७९८ | ८३९ | ८८१ | ९२३ | ९६४ |
| १० | ७ | ४९ | ९० | १३२ | १७४ | २१५ | २५७ | २९९ | ३४० | ३८२ | ४२४ | ४६५ | ५०७ | ५४९ | ५९० | ६३२ | ६७४ | ७१५ | ७५७ | ७९९ | ८४० | ८८२ | ९२४ | ९६५ |
| १२ | ८ | ५० | ९१ | १३३ | १७५ | २१६ | २५८ | ३०० | ३४१ | ३८३ | ४२५ | ४६६ | ५०८ | ५५० | ५९१ | ६३३ | ६७५ | ७१६ | ७५८ | ८०० | ८४१ | ८८३ | ९२५ | ९६६ |
| १३ | ९ | ५१ | ९२ | १३४ | १७६ | २१७ | २५९ | ३०१ | ३४२ | ३८४ | ४२६ | ४६७ | ५०९ | ५५१ | ५९२ | ६३४ | ६७६ | ७१७ | ७५९ | ८०१ | ८४२ | ८८४ | ९२६ | ९६७ |
| १४ | १० | ५२ | ९३ | १३५ | १७७ | २१८ | २६० | ३०२ | ३४३ | ३८५ | ४२७ | ४६८ | ५१० | ५५२ | ५९३ | ६३५ | ६७७ | ७१८ | ७६० | ८०२ | ८४३ | ८८५ | ९२७ | ९६८ |
| १६ | ११ | ५३ | ९४ | १३६ | १७८ | २१९ | २६१ | ३०३ | ३४४ | ३८६ | ४२८ | ४६९ | ५११ | ५५३ | ५९४ | ६३६ | ६७८ | ७१९ | ७६१ | ८०३ | ८४४ | ८८६ | ९२८ | ९६९ |
| १७ | १२ | ५४ | ९५ | १३७ | १७९ | २२० | २६२ | ३०४ | ३४५ | ३८७ | ४२९ | ४७० | ५१२ | ५५४ | ५९५ | ६३७ | ६७९ | ७२० | ७६२ | ८०४ | ८४५ | ८८७ | ९२९ | ९७० |
| १९ | १३ | ५५ | ९६ | १३८ | १८० | २२१ | २६३ | ३०५ | ३४६ | ३८८ | ४३० | ४७१ | ५१३ | ५५५ | ५९६ | ६३८ | ६८० | ७२१ | ७६३ | ८०५ | ८४६ | ८८८ | ९३० | ९७१ |
| २० | १४ | ५६ | ९७ | १३९ | १८१ | २२२ | २६४ | ३०६ | ३४७ | ३८९ | ४३१ | ४७२ | ५१४ | ५५६ | ५९७ | ६३९ | ६८१ | ७२२ | ७६४ | ८०६ | ८४७ | ८८९ | ९३१ | ९७२ |
| २२ | १५ | ५७ | ९८ | १४० | १८२ | २२३ | २६५ | ३०७ | ३४८ | ३९० | ४३२ | ४७३ | ५१५ | ५५७ | ५९८ | ६४० | ६८२ | ७२३ | ७६५ | ८०७ | ८४८ | ८९० | ९३२ | ९७३ |
| २३ | १६ | ५८ | ९९ | १४१ | १८३ | २२४ | २६६ | ३०८ | ३४९ | ३९१ | ४३३ | ४७४ | ५१६ | ५५८ | ५९९ | ६४१ | ६८३ | ७२४ | ७६६ | ८०८ | ८४९ | ८९१ | ९३३ | ९७४ |
| २४ | १७ | ५९ | १०० | १४२ | १८४ | २२५ | २६७ | ३०९ | ३५० | ३९२ | ४३४ | ४७५ | ५१७ | ५५९ | ६०० | ६४२ | ६८४ | ७२५ | ७६७ | ८०९ | ८५० | ८९२ | ९३४ | ९७५ |
| २६ | १८ | ६० | १०१ | १४३ | १८५ | २२६ | २६८ | ३१० | ३५१ | ३९३ | ४३५ | ४७६ | ५१८ | ५६० | ६०१ | ६४३ | ६८५ | ७२६ | ७६८ | ८१० | ८५१ | ८९३ | ९३५ | ९७६ |
| २७ | १९ | ६१ | १०२ | १४४ | १८६ | २२७ | २६९ | ३११ | ३५२ | ३९४ | ४३६ | ४७७ | ५१९ | ५६१ | ६०२ | ६४४ | ६८६ | ७२७ | ७६९ | ८११ | ८५२ | ८९४ | ९३६ | ९७७ |
| २९ | २० | ६२ | १०३ | १४५ | १८७ | २२८ | २७० | ३१२ | ३५३ | ३९५ | ४३७ | ४७८ | ५२० | ५६२ | ६०३ | ६४५ | ६८७ | ७२८ | ७७० | ८१२ | ८५३ | ८९५ | ९३७ | ९७८ |
| ३० | २१ | ६३ | १०४ | १४६ | १८८ | २२९ | २७१ | ३१३ | ३५४ | ३९६ | ४३८ | ४७९ | ५२१ | ५६३ | ६०४ | ६४६ | ६८८ | ७२९ | ७७१ | ८१३ | ८५४ | ८९६ | ९३८ | ९७९ |
| ३२ | २२ | ६४ | १०५ | १४७ | १८९ | २३० | २७२ | ३१४ | ३५५ | ३९७ | ४३९ | ४८० | ५२२ | ५६४ | ६०५ | ६४७ | ६८९ | ७३० | ७७२ | ८१४ | ८५५ | ८९७ | ९३९ | ९८० |
| ३३ | २३ | ६५ | १०६ | १४८ | १९० | २३१ | २७३ | ३१५ | ३५६ | ३९८ | ४४० | ४८१ | ५२३ | ५६५ | ६०६ | ६४८ | ६९० | ७३१ | ७७३ | ८१५ | ८५६ | ८९८ | ९४० | ९८१ |
| ३५ | २४ | ६६ | १०७ | १४९ | १९१ | २३२ | २७४ | ३१६ | ३५७ | ३९९ | ४४१ | ४८२ | ५२४ | ५६६ | ६०७ | ६४९ | ६९१ | ७३२ | ७७४ | ८१६ | ८५७ | ८९९ | ९४१ | ९८२ |
| ३६ | २५ | ६७ | १०८ | १५० | १९२ | २३३ | २७५ | ३१७ | ३५८ | ४०० | ४४२ | ४८३ | ५२५ | ५६७ | ६०८ | ६५० | ६९२ | ७३३ | ७७५ | ८१७ | ८५८ | ९०० | ९४२ | ९८३ |
| ३७ | २६ | ६८ | १०९ | १५१ | १९३ | २३४ | २७६ | ३१८ | ३५९ | ४०१ | ४४३ | ४८४ | ५२६ | ५६८ | ६०९ | ६५१ | ६९३ | ७३४ | ७७६ | ८१८ | ८५९ | ९०१ | ९४३ | ९८४ |
| ३९ | २७ | ६९ | ११० | १५२ | १९४ | २३५ | २७७ | ३१९ | ३६० | ४०२ | ४४४ | ४८५ | ५२७ | ५६९ | ६१० | ६५२ | ६९४ | ७३५ | ७७७ | ८१९ | ८६० | ९०२ | ९४४ | ९८५ |
| ४० | २८ | ७० | १११ | १५३ | १९५ | २३६ | २७८ | ३२० | ३६१ | ४०३ | ४४५ | ४८६ | ५२८ | ५७० | ६११ | ६५३ | ६९५ | ७३६ | ७७८ | ८२० | ८६१ | ९०३ | ९४५ | ९८६ |
| ४२ | २९ | ७१ | ११२ | १५४ | १९६ | २३७ | २७९ | ३२१ | ३६२ | ४०४ | ४४६ | ४८७ | ५२९ | ५७१ | ६१२ | ६५४ | ६९६ | ७३७ | ७७९ | ८२१ | ८६२ | ९०४ | ९४६ | ९८७ |
| ४३ | ३० | ७२ | ११३ | १५५ | १९७ | २३८ | २८० | ३२२ | ३६३ | ४०५ | ४४७ | ४८८ | ५३० | ५७२ | ६१३ | ६५५ | ६९७ | ७३८ | ७८० | ८२२ | ८६३ | ९०५ | ९४७ | ९८८ |
| ४५ | ३१ | ७३ | ११४ | १५६ | १९८ | २३९ | २८१ | ३२३ | ३६४ | ४०६ | ४४८ | ४८९ | ५३१ | ५७३ | ६१४ | ६५६ | ६९८ | ७३९ | ७८१ | ८२३ | ८६४ | ९०६ | ९४८ | ९८९ |
| ४६ | ३२ | ७४ | ११५ | १५७ | १९९ | २४० | २८२ | ३२४ | ३६५ | ४०७ | ४४९ | ४९० | ५३२ | ५७४ | ६१५ | ६५७ | ६९९ | ७४० | ७८२ | ८२४ | ८६५ | ९०७ | ९४९ | ९९० |
| ४८ | ३३ | ७५ | ११६ | १५८ | २०० | २४१ | २८३ | ३२५ | ३६६ | ४०८ | ४५० | ४९१ | ५३३ | ५७५ | ६१६ | ६५८ | ७०० | ७४१ | ७८३ | ८२५ | ८६६ | ९०८ | ९५० | ९९१ |
| ४९ | ३४ | ७६ | ११७ | १५९ | २०१ | २४२ | २८४ | ३२६ | ३६७ | ४०९ | ४५१ | ४९२ | ५३४ | ५७६ | ६१७ | ६५९ | ७०१ | ७४२ | ७८४ | ८२६ | ८६७ | ९०९ | ९५१ | ९९२ |
| ५० | ३५ | ७७ | ११८ | १६० | २०२ | २४३ | २८५ | ३२७ | ३६८ | ४१० | ४५२ | ४९३ | ५३५ | ५७७ | ६१८ | ६६० | ७०२ | ७४३ | ७८५ | ८२७ | ८६८ | ९१० | ९५२ | ९९३ |
| ५२ | ३६ | ७८ | ११९ | १६१ | २०३ | २४४ | २८६ | ३२८ | ३६९ | ४११ | ४५३ | ४९४ | ५३६ | ५७८ | ६१९ | ६६१ | ७०३ | ७४४ | ७८६ | ८२८ | ८६९ | ९११ | ९५३ | ९९४ |
| ५३ | ३७ | ७९ | १२० | १६२ | २०४ | २४५ | २८७ | ३२९ | ३७० | ४१२ | ४५४ | ४९५ | ५३७ | ५७९ | ६२० | ६६२ | ७०४ | ७४५ | ७८७ | ८२९ | ८७० | ९१२ | ९५४ | ९९५ |
| ५५ | ३८ | ८० | १२१ | १६३ | २०५ | २४६ | २८८ | ३३० | ३७१ | ४१३ | ४५५ | ४९६ | ५३८ | ५८० | ६२१ | ६६३ | ७०५ | ७४६ | ७८८ | ८३० | ८७१ | ९१३ | ९५५ | ९९६ |
| ५६ | ३९ | ८१ | १२२ | १६४ | २०६ | २४७ | २८९ | ३३१ | ३७२ | ४१४ | ४५६ | ४९७ | ५३९ | ५८१ | ६२२ | ६६४ | ७०६ | ७४७ | ७८९ | ८३१ | ८७२ | ९१४ | ९५६ | ९९७ |
| ५८ | ४० | ८२ | १२३ | १६५ | २०७ | २४८ | २९० | ३३२ | ३७३ | ४१५ | ४५७ | ४९८ | ५४० | ५८२ | ६२३ | ६६५ | ७०७ | ७४८ | ७९० | ८३२ | ८७३ | ९१५ | ९५७ | ९९८ |
| ५९ | ४१ | ८३ | १२४ | १६६ | २०८ | २४९ | २९१ | ३३३ | ३७४ | ४१६ | ४५८ | ४९९ | ५४१ | ५८३ | ६२४ | ६६६ | ७०८ | ७४९ | ७९१ | ८३३ | ८७४ | ९१६ | ९५८ | ९९९ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

| उत्तर अक्षांश | अक्षांश ८ | | | | ९ | | | | १० | | | | ११ | | | | १२ | | | | १३ | | | | १४ | | | | १५ | | | | १६ | | | | १७ | | | | १८ | | | | १९ | | | | दक्षिण अक्षांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | मा. ता. |
| जन. १ | ६ | १४ | ५ | ५४ | ६ | १६ | ५ | ५२ | ६ | १७ | ५ | ५० | ६ | १९ | ५ | ४९ | ६ | २१ | ५ | ४७ | ६ | २३ | ५ | ४५ | ६ | २४ | ५ | ४३ | ६ | २६ | ५ | ४१ | ६ | २८ | ५ | ४० | ६ | ३० | ५ | ३८ | ६ | ३१ | ५ | ३६ | ६ | ३३ | ५ | ३४ | जुला. ३ |
| ७ | | १६ | | ५७ | | १८ | | ५५ | | १९ | | ५३ | | २१ | | ५२ | | २३ | | ५० | | २५ | | ४८ | | २६ | | ४७ | | २८ | | ४५ | | ३० | | ४३ | | ३१ | | ४१ | | ३३ | | ४० | | ३५ | | ३८ | ९ |
| १३ | | १८ | ६ | ० | | २० | | ५८ | | २१ | | ५७ | | २३ | | ५५ | | २४ | | ५३ | | २६ | | ५१ | | २८ | | ५० | | २९ | | ४८ | | ३१ | | ४७ | | ३३ | | ४५ | | ३४ | | ४३ | | ३६ | | ४२ | १५ |
| १९ | | १९ | | ३ | | २१ | ६ | १ | | २२ | ६ | ० | | २४ | | ५८ | | २५ | | ५७ | | २७ | | ५५ | | २८ | | ५४ | | ३० | | ५२ | | ३१ | | ५० | | ३३ | | ४९ | | ३५ | | ४७ | | ३६ | | ४६ | २२ |
| २५ | | २० | | ५ | | २२ | | ३ | | २३ | | २ | | २४ | ६ | १ | | २६ | | ५९ | | २७ | | ५८ | | २८ | | ५७ | | ३० | | ५५ | | ३१ | | ५४ | | ३३ | | ५२ | | ३४ | | ५१ | | ३६ | | ४९ | २८ |
| ३१ | | २० | | ७ | | २२ | | ६ | | २३ | | ५ | | २४ | | ३ | | २५ | ६ | २ | | २७ | ६ | ० | | २८ | | ५९ | | २९ | | ५८ | | ३१ | | ५७ | | ३२ | | ५५ | | ३३ | | ५४ | | ३५ | | ५३ | अग. ४ |
| फर. ६ | | २० | | ९ | | २१ | | ८ | | २२ | | ७ | | २३ | | ५ | | २४ | | ४ | | २६ | | ३ | | २७ | ६ | २ | | २८ | ६ | १ | | २९ | ६ | ० | | ३० | | ५८ | | ३१ | | ५७ | | ३३ | | ५६ | १० |
| १२ | | १९ | | १० | | २० | | ९ | | २१ | | ८ | | २२ | | ७ | | २३ | | ६ | | २४ | | ५ | | २५ | | ४ | | २६ | | ३ | | २७ | | २ | | २८ | ६ | १ | | २९ | ६ | ० | | ३० | | ५९ | १६ |
| १८ | | १७ | | ११ | | १८ | | १० | | १९ | | ९ | | २० | | ८ | | २१ | | ८ | | २२ | | ७ | | २२ | | ६ | | २३ | | ५ | | २४ | | ४ | | २५ | | ३ | | २६ | | २ | | २७ | ६ | २ | २२ |
| २४ | | १५ | | ११ | | १६ | | १० | | १७ | | १० | | १७ | | ९ | | १८ | | ९ | | १९ | | ८ | | १९ | | ७ | | २० | | ७ | | २१ | | ६ | | २२ | | ५ | | २२ | | ५ | | २३ | | ४ | २९ |
| मार्च २ | | १३ | | १२ | | १४ | | ११ | | १४ | | ११ | | १५ | | १० | | १५ | | १० | | १६ | | ९ | | १६ | | ९ | | १७ | | ८ | | १७ | | ८ | | १८ | | ७ | | १८ | | ७ | | १९ | | ६ | सितं. ४ |
| ८ | | १० | | १२ | | ११ | | ११ | | ११ | | ११ | | ११ | | ११ | | १२ | | १० | | १२ | | १० | | १२ | | १० | | १३ | | ९ | | १३ | | ९ | | १४ | | ९ | | १४ | | ८ | | १४ | | ८ | १० |
| १४ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | ९ | १६ |
| २० | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | २२ |
| २६ | | १ | | १० | | १ | | १० | | १ | | ११ | | १ | | ११ | | १ | | ११ | | १ | | ११ | | ० | | १२ | | ० | | १२ | | ० | | १२ | | ० | | १२ | | ० | | १२ | ५ | ५१ | | १३ | २८ |
| अप्रै. २ | ५ | ५८ | | १० | ५ | ५८ | | १० | ५ | ५७ | | ११ | ५ | ५७ | | ११ | ५ | ५६ | | ११ | ५ | ५६ | | ११ | ५ | ५५ | | १२ | ५ | ५५ | | १३ | ५ | ५५ | | १३ | ५ | ५४ | | १३ | ५ | ५४ | | १४ | | ५३ | | १४ | अक्टू. ६ |
| ८ | | ५५ | | ९ | | ५५ | | ९ | | ५४ | | १० | | ५३ | | ११ | | ५२ | | १२ | | ५२ | | १२ | | ५१ | | १३ | | ५१ | | १३ | | ५० | | १४ | | ५० | | १४ | | ५० | | १५ | | ४९ | | १६ | ११ |
| १४ | | ५२ | | ९ | | ५१ | | ९ | | ५० | | १० | | ५० | | ११ | | ४९ | | १२ | | ४९ | | १२ | | ४८ | | १३ | | ४७ | | १४ | | ४६ | | १५ | | ४५ | | १६ | | ४५ | | १६ | | ४४ | | १७ | १७ |
| २० | | ४९ | | ९ | | ४८ | | १० | | ४७ | | ११ | | ४७ | | १२ | | ४६ | | १२ | | ४५ | | १३ | | ४४ | | १४ | | ४३ | | १५ | | ४२ | | १६ | | ४१ | | १७ | | ४० | | १८ | | ३९ | | १९ | २३ |
| २६ | | ४७ | | ९ | | ४६ | | १० | | ४५ | | ११ | | ४४ | | १२ | | ४३ | | १३ | | ४२ | | १४ | | ४१ | | १५ | | ४० | | १६ | | ३९ | | १७ | | ३७ | | १८ | | ३६ | | १९ | | ३५ | | २१ | २९ |
| मई १ | | ४५ | | ९ | | ४४ | | १० | | ४३ | | १२ | | ४२ | | १३ | | ४१ | | १४ | | ४० | | १५ | | ३८ | | १६ | | ३७ | | १७ | | ३६ | | १९ | | ३५ | | २० | | ३३ | | २१ | | ३२ | | २२ | नवं. ३ |
| ७ | | ४३ | | १० | | ४२ | | ११ | | ४१ | | १२ | | ४० | | १४ | | ३८ | | १५ | | ३७ | | १६ | | ३६ | | १८ | | ३४ | | १९ | | ३३ | | २० | | ३२ | | २२ | | ३० | | २३ | | २९ | | २४ | ९ |
| १३ | | ४२ | | ११ | | ४१ | | १२ | | ३९ | | १३ | | ३८ | | १५ | | ३७ | | १६ | | ३६ | | १७ | | ३४ | | १९ | | ३२ | | २१ | | ३१ | | २२ | | २९ | | २३ | | २८ | | २५ | | २६ | | २७ | १५ |
| १९ | | ४१ | | १२ | | ४० | | १३ | | ३८ | | १५ | | ३७ | | १६ | | ३५ | | १८ | | ३४ | | १९ | | ३२ | | २१ | | ३१ | | २२ | | २९ | | २४ | | २८ | | २६ | | २६ | | २७ | | २४ | | २९ | २० |
| २५ | | ४१ | | १३ | | ४० | | १४ | | ३८ | | १६ | | ३६ | | १८ | | ३५ | | १९ | | ३३ | | २१ | | ३१ | | २३ | | ३० | | २४ | | २८ | | २६ | | २६ | | २८ | | २५ | | २९ | | २३ | | ३१ | २६ |
| ३१ | | ४१ | | १४ | | ४० | | १६ | | ३८ | | १८ | | ३६ | | १९ | | ३४ | | २१ | | ३३ | | २२ | | ३१ | | २४ | | २९ | | २६ | | २७ | | २८ | | २६ | | ३० | | २४ | | ३२ | | २२ | | ३३ | दिसं. २ |
| जून ६ | | ४१ | | १६ | | ४० | | १७ | | ३८ | | १९ | | ३६ | | २१ | | ३४ | | २३ | | ३३ | | २४ | | ३१ | | २६ | | २९ | | २८ | | २७ | | ३० | | २५ | | ३२ | | २४ | | ३४ | | २२ | | ३६ | ७ |
| १२ | | ४२ | | १७ | | ४१ | | १९ | | ३९ | | २१ | | ३७ | | २३ | | ३५ | | २४ | | ३३ | | २६ | | ३१ | | २८ | | ३० | | ३० | | २८ | | ३२ | | २६ | | ३४ | | २४ | | ३६ | | २२ | | ३८ | १३ |
| १८ | | ४३ | | १९ | | ४२ | | २० | | ४० | | २२ | | ३८ | | २४ | | ३६ | | २६ | | ३४ | | २८ | | ३२ | | ३० | | ३१ | | ३२ | | २९ | | ३३ | | २७ | | ३५ | | २५ | | ३७ | | २३ | | ३९ | १९ |
| २४ | | ४५ | | २० | | ४३ | | २२ | | ४१ | | २४ | | ३९ | | २५ | | ३८ | | २७ | | ३६ | | २९ | | ३४ | | ३१ | | ३२ | | ३३ | | ३० | | ३५ | | २८ | | ३७ | | २६ | | ३९ | | २४ | | ४१ | २४ |
| [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | [illegible] | | २८ | | [illegible] | | ३० | | ३५ | | ३२ | | ३३ | | ३४ | | ३२ | | ३६ | | ३० | | ३८ | | २८ | | ३९ | | २६ | | ४१ | ३० |



CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

| उत्तर अक्षांश | अक्षांश ८ | | | | ९ | | | | १० | | | | ११ | | | | १२ | | | | १३ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि |
| जुला. ६ | ५ | ४८ | ६ | २२ | ५ | ४६ | ६ | २३ | ५ | ४४ | ६ | २५ | ५ | ४२ | ६ | २७ | ५ | ४१ | ६ | २९ | ५ | ३९ | ६ | ३० |
| १२ | | ४९ | | २२ | | ४८ | | २४ | | ४६ | | २६ | | ४४ | | २७ | | ४२ | | २९ | | ४१ | | ३० |
| १८ | | ५० | | २२ | | ४९ | | २३ | | ४७ | | २५ | | ४५ | | २७ | | ४४ | | २९ | | ४२ | | ३० |
| २४ | | ५१ | | २२ | | ५० | | २३ | | ४८ | | २५ | | ४७ | | २६ | | ४५ | | २८ | | ४४ | | २९ |
| ३० | | ५२ | | २१ | | ५१ | | २२ | | ४९ | | २३ | | ४८ | | २५ | | ४६ | | २६ | | ४५ | | २७ |
| अग. ५ | | ५३ | | १९ | | ५२ | | २० | | ५० | | २२ | | ४९ | | २३ | | ४८ | | २४ | | ४७ | | २५ |
| ११ | | ५३ | | १७ | | ५२ | | १८ | | ५१ | | २० | | ५० | | २१ | | ४८ | | २२ | | ४७ | | २३ |
| १७ | | ५३ | | १५ | | ५२ | | १६ | | ५१ | | १७ | | ५० | | १८ | | ४९ | | १९ | | ४८ | | २० |
| २३ | | ५३ | | १२ | | ५२ | | १३ | | ५१ | | १४ | | ५० | | १५ | | ४९ | | १६ | | ४९ | | १७ |
| २९ | | ५२ | | १० | | ५२ | | १० | | ५१ | | ११ | | ५० | | १२ | | ४९ | | १२ | | ४९ | | १३ |
| सितं. ४ | | ५२ | | ६ | | ५२ | | ६ | | ५१ | | ७ | | ५० | | ८ | | ४९ | | ८ | | ४९ | | ९ |
| १० | | ५१ | | ३ | | ५१ | | ३ | | ५० | | ४ | | ५० | | ४ | | ४९ | | ५ | | ४९ | | ५ |
| १६ | | ५० | | ० | | ५० | | ० | | ५० | | ० | | ५० | | ० | | ४९ | | ० | | ४९ | | ० |
| २२ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ |
| २८ | | ४९ | | ५३ | | ४९ | | ५३ | | ४९ | | ५३ | | ४९ | | ५२ | | ४९ | | ५२ | | ४९ | | ५२ |
| अक्टू. ३ | | ४८ | | ५० | | ४८ | | ५० | | ४८ | | ५० | | ४९ | | ४९ | | ४९ | | ४९ | | ५० | | ४८ |
| ९ | | ४८ | | ४७ | | ४८ | | ४६ | | ४८ | | ४६ | | ४९ | | ४६ | | ४९ | | ४५ | | ५० | | ४४ |
| १५ | | ४७ | | ४४ | | ४८ | | ४३ | | ४९ | | ४३ | | ४९ | | ४३ | | ५० | | ४२ | | ५१ | | ४१ |
| २१ | | ४७ | | ४२ | | ४८ | | ४१ | | ४९ | | ४० | | ५० | | ४० | | ५० | | ३९ | | ५१ | | ३८ |
| २७ | | ४८ | | ४० | | ४९ | | ३९ | | ५० | | ३८ | | ५१ | | ३७ | | ५१ | | ३६ | | ५२ | | ३५ |
| नवं. २ | | ४९ | | ३९ | | ५० | | ३७ | | ५१ | | ३६ | | ५२ | | ३५ | | ५३ | | ३४ | | ५४ | | ३३ |
| ८ | | ५० | | ३८ | | ५१ | | ३६ | | ५२ | | ३५ | | ५४ | | ३४ | | ५५ | | ३३ | | ५६ | | ११ |
| १४ | | ५१ | | ३७ | | ५३ | | ३६ | | ५४ | | ३५ | | ५६ | | ३३ | | ५७ | | ३२ | | ५९ | | ३० |
| २० | | ५४ | | ३८ | | ५५ | | ३६ | | ५६ | | ३५ | | ५८ | | ३३ | | ५९ | | ३२ | ६ | १ | | ३० |
| २६ | | ५६ | | ३९ | | ५८ | | ३७ | | ५९ | | ३६ | ६ | १ | | ३४ | ६ | २ | | ३२ | | ४ | | ३० |
| दिसं. २ | | ५९ | | ४० | ६ | १ | | ३८ | ६ | २ | | ३७ | | ४ | | ३५ | | ५ | | ३४ | | ७ | | ३२ |
| ८ | ६ | २ | | ४२ | | ४ | | ४० | | ५ | | ३९ | | ७ | | ३७ | | ९ | | ३५ | | ११ | | ३३ |
| १४ | | ५ | | ४५ | | ७ | | ४३ | | ८ | | ४१ | | १० | | ३९ | | १२ | | ३८ | | १४ | | ३६ |
| २० | | ८ | | ४७ | | १० | | ४५ | | ११ | | ४४ | | १३ | | ४२ | | १५ | | ४० | | १७ | | ३८ |
| २६ | | ११ | | ५० | | १३ | | ४८ | | १४ | | ४७ | | १६ | | ४५ | | १८ | | ४३ | | २० | | ४१ |

| उत्तर अक्षांश | १४ | | | | १५ | | | | १६ | | | | १७ | | | | १८ | | | | १९ | | | | दक्षिण अक्षांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | मा. ता. |
| जुला. ६ | ५ | ३७ | ६ | ३२ | ५ | ३५ | ६ | ३४ | ५ | ३३ | ६ | ३६ | ५ | ३१ | ६ | ३८ | ५ | ३० | ६ | ४० | ५ | २८ | ६ | ४२ | जन. ४ |
| १२ | | ३९ | | ३२ | | ३७ | | ३४ | | ३५ | | ३६ | | ३३ | | ३८ | | ३२ | | ३९ | | ३० | | ४१ | १० |
| १८ | | ४० | | ३२ | | ३९ | | ३३ | | ३७ | | ३५ | | ३५ | | ३७ | | ३४ | | ३९ | | ३२ | | ४० | १५ |
| २४ | | ४२ | | ३१ | | ४० | | ३२ | | ३९ | | ३४ | | ३७ | | ३५ | | ३६ | | ३७ | | ३४ | | ३९ | २१ |
| ३० | | ४४ | | २९ | | ४२ | | ३१ | | ४१ | | ३२ | | ३९ | | ३३ | | ३८ | | ३५ | | ३६ | | ३६ | २७ |
| अग. ५ | | ४५ | | २७ | | ४४ | | २८ | | ४२ | | ३० | | ४१ | | ३१ | | ४० | | ३२ | | ३८ | | ३४ | फर. १ |
| ११ | | ४६ | | २४ | | ४५ | | २५ | | ४४ | | २७ | | ४२ | | २८ | | ४१ | | २९ | | ४० | | ३० | ७ |
| १७ | | ४७ | | २१ | | ४६ | | २२ | | ४५ | | २३ | | ४४ | | २४ | | ४३ | | २५ | | ४२ | | २६ | ११ |
| २३ | | ४८ | | १८ | | ४७ | | १८ | | ४६ | | १९ | | ४५ | | २० | | ४४ | | २१ | | ४३ | | २२ | १८ |
| २९ | | ४८ | | १४ | | ४७ | | १४ | | ४७ | | १५ | | ४६ | | १६ | | ४५ | | १७ | | ४४ | | १७ | २४ |
| सितं. ४ | | ४८ | | १० | | ४८ | | १० | | ४७ | | ११ | | ४७ | | ११ | | ४६ | | १२ | | ४६ | | १२ | मार्च २ |
| १० | | ४९ | | ५ | | ४८ | | ६ | | ४८ | | ६ | | ४७ | | ६ | | ४७ | | ७ | | ४७ | | ७ | ८ |
| १६ | | ४९ | | १ | | ४९ | | १ | | ४८ | | १ | | ४८ | | १ | | ४८ | | २ | | ४८ | | २ | १४ |
| २२ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५६ | | ४९ | ५ | ५७ | | ४९ | ५ | ५७ | २० |
| २८ | | ४९ | | ५२ | | ४९ | | ५२ | | ५० | | ५२ | | ५० | | ५२ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | २६ |
| अक्टू. ३ | | ५० | | ४८ | | ५० | | ४८ | | ५० | | ४८ | | ५० | | ४८ | | ५१ | | ४७ | | ५१ | | ४७ | ३० |
| ९ | | ५० | | ४४ | | ५१ | | ४४ | | ५१ | | ४३ | | ५२ | | ४३ | | ५२ | | ४२ | | ५२ | | ४२ | अप्रै. ५ |
| १५ | | ५१ | | ४१ | | ५२ | | ४० | | ५२ | | ३९ | | ५३ | | ३९ | | ५३ | | ३८ | | ५४ | | ३७ | १२ |
| २१ | | ५२ | | ३७ | | ५३ | | ३६ | | ५४ | | ३६ | | ५४ | | ३५ | | ५५ | | ३४ | | ५६ | | ३३ | १८ |
| २७ | | ५३ | | ३४ | | ५४ | | ३३ | | ५५ | | ३२ | | ५६ | | ३१ | | ५७ | | ३१ | | ५८ | | ३० | २४ |
| नवं. २ | | ५५ | | ३२ | | ५६ | | ३१ | | ५७ | | ३० | | ५८ | | २९ | ६ | ० | | २८ | ६ | १ | | २६ | ३० |
| ८ | | ५७ | | ३० | | ५८ | | २९ | ६ | ० | | २८ | ६ | ० | | २७ | | २ | | २५ | | ४ | | २४ | मई ६ |
| १४ | ६ | ० | | २८ | ६ | १ | | २८ | | २ | | २६ | | ४ | | २५ | | ५ | | २४ | | ७ | | २२ | १२ |
| २० | | २ | | २९ | | ४ | | २७ | | ५ | | २६ | | ७ | | २४ | | ९ | | २३ | | १० | | २१ | १९ |
| २६ | | ५ | | २९ | | ७ | | २८ | | ९ | | २६ | | १० | | २४ | | १२ | | २३ | | १४ | | २१ | २५ |
| दिसं. २ | | ९ | | ३० | | १० | | २८ | | १२ | | २७ | | १४ | | २५ | | १६ | | २३ | | १७ | | २१ | ३१ |
| ८ | | १२ | | ३२ | | १४ | | ३० | | १६ | | २८ | | १७ | | २६ | | १९ | | २५ | | २१ | | २३ | जून ७ |
| १४ | | १५ | | ३४ | | १७ | | ३२ | | १९ | | ३० | | २१ | | २९ | | २३ | | २७ | | २५ | | २५ | १३ |
| २० | | १८ | | ३७ | | २० | | ३५ | | २२ | | ३३ | | २४ | | ३१ | | २६ | | २९ | | २८ | | २७ | १९ |
| २६ | | २१ | | ४० | | २३ | | ३८ | | २५ | | ३६ | | २७ | | ३४ | | २९ | | ३२ | | ३१ | | ३० | २६ |

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

| उत्तर अक्षांश | अक्षांश २० | | | | अक्षांश २१ | | | | अक्षांश २२ | | | | अक्षांश २३ | | | | अक्षांश २४ | | | | दक्षिण अक्षांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | मा. ता. |
| जन. १ | ६ | ३५ | ५ | ३२ | ६ | ३७ | ५ | ३० | ६ | ३९ | ५ | २८ | ६ | ४१ | ५ | २६ | ६ | ४३ | ५ | २४ | जुला. ३ |
| ७ | | ३७ | | ३६ | | ३९ | | ३४ | | ४१ | | ३२ | | ४३ | | ३० | | ४५ | | २८ | ९ |
| १३ | | ३८ | | ४० | | ४० | | ३८ | | ४१ | | ३६ | | ४३ | | ३४ | | ४५ | | ३३ | १५ |
| १९ | | ३८ | | ४४ | | ४० | | ४२ | | ४१ | | ४१ | | ४३ | | ३९ | | ४५ | | ३७ | २२ |
| २५ | | ३७ | | ४८ | | ३९ | | ४६ | | ४० | | ४५ | | ४२ | | ४३ | | ४४ | | ४१ | २८ |
| ३१ | | ३६ | | ५१ | | ३७ | | ५० | | ३९ | | ४९ | | ४० | | ४७ | | ४२ | | ४६ | अग.४ |
| फर. ६ | | ३४ | | ५५ | | ३५ | | ५४ | | ३६ | | ५२ | | ३८ | | ५१ | | ३९ | | ५० | १० |
| १२ | | ३१ | | ५८ | | ३२ | | ५७ | | ३३ | | ५६ | | ३४ | | ५५ | | ३६ | | ५३ | १६ |
| १८ | | २८ | ६ | १ | | २९ | ६ | ० | | ३० | | ५९ | | ३० | | ५८ | | ३१ | | ५७ | २२ |
| २४ | | २४ | | ३ | | २४ | | ३ | | २५ | ६ | २ | | २६ | ६ | १ | | २७ | ६ | ० | २९ |
| मार्च २ | | १९ | | ५ | | २० | | ५ | | २० | | ४ | | २१ | | ४ | | २२ | | ३ | सितं. ४ |
| ८ | | १५ | | ७ | | १५ | | ७ | | १५ | | ७ | | १६ | | ६ | | १६ | | ६ | १० |
| १४ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | | १० | | ९ | १६ |
| २० | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | २२ |
| २६ | ५ | ५९ | | १३ | ५ | ५९ | | १३ | ५ | ५९ | | १३ | ५ | ५९ | | १३ | ५ | ५८ | | १४ | २८ |
| अप्रै. २ | | ५३ | | १५ | | ५३ | | १५ | | ५२ | | १५ | | ५२ | | १६ | | ५१ | | १६ | अक्टू.६ |
| ८ | | ४८ | | १६ | | ४७ | | १७ | | ४७ | | १७ | | ४६ | | १८ | | ४६ | | १९ | ११ |
| १४ | | ४३ | | १८ | | ४२ | | १९ | | ४२ | | १९ | | ४१ | | २० | | ४० | | २१ | १७ |
| २० | | ३८ | | २० | | ३८ | | २१ | | ३७ | | २२ | | ३६ | | २३ | | ३५ | | २४ | २३ |
| २६ | | ३४ | | २२ | | ३३ | | २३ | | ३२ | | २४ | | ३१ | | २५ | | ३० | | २६ | २९ |
| मई १ | | ३१ | | २३ | | ३० | | २५ | | २९ | | २६ | | २७ | | २७ | | २६ | | २९ | नवं. ३ |
| ७ | | २८ | | २६ | | २६ | | २७ | | २५ | | २९ | | २३ | | ३० | | २२ | | ३२ | ९ |
| १३ | | २५ | | २८ | | २३ | | ३० | | २२ | | ३१ | | २० | | ३३ | | १९ | | ३४ | १५ |
| १९ | | २३ | | ३० | | २१ | | ३२ | | १९ | | ३४ | | १८ | | ३६ | | १६ | | ३७ | २० |
| २५ | | २१ | | ३३ | | १९ | | ३५ | | १७ | | ३६ | | १६ | | ३८ | | १४ | | ४० | २६ |
| ३१ | | २० | | ३५ | | १८ | | ३७ | | १६ | | ३९ | | १४ | | ४१ | | १२ | | ४३ | दिसं. २ |
| जून ६ | | २० | | ३८ | | १८ | | ४० | | १६ | | ४२ | | १४ | | ४४ | | १२ | | ४६ | ७ |
| १२ | | २० | | ४० | | १८ | | ४२ | | १६ | | ४४ | | १४ | | ४६ | | १२ | | ४८ | १३ |
| १८ | | २१ | | ४१ | | १९ | | ४३ | | १७ | | ४५ | | १५ | | ४७ | | १२ | | ५० | १९ |
| २४ | | २२ | | ४३ | | २० | | ४५ | | १८ | | ४७ | | १६ | | ४९ | | १४ | | ५१ | २४ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३० |

| उत्तर अक्षांश | अक्षांश २५ | | | | अक्षांश २६ | | | | अक्षांश २७ | | | | अक्षांश २८ | | | | अक्षांश २९ | | | | दक्षिण अक्षांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | मा. ता. |
| जन. १ | ६ | ४५ | ५ | २२ | ६ | ४७ | ५ | २० | ६ | ४९ | ५ | १८ | ६ | ५२ | ५ | १६ | ६ | ५४ | ५ | १४ | जुला. ३ |
| ७ | | ४७ | | २६ | | ४९ | | २४ | | ५१ | | २२ | | ५३ | | २० | | ५५ | | १८ | ९ |
| १३ | | ४७ | | ३१ | | ४९ | | २९ | | ५१ | | २७ | | ५३ | | २५ | | ५५ | | २३ | १५ |
| १९ | | ४७ | | ३५ | | ४८ | | ३३ | | ५० | | ३२ | | ५२ | | ३० | | ५४ | | २८ | २२ |
| २५ | | ४५ | | ४० | | ४७ | | ३८ | | ४९ | | ३६ | | ५० | | ३५ | | ५२ | | ३३ | २८ |
| ३१ | | ४३ | | ४४ | | ४५ | | ४३ | | ४६ | | ४१ | | ४८ | | ३९ | | ५० | | ३८ | अग.४ |
| फर. ६ | | ४० | | ४८ | | ४२ | | ४७ | | ४३ | | ४६ | | ४४ | | ४४ | | ४६ | | ४३ | १० |
| १२ | | ३७ | | ५२ | | ३८ | | ५१ | | ३९ | | ५० | | ४० | | ४९ | | ४२ | | ४८ | १६ |
| १८ | | ३२ | | ५६ | | ३३ | | ५५ | | ३४ | | ५४ | | ३५ | | ५३ | | ३६ | | ५२ | २२ |
| २४ | | २८ | ६ | ० | | २८ | | ५९ | | २९ | | ५८ | | ३० | | ५७ | | ३१ | | ५६ | २९ |
| मार्च २ | | २२ | | ३ | | २३ | ६ | २ | | २३ | ६ | २ | | २४ | ६ | १ | | २५ | ६ | ० | सितं. ४ |
| ८ | | १७ | | ६ | | १७ | | ५ | | १७ | | ५ | | १८ | | ५ | | १८ | | ४ | १० |
| १४ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | | ११ | | ८ | १६ |
| २० | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | २२ |
| २६ | ५ | ५८ | | १४ | ५ | ५८ | | १४ | ५ | ५८ | | १४ | ५ | ५८ | | १५ | ५ | ५७ | | १५ | २८ |
| अप्रै. २ | | ५१ | | १७ | | ५१ | | १७ | | ५० | | १८ | | ५० | | १८ | | ४९ | | १९ | अक्टू.६ |
| ८ | | ४५ | | १९ | | ४४ | | २० | | ४४ | | २१ | | ४३ | | २१ | | ४२ | | २२ | ११ |
| १४ | | ३९ | | २२ | | ३८ | | २३ | | ३७ | | २४ | | ३७ | | २५ | | ३६ | | २५ | १७ |
| २० | | ३४ | | २५ | | ३३ | | २६ | | ३१ | | २७ | | ३० | | २८ | | २९ | | २९ | २३ |
| २६ | | २८ | | २८ | | २७ | | २९ | | २६ | | ३० | | २५ | | ३१ | | २३ | | ३३ | २९ |
| मई १ | | २५ | | ३० | | २३ | | ३१ | | २२ | | ३३ | | २० | | ३४ | | १९ | | ३६ | नवं. ३ |
| ७ | | २० | | ३३ | | १९ | | ३५ | | १७ | | ३६ | | १६ | | ३८ | | १४ | | ३९ | ९ |
| १३ | | १७ | | ३६ | | १५ | | ३८ | | १३ | | ४० | | १२ | | ४१ | | १० | | ४३ | १५ |
| १९ | | १४ | | ३९ | | १२ | | ४१ | | १० | | ४३ | | ८ | | ४५ | | ६ | | ४७ | २० |
| २५ | | १२ | | ४२ | | १० | | ४४ | | ८ | | ४६ | | ६ | | ४८ | | ४ | | ५० | २६ |
| ३१ | | १० | | ४५ | | ८ | | ४७ | | ६ | | ४९ | | ४ | | ५१ | | २ | | ५४ | दिसं. २ |
| जून ६ | | १० | | ४८ | | ७ | | ५० | | ५ | | ५२ | | ३ | | ५४ | | १ | | ५७ | ७ |
| १२ | | १० | | ५० | | ७ | | ५२ | | ५ | | ५४ | | ३ | | ५७ | | १ | | ५९ | १३ |
| १८ | | १० | | ५२ | | ८ | | ५४ | | ६ | | ५६ | | ३ | | ५९ | | १ | ७ | १ | १९ |
| २४ | | १२ | | ५३ | | ९ | | ५५ | | ७ | | ५८ | | ५ | ७ | ० | | २ | | २ | २४ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३० |

| उत्तर अक्षांश | अक्षांश ३० | | | | अक्षांश ३१ | | | | अक्षांश ३२ | | | | अक्षांश ३३ | | | | अक्षांश ३४ | | | | दक्षिण अक्षांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | मा. ता. |
| जन. १ | ६ | ५६ | ५ | ११ | ६ | ५८ | ५ | ९ | ७ | १ | ५ | ७ | ७ | ३ | ५ | ४ | ७ | ६ | ५ | २ | जुला. ३ |
| ७ | | ५७ | | १६ | | ५९ | | १४ | | २ | | ११ | | ४ | | ९ | | ६ | | ७ | ९ |
| १३ | | ५७ | | २१ | | ५९ | | १९ | | १ | | ११ | | ४ | | १४ | | ६ | | १२ | १५ |
| १९ | | ५६ | | २६ | | ५८ | | २४ | | ० | | २२ | | २ | | २० | | ४ | | १८ | २२ |
| २५ | | ५४ | | ३१ | | ५६ | | २९ | ६ | ५८ | | २७ | | ० | | २५ | | २ | | २३ | २८ |
| ३१ | | ५१ | | ३६ | | ५३ | | ३५ | | ५५ | | ३३ | ६ | ५६ | | ३१ | ६ | ५८ | | २९ | अग.४ |
| फर. ६ | | ४७ | | ४१ | | ४९ | | ४० | | ५० | | ३८ | | ५२ | | ३७ | | ५३ | | ३५ | १० |
| १२ | | ४३ | | ४६ | | ४४ | | ४५ | | ४५ | | ४४ | | ४७ | | ४२ | | ४८ | | ४१ | १६ |
| १८ | | ३८ | | ५१ | | ३९ | | ५० | | ४० | | ४९ | | ४१ | | ४८ | | ४२ | | ४७ | २२ |
| २४ | | ३२ | | ५५ | | ३२ | | ५५ | | ३३ | | ५४ | | ३४ | | ५३ | | ३५ | | ५२ | २९ |
| मार्च २ | | २५ | ६ | ० | | २६ | | ५९ | | २७ | | ५८ | | २७ | | ५८ | | २८ | | ५७ | सितं. ४ |
| ८ | | १९ | | ४ | | १९ | ६ | ३ | | १९ | ६ | ३ | | २० | ६ | २ | | २० | ६ | २ | १० |
| १४ | | १२ | | ८ | | १२ | | ७ | | १२ | | ७ | | १२ | | ७ | | १३ | | ७ | १६ |
| २० | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | ११ | | ४ | | १२ | २२ |
| २६ | ५ | ५७ | | १५ | ५ | ५७ | | १५ | ५ | ५७ | | १६ | ५ | ५६ | | १६ | ५ | ५६ | | १६ | २८ |
| अप्रै. २ | | ४९ | | १९ | | ४८ | | २० | | ४८ | | २० | | ४७ | | २१ | | ४७ | | २१ | अक्टू.६ |
| ८ | | ४२ | | २३ | | ४१ | | २४ | | ४० | | २४ | | ३९ | | २५ | | ३९ | | २६ | ११ |
| १४ | | ३५ | | २६ | | ३४ | | २७ | | ३३ | | २८ | | ३२ | | २९ | | ३१ | | ३० | १७ |
| २० | | २८ | | ३० | | २७ | | ३१ | | २६ | | ३३ | | २५ | | ३४ | | २३ | | ३५ | २३ |
| २६ | | २२ | | ३४ | | २१ | | ३५ | | १९ | | ३७ | | १८ | | ३८ | | १७ | | ४० | २९ |
| मई १ | | १७ | | ३७ | | १६ | | ३९ | | १४ | | ४० | | १३ | | ४२ | | ११ | | ४३ | नवं. ३ |
| ७ | | १२ | | ४१ | | ११ | | ४३ | | ९ | | ४५ | | ७ | | ४६ | | ५ | | ४८ | ९ |
| १३ | | ८ | | ४५ | | ६ | | ४७ | | ४ | | ४९ | | २ | | ५१ | | ० | | ५३ | १५ |
| १९ | | ४ | | ४९ | | २ | | ५१ | | ० | | ५३ | ४ | ५८ | | ५५ | ४ | ५६ | | ५७ | २० |
| २५ | | २ | | ५२ | ४ | ५९ | | ५५ | ४ | ५७ | | ५७ | | ५५ | | ५९ | | ५३ | ७ | २ | २६ |
| ३१ | | ० | | ५६ | | ५७ | | ५८ | | ५५ | ७ | ० | | ५३ | ७ | ३ | | ५० | | ५ | दिसं. २ |
| जून ६ | ४ | ५९ | | ५९ | | ५६ | ७ | १ | | ५४ | | ४ | | ५१ | | ६ | | ४९ | | ९ | ७ |
| १२ | | ५८ | ७ | १ | | ५६ | | ४ | | ५३ | | ६ | | ५१ | | ९ | | ४८ | | १२ | १३ |
| १८ | | ५९ | | ३ | | ५६ | | ६ | | ५४ | | ८ | | ५१ | | ११ | | ४८ | | १४ | १९ |
| २४ | ५ | ० | | ५ | | ५७ | | ७ | | ५५ | | १० | | ५२ | | १२ | | ५० | | १५ | २४ |
| [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | [illegible] | ३० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



| उत्तर अक्षांश | अक्षांश २० | | | | अक्षांश २१ | | | | अक्षांश २२ | | | | अक्षांश २३ | | | | अक्षांश २४ | | | | अक्षांश २५ | | | | अक्षांश २६ | | | | अक्षांश २७ | | | | अक्षांश २८ | | | | अक्षांश २९ | | | | अक्षांश ३० | | | | अक्षांश ३१ | | | | अक्षांश ३२ | | | | अक्षांश ३३ | | | | अक्षांश ३४ | | | | दक्षिण अक्षांश |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | उदय | | अस्त | | |
| मा. ता. | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | क | मि | मा. ता. |
| जुला. ६ | ५ | २६ | ६ | ४४ | ५ | २४ | ६ | ४६ | ५ | २२ | ६ | ४८ | ५ | २० | ६ | ५० | ५ | १८ | ६ | ५२ | ५ | १६ | ६ | ५४ | ५ | १३ | ६ | ५६ | ५ | ११ | ६ | ५८ | ५ | ९ | ७ | ० | ५ | ७ | ७ | ३ | ५ | ४ | ७ | ५ | ५ | २ | ७ | ७ | ५ | ० | ७ | १० | ४ | ५७ | ७ | १२ | ४ | ५४ | ७ | १५ | जन. ४ |
| १२ | | २८ | | ४३ | | २६ | | ४५ | | २४ | | ४७ | | २२ | | ४९ | | २० | | ५१ | | १८ | | ५३ | | १६ | | ५५ | | १४ | | ५७ | | १२ | ६ | ५९ | | १० | | १ | | ७ | | ४ | | ५ | | ६ | | ३ | | ८ | ५ | ० | | ११ | | ५८ | | १३ | १० |
| १८ | | ३० | | ४२ | | २८ | | ४४ | | २६ | | ४६ | | २५ | | ४८ | | २३ | | ४९ | | २१ | | ५१ | | १९ | | ५३ | | १७ | | ५५ | | १५ | | ५७ | | १३ | ६ | ५९ | | १० | | २ | | ८ | | ४ | | ६ | | ६ | | ४ | | ८ | ५ | १ | | ११ | १५ |
| २४ | | ३२ | | ४० | | ३१ | | ४२ | | २९ | | ४४ | | २७ | | ४६ | | २५ | | ४७ | | २४ | | ४९ | | २२ | | ५१ | | २० | | [illegible] | | १८ | | ५५ | | १६ | | ५७ | | १४ | ६ | ५९ | | १२ | | १ | | १० | | ३ | | ८ | | ५ | | ५ | | ७ | २१ |
| ३० | | ३१ | | ३८ | | ३३ | | ४० | | ३१ | | ४१ | | ३० | | ४३ | | २८ | | ४४ | | २६ | | ४६ | | २५ | | ४८ | | २३ | | ४९ | | २१ | | ५१ | | १९ | | ५३ | | १८ | | ५५ | | १६ | ६ | ५७ | | १४ | ६ | ५९ | | १२ | | १ | | १० | | ३ | २७ |
| अग. ५ | | ३७ | | ३५ | | ३५ | | ३६ | | ३४ | | ३८ | | ३२ | | ३९ | | ३१ | | ४१ | | २९ | | ४२ | | २८ | | ४४ | | २६ | | ४५ | | २५ | | ४७ | | २३ | | ४९ | | २१ | | ५० | | १९ | | ५२ | | १८ | | ५४ | | १६ | ६ | ५६ | | १४ | ६ | ५७ | फर. १ |
| ११ | | ३९ | | ३२ | | ३७ | | ३३ | | ३६ | | ३४ | | ३५ | | ३५ | | ३३ | | ३७ | | ३२ | | ३८ | | ३१ | | ३९ | | २९ | | ४१ | | २८ | | ४२ | | २६ | | ४४ | | २५ | | ४५ | | २३ | | ४७ | | २२ | | ४८ | | २० | | ५० | | १८ | | ५२ | ७ |
| १७ | | ४० | | २८ | | ३९ | | २९ | | ३८ | | ३० | | ३७ | | ३१ | | ३६ | | ३२ | | ३५ | | ३३ | | ३३ | | ३४ | | ३२ | | ३६ | | ३१ | | ३७ | | ३० | | ३८ | | २८ | | ३९ | | २७ | | ४१ | | २६ | | ४२ | | २४ | | ४४ | | २३ | | ४५ | १३ |
| २३ | | ४२ | | २३ | | ४१ | | २४ | | ४० | | २५ | | ३९ | | २६ | | ३८ | | २७ | | ३७ | | २८ | | ३६ | | २९ | | ३५ | | ३० | | ३४ | | ३१ | | ३३ | | ३२ | | ३२ | | ३३ | | ३१ | | ३४ | | २९ | | ३५ | | २८ | | ३७ | | २७ | | ३८ | १८ |
| २९ | | ४४ | | १८ | | ४३ | | १९ | | ४२ | | २० | | ४१ | | २० | | ४० | | २१ | | ४० | | २२ | | ३९ | | २३ | | ३८ | | २४ | | ३७ | | २५ | | ३६ | | २५ | | ३५ | | २६ | | ३४ | | २७ | | ३३ | | २८ | | ३२ | | २९ | | ३१ | | ३० | २४ |
| सित. ४ | | ४५ | | १३ | | ४४ | | १३ | | ४४ | | १४ | | ४३ | | १५ | | ४२ | | १५ | | ४२ | | १६ | | ४१ | | १७ | | ४० | | १७ | | ४० | | १८ | | ३९ | | १९ | | ३८ | | १९ | | ३८ | | २० | | ३७ | | २१ | | ३६ | | २१ | | ३५ | | २२ | मार्च २ |
| १० | | ४६ | | ८ | | ४६ | | ८ | | ४५ | | ८ | | ४५ | | ९ | | ४४ | | ९ | | ४४ | | १० | | ४४ | | १० | | ४३ | | ११ | | ४३ | | ११ | | ४२ | | ११ | | ४२ | | १२ | | ४१ | | १२ | | ४१ | | १३ | | ४० | | १३ | | ४० | | १४ | ८ |
| १६ | | ४८ | | २ | | ४७ | | २ | | ४७ | | ३ | | ४७ | | ३ | | ४६ | | ३ | | ४६ | | ३ | | ४६ | | ४ | | ४६ | | ४ | | ४५ | | ४ | | ४५ | | ५ | | ४५ | | ५ | | ४५ | | ५ | | ४४ | | ५ | | ४४ | | ५ | | ४४ | | ६ | १४ |
| २२ | | ४९ | ५ | ५७ | | ४९ | ५ | ५७ | | ४९ | ५ | ५७ | | ४९ | ५ | ५७ | | ४९ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | | ४८ | ५ | ५७ | २० |
| २८ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५१ | | ५१ | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५१ | | ५० | | ५२ | | ४९ | | ५२ | | ४९ | | ५२ | | ४९ | | ५२ | | ४९ | २६ |
| अक्टू. ३ | | ५१ | | ४७ | | ५२ | | ४६ | | ५२ | | ४६ | | ५२ | | ४६ | | ५२ | | ४५ | | ५३ | | ४५ | | ५३ | | ४५ | | ५३ | | ४४ | | ५४ | | ४४ | | ५४ | | ४४ | | ५४ | | ४३ | | ५५ | | ४३ | | ५५ | | ४३ | | ५५ | | ४२ | | ५६ | | ४२ | ३० |
| ९ | | ५३ | | ४२ | | ५३ | | ४१ | | ५४ | | ४१ | | ५४ | | ४० | | ५५ | | ४० | | ५५ | | ३९ | | ५६ | | ३८ | | ५६ | | ३८ | | ५७ | | ३७ | | ५७ | | ३७ | | ५८ | | ३६ | | ५८ | | ३६ | | ५९ | | ३५ | ६ | ० | | ३५ | ६ | ० | | ३४ | अप्रै. ५ |
| १५ | | ५५ | | ३७ | | ५५ | | ३६ | | ५६ | | ३५ | | ५७ | | ३५ | | ५७ | | ३४ | | ५८ | | ३३ | | ५९ | | ३३ | ६ | ० | | ३२ | ६ | ० | | ३१ | ६ | १ | | ३० | ६ | २ | | ३० | ६ | २ | | २९ | ६ | ३ | | २८ | | ४ | | २७ | | ५ | | २६ | १२ |
| २१ | | ५७ | | ३२ | | ५८ | | ३२ | | ५८ | | ३१ | | ५९ | | ३० | ६ | ० | | २९ | ६ | १ | | २८ | ६ | २ | | २७ | | ३ | | २६ | | ४ | | २५ | | ५ | | २४ | | ६ | | २३ | | ७ | | २२ | | ८ | | २१ | | ९ | | २० | | १० | | १९ | १८ |
| २७ | | ५९ | | २९ | ६ | ० | | २७ | ६ | १ | | २६ | ६ | २ | | २५ | | ३ | | २४ | | ४ | | २३ | | ५ | | २२ | | ७ | | २१ | | ८ | | २० | | ९ | | १९ | | १० | | १८ | | ११ | | १६ | | १२ | | १५ | | १४ | | १४ | | १५ | | १३ | २४ |
| नवं. २ | ६ | २ | | २५ | | ३ | | २४ | | ४ | | २३ | | ५ | | २२ | | ७ | | २० | | ८ | | १९ | | ९ | | १८ | | १० | | १७ | | १२ | | १५ | | १३ | | १४ | | १४ | | १२ | | १६ | | ११ | | १७ | | १० | | १९ | | ८ | | २० | | ७ | ३० |
| ८ | | ५ | | २३ | | ६ | | २१ | | ८ | | २० | | ९ | | १८ | | १० | | १७ | | १२ | | १६ | | १३ | | १४ | | १५ | | १३ | | १६ | | ११ | | १८ | | १० | | १९ | | ८ | | २१ | | ७ | | २२ | | ५ | | २४ | | ३ | | २६ | | २ | मई ६ |
| १४ | | ८ | | २१ | | १० | | १९ | | ११ | | १८ | | १३ | | १६ | | १४ | | १५ | | १६ | | १३ | | १७ | | ११ | | १९ | | १० | | २१ | | ८ | | २२ | | ६ | | २४ | | ५ | | २६ | | ३ | | २८ | | १ | | २९ | ४ | ५९ | | ३१ | ४ | ५७ | १२ |
| २० | | १२ | | २० | | १३ | | १८ | | १५ | | १६ | | १७ | | १५ | | १८ | | १३ | | २० | | ११ | | २२ | | ९ | | २४ | | ८ | | २६ | | ६ | | २७ | | ४ | | २९ | | २ | | ३१ | | ० | | ३३ | ४ | ५८ | | ३५ | | ५६ | | ३७ | | ५४ | १९ |
| २६ | | १५ | | १९ | | १७ | | १७ | | १९ | | १६ | | २१ | | १४ | | २२ | | १२ | | २४ | | १० | | २६ | | ८ | | २८ | | ६ | | ३० | | ४ | | ३२ | | २ | | ३४ | | ० | | ३६ | ४ | ५८ | | ३८ | | ५६ | | ४० | | ५४ | | ४३ | | ५२ | २५ |
| दिस. २ | | १९ | | २० | | २१ | | १८ | | २३ | | १७ | | २५ | | १५ | | २७ | | १२ | | २९ | | १० | | ३१ | | ८ | | ३३ | | ७ | | ३५ | | ५ | | ३७ | | २ | | ३९ | | ० | | ४१ | | ५८ | | ४३ | | ५५ | | ४६ | | ५३ | | ४८ | | ५१ | ३१ |
| ८ | | २३ | | २१ | | २५ | | १९ | | २७ | | १७ | | २९ | | १५ | | ३१ | | १३ | | ३३ | | ११ | | ३५ | | ९ | | ३७ | | ८ | | ३९ | | ५ | | ४१ | | ३ | | ४३ | | ० | | ४६ | | ५८ | | ४८ | | ५६ | | ५० | | ५३ | | ५३ | | ५१ | जून ७ |
| १४ | | २७ | | २३ | | २८ | | २१ | | ३० | | १९ | | ३२ | | १७ | | ३५ | | १५ | | ३७ | | १३ | | ४० | | ११ | | ४२ | | ९ | | ४४ | | ७ | | ४६ | | ४ | | ४८ | | २ | | ५० | | ५९ | | ५२ | | ५७ | | ५५ | | ५५ | | ५० | | ५२ | १३ |
| २० | | ३० | | २५ | | ३२ | | २३ | | ३४ | | २१ | | ३६ | | १९ | | ३८ | | १७ | | ४० | | १५ | | ४३ | | १३ | | ४५ | | ११ | | ४७ | | ८ | | ४९ | | ६ | | ५१ | | ४ | | ५३ | ५ | २ | | ५६ | | ५९ | | ५८ | | ५७ | | ० | | ५४ | १९ |
| २६ | | ३३ | | २८ | | ३५ | | २६ | | ३७ | | २४ | | ३९ | | २२ | | ४१ | | २० | | ४३ | | १८ | | ४५ | | १६ | | ४७ | | १४ | | ४९ | | १३ | | ५२ | | १० | | ५४ | | ७ | | ५६ | | ५ | | ५९ | ५ | २ | ७ | १ | ५ | ० | ७ | ४ | | ५७ | २६ |

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के नीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) **सूर्योदय**—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

**उदाहरण (१)**—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

| | |
|---|---|
| ९ अक्टूबर का सूर्योदय | ५-५८ |
| १५ अक्टूबर का सूर्योदय | ६-०२ दिया गया है। |

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

| | | | |
|---|---|---|---|
| | ६ | ०० | ०० |
| स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय | ६ | ०० | ०० |
| भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा | ० | २२ | ३२ |
| किरण वक्री भवन संस्कार | ० | २ | ०० |
| चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार | ६ | २४ | ३२ |

**उदाहरण (२)**—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

| | | | |
|---|---|---|---|
| अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीय समयानुसार आया | ६ | १० | ०० |
| जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया | ० | २६ | ४० |
| किरण वक्री भवन संस्कार | ० | २ | ०० |
| भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय | ६ | ३८ | ४० |

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) **इष्टकाल**—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) **सूर्य स्पष्ट**—पंचाग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) **लग्न सारिणी**—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रात: ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३।१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

| | घं. | मि. | सै. |
|---|---|---|---|
| २५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला | | | |
| दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा. | ११ | ५५ | ०० |
| २५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा. | ५ | २८ | ०० |
| ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए | ६ | २७ | ०० |
| | ६ | २७ | ०० |
| | ३ | १३ | ३० |
| घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल | १६ | ७ | ३० |

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३।२७ + १६।०८= २९।३५

उपरोक्त २९।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चोथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११।३७ से १३।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो इष्ट समय २९।३५ तक (२९।३५—२९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ लग्न आई ५।३।४९।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला ०५ विकला। यह स्थूल लग्न स्पष्ट हुआ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

| राशि | मेष ० | वृषभ १ | मिथुन २ | कर्क ३ | सिंह ४ | कन्या ५ | तुला ६ | वृश्चिक ७ | धनु ८ | मकर ९ | कुम्भ १० | मीन ११ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ८ २३ ५३ २६ | ९ १६ ४३ ३९ | १० १५ ४६ ४८ | ११ २१ १४ ० | ० २७ ९ २५ | १ २९ ३८ ३ | ३ १ ४५ ७ | ४ ४ १० ७ | ५ १० ३९ १४ | ६ १४ ३८ १ | ७ ११ ४६ ५१ | ८ ३ २४ ३९ |
| १ | ८ २४ ३७ ५६ | ९ १७ २३ २१ | १० १६ ५२ ४२ | ११ २२ २७ ४५ | ० २८ १८ ३९ | २ ० ४१ ५ | ३ १ ४८ ५ | ४ ५ १९ ५ | ५ ११ ५३ १ | ६ १५ ३९ २ | ७ १२ ५ ३२ | ८ ४ ५ १२ |
| २ | ८ २५ १८ २६ | ९ १८ २९ ६ | १० १७ ५७ ५८ | ११ २३ ४१ ३६ | ० २९ २७ ५२ | २ १ ४३ १० | ३ २ ५० ८ | ४ ६ २९ ३ | ५ १३ ६ ५ | ६ १६ ४८ ५ | ७ १३ २२ ३२ | ८ ४ ४९ ५ |
| ३ | ८ २५ ५९ ३८ | ९ १९ १९ २४ | १० १९ ३ २ | ११ २४ ५५ २३ | १ ० ३७ ६ | २ २ ४५ १२ | ३ ३ ५२ १३ | ४ ७ ३८ २ | ५ १४ २० ३ | ६ १७ ४१ २ | ७ १४ ९ ३३ | ८ ५ २८ ३ |
| ४ | ८ २६ ४० ४३ | ९ २० १० ४२ | १० २० ९ २७ | ११ २६ ९ ५६ | १ १ ४६ १९ | २ ३ ४७ १ | ३ ४ ५४ १५ | ४ ८ ४३ ० | ५ १५ ३४ १५ | ६ १८ ४२ १ | ७ १४ ५६ ३० | ८ ६ ९ ० |
| ५ | ८ २७ २१ ४२ | ९ २१ १ २४ | १० २१ १५ ३ | ११ २७ २३ २४ | १ २ ५५ ३३ | २ ४ ५० ० | ३ ५ ५६ १९ | ४ ९ ५३ १ | ५ १६ ४८ २२ | ६ १९ ४३ ० | ७ १५ ४३ २२ | ८ ६ ५० ८ |
| ६ | ८ २८ २ ४७ | ९ २१ २ ६ | १० २२ २० ३६ | ११ २८ ३६ ४१ | १ ४ ४ ४८ | २ ५ ५२ ५ | ३ ६ ५९ २२ | ४ ११ ३ ५ | ५ १८ २ ११ | ६ २० ४४ ३ | ७ १६ ३० ७ | ८ ७ ३२ ७ |
| ७ | ८ २८ ४३ ५२ | ९ २२ ४२ ५४ | १० २३ २९ १३ | ११ २९ ५० २६ | १ ५ १४ २ | २ ६ ५४ ८ | ३ ८ १ २ | ४ १२ २० १३ | ५ १९ १५ ३ | ६ २१ ४५ १ | ७ १७ २१ ५ | ८ ८ १२ ६ |
| ८ | ८ २९ २४ २७ | ९ २३ ३३ ४४ | १० २४ ३१ ५१ | ० १ ४ ५३ | १ ६ २३ १६ | २ ७ ५९ ३ | ३ ९ २ ५ | ४ १३ ३५ २५ | ५ २० २९ २९ | ६ २२ ४६ ५० | ७ १८ १४ ९ | ८ ८ ५३ १ |
| ९ | ९ ० ५ ५२ | ९ २४ २४ ३० | १० २५ २७ २४ | ० २ १८ १९ | १ ७ ३२ ३० | २ ८ ५९ ७ | ३ १० ५ १४ | ४ १४ ४९ ३४ | ५ २१ ४३ १० | ६ २३ ४७ २२ | ७ १८ ५१ १० | ८ ९ ३४ ५ |
| १० | ९ ० ४० ११ | ९ २५ १८ १८ | ११ २६ ४१ २० | ० ३ ३२ ७ | १ ८ ४२ ५४ | २ १० १ १३ | ३ ११ ८ ३८ | ४ १६ ४ ४५ | ५ २२ ५७ १५ | ६ २४ ४८ ११ | ७ १९ ३८ १२ | ८ १० १५ ३ |
| ११ | ९ १ २९ ५१ | ९ २६ ६ २ | ११ २७ ५१ २३ | ० ४ ४७ ५१ | १ ९ ५६ ३२ | २ ११ ३ २१ | ३ १२ १५ ५५ | ४ १७ १६ ८ | ५ २४ ११ २५ | ६ २५ ४९ ८ | ७ २० २४ ८ | ८ १० ५६ ४२ |
| १२ | ९ २ १५ २६ | ९ २७ ८ ५४ | ११ २९ ५ १२ | ० ६ २ २२ | १ ११ २० ५ | २ १२ ५ ३५ | ३ १३ २३ १७ | ४ १८ ३० ३ | ५ २५ १४ ४८ | ६ २६ ५० १५ | ७ २१ ५ ३ | ८ ११ २७ ४७ |
| १३ | ९ ३ २ ३ | ९ २८ ९ ५४ | ११ ० ९ ८ | ० ७ १७ ४१ | १ १२ ३५ ८ | २ १३ ७ ५२ | ३ १४ २१ १२ | ४ १९ ४४ १० | ५ २६ १९ ३७ | ६ २७ ५२ ३० | ७ २१ ५६ १५ | ८ १२ १३ ३२ |
| १४ | ९ ३ ४६ ३८ | ९ २९ १० ५४ | ११ १ ३२ ५३ | ० ८ ३१ १५ | १ १३ ४४ १२ | २ १४ १० ० | ३ १५ ४२ ३ | ४ २० ५८ १ | ५ २७ २७ ३७ | ७ २८ ४० ३२ | ७ २२ ३८ २७ | ८ १२ ५९ २६ |
| १५ | ९ ४ ३६ ४९ | १० ० ११ ५४ | ११ २ ४६ ३७ | ० ९ ४५ ४२ | १ १४ ३५ १२ | २ १५ १२ १ | ३ १६ ५० ० | ४ २२ १२ २ | ५ २८ ३० ३७ | ७ २९ १ ४० | ७ २३ २९ ३७ | ८ १३ ४० १२ |
| १६ | ९ ५ २३ १० | १० १ १२ ५४ | ११ ४ ० ३८ | ० ११ ० १३ | १ १५ ४४ १९ | २ १६ १४ ० | ३ १८ १ १ | ४ २३ २५ ५ | ५ २९ ३६ ४२ | ७ ० १ ४५ | ७ २४ १६ ४८ | ८ १४ २० ४२ |
| १७ | ९ ६ १० ४६ | १० २ १३ ५४ | ११ ५ १४ २४ | ० १२ ९ २५ | १ १६ १० २० | २ १७ १६ ७ | ३ १९ १ ८ | ४ २४ ३८ ३ | ५ ० ४२ ३ | ७ ० ५२ ५० | ७ २४ ५९ ५९ | ८ १५ ४० ३५ |
| १८ | ९ ६ ५७ ४६ | १० ३ १४ ५४ | ११ ६ २८ १० | ० १३ १८ ३९ | १ १७ १२ १५ | २ १८ १८ १४ | ३ २० १९ १५ | ४ २५ ५५ ५७ | ६ १ ४७ ४ | ७ १ ४३ ७ | ७ २५ १२ १ | ८ १५ ३५ १ |
| १९ | ९ ७ ४४ ४८ | १० ४ १५ ५४ | ११ ७ ४१ ५५ | ० १४ २७ ५२ | १ १८ १४ ४ | २ १९ २१ २२ | ३ २१ २८ २२ | ४ २७ ७ १२ | ६ २ ५३ ५ | ७ २ ३३ ३ | ७ २५ ५६ २ | ८ १६ २४ ३ |
| २० | ९ ८ ३७ ४० | १० ५ १६ ५४ | ११ ८ ५५ ५५ | ० १५ ३७ ६ | १ १९ १६ ८ | २ २० २३ ३० | ३ २२ ३८ ८ | ५ २८ १९ २५ | ६ ३ ५८ ३ | ७ ३ २४ ४ | ७ २६ ३४ ३ | ८ १७ ५ ८ |
| २१ | ९ ९ २८ ५१ | १० ६ १७ ५४ | ११ १० ९ ४० | ० १६ ४६ १९ | १ २० १८ ९ | २ २१ २५ ३२ | ३ २३ ४८ ९ | ५ २९ ३४ १८ | ६ ५ ४ १५ | ७ ४ १५ ९ | ७ २७ १५ ५ | ८ १७ ४६ ६ |
| २२ | ९ १० ५ १ | १० ७ १८ ५४ | ११ ११ २३ २९ | ० १७ ५५ ३५ | १ २१ २७ १० | २ २२ २७ १ | ३ २४ ५८ ३५ | ५ ० ४८ २१ | ६ ६ १० १२ | ७ ५ ६ १३ | ७ २७ ५६ ८ | ८ १८ २८ ० |
| २३ | ९ ११ ७ १४ | १० ८ १९ ५४ | ११ १२ ३७ १७ | ० १९ ४ ४८ | १ २२ ३० १५ | २ २३ ३० ५ | ३ २६ ९ ४२ | ५ २ २ ७ | ६ ७ १५ २० | ७ ५ ५७ २१ | ७ २८ ३७ १० | ८ १९ ९ १ |
| २४ | ९ ११ ४२ ५० | १० ९ २० ५४ | ११ १३ ५१ ५ | ० २० १४ १२ | १ २३ ३२ ५५ | २ २४ ३२ ८ | ३ २७ १७ ५६ | ५ ३ १६ ४ | ६ ८ २१ ३० | ७ ६ ४६ २७ | ७ २९ १८ १२ | ८ १९ ५७ ५३ |
| २५ | ९ १२ ३२ ४३ | १० १० २१ ५४ | ११ १५ ४ ५७ | ० २१ २३ १६ | १ २४ ३४ ७ | २ २५ ३५ ९ | ३ २८ २४ २ | ५ ४ ३० ५ | ६ ९ २६ ५ | ७ ७ ३८ ३५ | ८ २९ ५९ ५ | ८ २० ३१ ५९ |
| २६ | ९ १३ २४ ४८ | १० ११ २४ ३४ | ११ १६ १८ ४२ | ० २२ ३२ २९ | १ २५ ३६ २ | २ २६ ३७ १० | ३ २९ ३३ ८ | ५ ५ ४३ ३ | ६ १० ३२ ८ | ७ ८ २९ ४० | ८ ० ४० ३० | ८ २१ १२ १ |
| २७ | ९ १४ २४ ५० | १० १२ २३ ३० | ११ १७ ३२ २७ | ० २३ ४१ ४३ | १ २६ ३८ ५ | २ २७ ४० २५ | ४ ० ४२ ५ | ५ ६ ५३ १ | ६ ११ ३४ ३ | ७ ९ २० ४५ | ८ १ २१ १२ | ८ २१ ५३ ५ |
| २८ | ९ १५ ६ १ | १० १३ ३५ ४० | ११ १८ ४६ २१ | ० २४ ५० ५६ | १ २७ ४० ८ | २ २८ ४२ ५० | ४ १ ५२ ३ | ५ ८ ११ १५ | ६ १२ ३६ ४५ | ७ १० १० ५७ | ८ २ ३० १६ | ८ २२ ४५ ३ |
| २९ | ९ १५ ५६ ४८ | १० १४ ४१ १७ | ११ २० ० १३ | ० २६ ० १२ | १ २८ ५३ १ | २ २९ ४३ ५९ | ४ ३ १ ७ | ५ ९ २५ ० | ६ १३ ३७ ० | ७ ११ ७ ५० | ८ २ ३ ४ | ८ २२ १५ ४ |

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ ( अक्षांश १८-३० से १९-३० तक स्थित )

( बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए )

| रा. अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ |
| मेष | १० | १८ | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ७ | १६ | २५ | ३३ | ४२ | ५१ | ० | ९ | १८ | २७ | ३६ | ४४ | ५३ | २ | ११ | २० | २९ | ३८ | ४७ | ५५ | ४ | १३ | २२ |
| १ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| वृष | ३१ | ४० | ४९ | ५७ | ६ | १५ | २४ | ३४ | ४५ | ५५ | ५ | १५ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ | ८ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | १० | २० |
| २ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ |
| मिथुन | ३० | ४१ | ५१ | १ | ११ | २२ | ३२ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ५० | २ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३८ | ५० |
| ३ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ | २३ |
| कर्क | १ | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | ० | ११ | २३ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५१ | १ | १२ | २३ | ३३ | ४४ | ५५ | ५ | १६ | २७ | ३७ | ४८ | ५९ | ९ | २० | ३१ | ४१ | ५२ | ३ | १३ | २४ | ३५ | ४५ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ |
| कन्या | ५६ | ७ | १७ | २८ | ३९ | ४९ | ० | ११ | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ४ | १५ | २५ | ३६ | ४७ | ५७ | ८ | १९ | २९ | ४० | ५१ | १ | १२ | २३ | ३३ | ४४ | ५५ | ५ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| तुला | १६ | २७ | ३७ | ४८ | ५९ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ५० | १ | १२ | २३ | ३४ |
| ७ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ |
| वृश्चिक | ४६ | ५६ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४० | ५१ | २ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | १० |
| ८ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० |
| धनु | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २८ | ३८ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १४ | २४ |
| ९ | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ |
| मकर | ३४ | ४५ | ५५ | ५ | १५ | २६ | ३६ | ४५ | ५४ | ३ | ११ | २० | २९ | ३८ | ४७ | ५६ | ५ | १४ | २२ | ३१ | ४० | ४९ | ५८ | ७ | १६ | २४ | ३३ | ४२ | ५१ | ० |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| कुम्भ | ९ | १८ | २७ | ३५ | ४४ | ५३ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ६ | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४५ | ५३ | १ | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४१ | ४९ | ५७ | ४ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| मीन | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | ० | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ३ |

## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ ( अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित )

( अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए )

| रा. अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ |
| मेष | ६ | १४ | २२ | ३० | ३७ | ४५ | ५३ | २ | १० | १९ | २८ | ३७ | ४५ | ५४ | ३ | १२ | २० | २९ | ३८ | ४६ | ५५ | ४ | १३ | २१ | ३० | ३९ | ४८ | ५६ | ५ | १४ |
| १ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| वृष | २३ | ३१ | ४० | ४९ | ५७ | ६ | १५ | २५ | ३५ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३७ | ४० | ५७ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ५० | ० | १० |
| २ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ |
| मिथुन | २० | ३१ | ४१ | ५१ | १ | १२ | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | २९ | ४० |
| ३ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ | २३ |
| कर्क | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ६ | १७ | २८ | ४० | ५१ | २ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ५ | १६ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | २८ | ३९ | ५० | १ | १२ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५० | २ | १२ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १७ | २८ | ३९ | ५० | १ | १२ | २२ | ३३ | ४४ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ |
| कन्या | ५५ | ६ | १७ | २७ | ३८ | ४९ | ० | ११ | २२ | ३२ | ४३ | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४७ | ५८ | ९ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| तुला | २० | ३१ | ४२ | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ५० | २ | १३ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४३ |
| ७ | ३९ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ |
| वृश्चिक | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३८ | ५० | १ | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ८ | १९ |
| ८ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० |
| धनु | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ४८ | ५८ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ० | १० | २० | ३० | ४१ | ५१ | १ | ११ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ३ | १३ | २३ | ३३ |
| ९ | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ |
| मकर | ४३ | ५४ | ४ | १४ | २४ | ३५ | ४५ | ५४ | २ | ११ | २० | २९ | ३७ | ४६ | ५५ | ३ | १२ | २१ | ३० | ३८ | ४७ | ५६ | ५ | १३ | २२ | ३१ | ४० | ४८ | ५७ | ६ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| कुम्भ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ४९ | ५८ | ७ | १५ | २२ | ३० | ३८ | ४६ | ५३ | १ | ९ | १७ | २५ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ५ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४४ | ५२ | ० | ८ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५४ | २ | १० | १७ | २५ | ३३ | ४१ | ४९ | ५६ | ४ | १२ | २० | २७ | ३४ | ४३ | ५१ | ५८ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection



लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ ( अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित )

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ ( अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित )

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, नाडियाद, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| मेष | २ | १० | १८ | २५ | ३३ | ४० | ४८ | ५७ | ५ | १४ | २२ | ३१ | ४० | ४८ | ५७ | ५ | १४ | २२ | ३१ | ४० | ४८ | ५७ | ६ | १४ | २३ | ३१ | ४० | ४९ | ५७ | ६ |
| १ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ |
| वृष | १४ | २३ | ३२ | ४० | ४९ | ५७ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ५० | ० |
| २ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ |
| मिथुन | १० | २० | ३० | ४० | ५० | १ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ८ | २० | ३१ |
| ३ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ |
| कर्क | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ५९ | ११ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | ९ | २० | ३१ | ४२ | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३७ | ४८ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४३ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५४ | ५ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | ० | ११ | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ६ | १७ | २८ | ३९ | ५० | १ | १२ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५१ | २ | १३ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| तुला | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ८ | १९ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ३९ | ५१ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चिक | २ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ७ | १८ | ३० |
| ८ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० |
| धनु | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४३ |
| ९ | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ |
| मकर | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३४ | ४४ | ५४ | २ | ११ | २० | २८ | ३७ | ४५ | ५४ | ३ | ११ | २० | २८ | ३७ | ४६ | ५४ | ३ | ११ | २० | २९ | ३७ | ४६ | ५५ | ३ | १२ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| कुम्भ | २० | २९ | ३७ | ४६ | ५५ | ३ | १२ | १९ | २७ | ३५ | ४२ | ५० | ५७ | ५ | १३ | २० | २८ | ३५ | ४३ | ५१ | ५८ | ६ | १३ | २१ | २९ | ३६ | ४४ | ५१ | ५९ | ७ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १४ | २२ | २९ | ३७ | ४५ | ५२ | ० | ७ | १५ | २३ | ३० | ३८ | ४५ | ५३ | १ | ८ | १६ | २३ | ३१ | ३९ | ४६ | ५४ | १ | ९ | १७ | २४ | ३२ | ३९ | ४७ | ५५ |

## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ ( अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित )

( आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तौड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, [illegible] आदि नगरों के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ५८ | ६ | १३ | २१ | २८ | ३६ | ४३ | ५१ | ० | ८ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५१ | ५९ | ८ | १६ | २५ | ३३ | ४२ | ५० | ५८ | ७ | १५ | २४ | ३२ | ४१ | ४९ | ५८ |
| १ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ६ | १५ | २३ | ३२ | ४० | ४८ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ |
| २ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ |
| मिथुन | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० | ११ | २३ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५० | २ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २१ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ |
| कर्क | ३३ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ३९ | ५० | १ | १२ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ | ८ | १९ | ३१ | ४२ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५३ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५४ | ६ | १७ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ |
| तुला | २८ | ३९ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चि. | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४० |
| ८ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० |
| धनु | ५२ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | २ | १२ | २२ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १२ | २० | २८ | ३७ | ४५ | ५४ | २ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४५ | ५३ | १ | १० | १८ | २७ | ३५ | ४४ | ५२ | १ | ९ | १८ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | २६ | ३५ | ४३ | ५२ | ० | ८ | १७ | २४ | २ | ३९ | ४७ | ५४ | २ | ९ | १६ | २४ | ३१ | ३९ | ४६ | ५४ | १ | ८ | १६ | २३ | ३१ | ३८ | ४६ | ५३ | १ | ८ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १५ | २३ | ३० | ३७ | ४५ | ५३ | ० | ७ | १५ | २२ | ३० | ३७ | ४५ | ५२ | ५९ | ७ | १४ | २२ | २९ | ३७ | ४४ | ५१ | ५९ | ६ | १४ | २१ | २९ | ३६ | ४४ | ५१ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ ( अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित )

( अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ५४ | १ | ८ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | ३ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४४ | ५३ | १ | १० | १८ | २६ | ३५ | ४३ | ५१ | ० | ८ | १६ | २५ | ३३ | ४२ | ५० |
| १ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ५८ | ७ | १५ | २३ | ३२ | ४० | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | ११ | २१ | ३१ | ४१ |
| २ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ |
| मिथुन | ५१ | १ | ११ | २१ | ३० | ४२ | ५२ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १४ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २३ |
| कर्क | २६ | ३७ | ४९ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | १ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | १२ | २४ | ३४ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १८ | २९ | ४१ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५२ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४५ | ५६ | ७ | १८ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० |
| तुला | ३० | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ४ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चिक | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | १ | १३ | २५ | ३६ | ४७ |
| ८ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| धनु | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४९ | ५९ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | ३० | ४० | ५० | ० |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५२ | १ | ९ | १८ | २६ | ३४ | ४३ | ५१ | ० | ८ | १६ | २४ | ३३ | ४१ | ४९ | ५८ | ६ | १५ | २३ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ३१ | ४० | ४८ | ५६ | ५ | १३ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५६ | ३ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ४० | ४७ | ५४ | १ | ९ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४५ | ५२ | ० | ७ | १४ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५८ | ५ | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ३ | १० | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४७ |



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ ( अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित )

( फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ५४ | २ | ९ | १६ | २३ | ३१ | ३८ | ४६ | ५५ | ३ | ११ | २० | २८ | ३६ | ४५ | ५३ | १ | १० | १८ | २६ | ३५ | ४३ | ५१ | ० | ८ | १६ | २५ | ३३ | ४१ | ५० |
| १ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ५८ | ६ | १५ | २३ | ३१ | ४० | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ |
| २ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ |
| मिथुन | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | १ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ४९ | १ | १२ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| कर्क | २४ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | १० | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | २९ | ४१ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | १ | १३ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | ९ | २१ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० |
| तुला | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ७ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चि. | १८ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २७ | ३९ | ५० |
| ८ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| धनु | २ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३० | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २० | २९ | ३७ | ४५ | ५४ | २ | १० | १९ | २७ | ३५ | ४४ | ५२ | ० | ९ | १७ | २५ | ३४ | ४२ | ५० | ५९ | ७ | १५ | २४ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ३२ | ४० | ४९ | ५७ | ५ | १४ | २२ | २९ | ३६ | ४४ | ५१ | ५८ | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४२ | ४९ | ५६ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | २ | ९ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | २१ | २४ | ३२ | ३८ | ४५ | ५३ | ० | ७ | १४ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ५ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४२ | ४९ | ५६ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३३ | ४० | ४७ |



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ ( अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित )

( हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ५२ | ५९ | ६ | १३ | २१ | २८ | ३५ | ४३ | ५२ | ० | ८ | १६ | २४ | ३३ | ४१ | ४९ | ५८ | ६ | १४ | २२ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ४ | १२ | २० | २९ | ३७ | ४५ |
| १ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ५३ | २ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १४ | २४ | ३४ | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २४ | ३४ |
| २ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| मिथुन | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २४ | ३४ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| कर्क | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १५ | २७ | ३९ | ५० | २ | १४ | २५ | ३७ | ४९ | ० | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५५ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५२ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २८ | ४० |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ८ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| तुला | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३१ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ५० | १ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ० | ११ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| वृश्चिक | २३ | ३४ | ४६ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | २ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५६ |
| ८ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| धनु | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ४ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २५ | ३३ | ४२ | ५० | ५८ | ६ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४८ | ५६ | ४ | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४६ | ५४ | २ | १० | १९ | २७ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ३५ | ४३ | ५२ | ० | ८ | १६ | २४ | ३२ | ३९ | ४६ | ५४ | ० | ८ | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५५ | २ | १० |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४५ | ५३ | ० | ७ | १४ | २१ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५७ | ४ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४५ |

## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ ( अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित )

( हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ५० | ५७ | ४ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४१ | ४९ | ५७ | ६ | १४ | २२ | ३० | ३८ | ४७ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | १ | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४१ |
| १ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ५० | ५८ | ६ | १४ | २२ | ३१ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ |
| २ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| मिथुन | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ५० | २ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५१ | ३ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| कर्क | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४५ | ५७ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५३ |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | ४ | १६ | २८ | ४० | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३६ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५१ | २ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| तुला | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५७ | ८ | २० | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १५ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ |
| वृश्चि. | २६ | ३८ | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ |
| ८ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ |
| धनु | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | २९ | ३७ | ४५ | ५४ | २ | १० | १८ | २६ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १६ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५७ | ५ | १३ | २१ | २९ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ३८ | ४६ | ५४ | २ | १० | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४५ | ५२ | ५९ | ६ | १३ | २० | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ३ | १० |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १७ | २४ | ३१ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ५० | ५७ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४६ | ५३ | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४३ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ ( अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित )

( सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३७ |
| १ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| वृष | ४५ | ५३ | १ | १० | १८ | २६ | ३४ | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २४ | ३४ | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २४ | ३४ | ४४ | ५४ | ४ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ |
| २ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| मिथुन | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| कर्क | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २९ | ४१ | ५२ | ४ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १५ | २७ | ३९ | ५० | २ | १४ | २६ | ३८ | ५० |
| ४ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | १ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | २० | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २७ | ३९ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५० | २ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ४ | १५ | २७ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| तुला | ३८ | ५० | २ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४६ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | १९ |
| ७ | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ |
| वृश्चि. | ३१ | ४३ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | ३ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ |
| ८ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ |
| धनु | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३४ | ४२ | ५० | ५८ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | १ | ९ | १७ | २५ | ३३ |
| १० | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ४१ | ४९ | ५७ | ६ | १४ | २२ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५७ | ४ | ११ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | ३८ | ४५ | ५२ | ५९ | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ |

## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ ( अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित )

( फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, होश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए )

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ४६ | ५३ | ५९ | ६ | १३ | २० | २७ | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५२ | ० | ८ | १६ | २४ | ३२ |
| १ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ |
| वृष | ४० | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ६ | १६ |
| २ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| मिथुन | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ६ | १६ | २६ | ३७ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५१ |
| ३ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| कर्क | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ० | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३४ | ४६ | ५८ | १० | २२ | ३४ | ४६ |
| ४ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | ५८ | ९ | २१ | ३३ | ४५ | ५७ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ३ | १५ | २६ | ३८ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ६ | १७ | २९ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० |
| तुला | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | ३ | १५ | २७ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २६ | ३८ | ५० | २ | १४ | २६ | ३८ | ५० | १ | १३ | २५ | ३७ | ४९ | १ | १३ | २५ |
| ७ | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ |
| वृश्चि. | ३७ | ४९ | १ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | २ | १३ |
| ८ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ |
| धनु | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४४ | ५४ | ४ | १४ | २४ | ३४ | ४४ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १२ | २२ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | ० | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५७ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३७ |
| १० | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ४५ | ५३ | १ | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | १ | ८ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५६ | ३ | १० | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ५ | १२ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १८ | २५ | ३२ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४८ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४३ | ५० | ५७ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३९ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ ( अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित )

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

| रा.अं. | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| मेष | ४३ | ५० | ५७ | ३ | १० | १७ | २४ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३१ | ३९ | ४७ | ५५ | ३ | ११ | १९ | २७ |
| १ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ |
| वृष | ३५ | ४३ | ५१ | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ३ | १३ | २३ | ३२ | ४२ | ५२ | २ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ |
| २ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| मिथुन | २० | ३० | ४० | ५० | ० | १० | २० | ३१ | ४३ | ५५ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | २ | १३ | २५ | ३७ | ४८ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ |
| ३ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| कर्क | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ७ | १९ | ३१ | ४३ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४२ |
| ४ | २२ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| सिंह | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५२ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५१ | ३ | १५ | २७ | ३९ | ५० | २ | १४ | २५ | ३७ |
| ५ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| कन्या | ४९ | १ | १३ | २४ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४६ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ८ | १९ | ३१ |
| ६ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० | ४० |
| तुला | ४३ | ५५ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ६ | १८ | ३० | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ५ | १७ | २९ |
| ७ | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ |
| वृश्चिक | ४१ | ५३ | ५ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ५ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ |
| ८ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ |
| धनु | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० | ५० | ० | १० | २० | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ८ | १८ | २८ |
| ९ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| मकर | ३८ | ४८ | ५७ | ७ | १७ | २७ | ३७ | ४५ | ५३ | १ | ९ | १७ | २५ | ३३ | ४१ | ४९ | ५७ | ५ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४४ | ५२ | ० | ८ | १६ | २४ | ३२ | ४० |
| १० | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| कुम्भ | ४८ | ५६ | ४ | १२ | २० | २८ | ३६ | ४३ | ५० | ५६ | ३ | १० | १७ | २३ | ३० | ३७ | ४४ | ५१ | ५८ | ४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | ३८ | ४५ | ५२ | ५९ | ५ | १२ |
| ११ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| मीन | १९ | २६ | ३३ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४८ | ५४ | १ | ८ | १५ | २१ | २८ | ३५ | ४२ | ४९ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | २९ | ३६ |

## इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादौ केतकी अयनांश २४

| अंशाः | ० | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| ० | ५१ | ५८ | ५ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४२ | ५० | ५९ | ७ | १५ | २३ | ३२ | ४० | ४८ | ५६ | ५ | १३ | २१ | २९ | ३७ | ४६ | ५४ | २ | १० | १९ | २७ | ३५ | ४३ |
| वृष | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ |
| १ | ५२ | ० | ८ | १६ | २५ | ३३ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ |
| मिथुन | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| २ | ४१ | ५१ | १ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५२ | ४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | १ | १३ | २४ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ५ |
| कर्क | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ३ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | २ | १४ | २५ | ३७ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ |
| सिंह | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ | २८ | २८ |
| ४ | ६ | १७ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३९ | ५० | २ | १३ | २५ | ३६ | ४८ | ५९ | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५७ | ८ | १९ | ३१ | ४२ | ५४ | ५ | १७ | २८ | ४० |
| कन्या | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ |
| ५ | ५१ | ३ | १४ | २६ | ३७ | ४९ | ० | ११ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ९ | २० | ३२ | ४३ | ५४ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५२ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | १ | १२ | २४ |
| तुला | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ३९ | ४० | ४० |
| ६ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २१ | ३३ | ४४ | ५६ | ७ | १९ | ३१ | ४२ | ५३ | ६ | १८ | २९ | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २८ | ३९ | ५१ | ३ | १५ | २६ | ३८ | ५० | १ | १३ |
| वृश्चि. | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ |
| ७ | २५ | ३६ | ४८ | ० | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ७ | १८ | ३० | ४१ | ५३ | ४ | १६ | २७ | ३८ | ३० | १ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ |
| धनु | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ |
| ८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ८ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ११ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ |
| मकर | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ |
| ९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ९ | १९ | २७ | ३५ | ४४ | ५२ | ० | ८ | १७ | २५ | ३३ | ४१ | ५० | ५८ | ६ | १४ | २२ | ३० | ३९ | ४७ | ५५ | ४ | १२ | २० | २८ |
| कुम्भ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ | ५९ |
| १० | ३७ | ४५ | ५३ | १ | १० | १८ | २६ | ३३ | ४० | ४७ | ५५ | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ | ५२ | १९ | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | ४२ | ४९ | ५६ | ३ | १० |
| मीन | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| ११ | १७ | २४ | ३१ | ३९ | ४६ | ५३ | ० | ७ | १४ | २१ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५७ | ४ | ११ | १८ | २६ | ३३ | ० | ४७ | ५४ | १ | ८ | १६ | २३ | ३० | ३७ | ४४ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

**(१) मेष**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| क्षत्रिय | अग्नि | चतुष्पाद |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | अश्विनी-१ | | | | भरणी-२ | | | | कृतिका-३ |
| चरण | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ |
| अक्षर | चू | चे | चो | ला | ली | लू | ले | लो | आ |
| वर्ग | सिंह | " | " | मृग | " | " | " | " | गरुड़ |
| अवकहड़ा चक्र | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि |
| | अश्व | देव | पूर्व | आद्य | गज | मनुष्य | पूर्व | मध्य | मेष |
| पूर्ण राशि | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | उत्तर | | | उत्तर | | | वसंत | | |
| योग | विष्कुंभ | | | | प्रीति | | | | आयुष्मान |

**(२) वृषभ**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| वैश्य | भूमि | चतुष्पाद |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | | रोहिणी-४ | | | | मृगशीर्ष-५ | |
| चरण | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ |
| अक्षर | इ | ऊ | अे | ओ | वा | वी | वु | वे | वो |
| वर्ग | " | " | " | " | मृग | " | " | " | " |
| अवकहड़ा चक्र | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण |
| | राक्षस | पूर्व | अंत्य | सर्प | मनुष्य | पूर्व | अंत्य | सर्प | देव |
| पूर्ण राशि | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | उत्तर | | | उत्तर | | | ग्रीष्म | | |
| योग | | | | सौभाग्य | | | | शोभन | |

**(3) मिथुन**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| शूद्र | वायु | मानव |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | आर्द्रा-६ | | | | पुनर्वसु-७ | | |
| चरण | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ |
| अक्षर | का | की | कु | घ | ङ | छ | के | को | हा |
| वर्ग | मार्जार | " | " | " | " | सिंह | मार्जार | " | मेष |
| अवकहड़ा चक्र | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा |
| | पूर्व | मध्य | श्वान | मनुष्य | मध्य | आद्य | मार्जार | देव | मध्य |
| पूर्ण राशि | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | उत्तर | | | उत्तर | | | ग्रीष्म | | |
| योग | | | अतिगंड | | | | सुकर्मा | | |

**(४) कर्क**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| ब्राह्मण | वारि | जलचर |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | पुष्य-८ | | | | आश्लेषा-९ | | | |
| चरण | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ |
| अक्षर | ही | हू | हे | हो | डा | डी | डु | डे | डो |
| वर्ग | " | " | " | " | श्वान | " | " | " | " |
| अवकहड़ा चक्र | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी |
| | आद्य | मेष | देव | मध्य | मध्य | मार्जार | राक्षस | मध्य | अंत्य |
| पूर्ण राशि | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | दक्षिण | | | उत्तर | | | वर्षा | | |
| योग | | धृति | | | | शूल | | | |

**(५) सिंह**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| क्षत्रिय | अग्नि | वनचर |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | मघा-१० | | | | पू.फा.-११ | | | | उ.फा.-१२ |
| चरण | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ |
| अक्षर | मा | मी | मू | मे | मो | टा | टी | टू | टे |
| वर्ग | उंदर | " | " | " | उंदर | श्वान | " | " | " |
| अवकहड़ा चक्र | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि |
| | उंदर | राक्षस | मध्य | अंत्य | उंदर | मनुष्य | मध्य | मध्य | गौ |
| पूर्ण राशि | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | दक्षिण | | | उत्तर | | | वर्षा | | |
| योग | गंड | | | | वृद्धि | | | | ध्रुव |

**(६) कन्या**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| वैश्य | भूमि | मानव |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | | हस्त-१३ | | | | चित्रा-१४ | |
| चरण | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ |
| अक्षर | टो | पा | पी | पू | ष | ण | ठ | पे | पो |
| वर्ग | " | उंदर | " | " | मेष | श्वान | " | उंदर | " |
| अवकहड़ा चक्र | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण |
| | मनुष्य | मध्य | आद्य | महिषी | देव | मध्य | आद्य | व्याघ्र | राक्षस |
| पूर्ण राशि | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | दक्षिण | | | उत्तर | | | शरद | | |
| योग | | | | व्याघात | | | | हर्षण | |

**(७) तुला**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| शूद्र | वायु | मानव |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | चित्रा-१४ | | स्वाति-१५ | | | | विशाखा-१६ | | |
| चरण | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ |
| अक्षर | रा | री | रु | रे | रा | ता | ती | तू | ते |
| वर्ग | मृग | " | " | " | " | सर्प | " | " | " |
| अवकहड़ा चक्र | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा |
| | मध्य | मध्य | महिषी | देव | मध्य | अंत्य | व्याघ्र | राक्षस | मध्य |
| पूर्ण राशि | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | दक्षिण | | | दक्षिण | | | शरद | | |
| योग | हर्षण | | वज्र | | | | सिद्धि | | |

**(८) वृश्चिक**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| ब्राह्मण | वारि | कीट |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | अनुराधा-१७ | | | | ज्येष्ठा-१८ | | | |
| चरण | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ |
| अक्षर | तो | ना | नी | नू | ने | नो | य | यी | यु |
| वर्ग | " | " | " | " | " | " | मृग | " | " |
| अवकहड़ा चक्र | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी |
| | अंत्य | मृग | देव | मध्य | मध्य | मृग | राक्षस | अंत्य | आद्य |
| पूर्ण राशि | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | दक्षिण | | | दक्षिण | | | हेमंत | | |
| योग | | व्यतिपात | | | | वरीयान | | | |

**(९) धनु**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| क्षत्रिय | अग्नि | मानव/चत |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | मूल-१९ | | | | पू.षा.-२० | | | | उ.षा.-२१ |
| चरण | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ |
| अक्षर | ये | यो | भा | भी | भु | धा | फा | ढा | भे |
| वर्ग | " | " | उंदर | " | " | सर्प | उंदर | श्वान | उंदर |
| अवकहड़ा चक्र | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि |
| | श्वान | राक्षस | अंत्य | आद्य | वानर | मनुष्य | अंत्य | मध्य | नकुल |
| पूर्ण राशि | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | दक्षिण | | | दक्षिण | | | हेमंत | | |
| योग | परिघ | | | | शिव | | | | सिद्ध |

**(१०) मकर**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| वैश्य | भूमि | चत/जल |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | | श्रवण-२२ | | | | धनिष्ठा-२३ | |
| चरण | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ |
| अक्षर | भो | जा | जी | खी | खू | खे | खो | गा | गी |
| वर्ग | " | सिंह | " | मार्जार | " | " | " | " | " |
| अवकहड़ा चक्र | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण |
| | मनुष्य | अंत्य | अंत्य | वानर | देव | अंत्य | अंत्य | सिंह | राक्षस |
| पूर्ण राशि | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | उत्तर | | | दक्षिण | | | शिशिर | | |
| योग | | | | साध्य | | | | शुभ | |

**(११) कुंभ**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| शूद्र | वायु | मानव |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | | शत.-२४ | | | | पू.भा.-२५ | | |
| चरण | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ |
| अक्षर | गू | गे | गो | सा | सी | सू | से | सो | दा |
| वर्ग | " | " | " | मेष | " | " | " | " | सर्प |
| अवकहड़ा चक्र | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा |
| | अंत्य | मध्य | अश्व | राक्षस | अंत्य | आद्य | सिंह | मनुष्य | अंत्य |
| पूर्ण राशि | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | उत्तर | | | दक्षिण | | | शिशिर | | |
| योग | | | शुक्ल | | | | ब्रह्म | | |

**(१२) मीन**

| वर्ण | हंसक | वश्य |
|---|---|---|
| ब्राह्मण | वारि | जलचर |

| चन्द्र राशि | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नक्षत्र | | उ.भा.-२६ | | | | रेवती-२७ | | | |
| चरण | ४ | १ | २ | ३ | ४ | १ | २ | ३ | ४ |
| अक्षर | दी | दू | ज्ञा | झा | था | दे | दो | चा | ची |
| वर्ग | " | " | मेष | सिंह | सर्प | " | " | सिंह | " |
| अवकहड़ा चक्र | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी | योनि | गण | युंजा | नाड़ी |
| | आद्य | गौ | मनुष्य | अंत्य | मध्य | गज | देव | पूर्व | अंत्य |
| पूर्ण राशि | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ० |
| अंश | ३ | ६ | १० | १३ | १६ | २० | २३ | २६ | ० |
| कला | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० | २० | ४० | ० |
| सायन सूर्य | अयन | | | गोल | | | ऋतु | | |
| | उत्तर | | | दक्षिण | | | वसंत | | |
| योग | | ऐंद्र | | | | वैधृति | | | |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | १ | ३ | ५ | ६ | १ | ३ |
| २ | ६ | २ | ५ | ६ | ७ | २ | ४ |
| ४ | १० | ४ | ६ | ९ | १२ | ४ | ६ |
| ७ | ११ | ७ | ९ | ११ | | ७ | १० |
| ८ | | ८ | १० | | | ८ | ११ |
| ९ | | ९ | ११ | | | ९ | १२ |
| १० | | १० | १२ | | | १० | |
| ११ | | ११ | | | | ११ | |

२. चन्द्ररेखा ४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | १ | २ | १ | १ | ३ | ३ | ३ |
| ६ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ |
| ७ | ६ | ५ | ४ | ७ | ५ | ६ | १० |
| ८ | ७ | ६ | ५ | ८ | ७ | ११ | ११ |
| १० | १० | ९ | ७ | १० | ९ | | |
| ११ | ११ | १० | ८ | ११ | १० | | |
| | | ११ | १० | १२ | ११ | | |
| | | | ११ | | | | |

३. भौमरेखा ३९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | ३ | ६ | ६ | १ | १ |
| ५ | ६ | २ | ५ | १० | ८ | ४ | ३ |
| ६ | ११ | ४ | ६ | ११ | ११ | ७ | ६ |
| १० | | ७ | ११ | १२ | १२ | ८ | १० |
| ११ | | ८ | | | | ९ | ११ |
| | | १० | | | | १० | |
| | | ११ | | | | ११ | |

४. बुधरेखा ५४

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | २ | १ | १ | ६ | १ | १ | १ |
| ६ | ४ | २ | ३ | ८ | २ | २ | २ |
| ९ | ६ | ४ | ५ | ११ | ३ | ४ | ४ |
| ११ | ८ | ७ | ६ | १२ | ४ | ७ | ६ |
| १२ | १० | ८ | ९ | | ५ | ८ | ८ |
| | ११ | ९ | १० | | ८ | ९ | १० |
| | | १० | ११ | | ९ | १० | ११ |
| | | ११ | १२ | | ११ | ११ | |

५. गुरुरेखा ५६

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | १ | १ | १ | २ | ३ | १ |
| २ | ५ | २ | २ | २ | ५ | ५ | २ |
| ३ | ७ | ४ | ४ | ३ | ६ | ६ | ४ |
| ४ | ९ | ७ | ५ | ४ | ९ | १२ | ५ |
| ७ | ११ | ८ | ६ | ७ | १० | | ६ |
| ८ | | १० | ९ | ८ | ११ | | ७ |
| ९ | | ११ | १० | १० | | | ९ |
| १० | | | ११ | ११ | | | १० |
| ११ | | | | | | | ११ |

६. भृगु रेखा ५२

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | १ | ३ | ३ | ५ | १ | ३ | १ |
| ११ | २ | ५ | ५ | ८ | २ | ४ | २ |
| १२ | ३ | ६ | ६ | ९ | ३ | ५ | ३ |
| | ४ | ९ | ९ | १० | ४ | ८ | ४ |
| | ५ | ११ | ११ | ११ | ५ | ९ | ५ |
| | ८ | १२ | | | ८ | १० | ८ |
| | ९ | | | | ९ | ११ | ९ |
| | १० | | | | ११ | | ११ |
| | ११ | | | | १२ | | |

७. शनिरेखा ३९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ३ | ६ | ५ | ६ | ३ | १ |
| २ | ६ | ५ | ८ | ६ | ११ | ५ | ३ |
| ४ | ११ | ६ | ९ | ११ | १२ | ६ | ४ |
| ७ | | १० | १० | १२ | | ११ | ६ |
| ८ | | ११ | ११ | | | | १० |
| १० | | १२ | १२ | | | | ११ |
| ११ | | | | | | | |

८. लग्न रेखा ४९

| सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. | ल. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | १ | १ | १ | १ | ३ |
| ४ | ६ | ३ | २ | २ | २ | ३ | ६ |
| ६ | १० | ५ | ४ | ४ | ३ | ४ | १० |
| १० | १२ | १० | ६ | ५ | ४ | ६ | ११ |
| ११ | | ११ | ८ | ६ | ५ | १० | |
| १२ | | | १० | ७ | ८ | ११ | |
| | | | ११ | ९ | ९ | | |
| | | | | १० | ११ | | |
| | | | | ११ | | | |

# षट्वर्ग फलादेश

## षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान वृष राशि है। इसलिए वृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अतः सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

## होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों से प्रेम करने वाला होता है।

## सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

## नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

## द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ-ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या पाप दृष्ट होकर ६।८।१२वें भाव में हो [illegible] माता का सुख नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

# षट् वर्ग सारिणी चक्र

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| भाग | | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| अंशादि | | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० | १२ | १२ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २५ | २६ | २७ | ३० |
| | | ३० | २० | १७ | ० | ४० | ३० | ३४ | ० | ० | ३० | ५१ | २० | ० | ४० | ८ | ३० | ० | ० | २५ | ३० | २० | ० | ४२ | ४० | ३० | ० |
| रा. | चक्र | ० | ० | ८॥ | ० | ० | ० | १७ | ० | ० | ० | २६ | ० | ० | ० | ३४ | ० | ० | ० | ४३ | ० | ० | ० | ५१ | ० | ० | ० |
| | हो. | ५ | ५ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ० | द्रे. | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| | स. | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ |
| | न. | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| मे. | द्वा. | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ |
| | त्रिं. | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| | हो. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| १ | द्रे. | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| | स | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ |
| | न. | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| वृ. | द्वा. | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ |
| | त्रिं. | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| | हो. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| २ | द्रे. | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| | स. | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ |
| | न. | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| मि. | द्वा. | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ |
| | त्रिं. | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| | हो. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ३ | द्रे. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ |
| | स. | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ |
| | न. | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| क. | द्वा. | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ |
| | त्रिं. | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| | हो. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| ४ | द्रे. | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ |
| | स. | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ |
| | न. | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| सिं. | द्वा. | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ |
| | त्रिं. | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| | हो. | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| ५ | द्रे. | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ |
| | स. | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ |
| | न. | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| कं. | द्वा. | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ |
| | त्रिं. | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ |
| | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | १० | १२ | १२ | १२ | १३ | १५ | १६ | १७ | १७ | १८ | २० | २१ | २२ | २३ | २५ | २५ | २६ | २७ | ३० |
| | ३० | २० | १७ | ० | ४० | ३० | ३४ | ० | ० | ३० | ५१ | २० | ० | ४० | ८ | ३० | ० | ० | २५ | ३० | २० | ० | ४२ | ४० | ३० | ० |
| | ० | ० | ८॥ | ० | ० | ० | १७ | ० | ० | ० | २६ | ० | ० | ० | ३४ | ० | ० | ० | ४३ | ० | ० | ० | ५१ | ० | ० | ० |
| ६ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ११ | ७ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ |
| | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| तु. | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ |
| | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ७ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | १२ | १२ | १२ | १२ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ |
| | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| वृ. | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | १ | ० | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ |
| | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ८ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ |
| | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ |
| ध. | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ |
| | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ९ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० |
| | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| म. | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ |
| | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |
| १० | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ |
| | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| कुं. | ११ | १२ | १२ | १२ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | १० |
| | १ | १ | १ | १ | ११ | ११ | ११ | ११ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ७ | ७ | ७ | ७ |
| ११ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ |
| | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ |
| | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ |
| मी. | १२ | १ | १ | १ | २ | २ | ३ | ३ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ७ | ७ | ८ | ८ | ९ | ९ | १० | १० | १० | ११ |
| | २ | २ | २ | २ | ६ | ६ | ६ | ६ | ६ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १० | १० | १० | १० | ८ | ८ | ८ | ८ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

**पितृ परोक्ष ज्ञान—** सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना चाहिये। सूर्य ८, ९, ११, १२ वें में से किसी भी भाव में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

**चिह्न ज्ञान—** बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भौंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दातों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

**अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान—** बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

**बालक का रोदन ज्ञान—** जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



**उपसूतिका ज्ञान—**प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्से आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा वक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

**सिर पाद प्रसव ज्ञान—**बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

**सूतिका गृह द्वार ज्ञान—**सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

**पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार—**सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

**मेषादि राशियों का अंग विभाग—**मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

# अथ प्रसूति लग्न विचार

**मेष—**सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

**नोट—**कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

**वृष—**माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

**मिथुन—**माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बल्गामी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

**कर्क—**प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

**सिंह—**माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चींज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,



चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ८।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, ... नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

**कन्या**— माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में जिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

**तुला**— माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, वदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६८,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

**वृश्चिक**— माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

**धनु**— माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या वसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

**मकर**— माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

**कुम्भ**— माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

**मीन**— माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले वसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

**प्रत्येक लग्न के**— विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्राय: सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

**बालारिष्ट**— जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा वृहस्पति— इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

**अरिष्ट भंग योग**— बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान् होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

**माता-पिता को अरष्टि योग**— सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे— चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

**प्रसव दोष**— चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

**त्रिखल दोष**— तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

**दन्तोत्पत्ति फल**— बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

**एक नक्षत्र जात फल**— पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

## गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

| गण्डमूल नक्षत्र | प्रथम चरण | द्वितीय चरण | तृतीय चरण | चतुर्थ चरण |
|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | पिता को कष्ट | सुख ऐश्वर्यवान | मंत्रित्व प्राप्ति | राज्य सम्मान |
| आश्लेषा | शांति से शुभ | धन हानि | मातृ हानि | पितृ हानि |
| मघा | माता को कष्ट | पिता को कष्ट | सुखी | धन-विद्या प्राप्ति |
| ज्येष्ठा | भाई को कष्ट | कनि. भाई को कष्ट | मातृ हानि | स्वयं को हानि. |
| [illegible] | पिता को हानि | माता को हानि | धन नाश | शांति से शुभ |
| रेवती | राज्य सम्मान | मंत्रित्व प्राप्ति | धन सुख | व्याधियाँ |

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति कराने के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

## मूल निवास चक्र

| जन्ममासानुसारेण | वैशा., ज्ये., मार्ग., फा. | चैत्र, श्राव., का., पौ. | आषा., आ.,माघ, भा. |
|---|---|---|---|
| जन्म लग्नानुसारेण | २।५।८।११ | ३।६।९।१२ | १।४।७।१० |
| मूल निवास स्थानम् | पाताले | भूमौ | स्वर्गे |
| फलम् | शुभम् | कुलनाशः | शुभम् |

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

## मूलजनन वृक्ष विभाग

| मूले | स्तम्भे | त्वचायां | शाखायां | पत्रे | पुष्पे | फले | शिखायां | विभाग |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | ८ | १० | ११ | १२ | ५ | ४ | ३ | घट्यः |
| मूल नाशः | वंश नाशः | मातृ क्लेश | मातुल नाश | मंत्री पदम् | मंत्री पदम् | विपुल लाभः | अल्प जीवी | फलम् |

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

## अथ मूल पुरुष चक्रम्

| मूर्ध्नि | मुखे | स्कंधे | बाह्वोः | हस्ते | हृदये | नाभौ | गुह्ये | जानुनि | पादे | स्थानं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ७ | ४ | ८ | ३ | ९ | २ | १० | ६ | ६ | घट्यः |
| राजा | पि.मृ. | बली | बली | दानी | मंत्री | ज्ञानी | कामी | मतिमान् | मतिमान् | फलम् |

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

## अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

| शीर्षे | मुखे | कण्ठे | हृदये | बाह्वोः | हस्ते | गुह्ये | जंघे | जानुनि | पादे | स्थानं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ६ | ५ | ५ | ५ | ८ | ९ | ४ | ४ | १० | घट्यः |
| पशु नाश | धन नाश | धन लाभ | कुटिला | धन लाभ | दयावः | कामिनी | मातृ नाश | भ्रातृ नाश | वैधव्यं | फलम् |

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:



अथ आश्लेषा चक्रम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


## अथ आश्लेषा चक्रम्

| शिरसि | मुखे | नेत्रे | ग्रीवायां | स्कंधे | हस्ते | हृदये | नाभौ | गुदे | पादे | स्थान |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ७ | २ | ४ | ४ | ८ | १० | ६ | ७ | ७ | घट्यः |
| मुखादि | पितृ नाश | मातृ नाश | स्त्री लाभ | गुरु भक्त | बली | आत्म हानि | भ्रमः | तपस्वी | धन हानि | फलम् |

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

## अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

| फले | पुष्पे | दले | शाखायां | त्वचायां | लतायां | स्कन्धे |
|---|---|---|---|---|---|---|
| १० | ५ | ९ | ७ | १३ | १२ | ४ |
| धनम् | धनम् | राजभयम् | हानिः | मातृ हानिः | पितृ हानिः | अल्पायुः |

## अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

## अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | विभागः |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभम् | पितृ नाश | मातृ नाश | मातुल नाश | कुल हानिः | धन हानिः | फलम् |

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

## सिनीवाली कुहू जनन फल

**सिनीवाली**— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

**कुहू जनन फल**— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

## अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिघ योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

## स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

**त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥**
**एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥**

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

## जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल वियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो शमशान या शमशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलावल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

**प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।**

| किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है | असित लक्षण | पूजन द्रव्य | मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य | बलि विधान व समय | धूप | स्नान पूजा मार्जन मन्त्र |
|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी | ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ। | श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान। | नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका | श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना। | राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत। | ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥ ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वत: स्थानाद्रुद्राज्ञया स्वाहा। |
| द्वितीय दिन मास वर्ष में सुनन्दना | ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता। | १० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०। | एक सेर चावलों का आटा | भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना। | | |
| तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना | हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमीलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा | रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०। | एक सेर चावलों का आटा | एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना। | लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली | सुनन्दना विधानोक्त |
| चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका | गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमीलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता। | श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प। | तिल चुर्ण एक सेर | भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना। | नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल गोघृत। | सुनन्दना विधानोक्त |
| पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका | पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज। | श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये। | एक सेर चावलों का आटा | श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना | | ॐ भगवती हीं हीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठ: ठ: चामुण्डे चण्डिके ठ: ठ: स्वाहा |
| षष्ठ दिन मास वर्ष में घट्कारिका | ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा। | श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५। | नदी के दोनों किनारों की मिट्टी | भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना | कूठ, गुगल, | योगिनी विधानोक्त |
| सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका | खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन। | श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५। | चावलों का आटा एक सेर | भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना | राई, हाथी दांत, घृत। | विडालिका विधानोक्त |
| अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी | ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप | रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५। | जल के दोनों किनारों की मिट्टी | गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना। | राई, हाथी दांत, घृत। | विडालिका विधानोक्त |
| नवम दिन मास वर्ष में मदना | ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा। | चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५। | एक सेर गेहूं का आटा। | भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रात: चौरास्ते पर रखना। | गोशृंग, लहसुन | ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा |
| दशम दिन मास वर्ष में रेवती | ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास | रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये। | एक सेर गेहूं का आटा | गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना। | सांप की कांचली निम्ब | ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा। |
| एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना | ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता। | श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये। | काले उड़दों का आटा एक सेर | श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रात: दक्षिण में चौरास्ते पर रखना। | पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई | ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐ ह्रीं फट् स्वाहा |
| द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता | ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप। | १३ दीपक, १३ झण्डी, १३ तकिये आटे के। | चावलों का आटा एक सेर | सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य मांस, पापड़ी, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना। | गोघृत। | ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं २ हन २ दुष्टान् हां हूं फट् स्वाहा |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अथ नक्षत्र कष्टावली

| नक्षत्र देवता | कष्ट लक्षण | कष्ट दिन | चरणगत कष्ट दिन | जपनीय वेदोक्त मंत्र | जप सं. | होम द्रव्य | वलि द्रव्य | करे धारणम् | गन्धादि पदार्थ | दान वस्तु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी (दस्रौ) | वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम | ९ | १, २, ३,४ ९,१०, ११, २० | ॐ अश्विनातेजसाचक्षुः प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नमः॥ | ५ सहस्र | खण्ड यव घृत | गुडौदन तिल | अपामार्ग मूलम् | श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य। | सुवर्ण घृत कुम्भ |
| भरणी (यमः) | छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य | ११ | ०,८०,४०,११ | ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यतै पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे॥ ॐ यमाय नमः॥ | १० सहस्र | घृत मधु तिलाक्षत | कृषरान्न (खिचड़ी) | अगस्त मूलम् | अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य। | गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र |
| कृत्तिका (अग्निः) | नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल | ९ | ९,११,१६,२८ | ॐ अग्निमूर्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिंजिन्वति॥ ॐ अग्नये नमः॥ | १० सहस्र | तिलयव घृत | पायस घृत मोदक | कापसि मूलम् | श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य। | स्वर्ण, गोदान |
| रोहिणी (ब्रह्मा) | शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप | ७ | ७,९,१८,३० | ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरूचोवेनआवः सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चविधवः॥ ॐ ब्रह्मणेनमः॥ | ५ सहस्र | तिलाज्य घृत यव | मध्वाज्यक्षो साख्यन्नक्षी | अपामार्ग मूलम् | श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य। | सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन |
| मृगशीर्ष (चन्द्रः) | त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा | ३ | ९,५,७,१० | ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इमममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नमः॥ | १० सहस्र | दधि पायस | दधिशर्करा शाल्यन्न | जयन्ती मूलम् | श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य। | दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान |
| आर्द्रा (शिव) | त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा | मृ.तु. | ०,१८,०,० | ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नमः बाहुभ्यामुतते नमः॥ ॐ रुद्राय नमः॥ | १० सहस्र | घृत मधु | दध्योदन मध्वाज्य | सचंदना अश्वत्थमूलम् | श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य। | श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र |
| पुनर्वसु (अदिति) | ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा | ७ | ७,१४,२,२१ | ॐअदितिर्द्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्रः विश्वे देवा अदितिः पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नमः॥ | १० सहस्र | घृत तन्दुल | साज्य पीत तन्दुल | अर्क मूलम् | हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य। | वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन |
| पुष्य (गुरु) | ज्वर, शूल, महाकष्ट | ७ | ७,७,१०,२१ | ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदीदयच्छ्वत्र सऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नमः॥ | १० सहस्र | घृत पायस | समण्डक मोदक | तुषार मूलम् | कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य। | सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र |
| आश्लेषा (सर्पः) | सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट | मृ.तु. | ०,०,४१,० | ॐनमोस्तु सर्प्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्यः सर्पेभ्योनमः॥ ॐसर्प्पेभ्यो नमः॥ | १० सहस्र | शर्करा घृत | हवि दध्योदन | पटोल मूलम् | कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य। | सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र |
| मघा (पितरः) | शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा | २० | १५,७,१७,२० | ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्यः स्वधा नमः अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरम्ये नमः॥ | १० सहस्र | तिल घृत तन्दुल | सतिलाज्य दुग्धान | भंगराज मूलम् | श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य। | वस्त्र, तिल, उड़द |
| पू.फा. (भगः) | गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा | मृ.तु. | ०,१५,०,३० | ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्नः भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृवैनः स्याम॥ ॐभगाय नमः॥ | १० सहस्र | कङ्गनी तिलघृत | घृतौदन पायस | कटकारी मूलम | श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य। | पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान |
| उ.फा. (अर्यमा) | कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट | ७ | ७,१४,७,६० | ॐदेवावध्वर्यूश्चागतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नमः॥ | १० सहस्र | तिल घृत | घृत शर्करा शाल्यन्न | पटोल मूलम् | कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य। | सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान |
| हस्त (सविता) | उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद | १५ | १५,१७,१५,० | ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सौम्य मध्यायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजाः पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नमः॥ | ५ सहस्र | दधि घृत | मिष्ठान्न पायस | जाति मूलम् | रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य। | स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान |
| चित्रा (विश्व.) | विचित्र रोग अतिकष्ट | ११ | ११,९,९,१६ | ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौत्रवयोदधः॥ ॐ विश्वकर्मणे नमः॥ | १० सहस्र | तिलाज्य घृत तन्दुल | विचित्रान्न घृत | मखव मूलम् | केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य। | तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# नक्षत्र कष्टावली

| नक्षत्र देवता | कष्ट लक्षण | कष्ट दिन | चरणगत कष्ट दिन | जपनीय वेदोक्त मंत्र | जप सं | होम द्रव्य | वलि द्रव्य | करे धारणम् | गन्धादि पदार्थ | दान वस्तु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| स्वाती (वायु:) | नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा | मृ.तु. | ६०,१७,३०,० | ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नम:॥ | १० सहस्र | तिल,यव घृत | घृत पायस | जाति मूलम् | चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य। | स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न |
| विशाखा: (इन्द्राग्नि) | सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल | १५ | १५,०,४,१३ | ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गोर्मिर्नमो वरेण्यंमू। अस्यं पात धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नम:॥ | १० सहस्र | आज्य पायस | सहवि चित्रान्न | गुञ्जा मूलम् | चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, धृपायस नैवेद्य। | रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान |
| अनुराधा (मित्र:) | शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर | | ६०,१२,३६,३० | ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशꣳसत्॥ ॐ मित्रायनम:॥ | १० सहस्र | यव-घृत | मध्वाज्य गुड उड़द | सुपुष्प मूलम् | केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य | स्वर्ण गौ, छायापात्रदान |
| ज्येष्ठा (इन्द्र:) | पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता | मृ.तु. | १९,९,६,४ | ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ꣳ हवे हवे सुहवꣳशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रꣳस्वस्तिनो मधवा धात्विन्द्र:॥ ॐ इन्द्राय नम:॥ | ५ सहस्र | तिल, घृत तण्डुल | दध्योदन सुपुष्प | अपामार्ग मूलम | श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य। | स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान |
| मूल (राक्षस:) | मुख तथा उदर रोग, सन्निपात | ७ | ०,९,१५,६ | ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नम:॥ | ५ सहस्र | कन्दमूल घृत | सहवि उड़द | मन्दार मूलम् | कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य। | गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा |
| पू.षा. (जलम्) | शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट | मृ.तु. | ०,१५,२४,१० | ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यꣳसुव॥ ॐ अदभ्यो नम:॥ | ५ सहस्र | तिल, घृत तण्डुल | घृतपायस मिष्ठानहवि | कर्पास मूलम् | श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य। | स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान |
| उ.षा. (विश्वे-देवा) | कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप | ३० | ३०,२४,२९,१६ | ॐविश्वेदेवा: शृणुतेमꣳहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनम:॥ | १० सहस्र | तिलाज्य यव | सहवि पायस | कर्पास मूलम् | श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य। | आमान्न, स्वर्णदान |
| श्रवण (विष्णु:) | सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार | ११ | ६०,२४,६,९ | ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नम:॥ | १० सहस्र | तिलाज्य यव | तिलाज्य सहविपायस | अपामार्ग मूलम् | श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य। | स्वर्ण गौ, छायापात्रदान |
| धनिष्ठा (वसव:) | ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ | १५ | १५,२,२७,२१ | ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नम:॥ | १० सहस्र | तिलाज्य पायस | पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ | भृङ्गराज मूलम् | श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य। | छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ |
| शतभिषा (वरुण:) | वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट | ११ | ०,४५,३,३६ | ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नम:॥ | १० सहस्र | आज्य दध्योदन | घृत चित्रान्न | कमल मूलम् | केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य। | स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र |
| पू.भा. (अजैकपाद) | वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष | मृ.तु. | ०,१२,५१,१७ | ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य शृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अयन्तु॥ ॐ अजैकपदे नम:॥ | १० सहस्र | क्षीराज्य शर्करा | दध्योदन पायस | भृंङ्गराज मूलम् | केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य। | स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान |
| उ.भा. (अहिर्बुध्न्य) | कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर | ७ | १०,२०,७,१५ | ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि ꣳसी निननवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नम:॥ | १० सहस्र | तिलाज्य यव | तिल घृत भुदग् माष | अश्वत्थ मूलम् | चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य। | स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान |
| रेवती (पू.षा.) | बात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम | | १८,१०,९,२० | ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पूष्णे नम:॥ | ५ सहस्र | तिलाज्य तण्डुल | सहवि दध्यन्न | अश्वत्थ मूलम | रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य। | रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्रं वृषभ, छायापात्र |



बाल कष्टावली-चक्र में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोध (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड़फूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड़फूटन), हंसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी विहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोध, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोवान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली (गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है — समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोश्रृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

## नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं — वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे — तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

**गन्धादि पदार्थों में —** श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नेवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई), घी से तात्पर्य — गाय, भैंस का घी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-दही में गुड़ मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़ुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छत्तरी), पैत्तल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), पायस और (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), तिल पिष्ठ (तिल की पिट्ठी), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रन्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़यों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॡ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

## अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें स्थान में सूर्य, मंगल हो तो बालक गूंगा होता है।

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।



बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध



३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS


# बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धुम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हों तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

## माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

## अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

## कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

## वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

## विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

## विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

## काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

## काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

### गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

## वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

## कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS





**अन्य अरिष्ट योग-(१)** तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार की हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

**अरिष्ट भंग योग-(१)** ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर करते हैं।

# आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

| दीर्घ | मध्य | अल्प |
|---|---|---|
| चर | चर | चर |
| चर | स्थिर | द्विस्वभाव |
| स्थिर | द्विस्वभाव | स्थिर |
| द्विस्वभाव | द्विस्वभाव | स्थिर |

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

**होरा लग्न—**इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न वा होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कहीं आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। **उदाहरण—**जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखा सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

**अष्टमक्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तम स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेश्यो दशन्ति रञ्च न शोभनम्। मारके मारकातरम शोभनम् व्यय द्वितीयेश यद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्यदनिष्टवेति।**

## जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

| अंश | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
| मास | ० | १ | १ | ३ | ४ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ८ | ९ | १० | ११ | ० | ० | ० | १ | २ | २ | ४ | ४ | ६ | ७ | ७ | ७ | ८ | ६ | १ | १ |
| दिन | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० | २४ | १८ | १२ | ६ | ० |

## जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

| कला | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ |
| दिन | ६ | ११ | १३ | २५ | २ | ८ | १४ | २१ | २७ | ४ | १० | १६ | २३ | २९ | ६ | १२ | १८ | २६ | १ | ८ | १४ | २० | २७ | ३ | १० | १६ | २ | २९ | ५ | १२ |
| घड़ी | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |
| कला | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
| मास | ६ | ६ | ७ | ७ | ७ | ७ | ७ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ९ | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ |
| दिन | १९ | २४ | १ | ७ | १४ | २० | २३ | ३ | ५ | १३ | २२ | २८ | ५ | ११ | १८ | २४ | ० | ७ | १३ | २० | २६ | १ | ३ | १५ | २२ | १८ | ४ | ११ | १७ | २४ |
| घड़ी | २४ | ४८ | ३६ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |

## जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

| विकला | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ३ | ३ |
| घड़ी | ६ | १२ | १९ | २५ | ३२ | ३८ | ४४ | ५१ | ५७ | ४ | १० | १६ | २३ | २९ | ३६ | ४२ | ४८ | ५५ | १ | ८ | १४ | २१ | २७ | ३३ | ४० | ४६ | ५२ | ५९ | ५ | १२ |
| पल | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |
| विकला | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
| दिन | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ६ |
| घड़ी | १८ | २४ | ३१ | ३७ | ४४ | ५० | ५६ | ३ | ९ | १६ | २२ | २८ | ३३ | ४२ | ४८ | ५४ | ० | ७ | १३ | २० | २६ | ३२ | ३९ | ४५ | ५२ | ५९ | ४ | ११ | १७ | २० |
| पल | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection



सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

**मेष लग्न**—मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुंआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

**वृष लग्न**—जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

**मिथुन लग्न**—जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

**कर्क लग्न**—जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

**सिंह लग्न**—जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

**कन्या लग्न**—जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाहु होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

**तुला लग्न**—जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रशन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

**वृश्चिक लग्न**—जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

**धनु लग्न**—बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान्, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्याक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

**मकर लग्न**—जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

**कुम्भ लग्न**—जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

**मीन लग्न**—जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

| गताब्द | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ३ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | २ | ४ |
| घटी | १५ | ३० | ४६ | १ | १६ | ३२ | ४७ | ३ | १८ | ३३ | ४९ | ४ | १९ | ३५ | ५० | ६ | २१ | ३६ | ५२ | ७ |
| पल | २२ | ४५ | ८ | ३१ | ५४ | १७ | ४० | ३ | २६ | ४९ | १२ | ३५ | ५८ | २१ | ४४ | ७ | ३० | ५३ | १६ | ३९ |
| विपल | ५७ | ५४ | ५१ | ४८ | ४५ | ४२ | ३९ | ३६ | ३३ | ३० | २७ | २४ | २१ | १८ | १५ | १२ | ९ | ६ | ३ | ० |

| गताब्द | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ५ | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ |
| घटी | २३ | ३८ | ५३ | ९ | २४ | ३९ | ५५ | १० | २६ | ४१ | ५६ | १२ | २७ | ४३ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ५९ | १५ |
| पल | १ | २४ | ४७ | १० | ३३ | ५६ | १९ | ४२ | ५ | २८ | ५१ | १४ | ३७ | ० | २३ | ४६ | ९ | ३२ | ५५ | १८ |
| विपल | ५७ | ५४ | ५१ | ४८ | ४५ | ४२ | ३९ | ३६ | ३३ | ६० | २७ | २४ | २१ | १८ | १५ | १२ | ९ | ६ | ३ | ० |

| गताब्द | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ | ३ | ४ | ६ | ० | १ | २ | ४ | ५ |
| घटी | ३० | ४६ | १ | १६ | ३२ | ४७ | २ | १८ | ३३ | ४९ | ४ | १९ | ३५ | ५० | ६ | २१ | ३६ | ५२ | ७ | २३ |
| पल | ४० | ३ | २६ | ४९ | १२ | ३५ | ५८ | २१ | ४४ | ७ | ३० | ५३ | १६ | ३९ | २ | २५ | ४८ | ११ | ३४ | ५७ |
| विपल | ५७ | ५४ | ५१ | ४८ | ४५ | ४२ | ३९ | ३६ | ३२ | ३० | २७ | २४ | २१ | १८ | १५ | १२ | ९ | ६ | ३ | ० |

| गताब्द | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ६ | ० | २ | ३ | ४ | ५ | ० | १ | २ | ३ | ५ | ६ | ० | १ | ३ | ४ | ५ | ६ | १ | २ |
| घटी | ३८ | ५३ | ९ | २४ | ३९ | ५५ | १० | २६ | ४१ | ५६ | १२ | २७ | ४३ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ५९ | १५ | ३० |
| पल | १९ | ४२ | ५ | २८ | ५१ | १४ | ३७ | ० | २३ | ४६ | ९ | ३२ | ५५ | १८ | ४१ | ४ | २७ | ५० | १३ | ३६ |
| विपल | ५७ | ५४ | ५१ | ४८ | ४५ | ४२ | ३९ | ३६ | ३३ | ३० | २७ | २४ | २१ | १८ | १५ | १२ | ९ | ६ | ३ | ० |

## प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

| वर्ष | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०८ | ०९ | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ |
| घड़ी | १५ | ३१ | ४६ | ०२ | १७ | ३३ | ४८ | ०४ | १९ | ३५ | ५० | ०६ | २१ | ३७ | ५२ |
| पल | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० |

| वर्ष | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ | ३० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०६ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ |
| घड़ी | ०८ | २३ | ३९ | ५४ | १० | २६ | ४१ | ५७ | १२ | २८ | ४३ | ५९ | १४ | ३० | ४५ |
| पल | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ |
| विपल | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

| वर्ष | ३१ | ३२ | ३३ | ३४ | ३५ | ३६ | ३७ | ३८ | ३९ | ४० | ४१ | ४२ | ४३ | ४४ | ४५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ |
| घड़ी | ०१ | १६ | ३१ | ४७ | ०३ | १८ | ३४ | ४९ | ०५ | २१ | ३६ | ५२ | ०७ | २३ | ३८ |
| पल | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३७ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० |

| वर्ष | ४६ | ४७ | ४८ | ४९ | ५० | ५१ | ५२ | ५३ | ५४ | ५५ | ५६ | ५७ | ५८ | ५९ | ६० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ |
| घड़ी | ५४ | ०९ | २५ | ४० | ५६ | ११ | २७ | ४२ | ५८ | १३ | २९ | ४४ | ०० | १५ | ३१ |
| पल | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ | ४६ | १८ | ४९ | २१ | ५२ | २४ | ५५ | २७ | ५८ | ३० |
| विपल | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

| वर्ष | ६१ | ६२ | ६३ | ६४ | ६५ | ६६ | ६७ | ६८ | ६९ | ७० | ७१ | ७२ | ७३ | ७४ | ७५ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०६ | ०१ | ०२ | ०३ | ०४ | ०६ | ०७ | ०१ | ०२ | ०४ | ०५ | ०६ | ०७ | ०२ | ०३ |
| घड़ी | ४७ | ०२ | १८ | ३३ | ४९ | ०४ | २० | ३५ | ५१ | ०६ | २२ | ३७ | ५३ | ०८ | २४ |
| पल | ०१ | ३३ | ०४ | ३६ | ०७ | ३९ | १० | ४२ | १३ | ४५ | १६ | ४८ | १९ | ५१ | २२ |
| विपल | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० |

| वर्ष | ७६ | ७७ | ७८ | ७९ | ८० | ८१ | ८२ | ८३ | ८४ | ८५ | ८६ | ८७ | ८८ | ८९ | ९० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वार | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ | ०२ | ०३ | ०५ | ०६ | ०७ | ०१ | ०३ | ०४ | ०५ | ०७ | ०१ |
| घड़ी | ३९ | ५५ | १० | २६ | ४२ | ५७ | १२ | २८ | ४४ | ५९ | १५ | ३० | ४६ | ०१ | १७ |
| पल | ५४ | २५ | ५७ | २८ | ०० | ३१ | ०३ | ३४ | ०६ | ३९ | ०९ | ४० | १२ | ४३ | १५ |
| विपल | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० | ३० | ०० |

## वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

**मुन्था**—गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

**त्रिपताका चक्र**—वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

**दशा**—गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटावें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र

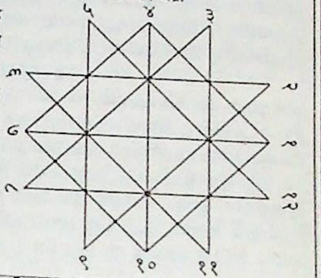


## मुद्दा दशा

| सूर्य | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १८ | ३० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ३० | दिन |

**त्रिराशिपति**—वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

| राशि | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिनपति | सू. | शु. | श. | शु. | बु. | चं. | बु. | मं. | श. | मं. | बृ. | चं. |
| रात्रिपति | बु. | चं. | बु. | मं. | सू. | शु. | श. | शु. | श. | मं. | बृ. | चं. |

**दृष्टि ज्ञान**—वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

## शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

## सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

## नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

## नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

## अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कसत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की दृष्टि न हो तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# ग्रह-शील-चक्र

| ग्रह चिन्ह | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| पर्याय | हेलि | ग्लौ, शीत रश्मि | आर, वक्र भू-सुत | ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन | जीव, अंगि सुरगुरुइज्य | भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु | कोण, मद सूर्य-पुत्र | तम, अगु, असुर | शिखी |
| शुभ, पाप | उग्र | शुभ, क्षीण चन्द्र पाप | क्रूर | शुभ, पाप युक्त पाप | शुभ | शुभ | अति पाप | पाप | पाप |
| देवता | अग्नि | वरुण | स्कन्द | विष्णु | इन्द्र | इन्द्राणी | ब्रह्मा | वायु | आकाश |
| काल-पुरुष अंग | आत्मा | मन | सत्व, शौर्य | वाणी | ज्ञान-सुख | काम-सुख | दुःख | मृति | स्थिति |
| पुरुषादि लिंग | पुरुष | स्त्री | पुरुष | नपुंसक | पुरुष | स्त्री | नपुंसक | पुरुष | पुरुष |
| वर्ण | क्षत्रिय | वैश्य | क्षत्रिय | वैश्य, शूद्र | ब्राह्मण | ब्राह्मण | अंत्यज | शूद्र | संकर |
| आकार | चतुरस्त्र | वर्तुल | चतुष्कोण | वृत्त | वृत्त | दीर्घ | दीर्घ | दीर्घ | पुच्छ |
| स्वभाव | स्थिर | चंचल | उग्र | मिश्र | मृदु | लघु | अतितीक्ष्ण | ...... | ...... |
| स्थान | पर्वत | जलचर | पर्वत, वनचर | विद्वानों से युक्तग्रा. चर | विद्वानों से युक्तग्रा. चर | जलचर | पर्वत, वनचर | पर्वत, वनचर | पर्वत, वनचर |
| काल | अयन | क्षण मुहूर्त | दिन | ऋतु | मास | पक्ष | वर्ष | ...... | ...... |
| दिशा, कोण | पूर्व | वायव्य | दक्षिण | उत्तर | ईशान | अग्नि | पश्चिम | नैऋत्य | सर्वदिशा |
| ग्रह-शांति में दिशा | मध्य | अग्नि | दक्षिण | ईशान | उत्तर | पूर्व | पश्चिम | नैऋत्य | वायव्य |
| राजादि पदवी | राजा | राजरानी | सेनापति | युवराज | मंत्री | गुप्त मंत्री | प्रेष्य दूत | सेवक | परिचारक |
| वय-वर्ष अवस्था | प्रौढ़ (५०) | युवा | तरुण | कुमार | युवा(३०) | किशोर | वृद्ध(१००) | अतिवृद्ध | अतिवृद्ध |
| रंग | पाटल | गौर | रक्तगौर | दूर्वाश्याम | गौर-पीत | श्वेत-श्याम | नील | कृष्ण | धूम्र |
| ह्रस्वदीर्घ | ह्रस्व | ह्रस्व | ह्रस्व | ह्रस्व | दीर्घ | ह्रस्व | दीर्घ | दीर्घ | दीर्घ |
| विद्या | वैद्यक | ज्योतिष | शस्त्र | शिल्प | व्याकरण | संगीत | यावनी वि. | गारुड़ी | गुप्त-तंत्र |
| भाग्योदय-वर्ष | २२ | २४ | २८ | ३२ | १६ | २५ | ३६ | ४२ | ४८ |

| ग्रह चिन्ह | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नशा व गोचर फल काल | प्रथम भाग | अन्त्य | प्रथम भाग | सर्वदा | मध्य | मध्य | अन्त्य | ...... | ...... |
| कारक | पिता | माता | बन्धु, पितृव्य | मामा, बुद्धि वाणी | पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म | स्त्री | दूत, भृत्य दारिद्रय | दादा, शत्रु | नाना |
| कारक भाव | १,९,१० | ४ | ३, ६ | ४, १० | २,५,९,१० | ७ | ६,८,१० | ...... | ...... |
| हर्ष-स्थान | ९ | ३ | ६ | १ | ११ | ५ | १२ | ...... | ...... |
| तत्व | अग्नि | जल | अग्नि | पृथ्वी | आका.तेज | जल | वायु | जल-वायु | तेज |
| गुण | सत्व | सत्व | तामस | राजस | सत्व | राजस | तामस | अति तामस | किंचित तामस |
| धात्वादि | मूल | जीव | धातु | मिश्रण | जीव | मूल | मूल | धातु | धातु |
| रस | तिक्त | क्षार | कटु | मिश्र | मधुर | अम्ल, खट्टा | कशायकसे | तीखा | नीरस फीका |
| धातु | सुवर्ण | रौप्य | लोहा | यशद | बंग | ताम्र | नाग | पञ्चधातु | अष्टधातु |
| वस्त्र | मोटा | नवीन | अग्नि-दग्ध | आर्द्र | मध्यम | दृढ़ | मलिन | चित्र-विचित्र | जीर्ण-शीर्ण |
| काल-बल | मध्याह्न | अपराह्न | मध्याह्न | प्रातः | प्रातः | अपराह्न | संध्या | संध्या | संध्या |
| पाद | चतुष्पद | बहुपद | चतुष्पद | द्विपद | द्विपद | द्विपद | भुजंगअपद | अपद | अपद |
| भूमि | पशुभूमि | जलभूमि | दग्ध | श्मशान | सुरालय | जलभूमि | उत्कट | ऊषर | ऊषर |
| स्थान | वन | जल | वन | ग्राम | ग्राम | ग्राम | सन्धि | विवर | विवर |
| शरीर-धातु | अस्थि | रुधिर | मज्जमांस | चर्म त्वचा | मेद | वीर्य-ओज | स्नायु | ...... | रस |
| पित्तादि प्रकृति | पित्त | श्लेष्मा | पित्त | समधातु | समधातु | कफ | वात | वात | वात |
| रोग | नेत्र रोग | नेत्र-पीड़ा | रक्त | त्रिदोष | ज्वर | वीर्य-रोग | वातव्याधि | अस्थि-रोग | अस्थि-रोग |
| ऋतु | ग्रीष्म | वर्षा | ग्रीष्म | शरद | हेमन्त | वसन्त | शिशिर | शिशिर | शिशिर |
| दृष्टि | ऊर्ध्व | सम | ऊर्ध्व | तिर्यक | सम | तिर्यक | अधो. | अधो | अधो |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS





संभावित है। ता॰ १४ से १८ तक टाटा पावर, टिस्को, टेल्को, बालाजी टेलीफिल्म, मल्टी मीड़िया, रिलायंस इन्ड, इन्डो गोल्फ, लारसन एण्ड टुब्रो, हिन्ड़ालको बजाज ऑटो, दूरसंचार, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, सिमेन्ट, सत्यम् कम्प्यूटर ,हन्यूजस सॉफटवेयर, इनफोटेक-इन्टेरफोट, रोल्टा, इण्ड़िया, बिप्रो, निट, हिन्दुस्तान लीवर कंपनियों में अच्छी चाल निकलने की संभावना बनेगी। यदि बाजार प्रभावित नहीं हुआ तो आगामी २५ ता॰ तक बाजार तेजी में रहना चाहिये। इसके बाद ता॰ २५ से एकतरफा मंदी की ओर चला जायेगा। यह सिलसिला ता॰ ३० तक जारी रहेगा।

**मई :-** मासारम्भ में सूर्य-बुध मेष में, राहु वृष में, शनि मिथुन में, गुरु कर्क में, केतु वृश्चिक में, मंगल मकर में, शुक्र मिथुन में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता॰ ११ को शुक्र मेष में, ता॰ १५ को सूर्य वृष में, ता॰ १६ को बुध पूरब में उदय होगा। ता॰ २२ को बुध मार्गी होगा। फलत: ता: १ को अश्विनी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता॰ १ से २ तक बाजार अश्विनी और भरणी नक्षत्र में रहेगा। अत: इसके अनुसार इसकी धारणा कभी मंदी तो कभी तेजी की ओर रहेगी। ता॰ ५ से ९ तक अचानक गिरता नजर आयेगा। कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, फार्मा, मीडिया आदि के शेयरों में विशेष गिरावटपरिलक्षित होगी। ता॰ १२ से १६ तक उ॰फा॰ नक्षत्र शेयर बाजार में बाजार की चमक लौटना प्रारम्भ कर देगा। जो ता॰ २२ तक तेजी लगातार कायम रह सकती है। दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनीयाँ गुजरात अंबुजा सिमेन्ट, ए॰ सी॰ सी॰, लारसन एण्ड टुब्रो, डा॰ रेडी लैब, रैनब्रेक्सी, सनफार्मा, टाटा इन्फोटेक, सत्यम् कम्पयूटर, स्टेरलाइट, बी॰ इ॰ एल॰, इन्फोसीस नोवारटीस, ओरिएंटल बैंक, ऑटोमोबाइल, पॉवर, पेट्रोरसायन, कोडेक इण्डिया, एवान्टिस फार्मा, युनीफेम लैब आदि कंपनियों के शेयरों में। इसके बाद बाजार उतार-चढ़ाव पूर्ण लगातार गिरता नजर आयेगा।

**जून :-** मासारम्भ में सूर्य- राहु वृष राशि में, चंद्रमा- शनि मिथुन राशि में, वृहस्पति कर्क राशि में, केतु वृश्चिक राशि में, मंगल मकर राशि में, शुक्र- बुध मेष राशि में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता॰ ५ को शुक्र वृष राशि में, इसी ता॰ को मंगल कुम्भ में, ता॰ ६ को शनि अस्त होगा। ता॰ ८ को बुध वृष में, ता॰ १५ को सूर्य मिथुन में, ता॰ २४ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता॰ २६ को बुध मिथुन में, ता॰ २९ को शुक्र भी मिथुन में स्थान परिवर्तित करेगा। ता॰ २ को आद्रा नक्षत्र में बाजार खुलते ही बाजार में अचानक गिरावट दिखाई पड़ सकती है। ता॰ ३ से ६ तक बाजार में अचानक तेजी दिख पड़ेगी जिसमें तेजी का चांस बन सकता है। वह है कम्प्यूटर टेलीकाम फार्मा, वित्तीय संस्थाओं, बालाजी टेली फिल्मस, पेन्टामीडिया ,हिन्दुस्तान लिवर, टाटा पॉवर, पेट्रोरसायन जबकि ता॰ ६ को शनि अस्त होने से सीमेन्ट, भारी इंजिनियरिंग, ऑटोमोबाइल्स आदि के शेयरों में गिरावट परिलक्षित होगी। ता॰ ९ से १३ तक बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। फार्मा, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनियों, सत्यम् कम्प्यूटर, विप्रो, स्टारलाइट, रोल्टा, इन्फोसीस टेक्नोलॉजी, उपभोक्ता उत्पाद तथा टेलीकॉम कंपनियो के शेयरों में अचानक तेजी क्षणिक समय में ही कुछ लाभ दे सकती है। परन्तु ध्यान रखें बाजार टिकेगा नहीं। जितना ऊँचा उठेगा उससे ज्यादा नीचे गिरेगा। ता॰ १६ से २० तक बाजार में पेट्रोरसायन, मीडिया सेक्टर ,टेलीकाम सेक्टर, रिलायंस, पेन्टामीडिया, बालाजी, जी॰ टी॰ वी॰, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, हिन्दुजा फाइनेन्स, बैंक ऑफ बड़ौदा, एस॰ बी॰ आइ॰, एच॰ डी॰ एफ॰ सी॰, मेसरवेयर, डिजीटल, ग्लोबल, सॉफ्ट, रोल्टा, इन्फोसीस टेक्नोलॉजी, एच॰ सी॰ टेक्नालॉजी, इन्फोटेक, इन्टरफोर आदि कंपनियो। के शेयरों में तेजी मंदी में फँसकर अंत में तेजी का स्तर दिखा सकती है। बाजार में जिस दिन तेजी दिखे उस दिन सौदा काट कर निकल जायें। ता॰ २३ से २७ तक के बीच ता॰ २४ को बुध अस्त होने से नई पुरानी अर्थव्यवस्थाओं, कम्पयूटर सॉफ्टवेयर, मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की कंपनियां तथा फार्मा आदि कंपनियों के शेयरों के भाव तेजी से गिरना प्रारंभ कर सकता है जिसके कारण निवेशकों को नुकसान होने की आशंका है। यह मंदी का सिलसिला मास के अंत तक चलना चाहिये।

**जुलाई :-** मासारम्भ में सूर्य- शुक्र- बुध- शनि मिथुन राशि में , वृहस्पति कर्क राशि में, केतु वृश्चिक राशि में, मंगल कुम्भ राशि में, राहु वृष में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता॰ १० को बुध कर्क में तथा ११ को शनि उदय होगा। ता॰ १६ को सूर्य कर्क में, इसी ता॰ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता॰ २४ को शुक्र कर्क में, ता॰ २६ को बुध सिंह में, ता॰ २७ को शुक्र अस्त होगा। ता॰ ३० को गुरू सिंह में स्थान परिवर्तन करेगा। इस माह में पांच रविवार शेयर बाजार के लिये शुभाशुभ कारक हैं। ता॰ १ से ४ तक शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव पूर्ण तेजी का माहौल रहेगा। ज्यादा तौर पर बजाज ऑटो, हीरो होन्डा , टी॰ वी॰ एस॰ सुजुकी, ऑटो कार जीप, महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा, आइ॰ टी॰ सी॰, एच॰ सी॰ एल॰, इन्फोसीस, डिजीटल, ग्लोबल, सॉफ्ट ,जी॰ टी॰ एल॰ लिमिटेड, हयुजस, सॉफटवेयर, इन्फोसीस टेक्नोलॉजी, विप्रो, सत्यम्, हिन्दुस्तान लीवर, पुरानी अर्थव्यवस्थाओं में कुछ तेजी धीरे धीरे दिख पड़ेगी। ता॰ ७ से ११ तक गुजरात अंबुजा सीमेन्ट, ए॰ सी॰ सी॰, मद्रास सीमेन्ट, एच॰ एम॰ टी॰, रिलांयस इन्ड, टिस्को टेल्को, बालाजी टेलीफिल्मस, मल्टीमीडिया, जी टी॰ वी॰, सिपला, डाबर, रैनबैक्सी, डा॰ रेडी लैब, ग्लॉक्सी, टाटा पॉवर, मोबाइल आदि शेयरों में तेजी की चाल निकले तो खरीदना अल्प समय में लाभदायक बन सकता है। ता॰ १४ से २५ तक शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों के रुझान से दूरसंचार, मीडिया ,सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की कंपनियां सत्यम्, निट, रोल्टा, विप्रो, मास्टेक, लिमिटेड, इन्फोटेक, इंटरफोर्ट, इन्फोसीस, टेक्नोलॉजी, हयुजस, साफटवेयर, एच॰ सी॰ टेक्नोलॉजी, ऑटोमोबाइल, मल्टीमीडिया, रिलांयस इन्ड, डा॰ रेडी लैब, ग्लैक्सी, सन फामा, लार्सन एण्ड टुब्रो, पेट्रो रसायन आदि कंपनियों के शेयरों में तेजी संभावित है। किसी भी हालत में ता: २५ तक जिस दिन विशेष तेजी देखें अवश्य काट लें। ता॰ २८ से ३१ तक बाजार अलोकप्रिय अफवाहों अथवा राजनैतिक घटनाचक्र के कारण लगातार गिरता नजर आयेगा।

**अगस्त :-** मास आरम्भ में सूर्य-शुक्र कर्क में, बुध-वृहस्पति सिंह में, केतु वृश्चिक में, मंगल कुम्भ में, राहु वृष में, शनि मिथुन में भ्रमणशील रहेगा जबकि ता॰ १० को गुरु अस्त होगा, ता॰ १४ को मंगल वक्री होगा, ता॰ १७ को सूर्य सिंह में, इसी ता॰ को शुक्र सिंह में, ता॰ २१ को बुध कन्या में, ता॰ २६ को बुध वक्री होगा। फलत: ता. १ को पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में बाजार खुलेगा जिसके कारण बाजार में स्थिरता की स्थिति दिखाई देगी। दूरसंचार व उपभोक्ता उत्पाद, फार्मा तथा सॉफ्टवेयर उद्योग की कंपनियों में अच्छी चाल निकलने की संभावना बनेगी। ता॰ ४ से ८ तक अचानक ही तेजी का रूख बनता दिखाई दे सकता है। इस सप्ताह रिलांयस समूह, लार्सन एण्ड टुब्रो, इंफोसीस, बी॰ एफ॰ एल॰ ,साफ्टवेयर, एच॰ सी॰ एल॰, इंफोसीस सिस्टम, मास्टेक, निट, सत्यम्, टाटा, इन्फोटेक, विप्रो, सॉफटवेयर सोलुसन, एच॰ एफ॰ सी॰, आई॰ सी॰ आई॰, एस॰ बी॰ आई॰, हिन्दुस्तान पेट्रो तथा मल्टीमीडिया, बालाजी टेली, जी॰ टी॰ वी॰ आदि कंपनियों में विशेष तेजी बन सकती है। परन्तु ध्यान रखें तेजी देखते ही इसी सप्ताह में सौदा अवश्य काट लें। ता॰ ११ को उत्तराषाढा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलने से पहले ता॰ १० को ही वृहस्पती अस्त हो गया है। जिसका कुप्रभाव शेयर बाजार पर ता॰ ११ से १४ तक निश्चित पड़ेगा। बाजार का रुख अनिश्चित होना शुरू हो जाएगा और मन्दी का झटका लगना भी प्रारम्भ हो जाएगा। पुन: ता॰ १४ को मंगल वक्री होगा जिसमें ता॰ १५ से लेकर २५ तक एक तरफा तेजी रहना चाहिए। इन ता॰ में सॉफ्टवेयर-टेलीकाम, पेट्रो रसायन, सीमेन्ट, फर्मा तथा नयी पुरानी अर्थव्यवस्थाओं, मल्टीमीडिया, इन्फोसीस तथा टाटा पॉवर, ऑटोमोबाइल आदि के शेयरों में अच्छी तेजी का वातावरण दिखाई दे सकता है। पुन: ता॰ २६ से बाजार अचानक बुध वक्री होने से नयी पुरानी अर्थव्यवस्थाओं, कम्प्यूटर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रौद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनीयों तथा फार्मा आदि कंपनीयों के शेयर ता॰ २६ से २९ तक के बीच तेज रफ्तार वाले शेयरो। में जमकर घटा बढ़ी होगी। हो सकता है इन समयों में विदेशी निवेशक बिकवाल बन जायें। जिससे शेयर बाजार गिरता नजर आये। बाजार पर नजरअंदाज करते हुये सौदा करना या काटना बुद्धिमानी होगा।

**सितंबर :-** मासारंभ में शुक्र-सूर्य-बुध सिंह में, बुध कन्या में, केतु वृश्चिक में, मंगल कुम्भ में, राहु वृष में, शनि मिथुन में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता॰ ३ को गुरु पूर्व में उदय होगा। ता॰ ४ को बुध पश्चिम में अस्त होगा, इसी ता॰ को बुध सिंह में, ता॰ ५ को राहु में, इसी ता॰ को केतु तुला में, ता॰ १० को शुक्र कन्या में, ता॰ १४ मंगल मार्गी होगा। ता॰ १७ को सूर्य कन्या में, इसी ता॰ को बुध पूरब में उदय होगा। ता॰ २० को बुध मार्गी होगा फलत: ता॰ १ से ३ तक बाजार शुरुआती दिनों में तेजी में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

# सन् २००३ ई. में शेयर बाजार की तेजी मंदी समीक्षा

लेखक-प्रख्यात ज्योतिषाचार्य, आचार्य पं॰ टुनटुन शास्त्री, करौंदी पो॰ - सरॉव (नटवार) रोहतास (बिहार)-८०२२१८

शेयर बाजारों पर ग्रह नक्षत्रों की युति, प्रतियुति, उदय, अस्त, मार्गी, वक्री, नक्षत्रों के परिवर्तन का असर अवश्य ही पड़ता है। जिनके अधार पर शेयर बाजारों को ८० प्रतिशत तक सही रूप में आंकलन करना संभव हो सकता है। मेरे मत में यह मानना ही उचित होता है कि शेयर बाजार में कारोबार करते समय देश काल, राजनैतिक उठा पटक, प्राकृतिक उपद्रव, अज्ञात अफवाहों के अतिरिक्त ग्रह नक्षत्रों को भी आधार बनाकर चलना भी सफल व्यापार की कुंजी है। जो शेयर बाजार में होने वाले तेजी- मंदी परिवर्तनों का संकेत है।

**जनवरी :-** मासारम्भ में सूर्य धनु में, बुध, नेप्च्यून मकर में, हर्षल कुम्भ में, राहु बृष में, शनि मिथुन में, गुरु कर्क में , मंगल तुला में, शुक्र-केतु-प्लूटो में भ्रमणशील रहेंगे। जबकि ता॰ १ को शुक्र वृश्चिक में, ता॰ ३ को बुध वक्री होगा तथा ता॰ ५ को पश्चिम में अस्त होगा। ता॰ ७ को मंगल वृश्चिक में, ता॰ ८ को शनि वृष में, ता॰ १० को बुध धनु में, ता॰ १४ को सूर्य मकर में, ता॰ १७ को बुध पुनः पूर्व में उदय होगा। ता॰ २३ को बुध मार्गी होगा, ता॰ २९ को शुक्र धनु में भ्रमणशील रहेगा। ता॰ १ को ज्येष्ठा नक्षत्र में बाजार खुलेगा फलतः ता॰ १ से ३ तक खासी तेजी का रुख दिलायेगा तथा तेजी उफान पर रहेगी। इन समयों में कम्पयुटर साफटवेयर, मीडिया सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनी ऑटो मोबाइल फार्मा तथा पॉवर आदि की कंपनीयों में अच्छी चाल बनेगी। ता॰ ३ तक हर हाल में सौदा कर लेना बुद्धिमानी होगा। ता॰ ६ को धनिष्ठा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलने से पहले ता॰ ५ को बुध पश्चिम में अस्त हो जायेगा। फलतः ता॰ ६ से १० तक कारोबार प्रारंभ होते ही शेयर मूल्यों में अच्छें खासे ऊपर-नीचे के परिवर्तन दिख सकते हैं। कम्पयूटर में विप्रो. सत्यम्, निट, रोल्टा, इन्फोटेक, इन्फोसीस साफटवेयर, दूरसंचार, मीडीया, सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र की कंपनीयों तथा फार्मा कंपनीयों में सर्वाधिक उथल-पुथल हो सकती है। पॉवर स्टील, ऑटोमोबाइल रिलायंस इन्ड, उपभोक्ता उत्पाद तथा पेट्रोरसायन के शेयरों में तेजी-मंदी फंसकर अंत में तेजी का स्तर दिखा सकती हैं। कुल मिलाकर मंदी का सौदा कम्पयुटर फार्मा, नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं, सीमेन्ट आदि में किया जा सकता है। ता॰ १३ को भरणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा, १३ से १७ तक में प्रारंभ में हल्की मंदी की जकड़ में बाजार दिख पड़ेगा। धीरे-धीरे बाजार मीडिया वित्तीय संस्थाओं सीमेन्ट, ऑटोमोबाइल फार्मा, पॉवर उपभोक्ता उत्पाद की कंपनी के शेयरों में इस सप्ताह के मध्य में फिर से चाल बनने की आशा है। जिस दिन व्यापार गिरे उस दिन कम्पयूटर साफटवेयर, बालाजी टेली, मल्टीमीडिया, जी, टेलीफिल्म, हिन्दुस्तान लीवर, सिपला, गलोक्सी, डाबर डा॰ रेड्डी लैब, रैनबैक्सी, लारसन एण्ड टुब्रो तथा दूरसंचार कंपनीयों के शेयरों में सौदा अवश्य कर लें लाभकारी होगा। ता॰ २० को अश्लेषा नक्षत्र में बाजार खुलेगा फलतः ता॰ २० से २४ तक दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रौद्योगिकी के कंपनीयों, हिमाचल सत्यम् कम्पयूटर, रोल्टा, विप्रो, इन्फोसीस, टेक्नोलॉजी इन्फोटेक, डीजिटल, ग्लोबल, सॉफट, हयुजेस, सॉफटवेयर, बजाज ऑटो, हीरो होन्डा, टी॰ वी॰ एस॰ सुजकी, हल्का एवं भारी वाहन , सिमेन्ट, आई टी सी आदि कंपनीयों के शेयरों में धीरे-धीरे तेजी जोर पकडेंगी। उपरोक्त कंपनीयों के शेयरों में अच्छी चाल निकलने की संभावना बनेगी। ऐसा होने पर ता॰ ३१ तक इनमें तेजी की लाइन चलती रहने की संभावना है।

**फरवरी :-** मासारंभ में सूर्य-चन्द्रमा-नेप्च्यून मकर में, हर्शल कुंभ में, राहु-शनि वृष में, गुरु कर्क में, मंगल-केतु-प्लेटो वृश्चिक में, शुक्र-बुध धनु में भ्रमणशील रहेगा जबकि ता॰ ८ को बुध मकर में, ता॰ १२ को सूर्य कुंभ में, ता॰ २१ को शनि मार्गी होगा। ता॰ २३ को मंगल धनु में, ता॰ २५ को शुक्र मकर में स्थान परिवर्तन करेगा। ता॰ ३ को शतभिषा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही असमंजस की स्थिति रहेगी। पुनः ता॰ ४ से ७ तक जी टीवी, बालाजी टेलीफिल्म, मल्टीमीडिया, एच डी एफ सी, आई॰ सी॰ आई॰ सी॰ आई॰, यू॰ टी॰ आई॰, एस॰ बी॰ आई॰, नेशले इण्डीया, कॉस्ट्रल, आई॰ बी॰ पी॰ कं॰, ऐशियन पेन्ट, टाटा पॉवर, हिन्दुस्तान लिवर, सिपला, डा॰ रेडी लैब, रैनबैक्सी, डाबर, हिमाचल फायु, विदेश संचार निगम, अंबुजा सिमेन्ट, ए॰ सी॰ सी॰, मेसर बेयर, एच॰ सी॰ एल॰, इनफोसीस, सिस्टम, डिजीटल, ग्लोबल, सॉफट, हंयुजस सॉफटवेयर, विप्रो, निट, रोल्टा आदि के शेयरों में तेजी की चाल बनती दिखाई दे सकती है। यदि इन शेयरों में तेजी की चाल निकले तो उसी के साथ आचरण करते हुये उन्हे खरीदना आगामी अल्प समय में लाभदायक बन सकता है। यह सिलसिला कम से कम ता॰ २० तक चलना चाहिये। ता॰ २४-२५ को बाजार में स्थिरता की स्थिति दिखाई देगी। दूरसंचार व उपभोक्ता उत्पाद, फार्मा तथा पेट्रो रसायन कंपनीयों में एकाएक अचानक क्षणिक अच्छी चाल निकलने की संभावना बनेगी।

**मार्च :-** मासारम्भ में सूर्य-बुध-हर्शल-चंद्रमा कुंभ में, शनि -राहु वृष में, गुरु कर्क में, प्लेटो-केतु वृश्चिक में, मंगल धनु में, शुक्र-नेप्चयून मकर में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता॰ १ को बुध कुम्भ में , ता॰ ६ को बुध पूर्व में अस्त होगा। ता॰ १४ को सूर्य मीन में, ता॰ १७ को शुक्र धनु में, ता॰ १८ को बुध मीन में, ता॰ २२ को शुक्र कुम्भ में स्थान परिवर्तन करेगा। ता॰ ३ को शतभिषा नक्षत्र में बाजार खुलेगा फलतः ता॰ ३ से ७ तक में ओ॰ एन॰ जी॰ सी॰, विप्रो, सत्यम, एच॰ सी॰ एल॰ टेक्नोलॉजी, कोटक, महेन्द्रा, हिन्दुजा फाईनेन्स, बैंक ऑफ बड़ौदा, स्टेट बैंक, पेंटा मीडिया, बालाजी टेलीफिल्म, आई॰ टी॰ सी॰, मद्रास सीमेन्ट, रिलांयस इन्ड., टाटा पॉवर, इनफोटेक, कंपनी जेनिसीस इन्टरनेशनल कॉरपोरेशन, पोलारिस सॉफट, केमिकल्स एण्ड फर्टिलाइजर्स, बजाज ऑटो, स्यारलाइट, इण्डियन ऑयल आदि कंपनियों के शेयरों में अच्छी चाल निकलने की संभावना बनेगी। इसके बाद ता॰ ६ को बुध अस्त होने से दो दिनों तक कम्प्यूटर, फार्मा, दूरसंचार, मीडिया, नई-पुरानी अर्थव्यवस्थाओं के शेयरों में बाजार आँधी के आम की तरह गिरता नजर आएगा। ता॰ १० को रोहिणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता॰ १० से १४ तक बाजार का रुख अनिश्चित होना शुरू हो जाएगा और मंदी का झटका लगना भी प्रारम्भ हो जाएगा। अतः अनिश्चित बाजार में काम करना उचित नहीं रहेगा। ता॰ १७ को मघा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता॰ १७ से २१ तक किसी आलोकप्रिय घटना या अफवाह के कारण बाजार में सभी बिकवाल नजर आएंगे। ता॰ २४ को ज्येष्ठा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही तेजी से गिरना प्रारम्भ कर सकता है। जिसके कारण निवेशकों को नुकसान होने की भी आशंका हो सकती है। इस दिन कम्प्यूटर, सॉफटवेयर, मीडिया फार्मा तथा अर्थजगत की कंपनियों में तेजी से गिरावट दिख पड़ेगी। ता॰ २५ से ३१ तक बाजार का वातावरण अनिश्चय की स्थिति में बना रहेगा। बाजार में जब भी तेजी का माहौल बनेगा किसी न किसी कारण से बाजार टूटता नजर आएगा।

**अप्रैल :-** मासारम्भ में सूर्य-बुध-चंद्रमा मीन में, राहु-शनि वृष में, गुरु कर्क में, केतु-प्लेटो वृश्चिक में, मंगल-धनु में, नेप्च्यून मकर में, हर्शल-शुक्र कुम्भ में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता॰ १ को गुरु मार्गी होगा, ता॰ २ को बुध मेष में, ता॰ ४ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता॰ ७ को शनि मिथुन में, ता॰ ११ को मंगल मकर में, ता॰ १४ को सूर्य मेष में, ता॰ १६ को शुक्र मीन में, ता॰ २५ को बुध वक्री होगा। ता॰ २७ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता॰ १ को उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता॰ १ से ४ तक उतार-चढाव के मध्य एल॰ एण्ड॰ टी॰, एस॰ एस॰ आई लिमिटेड, रिलायंस इन्ड, मल्टी मीडिया, बालाजी टेलीफिल्म, जी॰ टी॰ वी॰ पेन्टा मीडिया, एच॰ डी॰ एफ॰ सी॰, आई॰ सी॰ आई॰ सी॰ आई॰, एस॰ बी॰ आई॰, बैंक ऑफ बड़ौदा, हीरो-होन्डा, टी॰ वी॰ एस॰ सुजुकी, टिस्को टेल्को, ग्लॉक्सी इण्डिया, सनफार्मा, रैनबेक्सी, डॉबर, डॉ॰ रेडी लैब, पेट्रोरसायन, एविन्टर्स फार्मा, युनीकेम लैब, इन्फोटेक के शेयरों में एक बार अच्छी खासी तेजी देखने की स्थिति प्रतीत हो रही है। ता॰ ७ को रोहिणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता॰ ७ से ११ तक रिलायंस, विप्रो, इनफोसिस, बाला जी टेलीफिल्म, एच॰ सी॰ एल॰ टेक्नोलौजी, हिमांचल फयू, विदेश संचार निगम, इण्डियन-ऑयल, टाय पावर, रैनबैक्सी, डॉ॰ रेड्डी लैब, स्टेरलाइट, एशियन पेन्ट, हिन्दुजा ग्रुप, यूनिकेम लैब, एवॉन्टिस फार्मा, कोडेक इण्डिया आदि के शेयरों में तेजी



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

**जनवरी १, १०, १९, २८** को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्पवूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

**फरवरी १, १०, १९, २८** को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

**मार्च १, १०, १९, २८** में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

**अप्रैल १, १०, १९, २८** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

**मई १, १०, १९, २८** तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून १, १०, १९, २८** जन्मतिथि के लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

**जूलाई १, १०, १९, २८** जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ३, ७ ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

**अगस्त १, १०, १९, २८** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

**सितम्बर १, ९, १०, १९, २८** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. २, ११, २०, २९** जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **सितं. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। **सितं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। **सितं. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **सितं. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **सितं. ८, १७, २६** तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **सितं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

**अक्टू. १, १०, १९, २८** को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४,२६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। **अक्टू. २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ६०, ६६, ६९ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अक्टू. ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अक्टू. ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **अक्टू. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

**नवम्बर १, १०, १९, २८** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **नवम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। **नवं. ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **नवम्बर ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **नवम्बर ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **नवम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। **नवं. ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

**दिसम्बर १, १०, १९, २८** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दि. ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **दिसं. ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। **दिसम्बर ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **दिसम्बर ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१** को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **दिसम्बर ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०** को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS





# विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहा पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यही ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहयता से गणित शीघ्रता से व सरलता से हो जाता है, इसको उदाहरण देकर समझाते हैं।

## चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

| | राशि | अंश | कला |
|---|---|---|---|
| १६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात: | ६ | २१ | ५४ |
| १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात: | ६ | १० | ०२ |
| २४ घंटे की गति | ० | ११ | ५२ |

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति— ७१२ कला

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२×९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

| | राशि | अंश | कला |
|---|---|---|---|
| १५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट | ६ | १० | ०२ |
| प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति | ० | ८ | ०२ |
| १५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट | ६ | १८ | ०४ |

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

| | राशि | अंश | कला |
|---|---|---|---|
| २४ घंटे की गति | ० | ११ | ५२ |
| १२ घंटे की गति (२ से भाग किया) | ० | ५ | ५६ |
| ४ घंटे की गीत (३ से भाग किया) | ० | १ | ५९ |
| ०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया) | ० | ० | ०७ |
| १६-१५ घंटे की गति | ० | ८ | ०२ |
| | +६ | १० | ०२ |
| | ६ | १८ | ०४ |

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही अन्तर लेकर दैनिक गति ज्ञात करनी चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

व सरलता से हो जाता है. उसको उदाहरण देकर समझाते हैं। | सवा दो दिन रहता है, जिस दिन आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही



क्रमांक १

# चन्द्र स्पष्ट

| | | | | | | | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सर्वर्क्ष | ५३<br>० | ५३<br>६ | ५३<br>९ | ५३<br>१३ | ५३<br>१६ | ५३<br>२० | ५३<br>२३ | ५३<br>२७ | ५३<br>३० | ५३<br>३४ | ५३<br>३८ | ५३<br>४१ | ५३<br>४५ | ५३<br>४८ | ५३<br>५ | ५३<br>५६ | ५३<br>५९ | ५४<br>३ | ५४<br>७ | ५४<br>१० |
| गति | १५<br>५ | १५<br>४ | १५<br>३ | १५<br>२ | १५<br>१ | १५<br>० | १४<br>५९ | १४<br>५८ | १४<br>५७ | १४<br>५६ | १४<br>५५ | १४<br>५४ | १४<br>५३ | १४<br>५२ | १४<br>५१ | १४<br>५० | १४<br>४९ | १४<br>४८ | १४<br>४७ | १४<br>४६ |
| सर्वर्क्ष | ५४<br>१४ | ५४<br>१८ | ५४<br>२१ | ५४<br>२५ | ५४<br>२९ | ५४<br>३२ | ५४<br>३७ | ५४<br>४० | ५४<br>४४ | ५४<br>४८ | ५४<br>५१ | ५४<br>५५ | ५५<br>५९ | ५५<br>३ | ५५<br>६ | ५५<br>११ | ५५<br>१४ | ५५<br>१७ | ५५<br>२१ | ५५<br>२५ |
| गति | १४<br>४५ | १४<br>४४ | १४<br>४३ | १४<br>४२ | १४<br>४१ | १४<br>४० | १४<br>३९ | १४<br>३८ | १४<br>३७ | १४<br>३६ | १४<br>३५ | १४<br>३४ | १४<br>३३ | १४<br>३२ | १४<br>३१ | १४<br>३० | १४<br>२९ | १४<br>२८ | १४<br>२७ | १४<br>२६ |
| सर्वर्क्ष | ५५<br>२९ | ५५<br>३३ | ५५<br>३६ | ५५<br>४० | ५५<br>४४ | ५५<br>४८ | ५५<br>१२ | ५६<br>५६ | ५६<br>० | ५६<br>४ | ५६<br>८ | ५६<br>१२ | ५६<br>१६ | ५६<br>२० | ५६<br>२४ | ५६<br>२८ | ५६<br>३२ | ५६<br>३६ | ५६<br>४० | ५६<br>४० |
| गति | १४<br>२५ | १४<br>२४ | १४<br>२३ | १४<br>२२ | १४<br>२१ | १४<br>२० | १४<br>१९ | १४<br>१८ | १४<br>१७ | १४<br>१६ | १४<br>१५ | १४<br>१४ | १४<br>१३ | १४<br>१२ | १४<br>११ | १४<br>१० | १४<br>९ | १४<br>८ | १४<br>७ | १४<br>६ |
| सर्वर्क्ष | ५६<br>४८ | ५६<br>५२ | ५६<br>५६ | ५७<br>० | ५७<br>४ | ५७<br>८ | ५७<br>१२ | ५७<br>१६ | ५७<br>२० | ५७<br>२४ | ५७<br>२८ | ५७<br>३२ | ५७<br>३६ | ५७<br>४१ | ५७<br>४५ | ५७<br>५० | ५७<br>५४ | ५७<br>५८ | ५८<br>२ | ५८<br>६ |
| गति | १४<br>५ | १४<br>४ | १४<br>३ | १४<br>२ | १४<br>१ | १४<br>० | १३<br>५९ | १३<br>५८ | १३<br>५७ | १३<br>५६ | १३<br>५५ | १३<br>५४ | १३<br>५३ | १३<br>५२ | १३<br>५१ | १३<br>५० | १३<br>४९ | १३<br>४८ | १३<br>४७ | १३<br>४६ |
| सर्वर्क्ष | ५८<br>११ | ५८<br>१५ | ५८<br>१९ | ५८<br>२३ | ५८<br>२८ | ५८<br>३२ | ५८<br>३६ | ५८<br>४० | ५८<br>४५ | ५८<br>४९ | ५८<br>५४ | ५८<br>५८ | ५९<br>० | ५९<br>७ | ५९<br>११ | ५९<br>१६ | ५९<br>२० | ५९<br>२४ | ५९<br>२९ | ५९<br>३३ |
| गति | १३<br>४५ | १३<br>४४ | १३<br>४३ | १३<br>४२ | १३<br>४१ | १३<br>४० | १३<br>३९ | १३<br>३८ | १३<br>३७ | १३<br>३६ | १३<br>३५ | १३<br>३४ | १३<br>३३ | १३<br>३२ | १३<br>३१ | १३<br>३० | १३<br>२९ | १३<br>२८ | १३<br>२७ | १३<br>२६ |
| सर्वर्क्ष | ५९<br>३८ | ५९<br>४२ | ५९<br>४७ | ५९<br>५१ | ५९<br>५५ | ५९<br>० | ६०<br>४ | ६०<br>९ | ६०<br>१३ | ६०<br>१८ | ६०<br>२२ | ६०<br>२७ | ६०<br>३१ | ६०<br>३६ | ६०<br>४१ | ६०<br>४६ | ६०<br>५० | ६०<br>५५ | ६०<br>५९ | ६१<br>४ |
| गति | १३<br>२५ | १३<br>२४ | १३<br>२३ | १३<br>२२ | १३<br>२१ | १३<br>२० | १३<br>१९ | १३<br>१८ | १३<br>१७ | १३<br>१६ | १३<br>१५ | १३<br>१४ | १३<br>१३ | १३<br>१२ | १३<br>११ | १३<br>१० | १३<br>९ | १३<br>८ | १३<br>७ | १३<br>६ |
| सर्वर्क्ष | ६१<br>८ | ६१<br>१३ | ६१<br>१७ | ६१<br>२२ | ६१<br>२७ | ६१<br>३२ | ६१<br>३७ | ६१<br>४१ | ६१<br>४६ | ६१<br>५१ | ६१<br>५६ | ६२<br>१ | ६२<br>६ | ६२<br>१० | ६२<br>१५ | ६२<br>२० | ६२<br>२५ | ६२<br>३० | ६२<br>३५ | ६२<br>३९ |
| गति | १३<br>५ | १३<br>४ | १३<br>३ | १३<br>२ | १३<br>१ | १३<br>० | १२<br>५९ | १२<br>५८ | १२<br>५७ | १२<br>५६ | १२<br>५५ | १२<br>५४ | १२<br>५३ | १२<br>५२ | १२<br>५१ | १२<br>५० | १२<br>४९ | १२<br>४८ | १२<br>४७ | १२<br>४६ |
| सर्वर्क्ष | ६२<br>४४ | ६२<br>४९ | ६२<br>५४ | ६२<br>५९ | ६३<br>४ | ६३<br>९ | ६३<br>१४ | ६३<br>१९ | ६३<br>२४ | ६३<br>२९ | ६३<br>३४ | ६३<br>३९ | ६३<br>४४ | ६३<br>४९ | ६३<br>५४ | ६३<br>० | ६३<br>५ | ६३<br>१ | ६४<br>१५ | ६४<br>२० |
| गति | १२<br>४५ | १२<br>४४ | १२<br>४३ | १२<br>४२ | १२<br>४१ | १२<br>४० | १२<br>३९ | १२<br>३८ | १२<br>३७ | १२<br>३६ | १२<br>३५ | १२<br>३४ | १२<br>३३ | १२<br>३२ | १२<br>३१ | १२<br>३० | १२<br>२९ | १२<br>२८ | १२<br>२७ | १२<br>२६ |
| सर्वर्क्ष | ६४<br>२६ | ६४<br>३१ | ६४<br>३६ | ६४<br>४१ | ६४<br>४६ | ६४<br>५२ | ६४<br>५७ | ६५<br>३ | ६५<br>८ | ६५<br>१३ | ६५<br>१८ | ६५<br>२४ | ६५<br>२९ | ६५<br>३४ | ६५<br>४० | ६५<br>४५ | ६५<br>५२ | ६५<br>५६ | ६५<br>१ | ६६<br>७ |
| गति | १२<br>२५ | १२<br>२४ | १२<br>२३ | १२<br>२२ | १२<br>२१ | १२<br>२० | १२<br>१९ | १२<br>१८ | १२<br>१७ | १२<br>१६ | १२<br>१५ | १२<br>१४ | १२<br>१३ | १२<br>१२ | १२<br>११ | १२<br>१० | १२<br>९ | १२<br>८ | १२<br>७ | १२<br>६ |
| सर्वर्क्ष | ६६<br>१२ | ६६<br>१८ | ६६<br>२३ | ६६<br>२९ | ६६<br>३४ | ६६<br>४० | ६६<br>४६ | ६६<br>५२ | ६६<br>५९ | ६७<br>५ | ६७<br>११ | ६७<br>१८ | ६७<br>२३ | ६७<br>३० | ६७<br>३७ | ६७<br>४३ | ६७<br>५० | ६७<br>५७ | ६८<br>३ | +<br>+ |
| गति | १२<br>५ | १२<br>४ | १२<br>३ | १२<br>२ | १२<br>१ | १२<br>० | ११<br>५९ | ११<br>५८ | ११<br>५७ | ११<br>५६ | ११<br>५५ | ११<br>५४ | ११<br>५३ | ११<br>५२ | ११<br>५१ | ११<br>५० | ११<br>४९ | ११<br>४८ | ११<br>४७ | +<br>+ |

**चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-** (१) भयात भभोग निकालना-६० ।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

क्रमांक २

## चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

| अश्विन | भरणी | कृत्तिका | रोहिणी | मृगशिर | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्ले |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०<br>१३<br>२०<br>० | ०<br>२६<br>४०<br>० | १<br>१०<br>०<br>० | १<br>२३<br>२०<br>० | २<br>६<br>४०<br>० | २<br>२०<br>०<br>० | ३<br>३<br>२०<br>० | ३<br>१६<br>४०<br>० | ४<br>०<br>०<br>० |
| **मघा** | **पू.फा.** | **उ.फा.** | **हस्त** | **चित्रा** | **स्वाति** | **विशाखा** | **अनुराधा** | **ज्येष्ठा** |
| ४<br>१३<br>२०<br>० | ४<br>२६<br>४०<br>० | ५<br>१०<br>०<br>० | ५<br>२३<br>२०<br>० | ६<br>६<br>४०<br>० | ६<br>२०<br>०<br>० | ७<br>३<br>२०<br>० | ७<br>१६<br>४०<br>० | ८<br>०<br>०<br>० |
| **मूल** | **पू.षा.** | **उ.षा.** | **श्रवण** | **धनिष्ठा** | **शतभिषा** | **पू.भा.** | **उ.भा.** | **रेवती** |
| ८<br>१३<br>२०<br>० | ८<br>२६<br>४०<br>० | ९<br>१०<br>०<br>० | ९<br>२३<br>२०<br>० | १०<br>६<br>४०<br>० | १०<br>२०<br>०<br>० | ११<br>३<br>२०<br>० | ११<br>१६<br>४०<br>० | ०<br>०<br>०<br>० |

**उदाहरण-** यथा भभोग ६५ ।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२ ।०९ को और भभात् १९ ।०३ को गुणा किया (१२ ।०९)×(१९ ।०३)=२३१° ।२७' ।२७" या ३° ।५१' ।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

| | | |
|---|---|---|
| गुणनफल | = | ३ ।५१ ।२७ |
| गत नक्षत्र विशाखा का मान | = | ७ ।०३ ।२० ।०० |
| चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ | = | ७ ।०७ ।११ ।२७ |

चन्द्र गति १२ ।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में विशेष अंश कलादि अंतरांश नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम करने में सक्षम है। अब चंद्र स्पष्टता हेतु श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जा॰ सी॰, विप्रा, सत्यम, एच॰ सी॰ एल॰ टेक्नोलॉजी, कोटक, महेन्द्रा, हिन्दुजा
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

## चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

| चन्द्रमा के | | चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु | | | | चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर | | | | चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ | | | | चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | कला | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन |
| ० | ० | केतु | ७ | — | — | सूर्य | ४ | ६ | — | मंगल | ३ | ६ | — | गुरु | ४ | — | — |
| ० | १० | | ६ | १० | २९ | | ४ | ५ | ३ | | ३ | ४ | २९ | | ३ | ९ | १८ |
| ० | २० | | ६ | ९ | २७ | | ४ | ४ | ६ | | ३ | ३ | २७ | | ३ | ७ | ६ |
| ० | ३० | | ६ | ८ | २६ | | ४ | ३ | ९ | | ३ | २ | २६ | | ३ | ४ | २४ |
| ० | ४० | | ६ | ७ | २४ | | ४ | २ | १२ | | ३ | १ | २४ | | ३ | २ | १२ |
| ० | ५० | | ६ | ६ | २३ | | ४ | १ | १५ | | ३ | — | २३ | | ३ | — | — |
| १ | ० | | ६ | ५ | २१ | | ४ | — | १८ | | २ | ११ | २१ | | २ | ९ | १८ |
| १ | १० | | ६ | ५ | २० | | ३ | ११ | २१ | | २ | १० | २० | | २ | ७ | ६ |
| १ | २० | | ६ | ३ | १८ | | ३ | १० | २४ | | २ | ९ | १८ | | २ | ४ | २४ |
| १ | ३० | | ६ | २ | १७ | | ३ | ९ | २७ | | २ | ८ | १७ | | २ | २ | १२ |
| १ | ४० | | ६ | १ | १५ | | ३ | ९ | — | | २ | ७ | १५ | | २ | — | — |
| १ | ५० | | ६ | — | १४ | | ३ | ८ | ३ | | २ | ६ | १४ | | १ | ९ | १८ |
| २ | ० | | ५ | ११ | १२ | | ३ | ७ | ६ | | २ | ५ | १२ | | १ | ७ | ६ |
| २ | १० | | ५ | १० | ११ | | ३ | ६ | ९ | | २ | ४ | ११ | | १ | ४ | २४ |
| २ | २० | | ५ | ९ | ९ | | ३ | ५ | १२ | | २ | ३ | ९ | | १ | २ | १२ |
| २ | ३० | | ५ | ८ | ८ | | ३ | ४ | १५ | | २ | २ | ८ | | १ | — | — |
| २ | ४० | | ५ | ७ | ६ | | ३ | ३ | १८ | | २ | १ | ६ | | — | ९ | १८ |
| २ | ५० | | ५ | ६ | ५ | | ३ | २ | २१ | | २ | — | ५ | | — | ७ | ६ |
| ३ | ० | | ५ | ५ | ३ | | ३ | १ | २४ | | १ | ११ | ३ | | — | ४ | २४ |
| ३ | १० | | ५ | ४ | २ | | ३ | — | २७ | | १ | १० | २ | | — | २ | १२ |
| ३ | २० | | ५ | ३ | — | | ३ | — | — | | १ | ९ | ० | शनि | १९ | ० | ० |
| ३ | ३० | | ५ | १ | २९ | | २ | ११ | ३ | | १ | ७ | २९ | | १८ | ९ | ४ |
| ३ | ४० | केतु | ५ | — | २७ | सूर्य | २ | १० | ६ | मंगल | १ | ६ | २७ | शनि | १८ | ६ | ९ |
| ३ | ५० | | ४ | ११ | २६ | | २ | ९ | ९ | | १ | ५ | २६ | | १८ | ३ | १३ |
| ४ | ० | | ४ | १० | २४ | | २ | ८ | १२ | | १ | ४ | २४ | | १८ | ० | १८ |
| ४ | १० | | ४ | ९ | २३ | | २ | ७ | १५ | | १ | ३ | २३ | | १७ | ९ | २२ |
| ४ | २० | | ४ | ८ | २१ | | २ | ६ | १८ | | १ | २ | २१ | | १७ | ६ | २७ |
| ४ | ३० | | ४ | ७ | २० | | २ | ५ | २१ | | १ | १ | २० | | १७ | ४ | १ |
| ४ | ४० | | ४ | ६ | १८ | | २ | ४ | २४ | | १ | — | १८ | | १७ | १ | ६ |
| ४ | ५० | | ४ | ५ | १७ | | २ | ३ | २७ | | — | १० | १७ | | १६ | १० | १० |
| ५ | ० | | ४ | ४ | १५ | | २ | ३ | — | | — | १० | १५ | | १६ | ७ | १५ |
| ५ | १० | | ४ | ३ | १४ | | २ | २ | ३ | | — | ९ | १४ | | १६ | ४ | १९ |
| ५ | २० | | ४ | २ | १२ | | २ | १ | ६ | | — | ८ | १२ | | १६ | १ | २४ |
| ५ | ३० | | ४ | १ | ११ | | २ | — | ९ | | — | ७ | ११ | | १५ | १० | २८ |
| ५ | ४० | | ४ | — | ९ | | १ | ११ | १२ | | — | ६ | ९ | | १५ | ८ | ३ |
| ५ | ५० | | ३ | ११ | ८ | | १ | १० | १५ | | — | ५ | ८ | | १५ | ५ | ७ |
| ६ | ० | | ३ | १० | ६ | | १ | ९ | १८ | | — | ४ | ६ | | १५ | २ | १२ |
| ६ | १० | | ३ | ९ | ५ | | १ | ८ | २१ | | — | ३ | ५ | | १४ | ११ | १६ |
| ६ | २० | | ३ | ८ | ३ | | १ | ७ | २४ | | — | २ | ३ | | १४ | ८ | २१ |
| ६ | ३० | | ३ | ७ | २ | | १ | ६ | २७ | | — | १ | १ | | १४ | ५ | २५ |
| ६ | ४० | | ३ | ६ | — | | १ | ६ | — | राहु | १८ | — | — | | १४ | ३ | — |
| ६ | ५० | | ३ | ४ | २९ | | १ | ५ | ३ | | १७ | ९ | ९ | | १४ | — | ४ |
| ७ | ० | | ३ | ३ | २७ | | १ | ४ | ६ | | १७ | ६ | १८ | | १३ | ९ | ९ |
| ७ | १० | | ३ | २ | २६ | | १ | ३ | ९ | | १७ | ३ | २७ | | १३ | ६ | १३ |
| ७ | २० | | ३ | १ | २४ | | १ | २ | १२ | | १७ | १ | ६ | | १३ | ३ | १८ |
| ७ | ३० | | ३ | — | २३ | | १ | १ | १५ | | १६ | १० | १५ | | १३ | — | २२ |
| ७ | ४० | | २ | ११ | २१ | | १ | ० | १८ | | १६ | ७ | २४ | | १२ | ९ | २७ |
| ७ | ५० | | २ | १० | २० | | — | ११ | २१ | | १६ | ५ | ३ | | १२ | ६ | १ |
| ८ | ० | | २ | ९ | ८ | | — | १० | २४ | | १६ | २ | १२ | | १२ | ४ | ६ |
| ८ | १० | | २ | ८ | १७ | | — | ९ | २७ | | १५ | ११ | २१ | | १२ | १ | १० |
| ८ | २० | | २ | ७ | १५ | | — | ९ | — | | १५ | ९ | — | | ११ | १० | १५ |
| ८ | ३० | | २ | ६ | १४ | | — | ८ | ३ | | १५ | ६ | ९ | | ११ | ७ | १९ |
| ८ | ४० | | २ | ५ | १२ | | — | ७ | ६ | | १५ | ३ | १८ | | ११ | ४ | २४ |
| ८ | ५० | | २ | ४ | ११ | | — | ६ | ९ | | १५ | — | २७ | | ११ | १ | २८ |
| ९ | ० | | २ | ३ | ९ | | — | ५ | १२ | | १४ | १० | ६ | | १० | ११ | ३ |
| ९ | १० | | २ | २ | ८ | | — | ४ | १५ | | १४ | ७ | १५ | | १० | ८ | ७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS





| चन्द्रमा के | | चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु | | | | चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर | | | | चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ | | | | चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | कला | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन |
| ९ | २० | केतु | २ | १ | ६ | सूर्य | — | ३ | १८ | राहु | १४ | ४ | २४ | शनि | १० | ५ | १२ |
| ९ | ३० | | २ | — | ५ | | — | २ | २१ | | १४ | २ | ३ | | १० | २ | १६ |
| ९ | ४० | | १ | ११ | ३ | | — | १ | २४ | | १३ | ११ | १२ | | ९ | ११ | २१ |
| ९ | ५० | | १ | १० | २ | | — | — | २७ | | १३ | ८ | २१ | | ९ | ८ | २५ |
| १० | ० | | १ | ९ | — | चन्द्र | १० | — | — | | १३ | ६ | — | | ९ | ६ | — |
| १० | १० | | १ | ७ | २९ | | ९ | १० | १५ | | १३ | ३ | ९ | | ९ | ३ | ४ |
| १० | २० | | १ | ६ | २७ | | ९ | ९ | — | | १३ | — | १८ | | ९ | — | ९ |
| १० | ३० | | १ | ५ | २६ | | ९ | ७ | १५ | | १२ | ९ | २७ | | ८ | ९ | १३ |
| १० | ४० | | १ | ४ | २४ | | ९ | ६ | — | | १२ | ७ | ६ | | ८ | ६ | १८ |
| १० | ५० | | १ | ३ | २३ | | ९ | ४ | १५ | | १२ | ४ | १५ | | ८ | ३ | २२ |
| ११ | ० | | १ | २ | २२ | | ९ | ३ | — | | १२ | १ | २४ | | ८ | ० | २७ |
| ११ | १० | | १ | १ | २० | | ९ | १ | १५ | | ११ | ११ | ३ | | ७ | १० | १ |
| ११ | २० | | १ | — | १८ | | ९ | — | — | | ११ | ८ | १२ | | ७ | ७ | ६ |
| ११ | ३० | | — | ११ | १७ | | ८ | १० | १५ | | ११ | ५ | २१ | | ७ | ४ | १० |
| ११ | ४० | | — | १० | १५ | | ८ | ९ | — | | ११ | ३ | — | | ७ | १ | १५ |
| ११ | ५० | | — | ९ | १४ | | ८ | ७ | १५ | | ११ | — | ९ | | ६ | १० | १९ |
| १२ | ० | | — | ८ | १२ | | ८ | ६ | — | | १० | ९ | १८ | | ६ | ७ | २४ |
| १२ | १० | | — | ७ | ११ | | ८ | ४ | १५ | | १० | ६ | २७ | | ६ | ४ | २८ |
| १२ | २० | | — | ६ | ९ | | ८ | ३ | — | | १० | ४ | ६ | | ६ | २ | ३ |
| १२ | ३० | | — | ५ | ८ | | ८ | १ | १५ | | १० | १ | १५ | | ५ | ११ | ७ |
| १२ | ४० | | — | ४ | ६ | | ८ | — | — | | ९ | १० | २४ | | ५ | ८ | १२ |
| १२ | ५० | | — | ३ | ५ | | ७ | १० | १५ | | ९ | ८ | ३ | | ५ | ५ | १६ |
| १३ | ० | | — | २ | ३ | | ७ | ९ | — | | ९ | ५ | १२ | | ५ | २ | २१ |
| १३ | १० | | — | १ | १ | | ७ | ७ | १५ | | ९ | २ | २१ | | ४ | ११ | २५ |
| १३ | २० | शुक्र | २० | — | — | | ७ | ६ | — | | ९ | — | — | | ४ | ९ | — |
| १३ | ३० | | १९ | ९ | — | | ७ | ४ | १५ | | ८ | १० | ९ | | ४ | ६ | ४ |
| १३ | ४० | | १९ | ६ | — | | ७ | ३ | — | | ८ | ६ | १८ | | ४ | ३ | ९ |
| १३ | ५० | | १९ | ३ | — | | ७ | १ | १५ | | ८ | ३ | २७ | | ४ | — | १३ |
| १४ | ० | | १९ | — | — | | ७ | — | — | | ८ | १ | ६ | | ३ | ९ | १८ |
| १४ | १० | | १८ | ९ | — | | ६ | १० | १५ | | ७ | १० | १५ | | ३ | ६ | २२ |
| १४ | २० | | १८ | ६ | — | | ६ | ९ | — | | ७ | ७ | २४ | | ३ | ३ | २७ |
| १४ | ३० | | १८ | ३ | — | | ६ | ७ | १५ | | ७ | ५ | ३ | | ३ | १ | १ |
| १४ | ४० | | १८ | — | — | | ६ | ६ | — | | ७ | २ | १२ | | २ | १० | ६ |
| १४ | ५० | | १७ | ९ | — | | ६ | ४ | १५ | | ६ | ११ | २१ | | २ | ७ | १० |
| १५ | ० | | १७ | ६ | — | | ६ | ३ | — | | ६ | ९ | — | | २ | ४ | १५ |

| चन्द्रमा के | | चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु | | | | चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर | | | | चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ | | | | चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | कला | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन |
| १५ | १० | | १७ | ३ | — | चन्द्र | ६ | १ | १५ | राहु | ६ | ६ | ९ | शनि | २ | १ | १९ |
| १५ | २० | शुक्र | १७ | — | — | | ६ | — | — | | ६ | ३ | १८ | | १ | १० | २४ |
| १५ | ३० | | १६ | ९ | — | | ५ | १० | १५ | | ६ | १ | २७ | | १ | ७ | २८ |
| १५ | ४० | | १६ | ६ | — | | ५ | ९ | — | | ५ | १० | ६ | | १ | ५ | ३ |
| १५ | ५० | | १६ | ३ | — | | ५ | ७ | १५ | | ५ | ७ | १५ | | १ | २ | ७ |
| १६ | ० | | १६ | — | — | | ५ | ६ | — | | ५ | ४ | २४ | | — | ११ | १२ |
| १६ | १० | | १५ | ९ | — | | ५ | ४ | १५ | | ५ | २ | ३ | | — | ८ | १६ |
| १६ | २० | | १५ | ६ | — | | ५ | ३ | — | | ४ | ११ | १२ | | — | ५ | २१ |
| १६ | ३० | | १५ | ३ | — | | ५ | १ | १५ | | ४ | ८ | २१ | | — | २ | २६ |
| १६ | ४० | | १५ | — | — | | ५ | — | — | | ४ | ६ | — | बुध | १७ | — | — |
| १६ | ५० | | १४ | ९ | — | | ४ | १० | १५ | | ४ | ३ | ९ | | १६ | ९ | १३ |
| १७ | ० | | १४ | ६ | — | | ४ | ९ | — | | ४ | — | १८ | | १६ | ६ | २७ |
| १७ | १० | | १४ | ३ | — | | ४ | ७ | १५ | | ३ | ९ | २७ | | १६ | ४ | १० |
| १७ | २० | | १४ | — | — | | ४ | ६ | — | | ३ | ७ | ६ | | १६ | १ | २४ |
| १७ | ३० | | १३ | ९ | — | | ४ | ४ | १५ | | ३ | ४ | १५ | | १५ | ११ | ७ |
| १७ | ४० | | १३ | ६ | — | | ४ | ३ | — | | ३ | १ | २४ | | १५ | ८ | २१ |
| १७ | ५० | | १३ | ३ | — | | ४ | १ | १५ | | २ | ११ | ३ | | १५ | ६ | ४ |
| १८ | ० | | १३ | — | — | | ४ | — | — | | २ | ८ | १२ | | १५ | ३ | १८ |
| १८ | १० | | १२ | ९ | — | | ३ | १० | १५ | | २ | ५ | २१ | | १५ | १ | १ |
| १८ | २० | | १२ | ६ | — | | ३ | ९ | — | | २ | ३ | — | | १४ | १० | १५ |
| १८ | ३० | | १२ | ३ | — | | ३ | ७ | १५ | | २ | — | ९ | | १४ | ७ | २८ |
| १८ | ४० | | १२ | — | — | | ३ | ६ | — | | १ | ९ | १८ | | १४ | ५ | १२ |
| १८ | ५० | | ११ | ९ | — | | ३ | ४ | १५ | | १ | ६ | २७ | | १४ | २ | २५ |
| १९ | ० | | ११ | ६ | — | | ३ | ३ | — | | १ | ४ | ६ | | १४ | — | ९ |
| १९ | १० | | ११ | ३ | — | | ३ | १ | १५ | | १ | १ | १५ | | १३ | १० | २२ |
| १९ | २० | | ११ | — | — | | ३ | — | — | | — | १० | २४ | | १३ | ७ | ६ |
| १९ | ३० | | १० | ९ | — | | २ | १० | १५ | | — | ८ | ३ | | १३ | ४ | १९ |
| १९ | ४० | | १० | ६ | — | | २ | ९ | — | | — | ५ | १२ | | १३ | २ | ३ |
| १९ | ५० | | १० | ३ | — | | २ | ७ | १५ | | — | २ | २१ | | १२ | ११ | १६ |
| २० | ० | | १० | — | — | | २ | ६ | — | गुरु | १६ | — | — | | १२ | ९ | — |
| २० | १० | | ९ | ९ | — | | २ | ४ | १५ | | १५ | ९ | १८ | | १२ | ६ | १३ |
| २० | २० | | ९ | ६ | — | | २ | ३ | — | | १५ | ७ | ६ | | १२ | ३ | २७ |
| २० | ३० | | ९ | ३ | — | | २ | १ | १५ | | १५ | ४ | २४ | | १२ | १ | १० |
| २० | ४० | | ९ | — | — | | २ | — | — | | १५ | २ | १२ | | ११ | १० | २४ |
| २० | ५० | | ८ | ९ | — | | १ | १० | १५ | | १५ | — | — | | ११ | ८ | ७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| चन्द्रमा के | | चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु | | | | चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर | | | | चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ | | | | चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | कला | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन |
| २१ | ० | शुक्र | ८ | ६ | — | चन्द्र | १ | ९ | — | गुरु | १४ | ९ | १८ | बुध | ११ | ५ | २१ |
| २१ | १० | | ८ | ३ | — | | १ | ७ | १५ | | १४ | ७ | ६ | | ११ | ३ | ४ |
| २१ | २० | | ८ | — | — | | १ | ६ | — | | १४ | ४ | २४ | | ११ | ० | १८ |
| २१ | ३० | | ७ | ९ | — | | १ | ४ | १५ | | १४ | २ | १२ | | १० | १० | १ |
| २१ | ४० | | ७ | ६ | — | | १ | ३ | — | | १४ | — | — | | १० | ७ | १५ |
| २१ | ५० | | ७ | ३ | — | | १ | १ | १५ | | १३ | ९ | १८ | | १० | ४ | २८ |
| २२ | ० | | ७ | — | — | | १ | — | — | | १३ | ७ | ६ | | १० | २ | १२ |
| २२ | १० | | ६ | ९ | — | | — | १० | १५ | | १३ | ४ | २४ | | ९ | ११ | २५ |
| २२ | २० | | ६ | ६ | — | | — | ९ | — | | १३ | २ | १२ | | ९ | ९ | ९ |
| २२ | ३० | | ६ | ३ | — | | — | ७ | १५ | | १३ | — | — | | ९ | ६ | २२ |
| २२ | ४० | | ६ | — | — | | — | ६ | — | | १२ | ९ | १८ | | ९ | ४ | ६ |
| २२ | ५० | | ५ | ९ | — | | — | ४ | १५ | | १२ | ७ | ६ | | ९ | १ | १९ |
| २३ | ० | | ५ | ६ | — | | — | ३ | — | | १२ | ४ | २४ | | ८ | ११ | ३ |
| २३ | १० | | ५ | ३ | — | | — | १ | १५ | | १२ | २ | १२ | | ८ | ८ | १६ |
| २३ | २० | | ५ | — | — | मंगल | ७ | — | — | | १२ | — | — | | ८ | ६ | — |
| २३ | ३० | | ४ | ९ | — | | ६ | १० | २९ | | ११ | ९ | १८ | | ८ | ३ | १३ |
| २३ | ४० | | ४ | ६ | — | | ६ | ९ | २७ | | ११ | ७ | ६ | | ८ | ० | २७ |
| २३ | ५० | | ४ | ३ | — | | ६ | ८ | २६ | | ११ | ४ | २४ | | ७ | १० | १० |
| २४ | ० | | ४ | — | — | | ६ | ७ | २४ | | ११ | २ | १२ | | ७ | ७ | २४ |
| २४ | १० | | ३ | ९ | — | | ६ | ६ | २३ | | ११ | — | — | | ७ | ५ | ७ |
| २४ | २० | | ३ | ६ | — | | ६ | ५ | २१ | | १० | ९ | १८ | | ७ | २ | २१ |
| २४ | ३० | | ३ | ३ | — | | ६ | ४ | २० | | १० | ७ | ६ | | ७ | ० | ४ |
| २४ | ४० | | ३ | — | — | | ६ | ३ | १८ | | १० | ४ | २४ | | ६ | ९ | १८ |
| २४ | ५० | | २ | ९ | — | | ६ | २ | १७ | | १० | २ | १२ | | ६ | ७ | १ |
| २५ | ० | | २ | ६ | — | | ६ | १ | १५ | | १० | — | — | | ६ | ४ | १५ |
| २५ | १० | | २ | ३ | — | | ६ | — | १४ | | ९ | ९ | १८ | | ६ | १ | २८ |
| २५ | २० | | २ | — | — | | ५ | ११ | १२ | | ९ | ७ | ६ | | ५ | ११ | १२ |
| २५ | ३० | | १ | ९ | — | | ५ | १० | ११ | | ९ | ४ | २४ | | ५ | ८ | २५ |
| २५ | ४० | | १ | ६ | — | | ५ | ९ | ९ | | ९ | २ | १२ | | ५ | ६ | ९ |
| २५ | ५० | | १ | ३ | — | | ५ | ८ | ८ | | ९ | — | — | | ५ | ३ | २२ |
| २६ | ० | | १ | — | — | | ५ | ७ | ६ | | ८ | ९ | १८ | | ५ | १ | ६ |
| २६ | १० | | — | ९ | — | | ५ | ६ | ५ | | ८ | ७ | ६ | | ४ | ११ | १९ |
| २६ | २० | | — | ६ | — | | ५ | ५ | ३ | | ८ | ४ | २४ | | ४ | ८ | ३ |
| २६ | ३० | | — | ३ | — | | ५ | ४ | २ | | ८ | २ | १२ | | ४ | ५ | १६ |
| २६ | ४० | सूर्य | ६ | — | — | | ५ | ३ | — | | ८ | — | — | | ४ | ३ | — |

| चन्द्रमा के | | चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु | | | | चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर | | | | चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ | | | | चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंश | कला | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन | महादशा ग्रह | वर्ष | मास | दिन |
| २६ | ५० | सूर्य | ५ | ११ | ३ | मंगल | ५ | १ | २९ | गुरु | ७ | ९ | १८ | बुध | ४ | — | १३ |
| २७ | ० | | ५ | १० | ६ | | ५ | — | २७ | | ७ | ७ | ६ | | ३ | ९ | २७ |
| २७ | १० | | ५ | ९ | ९ | | ४ | ११ | २६ | | ७ | ४ | २४ | | ३ | ७ | १० |
| २७ | २० | | ५ | ८ | १२ | | ४ | १० | २४ | | ७ | २ | १२ | | ३ | ४ | २४ |
| २७ | ३० | | ५ | ७ | १५ | | ४ | ९ | २३ | | ७ | — | — | | ३ | २ | ७ |
| २७ | ४० | | ५ | ६ | १८ | | ४ | ८ | २१ | | ६ | ९ | १८ | | २ | ११ | २१ |
| २७ | ५० | | ५ | ५ | २१ | | ४ | ७ | २० | | ६ | ७ | ६ | | २ | ९ | ४ |
| २८ | ० | | ५ | ४ | २४ | | ४ | ६ | १८ | | ६ | ४ | २४ | | २ | ६ | १८ |
| २८ | १० | | ५ | ३ | २७ | | ४ | ५ | १७ | | ६ | २ | १२ | | २ | ४ | १ |
| २८ | २० | | ५ | ३ | — | | ४ | ४ | १५ | | ६ | — | — | | २ | १ | १५ |
| २८ | ३० | | ५ | २ | ३ | | ४ | ३ | १४ | | ५ | ९ | १८ | | १ | १० | २८ |
| २८ | ४० | | ५ | १ | ६ | | ४ | २ | १२ | | ५ | ७ | ६ | | १ | ८ | १२ |
| २८ | ५० | | ५ | — | ९ | | ४ | १ | ११ | | ५ | ४ | २४ | | १ | ५ | २५ |
| २९ | ० | | ४ | ११ | १२ | | ४ | — | ९ | | ५ | २ | १२ | | १ | ३ | ९ |
| २९ | १० | | ४ | १० | १५ | | ३ | ११ | ८ | | ५ | — | — | | १ | — | २२ |
| २९ | २० | | ४ | ९ | १८ | | ३ | १० | ६ | | ४ | ९ | १८ | | — | १० | ६ |
| २९ | ३० | | ४ | ८ | २१ | | ३ | ९ | ५ | | ४ | ७ | ६ | | — | ७ | १९ |
| २९ | ४० | | ४ | ७ | २४ | | ३ | ८ | ३ | | ४ | ४ | २४ | | — | ५ | ३ |
| २९ | ५० | | ४ | ६ | २७ | | ३ | ७ | २ | | ४ | २ | १२ | | — | २ | १७ |
| ३० | ० | | ४ | ६ | — | | ३ | ६ | — | | ४ | — | — | | — | — | — |

## चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

| कला | केतु ७ वर्ष | | शुक्र २० वर्ष | | सूर्य ६ वर्ष | | चन्द्रमा १० वर्ष | | मंगल ७ वर्ष | | राहु १८ वर्ष | | गुरु १६ वर्ष | | शनि १९ वर्ष | | बुध १७ वर्ष | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन | मास | दिन |
| १ | ० | ३ | ० | ९ | ० | ३ | ० | ५ | ० | ३ | ० | ८ | ० | ७ | ० | ९ | ० | ८ |
| २ | ० | ६ | ० | १८ | ० | ५ | ० | ९ | ० | ६ | ० | १६ | ० | १४ | ० | १७ | ० | १५ |
| ३ | ० | ९ | ० | २७ | ० | ८ | ० | १४ | ० | ९ | ० | २४ | ० | २२ | ० | २६ | ० | २३ |
| ४ | ० | १३ | १ | ६ | ० | ११ | ० | १८ | ० | १३ | १ | २ | ० | २९ | १ | ४ | १ | १ |
| ५ | ० | १६ | १ | १५ | ० | १४ | ० | २३ | ० | १६ | १ | ११ | १ | ६ | १ | १३ | १ | ८ |
| ६ | ० | १९ | १ | २४ | ० | १६ | ० | २७ | ० | १९ | १ | १९ | १ | १३ | १ | २१ | १ | १६ |
| ७ | ० | २२ | २ | ३ | ० | १९ | १ | २ | ० | २२ | १ | २७ | १ | २० | २ | ० | १ | २४ |
| ८ | ० | २५ | २ | १२ | २ | २२ | १ | ६ | ० | २५ | २ | ५ | १ | २८ | २ | ८ | २ | १ |
| ९ | ० | २८ | २ | २१ | ० | २४ | १ | ११ | ० | २८ | २ | १३ | २ | ५ | २ | १७ | २ | ६ |
| १० | १ | १ | ३ | ० | ० | २७ | १ | १५ | १ | १ | २ | २१ | २ | १२ | २ | २६ | २ | १७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि नव ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

## विंशोत्तरी महादशा चक्र

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २० |

## सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

| ग्रह | सू | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| मास | ३ | ६ | ४ | १० | ९ | ११ | १० | ४ | ० |
| दिन | १८ | ० | ६ | २४ | १८ | १२ | ६ | ६ | ० |

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ५ | ९ | ६ | १६ | १४ | १७ | १५ | ६ | १८ |
| घ. | २४ | ० | १८ | १२ | २४ | ६ | १८ | १८ | ० |

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ | ० |
| दिन | १५ | १० | २७ | २४ | २८ | २५ | १० | ० | ९ |
| घ. | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० |

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २१ | ६ | १० |
| घ. | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ० | १८ | ३० |

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० |
| दिन | १८ | १३ | २१ | १५ | १८ | २४ | १६ | २७ | १८ |
| घ. | ३६ | १२ | १८ | ५४ | ५४ | ० | १२ | ० | ५४ |

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ |
| दिन | ८ | १५ | १० | १६ | १८ | १६ | २४ | १६ | १३ |
| घ. | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ० | २४ | ० | ४८ | १२ |

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ |
| दिन | २४ | १८ | १९ | २७ | १७ | २८ | १९ | २१ | १५ |
| घ. | ९ | २७ | ५७ | ० | ६ | ३० | ५७ | १८ | ३६ |

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| दिन | १३ | १७ | २१ | १५ | २५ | १७ | १५ | १० | १८ |
| घ. | २१ | ५१ | ० | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ | २७ |

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ७ | २१ | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ |
| घ. | २१ | ० | १८ | ३० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ |

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० |
| दिन | ० | १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ |
| घ | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

## चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० |
| मास | १० | ७ | ६ | ४ | ७ | ५ | ७ | ८ | ६ |
| दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० |
| दिन | २५ | १७ | १५ | १० | १७ | १२ | १७ | २० | १५ |
| घ. | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० |

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० |
| दिन | १२ | १ | २८ | ३ | २९ | १२ | ५ | १० | १७ |
| घ. | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० | ३० |

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ |
| दिन | २१ | १२ | २५ | १६ | १ | ० | २७ | १५ | १ |
| घ. | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | २ | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ |
| दिन | ४ | १६ | ८ | २८ | २० | २४ | १० | २८ | १२ |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ३ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ | २ | २ |
| दिन | ० | २० | ३ | ५ | २८ | १७ | ३ | २५ | १६ |
| घ. | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० | ३० | १५ | ३० | ० |

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | २ | २ |
| दिन | १२ | २९ | २५ | २५ | १२ | २९ | १६ | ८ | २० |
| घ. | ४५ | ४५ | ० | ० | ३० | ४५ | ३० | ० | ४५ |

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | ० | ० | ० | १ | ० | १ | ० |
| दिन | १२ | ५ | १० | १७ | १२ | १ | २८ | ३ | २९ |
| घ. | १५ | ० | ३० | ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ |

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| दिन | १० | ० | २० | ५ | ० | २० | ५ | २५ | ५ |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | १ |
| दिन | ९ | १५ | १० | २७ | २४ | २८ | २५ | १० | ० |
| घ. | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० |

## भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० | ० |
| मास | ४ | ० | ११ | १ | ११ | ४ | २ | ४ | ७ |
| दिन | २७ | १८ | ६ | ९ | २७ | २७ | ० | ६ | ० |

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ८ | २२ | १९ | २३ | २० | ८ | २४ | ७ | १२ |
| घ. | ३४ | ४ | ३६ | १६ | ५० | ३४ | ३० | २१ | १५ |

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | १ | १ | ० | २ | ० | १ | ० |
| दिन | २६ | २० | २९ | २३ | २२ | ३ | १८ | १ | २२ |
| घ. | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ० | ५४ | ३० | ३ |

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | १ | ० | २ | ० | ० | ० | १ |
| दिन | १४ | २३ | १७ | १९ | २६ | १६ | २८ | १९ | २० |
| घ. | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ |

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | १ | ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ |
| दिन | ३ | २६ | २३ | ६ | १९ | ३ | २३ | २९ | २३ |
| घ. | १० | ३१ | १७ | ३० | ५७ | २५ | १७ | ५१ | १२ |

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| दिन | २० | २० | २९ | १७ | २९ | २० | २३ | १७ | २६ |
| घ. | ३४ | ५० | ३० | ५१ | ४५ | ५० | ३३ | ३६ | ३१ |

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ८ | २४ | ७ | १२ | ८ | २२ | १९ | २३ | २० |
| घ. | ३५ | ३० | २१ | १५ | ३५ | ३ | ३६ | १६ | ४९ |

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | ० | १ | ० | २ | १ | २ | १ | ० |
| दिन | १० | २१ | ५ | २४ | ३ | २६ | ६ | २९ | २४ |
| घ. | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २१ |
| घ. | १८ | ३० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ० |

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० |
| दिन | १७ | १२ | १ | २८ | ३ | २९ | १२ | ५ | १० |
| घ. | ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० |

## राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

| ग्रह | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ |
| मास | ८ | ४ | १० | ६ | ० | ० | १० | ६ | ० |
| दिन | १२ | २४ | ६ | १८ | १८ | ० | २४ | ० | १८ |

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| दिन | २५ | ९ | ३ | १७ | २६ | १२ | १८ | २१ | २६ |
| घ. | ४८ | ३६ | ५४ | ४२ | ४२ | ० | ३६ | ० | ४२ |

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ३ | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ |
| दिन | २५ | १६ | २ | २० | २४ | १३ | १२ | २० | ९ |
| घ. | १२ | ४८ | २४ | २४ | ० | १२ | ० | २४ | ३६ |

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ५ | ४ |
| दिन | १२ | २५ | २९ | २१ | २१ | २५ | २९ | ३ | १६ |
| घ. | २७ | २१ | ५१ | ० | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ |

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ४ |
| दिन | १० | २३ | ३ | १५ | १६ | २३ | १७ | २ | २५ |
| घ. | ३ | ३३ | ० | ५४ | ३० | ३३ | ४२ | २४ | २१ |

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ |
| दिन | २२ | ३ | १८ | १ | २९ | २६ | २० | २९ | २३ |
| घ. | ३ | ० | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



### राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | च. | म. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ६ | १ | ३ | २ | ५ | ४ | ५ | ५ | २ |
| दिन | ० | २४ | ० | ३ | १२ | २४ | २१ | ३ | ३ |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | च. | म. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| दिन | १६ | २७ | १८ | १८ | १३ | २१ | १५ | १८ | २४ |
| घ. | १२ | ० | ५४ | ३६ | १२ | १८ | ५४ | ५४ | ० |

### राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | च. | म. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ० |
| दिन | १५ | १ | २१ | १२ | २५ | १६ | १ | ० | २७ |
| घ. | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० |

### राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | म. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ | ० | १ |
| दिन | २२ | २६ | २० | २९ | २३ | २२ | ३ | १८ | १ |
| घ. | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ० | ५४ | ३० |

## गुरु (बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

### गुरु अन्तर दशा

| ग्रह | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | २ | २ | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ |
| मास | १ | ६ | ३ | ११ | ८ | ९ | ४ | ११ | ४ |
| दिन | १८ | १२ | ६ | ६ | ० | १८ | ० | ६ | २४ |

### गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ३ |
| दिन | १२ | १ | १८ | १४ | ८ | ८ | ४ | १४ | २५ |
| घटी | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ० | २४ | ० | ४८ | १२ |

### गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ |
| दिन | २४ | ९ | २३ | २ | १५ | १६ | २३ | १६ | १ |
| घटी | २४ | १२ | १२ | ० | ३६ | ० | १२ | ४८ | ३६ |

### गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | म. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ |
| दिन | २५ | १७ | १६ | १० | ८ | १७ | २ | १८ | ९ |
| घटी | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ | ४८ | १२ |

### गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | च. | म. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ |
| दिन | १९ | २६ | १६ | २८ | १० | २० | १४ | २३ | १७ |
| घटी | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ | ४८ | १२ | ३६ |

### गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | च. | म. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ५ | ४ | १ |
| दिन | १० | १८ | २० | २६ | २४ | ८ | २ | १६ | २६ |
| घटी | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | च. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| दिन | १४ | २४ | १६ | १३ | ८ | १५ | १० | १६ | १८ |
| घटी | २४ | ० | ४८ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ० |

### गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | ० | २ | २ | २ | २ | ० | २ | ० |
| दिन | १० | २८ | १२ | ४ | १६ | ८ | २८ | २० | २४ |
| घटी | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० |
| दिन | १९ | २० | १४ | २३ | १७ | १९ | २६ | १६ | २८ |
| घ. | ६ | २४ | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० |

### गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | ३ | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ |
| दिन | ९ | २५ | १६ | २ | २० | २४ | १३ | १२ | २० |
| घ. | ३६ | १२ | ४८ | २४ | २४ | ० | १२ | ० | २४ |

## शनि महादशा १९ वर्ष

### शनि अन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ३ | २ | १ | ३ | ० | १ | १ | २ | २ |
| मास | ० | ८ | १ | २ | ११ | ७ | १ | १० | ६ |
| दिन | ३ | ९ | ९ | ० | १२ | ० | ९ | ६ | १२ |

### शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ | ५ | ४ |
| दिन | २१ | ३ | ३ | ० | २४ | ० | ३ | १२ | २४ |
| घ. | २८ | २५ | ११ | ३० | ९ | १५ | ११ | २७ | २४ |

### शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ५ |
| दिन | १७ | २६ | ११ | २८ | २० | २६ | २५ | ९ | ३ |
| घ. | १६ | ३२ | ३० | २७ | ५५ | ३२ | २२ | १२ | २५ |

### शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ | २ | १ |
| दिन | २३ | ६ | १९ | ३ | २३ | २९ | २३ | ३ | २६ |
| घ. | २७ | ३० | ५७ | २५ | २७ | ५१ | १२ | १० | ३१ |

### शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | च. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ६ | १ | ३ | २ | ५ | ५ | ६ | ५ | २ |
| दिन | १० | २७ | ५ | ६ | २१ | २ | ० | ११ | ६ |
| घटी | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

### शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| दिन | १७ | २८ | १९ | २१ | १५ | २४ | १८ | १९ | २७ |
| घटी | ६ | ३० | ५७ | १८ | ३६ | ९ | २७ | ५७ | ० |

### शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | २ | २ | ३ | २ | १ | ३ | ० |
| दिन | १७ | ३ | २५ | १६ | ० | २० | ३ | ५ | २८ |
| घटी | ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० |

### शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | १ | २ | १ | ० | २ | ० | १ |
| दिन | २३ | २९ | २३ | ३ | २६ | २३ | ६ | १९ | ३ |
| घटी | १७ | ५१ | १२ | १० | ३१ | १७ | ३० | ५७ | १५ |

### शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | म. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| दिन | ३ | १६ | १२ | २५ | २९ | २१ | २१ | २५ | २९ |
| घटी | ५४ | ४८ | २७ | २१ | ५१ | ० | १८ | ३० | ५१ |

### शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ |
| दिन | १ | २४ | ९ | २३ | २ | १५ | १६ | २३ | १६ |
| घटी | ३६ | २४ | १२ | १२ | ० | ३६ | ० | १२ | ४८ |

## बुध महादशा १७ वर्ष

### बुध अन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | बृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | २ | ० | २ | ० | १ | ० | २ | २ | २ |
| मास | ४ | ११ | १० | १० | ५ | ११ | ६ | ३ | ८ |
| दिन | २७ | २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ |

### बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ |
| दिन | २ | २० | २४ | १३ | १२ | २० | १० | २५ | १७ |
| घटी | ४९ | ३५ | ३० | २१ | १५ | ३५ | ३ | ३६ | १६ |

### बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | च. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ |
| दिन | २० | २९ | १७ | २९ | २० | २३ | १७ | २६ | २० |
| घटी | ५० | ३० | ५१ | ४५ | ५० | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ |

### बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | च. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | १ | २ | १ | ५ | ४ | ५ | ४ | १ |
| दिन | २० | २१ | २५ | २९ | ३ | १६ | ११ | २३ | २९ |
| घटी | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

### बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ |
| दिन | १५ | २५ | १७ | १५ | १० | १८ | १३ | १७ | २१ |
| घटी | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ | २७ | २१ | ५१ | ० |

### बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | ० | २ | २ | २ | २ | ० | २ | ० |
| दिन | १२ | २९ | १६ | ८ | २० | १२ | २९ | २५ | २५ |
| घटी | ३० | ४५ | ३० | ० | ४५ | १५ | ४५ | ० | ३० |

### बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० |
| दिन | २० | २३ | १७ | २६ | २० | २० | २९ | १७ | २९ |
| घटी | ५० | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ५० | ३० | ५१ | ४५ |

### बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| दिन | १७ | २ | २५ | १० | २३ | ३ | १५ | १६ | २३ |
| घटी | ४२ | २४ | २१ | ३ | ३३ | ० | ५४ | ३० | ३३ |

### बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ |
| दिन | १८ | ९ | २५ | १७ | १६ | १० | ८ | १७ | २ |
| घटी | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ |

### बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ |
| दिन | ३ | १७ | २६ | ११ | १८ | २० | २६ | २५ | ९ |
| घटी | २५ | १६ | ३२ | ३० | २७ | ४५ | ३२ | २१ | १२ |

## केतु महादशा ७ वर्ष

### केतु अन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ० | १ | ० | ० | ० | १ | ० | १ | ० |
| मास | ४ | २ | ४ | ७ | ४ | ० | ११ | १ | ११ |
| दिन | २७ | ० | ६ | ० | २७ | १८ | ६ | ९ | २७ |

### केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ८ | २४ | ७ | १२ | ८ | २२ | १९ | २३ | २० |
| घटी | ३५ | ३० | २१ | २५ | ३५ | ३ | ३६ | १५ | ४९ |

### केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | ० | १ | ० | २ | १ | २ | १ | ० |
| दिन | १० | २१ | ५ | २४ | ३ | २६ | ६ | २९ | २४ |
| घटी | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० |

### केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ६ | १० | ७ | १८ | १६ | १९ | १७ | ७ | २१ |
| घटी | १८ | ३० | २१ | ५४ | ४८ | ५७ | ५१ | २१ | ० |

### केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | १ | ० | १ | ० | ० | १ | ० |
| दिन | १७ | १२ | १ | २८ | ३ | २९ | १२ | ५ | १० |
| घटी | ३० | १५ | ३० | ० | १५ | ४५ | १५ | ० | ३० |

### केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |
| दिन | ८ | २२ | १९ | २३ | २० | ८ | २४ | ७ | १२ |
| घटी | ३५ | ३ | ३६ | १६ | ४९ | ३५ | ३० | २१ | १५ |

### केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | १ | १ | ० | २ | ० | १ | ० |
| दिन | २६ | २० | २९ | २३ | २२ | ३ | १८ | १ | २२ |
| घ. | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ० | ५४ | ३० | ३ |

### केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ |
| दिन | १४ | २३ | १७ | १९ | २६ | १६ | २८ | १९ | २० |
| घ. | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ० | ४८ | ० | ३६ | २४ |

### केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | २ | १ | ० | २ | ० | १ | ० | १ | १ |
| दिन | ३ | २६ | २३ | ६ | १९ | ३ | २३ | २९ | २३ |
| घ. | १० | ३१ | १७ | ३० | ५७ | १५ | १७ | ५१ | १२ |

### केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | ० | १ | ० | ० | ० | १ | १ | १ |
| दिन | २० | २० | २९ | १७ | २९ | २० | २३ | १७ | २६ |
| घ. | ३४ | ५० | ३० | ५१ | ४५ | ५० | ३३ | ३६ | ३१ |

## शुक्र महादशा २० वर्ष

### शुक्र अन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| वर्ष | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| मास | ४ | ० | ८ | २ | ० | ८ | २ | १० | २ |
| दिन | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ६ | २ | ३ | २ | ६ | ५ | ६ | ५ | २ |
| दिन | २० | ० | १० | १० | ० | १० | १० | २० | १० |
| घटी | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | १ | ० | १ | १ | १ | १ | ० | २ |
| दिन | १८ | ० | २१ | २४ | १८ | २७ | २१ | २१ | ० |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ | ३ | १ |
| दिन | २० | ५ | ० | २० | ५ | २५ | ५ | १० | ० |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | चं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | २ | १ | २ | १ | ० | २ | ० | १ |
| दिन | २४ | ३ | २६ | ६ | २९ | २४ | १० | २१ | ५ |
| घ. | ३० | ० | ० | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० |

### शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | रा. | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | मं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ५ | ४ | ५ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ |
| दिन | १२ | २४ | २१ | ३ | ३ | ० | २४ | ० | ३ |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | वृ. | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | म. | रा. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ |
| दिन | ८ | २ | १६ | २६ | १० | १८ | २० | २६ | २४ |
| घ. | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

### शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | श. | बु. | के. | शु. | सू. | च. | म. | रा. | वृ. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ६ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ | ५ | ५ |
| दिन | ० | ११ | ६ | १० | २७ | ५ | ६ | २१ | २ |
| घ. | ३० | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० |

### शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | बु. | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ५ | ४ | ५ |
| दिन | २४ | २९ | २० | २१ | २५ | २९ | ३ | १६ | ११ |
| घ. | ३० | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० |

### शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

| ग्रह | के. | शु. | सू. | चं. | मं. | रा. | वृ. | श. | बु. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मास | ० | २ | ० | १ | ० | २ | १ | २ | १ |
| दिन | २४ | १० | २१ | ५ | २४ | ३ | २६ | ६ | २९ |
| घ. | ३० | ० | ० | ० | ३० | ० | ० | ३० | ३० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अतः प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यतः किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

**शुभ ग्रह दशा फल**—आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

**अशुभ ग्रह दशा फल**—लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ वा अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषड़ाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

**कई आचार्यों के मत से**—४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

**स्वाभाविक शुभाशुभ**—सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषड़ाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वभाविक शुभ भी यदि त्रिषड़ायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वभाविक पाप ग्रह त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अतः केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

तथा दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषड़ायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अतः केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषड़ायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

**यद्यद्भावगतै वाऽपि यद्यदभावेश संयुतै। ततत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥**

**योग**—केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

## ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

**ग्रहावस्था फल**—दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान्, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**—विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**—धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**—तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**—बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**—चिंता युक्त, मानसिक दुःख, रोगी। **शक्त अवस्था**—निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**—अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

**नोट**—जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दुःख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह की दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

**रविवार के व्रत की विधि**—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य को वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्य मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

**सोमवार के व्रत की विधि**—यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

**मंगलवार के व्रत की विधि**—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**' की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

**बुधवार के व्रत की विधि**—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र '**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**' का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा घास डालें।

**वृहस्पतिवार के व्रत की विधि**—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए '**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**' मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

**शुक्रवार के व्रत की विधि**—यह व्रत धन, विवाह, संतानादि भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए '**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**' की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

**शनिवार के व्रत की विधि**—यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और '**ॐ शं शनैश्चराय नमः**' मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति के लिए** भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

**केतु ग्रह की शान्ति हेतु**—केतु के बीज मंत्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

**सप्तधान्य ( सतनजा )**—१ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

**अष्टगंध**—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए। अष्टगंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन,

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

| ग्रहा: | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य: | स्थानांतर | भयं | श्री: | मानभंग | दैत्य | विजय: | मार्ग:गमन | पीड़ा: | सुकृ नाश | सिद्धि: | धनलाभ | द्रव्यनाश |
| चन्द्र: | धनलाभ | सन्तोष | सुखं | रोग: | ज्ञानवृ. | धनलाभ | स्त्रीलाभ | रोग: | धर्मलाभ | सौख्यं | धनलाभ | धनहानि |
| भौम: | शत्रुभय | धनहानि | धनलाभ | शत्रुभी: | पुत्रकष्ट | धनलाभ | स्त्रीकष्ट | शत्रुभय | शत्रुपीड़ा | शोक | धनलाभ | धनहानि |
| बुध: | सुख | धनलाभ | शत्रुभय | पशुलाभ | सुखं | स्थानलाभ | पीड़ा | धनलाभ | पीड़ा | सौख्यं | धनलाभ | धनहानि |
| गुरु: | भयं | धनलाभ | क्लेश | धनलाभ | सुखं | शोक: | राजमान्य | पीड़ा | सौख्यं | दैन्यं | धनलाभ | पीड़ा |
| शुक्र: | शत्रुनाश | धनलाभ | सौख्यं | धनलाभ | पुत्रलाभ: | शत्रुभय | शोक: | धनलाभ | वस्त्रलाभ | दुख: | धनलाभ | धनलाभ |
| शनि: | भयं | धनहानि | ऐश्वर्य | शत्रु भी: | पुत्र कष्ट | धनलाभ | दोष: | पीड़ा | धर्मनाश | दौर्मन | धनलाभ | धनलाभ |
| राहु: | हानि: | धनहानि | धनलाभ | वैरं | शोक: | श्री: | कलह: | मृत्यु | दु:खं | वैरं | सुखं | शोक: |
| केतु: | रोग: | वैर | सुखं | भयं | सुखं | धनलाभ | कलह: | रोग: | पाप | शोक: | कीर्ति: | शत्रुभय |

## अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

| ग्रहा: | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य: | चिन्ता | नृपभी: | धनलाभ | हानि: | कष्टम् | शत्रुना. | पीड़ा | कष्टम् | धर्म नाश | सुखं | धनलाभ | पीड़ा |
| चन्द्र: | पीड़ा | धनलाभ | हर्ष: | शत्रुनाश | सुखम् | पीड़ा | कष्टम् | दु:खम् | भाग्योदय | विजय: | धनलाभ | व्यग्र: |
| भौम: | प्रणा: | धननाश | जय: | व्यसनं | दुर्मति | शत्रुना. | स्त्रीकष्ट | पीड़ा | पुण्योदय | राज्य लाभ | धनलाभ | विरोध |
| बुध: | सौख्यम् | धनलाभ | सुखम् | द्रव्यलाभ | पुत्रलाभ | कलह | धनलाभ | व्यग्रता | सुखम् | मान लाभ | सुखलाभं | रोग: |
| गुरु: | सुखम् | धनलाभ | जय: | वाह.लाभ | पुत्र: प्राप्ति | कष्टम् | सुखम् | रोग: | धर्म लाभ | राज्य लाभ | धन लाभ | शोक: |
| शुक्र: | मानप्रा. | धनप्राप्ति | कीर्तिला | सुख लाभ | धनलाभ | शभु भी: | स्त्रीसुख | कष्टम् | धर्मोदय | मान लाभ | क्षेम लाभ | व्यय |
| शनि: | वातार्ति | पीड़ा | धनलाभ | दु:खम् | पुत्रपीड़ा | जय: | स्त्रीकष्ट | रोग: | भाग्य हानि | धनहानि | धन लाभ | चिन्ता |
| राहु: | शिरोर्ति | राजभी: | सुखम् | दु:खम् | बुद्धिनाश | शत्रुना. | रोगभी: | कष्टम् | धर्म हानि | विजय: | सुलाभं | व्याधि |
| केतु: | चिन्ता | क्लेश: | आरोग्य | राजभी: | दुर्बुद्धि: | सुखम् | क्लेश: | पीड़ा | भाग्य नाश | धन लाभ | लाभ: | शोक: |
| मुंथा | सुखम् | यशोऽर्थ: | पुष्टि: | दु:खम् | सुखाप्ति: | कष्टम् | व्यसनं | दुखम् | भाग्योदय | राज्य प्राप्ति | लाभ: | कष्टम् |

## अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

| ग्रहा: | तनु: १ | धनं २ | भ्रात: ३ | सुखं ४ | पुत्र: ५ | शत्रु: ६ | स्त्री ७ | मृत्यु: ८ | धर्म: ९ | कर्म: १० | लाभ: ११ | व्यय: १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य: | शूर: | धनी | सुखी | दुखी | अपुत्र: | बली | स्त्रीजित | अल्पायु: | सुखी | शूर: | धनी | पतित: |
| चन्द्र: | जड़: | कुटुम्बी | क्रूर: | सुशील: | पुत्रवान् | अल्पायु: | ईर्ष्यालु: | रोगी | सुभग: | धीर: | ख्यात: | हीनांग |
| भौम: | व्रणी: | कुटिल: | विक्रमी | पीड़ित: | अपुत्र: | शत्रुजित | स्त्रीपीड़ा | रोगी | पापात्मा | सुखी | धनाढ्या | पतित: |
| बुध: | विद्वान् | धनी | दुर्जन: | सुखी | मंत्री | दु:शील | धर्मज्ञ: | गुणी | पुत्रवान् | विक्रमी | धनी | जड़: |
| गुरु: | चिरायु: | धनी | कृपण: | सुखी | प्रतापी | कामी | प्रसिद्ध: | अल्पायु: | पुत्रवान् | सुकृति: | धनी | दरिद्र: |
| शुक्र: | सुखी | धनी | पापी | सुखी | धीमान | रोगी | क्रोधी | नीच: | प्रतापी | सुमति: | धनाढ्य: | खल: |
| शनि: | रोगी | वक्ता | विक्रमी | दु:खी | दरिद्र: | सुखी | दु:खी | नेत्ररोगी | सुखी | पराक्रमी | धनी | दु:खी |
| राहु: | रोगी | विरोधी | विक्रमी | दु:खी | दुर्मग: | बली | अशुचि: | गतायु: | दैन्यं | मानी | ख्यात: | पतित: |
| केतु: | अल्पायु: | धर्म हानि | शूर: | दु:खी | अपुत्र: | बली | दारहा | क्लेशी | पापी | अधर्मी | धनी | दुर्जन: |

## अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

| ग्रहा: | तनु: १ | धनं २ | भ्राता ३ | सुखं ४ | पुत्र: ५ | शत्रु: ६ | पति ७ | मृत्यु: ८ | धर्म: ९ | कर्म १० | लाभ: ११ | व्यय: १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य: | सक्रोधा | निर्धना | सुपुत्रा | सपीड़ा | अपुत्रा | धनाढ्या | दु:खार्ता | विधवा | धर्मिष्ठा | सती | सधना | सक्रोधा |
| चन्द्र: | अल्पायु: | सधना | सुखिनी | दुर्भगा | सुपुत्रा | रोगिणी | पति प्रीति | दु:खार्ता | सुखिनी | धन्या | गुणिनी | हीनांगी |
| भौम: | दु:खार्ता | वन्ध्या | अभ्रातृ | दु:खिनी | अपुत्रा | नीरोगा | विधवा | कुलटा | दु:खिनी | कुपुत्रा | सुधर्मा | दुष्टा |
| बुध: | सुभगा | धनाढ्या | सुखिनी | सुगृहा | सुबुद्धि: | सक्रोधा | सती | कृतघ्ना | सुधर्मा | सुधर्मा | सुलाभा | कृशांगी |
| गुरु: | सती | सधना | भ्रातृम. | सुखिनी | साध्वी | सापदा | सुकीर्ति | रोगिणी | पुत्राढ्या | सुभगा | सुरूपा | सद्व्यया |
| शुक्र: | सुखिनी | सहर्षा | धनाढ्या | सुकीर्ति | सुसुता | दरिद्रा | पतिप्रि. | प्रमत्ता | सुपुण्या | सुकर्मा | सुपुत्रा | सद्व्यया |
| शनि: | वन्ध्या | निर्धना | दक्षा | हृद्रोगा | अपुत्रा | सुगुणा | विधवा | दु:खार्ता | वन्ध्या | पापा | सुलाभा | मूढ़ा |
| राहु: | अपुत्रा | दरिद्रा | धनाढ्या | रोगार्ता | अपुत्रा | धनाढ्या | दु:खार्ता | क्लेशिनी | वन्ध्या | कुकर्मा | सुभगा | खला |
| केतु: | दु:खार्ता | शोकार्ता | रोगाढ्या | मातृहीना | विपुत्रा | धनाढ्या | विधवा | सदु:खा | शोकार्ता | पापा | सुभगा | सरोगा |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

| ग्रह और उनके चिह्न | रवि | चन्द्र | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि | राहु | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ग्रहों की एक-पाद दृष्टि | ३-१० | ३-१० | ३-१० | ३-१० | ३-१० | ३-१० | ० | ३-१० | ३-१० |
| दो-पाद दृष्टि | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ० | ५-९ | ५-९ | ५-९ | ५-९ |
| तीन-पाद दृष्टि | ४-८ | ४-८ | ० | ४-८ | ४-८ | ४-८ | ४-८ | ४-८ | ४-८ |
| सम्पूर्ण दृष्टि | ७ | ७ | ४-७-८ | ७ | ५-७-९ | ७ | ३-७-१० | ७ | ७ |
| नक्षत्र-दृष्टि | ५-१५ | १५ | ७-८-१०-१५ | ९-१२-१५ | १०-१५-१९ | ९-१२-१५ | ३-५-१५-१९ | ९-१५ | ९-१५ |
| मित्र-ग्रह | च.मं.गु. | र.बु. | र.चं.गु. | र.शु.रा. | र.चं.मं. | बु.श.रा. | बु.शु.रा. | बु.शु.श. | बु. |
| सम-ग्रह | बु. | मं.गु.शु.श. | शु.श. | मं.गु.श. | श.रा. | मं.गु. | मं. | गु. | × |
| शत्रु-ग्रह | शु.श.रा. | रा. | बु.रा. | चं. | बु.शु. | र.चं. | र.चं.मं. | र.चं.मं. | × |
| बलवत्तम भाव | दशम | चतुर्थ | दशम | प्रथम | प्रथम | चतुर्थ | सप्तम | × | × |
| कारक भाव | १-९-१० | ४ | ३-६ | ४-१० | २-५-९-१०-११ | ७ | ६-८-१०-१२ | × | × |
| उच्चराशि एवं परमोच्चांश | मेष १०° | वृषभ ३° | मकर २८° | कन्या १५° | कर्क ५° | मीन २७° | तुला २०° | मिथु.१५° | धनु१५° |
| नीचराशि एवं परम नीचांश | तुला १०° | वृश्चिक ३° | कर्क २८° | मीन १५° | मकर ५° | कन्या २७° | मेष २०° | धनु १५° | मिथुन १५° |
| मूल त्रिकोण राशि, अंश | सिंह २०° | ष४°से ३०° | मेष १८ | कं.१६°से२०° | धनु१३° | तुला१०° | कुम्भ २०° | कर्क | मकर |
| स्वगृह- (राशि) | सिंह | कर्क | मेष वृश्चिक | मि., कन्या | धनु, मीन | वृष, तुला | म. कुम्भ | कन्या | मीन |
| हर्ष-स्थान | ९ | ३ | ६ | १ | ११ | ५ | १२ | × | × |
| शत्रु-राशियां | २-६-७-१०-११ | ६ | ३-६-६-७ | ४ | २-३- | ४-५ | १-४-५-८ | १-४-५-८ | × |
| स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि | ११ | १० | २-७ | ९-१२ | ३-६ | १-८ | ४-५ | १२ | ६ |
| विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष | कृ., उ.षा., उ.फा. ६ | रो., ह., श्र. १० | मृ., चि., ध. ७ | आश्लेषा, ज्ये. रे. १७ | पुन. वि., पू. भा. १६ | म.पू.फा., पू.षा. २० | पुष्य, अनु., उ.भा. १९ | आर्द्रा, स्वा., शत. १८ | अश्विनी, भ. मू. ७ |
| ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष | २२ | २४ | २८ | २ | १६ | २५ | ३६ | ४२ | ४२ |
| दिशा | पूर्व | वायव्य | दक्षिण | उत्तर | ईशान | आग्नेय | पश्चिम | नैऋत्यु | नैऋत्यु |
| कुण्डली-भाव-दिशा | १ | ५-६ | १० | ४ | २-३ | ११-१२ | ७ | ८-९ | ८-९ |
| राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष | १ | ०-०-७४ | १-९ | ०-२ | ११-९ | ०-६ | २९-५ | १८-६ | १८-६ |
| मध्यम राशि-भ्रमण-काल | १ मास | २१ दिन | १॥ मास | २५ दिन | १३ मास | २८ दिन | ३० मास | १८ मास | १८ मास |
| नक्षत्र-चार-दिन | १३ | १ | २० | १० | १७३ | १२ | ४०० | २४० | २४० |
| नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन | ३ १/ | १/ | ५ | २ १/२ | ४३ | ३ | १०० | ६० | ६० |
| मध्यम दिनगति, कला, विकला | ५९'-८" | ७९०'-३५" | ३१'-२७" | ५९'-८" | ४'-५९" | ५९'-८" | २'-०" | ३'-११" | ३'-११" |
| शीघ्र गति, कला, विकला | ६०'-४" | ८२३'-४८" | ३९'-१" | १०४'-४६" | १२'-२२" | ७३'-४३" | ५'-२७" | × | × |
| परमशीघ्र गति (अतिचारी) | ६१' | ८५७' | ४६'-११" | ११३'-३२"- | १४'-४" | ७५'-४२" | ७'-४५" | × | × |
| अतिचार-दिन (स्थूल) | × | × | १५ | १० | ४५ | १० | १८० | × | × |
| सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत | × | ५°-८'-४३".४३ | १°५०'-५९".४ | ७°-०'-१५".९ | १°-१८'-१४".४ | ३°-२३'-४०".१ | २°-२९'-२१".३ | × | × |
| गोचर से निंद्य | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ | ४-८-१२ |
| गोचर से पूज्य | १-२-५-७-९ | २-५-९ | १-२-५-७-९ | १-३-५-७-९ | १-३-६-१० | ५-६-७-१० | १-२-५-७-९ | १-२-५-७-९ | १-२-५-७-९ |
| गोचर से शुद्ध | ३-६-१०-११ | १-३-६-७-१०-११ | ३-६-१०-११- | २-६-१०-११ | २-५-७-९-११ | १-२-३-९-११ | ३-६-१०-११ | ३-६-१०-११ | ३-६-१०-११ |
| अनुक्रम से वेध स्थान | ९-१२-४-५ शनि वर्जित | ५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित | १२-९-१०-५ | ५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित | १२-४-३-१०-८ | ८-७-१-११-३ | १२-९-१०-५ सूर्य वर्जित | १२-९-१०-५ | १२-९-१०-५ |

**टिप्पणी**— चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत

ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र
पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत

पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश
भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश
आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन

उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव
आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण

मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस
गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कणेर
९. वृषभ

द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र
रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र

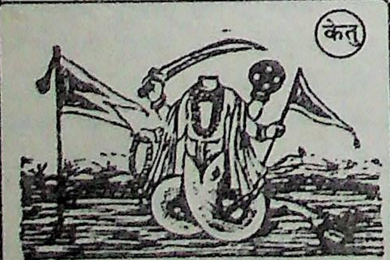


वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवेतिदेश
जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र

प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र
मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंध्रक

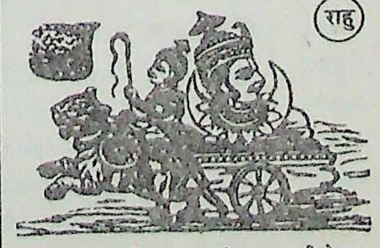


नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश
पठानसगोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| ग्रहा: | गोचराद्यैर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्था: | | | | | | | | | | | | जप सं. | जपनीय मंत्रा: | समय | समिध: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | माणिक | सुवर्ण | ताम्र | गेहूं | गुड़ | घी | रक्तवस्त्र | रक्तपुष्प | केसर | मूंगा | रक्त गौ | रक्तचंदन | ७००० | ॐ हां हीं हौं स: सूर्याय नम: | सु. उ. | अर्क |
| चन्द्र | मोती | सुवर्ण | रजत | चावल | मिसरी | दही | श्वेतवस्त्र | श्वेतपुष्प | शंख | कपूर | श्वेत बैल | श्वेतचंदन | ११००० | ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसे नम: | संध्या | पलाश |
| भौम | मूंगा | सुवर्ण | ताम्र | मसूर | गुड़ | घी | रक्तवस्त्र | रक्तकनेर | केसर | कस्तूरी | रक्त बैल | रक्तचंदन | १०००० | ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम: | घ. २ | खदिर |
| बुध | पन्ना | सुवर्ण | कांसी | मूंग | खांड | घी | हरावस्त्र | सर्वपुष्प | हाथीदांत | कपूर | शस्त्र | फल | ९००० | ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम: | घ. ५ | अपामार्ग |
| गुरु | पुखराज | सुवर्ण | कांसी | दालचणे | खांड | घी | पीतवस्त्र | पीतपुष्प | हल्दी | पुस्तक | घोड़ा | पीतफल | १९००० | ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम: | संध्या | अश्वत्थ |
| शुक्र | हीरा | सुवर्ण | रजत | चावल | मिसरी | दूध | श्वेतवस्त्र | श्वेतपुष्प | सुगन्ध | दधि | श्वेत घोड़ा | श्वेतचंदन | १६००० | ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम: | सू. उ. | उदुम्बर |
| शनि | नीलम | सुवर्ण | लोहा | उड़द | कुलथी | तेल | कृष्णवस्त्र | कृष्णपुष्प | कस्तूरी | कृष्ण गौ | भैंस | उपानह | २३००० | ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम: | संध्या | शमी |
| राहु | गोमेद | सुवर्ण | सीसा | तिल | सरसों | तेल | नीलवस्त्र | कृष्णपुष्प | खड़्ग | कंबल | घोड़ा | शूर्प | १८००० | ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम: | रात्रौ | दूर्वा |
| केतु | लसनी | सुवर्ण | लोहा | तिल | सप्तधान्य | तेल | धूम्रवस्त्र | धूम्रपुष्प | नारियल | केबल | बकरा | शस्त्र | १७००० | ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम: | रात्रौ | कुशा |
| मुन्था | मोती | सुवर्ण | कांसी | चावल | सुवर्ण | घी | श्वेतवस्त्र | श्वेतपुष्प | कपूर | मिसरी | श्वेतचंदन | हाथीदांत | मुंधेशवत् | मुन्थेश मन्त्र | मुन्थेशकाले | |

# अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

| सूर्य दशा वर्ष ६ | | | | चन्द्र दशा वर्ष १० | | | | भौम दशा वर्ष ७ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम् | | | | रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम् | | | | मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम् | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. |
| र | ० | ३ | १८ | चं | ० | १० | ० | मं | ० | ४ | २७ |
| चं | ० | ६ | ० | मं | ० | ७ | ० | रा | १ | ० | १८ |
| मं | ० | ४ | ६ | रा | १ | ६ | ० | बृ | ० | ११ | ६ |
| रा | ० | १० | २४ | बृ | १ | ४ | ० | श | १ | १ | ९ |
| बृ | ० | ९ | १८ | श | १ | ७ | ० | बु | ० | ११ | २७ |
| श | ० | ११ | १२ | बु | १ | ५ | ० | के | ० | ४ | २७ |
| बु | ० | १० | ६ | के | ० | ७ | ० | शु | १ | २ | ० |
| के | ० | ४ | ६ | शु | १ | ८ | ० | र | ० | ४ | ६ |
| शु | ० | ० | ० | र | ० | ६ | ० | चं | ० | ७ | ० |

| राहु दशा वर्ष १८ | | | | गुरु दशा वर्ष १६ | | | | शनि दशा वर्ष १९ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम् | | | | पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम् | | | | पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम् | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. |
| रा | २ | ८ | १२ | बृ | २ | १ | १८ | श | ३ | ० | ३ |
| बृ | २ | ४ | २४ | श | २ | ६ | १२ | बु | २ | ८ | ९ |
| श | २ | १० | ६ | बु | २ | ३ | ६ | के | १ | १ | ९ |
| बु | २ | ६ | १८ | के | ० | ११ | ६ | शु | ३ | २ | ० |
| के | १ | ० | १८ | शु | २ | ८ | ० | र | ० | ११ | १२ |
| शु | ३ | ० | ० | र | ० | ९ | १८ | चं | १ | ७ | ० |
| र | ० | १० | २४ | चं | १ | ४ | ० | मं | १ | १ | ९ |
| चं | १ | ६ | ० | मं | ० | ११ | ६ | रा | २ | १० | ६ |
| मं | १ | ० | १८ | रा | २ | ४ | २४ | बृ | २ | ६ | १२ |

| बुध दशा वर्ष १७ | | | | केतु दशा वर्ष ७ | | | | शुक्र दशा वर्ष २० | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम् | | | | म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम् | | | | पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम् | | | |
| ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. | ग्रह | व. | मा. | दि. |
| बु | २ | ४ | २७ | के | ० | ४ | २७ | शु. | ३ | ४ | ० |
| के | ० | ११ | २७ | शु | १ | २ | ० | र | १ | ० | ० |
| शु | २ | ५० | ० | र | ० | ४ | ६ | चं | १ | ८ | ० |
| र | ० | १० | ६ | चं | ० | ७ | ० | मं | १ | २ | ० |
| चं | १ | ५ | ० | मं | ० | ४ | २७ | रा | ३ | ० | ० |
| मं | ० | ११ | २७ | रा | १ | ० | १८ | बृ | २ | ८ | ० |
| रा | २ | ६ | १८ | बृ | ० | ११ | ६ | श | ३ | २ | ० |
| बृ | २ | ३ | ६ | श | १ | १ | ९ | बु | २ | १० | ० |
| श | २ | ८ | ९ | बु | ० | ११ | २७ | के | १ | २ | ० |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

| भाव | सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहू | केतु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| प्रथम | स्थान नाशः पन्थाः | अन्नलाभः पुष्टिः | भयं, पीड़ा च | बन्धनं | अरिष्टादि भयं | शत्रु नाशः सुखम् | पीड़ा भयं सर्वनाशः | कष्टम् हानिः | हानि रोगभयं |
| द्वितीय | हानिः भयं | धनलाभः सुखं | धन नाशः | धन लाभः | धनादि लाभः | अर्थ लाभः सुखं | धन हानिः शोकः | व्यञ्च नैःस्वं | वित्तनाशः वैरी भयं |
| तृतीय | सुखं श्रीप्राप्तिः | द्रव्याप्तिः सुखं | श्रीप्राप्तिः सुखम् | शत्रुतो भयम् | रोगाप्तिः भयम् | अर्थ लाभः सुखं | अर्थ लाभः सुखं | धन प्राप्ति नैरूज्यं | वृद्धिः सुखलाभः |
| चतुर्थ | माननाशः रोगभयं | रोगदानार्थ सिद्धिः | कष्टम् | वित्तलाभः सुखं | धन हानि व्ययम् | धनागमः | शत्रुवृद्धिः पीड़ा भयं | शोकश्च वैरं | पीड़ा च भीतिः |
| पंचम् | हानि दैन्यं | कार्यनाशः | धन नाशः रुग्भयं | रूक् शोकश्च | लाभः सुखंच | पुत्र लाभः | धनुपुत्रयोर्नाशः | हानिः शोकश्च | शोक, अर्थनाशः |
| षष्ठ | रिपुनाशः सुखं | वित्तलाभः | सुखम् अर्थलाभः | अलाभः स्थिति | रोगः शोकाश्च | शत्रु वृद्धि, पीडाच | सुखं वित्तलाभः | लक्ष्मीप्राप्तिः सुखं | धन लाभः सुखं |
| सप्तम् | गमनं धनहानिः | द्रव्य प्राप्तिः सुखम् | धन नाशः | विग्रह पीड़ा भयं | सम्मान सुखं च | शोकः अतिभयं | दोष पीड़ाभयं | कलहः हानिः | दुर्गतिः पीड़ा च |
| अष्टम् | रोगाप्तिः भयम् | मृत्यु क्लेशभयम् | पापवृद्धि भयम् | धनान्नादि लाभः | मत्युभयं पीड़ा च | विपत्तिः धनक्षयः | शत्रु वृद्धि रोगः | मृत्यु भयं | हानि, पीड़ाभयं |
| नवम् | पापवृद्धिः कान्तिक्षय | राजभयम् | रोगभयम् | धननाशः रुग्भयम् | सुख सम्मानम् | सुखं लाभः | पापं धननाशः | पाप कर्मरतिः | पापदैन्यश्च |
| दशम् | सौख्यं कर्मसिद्धिः | शुभम् सुखम् | शोकः | सुख सुखभोगः | दैन्यम् | धर्म लाभः | वैमत्यम् | वैरी सुखं | शोकश्च भयं |
| एकादश | वित्ताप्तिः सुखं | विविधार्थ लाभः | लाभः सुखप्राप्तिः | शुभ अर्थागमः | सौख्य प्राप्तिः | दुखं धनागमः | सुख वित्तलाभः | वित्तलाभः सुखं | अर्थलाभः सुयशो |
| द्वादश | द्रव्यनाशः पीड़ा | रोगः धन नाशः | रोगः शोकश्च | शोकः धन नाशः | देहे पीड़ा भयं | धनागमः | क्लेशम् अनर्थश्च | पीड़ा च हानिः | वैरश्च पीड़ा |

## घात चक्र

( प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं )

| राशि | मेष | वृषभ | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या |
|---|---|---|---|---|---|---|
| घात मास | कार्तिक | मार्गशीर्ष | आषाढ़ | पौष | ज्येष्ठ | भाद्रपद |
| तिथि | १।६।११ | ५।१०।१५ | २।७।१२ | २।७।१२ | ३।८।१३ | ५।१०।१५ |
| वार | रवि | शनि | सोम | बुध | शनि | शनि |
| नक्षत्र | मघा | हस्त | स्वाति | अनुराधा | मूल | श्रवण |
| योग | विष्कुम्भ | शुक्ल | परिघ | व्याघात | धृति | शूल |
| करण | बव | शकुनि | चतुष्पद | नाग | बव | कौलव |
| लग्न | मेष | मिथुन | कन्या | मकर | वृष | सिंह |
| प्रहर | १ | ४ | ३ | १ | १ | १ |
| चन्द्र ( पु. ) | मेष | कन्या | कुम्भ | सिंह | मकर | मिथुन |
| चन्द्र ( स्त्री ) | मेष | धनु | धनु | मीन | वृश्चिक | वृश्चिक |

| राशि | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|
| घात मास | माघ | आश्विन | श्रावण | वैशाख | चैत्र | फाल्गुन |
| तिथि | ४।९।१४ | १।६।११ | ३।८।१३ | ४।९।१४ | ३।८।१३ | ५।१०।१५ |
| वार | बृहस्पति | शुक्र | शुक्र | मंगल | बृहस्पति | शुक्र |
| नक्षत्र | शतभिषा | रेवती | भरणी | रोहिणी | आर्द्रा | आश्लेषा |
| योग | शूल | व्यतिपात | वरीयान | वैधृति | गण्ड | वैधृति |
| करण | तैतिल | गर | तैतिल | शकुनि | किंस्तुघ्न | चतुष्पद |
| लग्न | मीन | मिथुन | सिंह | वृश्चिक | मेष | कर्क |
| प्रहर | ४ | १ | १ | ४ | ३ | ४ |
| चन्द्र ( पु. ) | धनु | वृषभ | मीन | सिंह | धनु | कुम्भ |
| चन्द्र ( स्त्री ) | मीन | धनु | कन्या | वृश्चिक | मिथुन | कुम्भ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

## सूर्यादि वारों में कृत्य

***रविवार में कृत्य—*** राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिखौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

***सोमवार में कृत्य—*** शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कुष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

***मंगलवार में कृत्य—*** भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

***बुधवार में कृत्य—*** नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेया:॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

***गुरुवार में कृत्य—*** धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्रा:।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्य विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

***शुक्रवार में कृत्य—*** स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

***शनिवार में कृत्य—*** लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्माकंसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को [illegible] दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कार्य शनिवार में करने चाहिए।

## समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रंह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

## सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे-तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है-- यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

| योग | रविवार | सोमवार | मंगलवार | बुधवार | गुरुवार | शुक्रवार | शनिवार |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सिद्धि योग तिथि | — | — | ३-८-१३ | २-७-१२ | ५-१०-१५ | १-६-११ | ४-९-१४ |
| दग्धा तिथि | १२ | ११ | ५ | ३ | ६ | ८ | ९ |
| हुताशन तिथि | १२ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ |
| विषाख्या तिथि | ४ | ६ | ७ | २ | ८ | ९ | ७ |
| अधम तिथि | ७, १२ | ११ | १० | १, ९ | ८ | ७ | ६ |
| वर्जित तिथि नक्षत्र | ५ हस्त | ६ मृग | ७ अश्विनी | ८ अनु. | ९ पुष्य | १० रेवती | ११ रोहि. |
| मृत्यु योग तिथि | १-६-११ | २-७-१२ | १-६-११ | ३-८-१३ | ४-९-१४ | २-७-१२ | ५-१०-१५ |
| क्रकच तिथि | १२ | ११ | १० | ९ | ८ | ७ | ६ |
| उत्पात नक्षत्र | विशाखा | पू.षा. | धनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. |
| मृत्यु योग नक्षत्र | अनुराधा | उ.षा. | शतभिषा | अश्विनी | मृगशिर | आश्लेषा | हस्त |
| काण योग | ज्येष्ठा | अभिजित् | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा |
| दग्धा योग | भरणी | चित्रा | उ.षा. | धनिष्ठा | उ.फा. | ज्येष्ठा | रेवती |
| यम घंट योग | मघा | विशाखा | आर्द्रा | मूल | कृत्तिका | रोहिणी | हस्त |
| मुसल योग | अभिजित् | पू.भा. | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा |
| काल दण्ड | भरणी | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभिजित् | पू.भा. |
| वज्र | अश्लेषा | हस्त | अनुराधा | उत्तराषाढ़ | शतभिषा | अश्विनी | मृग. |
| राक्षस योग | शतभिषा | अश्विनी | मृगशिर | अश्लेषा | हस्त | अनुराधा | उ.षा. |
| ध्वांक्ष | आर्द्रा | मघा | चित्रा | ज्येष्ठा | अभिजित् | पू.भा. | भरणी |
| धूम्र | कृत्तिका | पुनर्वसु | पू.फा. | स्वाति | मूल | श्रवण | उ.भा. |
| गद | श्रवण | उ.भा. | कृत्तिका | पुनर्वसु | पू.फा. | स्वाति | मूल |
| आनन्द | अश्विनी | मृगशिर | अश्लेषा | हस्त | अनुराधा | उ.षा. | शतभिषा |
| श्रीवत्स | पुष्य | उ.फा. | विशाखा | पूर्वाषाढ़ | धनिष्ठा | रेवती | रोहिणी |
| सौम्य | मृगशिरा | अश्लेषा | हस्त | अनुराधा | उ.षा. | शतभिषा | अश्विनी |
| छत्र | पू.फा. | स्वाति | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृत्तिका | पुनर्वसु |
| शुभ | पू.षा. | धनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | विशाखा |
| अमृत | उ.षा. | शतभिषा | अश्विनी | मृगशिर | अश्लेषा | हस्त | अनुराधा |
| मित्र | उ.फा. | विशाखा | पू.षा. | धनिष्ठा | रेवती | रोहिणी | पुष्य |
| सिद्ध योग | मूल | श्रवण | उ.भा. | कृत्तिका | पुनर्वसु | पू.फा. | स्वाति |
| अमृत सिद्धि | हस्त | श्रवण | अश्विनी | अनुराधा | पुष्य | रेवती | रोहिणी |
| सर्वार्थ सिद्धि | हस्त, मूल ३ उ., पु., अश्विन | श्र.रो.मृ. पुष्य, अनुराधा | अश्विनी उ.भा., कृत्ति., अश्ले. | रोहिणी अनु., हस्त कृत्ति., मृग. | रेव., अनु., अश्वि., पुन. पुष्य | रेव. अनु., अश्वि., पुन., श्रव. | श्रवण रोहिणी स्वाति |
| दुष्ट तिथि | १, ३, ७ | २-११ | ३-९-१२ | ७-९-११ | — | — | ११-१३ |

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

**गर्भाधान—** सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तानोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अत: इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात् समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

**पुंसवन—** गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

**सीमन्तोन्नयन—** यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—**"प्रथम गर्भमासे षष्ठेऽष्टमेवा"** तथा **"पुंसवनवत्"** कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त्त में इसे करें।

आश्लायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

**मेधा-जनन संस्कार—** शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। *मन्त्र*—**ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भूवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

**स्तन पान मुहूर्त्त—** रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

**प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त—** उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

**जातकर्म—** मेधा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

**नामकरण संस्कार—** जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलतः दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

**जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥**

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

**निष्क्रमण संस्कार—** घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

**भूम्युपवेशन संस्कार—** भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

**रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।**
**आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥**

**अन्न प्राशन—** देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

**कर्ण वेध—** जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

**मुण्डन संस्कार**—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

**उपनयन संस्कार**—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मृ., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

**विशेष**—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

**अक्षरारम्भ मुहूर्त्त**—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मृ., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

**विद्यारम्भ मुहूर्त्त**—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

**जल पूजन के मुहूर्त्त**—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

**नित्यक्षौर का मुहूर्त्त**—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, मृतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

# विवाह मुहूर्त्त विचार

## विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) कान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (5) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

**१. लत्ता**—सूर्य, मंगल, वृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

| सूर्य | चन्द्र | मंगल | बुध | बृहस्पति | शुक्र | शनि | राहु | ग्रहाः |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १२ | २२ | ३ | ७ | ६ | ५ | ८ | ९ | वि.नक्षत्र |
| सम्मुख | पृष्ठ | सम्मुख | पृष्ठ | सम्मुख | पृष्ठ | सम्मुख | पृष्ठ | दिशा |
| धननाश | भय | मृत्यु | भय | बन्धुनाश | कार्यनाश | कुलनाश | मृत्यु | फल |

**२. पात**—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

### पात दोष चक्र

| रो. | मृ. | म | उ.फा. | ह | स्वा | अनु. | मूल | उ.षा. | उ.भा. | रे | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| आर्द्रा | मृग. | अश्वि. | कृत्ति. | भर. | कृत्ति. | अनु | रोहि. | भर. | भर. | अश्वि. | सूर्याधिष्ठित नक्षत्र |
| पुन. | आर्द्रा | मृग. | आर्द्रा | मृग. | श्रव | आर्द्रा | ज्ये | पुन. | शत. | ज्ये | |
| शत. | ज्ये. | ज्ये. | विशा. | शत. | धनि | उ.षा. | धनि | शत. | विशा. | धनि | |
| पू.फा. | धनि | पुष्य | पू.फा | पू.भा | पु. | पू.भा | आ | वि | उ.फा | म | |
| चित्रा | मघा | हस्त | उ.भा | स्वा. | हस्त | पू.षा | भर. | अनु | पू.फा | पू.फा | |
| मूल | हस्त | रेव. | पू.भा | भर. | रेव. | पू.फा | उ.भा | उ.षा | भर. | स्वा | |

**३. युति**—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



४. वेध — पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

## वेध दोष चक्र

| रो | मृ | म | उ.फा | ह | स्वा | अनु | मू. | उ.षा | उ.भा | रे | वि.नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्वि | उ.षा | श्र | रे | उ.भा | श | ५ | पुन | मृ | ह | उ.षा. | वेध नक्षत्र |

५. यामित्र — विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

## यामित्र दोष चक्र

| रो | मृ | म | उ.फा | ह | स्वा | अनु | भ | उ.षा | उ.भा | रे | वि.नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अनु | ज्ये | ध | पू.भा | उ.भा | अ | कृ | मृ | पुन | उ.फा | ह | ग्रह नक्षत्र |

६. बाण — किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल — विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह — विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्लक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य — जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि — जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

## दग्धा तिथि चक्र

| मेष कर्क | वृषभ कुम्भ | मिथुन कन्या | सिंह वृश्चिक | तुला मकर | धनु मीन | सूर्यराशि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ६ | ४ | ८ | १० | १२ | २ | तिथि |

लत्तादि दोष परिहार — लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भटिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

## विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

**वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)** — रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

**विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना** — आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्रायः लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

**विवाह विचार में विशेष** — दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

## त्रिबल शुद्धि

**श्रेष्ठ गुरु** — जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।

**पूज्य गुरु** — जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।

**नेष्ट गुरु** — जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।

**परिहार** — जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।

**श्रेष्ठ रवि** — यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।

**पूज्य रवि** — यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



**नेष्ट रवि**—यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

**श्रेष्ठ चन्द्र**—जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

**नेष्ट चन्द्र**—जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

**गोधूलिका लग्न**—हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ट और अष्टम में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

**वधु प्रवेश मुहूर्त**—विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

**द्विरागमन मुहूर्त**—विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

**नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ**—कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

**धार्मिक कृत्य मुहूर्त**—व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण, देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

## विवाहे मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

**दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।**
**समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥**

विवाह में लता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

**मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।**
**सन्तोषो जायते तत्र नाध्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥**

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चाहिये।

## नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**—वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।

२. **वश्य**—राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।

३. **तारा**—वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक्-पृथक् लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।

४. **योनि**—राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

५. **ग्रह मैत्री**—राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

६. **गण**—राशि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।

७. **भकुट**—वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।

८. **नाड़ी**—अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

## ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

## मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्राय: सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अत्र शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

**लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।**
**कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥**

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अत: यह स्वत: प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर वृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या वृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

**त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्कौ चिरा प्रिया।**
**सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥**

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हो तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS


### वर्ण के गुण

| | ब्रा. | क्ष. | वै. | शू. |
|---|---|---|---|---|
| ब्राह्मण | १ | ० | ० | ० |
| क्षत्रिय | १ | १ | ० | ० |
| वैश्य | १ | १ | १ | ० |
| शूद्र | १ | १ | १ | १ |

### वश्य के गुण

| | च. | मा. | ज. | व. | की. |
|---|---|---|---|---|---|
| चतुष्पद | २ | १ | १ | ० | १ |
| मानव | १ | २ | १ | ० | १ |
| जलचर | १ | १ | २ | १ | १ |
| वनचर | ० | ० | १ | २ | ० |
| कीट | १ | १ | १ | ० | २ |

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

### तारागुण चक्र ( ३ )

| | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| २ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ३ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ४ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ५ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ६ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ७ | १॥ | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | ० | १॥ | १॥ |
| ८ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |
| ९ | ३ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | १॥ | ३ | ३ |

**तारा देखने की रीति**—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

## नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

| ग्रह | मित्र | सम | शत्रु |
|---|---|---|---|
| सूर्य | चं.मं.बृ. | बुध | शु.श. |
| चन्द्र | सू.बु. | मं.बृ.शु.श. | ० |
| मंगल | सू.चं.बृ. | शु.श. | बुध |
| बुध | सू.शु. | मं.बृ.श. | चन्द्र |
| बृहस्पति | सू.चं.मं. | शनि | बु.शु. |
| शुक्र | बु.श. | मं.बृ. | सू.चं. |
| शनि | बु.शु. | बृह. | सू.चं.मं. |

### योनिगुण चक्र ( ४ )

| | अ. | ग. | मे. | स. | श्वा. | मा. | मू. | गौ | म. | व्या. | मृ. | वा. | न. | सि. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अश्व | ४ | २ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ० | १ | ३ | २ | २ | १ |
| गज | २ | ४ | ३ | २ | २ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | ३ | २ | २ | ० |
| मेष | ३ | ३ | ४ | २ | २ | ३ | २ | ३ | ३ | १ | ३ | ३ | २ | १ |
| सर्प | २ | २ | २ | ४ | २ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | २ | ० | २ |
| श्वान | २ | २ | २ | २ | ४ | १ | १ | २ | २ | १ | ० | २ | २ | १ |
| मार्जार | ३ | ३ | ३ | १ | १ | ४ | ० | २ | २ | १ | २ | २ | २ | २ |
| मूषक | ३ | २ | २ | २ | १ | ० | ४ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ |
| गौ | ३ | २ | ३ | २ | १ | २ | २ | ४ | ३ | ० | २ | २ | ३ | १ |
| महिष | ० | ३ | ३ | २ | २ | २ | २ | ३ | ४ | १ | २ | २ | २ | ३ |
| व्याघ्र | १ | २ | १ | २ | १ | १ | २ | ० | १ | ४ | १ | १ | २ | २ |
| मृग | ३ | ३ | ३ | २ | ० | ३ | २ | ३ | २ | १ | ४ | २ | २ | २ |
| वानर | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ४ | २ | ३ |
| नकुल | २ | २ | ३ | ० | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | २ | ४ | २ |
| सिंह | १ | ० | १ | २ | १ | २ | १ | १ | १ | २ | २ | २ | २ | ४ |

### ग्रह मैत्री के गुण चक्र

| | सू. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सूर्य | ५ | ५ | ५ | ४ | ५ | ० | ० |
| चन्द्र | ५ | ५ | ४ | १ | ४ | ॥ | ॥ |
| मंगल | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ३ | ॥ |
| बुध | ४ | १ | | ५ | ॥ | ५ | ४ |
| गुरु | ५ | ४ | ५ | ॥ | ५ | ॥ | ३ |
| शुक्र | ० | ॥ | ३ | ५ | ॥ | ५ | ५ |
| शनि | ० | ॥ | ॥ | ४ | ३ | ५ | ५ |

### गण मैत्री के गुण ६

| | दे. | म. | रा. |
|---|---|---|---|
| देवता | ६ | ५ | १ |
| मनुष्य | ६ | ६ | ० |
| राक्षस | ० | ० | ६ |

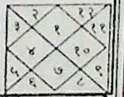


### भकूटगुण चक्र ( ७ )

| | मे. | वृ. | मि. | क. | सिं. | क. | तु. | वृ. | ध. | म. | कु. | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मेष | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० |
| वृष | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ |
| मिथुन | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ |
| कर्क | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० |
| सिंह | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० |
| कन्या | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ |
| तुला | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० | ० |
| वृश्चिक | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ | ० |
| धनु | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ | ७ |
| मकर | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० | ७ |
| कुम्भ | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ | ० |
| मीन | ० | ७ | ७ | ० | ० | ७ | ० | ० | ७ | ७ | ० | ७ |

### नाड़ीगुण चक्र-८

| | आदि | मध्य | अन्त्य |
|---|---|---|---|
| आदि | ० | ८ | ८ |
| मध्य | ८ | ० | ८ |
| अन्त्य | ८ | ८ | ० |

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE, IKS



भाग-२

# वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वं द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोगुर्णैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

| कन्या ↓ | वर → | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | | तुला | | | वृश्चिक | | | धन | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | नक्षत्र चरण | अ. ४ | भ. ४ | कृ. १ | कृ. ३ | रो. ४ | मृ. २ | मृ. २ | आ. ४ | पुन. ३ | पुन. १ | पु. ४ | श्ले. ४ | म. ४ | पू.फा ४ | उ.फा १ | उ.फा ३ | ह. ४ | चि. २ | चि. २ | स्वा. ४ | वि. ३ | वि. १ | अनु. ४ | ज्ये. ४ | मू. ४ | पू.षा ४ | उ.षा १ | उ.षा. ३ | श्र. ४ | ध. २ | ध. २ | श. ४ | पू.भा ३ | पू.भा १ | उ.भा. ४ | रे. ४ |
| तुला | चि.२ | २२॥ | १४॥ १३ | २८॥ | २३॥ +६ | २० १६ | १२ ३६ | १३ ३५ | २१ १५ | १९॥ +५ | २०॥ | ११॥ | २६॥ | २५॥ | ११॥ १३ | १७॥ १२ | १७॥ १२४ | २० +४ | २१ ३४ | २८ ३ | २७ ० | ३४॥ | २३॥ ४ | ६॥ ३४ | २०॥ ४ | २७ | १४ १३ | २२ १ | २५ ०१ | २६॥ | २३॥ ३ | १८ ३५ | २६ +५ | १८॥ १५ | १२॥ १६ | ३॥ १३६२ | १२॥ ६ |
| | स्वा.४ | २७॥ +२ | २९॥ | १७॥ ३ | १२॥ ३६ | १५॥ ३६ | २६ -६ | २७ +५ | २६ +५ | २८ +५ | २९ | २७॥ | १४॥ ३ | १३॥ ३ | २५॥ | २५॥ | २५॥ +४ | २७॥ +४ | २१ +४ | २८ | २८ | २० ०३ | ९ ०३४ | २१॥ ४ | १६॥ ४ | २३ | २७ | १९ ३ | २२ ३ | २३ ३ | २६॥ | २१ +५ | २० ५२+ | २५ +५ | १९ ६ | १९॥ ६ | १२॥ ३६ |
| | वि.३ | २२॥ | २२॥ १ | २०॥ ३ | १५॥ ३६ | १०॥ १३६ | १८॥ -६ | १९॥ +५ | २० १५ | २१ +५ | २२ | २१ | १८॥ ३ | १७॥ ३ | १९॥ १ | १७॥ १२ | १७॥ १६२ | १८॥ +४ | २७॥ +४ | ३४॥ | १९ ३ | २८ ३ | १७ ३४ | १६ ०४ | २०॥ ४ | २७ | २२ १ | १४ १३ | १७ १३ | १७ ३ | ३० | २४॥ +५ | २६ +५ | २० १५ | १४ १६ | १३ १६२ | ४॥ ३६ |
| वृश्चिक | वि.१ | १६॥ +६ | १६॥ १६ | १४॥ ३६ | १९॥ ३ | १४॥ १३ | २२॥ | १२ ६ | १२॥ १६ | १३॥ ६ | १९ -५ | १८ -५ | १५॥ -५ | २१॥ ३ | २३॥ १ | २१॥ १२ | १७ १२ | १८ | २७ | २२॥ ४ | ७ ३४ | १६ ३४ | २८ ३ | २७ ० | ३१॥ | २१॥ +४ | १६॥ ४१ | ८॥ १३४ | १२ १३ | १२ ३ | २५ | २४ | २५॥ | १९॥ १ | १९ १५ | १८ १५ | ९॥ ३२५ |
| | अनु.४ | २४॥ -६ | १५॥ ३६ | १९॥ -६ | २८॥ | २७॥ | २०॥ ३ | १० ३६ | १५ २६ | २०॥ ६ | २६ -५ | १८ ३५ | २२ -५ | २४॥ | २०॥ | २९॥ | २५ | २६ | ११ ३ | ६॥ ३४ | २१॥ ४ | १६ ४ | २८ | २८ ३ | ३१ ० | १५॥ २४+ | १३॥ ३४ | २१॥ +४ | २५ | २६ | १२ ३ | ११ ३ | २१ | २४॥ | २४ +५ | १८ ३५ | २७ +५ |
| | ज्ये.४ | १२ ३६ | १८॥ १६ | २४॥ -६ | २९॥ | २२॥ १ | २२॥ | १२ ६ | २ ३१६२ | ५ ६३ | १०॥ ५३ | २० +५ | २६ -५ | ३१ | २३॥ १ | १६॥ १३ | १२ १३ | १२ ३ | २४ ० | १९॥ ४ | १४॥ | १९॥ ४ | ३१॥ | ३० | २८ ३ | १४ ०२३४ | १६॥ १४ | १६॥ १४ | २० १ | २० | २५ | २४ | १८ ३ | १० १३ | ९॥ १३५ | २१ १५ | २१ +५ |
| धन | मू.४ | १२ ३५ | २० १५ | २४॥ +५ | १९॥ ६ | १३ १६ | १३ ६ | २१ | १५ १३ | १२ ३ | ८ ३६ | १७ ६ | २३॥ ६ | २५ +५ | १९ १५ | ९॥ १५३ | १३ ३१ | १३ ३ | २७ | २६ | २१ | २६ | २२॥ +४ | १५॥ +२४ | १५ ३४२ | २८ ३ | २८ ०१ | २६॥ १ | १५ १४ | १५ ४ | २० ४ | २८॥ | २१॥ ३ | १४॥ १३ | १६ १३ | २५ १ | २६॥ |
| | पू.षा.४ | २६ +५ | १८ ३५ | १८ -१२५ | १२॥ १६२ | १८ ६ | १० ३६ | १८ ३ | २७ | २७ | २३ ६ | १३ २३६ | १७ १६ | १९ -१५ | १७ ३५ | २५ +५ | २८॥ | २७ | १३ १३ | १३ १३ | २७ | २१ १ | १७॥ १४- | १५॥ ३४ | १७॥ १४- | २८ +१ | २८ ३ | ३४ ० | २२॥ ०४ | २३ ४ | ६ १३४ | १४॥ १३ | २३॥ १ | २८॥ | ३० | २३ ३ | ३१ |
| | उ.षा.१ | २४॥ +५ | २६ +५ | १२ १३५ | ६॥ १३६ | १०॥ २३६ | १७ २६ | २५ +२ | २७ | २८ | २३ ६ | २३ ६ | ९ १६३ | ८॥ १५३ | २४ +५ | २५ +५ | २८॥ | २८॥ | २१ १ | २१ १ | १९ ३ | १३ १३ | ९॥ १३४ | २३॥ +४ | १७॥ -१४ | २६॥ -१ | ३४ | २८ ३ | १६॥ ३४ | १४॥ ३६० | १५ १४ | २३॥ १ | २३॥ १ | २९॥ | ३१ | ३१ | २३ ३ |
| मकर | उ.षा.३ | २७ | २८॥ | १४॥ १३ | १२ १३५ | १६ २३५ | २२॥ २५+ | २० २६+ | २२ -६ | २२ -६ | २८ | २८ | १४ १३ | ४॥ १३६ | २० ६ | २१ ६ | २४॥ +५ | २४॥ ११ | १७ १५ | २४ -१ | २२ ३ | १६ १३ | १३ ३१ | २७ | २१ १ | १६ १४ | २३॥ ४ | १७॥ ३४ | २८ ३ | २६ ३० | २६॥ +१ | १७ १४+ | १७ १४+ | २३ +४ | ३०॥ | ३०॥ | २२॥ ३ |
| | श्र.४ | २७ | २६ | १३॥ ३२ | ११ ३५२ | १६ ३५ | २५ +५ | २२॥ -६ | २१ -६ | २२ -६ | २८ | २६ +२ | १५ ३ | ६॥ ३६ | १८॥ ६ | २० ६ | २३॥ +५ | २४॥ +५ | १९॥ ५ | २६॥ | २२ ३ | १७ ३ | १४ ३ | २७ | २२ | १७ ४ | २३ ४ | १४॥ ३४ | २५ ३ | २८ ३ | २८ ० | १८॥ ०४ | १८ +४ | २१ +४ | २८॥ | २९॥ | २२॥ ३ |
| | ध.२ | २० | ११ १३२ | २६ | २३॥ +५ | २० १५ | १२ ३५ | ९॥ ३६ | १६॥ १६ | १५ -६ | २१ | १३ ३ | २७ | १९॥ ६ | ५॥ १३६ | १२॥ १६ | १५॥ १५ | १७॥ +५ | १५॥ ३५ | २२॥ ३ | २४॥ | २९ | २६ | १२ ३ | २६ | २१ ४ | ७ ३४१ | १६ ४१ | २६॥ १ | २७ | २८ ३ | १८॥ ३४ | २३॥ ४० | १९ १४ | २६॥ १ | १५॥ १३ | २२॥ +२ |
| कुम्भ | ध.२ | २० | ११ १३२ | २६ | ३०॥ | २७ १ | १९ ३ | १२ ३५ | १९ १५ | १७॥ +५ | १२॥ ६ | ४॥ ३६ | १८॥ ६ | २६॥ | ११॥ १३ | १८॥ १ | १७॥ १६ | १९ +६ | १७ ३६ | १८ ३५ | २० -५ | २४॥ -५ | २५ | ११ ३ | २५ | २९॥ | १५॥ १३ | २४॥ १ | १८ १४ | १८॥ +४ | १९॥ +४ | २८ ३ | ३३ ० | २८॥ १ | १८ १४ | ७ १३४ | १४ ४२ |
| | श.४ | २५ ३ | २१ १ | २८ | ३२॥ | २५॥ १ | २७ | २० +५ | १२ १३५ | १३ ३५ | ६॥ ३६ | १४॥ ६ | २०॥ ६ | २६॥ | २०॥ १ | १२॥ १३ | ११॥ १३६ | ८॥ २३६ | २५ ६ | २६ +५ | १९ +५ | २६ +५ | २६॥ | २१ | १९ ३ | २२॥ ३ | २४॥ १ | २४॥ १ | १८ १४ | १८॥ +४ | २४॥ +४ | ३३ | २८ ३ | १९ ० | ८॥ ० | १७ १४ | १६ ४ |
| | पू.भा.३ | १८ ३ | २५ +२ | २० -१ | २४॥ -१ | ३१॥ | ३१॥ | २४ +५ | १७ ३५ | १८ ३५ | १२ ३६ | २० ६ | १२॥ १६ | १९॥ १ | २५॥ | १६॥ ३ | १५॥ ३६ | १५॥ ३६+ | १७॥ १६ | १८॥ १५ | २६ +५ | २० +१५ | २०॥ १ | २६॥ | ११ १३ | १५॥ १३ | २९॥ | ३०॥ | २४ +४ | २३॥ +४ | २० -१४ | २८॥ -१ | १९ १३ | २८ ३ | १७॥ ३४ | २२॥ ०४ | २० ४२ |
| मीन | पू.भा.१ | १४॥ ३४ | २१॥ +२४ | १६॥ -१४ | १९ १ | २६ | २६ | २५॥ | १८ ३ | १८ ३ | १७ ३५ | २५ ५ | १७॥ १५ | १७॥ -१६ | २३॥ +६ | १४॥ +३६ | १६॥ ३ | १६॥ ३ | १४॥ +१ | ११॥ १६ | १९ ६ | १३ १६ | १९ १५- | २५ +५ | ९॥ १३५ | १५ १३ | १९ | ३० | २९॥ | २८॥ | २५॥ १ | १७ १४ | ७॥ १३४ | २६॥ ३४ | २८॥ ३ | ३३ ० | ३०॥ +२ |
| | उ.भा.४ | २४॥ +४ | १६॥ ३४ | १८॥ -२४ | २१ १ | २६ | १८ ३ | १७॥ ३ | २५॥ | २८ | २७ ५ | १९ ३५ | २१ १५ | १८॥ -१६ | १६॥ ३६ | २५॥ +६ | २७॥ | २६॥ | ९॥ १३२ | २॥ १३६२ | १९॥ ६ | १२ १६२ | १८ १५२ | १९ ३५ | २१ -१५ | २४ ०१ | २२ ३ | ३० | २९॥ | २९॥ | १४॥ १३ | ६ १३४ | १६ १४ | २१॥ ४ | ३३ | २८ ३ | ३५ ० |
| | रे.४ | २५ +४ | २४॥ +४ | ११॥ ३६ | १४ ३ | १७ ३ | २६ | २५॥ | २४॥ | २६॥ | २५॥ ५ | २७ ५ | १४ ३५ | १३ ३६ | २३॥ +६ | २३॥ +६ | २५॥ | २६॥ | १९॥ | १२॥ ६ | ११॥ ३६ | ४॥ ३६ | १०॥ ३५ | २७ +५ | २२ +५ | २६॥ | २९ | २१ ३ | २०॥ ३ | २१॥ ३ | २२॥ -२ | १४ ४२ | १६ ४ | १८ ४२ | २९॥ +२ | ३४ | २८ ३ |

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखे है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

| कन्या ↓ | वर → | मेष | | | वृष | | | मिथुन | | | कर्क | | | सिंह | | | कन्या | | | तुला | | | वृश्चिक | | | धन | | | मकर | | | कुम्भ | | | मीन | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | नक्षत्र चरण | अ.<br>४ | भ.<br>४ | कृ.<br>१ | कृ.<br>३ | रो.<br>४ | मृ.<br>२ | मृ.<br>२ | आ.<br>४ | पुन.<br>३ | पुन.<br>१ | पु.<br>४ | श्ले.<br>४ | म.<br>४ | पू.फा<br>४ | उ.फा<br>१ | उ.फा<br>३ | ह.<br>४ | चि.<br>२ | चि.<br>२ | स्वा.<br>४ | वि.<br>३ | वि.<br>१ | अनु.<br>४ | ज्ये.<br>४ | मू.<br>४ | पू.षा<br>४ | उ.षा<br>१ | उ.षा.<br>३ | श्र.<br>४ | ध.<br>२ | ध.<br>२ | श.<br>४ | पू.भा<br>३ | पू.भा<br>१ | उ.भा.<br>४ | रे.<br>४ |
| मेष | अ. ४ | २८<br>३ | ३३<br>० | २८॥ | १८॥<br>४ | २१॥<br>-४ | २२॥<br>-४ | २६ | १७<br>३ | १९<br>३ | २३॥<br>३ | ३१॥ | २८ | २१<br>+५ | २५<br>+५ | १५॥<br>३.५ | ११<br>३.६ | ९<br>२.३.६ | १३<br>६ | २२॥ | २६॥<br>-२ | २२॥ | १८॥<br>-६ | २५॥<br>-६ | १४<br>३.६ | १३॥<br>३.५ | २५<br>+५ | २३॥<br>+५ | २५ | २६ | २० | २० | १५<br>३ | १६<br>३ | १४॥<br>३.४ | २४॥<br>+४ | २६॥<br>+४ |
| | भ. ४ | ३४ | २८<br>३ | २९<br>०१ | १९<br>०.४.१ | २१॥<br>-४ | १४॥<br>३४ | १८<br>३ | २६ | २७ | ३१॥ | २३॥<br>३ | २५॥<br>१ | २०<br>१५- | १८<br>२.५ | २६<br>+५ | २१॥<br>६ | २०<br>६ | ४<br>१.३.६ | १३॥<br>१.३ | २९॥ | २१॥<br>१ | १७॥<br>-१६ | १७॥<br>३.६ | १९॥<br>-१६ | २०<br>-१.५ | १८<br>३.५ | २६<br>+५ | २७॥ | २६ | १०<br>१३२ | १०<br>१.३.२ | २०<br>-१ | २४<br>-२ | २२॥<br>२४+ | १७॥<br>+३.४ | २६॥<br>+४ |
| | कृ. १ | २७॥ | २९<br>१ | २८<br>३ | १८<br>३.४ | १०<br>१३.४.० | १६॥<br>४ | २० | २०<br>१ | २१ | २५॥ | २६॥ | २३॥<br>३ | १६॥<br>३.५ | २०<br>१.५ | २०<br>१.५ | १५॥<br>१.६ | १५॥<br>६ | १८<br>६ | २७॥ | १५॥<br>३ | १९॥<br>३ | १५॥<br>३.६ | १९॥<br>-६ | २५॥<br>-६ | २४॥<br>+५ | १८<br>१.२.५ | १२<br>३.१.५ | १३॥<br>१३ | ११॥<br>२.३ | २५ | २५ | २७ | १९<br>१ | १७॥<br>१.४ | १९॥<br>१.४ | ११॥<br>३.४ |
| वृष | कृ. ३ | १८॥<br>-४ | २०<br>१.४ | १९<br>३.४ | २८<br>३ | २०<br>०.१.३ | २६॥ | १७॥<br>+४ | १७॥<br>१.४ | १८॥<br>+४ | २२ | २३ | २०<br>३ | १८॥<br>३ | २२<br>१ | २२<br>१ | २१<br>१.५ | २१<br>+५ | २३॥<br>+५ | २२॥<br>-६ | १०॥<br>३.६ | १४॥<br>३.६ | २०॥<br>३ | २४॥ | ३०॥ | २०<br>६ | १३॥<br>१.२.६ | ७॥<br>१.३.६ | १२<br>१.३.५ | १०<br>३.५.२ | २३॥<br>+५ | २१॥ | ३१॥ | २३॥<br>१ | २०<br>१ | २२<br>१ | १४<br>३ |
| | रो. ४ | २३॥<br>-४ | २३॥<br>४ | ११<br>३४१ | २०<br>३१ | २८<br>३ | ३६<br>० | २५॥<br>०४ | २३॥<br>+४ | २२॥<br>+४ | २६ | २७ | २२<br>३१ | १०॥<br>३१ | २४॥ | २७ | २६<br>+५ | २६<br>+५ | २०<br>१५- | १९<br>१६ | १५॥<br>३.६ | ९॥<br>३१६ | १५॥<br>३१ | २१॥ | २३॥<br>१ | १४<br>१६ | १९॥<br>६ | ११॥<br>३६२ | १६<br>३५२ | १७<br>३५ | २०<br>१५- | २४॥<br>-१ | २४॥<br>-१ | ३०॥ | २७ | २७ | १९<br>३ |
| | मृ. २ | २३॥<br>-४ | १४॥<br>३४ | १८॥<br>-४ | २७॥ | ३५ | २८<br>३ | १९<br>३४ | २४<br>०४ | २२॥<br>+४ | २६ | १९<br>१ | २१ | १९॥ | १५॥<br>३ | २४॥ | २३॥<br>+५ | २६<br>+५ | १३<br>३५ | १२<br>३६ | २५<br>-६ | १८॥<br>-६ | २४॥ | २१॥<br>३ | २४॥ | १५<br>६ | १०<br>३६ | १७<br>२६ | २१॥<br>+२५ | २५<br>+५ | १३<br>३५ | १९<br>३ | २७ | २९॥ | २६ | १८<br>३ | २७ |
| मिथुन | मृ. २ | २७ | १८<br>०३ | २२ | १९॥<br>+४ | २७<br>+४ | २०<br>३४ | २८<br>३ | ३३<br>० | ३१॥ | १९<br>-४ | १२<br>३४ | १४<br>४ | २३॥ | १९॥<br>३ | २८॥ | ३१॥ | ३४ | २१<br>३ | १४<br>३५ | २७<br>+५ | २०॥<br>+५ | १४<br>६ | ११<br>३६ | १४<br>६ | २३ | १८<br>३ | २५<br>+२ | २०<br>-२६ | २३॥<br>-६ | ११॥<br>३६ | १३<br>३५ | २१<br>+५ | २३॥<br>+५ | २५॥ | १७॥<br>३ | २६॥ |
| | आ. ४ | १९<br>३ | २७ | २१<br>१ | १८॥<br>१४+ | २४॥<br>+४ | २६<br>+४ | ३४ | २८<br>३ | २५<br>०३ | १२॥<br>०३४ | २०<br>-४ | १३<br>१४ | २३॥<br>१ | २९॥ | २१॥<br>३ | २४॥<br>३ | २४॥<br>३ | २७<br>१ | २०<br>-१५ | २७<br>+५ | २०<br>१५+ | १३॥<br>१६ | १७<br>२६ | ५<br>१३६२ | १६<br>१३ | २८ | २८ | २३<br>-६ | २३<br>-६ | १७॥<br>-१६ | १९<br>+१५ | १२<br>१३५ | १७<br>३५ | १९<br>३ | २६॥ | २६॥ |
| | पुन. ३ | २०<br>३ | २७ | २३ | २०॥<br>+४ | २२॥<br>+४ | २३॥<br>+४ | ३१॥ | २४<br>३ | २८<br>३ | १५॥<br>३४- | २२॥<br>०४ | १७<br>-४ | २२॥<br>+२ | २६॥<br>+२ | २१॥<br>३ | २४॥<br>३ | २५॥<br>३ | २७॥ | २०॥<br>+५ | २८<br>+५ | २२<br>+५ | १५॥<br>६ | २१॥<br>६ | ७<br>३६ | १४<br>३ | २७ | २७ | २२<br>-६ | २३<br>-६ | १७॥<br>-६ | १८॥<br>+५ | १४<br>३५ | १६<br>३५ | १८<br>३ | २८ | २७॥ |
| कर्क | पुन. १ | २२॥<br>३ | २९॥ | २५॥ | २२ | २४ | २५ | १८<br>४ | १०॥<br>३४ | १४॥<br>३४ | २८<br>३ | ३५<br>० | २९॥ | १६॥<br>२४ | २०॥<br>२४ | १५॥<br>३४ | १८<br>३ | १९<br>३ | २१ | २०॥ | २८ | २२ | २०॥<br>+५ | २६<br>+५ | ११॥<br>३५ | ८<br>३६ | २१<br>-६ | २१<br>-६ | २६ | २७ | २१ | १२॥<br>६ | ८<br>३६ | १०<br>३६ | १६<br>३५ | २६<br>+५ | २५॥<br>+५ |
| | पु. ४ | ३०॥ | २१॥<br>३ | २६॥ | २३ | २५ | १८<br>३ | ११<br>३४ | १८<br>४ | २१॥<br>४ | ३५ | २८<br>३ | ३०<br>० | १९॥<br>+४ | १५॥<br>३४ | २३॥<br>+४ | २६ | २७ | १२<br>३ | ११॥<br>३ | २६॥ | २१ | १९<br>-५ | १८<br>३५ | २१<br>-५ | १७ | ११<br>२३६ | २१<br>६ | २६ | २५<br>-२ | १३<br>३ | ४॥<br>३६ | १४॥<br>६ | १८<br>६ | २४<br>+५ | १८<br>३५ | २७<br>+५ |
| | अश्ले.४ | २६ | २४॥<br>१ | २२॥<br>३ | १९<br>३ | ११<br>३१ | १९ | १२<br>४ | १२<br>१४ | १५<br>४ | २८॥ | २९ | २८<br>३ | १५<br>३४२ | १५॥<br>१४२ | १८॥<br>१४ | २१<br>१ | २१ | २६ | २५॥ | १२॥<br>३ | १७॥<br>३ | १५॥<br>३५ | २०<br>-५ | २६<br>-५ | २२॥<br>६ | १६<br>१६ | ८<br>३१६ | १३<br>१३ | १३<br>३ | २६ | १७॥<br>६ | १९॥<br>६ | ११॥<br>१६ | १७॥<br>१५- | २१<br>१५ | १३<br>३५ |
| सिंह | म. ४ | २०<br>+५ | २०<br>१५ | १६॥<br>३५ | १७॥<br>३ | ९॥<br>३१ | १७॥ | २१॥ | २२॥<br>१ | २०॥<br>-२ | १६॥<br>२४+ | १९॥<br>+४ | १६<br>३४२ | २८<br>३ | ३०<br>०१ | २७॥<br>१ | १६॥<br>१४ | १६॥<br>+४ | २१॥<br>४ | २४॥ | ११॥<br>३ | १६॥<br>३ | २२॥<br>३ | २५॥ | ३३ | २५<br>+५ | १९<br>१५ | ८॥<br>१३५ | ३॥<br>३१६ | ४॥<br>३६ | १८॥<br>६ | २४॥ | २५॥ | १८॥<br>१ | १८॥<br>१६- | १९॥<br>१६- | १३<br>३६ |
| | पू.फा.४ | २६<br>+५ | १८<br>३५ | २०<br>१५- | २१<br>१ | २३॥ | १५॥<br>३ | १९॥<br>३ | २८॥ | २६॥<br>-२ | २२॥<br>२४+ | १७॥<br>+३४ | १६॥<br>१२४ | ३०<br>-१ | २८<br>३ | ३५<br>० | २४<br>०४ | २२<br>+४ | ७॥<br>१३४ | १०॥<br>१३ | २५॥ | १८॥<br>१ | २४॥<br>-१ | २३॥<br>३ | २५॥<br>-१ | ११<br>१५+ | १७<br>३५ | २४<br>+५ | १७॥<br>६ | १८॥<br>६ | ४॥<br>१३६ | १०<br>१३ | १९॥<br>१ | २४॥ | २४॥<br>-६ | १७॥<br>३६ | २५॥<br>-६ |
| | उ.फा.१ | १६॥<br>३५ | २६<br>+५ | २०<br>१५- | २१<br>१ | २६ | २४॥ | २८॥ | २०॥<br>३ | २१॥<br>३ | १७॥<br>३४ | २५॥<br>+४ | १९॥<br>१४- | २७॥<br>-१ | ३५ | २८<br>३ | १७<br>३४ | १६<br>०३४ | १३॥<br>१४२ | १६॥<br>१२ | २५॥ | १६॥<br>१२ | २२॥<br>-१२ | ३१॥ | १७॥<br>१३ | ९॥<br>१३५ | २५<br>+५ | २५<br>+५ | २०<br>६ | २०<br>६ | ११॥<br>१६ | १७॥<br>१ | ११॥<br>१३ | १५॥<br>३ | १५॥<br>३६ | २६॥<br>-६ | २५॥<br>-६ |
| कन्या | उ.फा.३ | १३<br>३६ | २२॥<br>६ | १६॥<br>१६ | २१<br>१५+ | २६<br>+५ | २४॥<br>+५ | ३१॥ | २३॥<br>३ | २४॥<br>३ | २०<br>३ | २८ | २२<br>१ | १७॥<br>१४ | २५<br>+४ | १८<br>३४ | २८<br>३ | २७<br>०३ | २४॥<br>१२+ | १६॥<br>१२४- | २५॥<br>+४ | १६॥<br>१२४ | १८<br>१२ | २७ | १३<br>१३ | १४<br>१३ | २९॥ | २९॥ | २४॥<br>+५ | २४॥<br>+५ | १६<br>१५+ | १६॥<br>-६ | १०॥<br>३१६ | १४॥<br>३६ | १७॥<br>३ | २८॥ | २७॥ |
| | ह.४ | १०<br>२३६ | २०<br>६ | १७॥<br>६ | २२<br>+५ | २५<br>+५ | २६<br>+५ | ३३ | २२॥<br>३ | २४॥<br>३ | २०<br>३ | २८ | २३ | २८॥<br>+४ | २२॥<br>+४ | १६<br>३४ | २६<br>३ | २८<br>३ | २८<br>० | २०<br>०४ | २६॥<br>+४ | १८॥<br>+४ | २० | २६ | १३<br>३ | १५<br>३ | २७ | २८॥ | २३॥<br>+५ | २४॥<br>+५ | १८॥<br>+५ | १९<br>६ | ८॥<br>३६२ | १३॥<br>३६ | १६॥<br>३ | २६॥ | २७॥ |
| | चि. २ | १३<br>६ | ५<br>१३६ | १९<br>६ | २३॥<br>+५ | २०<br>१५ | १२<br>३५ | १९<br>३ | २६<br>१ | २५॥ | २१ | १२<br>३ | २७ | २२॥<br>+४ | ८॥<br>१३४ | १४॥<br>१२४ | २४॥<br>१२ | २७ | २८<br>३ | २०<br>३४ | १९<br>०४ | २६॥<br>+४ | २८ | ११<br>३ | २५ | २७ | १४<br>१३ | २२<br>१ | १७<br>१५ | १८॥<br>+५ | १५॥<br>३५ | १६<br>३६ | २४<br>-६ | १६॥<br>१६ | ११॥<br>१ | १०॥<br>१३२ | ११॥ |

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तता नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। चिन्हों का अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) वैर योनी में (२) लिखें हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाग-२

# वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थान्यपि भानि पुंसां पार्श्वे द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्स्मृतितोऽधिकं यत्॥

| कन्या ↓ | वर → नक्षत्र चरण | मेष अ. ४ | मेष भ. ४ | मेष कृ. १ | वृष कृ. ३ | वृष रो. ४ | वृष मृ. २ | मिथुन मृ. २ | मिथुन आ. ४ | मिथुन पुन. ३ | कर्क पुन. १ | कर्क पु. ४ | कर्क श्ले. ४ | सिंह म. ४ | सिंह पू.फा ४ | सिंह उ.फा १ | कन्या उ.फा ३ | कन्या ह. ४ | कन्या चि. २ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुला | चि.२ | २२॥ | १४॥ १३ | २८॥ | २३॥ +६ | २० १६ | १२ ३६ | १३ ३५ | २१ १५ | १९॥ +५ | २०॥ | ११॥ | २६॥ | २५॥ | ११॥ १३ | १७॥ १२ | १७॥ १२४ | २० +४ | २१ ३४ |
| | स्वा.४ | २७॥ +२ | २९॥ | १७॥ ३ | १२॥ ३६ | १५॥ ३६ | २६ -६ | २७ +५ | २६ +५ | २८ +५ | २९ | २७॥ | १४॥ ३ | १३॥ ३ | २५॥ | २५॥ | २५॥ +४ | २७॥ +४ | २१ +४ |
| | वि.३ | २२॥ | २२॥ १ | २०॥ ३ | १५॥ ३६ | १०॥ १३६ | १८॥ -६ | १९॥ +५ | २० १५ | २१ +५ | २२ | २१ | १८॥ ३ | १७॥ ३ | १९॥ १ | १७॥ १२ | १७॥ १४२ | १८॥ +४ | २७॥ +४ |
| वृश्चिक | वि.१ | १६॥ +६ | १६॥ १६ | १४॥ ३६ | १९॥ ३ | १४॥ १३ | २२॥ | १२ ६ | १२॥ १६ | १३॥ ६ | १९ -५ | १८ -५ | १५॥ -५ | २१॥ ३ | २३॥ १ | २१॥ १२ | १७ १२ | १८ | २७ |
| | अनु.४ | २४॥ -६ | १५॥ ३६ | १९॥ -६ | २४॥ | २७॥ | २०॥ ३ | १० ३६ | १५ २६ | २०॥ ६ | २६ -५ | १८ ३५ | २१ -५ | २४॥ | २०॥ | २९॥ | २५ | २६ | ११ ३ |
| | ज्ये.४ | १२ ३६ | १८॥ १६ | २४॥ -६ | २९॥ | २२॥ १ | २२॥ | १२ ६ | २ ३१६२ | ५ ६३ | १०॥ ५३ | २० +५ | २६ -५ | ३१ | २३॥ १ | १६॥ १३ | १२ १३ | १२ ३ | २४ ० |
| धन | मू.४ | १२ ३५ | २० १५ | २४॥ +५ | १९॥ ६ | १३ १६ | १३ ६ | २१ | १५ १३ | १२ ३ | ८ ३६ | १७ ६ | २३॥ ६ | २५ +५ | १९ १५ | ९॥ १५३ | १३ ३२ | १३ ३ | २७ |
| | पू.षा.४ | २६ +५ | १८ ३५ | १८ -१२५ | १२॥ १६२ | १८ ६ | १० ३६ | १८ ३ | २७ | २७ | २३ ६ | १३ २३६ | १७ १६ | १९ -१५ | १७ ३५ | २५ +५ | २८॥ | २७ | १३ १३ |
| | उ.षा.१ | २४॥ +५ | २६ +५ | १२ १३५ | ६॥ १३६ | १०॥ २३६ | १७ २६ | २५ +२ | २७ | २८ | २३ ६ | २३ ६ | ९ १६३ | ८॥ १५३ | २४ +५ | २५ +५ | २८॥ | २८॥ | २१ १ |
| मकर | उ.षा.३ | २७ | २८॥ | १४॥ १३ | १२ १३५ | १६ २३५ | २२॥ २५+ | २० २६+ | २२ -६ | २२ -६ | २८ | २८ | १४ १३ | ४॥ १३६ | २० ६ | २१ ६ | २४॥ +५ | २४॥ ११ | १७ १५ |
| | श्र.४ | २७ | २६ | १३॥ ३२ | ११ ३५२ | १६ ३५ | २५ +५ | २२॥ -६ | २१ -६ | २२ -६ | २८ | २६ +२ | १५ ३ | ६॥ ३६ | १८॥ ६ | २० ६ | २३॥ +५ | २४॥ +५ | १९॥ ५ |
| | ध.२ | २० | ११ १३२ | २६ | २३॥ +५ | २० १५ | १२ ३५ | ९॥ ३६ | १६॥ १६ | १५ -६ | २१ | १३ ३ | २७ | १९॥ ६ | ५॥ १३६ | १२॥ १६ | १५॥ १५ | १७॥ +५ | १५॥ ३५ |
| कुम्भ | ध.२ | २० | ११ १३२ | २६ | ३०॥ | २७ १ | १९ ३ | १२ ३५ | १९ १५ | १७॥ +५ | १२॥ ६ | ४॥ ३६ | १८॥ ६ | २६॥ | ११॥ १३ | १८॥ १ | १७॥ १६ | ११ +६ | १७ ३६ |
| | श.४ | २५ ३ | २१ १ | २८ | ३२॥ | २५॥ १ | २७ | २० +५ | १२ १३५ | १३ ३५ | ६॥ ३६ | १४॥ ६ | २०॥ ६ | २६॥ | २०॥ १ | १२॥ १३ | ११॥ १३६ | ८॥ २३६ | २५ ६ |
| | पू.भा.३ | १८ ३ | २५ +२ | २० -१ | २४॥ -१ | ३१॥ | ३१॥ | २४ +५ | १७ ३५ | १८ ३५ | १२ ३६ | २० ६ | १२॥ १६ | १९॥ १ | २५॥ | १६॥ ३ | १५॥ ३६ | १५॥ ३६+ | १७॥ १६ |
| मीन | पू.भा.१ | १४॥ ३४ | २१॥ +२४ | १६॥ -१४ | १९ १ | २६ | २६ | २५॥ | १८ ३ | १८ ३ | १७ ३५ | २५ ५ | १७॥ १५ | १७॥ -२६ | २३॥ +६ | १४॥ +३६ | १६॥ ३ | १६॥ ३ | १८॥ +१ |
| | उ.भा.४ | २४॥ +४ | १६॥ ३४ | १८॥ -१४ | २१ १ | २६ | १८ ३ | १७॥ ३ | २५॥ | २८ | २७ ५ | १९ ३५ | २२ १५ | १८॥ -१६ | १६॥ ३६ | २५॥ +६ | २७॥ | २६॥ | ९॥ १३२ |
| | रे.४ | २५ +४ | २४॥ +४ | ११॥ ३४ | १४ ३ | १७ ३ | २६ | २५॥ | २४॥ | २६॥ | २५॥ ५ | २७ ५ | १४ ३५ | १३ ३६ | २३॥ +६ | २३॥ +६ | २५॥ | २६॥ | १९॥ |

| कन्या ↓ | वर → नक्षत्र चरण | तुला चि. २ | तुला स्वा. ४ | तुला वि. ३ | वृश्चिक वि. १ | वृश्चिक अनु. ४ | वृश्चिक ज्ये. ४ | धन मू. ४ | धन पू.षा ४ | धन उ.षा १ | मकर उ.षा ३ | मकर श्र. ४ | मकर ध. २ | कुम्भ ध. २ | कुम्भ श. ४ | कुम्भ पू.भा ३ | मीन पू.भा १ | मीन उ.भा. ४ | मीन रे. ४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| तुला | चि.२ | २८ ३ | २७ ० | ३४॥ | २३॥ ४ | ६॥ ३४ | २०॥ ४ | २७ | १४ १३ | २२ १ | २५ ०१ | २६॥ | २३॥ ३ | १८ ३५ | २६ +५ | १८॥ १५ | १२॥ १६ | ३॥ १३६२ | १२॥ ६ |
| | स्वा.४ | २८ | २८ | २० ०३ | ९ ०३४ | २१॥ ४ | १६॥ ४ | २३ | २७ | १९ ३ | २२ ३ | २३ ३ | २६॥ | २१ +५ | २० ५२+ | २५ +५ | १९ ६ | १९॥ ६ | १२॥ ३६ |
| | वि.३ | ३४॥ | १९ ३ | २८ ३ | १७ ३४ | १६ ०४ | २०॥ ४ | २७ | २२ १ | १४ १३ | १७ १३ | १७ ३ | ३० | २४॥ +५ | २६ +५ | २० १५ | १४ १६ | १३ १६२ | ८॥ ३६ |
| वृश्चिक | वि.१ | २२॥ ४ | ७ ३४ | १६ ३४ | २८ ३ | २७ ० | ३१॥ | २१॥ +४ | १६॥ ४१ | ८॥ १३४ | १२ १३ | १२ ३ | २५ | २४ | २५॥ | २९॥ १ | १९ १५ | १८ १५ | ९॥ ३२५ |
| | अनु.४ | ६॥ ३४ | २१॥ ४ | १६ ४ | २८ | २८ ३ | ३१ ० | १५॥ २४+ | १३॥ ३४ | २१॥ +४ | २५ | २६ | १२ ३ | ११ ३ | २१ | २४॥ | २८ +५ | १८ ३५ | २७ +५ |
| | ज्ये.४ | १९॥ ४ | १४॥ | १९॥ ४ | ३१॥ | ३० | २८ ३ | १४ ०२३४ | १६॥ १४ | १६॥ १४ | २० १ | २० | २५ | २४ | १८ ३ | १० १३ | ९॥ १३५ | २१ १५ | २१ +५ |
| धन | मू.४ | २६ | २१ | २६ | २२॥ +४ | १५॥ +२४ | १५ ३४२ | २८ ३ | २८ ०१ | २६॥ १ | २५ १४ | २५ ४ | २० ४ | २८॥ | २१॥ ३ | १०॥ १३ | १६ १३ | २५ १ | २६॥ |
| | पू.षा.४ | १३ १३ | २७ | २१ १ | १७॥ १४- | १५॥ ३४ | १७॥ १४- | २८ +१ | २८ ३ | ३४ ० | २२॥ ०४ | २३ ४ | ६ १३४ | १४॥ १३ | २३॥ १ | २८॥ | ३० | २३ ३ | ३१ |
| | उ.षा.१ | २१ १ | १९ ३ | १३ १३ | ९॥ १३४ | २३॥ +४ | १७॥ -१४ | २६॥ -१ | ३४ | २८ ३ | १६॥ ३४ | १४॥ ३४० | १५ १४ | २३॥ १ | २३॥ १ | २९॥ | ३१ | ३१ | २३ ३ |
| मकर | उ.षा.३ | २४ -१ | २२ ३ | १६ १३ | १३ ३१ | २७ | २१ १ | १६ १४ | २३॥ ४ | १७॥ ३४ | २८ ३ | २६ ३० | २६॥ +१ | १७ १४+ | १७ १४+ | २२ +४ | ३०॥ | ३०॥ | २२॥ ३ |
| | श्र.४ | २५॥ | २२ ३ | १७ ३ | १४ ३ | २७ | २२ | १५ ४ | २३ ४ | १४॥ ३४ | २५ ३ | २८ ३ | २८ ० | १८॥ ०४ | १८ +४ | २१ +४ | २८॥ | २९॥ | २२॥ ३ |
| | ध.२ | २२॥ ३ | २४॥ | २९ | २६ | १२ ३ | २६ | २१ ४ | ७ ३४१ | १६ ४१ | २६॥ १ | २७ | २८ ३ | १८॥ ३४ | २३॥ ४० | १९ १४ | २६॥ १ | १५॥ १३ | २२॥ +२ |
| कुम्भ | ध.२ | १८ ३५ | २० -५ | २४॥ -५ | २५ | ११ ३ | २५ | २९॥ | १५॥ १३ | २४॥ १ | १८ १४ | १८॥ +४ | १९॥ +४ | २८ ३ | ३३ ० | २८॥ १ | १८ १४ | ७ १३४ | १४ ४२ |
| | श.४ | २६ +५ | १९ +५ | २६ +५ | २६॥ | २१ | १९ ३ | २२॥ ३ | २४॥ १ | २४॥ १ | १८ १४ | १८॥ +४ | २४॥ +४ | ३३ | २८ ३ | १९ ० | ८॥ ० | १७ १४ | १६ ४ |
| | पू.भा.३ | १८॥ १५ | २६ +५ | २० +१५ | २०॥ १ | २६॥ | ११ १३ | १५॥ १३ | २९॥ | ३०॥ | २४ +४ | २३॥ +४ | २० -१४ | २८॥ -१ | १९ १३ | २८ ३ | १७॥ ३६ | २२॥ ०४ | २० ४२ |
| मीन | पू.भा.१ | ११॥ १६ | १९ ६ | १३ १६ | १९ १५- | २५ +५ | ९॥ १३५ | १५ १३ | २९ | ३० | २९॥ | २८॥ | २५॥ १ | १७ १४ | ७॥ १३४ | १६॥ ३४ | २८॥ ३ | ३३ ० | ३०॥ +२ |
| | उ.भा.४ | २॥ १३६२ | १९॥ ६ | १२ १६२ | १८ १५२ | १९ ३५ | २१ -१५ | २४ ०१ | २२ ३ | ३० | २९॥ | २९॥ | १४॥ १३ | ६ १३४ | १६ १४ | २१॥ ४ | ३३ | २८ ३ | ३५ ० |
| | रे.४ | १२॥ ६ | ११॥ ३६ | ४॥ ३६ | १०॥ ३५ | २७ +५ | २२ +५ | २६॥ | २९ | २१ ३ | २०॥ ३ | २१॥ ३ | २२॥ -२ | १४ ४२ | १६ ४ | १८ ४२ | २९॥ +२ | ३४ | २८ ३ |

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह हैं वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह हैं और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखे है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# ताराबल-बोधिनी तालिका

| जन्म नक्षत्र | अश्विनी | भरणी | कृत्तिका | रोहिणी | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु | पुष्य | आश्लेषा | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशाखा | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनिष्ठा | शतभिषा | पू.भा. | उ.भा. | रेवती |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जन्मर्क्ष | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती |
| कर्मर्क्ष | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले |
| आधान | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा |
| विपत्कर | कृत्ति. | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धन. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी |
| | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. |
| | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.फा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. |
| प्रत्यरि | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी |
| | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त |
| | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण |
| नैधन (वध) | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा |
| | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अस्वि. | भरणी | कृति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति |
| | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. |
| संपत्कर | भरणी | कृत्ति. | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. |
| | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा |
| | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल |
| क्षेम्य | रोहि. | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. |
| | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. |
| | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. |
| साधक | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहि. | मृग. |
| | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा |
| | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्ये. | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. |
| मैत्र | पुष्य | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. |
| | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. |
| | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. |
| अतिमैत्र | आश्ले | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य. |
| | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृत्ति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन. | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. |
| | रेवती | अश्वि. | भरणी | कृति. | रोहिणी | मृग. | आर्द्रा | पुन | पुष्य | आश्ले. | मघा | पू.फा. | उ.फा. | हस्त | चित्रा | स्वाति | विशा. | अनु. | ज्येष्ठा | मूल | पू.षा. | उ.षा. | श्रवण | धनि. | शत. | पू.भा. | उ.भा. |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## दिन का चौघड़िया

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |
| चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग |
| काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर |
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत |
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |

## रात का चौघड़िया

| रवि | सोम | मंगल | बुध | गुरु | शुक्र | शनि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |
| अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग |
| चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ |
| रोग | लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत |
| काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर |
| लाभ | शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग |
| उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ | शुभ | चर | काल |
| शुभ | चर | काल | उद्वेग | अमृत | रोग | लाभ |

## यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

**दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पूठ।**
**सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥**

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सन्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

**दिशाशूल**—सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

## दिशाशूल चक्रम्

उत्तर
बुध मंगल

पश्चिम — रवि शुक्रवार
पूर्व — सोम शनिवार

दक्षिण
गुरुवार

| दिशा | चन्द्रमा का वास | दिशाशूल | समय शूल |
|---|---|---|---|
| पूर्व दिशा | मेष, सिंह, धनु | सोम, शनि | प्रातःकाल |
| दक्षिण दिशा | वृष, कन्या, मकर | गुरु | मध्याह्न |
| पश्चिम दिशा | मिथुन, तुला, कुम्भ | रवि, शुक्र | सन्ध्या काल |
| उत्तर दिशा | कर्क, वृश्चिक, मीन | बुध, मंगल | अर्धरात्रि |

**योगिनी वास**— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

**कालराहु वास**—शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

## योगिनी वास

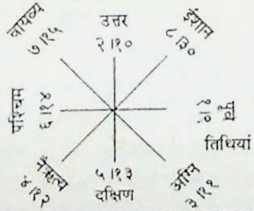


## कालराहु चक्रम्

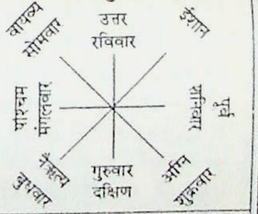


| दिशा | योगिनी वास | कालराहु वास |
|---|---|---|
| पूर्व दिशा | १।९ तिथ्य | शनिवार |
| अग्नि कोण | ३।११ | शुक्रवार |
| दक्षिण दिशा | ५।१३ | गुरुवार |
| नैऋत्य कोण | ४।१२ | बुधवार |
| पश्चिम दिशा | ६।१४ | मंगलवार |
| वायव्य कोण | ७।१५ | सोमवार |
| उत्तर दिशा | २।१० | रविवार |
| ईशान कोण | ८।३० | — |

**समय शूल**— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

### पन्था राहु चक्र

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धर्म के नक्षत्र | अश्वि. | पुष्य | ऽश्ले. | वि. | ऽनु. | धनि. | शत. |
| अर्थ के नक्षत्र | भरणी | पुन. | मघा | स्वा. | ज्ये. | श्रवण | पू.भा. |
| काम के नक्षत्र | कृत्तिका | आर्द्रा | पू.फा. | चित्रा | मूल | अभि. | उ.भा. |
| मोक्ष के नक्षत्र | रोहिणी | मृग. | उ.फा. | हस्त | पू.षा. | उ.षा. | रेवती |

**पन्था विचार**—यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य- चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

### चक्रम्

| वार | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खाने के पदार्थ | घृतयुक्त पान | चंदन | गुड़ | तिल | दही | दूध | तिल |

### भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ८ | ११ | १५ | ३ | ७ | १० | ४ | मासां तिथीनाम् |
| १ | अ. | उ. | ने. | ई. | द. | वा. | पृ. | मासां तिथीनाम् |
| ५ | २ | ७ | ४ | ८ | ३ | ६ | १ | एषुयामेष्वादी |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | निष्टेर्मुखष५कृशु |
| ८ | १ | ६ | ३ | ७ | २ | ५ | ४ | चषुयामेष्वन्त्यम् |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | घटीत्रयंपुच्छंशुभम् |

### द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

| | |
|---|---|
| (क्रूर) वार | रविवार, मंगलवार, शनिवार |
| (भद्रा) तिथि | २-७-१२ |
| विषम चरण वाले नक्षत्र | कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा. |
| द्विपाद नक्षत्र योग बनता है। | मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर |

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

## यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये. मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २. ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

## यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

## अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

## यात्रा में अपशकुन

विडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

## यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

## गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

| पौष | माघ | फाल्गु. | चैत्र | वैशा. | ज्येष्ठ | आषा. | श्राव. | भाद्र. | आश्वि. | कार्ति. | मार्ग. | मासों की तिथियों का फल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ |

| प्रहर १ | प्रहर २ | प्रहर ३ | प्रहर ४ | पूर्व दिशा | दक्षिण दिशा | पश्चि. दिशा | उत्तर दिशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अर्थ | सुख | शोक | सुख | सुख | क्लेश | भीति | द्र-लाभ |
| भय | क्लेश | सुख | सुख | शून्य | नेष्ट | दारिद्र | समता |
| लाभ | सुख | सुख | हानि | क्लेश | दुख | इष्टला | धन प्रा. |
| क्लेश | लाभ | क्लेश | विना | लाभ | सुख | मंगल | श्री.प्रा. |
| संकट | क्लेश | भाग्य | सुख | लाभ | द्रव्य | धन | सुख |
| संकट | क्लेश | भय | अर्थ | भीति | लाभ | मृत्यु | अर्थ |
| विना | लाभ | सुख | सुख | लाभ | कष्ट | द्रव्यला. | सुख |
| शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | कष्ट | सुख | क्लेश | सुख |
| लाभ | भाग्य | मित्र | मित्र | सुख | लाभ | का.सि. | कष्ट |
| लाभ | संपूर्ण | मरण | कुशल | क्लेश | कष्ट | अर्थ | श्री.प्रा. |
| मरण | अर्थ | कुशल | मरण | मृत्यु | लाभ | द्र.लाभ | शून्य |
| मरण | सुख | सुख | सुख | शून्य | सुख | मृत्यु | अतिक. |

### योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥ दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नेऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection



स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

## भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० कोस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

## आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ घट् याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे षव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश ० नाड़िकाश्चटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

## काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

## गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

## सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

| अग्रपादे पृष्ठपाद | | | पृष्ठे | द.कु. | पुच्छे | वामकुक्षौ | मुखे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ४ | ३ |
| दाह | नाक | स्थिर | श्री | नाभ | नाश | नेष्ट | पीड़ा |

## द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

## सूर्य भात देहली चक्र

| शिरसि | कोण | शाखाया | देहल्यां | मध्य | स्थानानि |
|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ८ | ८ | ३ | ४ | नक्षत्राणि |
| लक्ष्मी | उद्वेग | देहसौख्य | मृत्यु | सौख्य | फलम् |

## जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

## कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

| | | |
|---|---|---|
| इशान्ये पुष्टि: | पूर्वे ऐश्वर्य्यम् | अग्नेये पुत्रनाश: |
| उत्तरे सुखम् | मध्येऽर्थनाश: | दक्षिणे स्त्रीनाश |
| वायव्ये शत्रुभयम् | पश्चिमे धनलाभ: | नैऋत्ये स्वामीनाश |

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

## सूर्यभात्कूप जल विचारः

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| स्वादु | खंडित | स्वादु | क्षय | स्वादु | क्षार | शिक्षा | मिष्ठ | क्षार |
| जल | जल | जल | जल | जल | जल | जल | जल | जल |

## राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

## खात चक्रम्

| इशान्ये | वायव्ये | नैऋत्ये | आग्नेये | राहोर्मुखम् |
|---|---|---|---|---|
| १२।१।२ | ३।४।५ | ६।७।८ | ९।१०।११ | देवालये |
| ५।६।७ | ८।९।१० | ११।१२।१ | २।३।४ | गेहविधौ |
| १०।११।१२ | १।२।३ | ४।५।६ | ७।८।९ | जलाशये |
| आग्नेय | ईशाने | वायव्ये | नैऋत्ये | कोणा: |
| खात: शुभ | खात: शुभ | खात: शुभ | खात: शुभ | खात: शुभ |

## नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

## सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

| मुख | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | गर्भ | गुदे | कंठे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ |
| अग्निदाह | उद्वेग | लाभ | कीर्ति: | कलह | नाश | स्थिर | स्थिर |

## दुकान खोलने का मुहूर्त

**वाणिज्य कर्म**— अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

**बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त**— अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

**मशीनरी चालू करना**— आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ हैं।

**मुकद्दमा दायर करना**— ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

**ऋण लेने का मुहूर्त्त**— अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

## हट्ट चक्र

| नक्षत्र | २ | २ | ४ | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फल | सौख्य | विक्रयनाश | धननाशे | सुख | श्रेष्ठ | क्षोभ | हानि | शुभ |

## नौकरी का मुहूर्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम या स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

**हल प्रवाहनम्**— अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

## सूर्य भात हल चक्रम्

| ३ | ३ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ३ | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | फलम् |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

## चक्रम्

| वार | र. | चं. | मं. | बु. | गु. | शु. | श. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| खाने के पदार्थ | घृतयुक्त पान | चंदन | गुड़ | तिल | दही | राई | तिल |

## भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ८ | ११ | १५ | ३ | ७ | १० | ४ | मासां तिथीनाम् |
| १ | अ. | ऊ. | ने. | ई. | द. | वा. | पृ. | मासां तिथीनाम् |
| ५ | २ | ७ | ४ | ८ | ३ | ६ | १ | एषुयामेष्वादी |
| ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | ५ | विष्टेर्मुखघ५कृशु |
| ८ | १ | ६ | ३ | ७ | २ | ५ | ४ | चषुयामेष्वन्त्यम् |
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | घटीत्रयंपुच्छंशुभम् |

## द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

| | |
|---|---|
| (क्रूर) वार | रविवार, मंगलवार, शनिवार |
| (भद्रा) तिथि | २-७-१२ |
| विषम चरण वाले नक्षत्र | कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा. |
| द्विपाद नक्षत्र योग बनता है। | मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर |

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

## यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

## यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, श्रृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

## अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

## यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

# यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

# गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

| पौष | माघ | फाल्गु. | चैत्र | वैशा. | ज्येष्ठ | आषा. | श्राव. | भाद्र. | आश्वि. | कार्ति. | मार्ग. | मासों की तिथियों का फल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो |
| २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे |
| ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे |
| ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे |
| ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें |
| ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे |
| ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A |
| ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो |
| ९ | १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो |
| १० | ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B |
| ११ | १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं |
| १२ | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ |

| प्रहर १ | प्रहर २ | प्रहर ३ | प्रहर ४ | पूर्व दिशा | दक्षिण दिशा | पश्चि. दिशा | उत्तर दिशा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अर्थ | सुख | शोक | सुख | सुख | क्लेश | भीति | द्र-लाभ |
| भय | क्लेश | सुख | सुख | शून्य | नेष्ट | दारिद्र | समता |
| लाभ | सुख | सुख | हानि | क्लेश | दुख | इष्टला | धन प्रा. |
| क्लेश | लाभ | क्लेश | विना | लाभ | सुख | मंगल | श्री.प्रा. |
| संकट | क्लेश | भाग्य | सुख | लाभ | द्रव्य | धन | सुख |
| संकट | क्लेश | भय | अर्थ | भीति | लाभ | मृत्यु | अर्थ |
| विना | लाभ | सुख | सुख | लाभ | कष्ट | द्रव्यला. | सुख |
| शून्य | शून्य | शून्य | शून्य | कष्ट | सुख | क्लेश | सुख |
| लाभ | भाग्य | मित्र | मित्र | सुख | लाभ | का.सि. | कष्ट |
| लाभ | संपूर्ण | मरण | कुशल | क्लेश | कष्ट | अर्थ | श्री.प्रा. |
| मरण | अर्थ | कुशल | मरण | मृत्यु | लाभ | द्र.लाभ | शून्य |
| मरण | सुख | सुख | सुख | शून्य | सुख | मृत्यु | अतिक. |

## योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥
दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection



स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

## भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें षट दिन पृथ्वी सोय॥

## आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ घट्याश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषव७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाड़िकाघटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

## काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

## गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

## सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

| अग्रपादे पृष्ठपाद | | | पृष्ठे | द.कु. | पुच्छे | वामकुक्षौ | मुखे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ४ | ४ | ३ | ४ | ३ | ४ | ३ |
| दाह | नाक | स्थिर | श्री | नाभ | नाश | नेष्ट | पीड़ा |

## द्वारशाखा स्थापन मुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

## सूर्य भात देहली चक्र

| शिरिसि | कोण | शाखाया | देहल्यां | मध्य | स्थानानि |
|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ८ | ८ | ३ | ४ | नक्षत्राणि |
| लक्ष्मी | उद्वेग | देहसौख्य | मृत्यु | सौख्य | फलम् |

## जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

## कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहृतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

| | | |
|---|---|---|
| इशान्ये पुष्टि: | पूर्वे ऐश्वर्य्यम् | अग्नेये पुत्रनाश: |
| उत्तरे सुखम् | मध्येऽर्थनाश: | दक्षिणे स्त्रीनाश |
| वायव्ये शत्रुभयम् | पश्चिमे धनलाभ: | नैऋत्ये स्वामीनाश |

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

## सूर्यभात्कूप जल विचारः

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ |
| स्वादु | खंडित | स्वादु | क्षय | स्वादु | क्षार | शिक्षा | मिष्ठ | क्षार |
| जल | जल | जल | जल | जल | जल | जल | जल | जल |

## राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

## खात चक्रम्

| इशान्ये | वायव्ये | नैऋत्ये | आग्नेये | राहोर्मुखम् |
|---|---|---|---|---|
| १२।१।२ | ३।४।५ | ६।७।८ | ९।१०।११ | देवालये |
| ५।६।७ | ८।९।१० | ११।१२।१ | २।३।४ | गेहविधौ |
| १०।११।१२ | १।२।३ | ४।५।६ | ७।८।९ | जलाशये |
| आग्नेय | ईशाने | वायव्ये | नैऋत्ये | कोणा: |
| खात: शुभ | खात: शुभ | खात: शुभ | खात: शुभ | खात: शुभ |

## नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होतत है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

## सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

| मुख | पूर्व | दक्षिण | पश्चिम | उत्तर | गर्भ | गुदे | कंठे |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | ४ | ४ | ४ | ४ | ४ | ३ | ३ |
| अग्निदाह | उद्वेग | लाभ | कीर्ति: | कलह | नाश | स्थिर | स्थिर |

## दुकान खोलने का मुहूर्त्त

**वाणिज्य कर्म**—अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

**बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त**—अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

**मशीनरी चालू करना**—आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

**मुकद्दमा दायर करना**—४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

**ऋण लेने का मुहूर्त्त**—अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

## हट्ट चक्र

| नक्षत्र | २ | २ | ४ | ४ | ३ | ४ | ४ | ४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फल | सौख्य | विक्रयनाश | धननाशे | सुख | श्रेष्ठ | क्षोभ | हानि | शुभ |

## नौकरी का मुहूर्त्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

**हल प्रवाहनम्**—अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

## सूर्य भात हल चक्रम्

| ३ | ३ | ३ | ५ | ३ | ५ | ३ | ३ | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | फलम् |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



### अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द बुध वृह शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ एषु तिथिषु शुभेलग्ने शुभस्यात्।

### राहु भात बीज वापन चक्रम्

| ८ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | १ | ३ | ४ | नक्षत्र |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अशु | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | फलम् |

### अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

### अथ खेतों से अन्न नि[illegible] का मुहूर्त

रोहिणी, मघा, पू.फा., उ.फा. अ[illegible] मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह, शुक्र, वारेषु २, ३, ५, [illegible] ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

### अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

### अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

### अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

### अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

### अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेषु शुभंस्यात्।

### अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

### अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

### अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

### अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

### अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

| सूर्य | बुध | शुक्र | शनि | चन्द्र | मंगल | बृह. | राहु | केतु | ग्रह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | ३ | नक्षत्र |
| शुभ | शुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | शुभ | अशुभ | अशुभ | फल |

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे ह णदे वाननामदितर्व जपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालर्विभावगः पूर्वार्द्धेदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्वणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराहे च रौहणं न तुलच्चयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्रप्रतिविज्ञात-स्तछशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मृतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि.। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ।

**ऋण देना या धन व्यापार में लगाना**— स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

**बंटवारे का मुहूर्त**— अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

**वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त**— चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

**मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त**— तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

**मन्त्री पद की शपथ लेना**— उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

**देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त**— विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठि, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

**प्रेत क्रिया मुहूर्त**— अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

| नाम मुहूर्त्त | तिथि | वार | नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण |
|---|---|---|---|
| सीमन्तोन्नयन मुहूर्त | १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ | रवि गुरु मंगल | मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन, हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है। |
| पुंसवन मुहूर्त | २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ | मंगल गुरु शु.रवि | श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे। |
| सूतिका स्नान | १, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ | सू.मं. गुरु | रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो। |
| नामकरण | १, २, ३, ५, ७, १०, १३ | चन्द्र बुध गु.शु. | अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ। |
| स्तनपान | शुभ | शु.भु. चं.गु. | अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्टा, शतभिषा, रेवती। |
| कर्ण वेध | १, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५ | चन्द्र बुध गु.शु | अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु तो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो। |
| मुण्डन | २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ | चन्द्र बुध गु.शु. | अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ। |
| विद्यारम्भ | ५, ६, २, ३, ११, १२, १० | र.गु. शु. | अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा। |
| यज्ञोपवीत | शु.प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५ | सू.चं. बुध गुरु शुक्र | अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे। |
| जल पूजा कुआं पूजा | शुभ | चं.बु. गुरु | मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र, पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें। |
| सगाई/वाग्दान | शुभ | शुभ | तीनों पूर्वा, तीनों उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव. |
| द्विरागमन (गौना) (मुकलावा) | शुभ | चन्द्र बुध गुरु शुक्र | तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं। |
| पुनर्विवाह | शुभ | सू.मं. गु.शु. | अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हो और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं। |
| गन्धर्व विवाह | शुभ | सू.मं. शनि | अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषोऽपि नास्ति। |
| बीज बोने का मुहूर्त | २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ | चं.बु. गु.शु. | अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है। |
| फसल काटने का मुहूर्त | २,३,५,६,७,८,१०, ११, १२, १३, १५ | सू.चं. बु.गु.शु. | भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है। |
| कुआं व ट्यूबेल | शुभ | बु.गु. शु.चं. | रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। |

| नाम मुहूर्त्त | तिथि | वार | नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण |
|---|---|---|---|
| दुकान | २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ | सू.चं. बु.गु. शु.श. | अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है। |
| बड़े-बड़े व्यापार करना | २, ३, ५, ७, ११, १३ | बु.गु. शु. | पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो। |
| ऋण का लेन देन करना | | | रवि, मंगलवार, संक्रांति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये। |
| बही खाता | २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ | सू.चं. बु.गु.श. | मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है। |
| क्रय खरीदना | शुभ | शुभ | शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं। |
| विक्रय बेचना | शुभ | शुभ | भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है। |
| नौकरी करने का मुहूर्त | २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ | सू.बु. गु.शु. | अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं। |
| कार्य सीखना | २, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५ | च.बु. गु.शु. | अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती। |
| दत्तक (पुत्र गोद लेना) | २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५ | सू.मं. गु.श. | अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं। |
| गृह निर्माण | २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ | चन्द्र बुध गु.शु. शनि | रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए। |
| नूतन गृह प्रवेश | २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ | चन्द्र बुध गु.शु. शनि | रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम है। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है। |
| जीर्ण गृह प्रवेश | २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ | चन्द्र बुध गु.शु. | रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। वैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें। |
| मन्त्र सिद्धि मुहूर्त | २, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५ | सू.चं. बु.गु.शु. | अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं। |
| मुकद्दमा दायर करना | ३, ५, ८, १०, १३, १५ | र.बु. गुरु शुक्र | भरणी, आर्द्रा, श्ले., मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो। |
| वाहन लेना | शुभ | चं.बु. गु.शु. | अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत, रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो। |
| सर्वारम्भ मुहूर्त | शुभ | शुभ | लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है। |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

| वार | हो. १ | हो. २ | हो. ३ | हो. ४ | हो. ५ | हो. ६ | हो. ७ | हो. ८ | हो. ९ | हो. १० | हो. ११ | हो. १२ | हो. १३ | हो. १४ | हो. १५ | हो. १६ | हो. १७ | हो. १८ | हो. १९ | हो. २० | हो. २१ | हो. २२ | हो. २३ | हो. २४ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| र. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. |
| चं | चं | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. |
| मं. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. |
| बु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. |
| गु. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. |
| शु. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. |
| श. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. | र. | शु. | बु. | चं. | श. | गु. | मं. |

**बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियम:—** किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

### नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

| अ इ उ ए | क ख ग घ ङ | च छ ज झ ञ | ट ठ ड ढ ण | त थ द ध न | प फ ब भ म | य र ल व | श ष स ह |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| गरुड़ | मार्जार | सिंह | श्वान | सर्प | मूषक | मृग | मेढ़ा |

### कर-योग

**कराग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥**

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गोविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

### शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

## किस होरा में कौन सा कार्य करें?

**रवि की होरा**— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

**चन्द्र (सोम) की होरा**— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

**मंगल की होरा**— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

**बुध की होरा**— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

**गुरु की होरा**— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

**शुक्र की होरा**— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

**शनि की होरा**— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

### सर्व कार्येषु सप्तशलाका चक्रम्

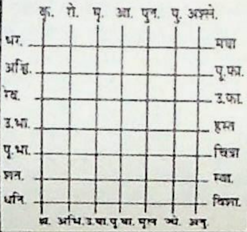


### विवाहे पंचशलाका चक्रम

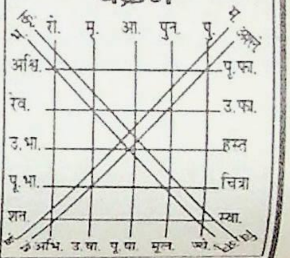


CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

# गृह-भूमि विचार ( गृहवास्तु )

**शुभाशुभ भूमि विचार** — जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

**नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल** — नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

**मण्डलेश का निर्णय** — गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

**दूसरा प्रकार** — लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

**चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार** — चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

**शिलान्यास** — पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

**राशि-द्वार का निर्णय** — ब्राह्मण वर्ण, ( कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों ) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण ( मेष, सिंह, धनु राशि वालों ) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण ( वृष, कन्या, मकर, राशि वालों ) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण ( मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों ) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

**गृह-द्वार का निर्णय** — मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

**देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध** — ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

**दरवाजों ( किंवाड़ों ) का फल** — कपाट ( दरवाजा ) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

## लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

## जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

## लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार — इन योगों में पैदा हुई कन्या विषकन्या कहलाती है।

## ग्रह-गति से वैधव्य ( विषकन्या ) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

## स्त्री के बांझ होने का योग

१ — जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२ — जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३ — जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४ — जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

## अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परे, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

## पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाञ्च काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामत: जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसृत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रत्नारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचात् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

**आई०ए०एस० अधिकारी**—यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

**न्यायाधीश होने का योग**—यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

**व्यवसायी होने का योग**—यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

**पुलिस अधिकारी**—मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

**इंजीनियर होने का योग**—यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



**डॉक्टर होने का योग**—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

**शिक्षक होने का योग**—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

**अभिनेता-अभिनेत्री योग**—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और ढलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

**साहित्यकार**—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ट कवि बनता है।

**विवाह में अड़चन**—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

**अनमेल विवाह का योग**—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

**सुखहीन विवाह का योग**—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

**तलाक होने के योग**—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

## हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

## अन्य अशुभ योग-

**बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु**—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

**हत्यारा होने का योग**—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

**विदेश में मृत्यु**—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

**मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना**—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

**शराबी होने का योग**—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

**अकाल मृत्यु का योग**—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

## हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

**वर्गाकार मुखाकृति**—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मनमौजी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

**वृत्ताकार मुखाकृति**—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

**सूच्याकार मुखाकृति**—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हाँ, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

**अंडाकार मुखाकृति**—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

**उल्टे घड़े समान मुखाकृति**—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं—

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ट भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

## मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

## नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, बैढूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

## स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं और अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृषिट न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

### धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

### गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

### सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

### भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

### मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्मा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा— प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

### प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुंचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

### प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

### रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

### बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्ठेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

### अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

### आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

### अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दुष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

### अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

### नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

## मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

| नक्षत्र | ध्रुवा | योग | ध्रुवा | वस्तु | ध्रुवा |
|---|---|---|---|---|---|
| अश्विनी | १७ | विष्कुम्भ | १३ | धान्य | ७७ |
| भरणी | ५ | प्रीति | १२ | कनक | १०० |
| कृत्तिका | ३२ | आयुष्मान | ४७ | ज्वार | १३३ |
| रोहिणी | १४ | सौभाग्य | ५९ | मूंग | ४१ |
| मृगशिर | ४ | शोभन | ३६ | चणा | ३५ |
| आर्द्रा | १३ | अतिगंड | ४७ | झोना | ७५ |
| पुनर्वसु | २८ | सुकर्मा | १८ | तोरी | ७७ |
| पुष्य | ३६ | धृति | ४४ | तेल | ३९ |
| अश्लेषा | ३६ | शूल | १३ | घृत | ९९ |
| मघा | १५ | गंड | २५ | खाण्ड | ९९ |
| पूर्वाफाल्गुनी | ३ | वृद्धि | १७ | गुड़ | ४७ |
| उत्तराफाल्गुनी | ३१ | ध्रुव | २२ | शक्कर | १०१ |
| हस्त | १८ | व्याघात | २५ | कपास | १२९ |
| चित्रा | २५ | हर्षण | २५ | रुई | ४४ |
| स्वाति | १४ | वज्र | १४ | कांस्य | ३७ |
| विशाखा | २४ | सिद्धि | २२ | वस्त्र | १०९ |
| अनुराधा | २९ | व्यतीपात | १३ | स्वर्ण | ९६ |
| ज्येष्ठा | ३७ | वरीयान | ३९ | हल्दी | ७३ |
| मूल | १८ | परिधि | १५ | चंदन | १८७ |
| पूर्वाषाढ़ | ७३ | शिव | १३ | चांदी | ८१ |
| उत्तराषाढ़ | ३० | सिद्धि | १९ | मिर्च | ६८ |
| श्रवण | २५ | साध्य | १२ | पित्तल | ९९ |
| धनिष्ठा | २३ | शुभ | २५ | जौ | ५०७ |
| शतभिषा | २४ | शुक्ल | २२ | कस्तू. | १३४ |
| पूर्वाभाद्रपद | ९ | ब्रह्म | १३ | | |
| उत्तराभाद्रपद | ४१ | ऐन्द्र | २७ | | |
| रेवती | २८ | वैधृति | २६ | | |

| वार | ध्रुवा |
|---|---|
| रविवार | २१ |
| सोमवार | १५ |
| मंगलवार | १२ |
| बुधवार | १२ |
| गुरुवार | १३ |
| शुक्रवार | १४ |
| शनिवार | ०० |
| **राशि** | **ध्रुवा** |
| मेष | ३ |
| वृष | २२ |
| मिथुन | २२ |
| कर्क | २५ |
| सिंह | १९ |
| कन्या | १७ |
| तुला | २० |
| वृश्चिक | १३ |
| धन | १६ |
| मकर | १९ |
| कुम्भ | २३ |
| मीन | १४ |
| **तिथि** | **ध्रुवा** |
| १ | १ |
| २ | २ |
| ३ | ३ |
| ४ | ४ |
| ५ | ५ |
| ६ | ६ |
| ७ | ७ |
| ८ | ८ |
| ९ | ९ |
| १० | १० |
| ११ | ११ |
| १२ | १२ |
| १३ | १३ |
| १४ | १४ |
| १५ | १५ |

**मेष**—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
**वृष**—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिप, बेल
**मिथुन**—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
**कर्क**—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
**सिंह**—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
**कन्या**—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
**तुला**—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
**वृश्चिक**—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
**धनु**—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
**मकर**—कनीर, सकुट, मजीठ, जर्मीकन्द
**कुंभ**—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
**मीन**—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेषु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

**नक्षत्रों के पदार्थ**—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले, रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

### ३२ बत्तीसा यंत्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८ | १५ | २ | ७ |
| ६ | ३ | १२ | ११ |
| १४ | ९ | ८ | १ |
| ४ | ५ | १० | १३ |

| प्र. सं. | प्रश्न | अधिपति देवता |
|---|---|---|
| १. | मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं? | श्री भैरव |
| २. | मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत? | शिव |
| ३. | मेरा भाग्योदय कब होगा? | कृष्ण |
| ४. | मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं? | राम |
| ५. | मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं? | सीता |
| ६. | खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि? | राधा |
| ७. | मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं? | लक्ष्मी |
| ८. | क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी? | विष्णु |
| ९. | मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं? | नारायण |
| १०. | मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं? | दामोदर |
| ११. | क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है? | इन्द्र |
| १२. | मेरा विवाह होगा अथवा नहीं? | गणेश |
| १३. | अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं? | अग्नि |
| १४. | मेरे स्वप्न का फल कैसा? | वायु |
| १५. | क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा? | वरुण |
| १६. | मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि? | यम |
| १७. | क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी? | कुबेर |
| १८. | मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी? | सूर्य |
| १९. | मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं? | चन्द्र |
| २०. | मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं? | मंगल |
| २१. | प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा? | बुध |
| २२. | क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा? | बृहस्पति |
| २३. | मेरे भाईयों से कैसे निभेगी? | शुक्र |
| २४. | क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा? | शनि |
| २५. | मेरे लिए यह वर्ष कैसा है? | राहु |
| २६. | मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा? | केतु |
| २७. | अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री? | मित्र |
| २८. | क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी? | पृथ्वी |
| २९. | मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी? | काल |
| ३०. | क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा? | शेष |
| ३१. | प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं? | यक्ष |
| ३२. | मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं? | तक्षक |

### १. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

### २. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

### ३. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS


७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुंआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

**४. राम**

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

**५. सीता**

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकद्दमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होने में देरी होगी।
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

**६. राधा**

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकद्दमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

**७. लक्ष्मी**

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

**८. विष्णु**

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

**९. नारायण**

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

**१०. दामोदर**

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

**११. इन्द्र**

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

**१२. गणेश**

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

**१३. अग्नि**

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

## १४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

## १५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

## १६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।

## १७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

## १८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

## १९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विस्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

## २०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नही लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

## २१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

## २२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं हैं।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

### २३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

### २४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ्य लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

### २५. राहु

१. यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. कर्ज मिल जाएगा।
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

### २६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

### २७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

### २८. पृथ्वी

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

### २९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असम्भव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

### 30. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

### ३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कृआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४ मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५ चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

### 32. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# रमल प्रश्नावली

इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बना कर उस पर १. २. ३. ४ और खुदवा लें, फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें उसका जो नम्बर बने, उसी नम्बर पर फल देखें यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अनामिका अंगुली रखवा कर उसका फल देखें।

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १११ | १३१ | २११ | २३१ | ३११ | ३३१ | ४११ | ४३१ |
| ११२ | १३२ | २१२ | २३२ | ३१२ | ३३२ | ४१२ | ४३२ |
| ११३ | १३३ | २१३ | २३३ | ३१३ | ३३३ | ४१३ | ४३३ |
| ११४ | १३४ | २१४ | २३४ | ३१४ | ३३४ | ४१४ | ४३४ |
| १२१ | १४१ | २२१ | २४१ | ३२१ | ३४१ | ४२१ | ४४१ |
| १२२ | १४२ | २२२ | २४२ | ३२२ | ३४२ | ४२२ | ४४२ |
| १२३ | १४३ | २२३ | २४३ | ३२३ | ३४३ | ४२३ | ४४३ |
| १२४ | १४४ | २२४ | २४४ | ३२४ | ३४४ | ४२४ | ४४४ |

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनोकामना तुम्हारी।
११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे।
११३ होत काम में हुआ अंधेरा, बैरी पहुंच गया है तेरा।
११४ झटपट करो देर नहीं लाओ, यह अवसर फेर नहि पाओ।
१२१ जो तुम मन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई।
१२२ आगे विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी।
१२३ संकट हटे सर्व सुख आया, दिन-दिन दुगुनां बढ़े माया।
१२४ वा शुभकाम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती।
१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास जाय तू जिसके।
१३२ होगी फतेह देर नहि लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ।
१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरू गोविंद से ध्यान लगाओ।
१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीखे नहिं म्हाने।
१४१ विपतियां बीत गयी सब पाछे, अब तो दिन आवेंगे आछे।
१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है बैरी।
१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई।
१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये थारी।
२११ जर जमीन होवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवे।
२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई।
२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, तिगरी लाग रही है थारी।
२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा।
२२१ कितना ही गुणकर मनमाही, यश तुमको मिलने का नाही।
२२२ होगी फतह देर नहिं लाओ, रविवार को व्रत बनाओ।
२२३ संकट दीख डरो क्यों भाई, ईश्वर थारी करे सहाई।
२२४ धर्म हार धन कोई खाओ, मन अपने में क्यों घबराओ।
२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई।
२३२ रस्ते में जो भूखा टोहवो, भोजन के देके सोवो।
२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धन धनी बना वही नाथ।
२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं।
२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले।
२४२ धीरज धरि रहो उर माही, गई वस्तु घर आवे नाहीं।
२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही थारी करे सहाई।
२४४ उदय पाप हो गये अब सारे, कर्म विपाक देखिल्यो थारे।
३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रहो है वैरी।
३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, कर ले जाप नहीं दुख भरना।
३१३ जो तुम मन में नई उपाई, होगा काम ढील से भाई।
३१४ करि कुछ दान वचन सुन मेरा, संकट दूर हो गया तेरा।
३२१ यो तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई।
३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटे होय सुखदाई।
३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए।
३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखै लाज सदाई।
३३१ जस तुमको मिलना नहिं भाई, चाहे जितनी करो भलाई।
३३२ कर ले काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना।
३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे, नित नये मंगल मोद भरोगे।
३३४ जिस नर की तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वासा।
३४१ तुम जानो अपना सा मन की, बुद्धि बदलि रही उस तन की।
३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं, घात ग्रह बिन होता नाहीं।
३४३ करिले यतन काम है तीका, अब तो फिक्र मिटेगा जीका।
३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट वेग नशाई।
४११ चुपका बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं।
४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई।
४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई।
४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई।
४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई।
४२२ अपना मन में तुम्ही विचारो, भूलि गये सो बेगि संभारो।
४२३ ये है दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाय लेय छुटवाई।
४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे अनआया।
४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना।
४३२ वो तेरी सब भली करेगा, उस ही से सब काम सरेगा।
४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होते सुखदाई।
४३४ धीरज धरो फिकर तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो।
४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे।
४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा।
४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकी करो मनुहारी।
४४४ ठहर-ठहर कर जागें जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती।

# अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रात: काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत् ॥ सायंकाले वदेन्द्य: रात्रौतु देवतां वदेत् ॥१ ॥

| ध्वज | धूम्र | सिंह | श्वान | वृष | खग | गज | ध्वांग | ध्वजादि अष्टकवर्गा: |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अइउएओ | कखगघङ | चछजझञ | टठडढण | तथदधन | पफबभम | यरलव | शषसह | उच्चारित प्रश्नाक्षराणि |
| अस्ति | नास्ति | अस्ति | नास्ति | अस्ति | नास्ति | अस्ति | नास्ति | सत्यासत्य प्रश्न निर्णय: |
| धातु | धातु | मूल | जीव | जीव | जीव | मूल | जीव | धातुमूल जीव ज्ञान |
| कुशल | रोग | सुख | कष्ट | सुख | कष्ट | सुख | कष्ट | प्रवासी सुख दुःख |
| स्थिर | महाकष्ट | चंचल | चंचल | महाकष्ट | कष्ट | सुख | कष्ट | प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम् |
| समीप | समीप | दूरस्थ | पुनर्गत | मार्गस्थ | मार्गस्थ | दूरस्थ | पुनर्गत | प्रवासी रदनावधि ज्ञानम् |
| पत्र | अस्ति | फल | काष्ठ | धान्य | तृण | जीव | पुष्प | मुष्ठि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम् |
| गोधूभ | तिल | पीतान्न | दाल | तण्डुल | चणक | गुड़ | यव | साधमादि धान्य ज्ञानम् |
| कुसुम्भ | श्वेतांग | लोहित | पांडु | पीत | आकाश | श्याम | मिश्र | मुष्ठि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम् |
| सुख | कष्ट | सुख | कष्ट | सुख | कष्ट | सुख | कष्ट | रोगी प्रश्ने सुखादि ज्ञानम् |
| ४५ दिन | दो मास | ४५ दिन | १ मास | १५ दिन | १ मास | ७ दिन | २ मास | कष्ट दिनादि ज्ञानम् |
| लाभ | हानि | लाभ | हानि | लाभ | हानि | लाभ | हानि | नष्ट लाभालाभ ज्ञानम् |
| पूर्व | आग्नेय | दक्षिण | नैऋत्य | पश्चिम | वायव्य | उत्तर | ईशान | नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम् |
| ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र | धनिक | नौकर | नीच | नाई | चोर जाति प्रश्न ज्ञानम् |
| उखल | अग्निगृहे | अरण्य | अन्तरिक्ष | भांडगते | काष्टगते | गृहे | भूमिस्थे | चोरित द्रव्य स्थानम् |
| भैरव | दुर्गा | सूर्य | हनुमन्त | रुद्रगण | सरस्वती | गणेश | पितर | देव पूजा उपासनादि |
| आगम | न आगम | आगम | न आगम | आगम | न आगम | आगम | न आगम | शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम् |
| जय | हानि | जय | हानि | जय | हानि | जय | हानि | जय गति प्रश्न ज्ञानम् |
| न मोक्ष | मोक्षण | न मोक्ष | मोक्षण | न मोक्ष | मोक्षण | न मोक्ष | मोक्षण | बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम् |
| ७ दिन | १ वर्ष | १५ दिन | ६ मास | १ मास | ६ मास | ३ मास | १ वर्ष | बन्दी मोक्ष अवधि |
| स्थिर | न सिद्धि | कलह | दीर्घकाल | त्वरित | दीर्घकाल | स्थिर | न सिद्धि | कार्य सिद्धि भविष्यति नवा |
| शुभ | कलह | शुभ | कलह | शुभ | कलह | शुभ | कलह | विवाह प्रश्ने शुभाशुभम् |
| पुत्र | कन्या | पुत्र | कन्या | पुत्र | कन्या | पुत्र | कन्या | पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम् |
| १००वर्ष | १ वर्ष | १०० वर्ष | २० वर्ष | ६० वर्ष | १२ वर्ष | ४५ वर्ष | ६ वर्ष | आयु प्रश्न आयु ज्ञानम् |
| लाभ | न लाभ | लाभ | न लाभ | लाभ | न लाभ | लाभ | न लाभ | धन-लाभ प्रश्न लाभ |
| विलम्ब | उत्तम | विलम्ब | उत्तम | विलम्ब | उत्तम | विलम्ब | उत्तम | वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा |
| ७ दिन | ७ दिन | ३० दिन | २० दिन | १० मास | २ मास | २ मास | २ मास | वर्षा वर्षण दिनादि |

## ।मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम्।

| लग्न | मनश्चिन्तित प्रश्न: | रोगिणां प्रश्न: |
|---|---|---|
| मेष | मानवीय जीव की चिन्ता | दैवीय कुल दोष: |
| वृषभ | चौपाये जीव पशु की चिन्ता | पितृ अतृप्ति दोष: |
| मिथुन | गर्भस्थ संतान की चिन्ता | शाकिनी-डाकिनी दोष: |
| कर्क | व्यवसाय की चिन्ता | भूत पिशाचादि दोष: |
| सिंह | नभचर, थलचर जीव | स्वकुलीय मात्र दोष: |
| कन्या | दाम्पत्य सुखोपयोग चिन्ता | स्वकुलीय देव दोष: |
| तुला | गुप्त दिये गये धन की चिन्ता | कुपित चण्डिका दोष: |
| वृश्चिक | दैहिक और भौतिक क्लेश | मृत्वत्सा नारि दोष: |
| धनु | धनोपार्जन की चिन्ता | यक्षिणी व पिशाचिनी दोष: |
| मकर | शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता | स्थान व ग्राम देव दोष: |
| कुम्भ | स्वकीय जायदाद की चिन्ता | अपुत्री कुलटा स्त्री दोष: |
| मीन | देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता | आकाश गामी वायु प्रकोप |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर-फलों का उल्लेख कर दिया जाता है। श्रीरामशलाका प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है—

| | | | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सु | प्र | उ | बि | हो* | मु | ग | ब | सु | नु | बि | घ | धि | इ | द |
| र | रु | फ | सि | सि | रें | बस | है | मं | ल | न | ल | य | न | अं |
| सुज | सो | ग | सु | कु | म | स | ग | त | न | ई | ल | धा | बे | नो |
| त्य | र | न | कु | जो | म | रि | र | र | अ | की | हो | सं | रा | य |
| पु | सु | थ | सी | जे | इ | ग | म* | सं | क | रे | हो | स | स | नि |
| त | र | त | र | स | हु | ह | ब | ब | प | चि | स | स | स | तु |
| म | का | ए | र | र | मा | मि | मी | म्हा | । | जा | हू | हीं | । | जू |
| ता | रा | रे | री | ह | का | फ | खा | जी | ई | र | रा | पू | द | ल |
| नि | को | मि | गो | न | म | ज | य | ने | मनि | क | ज | प | स | ल |
| हि | रा | मि | सु | हि | ग | द | ल | ख | मु | खि | हि | मनि | त | जं |
| सिं | ख | नु | न | को | मि | ज | र | ग | धु | ख | सु | का | स | र |
| गु | कु | म | अ | ध | नि | म | ल | । | न | ब | तों | न | रि | भ |
| ना | पु | व | अ | ढा | र | ल | का | ए | तु | र | न | नु | व | थ |
| सि | ह | सु | म्ह | रा | र | मु | हिं | र | त | न | ष | । | ज | । |
| र | सा | । | ला | धी | । | री | ना | हू | हीं | भा | जू | ई | रा | रे |

इस रामशलाका प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अँगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाय। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लेना चाहिए। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर क्रम से लिखते जाना चाहिए और तब तक लिखते जाना चाहिए, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायगी, जो प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी-किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (।) और किसी-किसी कोष्ठक में दो-दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिए और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिए। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिए और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिए।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई प्रदर्शित कर दी है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'हो' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रखी और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तरस्वरूप यह चौपाई बन जायेगी—

**हो इ हैं सो इ जो रा म र चि रा खा। को क रि त र क ब ढ़ा व हिं सा खा॥**

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्त्ता को इस उत्तरस्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिए कि कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयस्कर है। इस चौपाई के अतिरिक्त श्रीरामशलाका प्रश्नावली से आठ चौपाइयाँ और बनती हैं, उन सबका स्थान और फल सहित उल्लेख नीचे किया जाता है। कुल नौ चौपाइयाँ हैं—

- **सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी॥**
  **स्थान**—यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है।
  **फल**—प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।
- **प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा॥**
  **स्थान**—यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमानजी के लङ्का में प्रवेश करने के समय की है।
  **फल**—भगवान का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।
- **उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥**
  **स्थान**—यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में श्री सीताजी के सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
  **फल**—इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।
- **बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥**
  **स्थान**—यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग-वर्णन के प्रसंग की है।
  **फल**—खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।
- **मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥**
  **स्थान**—यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।
  **फल**—प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।
- **गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥**
  **स्थान**—यह चौपाई श्रीहनुमानजी के लङ्का में प्रवेश करने के समय की है।
  **फल**—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है, कार्य सफल होगा।
- **बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहुँ न धीरा॥**
  **स्थान**—यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के पश्चात मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।
  **फल**—कार्य पूर्ण होने में संदेह है।
- **सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥**
  **स्थान**—यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।
  **फल**—प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

*इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं, जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय सन्निहित हैं।*

सीस ठम

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अंक क्या है

भारत संसार को ब्रह्म की कृति मानता है। ब्रह्म क्या है? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए वेद पुराण, उपनिषद् और दर्शन अस्तित्व में आए, फिर भी हम आज तक उस ब्रह्म को केवल आभासिक सत्ता या कार्य को देखकर कारणगत अनुमान तक ही पहुंच सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि ब्रह्म हमारे लिए अज्ञात रहा, अगर अज्ञात रहता तो इतना विवेचन किसका होता? किन्तु समस्या यह रही कि ब्रह्म को जान लेने के बाद ब्रह्मज्ञ व्यक्ति स्वयं ब्रह्मरूप हो गया और उसने ब्रह्म को वाणी या ज्ञान का विषय मानने से मना कर दिया, अर्थात् ब्रह्म शून्य है। शून्य अपने आप में अपरिभाषित है, किन्तु वह इस दृश्य जगत के विस्तार का कारण बनता है यह भी सुविदित सत्य है।

हमारी यह दार्शनिक सूक्ति विज्ञान की परिभाषा पर कसने से भी कोई व्यतिक्रम या असंगति नहीं होती। हमने ब्रह्म को अगोचर, निष्क्रिय और रूप-आकार रहित माना। यह बात आज भी हमारे आस-पास है और विज्ञान भी इसे स्वीकार किए बिना नहीं चलता। संसार में ऐसा कोई पदार्थ है ही नहीं जिसमें शून्य न हो, दैत्याकार पहिये में भी शून्य है, उसका केन्द्र भाग शून्य है, निष्क्रिय भी और रूपाकार रहित भी। इस बिन्दु के बिना गति संभव नहीं और यह बिन्दु (केन्द्रस्थ शून्य) न देखा जा सकता है, न जाना जा सकता है। हां परिणामों को देखकर इसकी कल्पना ही की जा सकती है और वही हम लोग करते आयें हैं, वही विज्ञान करता है, विज्ञान का अनन्त ब्रह्म के विराट किंवा अपरिमेय स्वरूप को बताता है तो चक्र के केन्द्र में स्थित बिन्दु इसको सूक्ष्मतम अवस्था में जानने की बात कहता है। इसी सत्य को हमने अणोरणीयान् और महतो महीयान् के रूप में कहा है।

ब्रह्म के यों तो अनन्त स्तर और व्यवहार (कारण रूप) हैं, किन्तु हम यहां उसके कुछेक आयामों को विचार का विषय बनाते हैं जिससे हमारे विषय का दार्शनिक अतएव मूल विश्लेषण समझ में आ सकें। ब्रह्म का अर्थ होता है ब्रह्मणशील अर्थात फैलता अथवा विस्तार पाता हुआ। ब्रह्म का निष्क्रिय स्वरूप किंवा शून्य का गुणाकार रहित अस्तित्व जब प्रेरक रूप में अपनी ही शक्ति को विस्तृत करता है तो वह सत्, चित, अतएव आनन्दमय शून्य विविध प्रकार के पदार्थों का जन्मदाता बन जाता है। इस सत्य को हम इस प्रकार भी कह देते हैं — ब्रह्म स्वयं विस्तृत होने लगता है। विष्णु की नाभि से निकले कमलनाल पर विराजमान ब्रह्मा का प्रतीक चित्र क्या इस तथ्य का प्रतिपादन नहीं करता कि गति के केन्द्र में स्थित शून्य ही गति का कारक है, वह निष्क्रिय होकर भी गति को प्राणवान् बनाता है।

इस शून्य और गुणातीत के ज्ञानगम्य विस्तार को व्यक्त करने का माध्यम क्या हो? या क्या रहा होगा? यह दूसरा प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस विस्तार को ब्रह्म की ब्रह्मणशीलता को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए शब्द के अलावा कोई माध्यम नहीं दिया जा सकता था। इसका भी कारण था — शून्य में जो विक्षोभ होता है या ब्रह्म की क्रियाशीलता की जो पद्धति है उसमें नाद प्रारम्भिक स्तर है और वही नाद आगे चलकर शब्दों के रूप में विकीर्ण-प्रसृत होता चला जाता है। यही एक कारण है कि संसार के समस्त दार्शनिकों ने शब्द को ब्रह्म का स्वरूप मानकर मुक्ति का प्रतीक कहा है।

यों शब्द या भाषा का इतना विस्तृत क्षेत्र है कि हम संख्या को भी शब्दों में लिख सकते हैं तथा अंकों के लिपिगत स्वरूप के अलावा उच्चारणगत रूप में वे शब्दों को ही अपना माध्यम बना सकते हैं, अर्थात् जिस प्रकार संकेतों में संख्या का अपना एक स्वतंत्र संसार है, उस तरह का स्वतंत्र व्यक्तित्व उनके बोलने में नहीं है। इस तथ्य को हम ऐसे कह सकते हैं कि जिस तरह लिखने में संख्याएं भाषा में एकरूप न होकर भिन्न दिखाई देती है उस तरह बोलने में इनके विशिष्ट संकेत नहीं हैं।

एक विचित्रता और है कि प्रकृति ने ब्रह्म के इस विस्तार को शब्दों के जितने स्तर और स्वरूप दिये हैं वे सारे अक्षर (शब्द) संसार के विभिन्न प्राणियों को दे दिए, जैसे कोयल को 'कू', कुत्ते को 'हू', या गाय को 'मां', किन्तु विश्व के किसी भी प्राणी को उसने संख्या नहीं दी। यह भी समानान्तर तथ्य है कि मनुष्येतर प्राणी संख्या के महत्त्व और क्षेत्र से अपरिचित है। क्या हम इसे म[नुष्य] जाति का सौभाग्य और अति विकसित स्तर नहीं मान सकते कि वह संख्या को जानती भी है, और समझती भी है?

प्रकृति ने प्राणिवर्ग को शब्दावली देते समय दूसरे प्राणियों को संख्या-बोध न देकर मनुष्य के साथ पक्षपात क्यों किया अथवा हम आज तक संख्या के लिए भाषागत शब्दों से भिन्न ध्वनियां क्यों नहीं खोज सके? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर में भारतीयों के गहन चिन्तन के निष्कर्षों को और आस्तिक बनकर प्रकृति के लीला-विलास को समझना व मानना होगा।

वस्तुत: शब्दावली एक परिणाम है और संख्या एक क्रिया है। व्यवहार में हम एक या दो या पांच जैसी संख्याएं बोलते हैं। वे किसी घटक या आवृत्ति की पूर्णता की सूचक हैं, क्योंकि संख्या में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया जैसा भेद नहीं है। शब्दशास्त्रियों द्वारा विभाजित नाम और आख्यात जैसे भेद नहीं है, अत: हम संख्या-सूचक अंकों को ही क्रिया और परिणाम मानने के लिए विवश हैं।

हमारे घर में जल रहा बिजली का बल्ब या चल रहा पंखा असल में परिणाम है, क्रिया तो तरंगों में हो रही है। यह दूसरी बात है कि क्रिया की परिणति भी क्रिया में ही हो रही है। संसार का अर्थ शरणशीलता है, एक ब्रह्म के सिवा सभी कुछ तो चंचल है, गतिशील है, क्रियावान् है। ऐसी स्थिति में यदि क्रिया का विपाक भी क्रिया ही हो तो क्या आश्चर्य है?

मनुष्य की प्रखर विचारशीलता ने उस पर गणित के रहस्य प्रकट किए या उसकी अतृप्त जिज्ञासा शब्द से भिन्न अंक के क्षेत्र और दिगन्तों तक जा पहुंची। यह उसका पुरुषार्थ और भाग्य दोनों का समन्वित फल है। मूलत: प्रकृति संख्या के स्तर पर कार्य करती है किन्तु संख्या भी एक, दो या चार-पाँच के रूप में नहीं बल्कि वृत्त और कोण के रूप में याने ज्यामितीय स्तर पर वृत्त बिन्दु का प्रतीक है जो संख्या में शून्य का बोध कराता है और कोण संख्याओं का। हम जानते हैं कि बिन्दु का विस्तार त्रिकोण में होता है, बिन्दु या वृत्त या प्रतीक के रूप में शून्य का अपने आपमें कोई अर्थ नहीं हुआ करता। वह संख्याओं के साथ जुड़कर ही अपनी शक्ति एवं व्यक्तित्व को प्रकट कर पाता है, इसलिए शून्य संख्या ही नहीं बिन्दु के रूप में ध्वनि का भी मूल रूप है। माना शून्य का स्वयं में कोई अर्थ या महत्व नहीं, पर उसमें संख्याओं को सृजन करने की अद्भुत क्षमता है, इस तथ्य को अस्वीकारा नहीं जा सकता।

ऊपर हम कह आए हैं कि जिस तरह बल्ब और पंखे विद्युत की क्रिया के परिणाम हैं, उसी तरह भाषा प्रकृति के परिणामों को सहेजती है, उसकी क्रिया के कार्यों को अभिव्यक्ति देती है, प्रकृति की क्रियामयता को वह अभिव्यंजना नहीं दिया करती। यह बात प्रथम दृष्टि में हमें विरोधाभास कराती है किन्तु थोड़ा गहराई से चिन्तन करने पर हम इससे सहमत हो सकते हैं।

आशय यह कि प्रकृति ज्यामितिय आकृतियों में काम करती है यानी प्रकृति का क्रियापरक रूप कोण और वृत्तमय होता है। ज्यामितिय संख्या से भिन्न नहीं है भले ही हम ज्यामितिय को सम्पूर्ण रूप से अंकगणितीय रूप न दे सकें पर ज्यामितिय को अपनी स्पष्ट अभिव्यंजना के लिए अंक का सहारा लेना ही पड़ता है। त्रिकोण में त्रि के रूप में जो संकेत है वह संख्या ही है।

## अंक क्या है?

अंक का शाब्दिक अर्थ है-चिह्न। अमरकोशकार द्वारा 'कलंकांकौ लाञ्छनं च चिह्नं लक्ष्म च लक्ष्मणम्' अंक, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्म, लक्ष्मण, कलंक ये एक दूसरे के पर्याय हैं। यह भिन्न बात है कि परमार्थत: एवं व्यवहार में हम इन सारे शब्दों को अलग-अलग परिस्थितियों में प्रयोग करते हैं। अंकों के लिए दूसरा शब्द संख्या है



जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक ... अपने व्यवहार में हम संख्या के चमत्कार से प्रतिदिन आमने- ... वह परोपजीवी है। इसके बावजूद भी यह निश्चित है कि संख्या प्रकृति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

परिस्थितियों में प्रयोग करते हैं। अंकों के लिए दूसरा शब्द संख्या है

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक् आख्यान। ये दोनों शब्द गणित या गणना से स्पष्ट होते हैं अन्यथा अंक शब्द को तो हम संख्या के पर्यायवाचक के बिना भी प्रयोग में लाते हैं। गणित की आधारभूमि देने से ये शब्द अपना वास्तविक परिप्रेक्ष्य प्रकट कर देते हैं, क्योंकि गणना एक समग्र क्रिया की, आवृत्ति के सम्पूर्ण क्षेत्र की, किंवा एक पूरे घटक की होती है। गणना शब्द ही इस अवस्था को सूचित करता है।

संख्या के रूप में ये एक, दो, दस, हजार जैसे अंक वास्तव में संकेत है और यह संकेतात्मकता ही इनकी शक्ति है। भाषा एवं शब्द प्रतीक बोध पर चलते हैं और अंक संकेत विधि से कार्य करते हैं। शब्दों में कोई भी शब्द ऐसा नहीं जो संख्या के संकेत जितने बड़े क्षेत्र को व्यक्त कर सके। 'राम' जैसे संज्ञा शब्द, 'वह' जैसे सर्वनाम 'अथवा' जैसे अव्यय और 'जाता' है, जैसे क्रिया पद अपनी विशेष सूचकता के कारण हमारे व्यवहार और सम्प्रेषण को पूर्ण बनाते हैं, फिर भी संकेतों की विश्वजनीनता ज्यामितीय सत्य है। प्रेयसी से रमण करने की इच्छा करने से प्रेरित प्रेमी का संकेत सारे संसार में एक है तो क्रोधाविष्ट का आक्रामक स्वरूप भी सार्वजनीन संकेत है। इस दृष्टि से संकेत का क्षेत्र सीमित रहकर भी अपनी व्यापकता की दृष्टि से अधिक विस्तृत और समर्थ रहेगा।

यों तो भाषा भी एक अभिव्यक्ति के रूप में निर्दोष है। किन्तु तदपि वह अपनी प्रतीकात्मकता के कारण गाली बन जाती है या किसी को रुष्ट करने का कारण बन जाती है। इसी का दूसरा पक्ष यह भी है कि भाषा की शब्दावली से कोई व्यक्ति प्रसन्न भी हो सकता है और अपने को मोहग्रस्त भी कर सकता है, जबकि संख्या अपनी संकेत शक्ति के कारण तटस्थ रहा करती है। जब तक संख्या हमारे प्रसंग को ग्रहण नहीं करती तब तक वह नि:संग रहती है। सड़क पर एक छपा हुआ पन्ना पड़ा है, उसके एक तरफ संयोजित अतएव प्रसंगवद्ध कोई वक्तव्य छपा हुआ है और दूसरी तरफ कोई संख्याओं का जाल मुद्रित है। इस पृष्ठ के दो भागों भाषा एवं संख्यामय भागों को पढ़कर हम यह स्वीकार करेंगे कि एक पृष्ठ के प्रसंग से हम अनजान होकर भी जुड़ सकते हैं, यानी वह प्रतीक बोध हम तक सरलता से आ जाया करता है, जबकि संख्याए हमारे तक नहीं आतीं, उनके प्रसंग से हम सहसा परिचित नहीं हुआ करते। यह विचित्रता तब और बढ़ जाती है जब भाषा की रचना यानी एक वाक्य का संयोजन निरर्थक हो सकता है या एक शब्द भी केवल अक्षरों का संयोजन मात्र हो सकता है। जैसे आकाश के लिए हाथियों की खुर मात्र उपयोगिता नहीं है, ऐसे वाक्य अथवा 'तृखो' जैसे शब्द निरर्थक हो सकते हैं पर संख्या का कोई भी संयोजन निरर्थक नहीं हुआ करता। उसकी क्रमिकता और नि:संगता अपने में सार्थक है।

अपने व्यवहार में हम संख्या के चमत्कार से प्रतिदिन आमने-समाने हुआ करते हैं। उच्च गणित के विद्यार्थी जानते हैं कि गणित की अनन्तगामिता ही उसका रहस्य है और शक्ति भी है।

परिवार नियोजन की आवश्यकता आज भी हमारे लिए राष्ट्रीय कर्त्तव्य के रूप में प्रस्तुत है, क्यों? क्योंकि हम गणित के रहस्य एवं शक्ति से परिचित हैं, अन्यथा समुद्र में रहने वाली मछलियाँ, जंगल में उगने वाली वनस्पति, शहरों में फैलने वाली कुत्तों की वंशावली, ये सब अपने अनर्गल विस्तार से भय नहीं करते, वे पूर्णतया प्रकृति के खिलौने हैं, दास हैं उनके क्रिया-व्यवहार में कहीं भी, किंचित् भी स्वामित्व का भाव नहीं है। इसके विपरीत मनुष्य अपनी सतत साधना, विकसित चेतना और उर्वर कल्पना-शक्ति के कारण अपवाद के रूप में ही दासवत् व्यवहार किया करता है। मनुष्य का यह ज्ञान-विज्ञान कभी-कभी उसे अस्वाभाविक भी बना दिया करता है। दो, ढाई, तीन, चार फुट के बच्चों का औसत लेकर नदी के जल का औसत निकालकर नदी पार करने वाले अपने बच्चों के डूब जाने पर अपने सवाल को जाँचने या उसमें कोई गलती न रहने पर बच्चों के डूबने पर आश्चर्य करने लगें तो यह उनका व्यावहारिक दोष है — अंक और उनकी पद्धति अपने आप में निरपेक्ष है, उसे किसी भी तरह का दोष नहीं दिया जा सकता, अथवा भारत में पनप रहे प्रजातंत्र में बीस या तीस प्रतिशत भी बहुमत हो जाय तो इसमें गणित को छलिया कैसे कहा जा सकता है, या आज की जनसंख्या और उसकी वृद्धि की गति को (-) जिसमें किसी भी प्रकार का संदेह या दोष नहीं है — गणितीय आधार देने पर इस धरती पर किसी समय मनुष्य के सिवा कोई नहीं मिलेगा-इस तरह की कल्पना को गणित का ठोस आधार देने पर इसके भविष्यत् की भयावहता से स्तब्ध होना सहज है। किन्तु यह सब अंकों का तटस्थ व्यापार है, वे किसी को प्रसन्न या विषण्ण करने जैसा रूप धारण नहीं करते। यदि ऐसा ही होता तो एक व्यक्ति चक्रवृद्धि ब्याज का हिसाब करके एक दो पीढ़ियों में (एक लाख रुपये के मूलधन से) सारे देश की मुद्रा का स्वामित्व प्राप्त कर लेने के हर्ष से पागल भी हो सकता है।

आशय यह है कि भाषा के शब्दों या वर्णों का अपना क्षेत्र व प्रभाव अवश्य रहता है और वे भी एक सीमा तक अपने आपमें निरपेक्ष है, किन्तु उन शब्दों में या शब्द-समूहों में एक स्वाभाविक लय रहा करती है और वह लय ही एक सम्पूर्ण आर्केस्ट्रा के रूप में हमें प्रभावित किया करती है, जबकि संख्या के संकेतों में लय नहीं होती, वे लय की आवृत्ति को गिनते हैं। यही इनका मौलिक स्वरूप और परिचय होता है।

इस दृष्टि से संख्या का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। वह किसी भी वाचक या संकेतक बनकर ही अपनी अर्थवत्ता प्रकट करती है अर्थात् वह परोपजीवी है। इसके बावजूद भी यह निश्चित है कि संख्या प्रकृति की कार्य-पद्धति की सूचक होकर भी प्रकृति के व्यवहार के वर्गीकृत स्वभाव का परिचय एवं गणना कराती है। मोटे तौर पर हम सम और विषम संख्या के रूप में किये गये विभाजन को देखें तो हमें उनमें गणितीय संयोजन एवं समरूपता दृष्टिगत होती है। सम संख्या के चतुष्कोण या चतुर्भुजों में परस्पर संयोजन सरलता एवं सहज रूप से हो जाया करता है। उसमें विषम संख्या के ज्यामितीय रूपों को हम परस्पर आसानी से जोड़ नहीं सकते हैं। संख्याओं के माध्यम से प्रकृति की कार्य-विधि को समझने तथा उसके संभावित-सुनिश्चित परिणामों को खोज निकालना ही अंक विद्या है और अंक ज्योतिष के रूप में हम संख्याओं की संकेत शक्ति व उन संकेतों के परिणामों का विश्लेषण-मूल्यांकन करते हैं।

भारत ने शब्दशास्त्र का जितना सूक्ष्म अध्ययन किया हैउतना ही संख्याओं का भी, अर्थात् जिस तरह किसी रंगीन चित्र में रेखाओं और रंगों का संयोजन संयुक्त रूप से एक अनुभूति देता है, किन्तु रेखाओं और रंगों के स्वभाव, प्रभाव एवं गुणों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण रहता है, क्योंकि रंगों की दुनिया और रेखा की दुनिया का भी अपना व्यक्तित्व है।

अंक का माध्यम या संकेत के रूप में हमने निर्बाध उपयोग किया, किन्तु उनको स्वतंत्र रूप से, उनकी सहज गति व प्रकृति को निरपेक्ष भाव से समझने की भी चेष्टा की गई। अंकों से बनने वाले यंत्र निर्विवाद रूप से अंकों की शक्ति व प्रकृति को सिद्ध करते हैं तो केरलीय ज्योतिष में या अन्य प्रसंगों का केवल संख्या के आधार पर समाधान ढूंढने की पद्धति भी अंकों के महत्व को प्रतिपादित करती हैं, रमल शास्त्र तो अपने आप में अंकों की ही दुनियां है।

ज्योतिष का काम अंकों के बिना नहीं चल सकता, सूर्य का पिण्डीय गोल रूप इन ग्रहों का अयन पथ, ये सब अपने प्राकृतिक रूप में वृत्ताकार है किन्तु उस वृत्त से हमारा काम नहीं चलता जिस तरह अकेले शून्य से कोई सार्थक उपयोगिता सिद्ध नहीं होती जहाँ वृत्त के विभाजन का प्रश्न आया वहीं वह 'शून्य' विभिन्न इकाइयों, कोणिक आकृतियों में विभक्त हो गया और इस विभाजन के लिए अन्य संख्याओं की आधारभूमि बन गई।

ज्योतिष में षडष्टक सम्बन्ध, त्रिक स्थान और त्रिषडाय स्थानों को स्वभावत: अहितकर माना जाता है, क्योंकि लग्न से इन स्थानों से लेकर बनने वाले कोण विषम स्थिति के सूचक होते हैं। इन कोणिक आवृत्तियों को संख्या का संकेत देना ही फलित की विशेषता बन जाती है। इसी विचार-परंपरा और अंकों की कार्य- शैली को समझने से अंको द्वारा हमारे जीवन के विभिन्न रहस्यपूर्ण-सम्पूर्ण उद्घाटी लेते हैं। अतएव अज्ञात भविष्य को जानने का उपक्रम अंक ज्योतिष का विषय है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



इस प्रकार कोई व्यक्ति गंगा की धार में बहकर उसके यात्रा-पथ व विविध भौगोलिक प्रभावों को भोगने के लिए बाध्य है, उसी प्रकार हम अपने नाम जन्मदिन, स्थान के नाम आदि के स्वयं-सिद्ध प्रभावों को भोगने के लिए बाध्य है। इस यात्रा के प्रभावों का आकलन करके सुरक्षित व सुविधाजनक रूप से गन्तव्य तक पहुंचना हमारी बुद्धिमता और दूरदर्शिता है तथा इसके लिये अंक ज्योतिष सशक्त आधार है।

## संख्या का दार्शनिक पक्ष

संख्या का व्यवहारगत अर्थ है — यूनिट, वर्ग या समूह। संख्या का व्याकरण-सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक् प्रकार से कथन-ज्ञापन। संस्कृत में संख्यान और आख्यान शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुए है, किन्तु कालान्तर में यह शब्द केवल गिनती के अर्थ में रूढ़ हो गया।

अंक ज्योतिष या न्यूमरोलाजी के रूप में हम आजकल जिस विवेचन या विधा को देख रहे हैं वह भी मूलत: संख्या का, गणित का ही विशेष प्रकार का फलित है। किन्तु संख्या शब्द ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य को प्रकट नहीं कर पाता, इसलिए इस अंक ज्योतिष या अंक विद्या के नाम से हम जानते हैं। अंक शब्द का अर्थ है चिन्ह अमर कोश के 'कलंकांकौ लाञ्छनं च चिन्हं लक्ष्म च लक्षणम्' अनुसार अंक एक चिह्न है। यह चिह्न गणितीय भी हो सकता है। बीजीय भी और रेखीय भी। अंक ज्योतिष में या वैसे भी ज्योतिष में संकेत अधिक चलते हैं। कुण्डलियों में राशि का नाम न लिखकर केवल उसकी संकेतक संख्या लिखी जाती है।

अंक और भाषा एक ही वस्तु के दो पहलू हैं। प्रत्येक वस्तु संख्या की सीमा में आती है। संख्या की बोधकता एक स्थान पर भाषा की शक्ति का भी अतिक्रमण कर जाती है और वह है शून्य का संकेतन। भाषा में या हमारे व्यवहार में उपस्थित विषमता को संख्या ने हल कर दिया — यह संख्या का अपना अधिकार सम्पन्न क्षेत्र रहा है अन्यथा भाषा का बहुवचन अस्पष्ट रहता है — वह केवल एकाधिक की सूचना देता है, मात्रागत या परिमाणगत स्थिति केवल संख्या से ही सूचित हो सकती है।

भाषा प्रतीक बोध पर चलती है और संख्या संकेत पर जिसे हम सिम्बलिज्म और सिग्नल सिस्टम कहा करते हैं। संकेत अपनी सीमा में स्वतंत्र है। प्रतीक वर्गीकृत है। जहां हमने चार कहा, वहां यह संकेत यूनिट का संकेत करता है। इसके अलावा कुछ नहीं करता। इसके विपरीत जहाँ हमने राम, चन्द्रमा, मैं या वह कहा, वहां ये शब्द प्रतीक रूप में इन नामधारियों का ज्ञान कराते हैं।

संख्या आवृत्ति किंवा फ्रीक्वैंसी की सूचना देती है। यह आवर्तनशीलता संख्या का आधार है। किन्तु इस आवर्तनशीलता का भी एक रूप और प्रभाव है जिसे भौतिकशास्त्री अच्छी तरह जानते हैं। फ्रीक्वैंसी में यत्किंचित् परिवर्तन होने पर तरंगों की प्रकृति और स्वरूप में अन्तर आ जाता है। यही स्थिति रसायन शास्त्र में आती है, जहाँ घटकों की संख्या नियत रहती है तथा उसमें परिवर्तन होते ही पदार्थ के अन्तर एवं तदधारित ग्राह्य में भी परिवर्तन हो जाता है।

विश्व में अनेक घटक इस प्रकार हैं जिनकी संख्या नियत रहती है, इसलिए उन सभी पदार्थों या व्यक्तियों का उन स्थायी वर्ग वाले पदार्थों से संख्यागत संबंध जुड़ जाता है और उनका प्रभाव परोक्ष रूप से उन व्यक्तियों एवं वस्तुओं पर पड़ता ही है।

माना किसी का नाम पुनीत या विपुल है। ये शब्द दो स्तरों पर नामी को प्रभावित करते हैं-पहला भाषा और दूसरा संख्या। संख्या के रूप में पुनीत या विपुल एक-एक व्यक्ति हैं। किन्तु इन नामों के अक्षरों के ध्रुवांक और उन ध्रुवांकों के चरित्र के अनुसार इन व्यक्तियों का जीवन एक अर्थ में प्रभावित होगा। ज्योतिष में जैसे जातक और गोचर दो पद्धतियां होती हैं और मनुष्य दोनों ही प्रभावों से प्रभावित होता है, उसी तरह व्यक्ति नाम के संख्यांक और भाषागत अर्थ से प्रभावित हुआ करता है। भारतीय अपने बालकों का नामकरण करने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चरण पर आने वाले अक्षर से प्रारंभ होने वाले नाम रखा करते हैं। नाम रखने में किस प्रकार के शब्द ग्रहण करने चाहिए और किस प्रकार के छोड़ देने चाहिए, इस प्रकार की व्यवस्था का निर्देश करने वाले ऋषियों ने उनके नामों के ध्रुवांक और संख्यापरक तथ्य पर भले ही ध्यान न दिया हो, (क्योंकि इस प्रकार का विश्लेषण किसी ग्रन्थ में स्वतंत्र रूप में देखने को नहीं मिलता, संकेत के रूप में मिलता हो तो कोई बात नहीं।

चित्रकला के विद्यार्थी या यंत्र रचना के ज्ञाता लोग यह जानते है कि रेखा और रंगों का भी अपना व्यक्तित्व होता है, उसी तरह प्रत्येक नाम या संज्ञा शब्द का गणित भी हुआ करता है।

जहां तक भाषागत महत्व का प्रश्न है, उससे असहमत हुआ जा सकता है क्योंकि सत्यनारायणजी असत्य के भण्डार हो सकते हैं और पुनीत बिल्कुल अपवित्र हो सकते हैं, तो भी इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जिस नाम से उसे पुकारा जाता है उस नाम के जप का प्रभाव उस व्यक्ति पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न्यून या अधिक रूप में पड़ता ही है।

व्यक्ति अपने नाम से विपरीत चरित्र एवं प्रकृति का होता है — यह अनुसंधान का विषय है। यद्यपि इस प्रभाव के पीछे संकरता, वातावरण का प्रभाव और हमारे लोगों का काम संबन्धों में उच्छृंखलता का होना भी है तदपि यही एकमात्र कारण नहीं है।

## अंक और ऐतिहासिक घटनाएं

पूर्व जन्म में सम्पूर्ण प्राणियों ने शुभाशुभ जैसे जो भी कर्म किये हैं, उन कर्मों के फलों को प्राणी इस जन्म में या अगले जन्म में किस प्रकार भोगकर समाप्त करेगा यही ज्योतिष शास्त्र बतलाता है। जैसे अन्धकार में पड़ी हुई वस्तु को दीपक का प्रकाश बतला देता है।

यह पुस्तक ज्योतिष की एक शाखा अंक विधा के ज्ञान को हम अपने जीवन में किस प्रकार उपयोगी बनाकर अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं तथा आने वाले भविष्य को अपने अनुकूल बना सकते हैं, का मार्ग प्रशस्त करेगी। अंक चिन्ह को भी कहते हैं, इसे संख्या भी कहा जाता है। आज के युग में क्या प्राचीन युग में भी अंक की महत्ता रही है।

पाश्चात्य ज्योतिषी कीरो ने अपनी पुस्तक 'बुक आफ नम्बर' में यह उल्लेख किया है कि जब मैं भारत का भ्रमण कर रहा था तो मुझे कुछ ऐसे ब्राह्मणों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला जो प्रकृति के बहुत से गूढ़ रहस्यों को अपने हृदय में छिपाये थे और कृपा करके कुछ का ज्ञान मुझे भी कराया था। वे सभ्य होने से पहले से इस अंक विद्या के ज्ञान से परिचित थे।

जिस तरह शब्द को ब्रह्म की संज्ञा देकर महत्वपूर्ण माना है, इसी तरह अंक भी महत्वपूर्ण है। शून्य (०) एक अंकीय चिन्ह है और यह भी ब्रह्म की विराट सत्ता का प्रतीत है। वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण से अंक सर्वाधिक महत्वपूर्ण, प्राचीनतम कटु सत्य है। हमारे आर्ष पुरुषों, ऋषि-मुनियों ने, दैवज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने परखा है, सोचा समझा एवं मनन किया है, तभी इसे इतना महत्वपूर्ण माना है।

अंक हमारे जीवन में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अंक द्वारा हम अपने मन्तव्य को भली भाँति समझा सकते हैं। जैसे किसी ने कहा कि इस पेड़ पर कुछ कबूतर बैठे हैं, लेकिन ठीक उत्तर के लिए उनके कितने हैं बतलाने के लिए किसी प्रतीक का सहारा लेना पड़ेगा और वह प्रतीक है अंक। ऊपर लिखे वाक्य को हम अगर स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास करें तो वाक्य इस पेड़ पर बारह कबूतर बैठे हैं इस प्रकार हो गया। इसी प्रकार अंक हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। इसके बिना हमारी बात अधूरी है, अस्पष्ट है।

राम देहली ७ बजे जायेगा। देहली २३ मील दूर है। वहां का किराया ३१ रुपये है। मेरी आयु ४१ वर्ष है इत्यादि। इन वाक्यों में आपने देखा कि अंक किस तरह हमारे दैनिक उपयोग में आता है, इसके बिना हमारी बात अधूरी रहेगी। अंक भूत, भविष्य, वर्तमान बतलाता है। हमारे दुख-दर्द का सच्चा साथी है। अंक द्वारा ही हम अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने अंक के महत्व को समझा, इसका गहन अध्ययन किया और इसे जन उपयोगी पाकर सर्वसाधारण को इसकी महत्ता एवं शक्ति से परिचित कराया।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



सहधर्मी वस्तुएं आकर्षण करती हैं और विधर्मी विकर्षण, यह विज्ञान-सम्मत बात है। कबूतर कबूतरों में ही रहेगा, बाज अथवा कौओं में नहीं। इसी प्रकार प्रत्येक अंक अथवा संख्या अपने जैसे संख्या अथवा अंक को आकर्षित करेगी और इनमें आपस में मैत्री एवं सौहार्द रहेगा। इसी प्रकार विरोधी अंक संख्या में विकर्षण, शत्रुता एवं विरोध रहेगा। यूं कोई भी अंक अपने आप में बुरा प्रभाव नहीं रखता, परन्तु स्थान तथा परिस्थितिवश शुभ या अशुभ हो जाता है।

कई लोग जो ज्योतिष से परिचित नहीं होते, मात्र उन्होंने कहीं से सुन रखा होता है कि राहु और शनि बुरे ग्रह हैं और इनकी दशा भुक्ति कष्टकर होती है। ये जब किसी अन्य को अथवा स्वयं को कठिन परिस्थिति में दुःख तकलीफ में देखते हैं तो राहु-शनि को इसका कारण मानकर कह देते हैं कि बुरे दिन चल रहे हैं, शनि राहु की दशा के कारण। शनि-राहु पापी ग्रह हैं यह माना, परन्तु ये हर एक को बुरा फल देते हो मैं यह मानने को तैयार नहीं। जिनकी कुण्डली में शनि या राहु कारक होकर शुभ स्थानस्थ हों तो अपनी भुक्ति में मान-सम्मान, धन और राज्य भी देते हैं। मैंने कई ऐसी कुण्डली देखी हैं, जिनमें मात्र शनि ने उच्च पद तथा राहु ने आकस्मिक धन दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि पाठक स्वयं अपने जीवन को रिश्तेदारों, प्रियजनों, जानकारों के जीवन को टटोलकर देखें तो पायेंगे अंक की आश्चर्यजनक समानता—चमत्कारिक रूप। यह सत्य है कि ज्योतिष कठिन विषय है। इसे समझना हर एक के बूते की बात नहीं, क्योंकि जन्म पत्रिका बनाना आसान काम नहीं, न ही बनाकर देखना और समझना। गणित की जटिल प्रक्रिया से निकलकर मनुष्य फलित के जाल में फंस जाता है। किन्तु अंक विद्या (ज्योतिष) सरल विधि है। इसे थोड़ा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी समझकर अपने भविष्य को सुखद बना सकता है। जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान कर सकता है।

अंकों में गति है, क्रम-बद्धता है, अगले पृष्ठों में कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं जिससे आप समझ सकेंगे कि घटनाओं के घटने का क्रम अंकों की किस सुनिश्चित योजना द्वारा क्रमबद्धता द्वारा घटित होता है। नीचे वाले उदाहरण में आप देखेंगे कि चमत्कारिक रूप से ५३९ साल के अन्तर से सेंटलूई तथा लूई सोलहवें के जीवन की घटनाएं समान रूप से घटित हुईं।

| | | |
|---|---|---|
| सेंट लूई का जन्म | २३ अप्रैल | १२१५ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें का जन्म | २३ अगस्त | १७५४ |
| सेंट लूई की बहन ईसाबेला का जन्म | | १२२५ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें की बहन अलजाबेथ का जन्म सेंट लूई के पिता आठवें की मृत्यु | | १७६४ / १२२६ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें के पिता डाफिन की मृत्यु | | १७६५ |
| सेंट लूई की बादशाहत की शुरुआत | | १२२६ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें की बादशाहत की शुरुआत | | १७६५ |
| सेंट लूई का विवाह | | १२३१ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें का विवाह | | १७७० |
| सेंट लूई को वयस्काधिकार मिला | | १२३५ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें को वयस्काधिकार मिला | | १७७४ |
| सेंट लूई और इंग्लैंड के बादशाह हेनरी तृतीय में युद्ध के बाद सन्धि हुई | | १२४३ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें और इंग्लैंड के बादशाह जार्ज तृतीय में युद्ध के बाद सन्धि हुई | | १७८२ |
| एक पूर्वदेशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिए सेंट लूई से मिला | | १२४९ |
| | | + ५३९ |
| एक अन्य राजकुमार ने अपना दूत इसी आशय के लिए लूई सोलहवें के पास भेजा | | १७८८ |
| युद्ध में सेंट लुई की हार, साथियों द्वारा छोड़ा जाना तथा बन्दी होना | | १२५० |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें का उसके दल द्वारा छोड़ा जाना तथा बन्दी होना | | १७८९ |
| सेंट लूई की मां का स्वर्गवास हुआ | | १२५३ |
| | | + ५३९ |
| लूई सोलहवें की मां की मृत्यु हुई | | १७९२ |
| सेंट लूई ने जैकोबियन धर्म अपनाना चाहा | | १२५४ |
| | | + ५३९ |
| जैकोबियनों द्वारा लूई सोलहवें का अन्त | | १७९३ |

एक अन्य उदाहरण देखिए-

पूज्य गाँधीजी के जीवन में अंक २ व ४ का वर्चस्व रहा था

| | |
|---|---|
| जन्म -२ अक्टूबर | २ |
| विवाह हुआ १८८३ में | २ |
| पिता का स्वर्गवास हुआ १८८५ में | ४ |
| वकालत की १८९२ में | २ |
| भारत आए १९०१ | २ |
| ट्रांसवेल ब्रिटिश इंडिया बनी १९०३ | ४ |
| स्वराज्य फण्ड कमेटी बनी २ अक्टूबर | २ |
| पत्नी की मृत्यु २२ फरवरी | ४ |
| स्वयं का स्वर्गवास १९४८ | ४ |

एक और उदाहरण अंक १३ का। यूं पश्चिम में इस अंक को लोग अशुभ समझते हैं और प्रायः इस अंक का प्रयोग वे जीवन के किसी भी क्षेत्र में नहीं करते। परन्तु ज्योतिर्विदों की दृष्टि में यह अंक नवीनता का प्रतीक माना गया है। अमेरिका में १३ की अंक संख्या का काफी महत्व रहा है। वैसे भी अमेरिका नई दुनिया के नाम से जाना जाता है।

अमेरिका में जार्ज वाशिंगटन का सत्कार किया १३ तोपों की सलामी देकर

| | |
|---|---|
| अमेरिका के राष्ट्रीय झण्डे में कुल पत्तियां | १३ |
| " " " " बाण | १३ |
| " " " " ईगल पर कुल सितारे | १३ |
| " " " " ईगल के हर डेने में कुल पंख | १३ |
| " " " " सर्वप्रथम अमेरिका के कुल राज्य | १३ |

अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर १३ व्यक्तियों ने किये।

एक अन्य उदाहरण भारतीय अकाली दल (गुरनाम सिंह ग्रुप) का यू.एन.आई. से साभार-

गुरनामसिंह ग्रुप अकाली दल के सचिव श्री राजिन्दरसिंह ने अपने एक बयान में बतलाया कि पार्टी को १३ का अंक सर्वाधिक अशुभ रहा।

| | |
|---|---|
| इस दल का जन्म | १३ जून १९७१ |
| दल समाप्त हुआ | १३ फरवरी १९७२ |
| कार्यकारिणी के २० सदस्यों ने दल छोड़ा | १३ सदस्यों ने १३ फरवरी को |
| दल के कार्यवाही रजिस्टर में अंकित कार्यवाही | १३ पेज तक |
| दल के चपरासी ने दफ्तर आना बन्द कर दिया | १३ फरवरी |
| दल के सचिव का अपने साथियों सहित दल से इस्तीफा | १३ फरवरी |
| दल के चार प्रत्याशी हारे हुए घोषित हुए | १३ मार्च |

एक अन्य उदाहरण जब भी सन् के आखिर में ७ की संख्या आई है वह भारत के लिए महत्वपूर्ण वर्ष रहा है, यथा-

| | |
|---|---|
| महाराणा प्रताप की मृत्यु | १५९७ |
| शाहजहां की हुकूमत | १६२७ से १६५७ |
| शिवाजी की पैदाइश | १६२७ |
| औरंगजेब की मृत्यु | १७०७ |
| हिन्द की पहली जंगे आजादी | १८५७ |
| दक्षिण का कहत | १८७७ |
| मिण्टो रिफार्म एक्ट बना | १९०७ |
| इसे लागू किया गया | १९१७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| | |
|---|---|
| साइमन कमीशन आया, शारदा एक्ट बना | १९२७ |
| प्रथम बार कांग्रेस वजारतें बनीं | १९३७ |
| भारत आजाद हुआ | १९४७ |
| प्रथम बार केरल में कम्युनिस्ट वजारत बनी | १९५७ |
| सभी दलों ने किसी न किसी प्रान्त में मिली-जुली सरकार बना ली (कांग्रेस के खिलाफ) | १९६७ |
| जनता पार्टी का राज्य काल तथा कांग्रेस की उत्तरी भारत में हार | १९७७ |

विदेशों में इस प्रकार की घटनाओं का वृहद् संकलन किया गया है। भारत में इस विधा पर कोई खास गौर नहीं किया गया वर्ना यहाँ भी ऐसे अनेक उदाहरण होंगे। ऊपर पाठकों ने अंक का घटना-क्रम से सम्बन्ध देखा, अगर वे अपना अथवा अपने सम्बन्धियों का जीवन टटोलें तो ऐसी ही आश्चर्यजनक समता मिलेगी।

## मूलांक कैसे निश्चित किए जाएं

हर व्यक्ति का जन्म अंग्रेजी महीने की किसी भी तारीख को हो सकता है। एक महीने में १ से लेकर ३१ दिन तक हो सकते हैं। इस अध्याय में हम जन्म की तारीख से मूलांक बनाने की विधि का अवलोकन करेंगे। जन्म की तारीख से मूलांक (जन्मांक) लिखे अनुसार होंगे, यथा—

| जन्म तिथि | मूलांक (जन्मांक) | जन्म तिथि | मूलांक (जन्मांक) |
|---|---|---|---|
| १ | १ | ६ | ६ |
| २ | २ | ७ | ७ |
| ३ | ३ | ८ | ८ |
| ४ | ४ | ९ | ९ |
| ५ | ५ | | |

एक से लेकर ९ तक की अंक संख्या ईकाई में है। आगे १० से लेकर ३१ तक की संख्या दहाई में है, इस दहाई की संख्या को इकाई में बदलना पड़ता है जैसे—

| | | |
|---|---|---|
| १० | १+ ०= १ | १ |
| ११ | १+ १= २ | २ |
| १२ | १+ २= ३ | ३ |
| १३ | १+ ३= ४ | ४ |
| १४ | १+ ४= ५ | ५ |
| १५ | १+ ५= ६ | ६ |
| १६ | १+ ६= ७ | ७ |
| १७ | १+ ७= ८ | ८ |
| १८ | १+ ८= ९ | ९ |
| १९ | १+ ९= १० = १+ ०= १ | १ |
| २० | २+ ०= २ | २ |
| २१ | २+ १= ३ | ३ |
| २२ | २+ २= ४ | ४ |
| २३ | २+ ३= ५ | ५ |
| २४ | २+ ४= ६ | ६ |
| २५ | २+ ५= ७ | ७ |
| २६ | २+ ६= ८ | ८ |
| २७ | २+ ७= ९ | ९ |
| २८ | २+ ८= १० = १+०= १ | १ |
| २९ | २+ ९= ११ = १+१= २ | २ |
| ३० | ३+ ०= ३ | ३ |
| ३१ | ३+ १= ४ | ४ |

ऊपर आपने मूलांक बनाने की विधि देखी नीचे मूलांक एक नजर में—

| | | | |
|---|---|---|---|
| दि. | १, १० १९, २८ | का मूलांक | १ |
| दि. | २, ११, २०, २९ | का मूलांक | २ |
| दि. | ३, १२, २१, ३० | का मूलांक | ३ |
| दि. | ४, १३, २२, ३१ | का मूलांक | ४ |
| दि. | ५, १४, २३ | का मूलांक | ५ |
| दि. | ६, १५, २४ | का मूलांक | ६ |
| दि. | ७, १६, २५ | का मूलांक | ७ |
| दि. | ८, १७, २६ | का मूलांक | ८ |
| दि. | ९, १८, २७ | का मूलांक | ९ |

## मूलांक और उनके अधिपति ग्रह

| मूलांक | स्वामी ग्रह | मूलांक | स्वामी ग्रह |
|---|---|---|---|
| १ | सूर्य | ६ | शुक्र |
| २ | चन्द्रमा | ७ | नेपच्यून |
| ३ | बृहस्पति | ८ | शनि |
| ४ | हर्षल | ९ | मंगल |
| ५ | बुध | | |

नीचे मूलांक और उनके वार लिखे जाते हैं।

| मूलांक | वार |
|---|---|
| १ | रविवार |
| २ | सोमवार (चन्द्रवार) |
| ३ | बृहस्पतिवार (गुरु.) |
| ४ | रविवार |
| ५ | बुधवार |
| ६ | शुक्रवार |
| ७ | सोमवार |
| ८ | शनिवार |
| ९ | मंगलवार |

भारतीय ज्योतिष के अनुसार निम्नलिखित १२ राशियां हैं—

| राशि | स्वामी ग्रह |
|---|---|
| १. मेष | मंगल |
| २. वृष | शुक्र |
| ३. मिथुन | बुध |
| ४. कर्क | चन्द्र |
| ५. सिंह | सूर्य |
| ६. कन्या | बुध |
| ७. तुला | शुक्र |
| ८. वृश्चिक | मंगल |
| ९. धनु | वृहस्पति |
| १०. मकर | शनि |
| ११. कुम्भ | शनि |
| १२. मीन | वृहस्पति |

नीचे २७ नक्षत्र एवं उनके चरण तथा चरणाक्षर दिये जा रहे हैं ताकि आसानी से अपनी राशि, राशिपति, नक्षत्र तथा चरण एवं चरणाक्षर जाना जा सके। एक राशि का मान ९ चरण का माना गया है।

| नाम नक्षत्र | चरणाक्षर राशि | राशि | स्वामी |
|---|---|---|---|
| १. अश्विनी | चू, चे, चो, ला | मेष | मंगल |
| २. भरणी | ली, लू, ले, लो, | मेष | मंगल |
| ३. कृतिका | अ, इ, उ, ए | मेष/वृष | मंगल/शुक्र |
| ४. रोहिणी | ओ, वा, वी, वू | वृष | शुक्र |
| ५. मृगशिरा | वे, वो, का, की | वृष/मिथुन | शुक्र/बुध |
| ६. आर्द्रा | कू, घ, ङ, छ | मिथुन | बुध |
| ७. पुनर्वसु | के, को, ह, ही | मिथुन/कर्क | बुध/चन्द्र |
| ८. पुष्य | हू, हे, हो, डा | कर्क | चन्द्र |
| ९. आश्लेषा | डी, डू, डे, डो | कर्क | चन्द्र |
| १०. मघा | मा, मी, मु, मे | सिंह | सूर्य |
| ११. पू.फा. | मो, टा, टी, टू | सिंह | सूर्य |
| १२. उ. फा. | टे, टो, पा, पी | सिंह/कन्या | सूर्य/बुध |
| १३. हस्त | पू, ष, ण, ठ | कन्या | बुध |
| १४. चित्रा | पे, पो, रा, री | कन्या/तुला | बुध/शुक्र |
| १५. स्वाति | रू, रे, रो, ता | तुला | शुक्र |
| १६. विशाखा | ती, तु, ते, तो | तुला/वृश्चि. | शुक्र/मंगल |
| १७. अनुराधा | ना, नी, नू, ने | वृश्चिक | मंगल |
| १८. ज्येष्ठा | नो, या, यी, यू | वृश्चिक | मंगल |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# महाविद्या ध्यान

साधक को ध्यान करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करना चाहिए।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालस्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥
मुण्डमालालिकीर्णां मुक्तकेशीं स्मितानानाम्।
एवं ध्योन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥

महाविद्या देवी चार भुजाओं वाली, सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाली, महाभीमा, करालवदना, सिद्ध और विद्याधरों से युक्त, मुण्डमाला से अलंकृत, बिखरे हुए केशों वाली और हास्यमुखी हैं। सर्वकाम अर्थ की सिद्ध देने वाली देवी का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए।

## महाविद्या स्तोत्र

*श्रीशिव उवाच—* दुर्लभ तारिणीमार्गं दुलर्भं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुलर्भं शवसाधनम्॥
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मक्ससाधनम्
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तसाधनम्।
तव प्रसादाद्देविशि सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः॥

श्रीशिवजी ने कहा- तारिणी की उपासना का मार्ग अत्यन्त ही दुर्लभ है, इसी प्रकार उनके पद की प्राप्ति भी दुर्लभ है। मन्त्रार्थ ज्ञान, मंत्र चैतन्य, शव साधन, श्मशानसाधन, योनिसाधन, ब्रह्मसाधन, क्रियासाधन, भक्तिसाधन और मुक्तसाधन यह सब भी दुर्लभ हैं। किन्तु हे देवेशि! तुम जिसके ऊपर प्रसन्न होती हो, उसको सब विषय में सिद्धि प्राप्त होती है।

नमस्ते चण्डिके चण्डमुण्डविनाशिनि।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनी॥

हे चण्डिके! तुम प्रचण्डस्वरूपिणी हो। तुमने ही चण्ड-मुण्ड का वध किया था। तुम्हीं काल के भय से त्राण दिलाने वाली हो। हे कालिके! तुमको नमस्कार है।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रि जगत्पालनकारिणीम्॥
जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।
कालां विकटां घोरो मुण्डमाला विभूषिताम्॥
हरार्चिता हराराध्यां गौरवर्णालंकारभूषिताम्।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥

हे शिवे! जगद्धात्रि हरवल्लभे! मेरी संसार के भय से रक्षा करो, तुम्हीं जगत् की माता और तुम्हीं अनन्त जगत् की रक्षा करती हो। तुम्हीं जगत् का संहार करने वाली और तुम्हीं उत्पन्न करने वाली हो। तुम्हारी मूर्ति महाभयंकर है, तुम मुण्डमाला से अलंकृत हो, कराल और विकटाकार हो। तुम्हीं हर से सेवित, हर से पूजित और हरप्रिया हो। तुम्हारा गौर वर्ण है, तुम्हीं गुरुप्रिया और श्वेत विभूषणों से अलंकृत हो, तुम्हीं विष्णु प्रिया और महामाया हो, ब्रह्माजी तुम्हारी ही पूजा करते हैं तुमको नमस्कार है।

सिद्धां सिद्धेश्वरी सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धिप्रदायोनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्॥
प्रणमामि महामायी दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।

तुम्हीं सिद्धा और सिद्धेश्वरी हो। तुम्हीं सिद्ध तथा विद्याधरों से वेष्टित, मंत्रसिद्धि-दायिनी, योनिसिद्धि देने वाली, लिंग शोभिता, महामाया, दुर्गा और दुर्गति नाशिनी हो। तुम्हें नमस्कार है।

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्॥

तुम्हीं उग्रमूर्ति, उग्रगणों से युक्त, उग्रतारा, नीलमूर्ति, नील मेघ के समान श्यामवर्ण तथा नीलसुन्दरी हो तुमको नमस्कार है।

श्यामांगी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्री गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्॥

तुम्हीं श्यामलांगी, श्यामवर्ण से विभूषित, जगद्धात्री सब कार्यों की साधन करने वाली और गौरी हो, तुमको नमस्कार है।

विश्वेश्वरीं महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
श्रीदुर्गां धनदामन्नापूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्॥

तुम्हीं विश्वेश्वरी, महाभीमाकार विकटमूर्ति हो, तुम्हारा शब्द महाभयंकर है, तुम्हीं सबकी आद्या, आदिगुरु महेश्वर की भी आदि मां हो आद्यना महादेव सदा तुम्हारी पूजा करते हैं, तुम्हीं धन देने वाली अन्नपूर्णा और पद्मास्वरूपिणी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी (स्वामिनी) जगत् की माता, हरवल्लभा हो। तुमको नमस्कार है।

त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्॥

हे देवि! तुम्हीं त्रिपुरसुन्दरी, बाला, अबला गणों से विभूषित, शिवदूती, शिव की आराध्य, शिव से ध्यान की हुई, सनातनी, सुन्दरी, तारिणी, शिव गणों से अलंकृत, नारायणी, विष्णु की आराया और ब्रह्मा, विष्णु तथा हर की प्रिया हो।

सर्वसिद्धप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चिता सर्व्वसिद्धदाम्॥
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेश भक्तां माहेशीं. महाकालप्रपूजिताम॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्॥

तुम्हीं सब सिद्धियों की दात्री, नित्या, अनित्य गुणों से रहित सगुणा, निर्गुणा, ध्यान के योग्य, अर्चिता (पूजिता), सर्व सिद्धि की देने वाली, दिव्या, सिद्धिदाता, विद्या, महाविद्या, महेश्वरी, महेश की भक्तिवाली, माहेशी, महाकाल से पूजित, जगद्धात्री और शुंभासुर का मर्दन करने वाली हो। तुमको नमस्कार है।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वीरम्॥
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालाश्च मातंगीं सुरसुन्दरीम्॥
षोडशीं विजयां भीमां धूमाश्च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्व्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां साराच्च मन्त्रसिद्धये॥

तुम रक्त से प्रेम करने वाली, रक्तवर्णा, रक्तबीज का विनाश करने वाली, भैरवी, भुवना देवी, चलायमान जीभवाली, सुरेश्वरी, चतुर्भुजा कभी दशभुजा, कभी अठारह भुजा वाली देवी हो। तुम्हीं विश्वनाथ की प्रिया, ब्रह्मांड की ईश्वरी, कल्याणमयी, अट्टाहास से युक्त ऊंचे हास्य से प्रीति करने वाली, धूम्रासुर विनाशिनी, कमला, छिन्नमस्तां, मातंगी, सुर-सुन्दरी, षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, सर्वसिद्धिदायिनी, तारिणी हो, मैं मन्त्रसिद्धि के लिए तुमको नमस्कार करता हूँ।

इत्येवश्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनी॥

हे वरारोहे! यह स्तव परम सिद्धि देने वाला है, इसका पाठ करने से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है।

कुजवारे चतुर्दश्याममायां जीववासरे।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षो मन्त्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि॥

मंगलवार चतुर्दशी तिथि में बृहस्पतिवार अमावस्या तिथि में तथा शुक्रवार को रात्रि काल में यह स्तुति पढ़ने से मोक्ष प्राप्त होता है। हे शंकरि! तीन पक्ष तक इस स्तव के पढ़ने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं।

चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत्सतोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥

कृष्ण चतुर्दशी की रात हो तथा शनि और मंगलवार हो तब इस स्तव का विधिपूर्वक पाठ करने से मंत्रसिद्धि होती है।

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्भुजंगिनी॥

जो पुरुष केवल इस स्तोत्र मात्र को पढ़ता है, वह अनुत्तमा मंत्र सिद्धि प्राप्त होता है। इस स्तवपाठ के फूल से चण्डिका कुलकुण्डलिनी नाड़ी जाग्रित होती है।

*॥श्रीमुण्डमालातंत्रान्र्गत महाविद्यास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र-तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं हैं, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया सर्व सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य हैं या हम प्रमादवश इनको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़-फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण, हवन-मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विश्वस्त कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप में कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मंत्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किया जाता है और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मन्त्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है। जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के सम्मिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। साबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे है जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:-

**''हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥''**

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्रायः संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई-एक मंत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षड्ंग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति, छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां शाबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण हैं। शाबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण हैं, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिखाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:—**''हे अमुक देव! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिरे, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''**

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे की की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल-सुलभ सरलता के कारण, श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ देगा, क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों से वह बचा लेगा, शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधन करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और परपीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों का शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्यवहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होइये। एकनिष्ठ होकर करते रहिये।

**प्रेत बाधा निवारण के लिए:-**''ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले पानी चले, शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले. नौ सौ निन्यानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

**पीलिया निवारण के लिए:-**''ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं भिदाती कारे झारे पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध करलें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डाभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

**घर की रक्षा के लिए:-**''या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूँ आज बन्द, हजरत सुलेमान की बरकत से बन्द, हजरत मूसा के हुकुम से बन्द, हजरत अली की शमशीर से बन्द, हजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर सूलल्लाह।'' नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात् सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारें यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर सो रहें।

**गणपति सिद्धि मन्त्र:-**ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आनन्दपुर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जागे भरल्यावे तो एक फूले हाथी जो तू मोहन रहे मूवा बाल साध करी जाऊं तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न होकर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# मृत्यु सूचक चिह्न

पुष्पं यथापूर्वं रूपं फलस्येह भविष्यतः।
तथालिंगमरिष्टाख्यं पूर्वं रूपमरिष्यतः॥
नत्वरिष्टरस्य जातस्य नाशोस्ति मरणादृते।
मरणं चापि तन्नास्ति यत्रारिष्ट पुरःसरम्॥

अर्थात जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है, पश्चात् फल। इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरण काल, मृत्युकाल का परिचय मिलता है। शास्त्रों में वर्णित बहुशः मरण चिह्नों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया जाता है।

१. निजस्य प्रतिविम्बस्य निश्चलेषूदकादिषु।
उत्तमांगं न पश्येत् यःषण्मासेन विनश्यति॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखे, वह छः महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा।

२. करावरुद्ध श्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम्।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासान्नवर्त्तते॥

हाथों के द्वारा दोनों कान बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है, किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है। यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे न सुनाई पड़े, और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए। को एक महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा।

३. विधाय कर्णनिर्घोषं न शृणोत्यात्मसम्भवम्।
चक्षु षोर्नश्यतिर्ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति॥

ऊपर कहे दूसरे नियमानुसार हाथों से कानों के बन्द करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पड़ता पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है। यदि किसी को कान बन्द करने पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द भी सुनाई नहीं देता हो और नेत्रों की ज्योतिः अकस्मात् नष्ट हो जाए तो वह मनुष्य भी न बचेगा।

४. नासिका वक्रतामेति कर्णोयातोनतिंपुनः।
नेत्रं वाष्पं क्षरेद्र यस्य सगच्छेद् यममन्दिरम्॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हों और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और चाहे दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा।

५. सुस्नातस्या पियस्याशु हृदयं परिशुष्यति।
चरणौ च करौचापि त्रिमासं तस्य जीवितम्॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सूख जायें वह तीन महीने जीवित रहेगा।

६. भाद्रंऽह्निवासरे सूर्येछाया सूर्यस्यनिर्मलाम्।
निश्चलाप्सुन पश्येत् यःषण्मासेन समृत्युभाक्॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावे, तो छः महीने में उसकी मृत्यु हो।

७. घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासादूर्ध्वं न जीवित॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह एक महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

८. यस्य वीर्यं मलं मूत्रं क्षुत्त नूनंनिरन्तरं।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्ययुरुच्यते॥

जिस मनुष्य का वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लो उसकी आयु एक वर्ष शेष है।

९. मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे भ्रियते ध्रुवम्॥

जिस मनुष्य का मूत्र, मल, वायु (पाद) एक साथ चलते हों तो उसकी दस दिन में निश्चय ही मृत्यु होगी।

१०. मैथुने संप्रवृत्ते यो मध्येवान्ते क्षछिक्कति।
निश्चितं पञ्चमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत्॥

जिस मनुष्य को स्त्री संसर्ग में प्रवृत होकर, बीच में और अंत में छींक आये तो वह पांचवें महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवें महीने मृत्यु होना निश्चय समझना चाहिए।

११. यस्यावैस्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम्॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जो जल को पीले रंग का देखे, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा।

१२. यस्य वक्तेशवगन्धो गात्रे दसनयोरपि।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम्॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रों में मुरदे की सी गंध आती हो, वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा, अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा।

१३. यस्यवै भुक्तमात्रस्य हृदयं वाध्यते क्षुधा।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशय॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझे।

१४. अहोरात्रं यदैकत्र बहते यस्य मारुतः।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्ण वत्सरत्रयं॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी।

१५. अहोरात्रं द्वयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्ववेदिभिः॥

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो दिन-रात लगातार श्वास चलता रहे, उसको दो वर्ष तक जीवित समझो अर्थात् दो वर्ष के बाद मर जाएगा।

१६. त्रिरात्रं बहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः।
सम्वत्सरं यावदायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



यदि किसी मनुष्य के किसी* एक नासिका छिद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियों ने बताई है।

**१७. एकादिषोडशाहेषु यदि भानुर्निरन्तरम्।**
**वहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकैः॥**

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित हो तो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

**१८. सम्पूर्ण बहते सूर्यचन्द्रमानैव दृश्यते।**
**पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥**

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहे और एक बार भी वाम नासिका से न बहे तो पक्ष वा १५ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

**१९. सम्पूर्ण बहते चन्द्रः सूर्यो नैव च दृश्यते।**
**मासेन दृश्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥**

यदि किसी मनुष्य के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहता रहे और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महाने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

**२०. रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो बहेत् यस्यनिरन्तरम्।**
**विजानीयास्तस्य मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरेध्रुवम्॥**

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि में और दक्षिण नासिका से दिन में बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चय जानो।

* सब लोग यही जानते हैं कि दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ ही समान श्वास वायु चला करती है, पर यह लोगों का भ्रम है। एक-एक घण्टे एक नासिका छिद्र से प्रबल रूप से और दूसरे एक छिद्र से बहुत ही निर्बल अथवा नहीं के समान श्वास वायु बहता है। पर दोनों से समान वायु कभी-कभी ही बहा करती है, जो भी परमायुनाशक और विपद् आदि का पूर्व रूप होता है। इस विषय को विस्तार रूप से जिन्हें देखना हो वह हमारी "मनोकामना सिद्धि" और "वनौषधि चिकित्सा" नामक ग्रन्थ में देखें।

**२१. अरुन्धतीं ध्रुवञ्चैव विष्णोस्त्रीणिपैदानिच।**
**आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थ मातृमण्डलम्॥**

जिस मनुष्य की आयु हीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नहीं पड़ते।

**सूचना**—यह तारागण आकाश में सदैव उदय होते हैं, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते हैं, जो न जानते हों वे किसी से पूछकर जान सकते हैं।

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है, यथाहि—

**२२. अरुन्धती भवेज्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते।**
**भ्रुवोर्मध्ये विष्णु पदं तारके मातृमण्डलम्॥**

अर्थात् जीभ की अरुन्धती, नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनों भोहों के बीच का भाग विष्णु पद और आंखों का तारा मातृमण्डल कहलाते हैं।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आंखों से बिना दर्पण आदि के नहीं देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

## आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे हुए पदार्थों में से आँख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषों ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरों को किसी भी अंगुली से किञ्चित् दबाओ, तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरित दिशा में आँखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृ-मण्डल कहते हैं, यद्यपि यह सदैव ऐसा करने पर दिखाई दिया करता है, पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे नहीं दिखाई देता।

**२३. दन्ताश्चदृषणौ यस्य न किञ्चिदपि षोड्यते।**
**तृतीये मासिचावश्यं कालग्रासो भवेन्नर॥**

जिस मनुष्य के दाँत और अण्डकोष को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नहीं होती वह ३ महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

**२४. मध्यमांगुलिनां त्रितयं वक्रयातिरुजम्बिना।**
**षण्मासेतस्यमृत्युः स्याद्यस्यकण्ठोऽपिशुष्यति॥**

जिस मनुष्य के हाथ की बीच की तीन अंगुलियां तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेढ़ी हो जायें और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी छः महीने में निश्चय मृत्यु होगी।

**२५. वाष्पं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत्।**
**प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति॥**

जो मनुष्य जाग्रत वा निद्रितावस्था वा स्वप्न में मलमूत्र, सुवर्ण तथा चाँदी के समान देखें, वह १० महीने में मरेगा।

**२६. मर्त्यैर्लक्षितलक्षणैर्हिसलिले भानुर्यदादृश्यते।**
**क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासकतः॥**
**मध्यं छिद्रमिदंभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने।**
**सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम्॥**

सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया दक्षिण की ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दीखे तो तीन महीने और उत्तर की ओर कटी दीखे तो दो महीने में और पूर्व की ओर कटी दीखे तो एक महीने में, छाया के बीच में छिद्र दीखे तो दस दिन में और छाया को धुंए के रंग देखे तो उसी दिन मृत्यु होगी।

२७. जो मनुष्य दीप बुझने पर उसकी गंध अनुभव नहीं करता और रात्रि में अग्नि को देखकर भय मानता है वह छः महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकता।

२८. जिसके शरीर से अग्नि की गन्ध आती हो तो वह एक महीने के बाद मर जायेगा।

२९. दक्षिण की मुट्ठी बन्द करके नाक की सीध में और भौंहों के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 189

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु के छः महीने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देने लगती है।

३०. जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पांच महीने में यमालय में पहुँच जायेगा अर्थात् पांच महीने में मर जायेगा।

३१. जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाय उसकी मृत्यु छः महीने में अवश्य होगी।

## स्वप्न फल विचार

मृत्यु से पूर्व जिस प्रकार शारीरिक विकार से पीछे कहे हुए लक्षण प्रकट होते हैं, उसी प्रकार अरिष्टजनक स्वप्न भी दिखाई पड़ते हैं। स्वप्नों का वर्णन वेद तक में पाया जाता है। मनुष्य जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन करता और जिन वस्तुओं को इस जन्म में देखता व सुनता है अथवा पूर्व किसी जन्म में देखा वा सुना वा चिन्तन किया हो उन्हीं विषयों के सम्बन्धी अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार स्वप्न में देखता है अतः कैसा भी असम्बन्ध असामञ्जस्य भिन्न-भिन्न स्थान, भिन्न-भिन्न लोक आदि असम्भव से असम्भव स्वप्न भी क्यों न देखे जायें सब ठीक हैं। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्न सफल नहीं होते हैं। अतः यह भलीभाँति स्मरण रखने योग्य है कि कौन-कौन से स्वप्न ठीक नहीं होते और कौन-कौन से ठीक होते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन शास्त्रों से यहां उद्धृत कर देते हैं।

**चिन्ताव्याधिसमायुक्तोनरः स्वप्नञ्चपश्यति।**
**तत्सर्वं निष्फलं तात प्रयात्यवे न संशयः॥**
**जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुलः।**
**दिगम्बरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं॥**

अर्थात् चिन्ता और व्याधि (रोग) रामायुत मनुष्य जो स्वप्न देखता है वह सब हे तात! निष्फल हैं इसमें संशय न करो।

मुत्र, पुरीष दुःखित, भयाकुल चित्त, बाल खुले और सोते में पहने हुए वस्त्र खुल जाने से अथवा नंगे होकर सोने वाले को जो स्वप्न दिखाई पड़ते हैं उनका फल कुछ नहीं होता।

**दृष्ट्वास्वप्नञ्च निद्रःलुर्यदि निद्रां प्रयातिच।**
**............ नलभेत स्वप्नजं फलं॥**
**उक्त्वाकाश्यपगोत्राय विपत्तिं लभते ध्रुवं।**
**प्रकाशयेन्न सुस्वप्नः पण्डिते कश्यपान्वये॥**

अर्थात् स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाने से तथा काश्यपगोत्रज मनुष्य से स्वप्न का वर्णन कर देने से फिर उसका फल नहीं मिलता।

धातु विकार की दशा में कभी भी देखा स्वप्न दिखाई पड़े तो वह ठीक नहीं होता।

## मृत्यु सूचक स्वप्न

१. जो मनुष्य लाल, श्वेत रस अथवा विष्ठा मूत्र को वमन होते देखे, उसकी केवल १० महीने आयु समझनी चाहिए।
२. जो कोई आदमी स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते, अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए।
३. जो आदमी भयानक काले रंग के आदमी को हथियार लिये वा पत्थर से मारने को देखे तो उसकी उसी दिन मृत्यु होगी।
४. जो आदमी नंग धड़ंगा फकीर को नाचते, हंसते और क्रूर दृष्टि से अपनी ओर देखते देखे तो समझ लो कि शीघ्र ही मृत्यु होगी।
५. काले रंग का काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिये सन्मुख खड़ा दीखे तो ३ महीने में मृत्यु होगी।
६. जो मनुष्य काले रंग की स्त्री दोनों बाहुओं से पकड़े वह छः महीने पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगा।
७. अपने शरीर को गन्ध पुष्प आदि से भूषित देखे तो समझ लो ८ महीने से अधिक नहीं बचेगा।
८. राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर अपने को खड़े हुये देख पड़े तो ८ महीने मात्र जीवित रहना चाहिए।
९. अपने मस्तक वा शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखने से ६ महीने जीवित रहना चाहिए।
१०. श्रृगाल, कुक्कुर, शूकर, शकुनि, राक्षस, असुर, पिशाच, भूत, प्रेत, पतङ्ग, कुरङ्ग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन हो अथवा इन्हें खाते हुए देखे तो एक वर्ष में निश्चय यमलोक को जाना होगा।
११. अपने मुख से सब दांत गिर पड़े हुए देख पड़े तो शीघ्र मृत्यु होगी।
१२. बन्दर की पीठ पर चढ़कर पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई पड़े तो पांच दिन में मरण होगा।
१३. गधा व भेंस की पीठ पर चढ़ कर दक्षिण की ओर जाता देख पड़े तो उसकी मृत्यु सन्निकट समझो।

## विशेष ध्यान देने योग्य

१४. उक्त मृत्यु सूचक स्वप्नों में सब ही एक आदमी को दिखाई नहीं पड़ते हैं। इनमें से कोई-कोई स्वप्न किसी-किसी को एक अथवा अधिक दिखाई पड़ते हैं। पर २१ और २७ नम्बर पर लिखित चिह्न प्रत्येक को देख पड़ते हैं। यह जब देख पड़ें तब से नित्य प्रायः तारामण्डल को देखते रहना चाहिए। जिस दिन तारामण्डल न दिखाई दे उस दिन से दशवें दिन मृत्यु होना निश्चय जान लें। और संसार से मोह छोड़ पुण्य काम कर परमेश्वर का स्मरण करते हुए मृत्यु के लिये प्रस्तुत रहना चाहिए। और "अन्तेयादशीमति गतिर्भवतितादृशी" के लिये मन को स्थिर करना चाहिए। यदि स्थिरता न हो सके क्योंकि "मनश्चञ्चलमस्थिरम्" तो उत्तम भावना रखनी चाहिए कि जिससे आगामी जन्म उत्तम कुल में प्राप्त हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं-जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात् निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

| स्वप्न | फल |
|---|---|
| आकाश में उड़ना | लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो |
| आकाश से गिरना | कष्ट मिले, अवनति हो |
| अनाज भरना | धन लाभ हो |
| आग देखना | धन प्राप्ति हो |
| आग उठाना | कष्ट मिले |
| अनाज बेचना | हानि हो |
| अंगूठी पहनना | सुन्दर स्त्री मिले |
| आम खाना | लाभ मिले |
| आंधी देखना | यात्रा में कष्ट, चिन्ता |
| अनार खाना | अधिक धन लाभ हो |
| ऊंट देखना | लाभ, उन्नति हो |
| ऊंट से गिरना | अवनति हो |
| हंसना | कठिनाई आवे |
| रोना | अच्छा समाचार मिले |
| शत्रु के साथ खाना | समझौता हो |
| अपने को मृत देखना | चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले |
| अपने को बूढ़ा देखना | सम्मान मिले |
| बाल कटाना | व्यापार में हानि |
| हाथ, पैर धोना | चिन्ता मुक्ति |
| मां का आलिंगन करना | सौभाग्य प्राप्ति |
| गर्भवती का आलिंगन | कष्ट, हानि |
| सफेद मांस देखना | लाभ मिले |
| काला मांस देखना | सन्तान को कष्ट |
| अपना कटा पैर देखना | यात्रा में विघ्न हो |
| स्वयं को जलते देखना | बदनामी हो |
| सफेद वस्त्र पहनना | लाभ मिले |
| काले वस्त्र पहनना | हानि चिन्ता |
| पीले वस्त्र पहनना | दमा रोग हो |
| लाल वस्त्र पहनना | शुभ , प्रशंसा मिले |
| वस्त्र फटे देखना | चिन्ता से मुक्ति मिले |
| बर्फ गिरती देखना | शत्रु वृद्धि हो |

| स्वप्न | फल |
|---|---|
| सूखा वृक्ष देखना | लाभ मिले |
| दूध देखना | शत्रु नष्ट हो |
| शराब फैंकना | मन को शान्ति मिले |
| शराब पीना | कष्ट मिले |
| कई प्रकार की शराब मिलाते देखना | झगडे, फसाद में फंसे, अपवाद फैले |
| जल पीना | सौभाग्य सूचक |
| अपने को नंगा देखना | सम्पत्ति की हानि |
| अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना | कठिनाइयों का सामना करना पड़े |
| सांपों को पांवों से रौंदना | शत्रु का नाश हो |
| मिठाई खाना | विपत्ती आये |
| तलवार लिए व्यक्ति देखना | किसी से झगड़ा हो |
| बिच्छू काटे | बीमारी हो |
| अण्डे खाना | व्यर्थ का झगड़ा हो |
| कुत्ता भौंकता दिखे | शत्रुओं का नाश हो |
| चूहा दिखाई दे | शुभ है, लाभ हो |
| बर्रे (भिड, ततैया) दिखें | शत्रु परास्त हों |
| मरा बैल देखना | सूखा पड़े |
| सुरमा लगाना | रोग हो |
| सूर्य देखना | उच्चाधिकारी से मिलना |
| बादल देखना | उन्नति हो |
| थूक देखना | परेशानी हो |
| थूकना | खर्चा बढ़े |
| भैंस देखना | मुसीबत आये |
| हंस देखना | प्रतिष्ठा बढ़े |
| भेड़िया देखना | राजभय हो |
| अपने बाल सफेद देखना | आयु बढ़े |
| मल (टट्टी) खाना | धन मिले |
| मल त्यागना | व्यय बढ़े |
| कोई फल दे | पुत्र हो, लाभ हो |

| स्वप्न | फल |
|---|---|
| फूल देखना | प्रेमी से मिलन हो |
| पकवान खाना | प्रसन्नता हो |
| पान खाना | स्त्री संग हो |
| पिंजड़ा देखना | कारागार मिले |
| तीतर देखना | अच्छा समाचार मिले |
| हरा वन देखना | अच्छा समाचार मिले |
| सूखा वन देखना | चिन्ता हो |
| तालाब भरा देखना | दूसरे से धन मिले |
| मुर्दा देखना | स्वास्थ्य लाभ हो |
| स्त्री से सहवास करना | धन प्राप्ति हो |
| चन्द्रमा देखना | प्रतिष्ठा मिले |
| ग्रहण देखना | आफत आये |
| तेल पीना | रोग हो |
| खाना बनाना | बच्चे बीमार हों |
| तिल खाना | बदनामी हो |
| घोड़े पर चढ़ना | व्यापार में लाभ |
| घोड़े से गिरना | व्यापार में हानि |
| बांहे कटी देखना | भाई की मृत्यु हो |
| सुअर देखना | आयु कम हो |
| बुलबुल देखना | विद्वानों से मिलन हो |
| चित्र देखना | राज्य से लाभ |
| जुआ खेलना | आर्थिक तंगी |
| कुएं में गिरना | परेशानी हो |
| कुत्ता काटे | शत्रुभय हो |
| सफेद सांप काटे | लाभ हो |
| काला सांप काटे | हानि हो |
| लाल सांप काटे | शौर्यपूर्ण कार्य करे |
| पीला सांप काटे | रोग हो |
| बरात देखना | रोगी हो |
| रीछ देखना | अच्छा समाचार मिले |
| विष खाना | चिन्ता, शोक हो |
| सोना पाना | हानि हो |
| सांप पकड़ना | शत्रु का नाश हो |
| सांप मारना | कष्ट से राहत मिले |
| चीता देखना | असफलता मिले |
| विद्यालय से भागना | सफलता मिले |
| ढोलक बजाना (स्त्री) | शीघ्र विवाह हो |
| ढोलक बजाना (पुरुष) | कठिनाई आये |
| हस्ताक्षर करना | धन हानि हो |
| स्याही देखना | इच्छाएं पूरी हों |
| बिल्ली देखना | हानि, भय |

| स्वप्न | फल |
|---|---|
| चूहा काटे | दुर्घटना से बचाव |
| रथ पर सवारी करना | उच्च पद मिले |
| जिह्वा (जीभ) कटी देखना | मन्त्री पद मिले |
| वमन (उलटी) पीना | राज्य पद मिले |
| जीभ पर लिखना | विद्या प्राप्ति हो |
| नगर व ग्राम को घेरना | मुखिया पद मिले |
| गले में मोती का हार पहनना | राज्य पद मिले |
| कानों में कुण्डल पहनना | राज्य पद मिले |
| मुकुट धारण करना | राज्य पद मिले |
| लिङ्ग कटा देखना | स्त्री की प्राप्ति हो |
| वीर्य पान करना | धन मिले |
| मूत्र पान करना | धन मिले |
| रक्त पान करना | धन मिले |
| शरीर से रक्त निकलना | धन मिले |
| अपना सिर काटना | धन मिले |
| गुदा से जल पीना | धन मिले |
| घर जलता देखना | धन मिले |
| इन्द्र धनुष देखना | धन मिले |
| शिव मंदिर देखना | धन मिले |
| धुंआ पीना | लक्ष्मी मिले |
| अग्नि खाना | लक्ष्मी मिले |
| मोती, मूंगा, कौड़ी देखना | धन प्राप्ति हो |
| चावल खाना | धन प्राप्ति हो |
| मूंग खाना | धन प्राप्ति हो |
| सूखे मेवे देखना | धन प्राप्ति हो |
| इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना | धन मिले |
| गन्ना चूसना | लक्ष्मी बढ़े |
| कुंकुम लगाना | कष्ट निवृत्ति हो |
| देवी, देवता देखना | कष्ट निवृत्ति हो |
| सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना | सम्मान मिले |
| झाग वाला दूध पीना | सम्मान मिले |
| फल खाना व देखना | सम्मान मिले |
| बादलों, तारों को छूना | सम्मान मिले |
| मक्खी, मच्छर काटें | स्त्री लाभ मिले |
| हाथ में वीणा लेना | स्त्री लाभ मिले |
| अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना | स्त्री लाभ मिले |
| गेहूँ, जौ, सरसों देखना | विद्या लाभ हो |
| भगवान विष्णु देखना | विद्या लाभ हो |

| स्वप्न | फल |
|---|---|
| सरस्वती देखना | विद्या लाभ हो |
| जूते फटे देखना | सन्तति नाश हो |
| सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें | मृत्यु हो |
| सिंह, मगरमच्छ पकड़ें | कारागार मिले |
| गधे पर सवार होना | मृत्यु हो |
| लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना | मृत्यु हो |
| अपना विवाह देखना | मृत्यु हो |
| कौवे, गीध, नोचते देखना | मृत्यु हो |
| कौवे, गीध सिर पर बैठे | मृत्यु हो |
| पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना | मृत्यु हो |
| सूर्य अस्त होते देखना | मृत्यु हो |
| कान में सर्प घुसना | भयंकर पीड़ा हो |
| अपना मांस खाना | अङ्ग-भङ्ग हो |
| स्त्री का स्तन पान करना | मृत्यु हो |
| शमशान में मदिरा पीना | मृत्यु हो |
| पर्वत की गुफा में जाना | आपत्तियां आएं |
| दांतों का गिरना | धन हानि हो |
| नाक-कान कटना | धन हानि हो |
| जलमुर्गी, उल्लू देखना | धन हानि हो |
| हिरण, बकरा देखना | धन हानि हो |
| जूते चोरी चले जाना | स्त्री वियोग हो |
| दोनों हाथ कटे देखना | माता-पिता की मृत्यु |
| छिपकली देखना | दुर्भाग्य सूचक |
| दर्पण में मुख देखना | सन्तान प्राप्त हो |
| सोने, चांदी की टट्टी करना | दश माह में मृत्यु हो |
| अचानक मोटा होना | आठ माह में मृत्यु हो |
| अचानक पतला होना | आठ माह में मृत्यु हो |
| अपने को कीचड़ में फंसे | शीघ्र मृत्यु हो |
| केंचुए देखना | गुप्त शत्रु हों |
| हाथों में दस्ताने पहनना | सम्मान मिले |
| बकरी देखना | धन लाभ हो |
| ओले गिरते देखना | दु:ख, कष्ट मिले |
| टोपी फटना | मानहानि हो |
| टोपी सिर से गिरना | मानहानि हो |
| स्वर्ग में जाना | यश-गौरव मिले |
| नर्क में जाना | दु:ख क्लेश हो |
| सीढ़ी पर चढ़ना | उन्नति हो |
| शहतूत का पेड़ देखना | धन-सम्पत्ति बढ़े |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## छिपकली ( कोढ़किरली ) पतन फल

| अङ्ग | फल | अङ्ग | फल |
|---|---|---|---|
| सिर | राज्यलाभ | नीचे का होंठ | धन नाश |
| नाक की नोक | व्याधि | हृदय | धन लाभ |
| बायीं बांह | राज भय | उदर | भूषण लाभ |
| दाहिनी बांह | राजा समान सुख | कन्धा | विजय |
| ललाट | बन्धु मिलन | स्तन | दुर्भाग्य सूचक |
| गुल्फ | कारावास | नाभी | बहुत धन मिले |
| जानु | शुभ लाभ | नाखुन | धान्य लाभ |
| नेत्र | धनागम | दाहिने अंगुष्ठ | धन लाभ |
| भौंह | राज्याधिकार प्राप्ति | बायें अंगुष्ठ | हानि, दुःख |
| वाम मणिबंध | बदनामी | बायां पैर | नाश |
| दक्षिण मणिबंध | धन लाभ | दायां पैर | यात्रा |
| कपोल | स्त्री सुख | जंघा | शुभ लाभ |
| कण्ठ | शत्रु नाश | पादमध्य | स्त्री नाश |
| बायें कान | बहुलाभ | पादान्ते | मृत्यु |
| दायें कान | आयु वृद्धि | केशान्ते | मरण तुल्य कष्ट |
| मुख | मिष्ठान्न भोजन | पीठ पीछे | वृद्धि नाश |
| ऊपर का होंठ | ऐश्वर्य प्राप्ति | कटि प्रदेशे | वाहन लाभ |

## अङ्ग स्फुरण विचार

| | | | |
|---|---|---|---|
| सिर | यात्रा हो | बायीं भौंह | आदर, सम्मान |
| बायां माथा | प्रसन्नता | बायां कान | परेशानी |
| दायां माथा | कष्ट, यात्रा | दायां कान | पदोन्नति |
| दायीं आंख | खुशी होगी | गर्दन | लाभ, स्त्री सुख |
| बायीं आंख | स्त्री वियोग | जीभ | झगड़ा |
| भौंह के मध्य | प्रेम मिलन | नाक | खुशी हो |
| बायीं पलक | दुःख कष्ट | पेट | खुशखबरी मिले |
| दायीं पलक | सुख आनन्द | पीठ | बुरा समाचार मिले |
| दाहिनी कपोल | लाभ | अण्डकोष | भोगानन्द मिले |
| बायां कपोल | हानि, व्यय | दायीं बगल | ऐश्वर्य बढ़े |
| दायीं भौंह | पुत्र सुख | बायीं बगल | पद घटे |

## योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चाहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण आरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:— १. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्निया व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

## वर्षा ज्ञान

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १३ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १५ | ५० | ४२ | ३९ | ३४ | २९ | ३० | २८ | २४ | २१ | १६ | १५ | १२ |

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खेंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत् नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन को बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

## चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए। पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

## वर्षा ज्ञान सारणी

| दिसम्बर | जून | जनवरी | जुलाई | फरवरी | अगस्त | मार्च | सितम्बर | अप्रैल | अक्टूबर |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १४ | १ | १५ | १ | १५ | १ | १५ | १ | १५ |
| २ | १५ | २ | १६ | २ | १६ | २ | १६ | २ | १६ |
| ३ | १६ | ३ | १७ | ३ | १७ | ३ | १७ | ३ | १७ |
| ४ | १७ | ४ | १८ | ४ | १८ | ४ | १८ | ४ | १८ |
| ५ | १८ | ५ | १९ | ५ | १९ | ५ | १९ | ५ | १९ |
| ६ | १९ | ६ | २० | ६ | २० | ६ | २० | ६ | २० |
| ७ | २० | ७ | २१ | ७ | २१ | ७ | २१ | ७ | २१ |
| ८ | २१ | ८ | २२ | ८ | २२ | ८ | २२ | ८ | २२ |
| ९ | २२ | ९ | २३ | ९ | २३ | ९ | २३ | ९ | २३ |
| १० | २३ | १० | २४ | १० | २४ | १० | २४ | १० | २४ |
| ११ | २४ | ११ | २५ | ११ | २५ | ११ | २५ | ११ | २५ |
| १२ | २५ | १२ | २६ | १२ | २६ | १२ | २६ | १२ | २६ |
| १३ | २६ | १३ | २७ | १३ | २७ | १३ | २७ | १३ | २७ |
| १४ | २७ | १४ | २८ | १४ | २८ | १४ | २८ | १४ | २८ |
| १५ | २८ | १५ | २९ | १५ | २९ | १५ | २९ | १५ | २९ |
| १६ | २९ | १६ | ३० | १६ | ३० | १६ | ३० | १६ | ३० |
| १७ | ३० | १७ | ३१ | १७ | ३१ | १७ | O१ | १७ | ३१ |
| १८ | J१ | १८ | A१ | १८ | S१ | १८ | २ | १८ | N१ |
| १९ | २ | १९ | २ | १९ | २ | १९ | ३ | १९ | २ |
| २० | ३ | २० | ३ | २० | ३ | २० | ४ | २० | ३ |
| २१ | ४ | २१ | ४ | २१ | ४ | २१ | ५ | २१ | ४ |
| २२ | ५ | २२ | ५ | २२ | ५ | २२ | ६ | २२ | ५ |
| २३ | ६ | २३ | ६ | २३ | ६ | २३ | ७ | २३ | ६ |
| २४ | ७ | २४ | ७ | २४ | ७ | २४ | ८ | २४ | ७ |
| २५ | ८ | २५ | ८ | २५ | ८ | २५ | ९ | २५ | ८ |
| २६ | ९ | २६ | ९ | २६ | ९ | २६ | १० | २६ | ९ |
| २७ | १० | २७ | १० | २७ | १० | २७ | ११ | २७ | १० |
| २८ | ११ | २८ | ११ | २८ | ११ | २८ | १२ | २८ | ११ |
| २९ | १२ | २९ | १२ | | १२ | २९ | १३ | २९ | १२ |
| ३० | १३ | ३० | १३ | | १३ | ३० | १४ | ३० | १३ |
| ३१ | १४ | ३१ | १४ | | १४ | ३१ | १५ | | १४ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS


# अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

## गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

## जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

## जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

## मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

## मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

## कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के वर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

## मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना को ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

## सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

## बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

## अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

## प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्ञ पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं विना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

## गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाम्यन्तरे न दोषः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



**( २ ) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्रः**—इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी में बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दें तो परदेशी शीघ्र आ जावेगा।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ३८ | ६५ | १ | २१ |
| १० | ६३ | ६५ | १६ |
| ४ | ५ | ८७ | ९१ |
| ३९ | २८ | २८ | २८ |

**( ३ ) भूत प्रेत नाशक यंत्रः**—यंत्र को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ८५ | ५६ | ९ | १२ |
| १ | ६१ | ६२ | १४ |
| ४६ | ४ | १८ | ९१ |
| ८ | ६७ | २८ | ५८ |

**( ४ ) बवासीर नाशक यंत्रः**—रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नींबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ३ | ८ | १३ |
| ६५ | ४ | १० | ७७ |
| ७ | ६ | १५ | ८० |
| १२ | ८२ | ११ | १४ |

**( ५ ) पुरुष वशीकरण यंत्रः**—इस यंत्र को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध लें तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ९ | ६५ | २ | ९२ |
| ७५ | ९ | २ | ५२ |
| ९७ | २८ | ८३ | ९१ |
| ६ | ७ | ३९ | ४५ |

**( ६ ) सर्व कार्य सिद्धि यंत्रः**—इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप देकर तांबे के ताबीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५७ | ५८ | ९ | ११ |
| ३३ | ५७ | ४८ | ३७ |
| ८६ | ६ | ४४ | ६८ |
| २५ | ५५ | ६५ | ९ |

**( ७ ) नजर ( दीठि ) दूर करने का यंत्रः**—यंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के ताबीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ४६ | ६ | ८५ | ८५ |
| ९ | ८ | ४२ | २५ |
| ७८ | ७२ | ८ | ५ |
| ७ | ५ | ३५ | ८ |

**( ८ ) सर्व बाधानाशक यंत्रः**—पैंसठिया यंत्र यह सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर '**ॐ श्री ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः**' लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गुगुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के ताबीज में मढ़वाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन संबंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। ***महालक्ष्मी मंत्र—'ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः ॥'***

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| २२ | ३ | ९ | १५ | १६ |
| १४ | २० | २१ | २ | ८ |
| १ | ७ | १३ | १९ | २५ |
| १८ | २४ | ५ | ६ | १२ |
| १० | ११ | १७ | २३ | ४ |

**( ९ ) मुकद्दमा जीतने का यंत्रः**—दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गुगुल, असगंध की धूप देकर चांदी के ताबीज में मढ़वाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकद्दमा चले तब तक बांधे रहें। मुकद्दमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ५९२ | ५९९ | २ | ७ |
| ६ | ३ | ५९६ | ५९५ |
| ५९८ | ५९३ | ८ | १ |
| ४ | ५ | ५९४ | ५९७ |

**( १० ) गर्भधारण यंत्रः**—जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूप-दीप देकर चांदी के ताबीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

| | | | |
|---|---|---|---|
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ॐ | ॐ | ॐ | ॐ |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |
| ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं | ह्रीं |

**( ११ ) सन्तान प्राप्ति यंत्रः**—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रातः ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करें। लिखने की कलम चांदी की होना चाहिए। यंत्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

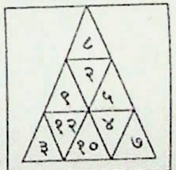


**( १२ ) मंदिर निर्माण यंत्रः**—इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उसका धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर उन यंत्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दें, तो मंदिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

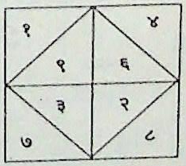


**( १३ ) रोग मुक्ति यंत्रः**—इस यंत्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

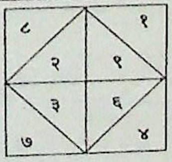


**( १४ ) ईश्वर-भक्ति यंत्रः**—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरम्भ करें तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यंत्र लिखकर अंत में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यंत्र लेख को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

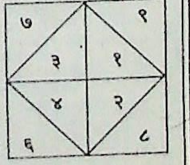


**( १५ ) पदोन्नति यंत्रः**—इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरम्भ करें। यंत्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने से पदोन्नति होती है।

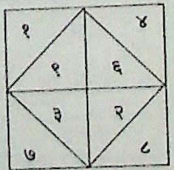


CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सूक्ष्म दशा सारिणी

सूक्ष्म दशा सारिणी की पूर्ण तालिका इस वर्ष हमारे शतक मार्तण्ड में प्रकाशित की गई है। जो सज्जन इसका प्रयोग करना चाहे वह शतक मार्तण्ड खरीदकर इससे लाभ उठा सकते है

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| घटि | १६ | २७ | १८ | ४८ | ४३ | ५१ | ४५ | १८ | ५४ |
| पल | १२ | ०० | ५४ | ३६ | १२ | १८ | ५४ | ५४ | ०० |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ | ०० |
| घटि | ४५ | ३१ | २१ | १२ | २५ | १६ | ३१ | ३० | २७ |
| पल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | १ | ०० | ०० |
| घटि | २२ | ५६ | ५० | ५९ | ५३ | २२ | ३ | १८ | ३१ |
| पल | ३ | ४२ | २४ | ३९ | ३३ | ३ | ०० | ५४ | ३० |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | २ | २ | २ | ०० | २ | ०० | १ | ०० |
| घटि | २५ | ९ | ३३ | १७ | ५६ | ४२ | ४८ | २१ | ५६ |
| पल | ४८ | ३६ | ५४ | ४२ | ४२ | ०० | ३६ | ०० | ४२ |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | २ | ०० | २ | ०० | १ | ०० | २ |
| घटि | ५५ | १६ | २ | ५० | २४ | ४३ | १२ | ५० | ९ |
| पल | १२ | ४८ | २४ | २४ | ०० | १२ | ०० | २४ | ३६ |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | २ | ०० | २ | ०० | १ | ०० | २ | २ |
| घटि | ४२ | २५ | ५९ | ५१ | ५१ | २५ | ५९ | ३३ | १६ |
| पल | २७ | २१ | ५१ | ०० | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | ०० | २ | ०० | १ | ०० | २ | २ | २ |
| घटि | १० | ५३ | ३३ | ४५ | १६ | ५३ | १७ | २ | २५ |
| पल | ३ | ३३ | ०० | ५४ | ३० | ३३ | ४२ | २४ | २१ |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |
| घटि | २२ | ३ | १८ | ३१ | २२ | ५६ | ५० | ५९ | ५३ |
| पल | ३ | ०० | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ |

**सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | ०० | १ | १ | २ | २ | २ | २ | १ |
| घटि | ०० | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २८ | ५१ | ३३ | ३ |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ | ०० |
| घटि | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ | ५२ | ३० | ४५ |
| पल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ | ० | ०० |
| घटि | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ | ३६ | ४५ | ३१ | ५२ |
| पल | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ |
| घटि | ३ | ३६ | १६ | ४९ | ३४ | ३० | २१ | १५ | ३४ |
| पल | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | ३ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ३ |
| घटि | १२ | ४८ | २४ | २४ | ०० | १२ | ०० | २४ | ३६ |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ |
| घटि | ३० | २ | ३९ | ४५ | २५ | २२ | ३९ | १६ | ४८ |
| पल | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ३ | ३ | ४ |
| घटि | ३६ | २९ | १५ | १६ | ७ | २९ | ४९ | २४ | २ |
| पल | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ |
| घटि | ३६ | ४५ | ३१ | ५२ | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ |
| पल | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ |
| घटि | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ |
| घटि | २७ | ४५ | ३१ | २१ | १२ | २५ | १६ | ३१ | ३० |
| पल | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | १ | १ | ०० | १ | ०० | ०० |
| घटि | २५ | ६ | ५८ | ९ | २ | २५ | १७ | २२ | ३६ |
| पल | ४३ | ९ | ४८ | ४९ | २८ | ४३ | ३० | ३ | ४५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ०० | १ | १ |
| घटि | ५० | ३१ | ५९ | ४० | ६ | ९ | ५६ | ३४ | ६ |
| पल | ६ | १२ | ३३ | ३९ | ९ | ०० | ४२ | ३० | ९ |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | २ | २ | ०० | २ | ०० | १ | ०० | २ |
| घटि | १४ | ३९ | २२ | ५८ | ४८ | ५० | २४ | ५८ | ३१ |
| पल | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | १ | ३ | ०० | १ | १ | २ | २ |
| घटि | ९ | ४९ | ९ | १९ | ५९ | ३९ | ९ | ५९ | ३९ |
| पल | ३१ | ३४ | ४९ | ३० | ५१ | ४५ | ४९ | ३३ | ३६ |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | २ | ०० | १ | १ | २ | २ | २ |
| घटि | ३१ | २ | ५८ | ५३ | २९ | २ | ४० | २२ | ४९ |
| पल | ४३ | २८ | ३० | ३३ | १५ | २८ | ३९ | ४८ | ३४ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | ०० | ०० | १ | ०० | १ | १ |
| घटि | २५ | १३ | २२ | ३६ | २५ | ६ | ५८ | ९ | २ |
| पल | ४३ | ३० | ३ | ४५ | ४३ | ९ | ४८ | ४९ | २८ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| घटि | ३० | ३ | ४५ | १३ | ९ | ४८ | १९ | ५८ | १३ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | १ |
| घटि | १८ | ३१ | २२ | ५६ | ५० | ५९ | ५३ | २२ | ३ |
| पल | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ०० |

**सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ | ०० |
| घटि | ५२ | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ | ३६ | ४५ | ३१ |
| पल | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहुादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ७ | ६ | ७ | ६ | २ | ८ | २ | ४ | २ |
| घटि | १७ | २८ | ४१ | ५३ | ५० | ६ | २५ | ३ | ५० |
| पल | २४ | ४८ | ४२ | ६ | ६ | ०० | ४८ | ०० | ६ |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | जी | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | ६ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ६ |
| घटि | ४५ | ५० | ७ | ३१ | १२ | ९ | ३६ | ३१ | २८ |
| पल | ३६ | २४ | १२ | १२ | .०० | ३६ | ०० | १२ | ४८ |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | श | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | ७ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ |
| घटि | ७ | १६ | ५९ | ३३ | ३३ | १६ | ५९ | ४१ | ५० |
| पल | २१ | ३ | ३३ | ०० | ५४ | ३० | ३३ | ४२ | .२४ |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | बु | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ६ | ६ | ७ |
| घटि | ३० | ४ | ३९ | १७ | ४९ | ४० | ५३ | ७ | १६ |
| पल | ९ | ३९ | ०० | ४२ | ३० | ३९ | ६ | १२ | ३ |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | के | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ३ | ०० | १ | १ | २ | २ | २ | २ |
| घटि | ६ | ९ | ५६ | ३४ | ६ | ५० | ३१ | ५९ | ४० |
| पल | ९ | ०० | ४२ | ३० | ९ | ६ | १२ | ३३ | ३९ |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | शु | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ९ | २ | ४ | ३ | ८ | ७ | ८ | ७ | ३ |
| घटि | ०० | ४२ | ३० | ९ | ६ | १२ | ३३ | ३९ | ९ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | सू | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ |
| घटि | ४८ | २१ | ५६ | २५ | ९ | ३३ | १७ | ५६ | ४२ |
| पल | ३६ | ०० | ४२ | ४८ | ३६ | ५४ | ४२ | ४२ | ०० |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | च | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ४ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ |
| घटि | १५ | ३४ | ३ | ३६ | १६ | ४९ | ३४ | ३० | २१ |
| पल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |

**सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहा: | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | च |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ०० | १ |
| घटि | ६ | ५० | ३१ | ५९ | ४० | ६ | ९ | ५६ | ३४ |
| पल | ९ | ६ | १२ | ३३ | ३९ | .९ | ०० | ४२ | ३० |

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | ६ | ५ | २ | ६ | १ | ३ | २ | ५ |
| घटि | ७ | ६ | २६ | १४ | २४ | ५५ | १२ | १४ | ६५ |
| पल | १२ | ४८ | २६ | २४ | ०० | १२ | ०० | २४ | ३६ |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ७ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ६ | ६ |
| घटि | १३ | २७ | ३९ | ३६ | १६ | ४८ | ३९ | ५० | ४ |
| पल | १२ | ३६ | ३६ | ०० | ४८ | ०० | ३६ | २४ | ४८ |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | २ | ६ | २ | ३ | २ | ६ | ५ | ६ |
| घटि | ४६ | २२ | ४८ | २ | २४ | २२ | ७ | २६ | २७ |
| पल | ४८ | ४८ | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ | २४ | ३६ |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | २ | ०० | १ | ०० | २ | २ | २ | २ |
| घटि | ५८ | ४८ | ५० | २४ | ५८ | ३१ | १४ | ३९ | २२ |
| पल | ४८ | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ | २४ | ३६ | ४८ |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ | ७ | ६ | २ |
| घटि | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ४८ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | २ | १ | २ | २ | ०० | २ |
| घटि | ४३ | १२ | ५० | ९ | ५५ | २६ | २ | ५० | २४ |
| पल | १२ | ०० | २४ | ३६ | १२ | ४८ | २४ | २४ | ०० |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | ४ | १ |
| घटि | ०० | २४ | ३६ | १२ | ४८ | २४ | २४ | ०० | १२ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ | ०० | १ |
| घटि | ५८ | ३१ | १४ | ३९ | २२ | ५८ | ४८ | ५० | २४ |
| पल | ४८ | १२ | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ०० | २४ | ०० |

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | ५ | ६ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ |
| घटि | २७ | ४५ | ५० | ७ | ३१ | १२ | ९ | ३६ | ३१ |
| पल | ३६ | ३६ | २४ | १२ | १२ | ०० | ३६ | ०० | १२ |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | ७ | ३ | ९ | २ | ४ | ३ | ८ | ७ |
| घटि | ३४ | ४० | ९ | १ | ४२ | ३० | ९ | ७ | १३ |
| पल | २५ | १६ | ३१ | ३० | २७ | ४५ | ३१ | २१ | १२ |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ | ७ |
| घटि | ५१ | ४९ | ४ | २५ | २ | ४९ | १६ | २० | ४० |
| पल | ४९ | ३४ | ३० | २१ | १५ | ३४ | ३ | ३६ | १६ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ३ | ०० | १ | १ | २ | २ | ३ | २ |
| घटि | ९ | १९ | ५९ | ३९ | ९ | ५९ | ३९ | ९ | ४९ |
| पल | ४९ | ३० | ५१ | ४५ | ४९ | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ९ | २ | ४ | ३ | ८ | ७ | ९ | ८ | ३ |
| घटि | ३० | ५१ | ४५ | १९ | ३३ | ३६ | १ | ४ | १९ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ |
| घटि | ५४ | २५ | ५९ | ३३ | १६ | ४२ | २५ | ५९ | ५१ |
| पल | १८ | ३० | ५१ | ५४ | ४८ | २७ | २१ | ५१ | ०० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | १ | ४ | १ |
| घटि | २२ | ३९ | १६ | ४८ | ३० | २ | ३९ | ४५ | २५ |
| पल | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | २ | ३ | २ | १ | ३ | ०० | १ |
| घटि | ९ | ५९ | ३९ | ९ | ४९ | ९ | १९ | ५९ | ३९ |
| पल | ४९ | ३३ | ३६ | ३१ | ३४ | ४९ | ३० | ५१ | ४५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ७ | ६ | ८ | ७ | २ | ८ | २ | ४ | २ |
| घटि | ४२ | ५० | ७ | १६ | ५९ | ३३ | ३३ | १६ | ५९ |
| पल | ४२ | २४ | २१ | ३ | ३३ | ०० | ५४ | ३० | ३३ |

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | ७ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ६ |
| घटि | ४ | १३ | २० | ३९ | ३६ | १६ | ४८ | ३९ | ५० |
| पल | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ०० | ४८ | ०० | ३६ | २४ |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ६ | ५ | ६ |
| घटि | ८ | ३१ | १३ | १० | ३६ | ३१ | ३० | ४६ | ५१ |
| पल | २८ | ४३ | ३० | ३ | ४५ | ४३ | ९ | ४८ | ४९ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | ०० | १ | १ | २ | २ | २ | २ |
| घटि | २ | ५८ | ५३ | २९ | २ | ४० | २२ | ४९ | ३१ |
| पल | २८ | ३० | ३३ | १५ | २८ | ३९ | ४८ | ३४ | ४३ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ | ८ | ७ | २ |
| घटि | ३० | ३३ | १५ | ५८ | ३९ | ४८ | ४ | १३ | ५८ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ |
| घटि | ४५ | १६ | ५३ | १७ | २ | २५ | १० | ५३ | ३३ |
| पल | ५४ | ३० | ३३ | ४२ | २४ | २१ | ३ | ३३ | ०० |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ |
| घटि | ७ | २९ | ४९ | २४ | २ | ३६ | २९ | १५ | १६ |
| पल | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ०० | १ |
| घटि | २ | ४० | २२ | ४९ | ३१ | २ | ५८ | ५३ | २९ |
| पल | २८ | ३९ | ४८ | ३४ | ४३ | २८ | ३० | ३३ | १५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | ५ | ७ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ |
| घटि | ५३ | ७ | १६ | ३० | ४० | ३९ | १७ | ४९ | ४० |
| पल | ६ | १२ | ३ | ९ | ३९ | ०० | ४२ | ३० | ३९ |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | ६ | ५ | २ | ६ | २ | ३ | २ | ६ |
| घटि | २६ | २७ | ४६ | २२ | ४८ | २ | २४ | २२ | ७ |
| पल | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ |

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ७ | ६ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ |
| घटि | ४० | ५१ | ४९ | ४ | २५ | २ | ४९ | १६ | २० |
| पल | १६ | ४९ | ३४ | ३० | २१ | १५ | ३४ | ३ | ३६ |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | बु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | ०० | ०० | १ | ०० | १ | १ |
| घटि | २५ | १३ | २२ | ३६ | २५ | ६ | ५८ | ९ | २ |
| पल | ४३ | ३० | ३ | ४५ | ४३ | ९ | ४८ | ४९ | २८ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ |
| घटि | ३० | ३ | ४५ | १३ | ९ | ४८ | १९ | ५८ | १३ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | १ |
| घटि | १८ | ३१ | २२ | ५५ | ५० | ५९ | ५३ | २२ | ३ |
| पल | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ०० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | ६ | ५ | ६ | ५ | २ | ६ | २ |
| घटि | २२ | २१ | ६ | २८ | २४ | ४४ | २१ | ४५ | १ |
| पल | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | १ | १ | ०० | १ | ०० | ०० |
| घटि | २५ | ६ | ५८ | ९ | २ | २५ | १३ | २२ | ३६ |
| पल | ४३ | ९ | ४८ | ४९ | २८ | ४३ | ३० | ३ | ४५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | २ | २ | २ | १ | ३ | ०० | १ | १ |
| घटि | ५० | ३१ | ५९ | ४० | ६ | ९ | ५६ | ३४ | ६ |
| पल | ६ | १२ | ३३ | ३९ | ९ | ०० | ४२ | ३० | ९ |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | २ | २ | ०० | २ | ०० | १ | ०० | २ |
| घटि | १४ | ३९ | २२ | ५८ | ४८ | ५० | २४ | ५८ | ३१ |
| पल | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | १ | ३ | ०० | १ | १ | २ | २ |
| घटि | ९ | ४९ | ९ | १९ | ५९ | ३९ | ९ | ५९ | ३९ |
| पल | ३१ | ३४ | ४९ | ३० | ५१ | ४५ | ४९ | ३३ | ३६ |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | २ | ०० | १ | १ | २ | २ | २ |
| घटि | ३१ | २ | ५८ | ५३ | २९ | २ | ४० | २२ | ४९ |
| पल | ४३ | २८ | ३० | ३३ | १५ | २८ | ३९ | ४८ | ३४ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १० | ३ | ५ | ३ | ९ | ८ | ९ | ८ | ३ |
| घटि | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | ३ |
| घटि | ५४ | ३० | ३ | ४२ | २४ | ५१ | ३३ | ३ | ०० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ |
| घटि | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ३ | २ | ३ | २ | १ | ३ | १ | १ |
| घटि | १३ | ९ | ४८ | १९ | ५८ | १३ | ३० | ३ | ४५ |
| पल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | ७ | ८ | ७ | ३ | ९ | २ | ४ | ३ |
| घटि | ६ | १२ | ३३ | ३९ | ९ | ०० | ४२ | ३० | ९ |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | ७ | ६ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ७ |
| घटि | २४ | ३६ | ४८ | ४८ | ०० | २४ | ०० | ४८ | १२ |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ९ | ८ | ३ | ९ | २ | ४ | ३ | ८ | ७ |
| घटि | १ | ४ | १९ | ३० | ५१ | ४५ | १९ | ३३ | ३६ |
| पल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ७ | २ | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ | ८ |
| घटि | १३ | ५८ | ३० | ३३ | १५ | ५८ | ३९ | ४८ | ४ |
| पल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ | २ |
| घटि | १३ | ३० | ३ | ४५ | १३ | ९ | ४८ | १९ | ५८ |
| पल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | ४ | १ |
| घटि | ५ | २७ | ४५ | २० | ५७ | ३२ | २७ | १० | १५ |
| पल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ०० | १ |
| घटि | १ | ३७ | २० | ४६ | २८ | १ | ५५ | ५२ | २७ |
| पल | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | ६ | ७ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ |
| घटि | ४५ | ०० | ७ | २२ | ३७ | ३० | १५ | ४५ | ३७ |
| पल | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | ६ | ५ | २ | ६ | २ | ३ | २ | ६ |
| घटि | २० | २० | ४० | २० | ४० | ०० | २० | २० | ०० |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ७ | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ७ | ६ |
| घटि | ३१ | ४३ | ४६ | ५५ | २२ | ५७ | ४६ | ७ | २० |
| पल | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ६ | २ | ७ | २ | ३ | २ | ६ | ५ | ६ |
| घटि | १ | २८ | ५ | ७ | ३२ | २८ | २२ | ४० | ४३ |
| पल | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | ०० | १ | १ | २ | २ | २ | २ |
| घटि | १ | ५५ | ५२ | २७ | १ | ३७ | २० | ४६ | २८ |
| पल | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | २ | ४ | २ | ७ | ६ | ७ | ७ | २ |
| घटि | २० | ३० | १० | ५५ | ३० | ४० | ५५ | ५ | ५५ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ |
| घटि | ४५ | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ | ५२ | ३० |
| पल | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | २ | ०० | १ |
| घटि | ४२ | ५० | ३८ | ५६ | ४४ | ४२ | २ | ३६ | १ |
| पल | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ | ५२ | ३० | ४५ | १५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| घटि | ४३ | १२ | ५९ | २७ | ५० | १५ | ३४ | ३७ | ५० |
| पल | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ |
| घटि | ४६ | २६ | ५८ | ३८ | ४० | २४ | २० | ३८ | १२ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ |
| घटि | १५ | ४२ | ५६ | ३२ | ३९ | ४६ | ५६ | ५९ | २६ |
| पल | ५२ | ३७ | २२ | ३० | ४५ | १५ | २२ | १५ | ०० |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ |
| घटि | १२ | ४४ | ५७ | २९ | २८ | ४४ | २७ | ५८ | ४२ |
| पल | ५२ | ७ | ३० | १५ | ४५ | ७ | ४५ | ०० | ३७ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | २ | ०० | १ | ०० | १ | १ | १ | १ |
| घटि | ४२ | २ | ३६ | १ | ४२ | ५० | ३८ | ५६ | ४४ |
| विपल | ५२ | ३० | ४५ | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ |
| पल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ०० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | १ | २ | २ | ५ | ४ | ५ | ४ | २ |
| घटि | ५० | ४५ | ५५ | २ | १५ | ४० | ३२ | ५७ | २ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ |
| घटि | ३१ | ५२ | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ | ३६ | ४५ |
| पल | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० |

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ०० |
| घटि | २७ | १ | ३७ | २० | ४६ | २८ | १ | ५५ | ५२ |
| पल | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १२ | १० | १२ | ११ | ४ | १३ | ४ | ६ | ४ |
| घटि | ९ | ४८ | ४९ | २८ | ४३ | ३० | ३ | ४५ | ४३ |
| पल | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ९ | ११ | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ | १० |
| घटि | ३५ | २४ | १२ | १२ | ०० | ३६ | ०० | १२ | ४८ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १३ | १२ | ४ | १४ | ४ | ७ | ४ | १२ | ११ |
| घटि | ३२ | ६ | ५९ | १५ | १६ | ७ | ५९ | ४९ | २४ |
| पल | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ | ११ | १० | १२ |
| घटि | ५० | २७ | ४५ | ४९ | २२ | २७ | २८ | १२ | ६ |
| पल | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ |
| घटि | ५० | १५ | ३४ | ३७ | ५० | ४३ | १२ | ५९ | २७ |
| पल | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १५ | ४ | ७ | ५ | १३ | १२ | १४ | १२ | ५ |
| घटि | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ |
| घटि | २१ | १५ | ३४ | ३ | ३६ | १६ | ४९ | ३४ | ३० |
| पल | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | ६ | ६ | ७ | ६ | २ | ७ | २ |
| घटि | ४५ | ३७ | ४५ | ०० | ७ | २२ | ३७ | ३० | १५ |
| पल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | १ |
| घटि | ५० | ४३ | १२ | ५९ | २७ | ५० | १५ | ३४ | ३७ |
| पल | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ८ | १० | ९ | ३ | १० | ३ | ५ | ३ | ९ |
| घटि | ३२ | ८ | ४ | ४४ | ४० | १२ | २० | ४४ | ३६ |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १२ | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ | ११ | १० |
| घटि | २ | ४६ | २६ | ४० | ४८ | २० | २६ | २४ | ८ |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ९ | ३ | ११ | ३ | ५ | ३ | १० | ९ | १० |
| घटि | ३८ | ५८ | २० | २४ | ४० | ५८ | १२ | ४ | ४६ |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ | ३ |
| घटि | ३८ | ४० | २४ | २० | ३८ | १२ | ४४ | २६ | ५८ |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १३ | ४ | ६ | ४ | १२ | १० | १२ | ११ | ४ |
| घटि | २० | ०० | ४० | ४० | ०० | ४० | ४० | २० | ४० |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ | ४ |
| घटि | १२ | ०० | २४ | ३६ | १२ | ४८ | २४ | २४ | ०० |

चन्द्र की दशा में गुरु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | ६ | ५ | ६ | ५ | २ | ६ | २ |
| घटि | २० | २० | ०० | २० | २० | ४० | २० | ४० | ०० |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ४ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ |
| घटि | ३८ | १२ | ४४ | २६ | ५८ | ३८ | ४० | २४ | २० |

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १० | ९ | ११ | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ |
| घटि | ४८ | ३६ | २४ | १२ | १२ | ०० | ३६ | ०० | १२ |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १४ | १२ | ५ | १५ | ४ | ७ | ५ | १३ | १२ |
| घटि | १७ | ४७ | १५ | २ | ३० | ३१ | १५ | ३२ | २ |
| पल | २२ | ७ | ५२ | ३० | ४५ | १५ | ५२ | १५ | ०० |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ११ | ४ | १३ | ४ | ६ | ४ | १२ | १० | १२ |
| घटि | २६ | ४२ | २७ | २ | ४३ | ४२ | ६ | ४६ | ४७ |
| पल | २२ | ३७ | ३० | १५ | ४५ | ३७ | [illegible] | ०० | ७ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ५ | ४ |
| घटि | ५६ | ३२ | ३९ | ४६ | ५६ | ५९ | २६ | १५ | ४२ |
| पल | २२ | ३० | ४५ | १५ | २२ | १५ | ०० | ५२ | ३७ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १५ | ४ | ७ | ५ | १४ | १२ | १५ | १३ | ५ |
| घटि | ५० | ४५ | ५५ | ३२ | १५ | ४० | २ | २७ | ३२ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | १ | ४ |
| घटि | २५ | २२ | ३९ | १६ | ४८ | ३० | २ | ३९ | ४५ |
| पल | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | ७ | ६ | ७ | ६ | २ | ७ | २ |
| घटि | ५७ | ४६ | ७ | २० | ३१ | ४३ | ४६ | ५५ | २२ |
| पल | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ४ | ४ | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ |
| घटि | ५६ | ५९ | २६ | १५ | ४२ | ५६ | ३२ | ३९ | ४६ |
| पल | २२ | १५ | ०० | ५२ | ३७ | २२ | ३० | ४५ | १५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १२ | ११ | १३ | १२ | ४ | १४ | ४ | ७ | ४ |
| घटि | ४९ | २४ | ३२ | ६ | ५९ | १५ | १६ | ७ | ५९ |
| पल | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ |

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १० | १२ | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ | ११ |
| घटि | ८ | २ | ४६ | २६ | ४० | ४८ | २० | २६ | २४ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS





**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ | १० | ९ | ११ |
| घटि | १४ | १२ | २ | ३६ | १ | १२ | ५० | ३८ | २६ |
| पल | ७ | ५२ | ३० | ४५ | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ | ४ |
| घटि | ४४ | ५७ | २९ | २८ | ४४ | २० | ५८ | ४२ | १२ |
| पल | ७ | ३० | १५ | ४५ | ७ | ४५ | ०० | ३० | ५२ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १४ | ४ | ७ | ४ | १२ | ११ | १३ | १२ | ४ |
| घटि | १० | १५ | ५ | ५७ | ४५ | २० | २० | २ | ५७ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | १ | ३ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ |
| घटि | १६ | ७ | २९ | ४९ | २४ | २ | ३६ | २९ | १५ |
| पल | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | ६ | ५ | ६ | ६ | २ | ७ | २ |
| घटि | ३२ | २८ | २२ | ४० | ४३ | १ | २८ | ५ | ७ |
| पल | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ४ | ३ | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ |
| घटि | ४४ | २० | ५८ | ४२ | १२ | ४४ | ५७ | २९ | २८ |
| पल | ७ | ४५ | ०० | ३० | ५२ | ७ | ३० | १५ | ४५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ११ | १० | १२ | १० | ४ | १२ | ३ | ६ | ४ |
| घटि | २४ | १२ | ६ | ५० | २० | ४५ | ४९ | २२ | २० |
| पल | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ९ | १० | ९ | ३ | ११ | ३ | ५ | ३ | १० |
| घटि | ४ | ४६ | ३८ | ५८ | २० | २४ | ४० | ५८ | १२ |

**चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १२ | ११ | ४ | १३ | ४ | ६ | ४ | १२ | १० |
| घटि | ४३ | २६ | ४२ | ५० | २ | ४३ | ४२ | ६ | ४६ |
| पल | ७ | २२ | ३० | ३० | १५ | ४५ | ३० | ४५ | ०० |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | २ | ०० | १ | ०० | १ | १ | १ | १ |
| घटि | ४२ | २ | ३६ | १ | ४२ | ५० | ३८ | ५६ | ४४ |
| पल | ५२ | ३० | ४५ | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | १ | २ | २ | ५ | ४ | ५ | ४ | २ |
| घटि | ५० | ४५ | ५५ | २ | १५ | ४० | ३२ | ५७ | २ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ |
| घटि | ३१ | ५२ | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ | ३६ | ४५ |
| पल | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | १ | २ | २ | २ | २ | १ | २ | ०० |
| घटि | २७ | १ | ३७ | २० | ४६ | २८ | १ | ५५ | ५२ |
| पल | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | २ | ०० | १ |
| घटि | ४२ | ५० | ३८ | ५६ | ४४ | ४२ | २ | ३६ | १ |
| पल | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ | ५२ | ३० | ४५ | १५ |
| विपल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ |
| घटि | ४३ | १२ | ५९ | २७ | ५० | १५ | ३४ | ३७ | ५० |
| पल | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | ४५ |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ |
| घटि | ४८ | २६ | ५८ | ३८ | ४० | २४ | २० | ३८ | १२ |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | ४ | १ | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ |
| घटि | १५ | ४२ | ५६ | ३२ | ३९ | ४६ | ५६ | ५९ | २६ |
| पल | ५२ | ३७ | २२ | ३० | ४५ | १५ | २२ | १५ | ०० |
| विपल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ | ४ |
| घटि | १२ | ४४ | ५७ | २९ | २८ | ४४ | २० | ५८ | ४२ |
| पल | ५२ | ७ | ३० | १५ | ४५ | ७ | ४५ | ०० | ३० |
| विपल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १६ | ५ | ८ | ५ | १५ | १३ | १५ | १४ | ५ |
| घटि | ४० | ०० | २० | ५० | ०० | २० | ५० | १० | ५० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | २ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ | ५ |
| घटि | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | २ | ७ | ६ | ७ | ७ | २ | ८ | २ |
| घटि | १० | ५५ | ३० | ४० | ५५ | ५ | ५५ | २० | ३० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | ५ | ४ | ५ | ४ | २ | ५ | १ | २ |
| घटि | २ | १५ | ४० | ३२ | ५७ | २ | ५० | ४५ | ५५ |
| पल | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १३ | १२ | १४ | १२ | ५ | १५ | ४ | ७ | ५ |
| घटि | ३० | ०० | १५ | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १० | १२ | ११ | ४ | १३ | ४ | ६ | ४ | १२ |
| घटि | ४० | ४० | २० | ४० | २० | ०० | ४० | ४० | ०० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १५ | १३ | ५ | १५ | ४ | ७ | ५ | १४ | १२ |
| घटि | २ | २७ | ३२ | ५० | ४५ | ५५ | ३२ | १५ | ४० |
| पल | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १२ | ४ | १४ | ४ | ७ | ४ | १२ | ११ | १३ |
| घटि | २ | ५७ | १० | १५ | ५ | ५७ | ४५ | २० | २७ |
| पल | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० |

**चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | ५ | १ | २ | २ | ५ | ४ | ५ | ४ |
| घटि | २ | ५० | ४५ | ५५ | २ | १५ | ४० | ३२ | ५७ |
| पल | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,**

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ |
| घटि | २७ | ४५ | ३१ | २१ | १२ | २५ | १६ | ३१ | ३० |
| पल | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ०० | २ | २ | २ | २ | ०० | २ | ०० |
| घटि | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ | ५२ | ३० | ४५ |
| पल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.**

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ | ०० | ०० |
| घटि | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ | ३६ | ४५ | ३१ | ५२ |
| पल | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | ३ | ४ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ |
| घटि | ३ | ३६ | १६ | ४९ | ३४ | ३० | २१ | १५ | ३४ |
| पल | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.**

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | ३ | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ३ |
| घटि | १२ | ४८ | २४ | २४ | ०० | १२ | ०० | २४ | ३६ |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | ४ | १ | ४ | १ | २ | १ | ४ | ३ |
| घटि | ३० | २ | ३९ | ४५ | २५ | २२ | ३९ | १६ | ४८ |
| पल | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | १ | ४ | १ | २ | १ | ३ | ३ | ४ |
| घटि | ३६ | २९ | १५ | १६ | ७ | २९ | ४९ | २४ | २ |
| पल | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ |
| घटि | ३६ | ४५ | ३१ | ५२ | ३६ | ३४ | २४ | ३९ | २९ |
| पल | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ |

**चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ५ | १ | २ | १ | ४ | ४ | ४ | ४ | १ |
| घटि | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ |
| पल | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | १ | ०० | ०० |
| घटि | ३० | १७ | ८ | २१ | १२ | ३० | २५ | २५ | ४२ |
| पल | ०० | १० | ३६ | २७ | ५३ | ०० | ४५ | ४३ | ५२ |
| विपल | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | रा | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | २ | ३ | ३ | १ | ३ | १ | १ | १ |
| घटि | १८ | ५६ | २९ | ७ | १७ | ४० | ६ | ५० | १७ |
| पल | २७ | २४ | २८ | २५ | १० | ३० | ९ | १५ | १० |
| विपल | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० | ०० | ३० |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | जी | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | ३ | २ | १ | ३ | ०० | १ | १ | २ |
| घटि | ३६ | ६ | ४६ | ८ | १६ | ५८ | ३८ | ८ | ५६ |
| पल | ४८ | १२ | ३६ | ३६ | ०० | ४८ | ०० | ३६ | २४ |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म द शा**

| ग्रहाः | श | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ३ | ३ | १ | ३ | १ | १ | १ | ३ | ३ |
| घटि | ४१ | १७ | २१ | ५२ | ९ | ५ | २१ | २९ | ६ |
| पल | ६ | ५० | २७ | ४५ | ४९ | २२ | २७ | २८ | १२ |
| विपल | ४५ | १५ | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | बु | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | २ | १ | ३ | १ | १ | १ | ३ | २ | ३ |
| घटि | ५७ | १२ | २८ | २ | ४४ | १२ | ७ | ४६ | १७ |
| पल | ०० | ५३ | १५ | २८ | ७ | ५३ | २५ | ३६ | ५० |
| विपल | ४५ | १५ | ०० | ३० | ३० | १५ | ३० | ०० | १५ |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | के | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | १ | ०० | ०० | ०० | १ | १ | १ | १ |
| घटि | ३० | २५ | २५ | ४२ | ३० | १७ | ८ | २१ | १२ |
| पल | ०० | ४५ | ४३ | ५२ | ०० | १० | ३६ | २७ | ५३ |
| विपल | ४५ | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | शु | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ४ | १ | २ | १ | ३ | ३ | ३ | ३ | १ |
| घटि | ५ | १३ | २ | २५ | ४० | १६ | ५२ | २८ | २५ |
| पल | ०० | ३० | ३० | ४५ | ३० | ०० | ४५ | १५ | ४५ |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | सू | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | ०० | ०० | ०० | १ | ०० | १ | १ | ०० | १ |
| घटि | २२ | ३६ | २५ | ६ | ५८ | ९ | २ | २५ | १३ |
| पल | ३ | ४५ | ४३ | ९ | ४८ | ४९ | २८ | ४३ | ३० |
| विपल | ०० | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० |

**मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा**

| ग्रहाः | चं | भौ | रा | जी | श | बु | के | शु | सू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिन | १ | ०० | १ | १ | १ | १ | ०० | २ | ०० |
| घटि | १ | ४२ | ५० | ३८ | ५६ | ४४ | ४२ | २ | ३६ |
| पल | १५ | ५२ | १५ | ०० | २२ | ७ | ५२ | ३० | ४५ |
| विपल | ०० | ३० | ०० | ०० | ३० | ३० | ३० | ०० | ०० |



CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# आप धनवान बनेंगे या निर्धन

आज के इस युग में कम मेहनत से हमें अधिक लाभ प्राप्त हो प्राय: यह हमारी इच्छा रहती है। इस महंगाई के जमाने में सबको पैसा चाहिए। कोई आदमी कम मेहनत करता है और ज्यादा कमाता है। एक ओर एक सेठ केवल बैठे बैठे एक फोन करके ही लाखों रुपये कमा लेता है और दूसरी ओर एक मजदूर पूरा दिन मेहनत करके सिर्फ १० या १५ रुपये ही कमा पाता है। इसे हम कर्मों का फल या कर्मों का लेखा जोखा भी कह सकते हैं। किंतु ज्योतिष शास्त्र की सहायता से जन्म कुंडली का भली भांति से अध्ययन करके हम किसी को भी यह कह सकते हैं कि कौन सहस्त्रपति, कौन लाखपति और कौन करोड़पति बनेगा। हमारे ग्रंथों में विशेषकर सारावली, स्वार्थी चिंतामणी, फलदायिका, मानसागरी भावार्थ रत्नाकर आदि ग्रंथों में लक्ष्मी सुख के बारे में बहुत सारे योग बतलाये गये हैं। मेरी दस साल की मेहनत के पश्चात् मैंने जिन जिन धनी लोगों की कुंडलियों में इन लक्ष्मी योगों को बार बार देखा है आज उन्हीं लोगों को आपके सामने पेश कर रहा हूं। सर्वप्रथम तो ज्योतिष के अभ्यासी विद्यार्थियों इस लेख का बराबर अध्ययन करें, कुंडली में इन योगों को देखें और समझें। इस के साथ एक बात बता देना जरूरी है कि कुंडली के बल शुभ, अशुभ दशा आदि विचार करके यदि फल निकालेंगे तो योगों, ग्रहों के न्यासी, योग्य सरवाला बादशाह की फरक निकालेंगे तो परिणाम चमत्कारिक होगा, तो अब हम शुरू करें लक्ष्मी सुख देने वाले सिद्धांतों का अभ्यास-

१. वर्षभाण के चंद्र पर गुरु की दृष्टि हो तो उत्तम लक्ष्मी योग होता है।
२. कर्क के चंद्र पर मीन के गुरु की दृष्टि हो तो उसे धन का अभाव नहीं होगा।
३. नवांश कुंडली में सर्वोत्तम चंद्र (पूर्ण) भरपूर यश कीर्ति और धन देता है।
४. दूसरे भाव में शुक्र वृष और तुला हो तो वह व्यक्ति अवश्य धनी होगा।
५. लग्नेश लाभ भाव और लाभेश लग्न में हो तो उसे बहुत सारा पैसा मिलता है और लॉटरी से भी धन प्राप्ति का योग बनता है।
६. लग्नेश लग्न में और लाभेश लाभ में रहे तो जातक को धनवान बनने का योग होता है और वह जीवन में अवश्य धनी बनता है।
७. पंचमेश पंचम स्थान में हो तो संतान पक्ष में भाग्य उदय करवाता है।
८. धनेश लाभेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक को सब धन मिलता है।
९. भाग्येश उच्च का या स्वक्षेत्री होकर केन्द्र या त्रिकोण भावी हो तो प्रबल लक्ष्मी योग बनता है।
१०. लग्नेश धनेश एक दूसरे के स्थान में हो तो जातक धनवान बनता है।
११. कर्क लग्न की कुंडली में मंगल पंचम स्थान में और चंद्र एकादश स्थान में हो तो प्रबल लक्ष्मी योग बनता है।
१२. धनेश केन्द्र में हो तो जातक का जीवन बड़े सुख से गुजरता है।
१३. कर्क लग्न में यदि चंद्र वृषभा राशि में, गुरु कर्क में और मंगल मकर राशि में हो तो उसकी गिनती धनी लोगों में होती है और उसे खूब धन प्राप्त होता है।
१४. लग्नेश-धनेश-भाग्येश-लाभेश एक दूसरे के स्थान में हो या खुद के स्थान में हो तथा चारों एक ही स्थान में हों या इनका परिवर्तन योग हो तो ऐसा जातक लाखपति या करोड़पति होता है।
१५. लग्नेश-धनेश-लाभेश-नवम में हो तो लक्षाधि-पति (लखपति) योग होता है।
१६. कुंडली में किसी भी भाव में चं०, मं० एक साथ हों तो लक्ष्मी योग बनता है।
१७. चंद्र, गुरु का गजकेसरी योग भी अच्छा लक्ष्मी योग होता है।
१८. चंद्र, लाभ भाव में (११ वां स्थान) उत्तम लक्ष्मी योग होता है।
१९. केन्द्र-त्रिकोण के स्वामी का आपसी संबंध अच्छी लक्ष्मी बनाता है।
२०. कर्मेश बलवान होकर लाभ भुवन में अच्छा धनलाभ देता है।
२१. गुरु केन्द्र में उच्च का, स्वगृही हो तो जीवन बड़े सुख से व्यतीत होता है।
२२. धनेश अष्टम स्थान में हो तो अचानक गुप्त धन मिलता है।
२३. छठे स्थान में कर्क को गुरु उत्तम लक्ष्मी योग देता है। ऐसा जातक जीवन में लाखों रुपया कमाता है।
२४. लग्नेश चौथे स्थान में और चतुर्थेश लग्न में माता की ओर से धनलाभ देता है। ऐसे व्यक्ति वाहन, संपत्ति या व्यापार से खूब धन कमाते हैं।
२५. भाग्येश लग्न में बैठा हो तो शादी के बाद भाग्योदय होगा।
२६. भाग्येश सातवें स्थान में पति-पत्नि से फायदा।
२७. स्वगृही शुक्र-चंद्र लग्न भाव में हो तो अतुल लक्ष्मी योग बनता है।
२८. गुरु लग्न भाव में उच्च का या स्वगृही हो और साथ में चंद्र-मंगल का योग हो तो धन का अभाव दूर करता है और खूब धन देता है।
२९. धन स्थान पर शुभ ग्रहों की दृष्टि जातक को धनवान बनाता है।
३०. गुरु-बुध की पंचम स्थान में युती लेखन फार्म से या लाट्री से अच्छी मात्रा में धन देता है।
३१. मेष लग्न हो और लग्न में मंगल हो तो अच्छा पैसा कमाता है। (मेहनत का पैसा)
३२. वृषभ लग्न में छठे भाव में शुक्र हो तो वह जातक धनी होगा।
३३. गुरु-शुक्र ११वें स्थान में वृषभ लग्न बहुत अच्छा पैसा मिले और वह जातक धनी होगा।
३४. लग्ने बुध सप्तमेश गुरु की युत-प्रती-युत रूप से धन लाभ।
३५. सिंह लग्न में भाग्येश मंगल चौथे और नवम भाव में अच्छा पैसा देता है।
३६. कर्क लग्न में तुला का शनि और दसवें भाव में मंगल उसे अच्छा धनवान बनाता है।
३७. पंचम स्थान में मंगल कर्क लग्न में अच्छा धन देता है।
३८. गुरु-चंद्र, चंद्र-मंगल की युती-प्रतियुती उसे सदा धनलाभ देती है।
३९. प्रथम भाव में शुक्र, तुला लग्न वाले केन्द्र अच्छा पैसा देता है।
४०. कुंभ लग्न में नवम शनि अच्छा पैसा देता है।

ऊपर दिये गये योगों में से यदि कोई भी योग आपकी जन्म कुंडली में हो तो यह प्रमाण है कि आपको जीवन में धन अवश्य मिलेगा। यदि आपकी कुंडली में एक से अधिक योग हों तो धन की मात्रा अधिक होगी और आपकी आर्थिक स्थिति उतनी ही अच्छी होगी। कुंडली में जितने अधिक योग होंगे वह उतना ही अधिक धनी होगा। आपकी कुंडली में यदि एक भी साधारण योग है तो यह आपको अधिक धनी तो नहीं बनायेगा किंतु धन अभाव से आपको परेशान भी नहीं करेगा, आपके कार्य होते जायेंगे और धन का प्रबंध होता जायेगा। धन मिलने का समय ? प्राय: हमारे मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि हमारे धन योग है तो वह धन हमें मिलेगा कब ? इसका सीधा उत्तर है कि जिन ग्रहों के योग से यह धन प्राप्ति योग बनता है, उन ग्रहों की महादशा और अन्य दशा में धन की प्राप्ति होती है। जब दूसरे भाव के स्वामी का समय आरंभ होता है तो भी धन की प्राप्ति होती है। जब एकादश भाव के स्वामी या नवमेश का समय ( दशा, अन्यदशा) आरंभ होती है तो भी धन की प्राप्ति होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

८. धनेश लाभेश यदि एकादश भाव में हो तो जातक ... मिलता है।

२७. स्वगृही शुक्र-चंद्र लग्न भाव में हो तो ...

समय ( दशा, अन्यदशा) आरंभ होती है तो भी धन की प्राप्ति होती

— डा. द्विवेदी, शाहपुर जाट, नई दिल्ली

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# फैंग सुई द्वारा उपयुक्त साथी का चुनाव

क्यों हम कुछ लोगों की ओर आकर्षित होते हैं, और कुछ से घृणा करते हैं? क्यों कई अनुपयुक्त साथियों को चुनते हैं और क्यों कुछ लोगों को स्कूल में पढ़ते हुये ही उपयुक्त साथी मिल जाता है, यह विषय एक आश्चर्यजनक रहस्य है।

फैंग शुई आपके जीवन में लोगों को लाने में मदद कर सकता है, लेकिन आपके लिए कौन सा व्यक्ति सर्वश्रेष्ठ होगा, इसका निर्धारण स्वयं आपको करना होगा।

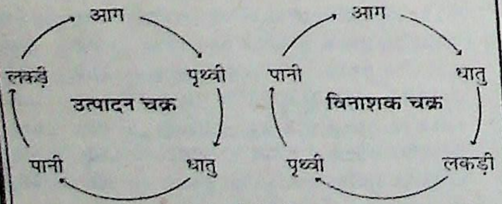


पांच तत्वों द्वारा संगति को निर्धारित करना एक उत्तम तरीका है। हम सहज ही उन लोगों की ओर खिंचते है जिन का तत्व उत्पादन चक्र में हमारे आगे या पहले होता है। ऐसे लोगों के साथ भी संबंधों में समस्यायें हो सकती हैं जो विनाशकारी चक्र में हमारे तत्व के आगे-पीछे होते हैं।

प्रत्येक मिश्रण का संबंध कैसा हो सकता है इसका यहां वर्णन किया जा रहा है। अपनी जन्म तिथि के अनुसार नीचे दी गई तालिका में देखकर आप अपने व साथी के तत्व का निर्धारण एवं विश्लेषण जान सकते हैं।

| तत्व | प्रतीक | वर्ष |
|---|---|---|
| धातु | चूहा | जनवरी ३१,१९०० से फरवरी १८,१९०१ |
| धातु | बैल | फरवरी १९,१९०१ से फरवरी ०७,१९०२ |
| पानी | बाघ | फरवरी ०८,१९०२ से जनवरी २८,१९०३ |
| पानी | खरगोश | जनवरी २९,१९०३ से फरवरी १५,१९०४ |
| लकड़ी | ड्रेगन | फरवरी १६,१९०४ से फरवरी ०३,१९०५ |
| लकड़ी | सांप | फरवरी ०४,१९०५ से जनवरी २४,१९०६ |
| आग | घोड़ा | जनवरी २५,१९०६ से फरवरी १२,१९०७ |

| तत्व | प्रतीक | वर्ष |
|---|---|---|
| आग | भेड़ | फरवरी १३,१९०७ से फरवरी ०१,१९०८ |
| पृथ्वी | बंदर | फरवरी ०२,१९०८ से जनवरी २१,१९०९ |
| पृथ्वी | मुर्गा | जनवरी २२,१९०९ से फरवरी ०९,१९१० |
| धातु | कुत्ता | फरवरी १०,१९१० से जनवरी २९,१९११ |
| धातु | सूअर | जनवरी ३०,१९११ से फरवरी १७,१९१२ |
| पानी | चूहा | फरवरी १८,१९१२ से फरवरी ०५,१९१३ |
| पानी | बैल | फरवरी ०६,१९१३ से जनवरी २५,१९१४ |
| लकड़ी | बाघ | जनवरी २६,१९१४ से फरवरी १३,१९१५ |
| लकड़ी | खरगोश | फरवरी १४,१९१५ से फरवरी ०२,१९१६ |
| आग | ड्रेगन | फरवरी ०३,१९१६ से जनवरी २२,१९१७ |
| आग | सांप | जनवरी २३,१९१७ से फरवरी १०,१९१८ |
| पृथ्वी | घोड़ा | फरवरी ११,१९१८ से जनवरी ३१,१९१९ |
| पृथ्वी | भेड़ | फरवरी ०१,१९१९ से जनवरी १९,१९२० |
| धातु | बंदर | फरवरी २०,१९२० से फरवरी ०७,१९२१ |
| धातु | मुर्गा | फरवरी ०८,१९२१ से जनवरी २७,१९२२ |
| पानी | कुत्ता | जनवरी २८,१९२२ से जनवरी १५,१९२३ |
| पानी | सूअर | जनवरी १६,१९२३ से फरवरी ०४,१९२४ |
| लकड़ी | चूहा | फरवरी ०५,१९२४ से जनवरी २४,१९२५ |
| लकड़ी | बैल | जनवरी २५,१९२५ से फरवरी १२,१९२६ |
| आग | बाघ | फरवरी १३,१९२६ से फरवरी ०१,१९२७ |
| आग | खरगोश | फरवरी ०२,१९२७ से जनवरी २२,१९२९ |
| पृथ्वी | ड्रेगन | जनवरी २३,१९२८ से फरवरी ०९,१९३० |
| पृथ्वी | सांप | फरवरी १०,१९२९ से जनवरी २९,१९३० |
| धातु | घोड़ा | जनवरी ३०,१९३० से फरवरी १६,१९३१ |
| धातु | भेड़ | फरवरी १७,१९३१ से फरवरी ०५,१९३२ |
| पानी | बंदर | फरवरी ०६,१९३२ से जनवरी २५,१९३३ |
| पानी | मुर्गा | जनवरी २६,१९३३ से फरवरी १३,१९३४ |
| लकड़ी | कुत्ता | फरवरी १४,१९३४ से फरवरी ०३,१९३५ |
| लकड़ी | सूअर | फरवरी ०४,१९३५ से जनवरी २३,१९३६ |
| आग | चूहा | जनवरी २४,१९३६ से फरवरी १०,१९३७ |

| तत्व | प्रतीक | वर्ष |
|---|---|---|
| आग | बैल | फरवरी ११,१९३७ से जनवरी ३०,१९३८ |
| पृथ्वी | बाघ | जनवरी ३१,१९३८ से फरवरी १८,१९३९ |
| पृथ्वी | खरगोश | फरवरी १९,१९३९ से फरवरी ०७,१९४० |
| धातु | ड्रेगन | फरवरी ०८,१९४० से जनवरी २६,१९४१ |
| धातु | सांप | जनवरी २७,१९४१ से फरवरी १४,१९४२ |
| पानी | घोड़ा | फरवरी १५,१९४२ से फरवरी ०४,१९४३ |
| पानी | भेड़ | फरवरी ०५,१९४३ से जनवरी २४,१९४४ |
| लकड़ी | बंदर | जनवरी २५,१९४४ से फरवरी १२,१९४५ |
| लकड़ी | मुर्गा | फरवरी १३,१९४५ से फरवरी ०१,१९४६ |
| आग | कुत्ता | फरवरी ०२,१९४६ से जनवरी २१,१९४७ |
| आग | सूअर | जनवरी २२,१९४७ से फरवरी ०९,१९४८ |
| पृथ्वी | चूहा | फरवरी १०,१९४८ से जनवरी २८,१९४९ |
| पृथ्वी | बैल | जनवरी २९,१९४९ से फरवरी १६,१९५० |
| धातु | बाघ | फरवरी १७,१९५० से फरवरी ०५,१९५१ |
| धातु | खरगोश | फरवरी ०६,१९५१ से जनवरी २६,१९५२ |
| पानी | ड्रेगन | जनवरी २७,१९५२ से फरवरी १३,१९५३ |
| पानी | सांप | फरवरी १४,१९५३ से फरवरी ०२,१९५४ |
| लकड़ी | घोड़ा | फरवरी ०३,१९५४ से फरवरी २३,१९५५ |
| लकड़ी | भेड़ | जनवरी २४,१९५५ से फरवरी ११,१९५६ |
| आग | बंदर | फरवरी १२,१९५६ से जनवरी ३०,१९५७ |
| आग | मुर्गा | जनवरी ३१,१९५७ से फरवरी १७,१९५८ |
| पृथ्वी | कुत्ता | फरवरी १८,१९५८ से फरवरी ०७,१९५९ |
| पृथ्वी | सूअर | फरवरी ०८,१९५९ से जनवरी २७,१९६० |
| धातु | चूहा | जनवरी २८,१९६० से फरवरी १४,१९६१ |
| धातु | बैल | फरवरी १५,१९६१ से फरवरी ०४,१९६२ |
| पानी | बाघ | फरवरी ०५,१९६२ से जनवरी २४,१९६३ |
| पानी | खरगोश | जनवरी २५,१९६३ से फरवरी १२,१९६४ |
| लकड़ी | ड्रेगन | फरवरी १३,१९६४ से फरवरी ०१,१९६५ |
| लकड़ी | सांप | फरवरी ०२,१९६५ से जनवरी २०,१९६६ |
| आग | घोड़ा | जनवरी २१,१९६६ से फरवरी ०८,१९६७ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



| तत्व | प्रतीक | वर्ष |
|---|---|---|
| आग | भेड़ | फरवरी ०९,१९६७ से जनवरी २६,१९६८ |
| पृथ्वी | बंदर | जनवरी ३०,१९६८ से फरवरी १६,१९६९ |
| पृथ्वी | मुर्गा | फरवरी १७,१९६९ से फरवरी ०५,१९७० |
| धातु | कुत्ता | फरवरी ०६,१९७० से जनवरी २६,१९७१ |
| धातु | सूअर | जनवरी २७,१९७१ से जनवरी १५,१९७२ |
| पानी | चूहा | जनवरी १६,१९७२ से फरवरी ०२,१९७३ |
| पानी | बैल | फरवरी ०३,१९७३ से जनवरी २२,१९७४ |
| लकड़ी | बाघ | जनवरी २३,१९७४ से फरवरी १०,१९७५ |
| लकड़ी | खरगोश | फरवरी ११,१९७५ से जनवरी ३०,१९७६ |
| आग | ड्रेगन | जनवरी ३१,१९७६ से फरवरी १७,१९७७ |
| आग | सांप | फरवरी १८,१९७७ से फरवरी ०६,१९७८ |
| पृथ्वी | घोड़ा | फरवरी ०७,१९७८ से जनवरी २७,१९७९ |
| पृथ्वी | भेड़ | जनवरी २८,१९७९ से फरवरी १५,१९८० |
| धातु | बंदर | फरवरी १६,१९८० से फरवरी ०४,१९८१ |
| धातु | मुर्गा | फरवरी ०५,१९८१ से जनवरी २४,१९८२ |
| पानी | कुत्ता | जनवरी २५,१९८२ से फरवरी १२,१९८३ |
| पानी | सूअर | फरवरी १३,१९८३ से फरवरी ०१,१९८४ |
| लकड़ी | चूहा | फरवरी ०२,१९८४ से फरवरी १९,१९८५ |
| लकड़ी | बैल | फरवरी २०,१९८५ से फरवरी ०८,१९८६ |
| आग | बाघ | फरवरी ०९,१९८६ से जनवरी २८,१९८७ |
| आग | खरगोश | जनवरी २९,१९८७ से फरवरी १६,१९८८ |
| पृथ्वी | ड़ेगन | फरवरी १७,१९८८ से फरवरी ०५,१९८९ |
| पृथ्वी | सांप | फरवरी ०६,१९८९ से जनवरी २६,१९९० |
| धातु | घोड़ा | जनवरी २७,१९९० से फरवरी १४,१९९१ |
| धातु | भेड़ | फरवरी १५,१९९१ से फरवरी ०३,१९९२ |
| पानी | बंदर | फरवरी ०४,१९९२ से जनवरी २२,१९९३ |
| पानी | मुर्गा | जनवरी २३,१९९३ से फरवरी ०९,१९९४ |
| लकड़ी | कुत्ता | फरवरी १०,१९९४ से जनवरी ३०,१९९५ |
| लकड़ी | सूअर | जनवरी ३१,१९९५ से फरवरी १८,१९९६ |
| आग | चूहा | फरवरी १९,१९९६ से फरवरी ०६,१९९७ |
| आग | बैल | फरवरी ०७,१९९७ से जनवरी २७,१९९८ |
| पृथ्वी | बाघ | जनवरी २८,१९९८ से फरवरी १५,१९९९ |
| पृथ्वी | खरगोश | फरवरी १६,१९९९ से फरवरी ०४,२००० |
| धातु | ड्रैगन | फरवरी ०५,२००० से जनवरी २३,२००१ |

| तत्व | प्रतीक | वर्ष |
|---|---|---|
| धातु | सांप | जनवरी २४,२००१ से फरवरी ११,२००२ |
| पानी | घोड़ा | फरवरी १२,२००२ से जनवरी ३१,२००२ |
| पानी | भेड़ | फरवरी ०१,२००३ से जनवरी २१,२००४ |
| लकड़ी | बंदर | जनवरी २२,२००४ से फरवरी ०८,२००५ |
| लकड़ी | मुर्गा | फरवरी ०९,२००५ से जनवरी २८,२००६ |
| आग | कुत्ता | जनवरी २९,२००६ से फरवरी १७,२००७ |
| आग | सूअर | फरवरी १८,२००७ से फरवरी ०६,२००८ |
| पानी | चूहा | फरवरी ०७,२००८ से जनवरी २५,२००९ |
| पृथ्वी | बैल | जनवरी २६,२००९ से फरवरी १३,२०१० |
| लकड़ी | शेर | फरवरी १४,२०१० से फरवरी ०२,२०११ |
| लकड़ी | खरगोश | फरवरी ०३,२०११ से जनवरी २२,२०१२ |
| पृथ्वी | ड्रैगन | जनवरी २३,२०१२ से फरवरी ०९,२०१३ |
| आग | सांप | फरवरी १०,२०१३ से जनवरी ३०,२०१४ |
| आग | घोड़ा | जनवरी ३१,२०१४ से फरवरी १८,२०१५ |
| पृथ्वी | भेड़ | फरवरी १९,२०१५ से फरवरी ०७,२०१६ |
| धातु | बंदर | फरवरी ०८,२०१६ से जनवरी २७,२०१७ |
| धातु | मुर्गा | जनवरी २८,२०१७ से फरवरी १५,२०१८ |
| पृथ्वी | कुत्ता | फरवरी १६,२०१८ से फरवरी ०४,२०१९ |
| पानी | सूअर | फरवरी ०५,२०१९ से जनवरी २४,२०२० |
| पानी | चूहा | जनवरी २५,२०२० से फरवरी १२,२०२१ |

## आग-आग

अग्नि तत्व वाले व्यक्ति जोशीले, सकारात्मक सोच वाले व आशावादी होते हैं। दो अग्नि के प्रतीक वाले व्यक्ति मिलते हैं तो यह अत्यधिक मजबूत संबंध हो सकता है। अग्नि तत्व वाले व्यक्ति दूसरे अग्नि तत्व वाले व्यक्ति के अच्छे पहलुओं को उजागर कर सकते हैं। वे ऐसा सहनीय संयोग बनाते हैं जिसमें कोई भी साथी एक-दूसरे से उकताता नहीं है।

## आग-पृथ्वी

यह एक सामंजस्यपूर्ण संयोग है क्योंकि दोनों ही साथी एक-दूसरे को अच्छी तरह से प्रेरित व उत्तेजित कर सकते हैं। अग्नि की उत्कृष्ट कल्पना शक्ति पृथ्वी की संवेदनशीलता से जुड़कर ऐसा संबंध उत्पन्न कर सकती है जोकि प्रत्येक स्तर पर सफल हो सकता है।

## आग-धातु

आग में धातु को पिघलाने की शक्ति होती है, जिस कारण यह एक कठिन संयोग बन जाता है। अनर्थकारी परिणामों के साथ धातु तत्व वाले व्यक्ति आग तत्व वाले व्यक्ति पर अपनी इच्छा थोपने की कोशिश करते हैं। इससे अग्नि तत्व वाले व्यक्ति का अहं धीरे-धीरे धातु तत्व वाले व्यक्ति को समाप्त कर देता है। दोनों व्यक्तियों में विनोदप्रियता की अच्छी समझ होती है और जिसका इस्तेमाल कठिन स्थितियों को दूर करने के लिए किया जा सकता है। इन लोगों को इस संयोग के कुछ नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए अपने घर में मिट्टी तत्व की कोई चीज रखनी चाहिए।

## आग-पानी

आग व पानी का मिश्रण कठिन है, क्योंकि पानी आग को बुझा देता है। हालांकि पानी, आग वाले लोगों के सृजनात्मक जोश व ऊर्जा को बढ़ा सकता है। और आग तत्व वाले व्यक्तियों में पानी के तत्व वाले व्यक्तियों को प्रेरित करने की क्षमता होती है फिर भी एक-दूसरे के सामने अपनी आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने में वे कठिनाई महसूस करते हैं। इस मिश्रण के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए इन लोगों को अपने घर में लकड़ी की कोई वस्तु रखनी चाहिए।

## आग-लकड़ी

आग व लकड़ी एक सामंजस्य पूर्ण मिश्रण है। आग की धैर्यहीनता को लकड़ी वाले तत्व स्थिरता प्रदान करते हैं। अग्नि तत्व वाले व्यक्ति की ऊर्जा व जोश लकड़ी तत्व वाले व्यक्ति को इतनी सफलता प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं जितनी वे स्वयं भी न पा सकें। दोनों ही आशावादी, सतही दिखते लोग होते हैं, जो नये विचारों व धारणाओं की खोज करना पसंद करते हैं।

## पृथ्वी-पृथ्वी

यह बहुत ही उच्च सकारात्मक मिश्रण है, क्योंकि दोनों ही साथी जीवन के उच्च स्तर को बनाये रखने व एक दूसरे की आवश्यकताओं का ख्याल रखते हैं। दूसरे लोगों को यह संबंध नीरस प्रतीत हो सकता है, पर वास्तविकता में, यह संबंध गहरा मजबूत व [illegible]शील होता है। हालांकि दोनों ही जिद्दी होते हैं, इसलिए समस्यायें

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



उत्पन्न हो सकती हैं। परन्तु दोनों पक्षों की ओर प्यार व सद्भावना रहने के कारण ये अस्थायी उतार-चढ़ाव ठीक हो जाते हैं।

## पृथ्वी-धातु

यह एक उत्कृष्ट मिश्रण है, क्योंकि दोनों साथी एक-दूसरे को समर्थन, सम्मान व प्रशंसा प्रदान करते हैं। धातु तत्व वाले व्यक्ति स्वाभाविक रूप से सहनशील होते हैं, जो चीज इस संबंध में निहायत आवश्यक है क्योंकि पृथ्वी तत्व वाले व्यक्ति हमेशा निर्णय लेने में समय लगाते हैं। धातु तत्व वाले व्यक्ति अपने पृथ्वी तत्व वाले व्यक्ति के लिए आश्चर्यजनक अवसर प्रदान करते हैं। पृथ्वी तत्व वाले व्यक्ति यह, आश्वस्त करते हुए कि संबंध आर्थिक रूप से भी सुरक्षित हो जाये धातु तत्व वाले व्यक्तियों की वित्तीय आकांक्षाओं का पोषण करते हैं।

## पृथ्वी-पानी

यह एक कठिन मिश्रण हो सकता है, क्योंकि प्रत्येक साथी दूसरे की संवेगात्मक भावनाओं को ठेस पहुंचाने की कोशिश करता है। पृथ्वी तत्व स्थिरता प्रदान करता है जिसका पानी में अभाव होता है, पर पृथ्वी का जिद्दीपन अत्यधिक संवेदनशील पानी तत्व वाले व्यक्ति को निरंतर एक दूसरी दिशा की ओर ले जाता है। संयोगवश यह बहुत ही शक्तिशाली व्यापारिक मिश्रण है क्योंकि पानी की सृजनात्मकता, मिट्टी की सूझबूझ, भौतिक पहुंच के साथ बहुत अच्छा कार्य करती है। संभावित मुश्किलों से बचने के लिए इस जोड़े को अपने घर में धातु से संबंधित कोई वस्तु रखनी चाहिये।

## पृथ्वी-लकड़ी

लकड़ी, पृथ्वी से शक्तिहीन हो जाती है, इस कारण यह एक कठिन संयोग है। पृथ्वी स्थिर, संतुलित व सतर्क रहती है, जबकि लकड़ी प्रगतिशील, संपर्क स्थापित करने वाली व महंगी होती है। झगड़ा या कलह करने के बजाय अगर एक बार वे एक दूसरे की सहायता करने की सोच लें तो यह संयोग सफल हो सकता है, जब तक कि वे प्रत्यक्ष रूप से अपनी भावनाएं व्यक्त करने को तैयार हों। इस मिश्रण के नकारात्मक पहलुओं को कम करने के लिए इन्हें अपने घर में आग से संबंधित किसी तत्व को रखना चाहिए।

## धातु-धातु

यह मिश्रण अच्छा रहता है क्योंकि दोनों साथी आंतरिक रूप से एक-दूसरे को समझ लेते हैं। वे संबंधों के तमाम उतार-चढ़ावों का अनुभव करते हैं, पर जहां भी आवश्यक होता है वे दोनों की भलाई के लिए इकट्ठे कार्य करने को तैयार रहते हैं। किसी और व्यक्ति को, यह संबंध प्रगाढ़ प्रतीत न हो। ऐसा इसलिए क्योंकि धातु तत्व वाले व्यक्ति अक्सर अपने रास्ते जाना चाहते हैं और अपने तरीके से कार्य करना चाहते हैं। हालांकि वे समान तत्व वाले व्यक्तियों के साथ बहुत अच्छी तरह निभा लेते हैं और एक दीर्घकालीन, सुदृढ़ संबंध बनाते हैं।

## धातु-पानी

यह एक शक्तिशाली संबंध है जिसमें दोनों साथी एक-दूसरे से सहायता प्राप्त करते हैं। दोनों साथी अपने अंतर्बोध व भावनाओं द्वारा मार्गदर्शन पाते हैं और एक-दूसरे के साथ अवचेतन स्तर पर आदान-प्रदान करने में सक्षम होते हैं। धातु तत्व वाले व्यक्ति अपने पानी तत्व वाले साथी को यह सिखाते हैं कि दूसरों से आसानी से प्रभावित नहीं हो जाना चाहिए। पानी तत्व वाले व्यक्ति अपने धातु तत्व वाले साथी को अपनी भावनाओं को ज्यादा प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में तथा लकीर के फकीर की तरह अड़े रहने के बजाय बहाव के साथ चलने में सहायता करते हैं।

## धातु-लकड़ी

यह संभावित रूप से काफी कठिन संबंध है, क्योंकि दोनों साथी प्रभुत्व जमाना चाहते हैं और प्रत्येक इस बात पर अड़ा रहता है कि फलां कार्य उसी के अनुसार किया जाना चाहिए। लकड़ी तत्व वाले साथ की चाह रखते हैं पर धातु तत्व वाले अकेले रहकर ही खुश रहते हैं और अकेलेपन के ये क्षण स्वाभाविक रूप से सामाजिक व मिलनसार लकड़ी तत्व वाले व्यक्ति के लिए कुंठा में बीतते हैं। लकड़ी तत्व वाले आसानी से कुछ भी अपना लेते हैं और स्वयं की जरूरतों के समय धातु की आवश्यकताओं को भी अपना लेते हैं। लकड़ी तत्व वाले की पूर्णता की आदत से धातु तत्व वाले अक्सर तनावग्रस्त हो जाते हैं। अगर धातु तत्व वाले थोड़ा-सा झुककर लकड़ी तत्व वाले के विचारों को अपना लें, तो संबंध सफल हो सकता है, लेकिन दोनों पक्षों की ओर आदान-प्रदान करने की बहुत जरूरत होती है।

## पानी-पानी

लगता है कि पानी-पानी का संबंध स्वर्ग में बना होता है। दोनों साथियों में एक-दूसरे के प्रति सशक्त व गहरा अनुभूतिजन्य घनिष्ठ संबंध होता है और वे एक-दूसरे की आवश्यकताओं व इच्छाओं को सहज ही समझ लेते हैं। यह मिश्रण दोनों साथियों के निश्चय को मजबूत करता है और इस तरह वे दूसरों से आसानी से प्रभावित नहीं होते हैं। पानी-पानी वाले प्रत्येक व्यक्ति को एक-दूसरे से विश्वास व सम्मान प्राप्त होता है।

## पानी-लकड़ी

यह बहुत ही सकारात्मक संबंध है क्योंकि पानी लकड़ी का पोषण करता है और उसे विकसित व फूलने-फलने में मदद करता है। लकड़ी पानी को स्थिरता व एक उद्देश्य प्राप्त करने में मदद देती है। पानी लकड़ी को एक संवेदना की भावना प्रदान करता है और दूसरे को स्वयं को अच्छी तरह व्यक्त करने में भी प्रोत्साहित करता है। लकड़ी पानी को चढ़ाता है, जो रूखेपन का आदी हो सकता है पर दोनों साथी ही ईमानदार, नीतिवादी व स्पष्ट होते हैं। उनके बीच एक अनुभूतिजन्य कड़ी होती है जो लगातार विकास व वृद्धि करती रहती है।

## लकड़ी-लकड़ी

यह अत्यधिक सक्रिय, सुसंगत मिश्रण है। लकड़ी तत्व वाले व्यक्ति अक्सर व्यस्त व सक्रिय लोग होते हैं जो प्रत्येक चीज को करना चाहते हैं। इसकी मात्रा तब और बढ़ जाती है जब दो लकड़ी तत्व वाले लोग मिलते हैं। और वे आपसी रुचियों, अपने कार्यक्षेत्र व अनगिनत व्यक्तिगत रुचियों से जुड़ जाते हैं। देखने वाले को यह संबंध थकाने वाला लग सकता है, पर दो लकड़ी तत्व वाले लोग खूब पनपते हैं। दोनों मूल रूप से सुरक्षित व्यक्ति होते हैं, जो दूसरे पर निर्विवाद रूप से भरोसा करते हैं और किसी भी समय दूसरे की मदद करने को तैयार रहते हैं।

यद्यपि, व्यावहारिक रूप से तत्वों के बीच का संबंध हमने अत्यधिक लाभप्रद पाया है। फिर भी पाठकों को यह सुझाव है कि इसके अतिरिक्त नये रिश्ते बनाने तथा विद्यमान संबंधों में अपने साथी को पहचानने में आप अन्य उपलब्ध विद्याओं का भी प्रयोग करें।

—पं. गोपाल शर्मा, सरस्वती विहार, नई दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# लक्ष्मी यंत्र द्वारा वास्तु दोष निवारण

जैसे किसान के बीज बोने का फल उसके पुरुषार्थ के अलावा पानी, जमीन, मौसम, खाद व पशु पक्षियों से सुरक्षा के प्रबंध पर भी निर्भर हैं उसी तरह हमारे प्रत्येक कार्य का उचित फल हमारे घर, दुकान, गोदाम व फैक्ट्री की दिशा, बनावट, अन्दर बाहर के रंग, सजावट तथा पेड़-पौधों पर भी निर्भर करता है।

भूमि का ढलान, पानी का प्रबंध इन चीजों के उचित चयन का ज्ञान हमें वास्तु / फैंग शुई द्वारा मिलता है। हमारा शरीर पांच तत्वों से बना है। जब इन तत्वों का तारतम्य अथवा समरसता बाधायुक्त हो जाये तो हमारी शक्तियां क्षीण हो जाती हैं जिनके कारण खिंचाव, तनाव तथा अस्वस्थता बढ़ती है और मन की शांति भंग हो जाती है। तब हमें अपनी आंतरिक तथा बाह्य शक्तियों को आत्मिक तथा निष्पक्ष होकर पुन: निदेशित करना पड़ता है ताकि इनमें संतुलन स्थापित हो और शरीर में स्वस्थता तथा प्रसन्नता आये और धन, खुशी, संपन्नता और सफलता प्राप्त हो।

लक्ष्मी यंत्र द्वारा हम पंचतत्वों का अपने जीवन पर प्रभाव अपनी गुण, स्वभाव व कमियां पता करके उन्हें काफी हद तक ठीक करने का प्रयत्न कर सकते हैं। इसी प्रकार दिशा ज्ञान द्वारा भी जीवन की विभिन्न समस्याओं का अंत कर हम सुख व स्वास्थ्य का लाभ उठा सकते हैं।

यह बात समझाने के लिए हमने फैंग शुई पर काम किया और जाना कि कछुवे के ऊपर चिन्हित बिंदु के अनुरूप बना लक्ष्मी यंत्र एक अद्भुत प्राकृतिक देन है। कछुवा ही ऐसा प्राणी है जिसकी उम्र भी बहुत लम्बी होती है और दुश्मन से बचने के लिए अपना समस्त शरीर खोल में समेट सकता है।

## लक्ष्मी यंत्र

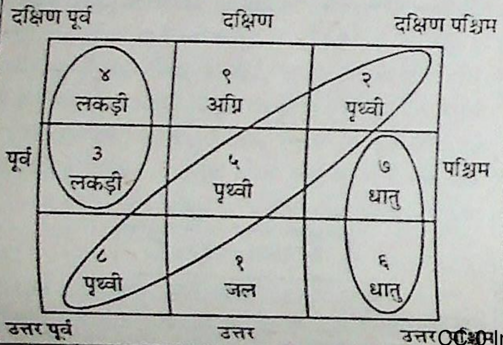


ऊपर लिखे अंकों के अनुसार ही कछुवे की पीठ पर सफेद या काले बिंदु अंकित होते हैं। इन अंकों को प्रत्येक दिशा से जोड़ने पर अंतिम जोड़ 15 आता है और हम इसे लक्ष्मी यंत्र की संज्ञा देते हैं। इसके द्वारा हम अपनी जन्म तिथि से जीवन में विभिन्न तत्वों की कमी से होने वाले प्रभाव व उनका निराकरण जान सकते हैं।

- ❖ अंक एक जल तत्व एवं उत्तर दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक दो पृथ्वी तत्व एवं दक्षिण पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक तीन लकड़ी तत्व (वनस्पति) एवं पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक चार लकड़ी तत्व (वनस्पति) एवं दक्षिण पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक पांच पृथ्वी तत्व एवं मध्य भाग का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक छ: धातु तत्व एवं उत्तर पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक सात धातु तत्व एवं पश्चिम दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक आठ पृथ्वी तत्व एवं उत्तर पूर्व दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक नौ अग्नि तत्व एवं दक्षिण दिशा का प्रतिनिधित्व करता है।
- ❖ अंक एक: पिछले हजार साल से प्रत्येक व्यक्ति की जन्मतिथि में एक का अंक था। अब इस सदी में जिन व्यक्तियों की जन्म तिथि में जल तत्व एक का अंक अनुपस्थित है उन व्यक्तियों में अभिमान नहीं होता और यह अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते।
- ❖ अंक दो: जन्म तिथि में पृथ्वी तत्व अंक दो के अनुपस्थित होने पर व्यक्ति अपनी आंतरिक अंतज्ञान की अवहेलना करता है। यह लोग अपनी गलती मानने की जगह अपने कार्य को ही सही बताते हैं। यह लोग काम की शुरूआत करने में देर लगाते हैं और उनके जीवन में स्थिरता नहीं होती।
- ❖ अंक तीन: जन्म तिथि में लकड़ी तत्व अंक तीन के न होने से आत्मविश्वास की कमी होती है। और व्यक्ति अपने विकास से संतुष्ट नहीं होता।
- ❖ अंक चार: जन्म तिथि में लकड़ी तत्व अंक चार की अनुपस्थिति दर्शाती है कि व्यक्ति के पास संचित धन की कमी रहती है। यह लोग एक निश्चित नियम के तहत काम करना मुश्किल महसूस करते हैं।
- ❖ अंक पांच: जन्म तिथि में पृथ्वी अंक पांच की अनुपस्थिति दर्शाती है कि यह लोग अनिर्णय की स्थिति में रहते हैं एवं उन्हें दूसरों से लगातार प्रोत्साहन की जरूरत होती है।
- ❖ अंक छ: जन्म तिथि में धातु तत्व अंक छ: की अनुपस्थिति दर्शाती है यह व्यक्ति जीवन में मददगार लोगों की कमी महसूस करता है। और जीवन में प्रगति के लिए कड़ी मेहनत करता है।
- ❖ अंक सात: जन्म तिथि में धातु तत्व अंक सात की अनुपस्थिति दर्शाती है कि व्यक्ति को मानसिक आराम नहीं है। यह लोग अध्यात्म की ओर भी ध्यान नहीं रखते।
- ❖ अंक आठ: जन्म तिथि में पृथ्वी अंक आठ की अनुपस्थिति दर्शाती है कि व्यक्ति की याद्दाश्त धीरे-धीरे कमजोर हो जाती है। उसे बैठे-बैठे काम याद आते हैं। यह लोग आर्थिक मामले भी निपुणता से नहीं निभा पाते। कामों को अधूरा छोड़ने की आदत भी होती है।
- ❖ अंक नौ: जन्म तिथि में अग्नि तत्व अंक नौ की अनुपस्थिति इसी सदी में देखी जाएगी और यह दर्शाती है कि व्यक्ति दूसरों की जरूरतों एवं भावनाओं की कदर नहीं करता जिससे इनको यश व कीर्ति नहीं मिलती।

अब हम उदाहरण देते हुए इस विज्ञान के बारे में और चर्चा करते हैं। एक व्यक्ति जिसकी जन्म तिथि १२.०७.१९६५ है, का लक्ष्मी यंत्र के अनुसार तालिका में अंक भरकर नीचे दिए चित्र में दर्शाते हुए विश्लेपण करते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| | ९ | २ |
| | ५ | ७ |
| | १,१ | ६ |

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आत्मविश्वास की कमी होती है और व्यक्ति अपने विकास से प्रस्तुत नहीं होता।

| उत्तर पूर्व | उत्तर | उत्तर पश्चिम | | ५ | ७ |
|---|---|---|---|---|---|
| | | | | १,१ | ६ |



इस व्यक्ति की जन्म तिथि का विश्लेषण करने से पता लगता है कि उसकी जन्म-तिथि में अंक आठ अनुपस्थित है जो पृथ्वी तत्व का परिचायक है एवं उत्तर-पूर्व का भी प्रतीक है। तीन व चार अंक की अनुपस्थिति लकड़ी तत्व की परिचायक है एवं दिशानुसार पूर्व एवं दक्षिण-पूर्व को दर्शाती है।

इन अंकों की अनुपस्थिति दर्शाती है कि यह व्यक्ति अव्यवस्थित होगा तथा बिना किसी दूरगामी योजना के नित्य नई योजना बनाकर कार्य करता रहेगा। तीन, चार तथा आठ अंक की पूरी पंक्ति अनुपस्थित होने से यह व्यक्ति अपने अधिकारों को मांगने में संकोच करता होगा एवं इसके उत्तर-पूर्व, पूर्व तथा दक्षिण-पूर्व में वास्तु दोष पाए जाने की संभावना होगी।

इसके उपचार के लिए दक्षिण-पश्चिम में बिना पानी के ऊंचे पर्वत का चित्र जो पृथ्वी तत्व का परिचायक है एवं पूर्व में एक हरा बल्ब और दक्षिण-पूर्व में हरा पौधा रखें जो लकड़ी तत्व की कमी को पूरा करने में सहायक होगा।

आगे दी गई तालिका के अनुसार आप अपनी जन्म तिथि में अनुपस्थित अंकों की जानकारी से संभावित वास्तु दोषों की दिशा की जानकारी प्राप्त करते हुए उनका समाधान कर सकते हैं। ये सरल उपाय पाठकों के जीवन में अवश्य सुख, शांति, स्वास्थ्य तथा सफलता लाने में सहायक होंगे।

| अंक | दिशा | तत्व | प्रभाव | समाधान |
|---|---|---|---|---|
| १ | उत्तर | जल | व्यवसाय नये विचार | पानी का फव्वारा, एक्रेरियम रखें, कछुए का चित्र तथा स्वर्ण मंदिर का चित्र लगायें। |
| २ | दक्षिण-पश्चिम | बड़ी पृथ्वी | पराक्रम शुरुआत | बिना पानी के पहाड़ों की तस्वीर, सिलिका की माला-लाकेट-बाजूबंद-ब्रेसलेट पहनें। दोहरा खुशी यंत्र लगाएं। |
| ३ | पूर्व | लकड़ी | विकास छोटे बच्चे | हरा पौधा, हरा बल्ब, हरा पूर्व अभिमंत्रित अष्टकोण पिरामिड रखें। |
| ४ | दक्षिण-पूर्व | लकड़ी | संचित धन स्वास्थ्य | हरा पौधा, हरा बल्ब, हरा पूर्व अभिमंत्रित अष्टकोण पिरामिड रखें। |
| ५ | मध्य | पृथ्वी | संपति स्थायित्व | बिना पानी के पहाड़ों की तस्वीर, सिलिका की माला-लाकेट-बाजूबंद-ब्रेसलेट पहनें। |
| ६ | उत्तर-पश्चिम | धातु | मददगार लोग नये अवसर | पीला-सुनहरा बाजूबंद पहनें,सुनहरी चेन की घड़ी पहनें, पीली-सुनहरी ५ रॉड ११"की वायु झंकार लगायें, पीला पूर्व अभिमंत्रित अष्टकोण पिरामिड रखें। |
| ७ | पश्चिम | धातु | मानसिक आराम व शांति | सफेद-सुनहरा बाजूबंद पहनें, सफेद चेन की घड़ी पहनें, स्लेटी ५ रॉड ११"की वायु झंकार लगायें, सफेद पूर्वाभिमंत्रित अष्टकोण पिरामिड रखें। |
| ८ | उत्तर-पूर्व | छोटी पृथ्वी | याद्दास्त | सिलिका की माला-लाकेट-बाजूबंद-ब्रेसलेट धारण करें। |
| ९ | दक्षिण | अग्नि | कीर्ति | दक्षिण क्षेत्र में लाल बल्ब लगायें। लाल पूर्वाभिमंत्रित अष्टकोण पिरामिड रखें। फीनिक्स-गरुड़ का चित्र लगायें। |

# दिशा बदलो - दशा बदलेगी

**दिशा शास्त्रः** प्रत्येक व्यक्ति अपने शयन-कक्ष के चुम्बकीय क्षेत्र से प्रभावित होता है एवं अपनी जन्म तिथि के अनुसार चार दिशाओं से उपयुक्त ऊर्जा एवं अन्य चार दिशाओं से अनुपयुक्त ऊर्जा ग्रहण करता है। मोटे तौर पर दो समूह के लोग होते हैं- पूर्व समूह तथा पश्चिम समूह के लोग। आप नीचे दी हुई विधि के अनुसार अपना व्यक्तिगत भाग्यांक निकाल सकते हैं। एवं तालिका में देखकर अपने लिए उपयुक्त एवं अनुपयुक्त दिशाओं का चयन कर सकते हैं।

**भाग्यांक निकालने की विधिः** आप अपने जन्म वर्ष के अंतिम दो अंको को जोड़ें। उदाहरणार्थ, १९६५ वाले अंतिम दो अंक ६+५ होंगें। ११ अंक को पुनः जोड़ने पर १+१=२ प्राप्त होगा। अब पुनः इस प्राप्त एकल अंक को १० में से घटाएं। प्राप्त संख्या पुरुषों का भाग्यांक होगा। १९६५ में जन्में पुरुष का भाग्यांक ८ होगा। महिलाएं इस प्राप्त एकल संख्या में 5 जोड़ें एवं एकल अंक प्राप्त होने तक जोड़ते रहें। जैसे १९६० में जन्मी महिलाओं का भाग्यांक ६+०=६,६+५=११, १+१=२ होगा।

नीचे दी तालिका के अनुसार पुरुष एवं महिलाएं अपनी शुभ व अशुभ दिशाएं जान सकते हैं। जिन पुरुषों का भाग्यांक ५ है, वह तालिका में ऊपर वाली दिशा देखें। महिलाएं जिनका भाग्यांक ५ है वह नीचे वाली दिशाएं देखें। अपने भाग्यांक अनुसार व्यक्ति के लिए अपनी स्वास्थ्य दिशा में सिर करके सोना एवं अपनी सफलता की दिशा में देखते हुए कार्य करना अति सफलतादायक होगा।

| | भाग्यांक | १ | २ | ३ | ४ | ५ ❑ | ६ | ७ | ८ | ९ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शुभ दिशाएं | सफलता दिशा | द.पू. | उ.पू. | द. | उ. | उ.पू. द.प. | प. | उ.प. | द.प. | पू. |
| | स्वास्थ्य दिशा | पू. | प. | उ. | द. | प. उ.प. | उ.पू. | द.प. | उ.प. | द.पू. |
| | पारिवारिक दिशा | द. | उ.प. | द.पू. | पू. | उ.प. प. | द.प. | उ.पू. | प. | उ. |
| | व्यक्तिगत विकास दिशा | उ. | द.प. | पू. | द.पू. | द.प. उ.पू. | उ.प. | प. | उ.पू | द. |
| अशुभ दिशाएं | दुर्भाग्यशाली दिशा | प. | पू. | द.प. | उ.प. | पू. द. | द.पू. | उ. | द. | उ.पू. |
| | अपमानजनक | उ.पू. | द.पू. | उ.प. | द.प. | द.पू. उ. | पू. | द. | उ. | प. |
| | हानिकारक | उ.प. | द. | उ.पू. | प. | द. पू. | उ. | द.पू. | पू. | द.प. |
| | मानसिक संताप | द.प. | उ. | प. | उ.पू. | उ. द.पू. | द. | पू. | द.पू. | उ.प. |

❑ स्त्रियां जिनका भाग्यांक 5 है, वह तालिका में नीचे वाली दिशा का प्रयोग करें।

—पं. गोपाल शर्मा, सरस्वती विहार, नई दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# वास्तु एवं फेंग सुई

भारत में वास्तु का लंबा इतिहास मिलता है। मत्स्यपुराण में अठारह वास्तु शास्त्रज्ञों का उल्लेख है: भृगु, अत्रि, वसिष्ठ, विश्वकर्मा, मय, नारद, नग्नजित, विशालाक्ष, पुरंदर, ब्रह्मा, कुमार, नंदीश, शौनक, गर्ग, वासुदेव, अनिरुद्ध, शुक्र एवं बृहस्पति। यथा :-

भृगुरत्रिवसिष्ठश्च विश्वकर्मा मयस्तथा।
नारदो नग्नजिच्चैव विशालाक्षः पुरन्दरः॥
ब्रह्मा कुमारो नन्दीश : शौनको गर्ग एव च।
वासुदेवोऽनिरुद्धश्च तथा शुक्रबृहस्पती॥

वास्तु द्वारा किसी व्यक्ति का भाग्य तो नहीं बदला जा सकता लेकिन घर या व्यवसाय को खुशहाल एवं समृद्धिशाली अवश्य बनाया जा सकता है। वास्तु के नियमों का पालन करने से हमें अधिक से अधिक ताजी वायु एवं सूर्य ऊर्जा तो मिलती ही है साथ ही साथ पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति भी मनुष्य की ऊर्जा को बढ़ाने में सहयोग प्रदान करती है। इसके साथ-साथ वास्तु के नियम स्थान को स्वच्छ रखने पर अत्यधिक ध्यान देते हैं। वास्तु द्वारा रंग चयन वातावरण को अनुकूल बना देते हैं। फेंग सुई भी इसी प्रकार के अंदर के वातावरण को अनुकूल बनाने में बहुत सहायक है।

फेंग सुई के अनुसार प्रकृति में पांच तत्व होते हैं- काष्ठ, अग्नि, पृथ्वी, धातु तथा जल। इन पांच तत्वों में आपस में एक अच्छी नैसर्गिकता अर्थात् उत्पादन क्रिया है एवं दूसरी बुरी अर्थात् विध्वंस क्रिया। जैसे उत्पाद क्रिया में काष्ठ अग्नि उत्पन्न करती है। अग्नि जला कर राख या पृथ्वी उत्पन्न करती है। पृथ्वी के नीचे धातु होती है। धातु गल कर जलीय रूप धारण करता है। जल काष्ठ उत्पन्न करता है। इसी प्रकार विध्वंस क्रिया में काष्ठ (वृक्ष) पृथ्वी को सोख लेता है। पृथ्वी जल को सोख लेती है। जल अग्नि को बुझा देता है। अग्नि धातु को गला देती है। एवं धातु के बने औजारों से काष्ठ को काटा जाता है। इस प्रकार हर तत्व दो अन्य तत्वों से उत्पाद क्रिया में और दो तत्वों से विध्वंस क्रिया द्वारा जुड़ा हुआ है। इन पांच तत्वों की दिशाएं एवं कारक तत्व निम्न वर्गों में दर्शाते हैं:-

जल स्थान पर फव्वारा, मछली घर, पानी के चित्र लगाना शुभ होता है। काष्ठ के स्थान पर हरी-भरी तस्वीरें, पौधें आदि, अग्नि स्थान में बिजली का सामान या लाल रंग के चित्र, पृथ्वी स्थान पर पर्वतों के चित्र, मिट्टी की बनी वस्तुएं, ग्लोब आदि रखना शुभ होता है। धातु स्थान पर वायुघंटियां या सुनहरी चित्र अच्छे रहते हैं। अग्नि

आ. द. नै.

| पू. | | | | प. |
|---|---|---|---|---|
| | काष्ठ | अग्नि | पृथ्वी | |
| पू. | काष्ठ | | धातु | प. |
| | पृथ्वी | जल | धातु | |

ई. उ. वा.

आ. द. नै.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | संपत्ति | प्रसिद्धि | विवाह | |
| पू. | बुजुर्ग एवं वरिष्ठ | | सर्जनात्मक और संतान | प. |
| | ज्ञान और शिक्षा | व्यवसाय | सहायक मित्र | |

ई. उ. वा.

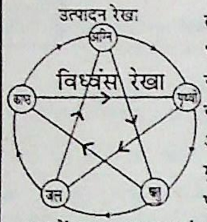

तत्वों का उत्पादन एवं विध्वंश चक्र

तत्व के स्थान पर या काष्ठ की वस्तुएं भी सहायक सिद्ध होंगी। अर्थात् दक्षिण में यदि जल रखेंगे तो जल अग्नि को नष्ट कर देगा। अर्थात् प्रसिद्धि नष्ट हो जाएगी और धातु रख देंगे तो मित्र या संतान से मुसीबतें आएंगी। लेकिन अग्नि स्थान पर पृथ्वी फेंग सुई के अनुसार दरवाजे पर घंटियां लटकाना बहुत ही शुभ हैं। ये आपके घर में सद्भाग्य के प्रवेश की सूचक है। इसी प्रकार से फेंग सुई के सिक्के घर में लटकाने से संपत्ति आती है। सूखें फूल, बोन्साई या कांटेदार पौधे घर में रखना अशुभ माना है। हंसते हुए बुद्धि की मूर्ति धन-दौलत की प्रतीक मानी जाती है और इसे ड्राइंग रूम या ऑफिस में सजाना समृद्धि प्रदान करता है। तीन टांग वाला मेंढक भी मुंह में एक या तीन सिक्के लिए हुए धन आगमन का प्रतीक माना गया है यदि इसे मुंह घर की ओर घुसते हुए दर्शाया गया हो। इसी प्रकार आपकी व्यावसायिक मेज पर इसे इस प्रकार रखें कि यह आपके ग्राहक से पैसा ले कर आपको दे रहा है। लंबी गर्दन वाला धातु का कछुआ भी उत्तर दिशा में अथवा मेज पर रखना अति समृद्धिदायक है। इसे जल में या बिना जल के रखा जा सकता है।

स्फटिक का गोला संबंधों को मधुर बनाता है। बतख का जोड़ा या लव-बर्ड्स भी संबंधों को मधुर बनाते हैं। इसी प्रकार पवनघंटियां उत्तर-पश्चिम दिशा में लगाना शुभ माना गया है। क्योंकि धातु के लिए यही दिशा निश्चित की गई है। अगरबत्ती व धूपबत्ती का प्रयोग नकारात्मक ऊर्जा को दूर करता है। मंत्रों का उच्चारण या पवित्र धुन भी फेंग सुई में विशेष स्थान रखती है। चलते रहने वाले बंद उपकरण घर में रखना शुभ नहीं माना गया है। बैठने के स्थान पर पीछे पर्वत आदि के चित्र स्थायित्व प्रदान करते हैं। फेंग सुई में ड्रेगन अच्छी यांग ऊर्जा को दर्शाता है। अत: काष्ठ का ड्रेगन पूर्व दिशा में कार्यालय को क्रियाशील कर देता है। दक्षिण कौने में स्थापित चित्र दूरदर्शिता देता है। बांस के पौधे लंबी आयु एवं अच्छा स्वास्थ्य देता है। चीनी देवता लुक लुक और साउ क्रमशः समृद्धि सम्मान एवं दीर्घायु देने वाले हैं। इनकी मूर्तियों को केवल रखने से सब कुछ मिल जाता है। यदि द्वार पर किसी बड़ी इमारत मंदिर या पेड़ का साया पड़ता हो अर्थात् द्वार भेद हो तो बा-गुआ अष्टकोणीय शीशा द्वार पर ऐसी नकारात्मक ऊर्जा को परावर्तित कर घर के अंदर नहीं आने देता।

इस प्रकार फेंग सुई बहुत ही आसान उपायों द्वारा आवास या कार्य स्थल से नकारात्मक ऊर्जा को बाहर कर सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होती है। इसी प्रकार पिरामिड भी सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने में उपयोग किए जा सकते हैं।

चीनी कला फेंग सुई और भारतीय वास्तु पद्धति में कई मतभेद हैं। भारतीय वास्तु पद्धति में आठ दिशाओं के आठ देवता हैं। कुबेर का निवास उत्तर में है जबकि फेंग सुई में आग्नेय कोण में संपत्ति का स्थान माना गया है। भारतीय वास्तु में ईशान में जल अच्छा माना है जबकि फेंग सुई में उत्तर में। इसी प्रकार अग्नि का स्थान फेंग सुई में दक्षिण में है एवं भारतीय वास्तु में आग्नेय कोण में। इस प्रकार दोनों पद्धतियों में अनेक अंतर हैं। दोनों पद्धतियों के मिलाने से अनेक दोष उत्पन्न हो जाते हैं। मेरा मानना है कि भारतीय पद्धति अवश्य ही भारत के अनुरूप बनी हुई है। अत: भारत में तो अवश्य ही भारतीय पद्धति अपनाएं तो बेहतर होगा। भारतीय पद्धति में भी यंत्र, मंत्र एवं तंत्र द्वारा वास्तु दोष निवारण विधियां बताई गई हैं। उनके उपयोग भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुए हैं। फेंग सुई की वस्तुएं आप घर में सजाने एवं बिना तोड़फोड़ के समृद्धि बढ़ाने में लाने के लिए अवश्य उपयोग में ला सकते हैं, लेकिन पूर्ण रूप से भारतीय वास्तु के नियम पालन ही वास्तु दोष निवारण में ठीक हैं।

ई. पू. आ.

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | गुरु | सूर्य | शुक्र | |
| उ. | बुध | | मंगल | द. |
| | चंद्र | शनि | राहु | |

वा. प. नै.

**अरुण बंसल**

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

पर्वतों के चित्र, मिट्टी की बनी वस्तुएं, ग्लोब आदि रख... है। धातु स्थान पर वायुचेंटियां या सुनहरी चित्र अच्छे रहते हैं। अग्नि

...विशेष स्थान रखती है। चलते रहने वाले बंद उपकरण घर में रखना शुभ

...लेकिन पूर्ण रूप से भारतीय वास्तु के नियम पालन ही वास्तु दोष निवारण में ठीक हैं।

अरुण बंसल

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



# रत्न क्यों, कब, कैसे और कौन-सा पहनें?

रत्नों की उत्पत्ति समुद्र मंथन से जुड़ी हुई है। रत्नों की महत्ता ज्योतिष शास्त्र में ग्रहों के उपचार के लिए विशेष रूप में कही गयी है। रत्न कैसे काम करते हैं? क्या कोई उपरत्न या शीशे का रंगीन टुकड़ा रत्न का काम नहीं कर सकता?

इसको समझने के लिए एक रेडियो को देखें। जिस प्रकार माइक्रो तरंगें पूरे आकाश मंडल में व्याप्त हैं, लेकिन उनको पकड़ कर ध्वनि में परिवर्तित करने के लिए रेडियों को एक आवृत्ति पर समस्वरण करना पड़ता है, उसी प्रकार प्रत्येक ग्रह से आने वाली सभी तरंगें वायु मंडल में स्थित हैं और इनको एकत्रित करने के लिए खास माध्यम की आवश्यकता होती है। विशेष रत्न विशेष ग्रह की रश्मियों को अनुकूल बनाने की क्षमता रखते हैं। समस्वरण शीघ्र ही बदल जाता है, इसलिए उपरत्न या उसी रंग का शीशा समस्वरण का काम नहीं कर पाता। रत्न रश्मियों को एकत्रित कर मनुष्य के शरीर में समावेश कराते हैं। इसीलिए मुद्रिका को इस प्रकार बनाया जाता है कि उसमें जड़ा रत्न शरीर को छूता रहे।

हमारे हाथ की अलग-अलग उंगलियों से स्नायु नियंत्रण मस्तिष्क के अलग-अलग भागों में जाता है एवं उनका असर उसके अनुरूप होता है। विशेष रत्न को विशेष उंगली में पहनने का आधार भी यही है। किस ग्रह की रश्मियों का असर मस्तिष्क के किस भाग में जाना चाहिए, उसके अनुसार उंगलियों का ग्रहों से संबंध बताया गया है।

किसको कौनसा रत्न पहनना चाहिए, इसके लिए अनेकों नियम बताये गये हैं, जैसे : १. जन्म राशि या नक्षत्र के अनुसार २. सूर्य राशि के अनुसार ३. दशा-अंतर्दशा के अनुसार ४. जन्मपत्री के अनुसार शुभ ग्रहों के लिए ५. जन्मपत्री के अनुसार अशुभ ग्रहों के लिए ६. जन्मवार के अनुसार ७. मूलांक, भाग्यांक या नामांक के अनुसार ८. हस्त रेखा के अनुसार ९. आवश्यकता अनुसार या रत्न के गुण के अनुसार। यदि हम सभी पद्धतियों द्वारा बताये गये रत्नों को पहनेंगे, तो हमें सारे ही रत्न पहनने पड़ेंगे और यदि हम इन पद्धतियों द्वारा बताये गये रत्नों में से एक सामान्य (common) रत्न पहनने की कोशिश करेंगे, तो शायद कभी भी कोई रत्न धारण नहीं कर पाएंगे। अतः हमें एक सर्वशुद्ध पद्धति ही अपनानी चाहिए और वह है, अपनी आवश्यकता के अनुसार, जन्मपत्री के शुभ ग्रहों के लिए रत्न धारण करना।

शुभ भावों के स्वामी या उनमें स्थित ग्रह ही शुभ फलदायक होते हैं। ग्रह शुभ है कि नहीं, इसके लिए हम, गणित के आधार पर/एक, सूत्र बना सकते हैं :

| भाव | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अंक | ५ | २ | १ | ३ | ४ | १ | २ | -१ | ५ | ३ | २ | ० |

ग्रह किस भाव का स्वामी है, उसके अंक एवं जिस भाव में वह बैठा है, उसके अंक को जोड़ दें। यदि ग्रह एक ही भाव का स्वामी है, तो दो से गुणा कर जोड़ें। इस प्रकार प्राप्तांक यदि ७ या उससे अधिक है, तो ग्रह शुभ है, अन्यथा अशुभ। जैसे सिंह लग्न की कुंडली में यदि सूर्य चतुर्थ भाव में बैठा है, तो सूर्य को चौथे भाव में मिले ३ अंक एवं लग्नेश होने के कारण मिले ५ अंक, कुल अंक मिले ५×२+३ = १३, अर्थात् शुभ। इसी प्रकार इसमें यदि शनि चतुर्थ भाव में है, तो शनि को चौथे भाव से मिले ३ अंक, सप्तमेश के मिले २ अंक एवं षष्ठेश होने का मिला १ अंक। कुल प्राप्तांक = ३+२+१ = ६, अर्थात् अशुभ।

इस प्रकार कौन सा रत्न किस कुंडली में शुभ रहेगा या अशुभ, इसका सूत्र हुआ : **ग्रह अंक = ग्रह के भाव स्थिति का अंक + ग्रह के एक भाव का अंक + ग्रह के दूसरे भाव का अंक।**

रत्न कितने भार का पहनना है, इसके लिए ग्रह का बल एवं जातक का भार, दो मुख्य चर हैं। यदि जातक का भार अधिक है, तो रत्न का भार भी अधिक होना चाहिए। यदि ग्रह का बल कम है, तो ग्रह को अधिक बल देने के लिए, रत्न का भार अधिक होना चाहिए। इस क्रिया को भी एक छोटे से सूत्र में बांध सकते हैं। प्रत्येक रत्न का औसत भार अलग-अलग रहता है, जैसे,

| रत्न | माणिक | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| औसतभार | ४ | ४ | ६ | ४ | ४ | १ | ४ | ५ | ६ |

रत्न के औसत भार में बदलाव जातक की कुंडली में उस ग्रह के बल एवं जातक के भार के अनुसार करना चाहिए। यदि जातक का औसत भार ६० किलो माना जाए तो

$$\text{रत्न का भार} = \frac{\text{औसत भार} \times \text{जातक का भार}}{\text{६०} \times \text{ग्रह षट्बल}}$$

ग्रह के षट्बल से भाग देने के कारण यदि ग्रह बलवान है, तो रत्न का भार कम हो जाता है और यदि ग्रह बलहीन है, तो भार अधिक हो जाता है।

उपर्युक्त सूत्र से जो वजन आये, उसे सवाये में बदल लेना चाहिए, जैसे यदि गणना के द्वारा ६½ रत्ती भार आता है, तो उसे ७¼ रत्ती भार का रत्न पहनना चाहिए। इस प्रकार रत्न एवं उसके भार की गणना कर के जातक को रत्न के लिए नीचे बतायी गयी उंगली में, रत्न को उपयुक्त धातु में जड़वा कर, पहनना चाहिए।

| रत्न | ग्रह | धातु | उंगली | वार | समय |
|---|---|---|---|---|---|
| माणिक | सूर्य | सोना | अनामिका | रवि | प्रातः |
| मोती | चंद्र | चांदी या सोना (चांदी युक्त) | कनिष्ठिका | सोम | प्रातः |
| मूंगा | मंगल | चांदी या सोना (तांबा युक्त) | अनामिका | मंगल | प्रातः |
| पन्ना | बुध | सोना | कनिष्ठिका | शुक्र | प्रातः |
| पुखराज | गुरु | सोना | तर्जनी | गुरु | प्रातः |
| हीरा | शुक्र | प्लैटिनम या सोना (चांदी युक्त) | कनिष्ठिका | शुक्र | प्रातः |
| नीलम | शनि | पंच धातु या सोना (१४ कैरेट) | मध्य | शनि | सायं |
| गोमेद | राहु | अष्ट धातु या सोना (१४ कैरेट) | मध्य | शनि/बुध | सूर्यास्त |
| लहसुनिया | केतु | सोना | अनामिका | गुरु/मंगल | सूर्यास्त |

यदि ग्रह अपनी राशि में न हो कर मित्र राशि में है, तो रत्न को उसकी उंगली में भी पहनाया जा सकता है, जैसे शुक्र यदि शनि के घर में हो, तो शनि की उंगली में पहनाने से शुभ फल प्राप्त होते हैं।

उपर्युक्त गणना से प्राप्त शुभ ग्रह का रत्न उसकी या उसके मित्र की दशा में पहनना चाहिए। यदि ग्रह अशुभ है या शुभ है, लेकिन उसके मित्रादि की दशा नहीं है, तो उसका रत्न नहीं पहनना चाहिए। केवल दशानुसार रत्न पहनना हानिकारक हो सकता है। साथ ही आवश्यकतानुसार, जैसे शादी के लिए सप्तमेश का रत्न, पढ़ाई के लिए चतुर्थेश या पंचमेश का रत्न, स्वास्थ्य के लिए लग्नेश का रत्न आदि भी ग्रह की शुभता एवं दशा नाथ से शुभ संबंध देख कर ही पहनना चाहिए।

अरुण बंसल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



## जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं

### भिन्न-भिन्न देशों का समय

संसार के हर एक देश में दिन तो २४ घण्टे का माना जाता है परन्तु हर देश का स्टैंडर्ड टाईम अर्थात् समय भिन्न है। उदाहरण के रूप में जब भारत में दिन के १२ बजते हैं तो लन्दन में प्रात: के साढ़े छ: बजे होते हैं। भिन्न-भिन्न देशों की राजधानियों के समय और भारत के समय में अन्तर स्पष्ट किये जाते हैं:-

| नगर | देश | समय |
|---|---|---|
| लन्दन | ब्रिटेन | ६.३० प्रात: |
| बैंकाक | थाइलैंड | ९.३० रात |
| मक्का | सऊदी अरब | ९.३० प्रात: |
| कुआलाम्पुर | मलेशिया | २.०० प्रात: |
| पेरिस | फ्रांस | ७.३० प्रात: |
| नेरोबी | कीनिया | १०.०० प्रात: |
| तेहरान | ईरान | १०.०० प्रात: |
| काबुल | अफगान | ११.०० प्रात: |
| बुडापेस्ट | हंगरी | ७.३० प्रात: |
| कराची | पाकिस्तान | ११.३० दोपहर |
| मास्को | रूस | ९.३० प्रात: |
| पेइचिंग | चीन | २.३० दोपहर |
| बगदाद | इराक | ९.३० प्रात: |
| न्यूयार्क | अमेरिका | २.३० प्रात: |
| टोकियो | जापान | ३.३० सायं |
| बर्लिन | पू. जर्मनी | ७.३० प्रात: |
| काहिरा | मिस्र | ८.३० प्रात: |
| जेनैवा | स्वि. लैण्ड | ७.३० प्रात: |
| कनाडा | कैनेडा | ११.०० रात्रि |

## मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि

कर्म छ: प्रकार के होते हैं। १. शान्ति कर्म। २. वशीकरण। ३. स्तम्भन। ४. वैर। ५. उच्चाटन। ६. मारण।

### कर्मों के लक्षण

१. रोग और ग्रहादि के निवारण को शंत कर्म कहते हैं।
२. सब वस्तुओं को वश में करने को वशीकरण कहते हैं।
३. चलते हुओं को रोकने को स्तम्भन कहते हैं।
४. दो मित्रों में वैर कहते हैं।
५. स्वदेश से निकल कर दूसरे देश में चले जाने को उच्चाटन कहते हैं।
६. जीव को मार देना मारण कहते हैं।

### कर्मों की दिशा

शान्ति कर्म ईशान दिशा में करना चाहिए, वशीकरण उत्तर दिशा में करना चाहिए, स्तम्भन पूर्व दिशा में करना चाहिए, विदेश नेत्रऋत्य दिशा में, उच्चाटन वायव्य दिशा में और मारण अग्नि दिशा में करना चाहिए।

## खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं?

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुन: प्राप्ति शीघ्र हो जाती है। २. सुलोचन नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है। ३. मध्याक्ष नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इस बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती। ४. मन्दाक्ष नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है।

अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं:-

| नक्षत्र संख्या | नाम नक्षत्र | | | | | | | मिलेगी या नहीं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १. अन्धाक्ष | रोहिणी | पुष्य | उ.फा. | पू.फा. | विशा. | धनि. | रेव. | शीघ्र मिलेगी। |
| २. सुलोचन | कृकि. | पुन. | पू.फा. | स्वा. | मूला. | श्रव. | उभा. | नहीं मिलेगी। |
| ३. मध्याक्ष | भर. | आर्द्रा | मघा | पू.भा. | चित्रा | ज्ये. | अभि. | पता लगने पर भी नहीं मिलेगी। |
| ४. मन्दाक्ष | अश्वि. | मृग. | आश्ले | हस्त | अनु. | उ.षा. | शत. | बहुत यत्न करने पर मिलेगी। |

## कैलेण्डर १८०१-१९९९

### (अ) वर्ष

| १८०१-१९०० | | | | १९०१-१९९९ | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ०१ | २९ | ५७ | ८५ | | २५ | ५३ | ८१ |
| ०२ | ३० | ५८ | ८६ | | २६ | ५४ | ८२ |
| ०३ | ३१ | ५९ | ८७ | | २७ | ५५ | ८३ |
| ०४ | ३२ | ६० | ८८ | | २८ | ५६ | ८४ |
| ०५ | ३३ | ६१ | ८९ | ०१ | २९ | ५७ | ८५ |
| ०६ | ३४ | ६२ | ९० | ०२ | ३० | ५८ | ८६ |
| ०७ | ३५ | ६३ | ९१ | ०३ | ३१ | ५९ | ८७ |
| ०८ | ३६ | ६४ | ९२ | ०४ | ३२ | ६० | ८८ |
| ०९ | ३७ | ६५ | ९३ | ०५ | ३३ | ६१ | ८९ |
| १० | ३८ | ६६ | ९४ | ०६ | ३४ | ६२ | ९० |
| ११ | ३९ | ६७ | ९५ | ०७ | ३५ | ६३ | ९१ |
| १२ | ४० | ६८ | ९६ | ०८ | ३६ | ६४ | ९२ |
| १३ | ४१ | ६९ | ९७ | ०९ | ३७ | ६५ | ९३ |
| १४ | ४२ | ७० | ९८ | १० | ३८ | ६६ | ९४ |
| १५ | ४३ | ७१ | ९९ | ११ | ३९ | ६७ | ९५ |
| १६ | ४४ | ७२ | | १२ | ४० | ६८ | ९६ |
| १७ | ४५ | ७३ | | १३ | ४१ | ६९ | ९७ |
| १८ | ४६ | ७४ | | १४ | ४२ | ७० | ९८ |
| १९ | ४७ | ७५ | | १५ | ४३ | ७१ | ९९ |
| २० | ४८ | ७६ | | १६ | ४४ | ७२ | |
| २१ | ४९ | ७७ | ०० | १७ | ४५ | ७३ | |
| २२ | ५० | ७८ | | १८ | ४६ | ७४ | |
| २३ | ५१ | ७९ | | १९ | ४७ | ७५ | |
| २४ | ५२ | ८० | | २० | ४८ | ७६ | |
| २५ | ५३ | ८१ | | २१ | ४९ | ७७ | |
| २६ | ५४ | ८२ | | २२ | ५० | ७८ | |
| २७ | ५५ | ८३ | | २३ | ५१ | ७९ | |
| २८ | ५६ | ८४ | | २४ | ५२ | ८० | |

### (ब) महीने

| जन. | फर. | मार्च | अप्री. | मई | जून | जुला. | अग. | सितं. | अक्टू. | नवं. | दिसं. |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ० | ० | ३ | ५ | १ | ३ | ६ | २ | ४ | ० | २ |
| ५ | १ | १ | ४ | ६ | २ | ४ | ० | ३ | ५ | १ | ३ |
| ६ | २ | २ | ५ | ० | ३ | ५ | १ | ४ | ६ | २ | ४ |
| ० | ३ | ४ | ० | २ | ५ | ० | ३ | ६ | १ | ४ | ६ |
| २ | ५ | ५ | १ | ३ | ६ | १ | ४ | ० | २ | ५ | ० |
| ३ | ६ | ६ | २ | ४ | ० | २ | ५ | १ | ३ | ६ | १ |
| ४ | ० | ० | ३ | ५ | १ | ३ | ६ | २ | ४ | ० | २ |
| ५ | १ | २ | ५ | ० | ३ | ५ | १ | ४ | ६ | २ | ४ |
| ० | ३ | ३ | ६ | १ | ४ | ६ | २ | ५ | ० | ३ | ५ |
| १ | ४ | ४ | ० | २ | ५ | ० | ३ | ६ | १ | ४ | ६ |
| २ | ५ | ५ | १ | ३ | ६ | १ | ४ | ० | २ | ५ | ० |
| ३ | ६ | ० | ३ | ५ | १ | ३ | ६ | २ | ४ | ० | २ |
| ५ | १ | १ | ४ | ६ | २ | ४ | ० | ३ | ५ | १ | ३ |
| ६ | २ | २ | ५ | ० | ३ | ५ | १ | ४ | ६ | २ | ४ |
| ० | ३ | ३ | ६ | १ | ४ | ६ | २ | ५ | ० | ३ | ५ |
| १ | ४ | ५ | १ | ३ | ६ | १ | ४ | ० | २ | ५ | ० |
| ३ | ६ | २ | ६ | ४ | ० | २ | ५ | १ | ३ | ६ | १ |
| ४ | ० | ० | ३ | ५ | १ | ३ | ६ | २ | ४ | ० | २ |
| ६ | २ | ३ | ६ | १ | ४ | ६ | २ | ५ | ० | ३ | ५ |
| १ | ४ | ४ | ० | २ | ५ | ० | ३ | ६ | १ | ४ | ६ |
| २ | ५ | ५ | १ | ३ | ६ | १ | ४ | ० | २ | ५ | ० |
| ३ | ६ | ६ | २ | ४ | ० | २ | ५ | १ | ३ | ६ | १ |
| ४ | ० | १ | ४ | ६ | २ | ४ | ० | ३ | ५ | १ | ३ |
| ६ | २ | २ | ५ | ० | ३ | ५ | १ | ४ | ६ | २ | ४ |
| ० | ३ | ३ | ६ | १ | ४ | ६ | २ | ५ | ० | ३ | ५ |
| १ | ४ | ४ | ० | २ | ५ | ० | ३ | ६ | १ | ४ | ६ |
| २ | ५ | ६ | २ | ४ | ० | २ | ५ | १ | ३ | ६ | १ |

### (स) साप्ताहिक दिन

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| रवि | १ | ८ | १५ | २२ | २९ | ३६ |
| सोम | २ | ९ | १६ | २३ | ३० | ३७ |
| मंगल | ३ | १० | १७ | २४ | ३१ | |
| बुध | ४ | ११ | १८ | २५ | ३२ | |
| गुरु | ५ | १२ | १९ | २६ | ३३ | |
| शुक्र | ६ | १३ | २० | २७ | ३४ | |
| शनि | ७ | १४ | २१ | २८ | ३५ | |

### कलैण्डर को प्रयोग में लाने की विधि

अगर हमें मालूम करना है कि किस तारीख को कौन सा दिन पड़ता है। जैसे १ मई १८८६ को कौन सा दिन था।? पहले वर्ष वाले कॉलम (अ) में (१८०१ से १९०० तक) सन् १८८६ पर अंगुली रखें उसकी सीध में अंगुली महीने वाले कॉलम (ब) में मई मास पर लें जाएं। जो अंक प्राप्त हो (६) उसे उस तारीख में जोड़ दें (१) जिस तारीख का हमें वार मालूम करना है। (६+१=७) अब आप कॉलम (स) में ७ के सामने शनिवार पाएंगे तो पहली मई १८८६ को शनिवार था।

प्रकाशक: [illegible] ... २३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS
प्रकाशक: धर्मसेन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

पृष्ठ ६३ का शेष...

## (कृष्ण) गणेश चतुर्थी व्रत

| | |
|---|---|
| वैशाख | १९ अप्रैल |
| ज्येष्ठ | १९ मई |
| आषाढ़ | १७ जून |
| श्रावण | १७ जुला. |
| भाद्रपद | १५ अग. |
| आश्विन | १४ सितं. |
| कार्तिक | १४ अक्टू. |
| मार्गशीर्ष | १२ नवं. |
| पौष | १२ दिसं. |
| माघ सन् २००४ई. | ११ जन. |
| फाल्गुन | ९ फर. |
| चैत्र | १० मार्च |

## अमावस्याएं

| | | |
|---|---|---|
| वैशाख | | १ मई |
| ज्येष्ठ | | ३१ '' |
| आषाढ़ | | २९ जून |
| श्रावण | भौमवती | २९ जुला. |
| भाद्रपद | | २७ अग. |
| आश्विन | | २५ सितं. |
| कार्तिक | | २५ अक्टू. |
| मार्गशीर्ष | | २३ नवं. |
| पौष | भौमवती | २३ दिसं. |
| माघ | सन् २००४ई. | २१ जन. |
| फाल्गुन | | २० फर. |
| चैत्र | | २० मार्च |

## आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

| | |
|---|---|
| पूर्णिमा का श्राद्ध | १० सितं. |
| प्रतिपदा का '' | ११ '' |
| द्वितीया का '' | १२ '' |
| तृतीया का '' | १३ '' |
| चतुर्थी का '' | १४ '' |
| पंचमी का '' | १५ '' |
| षष्ठी का '' | १६ '' |
| सप्तमी का '' | १७-१८ '' |
| अष्टमी का '' | १९ '' |
| नवमी का '' | २० '' |
| दशमी का '' | २१ '' |
| एकादशी का '' | २२ '' |
| द्वादशी का '' | २३ '' |
| त्रयोदशी का '' | २४ '' |
| चतुर्दशी का '' | २५ '' |
| अमावस्या व सर्व पितृ श्राद्ध | २५ '' |

## एकादशी व प्रदोष व्रत

| मास व पक्ष | | एकादशी व्रत | प्रदोष व्रत | |
|---|---|---|---|---|
| चैत्र | शुक्ल | १३ अप्रैल | १४ अप्रैल | |
| वैशाख | कृष्ण | २६-२७ '' | २८ '' | सोम प्रदोष |
| '' | शुक्ल | १२ मई | १४ मई | |
| ज्येष्ठ | कृष्ण | २६ '' | २८ '' | |
| '' | शुक्ल | १०-११ जून | १२ जून | |
| अषाढ़ | कृष्ण | २५ '' | २७ '' | |
| '' | शुक्ल | १० जुलाई | ११ जुलाई | |
| श्रावण | कृष्ण | २४-२५ '' | २६ '' | शनि प्रदोष |
| '' | शुक्ल | ८ अगस्त | ९ अगस्त | '' |
| भाद्रपद | कृष्ण | २३ '' | २५ '' | सोम प्रदोष |
| '' | शुक्ल | ६ सितं. | ८ सितं. | '' |
| आश्विन | कृष्ण | २२ '' | २३ '' | भौम प्रदोष |
| '' | शुक्ल | ६ अक्टू. | ७ अक्टू. | '' |
| कार्तिक | कृष्ण | २१-२२ '' | २३ '' | |
| '' | शुक्ल | ४ नवं. | ६ नवं. | |
| मार्गशीर्ष | कृष्ण | २० '' | २१ '' | |
| '' | शुक्ल | ४ दिसं. | ६ दिसं. | शनि प्रदोष |
| पौष | कृष्ण | १९-२० '' | २१ '' | |
| **सन् २००४ ई.** | | | | |
| '' | शुक्ल | ३ जन. | ४ जन. | |
| माघ | कृष्ण | १८ '' | १९ '' | सोम प्रदोष |
| '' | शुक्ल | १-२ फर. | ३ फर. | भौम प्रदोष |
| फाल्गुन | कृष्ण | १६ '' | १८ '' | |
| '' | शुक्ल | २ मार्च | ४ मार्च | |
| चैत्र | कृष्ण | १७ '' | १८ '' | |

## पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

| ता. मास | सन् | घं.मि. | से | ता. मास | सन् | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ अप्रैल | २००३ई. | २६।८ | '' | २ अप्रैल | २००३ई. | २५।२९ | '' |
| २५ '' | '' | ८।५३ | '' | ३० '' | '' | ७।३३ | '' |
| २२ मई | '' | १५।४५ | '' | २७ मई | '' | १३।३८ | '' |
| १८ जून | '' | २४।१९ | '' | २३ जून | '' | २०।२३ | '' |
| १६ जुलाई | '' | ९।४७ | '' | २० जुलाई | '' | २८।१ | '' |
| १२ अगस्त | '' | १८।५३ | '' | १७ अगस्त | '' | १२।१२ | '' |
| ८ सितंबर | '' | २६।३२ | '' | १३ सितंबर | '' | २०।१३ | '' |
| ६ अक्टूबर | '' | ८।३५ | '' | १० अक्टूबर | '' | २७।२७ | '' |
| २ नवंबर | '' | १४।७ | '' | ७ नवंबर | '' | ९।४७ | '' |
| २९ '' | '' | २०।५६ | '' | ४ दिसंबर | '' | १५।४४ | '' |
| २६ दिसंबर | '' | ३०।२ | '' | ३१ '' | '' | २२।२० | '' |
| २३ जनवरी | २००४ ई. | १६।३४ | '' | २७ जनवरी | २००४ ई. | ३०।१६ | '' |
| १९ फरवरी | '' | २६।२८ | '' | २४ फरवरी | '' | १५।१२ | '' |
| १८ मार्च | '' | १०।१३ | '' | २२ मार्च | '' | २३।५६ | '' |

## गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

| ता. मास | सन् | घं.मि. | से | ता. मास | सन् | घं.मि. | तक |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ अप्रैल | २००३ई. | २२।३९ | '' | ३ अप्रैल | २००३ई. | २८।३२ | '' |
| ११ '' | '' | १९।८ | '' | १३ '' | '' | १७।५२ | '' |
| १९ '' | '' | २३।३० | '' | २१ '' | '' | २०।१३ | '' |
| २८ '' | '' | २८।३६ | '' | १ मई | '' | १०।३९ | '' |
| ८ मई | '' | २६।५९ | '' | १० '' | '' | २६।४१ | '' |
| १७ '' | '' | २०।१० | '' | १९ '' | '' | ५।३३ | '' |
| २६ '' | '' | १०।३९ | '' | २८ '' | '' | १६।४७ | '' |
| ५ जून | '' | ८।४६ | '' | ७ जून | '' | ९।१८ | '' |
| १३ '' | '' | २०।४२ | '' | १५ '' | ''' | १६।० | '' |
| २२ '' | '' | १७।३३ | '' | २४ '' | '' | २३।२९ | '' |
| २ जुलाई | '' | १४।२२ | '' | ४ जुलाई | '' | १४।४५ | '' |
| ११ '' | '' | ५।४७ | '' | १२ '' | '' | २५।५२ | '' |
| १९ '' | '' | २५।२८ | '' | २२ '' | '' | ६।५८ | '' |
| २९ '' | '' | २।१९ | '' | ३१ '' | '' | २०।४३ | '' |
| ७ अगस्त | '' | १२।३६ | '' | ९ अगस्त | '' | ९।५२ | '' |
| १६ '' | '' | ९।५५ | '' | १८ '' | '' | १४।५८ | '' |
| २५ '' | '' | २९।३५ | '' | २७ '' | '' | २८।२९ | '' |
| ३ सितंबर | '' | १८।१ | '' | ५ सितंबर | '' | १५।५४ | '' |
| १२ '' | '' | १८।२ | '' | १४ '' | '' | २२।५१ | '' |
| २२ '' | '' | १५।२ | '' | २४ '' | '' | १४।५ | '' |
| ३० '' | '' | २४।२ | '' | २ अक्टू. | '' | २१।१९ | '' |
| ९ अक्टू. | '' | २५।१० | '' | ११ '' | '' | ३०।६ | '' |
| १९ '' | '' | २४।१० | '' | २१ '' | '' | २४।१६ | '' |
| २८ '' | '' | ८।२४ | '' | २९ '' | '' | २८।११ | '' |
| ६ नवम्बर | '' | ७।१७ | '' | ८ नवं. | '' | १२।३४ | '' |
| १६ '' | '' | ७।४३ | '' | १८ '' | '' | ९।१७ | '' |
| २४ '' | '' | १९।१२ | '' | २६ '' | '' | १३।४२ | '' |
| ३ दिसंबर | '' | १३।१० | '' | ५ दिसंबर | '' | १८।३९ | '' |
| १३ '' | '' | १३।४२ | '' | १५ '' | '' | १६।६ | '' |
| २१ '' | '' | ३०।३८ | '' | २३ '' | '' | २४।५७ | '' |
| ३० '' | '' | २०।२ | '' | १ जनवरी | २००४ ई. | २५।१९ | '' |
| ९ जनवरी | २००४ ई. | १९।२८ | '' | ११ '' | '' | २१।३६ | '' |
| १८ '' | '' | १६।१६ | '' | २० '' | '' | ११।३९ | '' |
| २६ '' | '' | २८।३० | '' | २९ '' | '' | ८।४३ | '' |
| ५ फरवरी | '' | २६।२६ | '' | ७ फरवरी | '' | २७।४.. | '' |
| १४ '' | '' | २३।३ | '' | १६ '' | '' | १९।५३ | '' |
| २३ '' | '' | १३।५१ | '' | २५ '' | '' | १७।१४ | '' |
| ४ मार्च | '' | १०।५५ | '' | ६ मार्च | '' | १२।५३ | '' |
| १२ '' | '' | २८।२४ | '' | १४ '' | '' | २५।४३ | '' |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

 पृष्ठ ३० का शेष... 

## कुंभ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

**अप्रैल**-राहु का चतुर्थ स्थान पर गोचर भ्रमण स्वजनों से विरोध, स्वयं को मानसिक श्रम तथा मिथ्या खर्च की अधिकता कारक है। स्वास्थ्य स्थिति प्रायः कमजोर चलेगी। अनावश्यक घरेलू विवाद रहेंगे।

**मई**-स्त्री सन्तानादि के स्वास्थ्य हेतु चिन्ता, सामाजिक कामों में खर्च एवं मानसिक अशान्ति चलेगी। मास उत्तरार्द्ध में व्यापारिक कामों में नवीन मोड़ बनकर अर्थ लाभ होगा जिससे मनोस्थिति में सुधार बनेगा।

**जून**-स्वजनों के सम्बन्धों में सुधार, दैहिक स्वस्थता श्रेष्ठ बनकर व्यवसायिक कामों परिश्रम विशेष एवं जमीन-जायदाद आदि झगड़ों का निपटारा बनेगा। स्त्री सन्तानों का सहयोग होकर आर्थिक लाभ रहेगा।

**जुलाई**-मानसिक चिन्ता में कमी, मनोबल की जागृति तथा स्वजनों से श्रेष्ठ सम्पर्क बनकर मान-सम्मान की प्राप्ति होगी। राजकीय स्थानों पर प्रभाव वृद्धि एवं नवीन व्यक्तियों से शुभ सम्पर्क बनेंगे।

**अगस्त**-व्यापारिक कामों में उन्नति, राज कर्मचारियों को उच्चाधिकारी जन का सहयोग एवं पद वृद्धि योग है। भागीदारों व मित्रों द्वारा अर्थोपार्जन की नवीन योजनाओं में सफलता रूपी सहयोग रहेंगे।

**सितम्बर**-नवीन व्यवसाय के शुभारंभ से मनो हर्ष, स्त्री सन्तान का सहयोग और कुटुम्बी जनों में मान-सम्मान बढ़कर आत्म-विश्वास की दृढ़ता रहेगी। दौड़-धूप के कामों की विशेषता रहकर व्यस्तता रहेगी। राजकीय स्थानों पर प्रभाव बढ़ेगा।

**अक्टूबर**-तीसरे स्थान का राहू घरेलू व्यक्तियों के चले आ रहे मनमुटाव एवं तनाव को सुधार कर यश व प्रशंसा वृद्धि का फलप्रद है। शत्रु परास्त होंगे। आय के कामों में प्रगति होकर आर्थिक लाभ बढ़ेगा व भौतिक सुख साधनों की उपलब्धि होगी।

**नवम्बर**-कानूनी व राजकीय कामों में सफलता एवं विजय, पुरुषार्थ की वृद्धि तथा मनोबल की बढ़ोत्तरी होकर सामाजिक व धार्मिक कामों में अग्रता होगी। स्वजनों का सहयोग रहेगा। स्त्री सन्तान का सुख व सहयोग उत्तम रहेगा।

**दिसम्बर**-किसी नवीन सम्पर्क अथवा रिश्तेदारी बनने का हर्ष रहेगा। शुभ समाचारों की प्राप्ति, राजकीय कर्मचारियों को मनो इच्छित स्थान प्राप्ति से प्रसन्नता रहेगी। व्यापार कामों में आकस्मिक परिवर्तन जन्य स्थिति बनकर अर्थ लाभ बनेगा।

**जनवरी २००४** -प्रभावशाली व्यक्तियों अथवा उच्चाधिकारियों से नवीन सम्पर्क बनेगा। जिससे पारिवारिक व सामाजिक जनों के बीच प्रभाव व सम्मान वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग परास्त होगा। बुद्धि चातुर्य से आर्थिक उपार्जन में नवीन गति बनेगी।

**फरवरी**-व्यवसायिक कामों में विशेष परिश्रम व व्यस्तता बढ़ेगी। कार्य क्षेत्र व पारिवारिक कामों में प्रशंसा वृद्धि रहेगी। अर्थोपार्जन श्रेष्ठ रहेगा। मास के उत्तरार्द्ध में स्वयं को वातव्याधि आदि शारीरिक अस्वस्थता होगी। खान-पान नियंत्रण आवश्यक है।

**मार्च**-भागीदारों, मित्रों तथा स्वजनों से मनमुटाव बनकर विवादकता व तनाव बढ़ेगा। मानसिक अस्थिरता तथा क्रोध वृद्धि रहेगी। आय के कामों में आकस्मिक अवरोध पैदा होंगे और अर्थहानि संभावना बढ़ेगी।

## मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची

**अप्रैल**-शनि चतुर्थ स्थान में होने के कारण मानसिक चिन्ताएं बढ़ेंगी। सन्तान स्त्री स्वास्थ्य में न्यूनता रहकर खर्च वृद्धि रहेगी। यद्यपि अर्थोपार्जन कामों में प्रगति रहने के कारण आत्मबल व साहस सतेज रहेगा।

**मई**-परिवार के व्यक्तियों से झगड़े फिसाद बढ़कर स्वयं को क्रोध की अधिकता एवं मानसिक अस्थिरता रहेगी। मास उत्तरार्द्ध में सुधार हो कर आय के कामों में प्रगति रहेगी और स्वजनों से मान-सम्मान बढ़ेगा।

**जून**-आर्थिक आय की अपेक्षा अपव्यय की विशेषता रहेगी। स्वयं को दौड़-धूप व विशेष भ्रमण के कार्य प्रायः रहेंगे। सम्पर्कित व्यक्तियों का समागम रहेगा। स्त्री सन्तान के स्वास्थ्य हीनता की मनो चिन्ता चलेगी। राजकार्य सफल रहेंगे।

**जुलाई**-लाभदायक यात्राओं के संयोग से मानसिक प्रसन्नता रहेगी। शत्रुजन परास्त होंगे। स्वयं के प्रभाव की वृद्धि रहेगी। दम्पत्य जीवन में खुशी का वातावरण रहेगा। घरेलू निर्माण कार्य के प्रति जागरुकता बढ़ेगी।

**अगस्त**-पहले के बिगड़े कामों में सुधार तथा परिश्रम विशेष से व्यवसायिक कामों में लाभ रहेगा। कर्मचारी वर्ग को इधर-उधर भ्रमणजन्य परेशानियां रहेंगी। घर में मंगलोत्सव एवं विनोदी वातावरण रह कर आत्म-विश्वास की वृद्धि रहेगी।

**सितम्बर**-पारिवारिक व्यक्तियों की नासमझी से घरेलू कलह-विवाद एवं तनाव रहकर मानसिक अशांति चलेगी। व्यवसायिक कामों में ढीलापन रहकर रुकावटें रहेंगी। स्वयं की स्वास्थ्यहीनता रहकर देह में शिथिलता रहेगी।

**अक्टूबर**-शत्रुओं का दमन होकर मन में सन्तोष बढ़ेगा। व्यापारिक कामों में नवीन व्यवस्था बढ़कर उत्तम अर्थोपार्जन होगा। मित्रों व स्वजनों का सहयोग बढ़ेगा तथा भूमि भवन सम्बन्धी नवीन लाभ से मनोहर्ष एवं आत्मबल बढ़ेगा।

**नवम्बर**-बुद्धि चतुरता बढ़कर व्यापार कामों में आय वृद्धि रहेगी। शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। मास उत्तरार्द्ध में पत्नी व सन्तान स्वास्थ्य में गड़बड़ी होने से अस्थिरता एवं परेशानियां बढ़ेंगी। [illegible] खर्च की अधिकता [illegible]

**दिसम्बर**-देशाटन के सुअवसर प्राप्त होकर नवीन कार्य योजना बनेगी। आय की वृद्धि से मन में प्रसन्नता रहेगी। ऋण निवृत्ति तथा स्वजनों में मान-सम्मान व यशवृद्धि रहेगी। स्त्री सहयोग श्रेष्ठ रहेगा।

**जनवरी २००४** -धार्मिक कामों में रुचि बढ़ेगी। मांगलिक कामों में परिश्रम रहकर सहयोग रहेगा। यात्रादि भ्रमण कामों में व्यस्तता रहेगी। राज्य कर्मचारी वर्ग को स्व अधिकारियों के सहयोग से प्रतिष्ठा प्राप्त होगी और राज्य कृपा बनेगी।

**फरवरी**-घर में भौतिक सुख साधनों की बढ़ोत्तरी होगी। कामों की विशेषता से परिश्रम व परेशानी रहकर व्यवसायों में उत्तम अर्थ लाभ रहेगा। राज्य कामों व कानूनी कामों से मिथ्या भय बना रहेगा। मित्र सहयोग श्रेष्ठ रहेगा।

**मार्च**-बुद्धि-विवेक से लेन-देन के कार्य करें क्योंकि स्वजनों से धोखा बनकर अर्थहानि योग है। स्वयं को स्वास्थ्य हीनता उदर विकारादि प्रकोप रहेंगे। मानसिक अस्थिरता रहकर लेखनादि कामों भूल संयोग विशेष रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

जुलाई-लाभदायक यात्राओं के संयोग से मानसिक प्रसन्नता रहेगी। शत्रुजन परास्त होंगे। स्वयं के प्रभाव की वृद्धि रहेगी। दाम्पत्य

खर्च की अधिकता रहेगी।

रहेंगे। मानसिक अस्थिरता रहकर लेखनादि कामों भूल संयोग विशेष रहेगा।

 पृष्ठ ९९ का शेष.. 

तारीखों के आसपास नीचे भाव टच हो सकते हैं। ये मंदी करीब एक महीने या डेढ़ महीने पहले से चलकर इस तारीख तक मंदी चल कर नीचे से नीचे भाव बन सकते हैं। करीब २५० से ५९९ प्वाइंट की बी.एस.ई. इन्डेक्स में गिरावट आ सकती है। यदि यहाँ ऊंचे भाव बने तो फिर आगे मंदी चलेगी। नोट—२. यदि इन लिखी तारीखों में २५ दिन तेजी चल कर ऊंचे भाव बने तब आगे ही मंदी आवेगी। नीचे भाव बनने की तारीखें ये हैं-(१) २९ अगस्त २००२, (२) २५ अक्टूबर २००२ के नीचे भाव बने तो आगे दो महीने में अच्छी तेजी आवेगी। (३) २१ फरवरी २००३, २३ अप्रैल २००३ नीचे बनने का समय। (४) २३ नवम्बर २००३ को नीचे भाव तो आगे तेजी समझना। (५) २१ जनवरी २००४, (६) २३ मार्च २००४, (७) ३ अप्रैल २००४, (८) २३ सितम्बर २००४ यदि दो महीने पहले से तेजी आई तो बाद में मंदी आवेगी। शेयर में ऊंचे बनने का समय-(१) २७ सितम्बर २००२, (२) ३ जनवरी २००३, (३) १५ मार्च २००३, (४) ४ जून २००३, (५) १८ सितम्बर २००३, (६) १५ दिसम्बर २००३, (७) ९ जून २००४ इन तारीखों के एक या दो महीने पहले से यहाँ तक बी.एस.ई. में २५० से ३९९ पोइन्ट की तेजी आवेगी। इन में से कुछ चाँसों में कभी-कभी मंदी आ कर नीचे भाव भी बनेंगे या ग्राफिकल सदस्य बन कर ताजी सलाह मंगावें। ४ मई रविवार की अक्षय तृतीया है। ७ मई २००३ से १५ दिन में सरसों, मूंगफली तेल, सोयाबीन तेल १५०-५५० की धमाकेदार मंदी का धमाका हो सकता है। ७ मई से २० दिन पहले।

## मई-२००३ MAY

२१ अप्रैल से ११ मई तक, सफेद ज्वार २५०, तेल अरंडी २६३, किशमिस ५ हजार की भड़कती तेजी, इसके अलावा जीरा ७००-९००, तेल अलसी २९९, चीनी ७२, बाजरा ५५ की अच्छी तेजी बन सकती है। १५ अप्रैल से ११ मई तक पीतल, तांबा, धनियां ३६० तेज, मसूर २५०, काजू, राजमां ३९९, चना २५६, बाजरा, मक्का, छुआरा-ईसबगोल, छोटी इलाइची ७० तेजी, बिनौला तेल में अच्छी तेजी बन सकती है। २ मई से १५ तक सूत, रुई, निकिल प्लेट, बारदाना, जूट, हैंशियन में तेजी तथा किशमिश, ईसबगोल, चीनी ४५ की तेजी आवेगी। ११ मई से १५ मई तक काबली चना, धनियां, एल्यूमीनियम, मूंग, उड़द में तेजी आने पर बेचना ही ठीक रहेगा। ११ से ३१ मई तक जीरा ७०२, गेहू ७५, मक्का, बाजरा, छोटी इलाइची ९९, तांबा, पीतल में अच्छी तेजी आ सकती है। २१ मई से ५ जून तक अरण्डी तेल में जोरदार तेजी आ सकती है।

**गुवार**—३० नवम्बर २००२ से ४ फरवरी २००३ तक गुवार १५०-५५१ की खतरनाक मंदी, २ मार्च २००३ से १८ मार्च तक गुवार में १५०-२५० की तेजी तो २७ मार्च से २१ अप्रैल तक गुवार में २५० की जोरदार मंदी, तो २५ अप्रैल २००३ से १५ मई के बीच गुवार १५०-३९९ की जोरदार तेजी, २५ मई से ९ जून तक गुवार में मंदी आवेगी।

**सरसों ( डी-8एम-4 )**—३१ जनवरी २००३ से ५ मार्च के मध्य सरसों तेल, मूंगफली तेल २५०-९९९ की खतरनाक तेजी तो १५ मार्च २००३ तेलों में मंदी का झटका तो ३० अप्रैल से २१ मई के मध्य सरसों में २५०-३८० की तेजी व ७ जून से २९ जून २००३ तक सरसों १५०-३७९ की खतरनाक तेजी। ७ जून के मध्य सरसों में २५०-३६० की तेजी व ७ से २९ जून २००३ तक सरसों १५०-३७९ की खतरनाक तेजी। ७ जून से ११ जुलाई के बीच लहशुन, प्याज, अरहर, चना, मसूर में जोरदार तेजी आ सकती है। ७ मई २००३ को सूर्य बुध की इनफेरियर युति होगी।

## जून-२००३ JUNE

( ए ) (7बी) ५ जून से ७-९ दिन में तेलों में भयंकर मंदी का झटका लग सकता है। २१ मई से ११ जून २००३ तक, जीरा ९९९ की जोरदार मंदी तो हल्दी ३६०-७७७ की जोरदार तेजी बन सकती है। १५ मई से १५ जून तक जूट, बारदाना, पिपरमेंट, जई में भारी तेजी तो जावत्री में मंदी आ सकती है। २३ मई से ७ जून तक, अरहर ९९ की तेजी, चना ७७ की तेजी तो चांदी, चीनी में मंदी आ सकती है। २५ मई से ३० जून तक, सफेद ज्वार ७०२, उड़द ५०२, तेल गोला में जोरदार मंदी आ सकती है। ५ जून से ३० जून २००३ तक किशमिस, छोटी इलाइची २५० की भारी तेजी आ सकती है। २ जून से ५ जुलाई २००३ तक कलौंजी ८०३ की जोरदार मंदी आवेगी। १८ जून से ३ जुलाई २००३ चीनी ७०, गुड़ ७५, मूंगफली, रिफाइंड तेलों आ सकती है। १५ जून से २७ जून तक सोयाबीन, डी.ओ.सी. ५०६ की जोरदार मंदी तो गुड़, जौ, किशमिस, मेथी, हल्दी ७७७ तेजी, मसूर २५० में तेजी, इसके साथ-साथ काबली चना २५०, अरहर, जौ ६५, जोरदार तेजी तो रांगा, पीतल,पिस्ता, बारदाना में मंदी आ सकती है। २५ जून या २७ जुलाई से २५ दिन के अन्दर सरसों, चना, हल्दी में भयंकर तेजी बन सकती है। ( बी ) २१ जून २००३ से २९ जून तक तेलों में जोरदार मंदी आ सकती है। (बी-7) २१ जुलाई २००३ से ७ नवम्बर दिन में सरसों, सोयाबीन तेल, मूंगफली तेल में खतरनाक मंदी का दौर आ सकता है। व्यापार में कभी किसी प्रकार की कोई गारंटी नहीं होगी। चांदी, सोना में २१ मई से २५ जून तक ५०० मंदी आवे तो २१ सितम्बर २००३ तक चांदी में ९९९ की भड़कती तेजी बन सकती है। यदि यहाँ नीचे भाव बने तो आगे तेजी आवेगी। ६ जून को शनि अस्त होगा। कुंभ में मंगल होगा। १० जून का मंगलवार गंगा दशहरा होगा। २३ मई से २८ जून तक शेयर्स में तेजी आ सकती है।

## जुलाई-२००३ JULY

२९ जून से ३ अगस्त २००३ तक सरसों, अरहर में तेजी तथा ३ जुलाई से ११ अगस्त २००२ के बीच मूंगफली तेल, बिनौला तेल में भयंकर तेजी आ सकती है। हल्दी २३ फरवरी २००३ से ११ अप्रैल के मध्य २५०-६९९ की भड़कती तेजी तो २७ अप्रैल २००३ से ११ [illegible] तक हल्दी १५०-२५० की अस्थाई मंदी तो ११ मई से ५ जून २००३ के बीच हल्दी ५००-६६१ की जोरदार तेजी तो २० जून तक हल्दी में मंदी तो २१ जून से ११ अगस्त के बीच हल्दी तूफानी तेजी तो ११ अगस्त से २० अगस्त तक मंदी, २१ अगस्त २००३ से १५ अगस्त तक, हल्दी में भयंकर तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। २३ अक्टूबर से २३ दिसम्बर २००३ के बीच हल्दी में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ जुलाई २००३ से३० जून कभी पिपरमेंट में ७५-५५१ की तूफानी तेजी तथा लौंग में ७५-१५० की जोरदार तेजी तथा धनियाँ में एक बार अच्छी तेजी आ सकती है। ९ जून २००३ से ११ जुलाई २००३ के बीच गुवार में तेजी आवेगी। २५ जुलाई १५०-७०७ की जोरदार तेजी, तो २१ अगस्त २००३ तक, १५०-२५० की गुवार में मंदी आवेगी। २१ जुलाई से ११ दिन में तेलों में भयंकर मंदी चल सकती है। २७ जुलाई से ३ अक्टूबर तक शुक्र ग्रह पूर्व दिशा में अस्त रहेगा। २५ अक्टूबर २००३ से ७ मार्च २००४ तक शनि वक्री रहेगा।

(६६५डी) १५ जून से ३१ जुलाई २००३ तक, शेयर्स मार्केट में ५०५ पोइन्ट की कभी जोरदार मंदी बन सकती है। बम्बई स्टाक एक्सचेंज में २१९९ कम्पनियों के शेयर्स भाव चलते हैं तो किसी में मंदी तो किसी में तेजी। अत: २-५ विधि मेथेड से तेजी मंदी सूत्र उपयोग करने पड़ सकते हैं। ३१ जुलाई २००३ से २१ सितम्बर २००३ तक ए.सी.सी., सत्यम कम्प्यूटर, इनफोसिस, टेल्को में अच्छी तेजी बन सकती है। २१ सितम्बर से १८ अक्टूबर २००३ के बीच भयंकर मंदी बन सकती है।

## अगस्त-२००३ AUGUST

३ अगस्त २००३ से २१ अगस्त तक, चना १५०, अरहर २५०, सरसों १६० की जोरदार तेजी बन सकती है। मूंगफली तेल में २५०-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



४९५ की तूफानी तेजी आ सकती है। सरसों तेल में २५०-३९९ की जोरदार तेजी आ सकती है। २७ जुलाई से २८ अगस्त तक, अरहर ७७, चना, पिपरमेंट में २५० की तेजी तथा धनियां, खोपरा गोला में अगस्त के महीने में अच्छी तेजी आ सकती है। २१ अगस्त से ५ सितम्बर तक, सरसों, मूंगफली तेल में जोरदार मंदी, मगर कोकोनट आयल, धनियां में एक बार अच्छी तेजी आ सकती है। १५ अगस्त से ७-९ दिन में तेलों में मंदी का धमाका हो सकता है। ग्राफिकल सदस्य बन कर जानकारी ले सकते हैं। फोन-०७५१-५४०३८९ व ३६६५१८। १४ अगस्त या फिर २९ अगस्त से ९ दिन में सोयाबीन तेल में खतरनाक मंदी का दौर चल सकता है। मगर यह भी ध्यान रहे कि इससे १५ दिन पहले सरसों, बिनौला में १५०-२५० की भयंकरतेजी बननी चाहिए। १४ अगस्त २००३ तक मंगल वक्री रहेगा।

## सितम्बर-२००३ SEPTEMBER

२ से ७ सितम्बर २००३ तक फली तैल, चना में आ सकती है। ७ से १५ सितम्बर तक तेलों में तेजी तो १६ सितम्बर से ५ अक्टूबर २००३ तक, अलसी, अरण्डी, मूंगफली तेल, सोयावीन तेलों में जोरदार मंदी आ सकता है। १६ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक, चना १५०, मसूर ३६०, अरहर ७७ की जोरदार तेजी आ सकती है। २७ अगस्त से २१ सितम्बर २००३ के मध्य खोपरा गोला, धनियां, सोंठ, हल्दी में एक बार तूफानी तेजी आ सकती है। २१ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक सोया में अच्छी तेजी आवेगी। मगर लौंग, लाल मिर्च, ज्वार में जोरदार मंदी मगर सुपारी, अजवाइन, बड़ी व छोटी इलाइची, अमचूर ७०० तेजी, इलाइची, बड़ी इलाइची कालीमिर्च में एक बार अच्छी तेजी बन सकती है। ११ सितम्बर २००३ को सूर्य बुध की इनफेरियर युति होगी।

## अक्टूबर-२००३ OCTOBER

२७ सितम्बर २००३ से ५ अक्टूबर २००३ तक छुआरे ५०० तेजी तथा लौंग, कालीमिर्च, मसूर, राजमां १५०, काबलीचना ३०९ की तेजी, मगर चावल, मूंग में मंदी आवेगी। ३ अक्टूबर से २५ अक्टूबर तक मक्का में ७० तेजी, ९९९-१२५३ की भयंकर अस्थाई तेजी बन सकती है। ५ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २००३ तक किशमिश ३७१, मोटी सौंफ, छोटी इलाइची में अच्छी तेजी आएगी। २६ अक्टूबर २००३ को सूर्य-बुध की सुपीरियर युति होगी। ५ अक्टूबर २००३ से ९ जनवरी २००४ के बीच चाँदी में हो सकता है।

१५ से ३० अक्टूबर तक तेल, गोला, गेहूं २१, सोया, डी.ओ.सी., जीरा, कलौंजी में ७०२ की तेजी आ सकती है। १२ सितम्बर से ५ अक्टूबर तक महाराष्ट्र की तरफ पानी वर्षा हो जाने से फसलें प्रभावित होंगी। आलू-लहसून में मंदी आ सकती है। ५ से २५ अक्टूबर २००३ के मध्य मूंगफली तेल ५५१, सोयाबीन १५०, सरसों १५० की झड़पी मंदी मगर २१ अक्टूबर से ११ नवम्बर २००३ के बीच, लौंग, सौंफ ७००, छोटी इलाइची, छुआरे-गेहूं में अच्छी तेजी आ सकती है। मगर आलू, प्याज, लहशुन में जोरदार मंदी तो मोंठ, मसूर, अरहर तेजी आ सकती है। १५ अक्टूबर से १५ दिसम्बर २००३ के बीच सरसों, बिनौला, मूंगफली तेल, सोयाबीन में तेजी भयंकर तेजी आ सकती है। २५ अक्टूबर २००३ शनिवार की दीपावली है। ५ अक्टूबर को विजयादशमी दशहरा है।

## नवम्बर-२००३ NOVEMBER

२७ अक्टूबर से ११ नवम्बर तक, चना ७० की तेजी, जीरा ५००, उड़द ५०, छोटी इलाइची में २५ की तेजी आवेगी। (६६५डी) २७ अक्टूबर से १९ नवम्बर २००३ के बीच इनफोसिस, डी. टेली फिल्म, नीट, ए.सी.सी., जे.पी. आदि में जोरदार तेजी आवेगी। तो २१ नवम्बर से ३ दिसम्बर २००३ के बीच भयंकर मंदी आ सकती है। ३ दिसम्बर २००३ से ७ जनवरी से ११ फरवरी २००४ के बीच ३९९ की भड़कती तेजी आवेगी। १६ जनवरी से ११ फरवरी २००४ तक ए.सी.सी. रिलाइंस, इनफोसिस में मंदी बन सकती है। २३ फरवरी २००४ से १८ मार्च तक नीचे भाव टच हो सकते हैं। १९ मार्च से २१ अप्रैल २००४ तक एक अच्छी तेजी का उछाला आ सकता है व ज्वार ४८, गेहूं ३३ की भड़कती तेजी बन सकती है। आंध्र साइड, भारी वर्षा हो सकती है। चीनी, गुड़ में अच्छी तेजी आ सकती है। १ से १५ नवम्बर २००३ के बीच अरहर १५०-३३३ की तेजी तो १५ नवम्बर से ३ दिसम्बर २००३ के बीच अरहर में २५० की मंदी आ सकती है। २३ नवम्बर से ५ दिसम्बर के मध्य चना में जोरदार मंदी आ सकती है। ११ नवम्बर से ३० नवम्बर २००३ तक, जीरा में २५०-९९० की जोरदार धमाकेदार मंदी आ सकती है। १२ से २१ नवम्बर तक डी.ओ.सी. ९०० की जोरदार मंदी तथा इसके अलावा छुआरे ५००, बिनौला १००, बाजरा में ६३ की मंदी-काली मिर्च में १५ की मंदी-अरण्डी दाना में मंदी मगर गेहूं में तेजी चल सकती है। महाराष्ट्र साइड में भारी पानी वर्षा हो सकती है। ५ से ३० नवम्बर २००३ तक किसमिस में भारी तेजी, पोस्तादान १५०, काबली चना व डालर में अच्छी तेजी बन सकती है। व्यापार में किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होगी।

१८ नवम्बर २००३ से १९ अक्टूबर तक गुवार १५० मंदी, २१ अक्टूबर २००३ से २ नवम्बर तक गुवार में २५० की तेजी बाद में जोरदार मंदी आवेगी। १५ नवम्बर २००३ से पानी वर्षा बाढ़ का प्रकोप हो सकता है तथा काबली चना, बारदाना में भारी तेजी बन सकती है। १५ नवम्बर से ५ दिसम्बर २००३ तक सरसों, सोयावीन में भयंकर तेजी आ सकती है। (७बी) २१ नवम्बर २००३ से ११ दिन में सरसों, बिनौला में भयंकर मंदी का झटका लग सकता है।

## दिसम्बर-२००३ DECEMBER

३ दिसम्बर २००३ से २० दिसम्बर तक गुवार में २५० की मंदी आ सकती है। तो २१ दिसम्बर २००३ से ५ जनवरी तक गुवार में २५०-४७५ की तेजी आ सकती है। २५ नवम्बर २००३ से २१ दिसम्बर तक, आन्ध्र प्रदेश की तरफ हवा पानी का चक्रवात, तूफान चल सकता है। १२ से ३० दिसम्बर २००३ तक छोटी इलाइची में मंदी मगर मेथी में तेजी बन सकती है। २७ दिसम्बर २००३ से १५ दिसम्बर तक धनियाँ, तिल में भारी तेजी आ सकती है। मगर चीनी, गुड़ में जोरदार मंदी आ सकती है। २१ से २७ दिसम्बर २००३ के मध्य मेथी ३००, काबली चना २५० की तेजी, सोना, चांदी में तेजी तथा मटर-उड़द २५०, मूंग ३६०, पिस्ता ३३ की तेजी, किसमिस में ९९९-२९९९ की रिकार्ड तेजी आ सकती है। २७ दिसम्बर २००३ को सूर्य बुध की इनफेरियर युति होगी। (१४वाई) ११ दिसम्बर से या फिर २७ दिसम्बर २००३ से डेढ़ महीने में मूंगफली तेल, डालडा, सोयाबीन, मसूर, काबली चना में अच्छी तेजी बन सकती है। २३ दिसम्बर २००३ मंगलवार मूल, नक्षत्र सहित पौष अमावस्या है।

## जनवरी २००४ ई. JANUARY

२१ दिसम्बर २००३ से ११ जनवरी २००४ के बीच मक्का में ३६ की तेजी, पोस्तादाना, १५-२५ की तेजी, काबली चना, गेहूं में तेजी तथा उड़द ७०, अरहर ४५, धनियाँ में १५० की जोरदार तेजी आ सकती है। मगर पीतल, तांबा में मंदी चल सकती है। ३ से १५ जनवरी २००४ तक गेहूं १५, मैथी २००, मूंग, उड़द, सोयाबीन, डी.ओ.सी. ३०६ की तेजी। जीरा, बाजरा में तेजी आ सकती है। ७ जनवरी से २५ जनवरी २००४ तक, म.प्र., राजस्थान, हरियाणा में पानी वर्षा हो सकती है। इस समय में हल्दी में २५०-५०१ की तेजी, छोटी इलाइची में २५, चावल बासमती १५०, लौंग ११, तेजी किसमिस में ९९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। १५ जनवरी से २७ जनवरी २००४ तक मसूर, काबली चना में मंदी, मगर गेहूं २५ तेजी, खोपरा तेल १५० रु. टीन की तेजी, छोटी इलाइची २५ जनवरी तक, खाद्य तेलों में मंदी आ सकती है। ७ जनवरी से ३१ जनवरी २००४ तक, बाजरा, मक्का, मोटा चावल, सोययवीन, डी.ओ.सी., लाल मिर्च, सौंफ २९९ में अच्छी तेजी चल सकती है। २३ दिसम्बर २००३ से २७ तक, फली तेल १०० की मंदी, २ जनवरी २००४ से ११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जीरा, कलौंजी में ७०२ की तेजी आ सकती है। १२ ... अक्टूबर तक महाराष्ट्र की तरफ पानी वर्षा हो जाने से फसलें प्रभावित

... २००३ से १९ अक्टूबर तक गुवार १५० मंदी, २१ ... जोरदार मंदी आवेगी। १५ नवम्बर २००३ से पानी वर्षा बाढ़ का प्रकोप

... २९९ में अच्छी तेजी चल सकती है। २३ दिसम्बर २००३ से २७ तक, फली तेल १०० की मंदी, २ जनवरी २००४ से ११



जनवरी तक सिंगदाना तेल १९९, सोयावीन तेल मंदी आ सकती है। १४ जनवरी से १८ जनवरी तक तेलों में तेजी चल सकती है। २० से २५ जनवरी २००४ तक मूंगफली तेल, सोयावीन तेलों में तेजी तो बाद में मंदी आवेगी।

## फरवरी-२००४ FEBRUARY

३ फरवरी से १० तक, सोयावीन तेल, फली तेल में मंदी मगर अपना ध्यान तेजी का है। १ फरवरी २००४ से ११ फरवरी तक हल्दी ७०, काली मिर्च में मंदी, सोयावीन, डी.ओ.सी. २०५ मंदी तथा सरसों तिल ५०, अरहर ७०, कलौंजी में ७०२ की जोरदार मंदी आवेगी। मगर खोपरागोला, पिपरमेंट, लौंग, रुई में अच्छी तेजी आवेगी। व्यापार में किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होगी। ११ से १८ फरवरी तक, उड़द ७०, मसूर २५, जीरा में ४०५ की तेजी, चना ७० की तेजी आ सकती है। चीनी में मंदी आ सकती है। २७ जनवरी २००४ से २१ फरवरी तक, सौंठ ११११ की जोरदार मंदी, जौ, गुवार में मंदी मगर मूंग, छोटी इलाइची, चाय १५, चना में ९९ की तेजी आ सकती है। उत्तरी श्री लंका में तूफानी हवाओं का जोर हो सकता है। ६ मार्च २००४ शनिवार को होलिका दहन होगा। ११ मार्च २००४ को वक्र राशि मंगल प्रवेश करेगा। २१ मार्च २००४ रविवार को सम्वत् २०६१ का चालू होगा। ३० मार्च २००४ की राम नवमी है।

## मार्च-२००४ MARCH

२ मार्च से ११ मार्च तक गुड़ में १२९ की जोरदार तेजी, इसके साथ-साथ पिपरमेंट, गेहूं, गोला तेल १४, राजमां, छोटी इलाइची, मूंग में अच्छी तेजी आ सकती है। कलौंजी, जीरा में मंदी, कालीमिर्च में तेजी आ सकती है। १५ मार्च २००४ से ३१ मार्च तक सुपारी, सरसों तेल में १६० की तेजी, हल्दी, धनियां में जोरदार तेजी बन सकती है। २७ फरवरी से ९ मार्च तक, डी.ओ.सी. में मंदी-जौ, अरंडी तेल ९९ की जोरदार तेजी-मसूर, चना २५० की तेजी आवेगी। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। कहीं भूकम्प के झटके महसूस हो सकते हैं। २५ मार्च से ५ अप्रैल २००४ तक खोपरा गोला, जीरा, मूंग ९९, चना ९९, गेहूं १५, लौंग २५ की तेजी तथा सोयाबीन डी.ओ.सी. में भारी मंदी आ सकती है। २७ मार्च से ११ अप्रैल २००४ के बीच, कालीमिर्च, काबली चना में अच्छी तेजी आ सकती है। ३ मार्च २००४ से ९ मार्च तक मूंगफली तेल, सोयावीन, बिनौला तेल में अच्छी तेजी आ सकती है। ९ से १४ मार्च तक तेलों में मंदी आ सकती है। ४ मार्च २००४ को सूर्य-बुध की सुपीरियर युति होगी। १८ मार्च २००४ से ५ अप्रैल २००४ सरसों, बिनौला, चना में भयंकर तेजी बन सकती है।

## गुवार तेजी-मंदी रिपोर्ट-८

**नोट: व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेवारी कभी नहीं होगी।**

गुवार १२ जनवरी १९९९ को Topभाव २९००-३२०० के दरम्यान बन गए थे वो दिसंबर २००१ तक ७००-७८० के आसपास रह गए थे। वे फरवरी २००२ में ९०० होकर अब ८६१ के करीब भाव चल रहे हैं। १५-८-२००२ से १५ अप्रैल २००३ तक, १८०१ अथवा २७९९ के भाव टच हो सक्ते हैं। मार्च २००२ से जून तक, जब-जब ५ से ११ - १५ दिन में गुवार में २००-३६० की तेजी का उछाल आवे तब माल २५ से ३८% बेंचते चलना। तेजी मंदी चाँस निम्नलिखित हैं।

(१) २३ फरवरी २००२ से २७ फरवरी २००२ तक गुवार में ७०-९० की मंदी, क्वालिटी अनुसार मंदी चलेगी। २८ फरवरी २००२ से ८ मार्च तक Cluster SeeosQ में ७०-६५ की तेजी, ९ मार्च २००२ से ११ मार्च २००२ तक गुवार ७०-१५० की जोरदार मंदी, २१ मार्च २००२ से ५ अप्रैल २००२ के बीच गुवार में ७०-१९९ की भड़कती तेजी आकर वापिस बाजाार घट सकते हैं। ११ अप्रैल तक जोरदार मंदी का झटका लग सकता है। ११ अप्रैल २००२ से २५ अप्रैल तक गुवार में ७० से ३९९ की प्रचण्ड तेजी आवेगी। तो २५ अप्रैल से ११ मई तक गुवार के बढ़े हुए भाव गिर जावेंगे।

११ मई २००२ से २१ मई २००२ से १५ जून २००२ तक गुवार में १५० से ४९९ की भड़कती तेजी तो २३ जून तक ५५१-७० की जोरदार मंदी तो २५ जून २००२ से २७ जुलाई २००२ के मध्य गुवार में १५० से २९९-५१५ की जोरदार तेजी तो ९ अगस्त २००२ तक बढ़े हुए भावों का ४५% मंदी अथवा १५० सें ५५१ की मंदी क्वालिटी अनुसार मंदी चल सकती है। बाजार रुख देखकर व्यापार करें। ११ अगस्त २००२ से २५ अगस्त २००२ तक गुवार में भयंकर मंदी यहाँ गुवार में ९९९ के नीचे भाव बन सकते हैं। अथवा यहाँ जो भी नीचे भाव बनें- खरीदें। आगे अगस्त २००२ से ६ महीना ८ महीने में १५-०४-२००३ के बीच में घटबढ़ से अच्छी तूफानी तेजी आ सकती है। बस इतना ध्यान रखना कि सितम्बर से नवम्बर के महीने ४५० बढ़े-तो ५०० घटेंगे फिर ४५० बढ़ेंगे। ऐसे समय मंदी आने पर खरीदें फिर तेजी आने पर ७७% माल बैचतें चलना। २५ से ३६% माल स्टाक रखा हुआ जनवरी-फरवरी २००३ की तेजी में बेंचना।

११ सितम्बर २००२ से २१ अक्टूबर २००२ के बीच गुवार में ९०-३६० की ज़ोरदार तेजी तो २१-१०-२००२ से १ नवंबर तक १५०-४५० की झटकेदार मंदी तो ३ नवम्बर २००२ से ३ दिसम्बर २००२ के मध्य गुवार में १५० से ३९९ की जोरदार तेजी तो २१ दिसम्बर २००२ तक २५० की जोरदार मंदी अथवा ये मंदी १५ जनवरी २००३, गुवार में मंदी यहाँ अब बाजार विशेष घटबढ़ में चलेंगे। अत: दिसम्बर से जनवरी-फरवरी २००३ तक फोन द्वारा या स्वयं आकर सलाह लेते रहना। यहाँ कहीं Top भाव होकर मंदी चलेगी। सावधानी से व्यापार करना।

१५ जनवरी २००३ से ५ फरवरी २००३ के बीच गुवार में १५० से ५५१ की जोरदार तेजी तो ११ फरवरी तक जोरदार मंदी तो बाद में Cluster SeeosQ में १४ फरवरी तक अस्थाई तेजी, १४ फरवरी से १९ फरवरी २००३ तक मंदी, २१ फरवरी से ५ मार्च तक तेजी, ११ मार्च या ५ अप्रैल से २१ अप्रैल २००३ तक मंदी, २१-०४-२००३ से ११ मई २००३ तक गुवार में २५० की तेजी, १९ मई तक बढ़े हुए भाव गिर जावेंगे। बाजार रुख देखकर व्यापार करें।

## अरहर

२-३-१९८९ के भाव ७-९-८९ को ७६१, १९-१२-१९८९ को ५५५, ४-१०-९० को ११००, ३१-८-९१ अरहर ११४०, ३०-१२-१९९२ को ७५०, १८-१०-१९९३ को अरहर १२००, २१-६-१९९५ को अरहर टोप भाव २१५०, २३-१-१९९६ को १५००, २९-३-१९९६ को १८००, २५-१२-९६ को १४०७, ३-७-१९९७ मंदी नीचे भाव अरहर १०२५, २३-१२-१९९७ को १६५५, २८-४-१९९८ को १५२५, २०-६-१९९८ को २०००, २८-१०-१९९८ को टोप भाव २८००, २३-१२-२००१ को अरहर १४०५, अभी फरवरी २००२ में १६५० के आसपास भाव चल रहे हैं। आगे अप्रैल-मई में, अक्टूबर-नवम्बर २००२ में अरहर में भीषण तेजी चलने का अनुमान है। और दिवाली सन् २००२ तक भाव २३००-२५०० के स्तर को छू सकते हैं। मंदी नीचे बनने पर खरीदना २५-३८ दिन की तेजी उछाल में सिद्धान्त भूलना नहीं। अरहर जो नीचे १४०५ और २५००-३३९९ का ऊँचा ११-१२-२००२ को या फिर १९-७-२००३ तक घटबढ़ से तूफानी तेजी रिकार्ड भाव बन सकते हैं। अत: अभी मंदी में खरीदें आगे हर तेजी २५-२७ दिन की आने पर माल ४५% बेचना नहीं भूलना। होली से लेकर दिवाली २००२ तक ३ बार की तेजी में ३ बार बेचना मतलब अप्रैल २००२ से ११-११-२००२ तक ३ तेजी १५०-२५० की तेजी १५-२७ दिन में आने पर माल बेचते चलना। बाजार रुख देख कर व्यापार करना। (१४-१-४) २७ जनवरी २००२ से १६ फरवरी २००२ तक तेजी अरहर, मूंग में तो ५-३-२००२ मंदी, ७ मार्च २००२ से ३ अप्रैल २००२ तक अरहर में १५०-२५० की तूफानी तेजी, १५-४-२००२ तक १५०-२०० की मंदी, २७-४-२००२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



से २९-५-२००२ के बीच अरहर २५० की तेजी तथा यहाँ चना में २५०, मसूर में १५०-२२५ की तेजी आ सकती है। तेजी आवे तो माल ६५-७५% बेचना। २९-५-२००२ से ११-६-२००२ तक अरहर २५०-३६० की जोरदार मंदी आ सकती है। (B) ११-६-२००२ से २१ जून तक अरहर १५१-३६९ की तूफानी तेजी फिर कुछ दिन मंदी तो ३-७-२००२ से २१ जुलाई या फिर ५ अगस्त २००२ तक अरहर में १५० तेजी बन सकती है। ५ अगस्त से ११ सितम्बर तक अरहर, मसूर में घटबढ़ से मन्दी, ११-९-२००२ से २१ अक्टूबर २००२ के बीच अरहर में १५० की तेजी, २७-१०-२००२ तक अरहर १५०-२५२ की तेजी धमाकेदार अस्थाई मंदी तो २७-१०-२००२ से १५ नवम्बर २००२ के बीच अरहर १५०-३९९ की तूफानी तेजी इसके अलावा मसूर में २५०, चना में १५० की तेजी आ सकती है। अथवा तेजी आगे बढ़ी तो १५-१२-२००२ तक अरहर, मसूर, मटर, तेवड़ा में तेजी बन सकती है। १५-११-२००२ या १८-१२-२००२ से आगे भयंकर तेजी जचती है। (B-14-m-4Y) १८-१२-२००२ से ५-१-२००३ तक अरहर में ३६०-५५५ की जोरदार मंदी, चना १५०-५५५, मसूर में २५० की तूफानी मंदी आवेगी। ५ से १४ जनवरी २००३ अरहर में १५०-२०५ की तेजी, ५ मार्च २००३ अरहर २५००-३४०० वाली १८०० रह सकती है। ५ मार्च २००३ से ५ अप्रैल २००३ तक अरहर में १५०-३६१ की तूफानी तेजी आ सकती है। ५-४-२००३ से २५-४-२००३ तक अरहर में २५०-३६१ की तूफानी मन्दी तो २५-४-२००३ से २३ जून २००३ तक अरहर में २५०-५५५ की तूफानी, २५जून २००३ से १५-९-२००३ तक अरहर में ३६०-५९९ की खतरनाक मन्दी तो १५-९-२००३ से ११-१०-२००३ तक अरहर में १५०-२५० की अचानक तेजी, इस में तेजी माल बेच डालें। नये संशोधन चाँस रिपोर्ट स्पेशल रिपोर्ट तैयार हो रही है। फुल ग्राफिकल चार्ज आने पर रिपोर्ट भेजी जाती रहेगी। (14-1m-4)

## सरसों-सोयाबीन, तैल तिलहन

**स्पेशल चाँस**-देखो तेल बाजार में ८ जून से ८ जुलाई के मध्य भयंकर तीव्र ऐसी घटाबढ़ी हुई जो अपने आप में अचरजकारी घटाबढ़ी है। सोयाबीन सोदा ८ जून ३८० के करीब एक बार घटकर ३४५ हो कर फिर ३६६ हुआ। फिर ३६६ से घटकर ३३९ हुआ। फिर ३३७ से बढ़कर ३५५ हो गया। ऐसी घटाबढ़ी में जोखिम बड़ी हो सकती है। रोज व्यापार करना फिजूल का काम समझना दूसरी बात ध्यान रखना एक साइड होकर ही व्यापार किया जा सकता है। अर्थात नीचे भाव बने तब खरीद लो ७-११ दिन में जब भी १०-२५ के सौदे में तेजी मिल जावे बेच कर भाग जाओ।

तीसरी बात यह कि सन् २००२ का साल तैलों में रिकार्ड तेजी का है। अतः आई मंदी में बने नीचे भावों पर पुनः उछाले में वापिस तेजी के (२५ भाव कम मिल सकते हैं - २५-३७ दिन के अंदर) कुछ ऊँचे भाव जैसे ३८० से बाजार भाव घटे - ३३९ होकर ३६६ के भाव मिल गए जबकि ऊँचे भाव ३८० के थे-भाव मिलें ३६६ के।

सरसों १४००-१३५० वाली दिवाली के १५ दिन बाद तक कभी १९९९ से २१९९ के भाव हो सकते हैं। बस ध्यान इतना रक्खें कि ऊँचे भाव बने बेचो मगर रुक-रुक कर ५-७ दिन में बेचो थोड़ा करके। बेंच के छोड़ दो २७ दिन को खूब मंदी आ जावें-तब खरीद कर सौदा बराबर कर दो। चैन की साँस लो व्यापार १० व १५ दिन को बंद कर दो। रोजाना लगे रहोगे तो किया कराया व्यापार सब बेकार हो जावेगा। अतः Daily वाला व्यापार बंद कर दो। ज्यादा भगवान जानें। पिछली भेजी रिपोर्ट में ही मंदी के चाँस जरूर पढ़ें। यदि पिछली भेजी रिपोर्ट के चाँस सही नहीं मिल रहे हों तब इन चाँसों को उपयोग में लाना।

## स्पेशल चाँसः-

(१) (२७८५ डी) २१ जुलाई २००२ से २५ जुलाई तक सोयाबीन तेल, सरसों, बिनौला तैलों में मदी का झटका आवे तो २६ जुलाई से १ अगस्त २००२ तक तेलों में अच्छी तेजी का उछाला और १ से ६ अगस्त तक मंदी, अब दूसरी बड़ी लाइन चालू हो तो जो लंबे समय तक चलने की आशा है।

७ अगस्त २००२ से १५ सितम्बर २००२ के बीच सरसों १५०-२५०, सोयाबीन, फलीतेल, बिनौला तेल, अरहर, तिल-मूँग, मसूर, मटर आदि में तूफानी तेजी का दौर चल सकता है। १७ सितम्बर या २३ सितम्बर २००२ से १५-१०-२००२ तक तेलों में अच्छी मंदी आ सकती है। खास करके सोयाबीन फलीतेल-बिनौला तेल अक्टूबर के महीने एक मंदी फिर तेजी चलेगी। १५-१०-२००२ से १५ नवम्बर २००२ के बीच सरसों, तिल, अलसी, अरण्ड, सोयावीन में अच्छी तेजी का दौर चलने की संभावना है। २१-११-२००२ से २९ नवम्बर तक तेलतिलहन में एक तेजी का उछाला आ सकता है। २३-११-२००२ से ५-१२-२००२ तक तेलों में २-५ दिन की मंदी ५-१२-२००२ से १६-१२-२००२ तक सोयाबीन, बिनौला, फलीतेल में अच्छी तेजी तो ३१-१२-२००२ तक मंदी आवेगी। २०-१-२००३ से ३-२-२००३ तक मूँगफली तेल ५९९ की धमाकेदार मंदी तो ३ फरवरी २००३ से १५ फरवरी २००३ तक तेलों में जबरदस्त तेजी चल सकती है। सीमित व्यापार करें सन् २००२ तेलों में तेजी का साल है। ७-११ दिन की मंदी आने पर माल खरीदें ११-२१ दिन की तेजी आने पर ६५ प्रतिशत माल बेचान भी करें। अन्य विधि से तेल तेजी चाँस (९१५ डी) २५ जुलाई २००२ से १८ अगस्त २००२ तक मूँगफली तेल, बिनोला, सोयाबीन तेल, अरण्ड आदि में भयंकर तेजी के बाद में ५-७ दिन की मंदी [illegible]

१ नवम्बर तेलों में अच्छी ३-१९ जनवरी २००३ से २९-१-२००३ तक भीषण मंदी आवेगी। जिस विधि से चाँस सही रहे उसे ही उपयोग में लावें।

**तीसरी विधि से तेजी मंदी**-२५-८-२००२ से १५ सितम्बर या २१ तक तेलों में अच्छी तेजी हर ५-७ की तेजी माल बेचते चलना। (२) २७-१०-२००२ से १९-११-२००२ के बीच अच्छी तेजी बाद में मंदी ५६०, ३-११-२००२ से १६ नवम्बर तक तेल में अच्छी तेजी बाद में मंदी आवेगी। ७ दिसम्बर २००२ से २५-१२-२००२ तक तेलों में अच्छी तेजी आ सकती है। २३-१-२००३ से ७ दिन तेलों तिलहन आयल में भयंकर मंदी तो बाद अच्छी तेजी आवेगी। २७-२-२००३ से ५ दिन तैलों में तेजी आकर बाद में ७ दिन में मंदी आवेगी। बाजार रूख देखकर सीमित व्यापार करें।

## शेयर मार्केट १२-८-२००२

(१) (१७५D) २६-७-२००२ से ९-८-२००२ तक ए॰ सी॰ सी॰ १४ तेजी, जी॰ टी॰ वी॰ ११ तेजी के बाद में मंदी आवेगी। १९ सितम्बर २००२ या १८-८-२००२ के आसपास बी॰ एस॰ सी॰ इन्डेक्स नीचे से नीचा बने तब आगे ६५ दिन भंककर तेजी चलेगी।

(२) १२-८-२००२ से २७-८-२००२ तक ए॰ सी॰ सी॰ शेयर में २५ की तेजी, इन्फोसिस २५५ से ६०३ की तेजी, रिलाइंस शेयर में ४५ की तेजी आ सकती है। यदि ये तेजी आई तो २७-८-२००२ से ५-९-२००२ तक मंदी अन्यथा तेजी आवेगी।

(३) ५-९-२००२ से १५-९-२००२ तक तेजी तो १५-९-२००२ से १९-१०-२००२ के बीच भारी मंदी बी॰ एस॰ सी॰ इन्डैक्स ५५१ से ७७७ पोइन्ट की झड़पती मंदी चल सकती है। यहाँ जी॰ टी॰ वी॰ में तेजी चल सकती है।

(४) १५-१०-२००२ से २९-१०-२००२ तक ए॰ सी॰ सी॰ इन्फोसिस, जी॰ टी॰ वी॰, रिलाइंस, जे॰ पी॰ आदि शेयर्स में अच्छी तेजी आ सकती है। २७-१०-२००२ से ७-११-२००२ तक ए॰ सी॰ सी॰ शेयर्स में अच्छी बढ़ोत्तरी हो सकती है। ५-११-२००२ से १४-११-२००२ तक ए॰ सी॰ सी॰ शेयर्स में १८ महीनें, रिलाइंस २९ ,जी॰ टी॰ वी॰ १८ मंदी, रिलाइंस २९, जी॰ टी॰ वी॰ ३९ की झड़पती मंदी का झटका लग सकता है।

(५) १४-११-२००२ से २७-११-२००२ तक रिलाइंस शेयर्स २१ की तेजी मगर इनफोसिस में ४०५ की मंदी मगर जी॰ टी॰ वी॰ में दोनों तरफ घटबढ़ चलेगी। ९-१२-२००२ तक इनफोसिस में ५७७ की भयंकर तेजी बन सकती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS

नीचे भाव बने तब खरीद लो ७-११ दिन में जब भी १०-२१ के सौदे में तेजी मिल जावे बेच कर भाग जाओ।

आकर फिर तेजी चलेगी। साल तेजी का है। (२) २१-१०-२००२ से

२१ को तेजी मगर इनफोसिस में ४०५ की मंदी मगर जा. टी. वी. में ... चलेगी। ९-१२-२००२ तक इनफोसिस में ५७७ की भंयकर तेजी बन सकती है।



(६) १ दिसम्बर से १२ दिसम्बर २००२ के बीच रिलाइंस ए. सी. सी., जे. पी. आदि में अच्छी तेजी आ सकती है।

(७) ३-१-२००३ से १८-१-२००३ तक बी. एस. सी. इन्डेक्स में ३०० की मंदी, ए. सी. सी. ३४, इनफोसिस ५५५, रिलाइंस में बन सकती है। फिर भी २-४ जनवरी २००३ से यदि औसत तेजी रहे। तब १५-१-२००३ तक अच्छी तेजी आवेगी।

## तीसरी विधि से तेजी मंदी चाँस १२-८-२००२

(१) (21D–5m8-6 M) १६-८-२००२ से १४-९-२००२ तक बी. एस. सी. इनडैक्स में ५००-६०९ की भंयकर तेजी तो १५-९-२००२ से २९-१०-२००२ के बीच ७०७ पोइन्ट की भयंकर मंदी चल सकती है। २९-१०-२००२ से १५-११-२००२ तक शेयर्स में अच्छी तेजी बन सकती है।

(२) १५-११-२००२ से २७-११-२००२ तक शेयर्स मारकेट में अच्छी मंदी आ सकती है। १-१२-२००२ से १८-१-२००३ तक बी. एस. सी. इन्डेक्स में ५९९-७०७ पोइन्ट एक झड़पती तेजी आ सकती है। १८-१-२००३ से ७-२-२००३ तक भयंकर मंदी चल सकती है। जो भी ३ विधियों से बाजार सही चल रहे हों उसी विधि को उपयोग में लाएं।

## सोना बाजार तेजी मंदी डालर सिस्टम ३०-७-२००२

(4-6-2002 Top = 21D) (१) १६-७-२००२ से २ दिन सोना १ डालर तेजी (२) ६-८-२००२ सोना में मंदी ७-११दिन को फिर बाद तेजी (३) २७-८-२००२ सोना ७-११ को मंदी फिर बाद में तेजी (४) १७ सितम्बर घटबढ (५) ७-१०-२००२ से ११ दिन से १८ दिन सोना चाँदी अच्छी तेजी फिर भी जैसी लाइन पकड़े वैसा व्यापार करें। (६) ५ दिसम्बर २००२ से ११ से १५ दिन सोना चाँदी अच्छी मंदी (७) १४ जनवरी २००३ से ३-४ दिन सोना २-३ मंदी, (८) ३०-१-२००३ यदि सोना चांदी कुछ दिनों से मंदी चलकर ३० जनवरी के आस पास नीचे भाव बने हैं। तब तो ३०-१-२००३ से २५-२-२००३ तक सोना चांदी में अच्छी तेजी आवेगी। ३०-१-२००३ के आसपास मंदे भाव बने हैं तब १५-२५ दिन मंदी बनेगी। बाजार रुपय देख कर व्यापार करें। (९) ११ फरवरी २-३ दिन मंदी (१०) ४ मार्च २००३ से ९ मार्च तक तेजी , २० मार्च से २५ तक मंदी तो आगे ११-१५ दिन सोना में अच्छी तेजी। (११)१८ अप्रैल २००३ से २७ अप्रैल तक सोना, चांदी मंदी तो १ जुलाई २००३ से ५ अगस्त २००३ तक अच्छी मंदी तथा तेजी की आशा है, बाजार रुख देखकर व्यापार करें।

## शेयर्स मार्केट तेजी-मंदी रिपोर्ट सन् २००३

सन् २००३ का वर्ष शेयर्स मार्केट में घटाबढ़ी की दृष्टि से भयंकर घटाबढ़ी करते हुए डेढ़ वर्ष के अन्दर नीचे भाव छू सकते हैं। २७ नवं. २००२ से १५ जनवरी २००३ के बीच एक भयंकर तेजी या तेजी आगे बढ़े तो १५ मार्च २००३ तक तेजी चल कर बाद में २१ मई २००३ तक ७७७-५०५ पोइन्ट की मंदी में बी.एस.सी. इन्डेक्स २१९९-२५०७ के स्तर को छू सकता है। ध्यान रहे कि बी.एस.सी. इन्डेक्स २३ अक्टूबर १९९८ को २७४१ नीचा, १४ फरवरी २००० को ६१५०, ४ मार्च २००३ के मध्य ३७५८ के करीब होकर एक बार १५ जनवरी २००२ के मध्य ४५९९ होकर वापिस डेढ़-दो वर्ष में घटकर १९९९-२५०५ के स्तर को छूने का अनुमान है। बाजार का रुख देख कर ही व्यापार करें। ए.सी.सी. शेयर्स नीचे में ११०, फिर ऊंचा २५०-३९९ होकर ६५-७७ का स्तर ए.सी.सी. शेयर्स का रह सकता है। नोट मोटा अनुमान है। १५ मार्च २००३ या १५ जुलाई २००३ के आसपास डेढ़ महीने पूर्व से भयंकर मंदी चलकर इन तारीखों के आसपास नीचे इन्डेक्स रहने की संभावना है। नीचे भाव बने खरीदें। आगे २५-४१ दिन के अन्दर अच्छी तेजी आने पर बेचना पुन: बी.एस.ई. इन्डेक्स नीचे में १९ सितम्बर २००३ या फिर २७ अक्टूबर २००३ से ३ नवम्बर २००३ के आसपास भयंकर मंदी में नीचे भाव टच हो सकते हैं। यहाँ ३०९९ के करीब हो चुका जो ४५००-५५५७ होकर बाद में १५९९-२१९९ के नीचे स्तर को छू सकता है। २९ दिसम्बर २००२ से १५ जनवरी २००३ तक ए.सी.सी. इनफोसिस, जे.पी. रिलाइंस शेयर्स में भारी तेजी, २७ जन. २००३ भीषण मंदी चल सकती है। २७ जन.से १८ फर. तक अच्छी तेजी शेयर्स मार्केट में आवे तो ३० मार्च २००३ तक जोरदार मंदी आवेगी। ५-७ दिन का अन्तर रहेगा। ग्राफिकल सदस्य बनकर ०७५१-५४०३८९ पी.पी. ३३४६७५-३६६५५१८ पर सम्पर्क कर सदस्य बनने की जानकारी ले सकते हैं। १ से १५ अप्रैल २००३ तक शेयर्स मार्केट में अच्छी तेजी। १५ अप्रैल से २१ मई के मध्य भयंकर मंदी का अन्धड़ चल सकता है। व्यापार में जिम्मेदारी नहीं होगी। नोट-२५०-५००-७०० पोइन्ट की मंदी डेढ़ महीने में नीचे से नीचे भाव बनने पर खरीदें। आगे डेढ़ महीने में जब भी अच्छी तेजी आवे तब बेचना। २५ मई २००३ से १५ जुलाई २००३ के बीच बी.एस.सी. शेयर्स में ७०७-९९९ पोइन्ट की भयंकर तेजी बन सकती है। १५ जुलाई से २९ जुलाई के बीच भयंकर मंदी का झटका लग सकता है। १ अगस्त २००३ से १८ सितम्बर २००३ के बीच घट बढ़ से एक बार अच्छी तेजी आकर २१ सितम्बर से २७ नवम्बर २००३ केंबीच १५ दिन से २५ दिन की भयंकर मंदी का अन्धड़ चल सकता है। जिससे ५००-७७७ पोइन्ट भयंकर मंदी आ सकती है। २१ अक्टू. से १९ नवं. २००३ से २९ दिसं. २००३ के बीच २५-३८ दिन की एक बार अच्छी तेजी आ कर २७ जन. २००४ से २१ फर. तक तेजी तो २७ फरवरी २००४ से २१ मार्च या १८ अप्रैल २००४ तक भयंकर मंदी का दौर चल सकता है। १५ अप्रैल २००४ से १५ मई २००४ तक पुन: ५५१ पोइन्ट की तेजी बन सकती है।

# व्यापार दिग्दर्शिका

## वैज्ञानिक अनुसंधान पर व्यापार भविष्य

### जनवरी २००३ से २००४ तक की तेजी-मंदी गाइड लाइनें

इस पुस्तक में सरसों, सोयावीन तेल व डी.ओ.सी. के तेजी मंदी चांस, सोना, चांदी, शेयर्स, किराना, हल्दी, लाल मिर्च, सोंठ-सुपारी, गुड़, खांड, अरहर, चना, मसूर, गेहूं, गुवार आदि लम्बी लाइन के तेजी मंदी की मोटी व लंबी इक तरफा लाइनें पुस्तक में छप रही हैं। पिछले तीन साल सन् २०००-२००१ व सन् १९९९ के वर्ष बाजारों में तूफानी तेजी मंदी नहीं। सन् २००३-२००४ के वर्ष बाजारों में तूफानी तेजी मंदी चलने की आशा है। व्यापार में कभी भी लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। सन् २००३-२००४ के वर्ष व्यापार तीव्र घटाबढ़ी के कारण व्यापार में लाभ उठाया जा सकता है। इस पुस्तक में गल्ला, अनाज व्यापार में कैसे-कैसे तेजी आती है। कैसे कब तेजी मंदी चलेगी। तेजी मंदी सात करने के नियम व तिथि भी बताई गई है। जिनसे व्यापार में सहयोग मददगार सिद्ध हो सकती है। यदि व्यापार करने का तौर तरीका सही है तो व्यापार में लाभ कमाया जा सकता है। चना १६९९ वाला, नीचे ७०७, सरसों तेल ३४-३५ रुपये किलो वाला ५५-८१ रुपये, अरहर १४७५ वाली ३४००, शेयर्स मार्केट में बी.एस.ई. इन्डेक्स ३१०० एक बार ऊंचे में ४७७७ होकर २१ मई २००३ या २१ नवम्बर २००४ तक १५९९-२१९९ इन्डेक्स के नीचे स्तर को छूने का अनुमान है। पुस्तक मंगाकर विस्तृत जानकारी पढ़ें। वी.पी.पी. नहीं होगी। मनीआर्डर भेजकर ही पुस्तक मंगावें। मनीआर्डर कूपन पर आप अपना पूरा पता अवश्य लिखें। ग्राफीकल सदस्य बन कर तेजी-मंदी चांस मंगावें। ०७५१-पी.पी. ५४०३८९, ३३४६७५, ३४०१२२, ५६६३१८ आदि पर जानकारी ज्ञात कर सकते हैं।

पता:- १. श्रीमती चम्पा देवी जैन इन्दौर-बैंक कैम्पस (ग्रोवर हास्पीटल के पीछे) बारादरी चौराहा, मुरार-ग्वालियर (म.प्र.) पिन-४७४००६ फोन: (०७५१) ५४०३८९, ३६६५१८ पी.पी.

२. अखिलेश कुमार जैन लाइट मशीनरी, चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर-ग्वालियर (म.प्र.) पिन-४७४०११

३. कु. रेनू जैन सुपुत्री पी.सी. जैन पोरसावाले इन्दौर बैंक के पीछे, लाल कोठी के ठीक सामने, बारादरी चौराहा मुरार ग्वालियर (म.प्र.)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सन् २००३ ई. का व्यापार भविष्य

## व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मंदी लाईनों का व्यौरा

निर्देशन : डॉ. वसन्त लाल व्यास (स्वर्ण पदक विजेता)
लेखक : पं. अनिल कुमार व्यास, श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा) उ.प्र.-२८१२०४

**जनवरी**—नववर्ष की नूतन वेला पर आप सभी को बधाई। यह मास पौष वदी १४ बुधवार से आरंभ होकर माघ वदी १४ शुक्रवार तक रहेगा। पौष मास में पाँच शनि व पाँच शुक्र योग से प्रजा में वृद्धि लेकिन सुख-दुख की समानता रहेगी। कपास व गेहूं के भावों में तेजी का संचार होगा। पौष अमावस्या गुरुवासरी है अतः **पूष अमावस मूल को सरसै चारों वाय मूल** संयोग से अमा. मन्दी कारक है। अतः ३ दिन के अन्दर सभी व्यापारिक जिन्सों में मंदी का झटका लगेगा व किसी-किसी वस्तु में अच्छी मंदी संभव है। ता. ४ चन्द्रदर्शन सोना, चांदी, लोहा, रुई, सूत, शेयरों में तेजी कारक है। एरण्ड, सौंगदाना, सरसों तेलों में विशेष तेजी। परन्तु दोनों शृंग बराबर होने से एक मास के अन्दर ऊंचे नीचे भाव चलेंगे। अन्य वस्तुओं में मंदी कारक है। १४ जन. **पौष सुदी एकादशी जो कृत्तिका नक्षत्र** से जनरल लाईन घटाबढ़ी से तेज। लाल मिर्च, गुड़, गेरू में तेजी। अनाजों व दलहनों में घटाबढ़ी से भाव अस्थिरता को बल देंगे व १७ जनवरी को बुध उदय हो रहे हैं जो १८ दिनों के अन्दर अनाज, तिल, तेल के भाव सुधार लेंगे। सोना, हींग में गिरावट। ता. २३ जनवरी को बुध मार्गी से अनाजों, किराना, दालवाना में सुधार। शीत का प्रकोप बढ़े। कोहरा, वर्षा, ओला, पाला से फसल हानि। बाल, वृद्ध व पशु पक्षियों को कष्ट। ता. २४ जनवरी **श्रवण नक्षत्र** से दो सप्ताह के अन्तर्गत अनाज, चावल, रुई, सूत, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लौंग आदि में तेजी का संचार। ता. २७ आश्लेषा के गुरु से घटाबढ़ी का प्रभाव। रुई, सोना, चांदी व अनाजों पर होगा। ता. २९ जनवरी धनु के शुक्र से प्रदेशों में उपद्रव, विघटनकारी व आसामाजिक तत्वों को बल मिले। रक्तपात व किसी बड़ी दुर्घटना का योग ज्वार, बाजरा, ऊन, ऊनी वस्त्रों में गिरावट शीत के प्रकोप में वृद्धि, राजनीति में आरोप प्रत्यारोप।

**शकुन विचार**— साते आठे पौष बदी बरसै आधी रात।
वर्षा ऋतु में समझ लो उत्तम होय बरसातङ्क
पौष नौमी शनैश्चर यदि जुरे समाज।
आर्द्रायां रवि तक संग्रह करो अनाजङ्क

**व्यापार सम्बन्धी**—ता. ३ जनवरी को यदि आकाश में बादल छा जाये या मेघ गर्जना हो या वर्षा हो तो हर प्रकार के अनाजों में तेजी का योग व खनिज पदार्थ लोहा, सोना, कोयला, कपास, मिश्री, बतासे, चीनी, चाँदी में मंदी का मान हो।

**फरवरी**—यह मास माघ कृष्णा ३० शनिवार से फाल्गुन कृष्ण १२ शुक्रवार तक रहेगा। ता. १ फरवरी अमावस्या शनि वासरी है जो अनाज, सरसों, अलसी, मिर्च, लोहा, तिलहन, चांदी, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी कारक है तथा १० दिन के अन्दर रुई में तेजी। ता. ३ फरवरी **चन्द्रदर्शन जौ शशि उगे सोम शनि** से एक मास के अन्दर किसी राज्य में मन्त्रीमण्डल भंग, अनाजों में तेजी। जनरल लाईन में मन्दी का झटका कहीं-कहीं दंगे, फसाद, आन्दोलन जैसी घटनायें घटित होंगी। ता. १२ फरवरी कुम्भ संक्रांति से लौंग, इलाइची, जीरा, काली मिर्च, अनारदाना, गेहूं, जौ, चना, मटर, रुई, चौपाये पशुओं में मन्दी। खनिज पदार्थ व आयरन शेयरों में घटाबढ़ी से स्थिरता को बल मिले। उड़द, मूंग, ग्वार, कुलाथी के भावों में तेजी कारक। ता. १९ फरवरी शत. के सूर्य से १४ दिन के अन्दर सोना, चांदी, सूत, सन, कपड़ा, तिल, तेल, एरण्ड, सरसों, हींग, जायफल, दाख, छुहारा, सोंठ, हल्दी, गेहूं, गुड़ के भावों में तेजी का संचार होगा। ता. २२ फर. को गुरु वक्री हो रहे हैं जो रस पदार्थ, घी,तेल व शक्कर, कपास, रुई में तेजी कर देंगे। मार्गशीर्ष आदि सात माह तक धान्य भाव तेज रहें। ता. २५ फर. मकर के शुक्र योग से **मकरे च यदा शुक्रे सर्व सस्य विनाशकृत**। अर्थात् एक महीने के अन्दर प्राकृतिक प्रकोप से फसल हानि, अनाजों में तेजी का झटका। घी, तेल, तिलहन में भी तेजी। गुड़, खाण्ड, चीनी, रस पदार्थों, सोना, चांदी, अफीम, तम्बाकू शेयर के भावों में तेजी का मान होगा। ता. २८ फरवरी सभी चुनिन्दा शेयरों में तेजी। धातु बाजार भी गर्म रहेंगे।

**शकुन विचार**— जेही पखवारे तिथि बढ़े वाहि में घट जाय।
सभी वस्तु मंदी विके मंहगाई हट जायङ्क
फाल्गुन कृष्णा प्रतिपदा जो पू.फा. नक्षत्र।
सभी दुःख दोष दूर हों सुख सुभिक्ष सर्वत्रङ्क

**व्यापार सम्बन्धी**—सप्तम्यादित्रये कृष्णे फाल्गुने धन गर्जितम् संग्रामाध प्रति ग्रामं धान्यानां च समर्घताङ्क वर्ष प्रबोधङ्क फाल्गुन कृष्णा सप्तमी २३ फर. से २५ फरवरी तक बादल वर्षे तो युद्ध भय, धान्य सस्ते, अष्टमी को वर्षा हो तो देश में कुशल क्षेम वृद्धि।

**मार्च**—यह मास फाल्गुन कृष्ण १४ शनिवार से प्रारम्भ होकर चैत्र कृष्ण १४ सोमवार तक रहेगा। ता. १ मार्च बुध का कुंभ राशि में प्रवेश अलसी, राई में मन्दी का झटका लेकिन मन्दी स्थाई नहीं। घी, तेल, रस, गुड़, खाण्ड के भावों में तेजी। सूर्य-चन्द्र-बुध योग तेजी का संकेत देता है। ता. ५ मार्च श्रवण के शुक्र चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड, शक्कर, मूंग, मसूड़, उड़द के भावों में आंशिक मंदी का झटका लगे। तिल, तेल तेज। रुई में भी गिरावट बने। ता. १४ मीन संक्रांति **मीन राशि गते भानौ सर्व धान्य महर्घता** से उड़द, अरहर, चना, दालवाना, तिल, तेल, तिलहन के भावों में तेजी का संकेत दे रही है। सोना, चांदी में घटाबढ़ी अवश्य हो लेकिन परिवर्तन खास नहीं। मीन संक्रांति अवस्था बाल व बैठी ४५ मुहूर्ती से उपद्रव, झगड़े, विग्रह, अलसी, राई, घी, कपास, मिर्च, जीरा, नमक में घटाबढ़ी हो। ता. १७ मार्च होलिका दहन पूर्णिमा पू.फा. **फाल्गुन पूर्णिमा पूर्ण सुभिक्ष। पूर्ण मघा से जानिये चार मास दुर्भिक्ष॥ फागुन सुदी पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवें मास में निश्चय मंहगा होय॥** होलिका दहन भद्रा पुच्छ काल में ता. २० मार्च उ.भा. में बुध का प्रवेश विश्व में संघर्ष की स्थिति बने। चक्रवात, भूकंप व अन्य प्राकृतिक प्रकोप से प्रजा को कष्ट। घी, तेल, मूंग, मोंठ, गेहूं, चावल तेज। शेयर बाजार अस्थिर रहकर मन्दा। ता. २२ शुक्र का कुंभ राशि में प्रवेश **कुम्भ राशौ स्थित शुक्र सुभिक्ष प्रचुर जलम्** हर वर्ष में मन्दी का झटका लगे, वर्षा कारक है। चांदी, जौ, मूंग, ज्वार, बाजरा, रुई, गुड़, खाण्ड में मन्दी का झटका लगे। ता. ३१ मार्च रेवती के सूर्य १४ दिनों के अन्दर अलसी, सरसों, एरण्ड, मूंगफली, लहसन, मोती, लाख, सज्जी, रुई, जौ,चना, चावल, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी कारक है। व्यापारी वर्ग बुद्धि चातुर्य से कार्य करें।

**शकुन विचार**— किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाय।
ग्राहक माँगे मूंग, घी, विक्रेता नट जायङ्क
एकम् लागत चैत्र को वर्षा बादल गाज।
सावन, भादव नहीं फिर वर्षा का काजङ्क

**व्यापार सम्बन्धी—एक राशि पर होय जब बुध शुक्र और सूर्य** योग तेजी कारक है।

**अप्रैल**—यह मास चैत्र बदी ३० मंगलवार से बैशाख बदी १४ बुधवार तक रहेगा। ता. १ अप्रैल **मंगलवारी मावस फाल्गुन चैत्री जोय** के योग से अनाज का स्टॉक करने से लाभ लगभग प्रायः ३ दिनों के अन्दर सभी जिन्सों व चुनिन्दा शेयरों में तेजी का झटका। ता. २ अप्रैल संवत् २०६० सभी को शुभ व मंगलमय हो। विक्रमी का शुभारंभ **बुध राजा घटबढ़ चले उत्तम वर्षा होय। सुख सुभिक्ष धन-धान्य जग आनन्दित सब कोय॥** से वर्षा अच्छी, वर्ष प्रारंभ में तेज वर्षान्त मंदे, रोग वृद्धि, सैनिक हलचल हो अफवाह व दंगे फसाद, वन्द, आन्दोलन, प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि। ता. १४ अप्रैल अश्वनी, मेष संक्रांति **यदा मेषे स्थितौ भानु फलं तुल तिलादिकम्** से फल, फूल, रुई, कपास, गन्ना रस पदार्थ, तिल तेल, तिलहन के भावों में तेजी का झटका

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

योग व खनिज पदार्थ लोहा, सोना, कोयला, कपास, मिश्री, बताशे चीनी, चाँदी में मंदी का मान हो।

प्रवेश अलसी, राई में मन्दी का झटका लेकिन मन्दी स्थाई नहीं। घी,

प्राकृतिक प्रकोप से जनधन हानि। ता. १४ अप्रैल अश्वनी, मेष संक्रांति वदी मेष स्थिती भानु फलं तुल तिलादिकम् से फल, फूल, रुई, कपास, गन्ना रस पदार्थ, तिल तेल, तिलहन के भावों में तेजी का झटका

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



सोमवासरी होने से जौ, गेहूं, चना, हाथी दाँत, लाख, मजीठ, मौंठ, केसर, सिन्दूर के भावों में तेजी। तृतीया वृद्धि व चतुर्दशी क्षय योग से **जेही पखवारे तिथि बढ़े वाहि में घट जाय** से सभी व्यापारिक जिन्सों में मंदी का रुख मिले। ता. २७ अप्रैल भरणी के सूर्य रुई, अलसी में मंदी। सोना, चांदी, ताम्बा, मूंगा, पीतल, जौ, चना, चावल, मोंठ, अलसी, रुई, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी तेजी बनायेंगे।

**शकुन विचार—** पड़वा, पाँचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन।
बढ़ने पर मन्दी करे तेजी हो जब छीन॥
चैत्र मास में आ पाँच शुक्र शनिवार।
प्रजा नाश दुर्भिक्ष दुःख दिन दिन तेज बाजार॥

**व्यापार सम्बन्धी—** वर्ष के आरम्भ में गुड़, एरण्ड, मिर्च, खाण्ड, घी, बिनौला, नमक, कपास, बाजरा, मजीठ की खरीद करें। श्रावण, भाद्रपद में बेचकर नफा लें जो वस्तु मंदी चल रही है उनका स्टॉक भारी लाभदायक है।

**मई—** यह मास वैशाख कृष्ण ३० गुरुवार से ज्येष्ठ कृष्ण ३० शनिवार तक रहेगा। ता. १ मई **मावस्या गुरुवार या गुरु दिस मास नक्षत्र** योग से वैशाख मास में भारत वर्ष मे दूर-दूर तक वर्षा व सभी व्यापारिक जिन्सों में भारी घटाबढ़ी हो। ता. ३ मई **जो शशि उगे सोम शनि एक अचम्भो होय** से एक मास के अन्दर मंत्री मण्डल में फेर बदल, किसी राज्य में मंत्री मण्डल में विद्रोह। बाजार जनरल तौर पर मन्दा रहेगा। ता. १० मई **दैत्यगुरुर्यदा मेषे** वर्षाकारक है। पशुओं को कष्ट प्रदायक। दूध, घी, चावल, रस पदार्थों, घी में तेजी। चांदी में घटाबढ़ी हो। ता. २२ मई भरणी शुक्र १२ दिनों के अन्दर सोना, चांदी, अफीम, लाल मिर्च, सरसों, तिल, तेल, अलसी, घी, उड़द, नारियल के भावों में गिरावट बने। चना, मूंग, मोंठ, ज्वार, तूअर में घटाबढ़ी। रुई स्थिर रहे। ता. ३१ अमावस्या शनिवासरी सूर्यग्रहण **दुर्भिक्षरौरवं घोर महादुःखमद्भयम** से घोर रौरभ महादुःख महाभय हो। गर्म हवा का प्रकोप रहे। लू, हैजा व प्राकृतिक प्रकोप शासक वर्ग भी गरीब वर्ग के सहायतार्थ हेतु नवीन हितकारी योजनायें लागू हो। भारत की प्रजा पर प्राकृतिक आपदाओं की मार, चौपाये पशुओं को कष्ट, किरात व यवन प्रदेशों के लोगों को कष्ट, ग्रहण प्रातः ७।२९ से आरंभ ८।२२ पर मध्य व मोक्ष पर्व ८।३३ पर होगा। इस ग्रहण के सूतक ३० मई सन् २००३ ई. को सायं ७।२९ से आरंभ होंगे। ग्रहण के समय जप, दान, पुण्य का समय अति महत्वपूर्ण है।

**शकुन विचार—** जेठ वदी प्रतिपदा सोम, शुक्र, गुरुवार।
वर्षा हो अति उत्तम अति उत्तम पैदावार॥
जेठ मास में सूर्य यह पाँच ग्रह इक संग।
सावन सूखा जायेगा हो मंत्र मण्डल भंग॥

**व्यापार सम्बन्धी—** सूर्य ग्रहण रोहिणी अन्तर्गत हो रहा है। अतः सभी तरह के अनाज, गेहूं, मूंग, उड़द, घी, घास, तृण, आयरन, लाल मिर्च का स्टॉक कर दो मास पश्चात् बेचने से लाभ।

**जून—** यह मास जेठ सुदी १ रविवार से आरंभ होकर आषाढ़ सुदी १ सोमवार तक रहेगा। ता. १ जून चन्द्रदर्शन रविवासरीय है। अतः जौ, गुड़, तेल, खाण्ड, घी में तेजी कारक है। गर्मी व गर्म हवा का प्रकोप, लू, हैजा, अतिसार जैसे रोगों की बाहुलता। जल, विद्युत समस्यायें प्रबल रूप लेंगी। ता. ५ जून वृष राशि के शुक्र **भृगु पुत्रो वृष स्थितत्वा** से रुई व कपास में अच्छी मंदी। वर्षा की खेंच। अनाजों में मंदी का झटका। सोना, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी हो। जनरल लाईन तेज रहेगी। ता. १५ मिथुन संक्रांति रविवासरी है व अवस्था बैठी ३० मुहूर्ती होने से राजा प्रजा को कष्ट। अनाजों के भाव तेजी में आकर समान हो जायेंगे। दूध, दही, घी के भावों में मूल्य वृद्धि। इस संक्रांति में नेत्र रोग व अतिसार रोगों की बाहुलता रहे। धातु पदार्थों में भी घटाबढ़ी से तेजी। शेयरों में अच्छी घटाबढ़ी हो। ता. २२ आर्द्रा के सूर्य रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, ऐरंड, मोती, गेहूं, चावल, जौ, चांदी में तेजी। स्वर्ण, शेयरों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. २६ बुध का मिथुन राशि में प्रवेश **बुध मिथुन राशि महर्घ** के अनुसार हवा का जोर रहे। आकाश मं बादल बहुत हों। १५ दिन के अन्दर भारत के अधिकतर प्रदेशों में वर्षा अच्छी। मूंग, दलहन, रेशम, शक्कर, रुई में तेजी। सोने, चांदी में गिरावट सरसों, तार आदि में घटाबढ़ी हो।

**शकुन विचार—** जेही पखवारे तिथि बढ़ै, वाही में घट जाय।
सभी वस्तु सस्ती विकै, मंहगाई हट जाय॥
आषाढ़ बदी चौदस दिना होय रोहिणी योग।
करफ्यू और कंट्रोल से दुःख पावै सब लोग॥

**व्यापार सम्बन्धी—** आषाढ़ मास में प्रथम वर्षा के दिन यदि सोम या गुरु हों तो सुभिक्ष, बुध हो तो रोग वृद्धि, मंगलवार हो तो आंधी, तूफान से हानि, रविवार हो तो दुर्भिक्ष। शनिवार हो तो प्राकृतिक प्रकोप, वर्षा वृद्धि। शुक्र हो तो आगे वर्षा अच्छी होगी।

**जुलाई—** यह मास आषाढ़ शुक्ला २ मंगलवार से आरंभ होकर श्रावण शुक्ला २ गुरुवार तक रहेगा। ता. १ चन्द्रदर्शन भौम वासरी है अतः अन्न व व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का रुख। सोना, चांदी, शेयरों में घटाबढ़ी से तेजी व मास में मिथु राशि में पंचग्रही योग बन रहा है जो प्रजा व देश के हित में अच्छा नहीं है। अतः बन्द, आन्दोलन, हिंसा, **प्रदर्शन चार पांच ग्रहों का वनै एक राशि पर योग। वर्षा अथवा युद्ध से दुख पावै सब लोग॥** अर्थात् बाढ़ व अन्य प्राकृतिक प्रकोपों में वृद्धि शेयर बाजार भविष्य में हलचल। सोना, चांदी में चमक बने। ता. १० जुलाई बुध का कर्क राशि में प्रवेश रुई में मंदी। चांदी तेज। रस पदार्थ, गुड़, घी, तेल, सोना, मूंगफली, सरसों में प्रथम तेजी ले। मन्दी का मान। अनाज भाव मध्यम रहे। आषाढ़ी पूर्णिमा भी रविवासरी है जो तेजी का समर्थन देती है। ता. १६ जुलाई कर्क संक्रांति बुधवासरी है। अतः अन्न के भावों में मंदी बने। वायु का प्रचण्ड जोर रहे। वृक्षों के टूटने से पशु-पक्षियों को कष्ट। ता. २० पुष्य के सूर्य योग से १४ दिन के अन्दर, तिल, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, चावल, गेहू, जौ, ज्वार, बाजरा, सुपाड़ी, सौंठ, गूगल, मोम, हींग, हल्दी, लाख, सन, केसर, ऊनी वस्त्रों में तेजी। किसी-किसी में विशेष चमक बने। ता. २५ जुलाई **सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत्** सुख सुभिक्ष कारी अतः सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी का संचार होगा। ता. ३० सिंह राशि के गुरु **सिंहे जीवे श्रावणा** से पृथ्वी जल से पूर्ण हो। सत्पुरुषों का सम्मान, गेहूं, तिल, उड़द, घी, चावल, सोना, रूपा, ताम्बा, मूंग तेज। सर्पों का भय, आषाढ़, भाद्रपद में वर्षा अच्छी हो।

**शकुन विचार—** सावन लागत प्रथम दिन उगत न दीखै भानु।
वर्षा ऋतु वर्षा बहुत उत्तम संवत् जानु॥
सावन मावस उत्तरा पुनरु धनिष्ठ।
एक मास दुर्भिक्ष रहे जग में रहे अनिष्ठ॥

**व्यापार सम्बन्धी—** राज्य भ्रंशोराज युद्धं क्लेशानां प्रवर्द्धनम्।
अमावस्या भौम वासरी है अतः राज्य भ्रंश, राज युद्ध, क्लेशों व बन्द, प्रदर्शनों में वृद्धि। द्रवों की हानि। अतः व्यापारी वर्ग वृद्धि चातुर्य से कार्य करें। सभी जिन्सों में तेजी प्रमुख रहेगी।

**अगस्त—** यह मास श्रावण शुक्ला ३ शुक्रवार से आरंभ होकर भाद्रपद शुक्ला ४ रविवार तक रहेगा। ता. ३ पंचमी क्षय **पड़वा पाँचै चतुर्दशी शुक्ल पक्ष में तीन। बढ़ने पर मन्दी करें तेजी हो तब छीन॥** अतः सभी जिन्सों में तेजी का झटका। ता. ६ आश्ले. के शुक्र १२ दिनों के अन्दर रुई, तूअर व चावल में मन्दी का झटका। सभी चुनिन्दा शेयरों में घटाबढ़ी विशेष। लेकिन ऑवरेज मन्दा ही रहे। ता. १२ अगस्त **श्रवणं पूर्णिमायां स्याद्धान्यैरानदितां प्रजा** श्रावणी पूर्णिमा श्रवण नक्षत्र युक्त है अतः अन्न की पैदावार अति उत्तम हो। ता. १७ सिंह संक्रांति योग वायु, वर्षा, मूंग, उड़द, चना, चावल, तुष धान्य का नाश। सोने में अच्छी तेजी। राजा व प्रजा को कष्ट। ता. २१ अगस्त बुध का कन्या राशि में प्रवेश रुई व चांदी में मन्दी का झटका देगा। गेहं, जौ, चना, शक्कर, खाण्ड, हल्दी में तेजी बनेगी। ता. २७ अगस्त पिठौरी अमावस्या बुध वासरी है। **धान्यं महर्घं भौमज्ञेशनौ तैलं विनिर्दिशत्** से धान्य के भावों में तेजी का मान करा देगी। ता. २९ अगस्त चन्द्रदर्शन शुक्रवार, उ.फा. नक्षत्रगत हो रहा है। अतः अफीम, गुड़, खाण्ड, शेयर तेज। जौ के भावों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



में गिरावट। सरसों, तिल, तेल, गेहूं, चावल, उड़द, चना, ऊनी वस्त्र ऊन के भावों में विशेष घटाबढ़ी से गिरावट। सोना, चांदी में घटाबढ़ी से गिरावट लेकर तेजी बन जायेगी। सूर्य के ताप में वृद्धि, प्रजा में सुख व दुख समान, पंजाब, शवर, पुलिंद व कुरुक्षेत्र के निवासियों को कष्ट, राजनीति में परस्पर वैर, विरोध से केन्द्र व राज्य सरकारों से मतभेद सिंहस्थ गुरु उदय धान्य के भावों में तेजी कारक है।

**शकुन विचार—** भादव लागत चौथ को यदि होवे शनिवारी।
देश नाश दुर्भिक्ष दुःख भुखरू भ्रष्टाचारीङ्क
ईख शर्करा मिष्ठ रस, गुड़, हल्दी, तिल तेल।
सोना, तांबा तेज हो सूर्य सिंह के मेलङ्क

**व्यापार सम्बन्धी—** शनौ भाद्रपदे कृष्ण चतुर्थी यदि जायते।
देश भंगश्च दुर्भिक्षं स्वस्थस्यो दर पूरणम्ङ्क

ता. १७ अगस्त को १०।१५ पर पूर्व की वायु चले तो दुर्भिक्ष, दक्षिणी हो तो अनेक प्रकार के रोगों में वृद्धि, पश्चिमी हो तो वर्षा की खेंच। उत्तरी हो सभी प्रकार से कल्याण प्रद, शुभप्रद होती है।

**सितम्बर—** यह मास भाद्रपद शुक्ला पंचमी से आरंभ होकर आश्विन शुक्ला ५ मंगलवार तक रहेगा। ता. ५ को गुरु उदय व राहू केतु अपना स्थान परिवर्तन कर रहे हैं। **गुरु उदय भाद्रपद मासे धान्य नाश** से धान्य की फसल में हानि, उड़द, मूंग, काल वस्त्र, लोहा, कोयला के भावों में वृद्धि, सड़क दुर्घटना अधिक हो। राजनीति में परस्पर कलह का वातावरण बनें। धान के भावों में तेजी। ता. १० भाद्रपद पूणिमा को शुक्र का कन्या राशि में प्रवेश **कन्या राशिगते शुक्रे** से गेहूं, अनाज, गुड़, ऊनी वस्त्र, ऊन के भावों में तेजी, २० दिन के अन्दर प्राकृतिक प्रकोप, चावल में तेजी व चमक बनने का योग भी है। ता. १८ हस्त के शुक्र रुई, चांदी, चावल में विशेष घटाबढ़ी, सोना तेज। खाण्ड, गुड़, शक्कर में घटाबढ़ी यदि अन्न के भाव सस्ते हों। संग्रह से लाभ संक्रांति भी। बुधवासरी योग से जो गेहूं,आदि हर प्रकार के अनाजों में घटाबढ़ी का मान देगी। ताम्बा, लोहा, शेयर, अलसी, सरसों, सोना, कोयला, पत्थर गिरकर तेज। रुई, कपास, मजीठ, लाल चंदन, लौंग, जायफल, गाय, भैंस तेज। ता. २७ सितं. चन्द्रदर्शन **जो शशि उगे सोम शनि एक अचंभी जोय। छठ पड़े दिन तीस में अनाज जू महंगो होय** से एक मास के अन्तर्गत किसी राज्य का मंत्रीमण्डल भंग अथवा परिवर्तन का योग वर्षा में रुकावट। अनाजों में तेजी बनेगी। चार दिन के अन्दर सोना, चांदी, घी, हींग, किराना, मूल पदार्थ में तेजी के उछाले।

**शकुन विचार—** तीज बदी आसोज में मंगल या शनिवार।
अग्नि काण्ड भयभीत जन महंगा चले बाजाराङ्क
भृतजलोद्धता मेधाः कृषीणां भूर्य उपद्रवी।
तरकरोपद्रवानित्य शुक्रेणामावसी दिनेङ्क

**व्यापार सम्बन्धी—** ता. १ सितम्बर सन् २००३ आकाश निर्मल, सूर्य की किरणें साफ बादल इत्यादि ना हो तो दालवाना, कपड़ा, रुई, सूत व बाजार लाईन ५ महीने तक तेजी का भाव लेंगी।

**अक्टूबर—** यह मास आश्विन शुक्ल ७ बुधवार से आरंभ होकर कार्तिक शुक्ल ७ शुक्रवार तक रहेगा। ता. १ आश्विन छठ ज्येष्ठा व मूल नक्षत्र युक्त है। अतः रस पदार्थों के भाव तेज। ता. १७ अक्टूबर को सूर्य-शुक्र का योग बन रहा है। सूर्य देव भृगुनाथ व **यदा दैत्य गुरुश्चैव तुला राशि प्रवर्तते** से जनता में कुशल क्षेम नसीले पदार्थ, रसायन पदार्थ तेज। बाजार लाइन भी घटाबढ़ी से तेजी रहेगी। ता. ८ बुध अस्त तस्करों में भय व अति वृष्टि कारक है। ता. १० चित्रा के सूर्य १५ दिन के अन्तर्गत रुई, सूत, सोना, चांदी व मोती, रत्न, गुड़, खाण्ड, अरहर, गेहूं, चना, तिल, नारियल, सन, केशर, कपूर, शेयरों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। किसी-किसी में विशेष तेजी। ता. १७ अक्टूबर को सूर्य का तुला राशि में पंचग्रही योग **एक राशौ चत्वार से व एक राशि पर होय बुध-शुक्र और सूर्य वर्षा की कमती करें। तेजी होय भरपूर** अर्थात् सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी। तेजी वस्तुओं में चमक व सभी चुनिन्दा शेयरों में तेजी, सुस्त शेयर भी सुधार बना लेंगे. ता. २५ अक्टूबर दीपावली शनिवासरी है। **कार्तिके चेदमावस्यां शनिश्चे दन्नाशनः** से गेहं,जौ, चना, दालवाना के भावों में तेजी बने। ता. २७ अक्टूबर चन्द्रदर्शन सोमवासरी है। अतः ऑवरेज में मन्दी। गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी। रुई में घटाबढ़ी से मंदी का झटका लगे। गेहूं, बाजरा, ज्वार, गुड़, खाण्ड, अलसी में तेजी।

**शकुन विचार—** एक राशि पर होंय बुध-शुक्र-और सूर्य।
वर्षा की कमती करें तेजी हो भरपूरङ्क
यह योग १७ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक का है।
जेही पखवारे तिथि बढ़े वाही में घट जाय।
सभी वस्तु मन्दी रहे मंहगाई हट जायङ्क

**व्यापार सम्बन्धी—** १४ अक्टूबर अथवा २३ अक्टूबर से दीपावली तक जो भी मार्किट की चाल तेजी अथवा मंदी जो भी निकले वह आगे पौष अमावस्या तक वही रुख रहेगा। यह पूर्णतया सत्य है।

**नवम्बर—** यह मास कार्तिक शुक्ल ८ शनिवार से आरंभ होकर मार्गशीर्ष शुक्ला ७ रविवार तक रहेगा। ता. १ विशाखा के बुध अनाजों व दालवाना, रुई के भावों में मन्दी का झटका देंगे. तेल, घी, रस पदार्थों में तेजी। ता. ८ वृश्चिक के बुध **"बुधौ वृश्चिक राशि स्थितौ"** से घी, तेल, सरसों, रुई, चांदी में तेजी। सोना तेजी लेकर अस्थिरता को बल देगा। अफीम, रसायन व अनाजों में मन्दी को बल देगा। ता. ९ को चन्द्रग्रहण है। **"उपरागौयदा मेषे** से कम्बोज, किरात, पांचाल, तेलंग देशों में प्रजा को कष्ट, दालवाना व अनाजों में सुधार **"अश्वनी भरणी वनै पूनम से संयोग"** से रोगों में वृद्धि व श्रावण की सभी फसलों में तेजी का झटका लगेगा। ता. ११ ज्येष्ठा के शुक्र १८ दिनों के अन्दर सोना, चांदी, चावल, सरसों, तिल, तेल, हींग के भावों में गिरावट व अनाजों में भी मंदी का सपोर्ट होगा। ता. १६ नवं. वृश्चिक संक्रांति **"यदार्को वृश्चिके याति"** से गेहूं, जौ, चना, चावल, तिल, तेल, सरसों, सोना, ताम्बा, शेयर, लोहा, जस्ता, पीतल, रुई, नमक, हल्दी, मिर्च में तेजी। जूट, सूती वस्त्र, गाय, भैंस, गुड़, शक्कर में अच्छी घटाबढ़ी हो। **मृगशिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाय से** दो दिन तक जनरल लाईन घटाबढ़ी से तेज। आतंकवादी व झगड़े, झंझटों में वृद्धि कारक है। ता. २५ चन्द्रदर्शन, अनाजों में गिरावट व गुड़ में तेजी। रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी। सरसों, मूंगफली, शेयरों में तेजी का झटका। ता. २८ धनु के बुध भी रुई, कपास, वस्त्र, सूत में गिरावट व शुक्र योग से लाईन में तेजी होगी।

**शकुन विचार—** वृश्चिक गत जब सूर्य हो ऊन वस्त्र सम भाव।
लाल द्रव मन्दे मिले तो खरीद कर लावङ्क
छटे महीने लाभ हो, बेचो जब हो तेज।
तेज वस्तु लेना नहीं रखना यह परहेजङ्क

**व्यापार सम्बन्धी—** वृश्चिक राशि गत अमावस्या या पौर्णमासी को उत्पात हो तो सोना, चांदी, पीतल, हीरा, जवाहरात, केसर, कस्तूरी, सुगन्धित पदार्थों का संग्रह कर छटे महीने में बेचने से लाभ।

**दिसम्बर—** यह मास मार्ग. शुक्ला ८ सोमवार से आरम्भ होकर पौष शुक्ला ९ बुधवार तक रहेगा। ता. ५ मीन के मंगल सोना, रुई, तृण, लकड़ी व फर्नीचर के भावों में तेजी। चांदी गिरकर सुधरे। शेयर के मान भी तेजी लेंगे। ता. ८ पू.षा. के बुध व सोमवासरी पूर्णिमा बिनौला तेज। सोना-चांदी में गिरावट। अनाजों में भी मन्दी का झटका लगेगा। ता. १३ दिसम्बर उ.षा. के शुक्र गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अलसी, एरण्डी में मन्दी। अनाजों में तेजी, रुई घटाबढ़ी से तेज। ता. १६ धनु संक्रांति व मकर के शुक्र घी, तिल तेल, जौ, गेहूं, अलसी, चावल, चना, रुई लाल वस्त्र, लाल रंग केसर, कस्तूरी तेज। अरहर, मूंग, मटर, चने में आंशिक गिरावट। स्टाक का अनाज बेचने से लाभ। लोहा, सोना, हल्दी के भाव सम रहें। ता. २३ **अमावस्या पूंव अमावस्या मूल को सरसै चारों वाय। निश्चय बांधौ झोपड़ी वर्षा होय सवाय।।** से अतः सभी जिन्सों में तेजी का झटका वर्षा काल में वर्षा अति उत्तम। ता. २५ कृष्ण पक्ष में तिथि घटे शुक्ल पक्ष बढ़ जाये से सभी व्यापारिक जिन्सों में तेजी व पौष शुक्ला प्रतिपदा भी बुधवासरी है अतः बाजार में तेजी छायी रहेगी। ता. ३० दिसम्बर से १४ दिनों के अन्दर तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खाण्ड, हल्दी, गूगल, चमड़ा, कपूर, ऊनी वस्त्र, सन, चांदी व सभी चुनिन्दा शेयरों में दुतर्फा तेजी का योग है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

तरकरोपद्रवानित्य शुक्रेणामावसी दिनेड्ड संयोग'' से रोगों में वृद्धि व श्रावण की सभी फसलों में तेजी का झटका ... शेयरों में दुतर्फा तेजी का योग है।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# सन् २००३ में ग्रहों का शेयर मार्किट पर प्रभाव

**जनवरी**—ता. १ जनवरी नववर्ष सभी व्यापारी वर्ग को शुभ व मंगलमय हो। शनि राहु की युति से आयरन शेयरों में तेजी। ता. ३ भावों में मंदी से सुधार। गिरे हुए शेयर भी सुधार की मांग करेंगे। ता. १० भावों में तेजी का मान हो। ता. १७ जन. को भाव घटाबढ़ी से अस्थिरता को बल देंगे। ता. २३ बुध मार्गी गिरे हुये भावों में सुधार। ता. २९ जन. धनु राशि के शुक्र से शेयरों में तेजी व विशेष चमक भी बन सकती है। अतः रुख देखकर कार्य करें।

**फरवरी**—ता. १ फर. भावों में विशेष घटाबढ़ी से गिरावट। ता. ३ फर. किसी राज्य में उपद्रव व दंगे, शेयर बाजार में हलचल व भावों में मन्दी का मान। ता. १० फर. शेयरों के भावों में सुधार। ता. १२ फर. आयरन, टी, रसायन व सरकारी शेयरों में मजबूती बनें। अन्य शेयरों के भाव सर्पमुखी चाल से सुधार। ता. १९ फर. गुरु वक्री से शेयरों में घटाबढ़ी विशेष हो। ता. २५ फर. को भाव गिरकर संभल जायेंगे। ता. २७ फर. के भाव गर्म रहेंगे।

**मार्च**—ता. १ सभी चुनिन्दा शेयरों के भावों में गिरावट। ता. ५ को घटाबढ़ी विशेष लेकिन ऑवरेज तेजी का ही रहेगा। ता. ४ को अगर आज भाव तेजी लें तो ता. १८ तक तेजी बनी रहेगी। ता. १४ भावों में घटाबढ़ी से सुधार। ता. २० बाजार में हलचल भावों में घटाबढ़ी से मंदी को बल मिले। सभी चुनिन्दा शेयरों के भावों में गिरावट। ता. २९ भावों में सुधार बनें। विशेष कार्यालय से रिपोर्ट मंगा कर लाभ लें।

**अप्रैल**—ता. ३ तक सभी शेयर सर्पमुखी चाल से तेजी बना लेंगे व सुस्त पड़े शेयर भी सुधार की मांग करेंगे। ता. १० भाव गिरकर तेजी लेंगे। ता. १४ भावों में मंदी का मान हो लेकिन यह मंदी स्थाई नहीं है। ता. २० अप्रैल तक घटाबढ़ी विशेष से ता. २६ तक मंदी का मान होगा व तृतीया सप्ताहन्त तक भावों में सुधार लेकिन विशेष नहीं।

**मई**—ता. १ वर्षा व सभी शेयरों में मंदी त्यागकर सुधार बनें। ता. ३ मई दंगे, फसाद, आन्दोलन व सभी चुनिन्दा शेयरों में आंशिक मंदी। ता. १० भाव घटाबढ़ी में अस्थिरता को बल देंगे। ता. २२ मई भावों में सुधार व किसी-किसी शेयर में विशेष चमक बनें। ता. ३१ मई शनिवासरी अमावस्या भी भावों में सुधार कर तेजी का योग बनायेगी।

**जून**—ता. १ से ५ जून तक सभी लाइनें तेज रहेंगी। ता. १० जून भावों में विशेष घटाबढ़ी लेकिन ऑवरेज तेजी का ही रहेगा। ता. १५ जून को भावों में अच्छी घटाबढ़ी। ता. २० भावों में मन्दी का झटका लगे। ता. २५ भावों में तेजी का संचार व मासान्त तक भावों में अच्छी मंदी भी आ सकती है। आंदोलन दंगों से बाजार प्रभावित हो व मासान्त तक घटाबढ़ी विशेष लेकिन ऑवरेज तेजी का ही रहेगा।

**जुलाई**—ता. १ भाव घटाबढ़ी से सुधार लेकर सप्ताहन्त तक तेजी बना लेंगे। ता. ५ किसी राज्य में हिंसा व सभी चुनिन्दा शेयरों के भावों में मन्दी, बाजार में हलचल मचे। ता. १० गिरे भावों में सुधार। ता. १५ घटाबढ़ी विशेष हो, बाजार भाव का रुख दें। ता. २० सभी शेयरों में तेजी, सरकारी, आयरन व वित्तीय शेयरों में विशेष सुधार। ता. २५ भाव घटाबढ़ी में अस्थिरता को बल देंगे। ता. ३० भावों में तेजी का मान हो।

**अगस्त**—ता. २ भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. ६, १२ दिनों के अन्दर सभी शेयरों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. १७ भावों में मन्दी। ता. २० भावों में गिरावट। ता. २५ गिरे भावों में सुधार। ता. २९ भावों में घटाबढ़ी से मन्दी, बाजार रुख व देश रुख देखकर कार्य करें। भावों में तेजी प्रधान रहेगी।

**सितम्बर**—ता. ५ भावों में तेजी बनें। ता. १० प्राकृतिक प्रकोप से अन्न, जन-धन हानि भावों में अनिश्चितता का दौर रहें। ता. १५ भावों में सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. २० भाव गिर कर सुधार लेंगे। ता. २५ भावों में तेजी। ता. २९ भाव आंशिक मन्दी लेंगे।

**अक्टूबर**—ता. ६ भाव गिरकर सुधार लेंगे। ता. १० भाव घटाबढ़ी से तेजी बना लेंगे। ता. १५ भावों में घटाबढ़ी से तेजी का योग। ता. २० भावों में मन्दी का झटका। ता. २५ भाव सुधार बनाकर तेजी बना लेंगे व ता. २७ तक मन्दी का झटका। ता. ३० भावों में सुधार लेकिन विशेष नहीं।

**नवम्बर**—ता. १ भावों में मन्दी का योग। ता. ५ भाव सुधार की ओर अग्रसरित होंगे। ता. १० भावों में तेजी प्रधान रहेगी। सभी शेयरों में सुधार। ता. १५ भावों में गिरावट बने। ता. २० भावों में घटाबढ़ी लेकिन तेजी नहीं। ता. २० भाव अस्थिरता को बल देंगे। ता. २५ भावों में तेजी व मासान्त तक भावों में दुतरफा तेजी योग है।

**दिसम्बर**—ता. २ भाव गिरकर सुधार बना लेंगे। ता. ५ तेजी का योग। ता. १० भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. १५ भावों में मन्दी का झटका लगे। ता. २० गिरे भावों में सुधार बने। ता. २५ भावों में तेजी। ता. ३० भाव घटाबढ़ी से लेकिन तेजी प्रधान रहेगी।

**विशेष तेजी**—जिस दिन ऐन्द्र, व्यतिपात व वैधृति योग होता है उस दिन तेजी अवश्य होती है। मेष, वृश्चिक, मकर संक्रांति १५ मुहूर्त्ती हो तो तेजी। यदि चन्द्रदर्शन को तेजी हो तो पूर्णिमा तक तेजी। बुध बक्री हो तो तेजी ये एक अचूक चान्स है।

# सन् २००३ ई. में नासिक में सिंहस्थ महापर्व

इस वर्ष सन् २००३ ई. में नासिक में सिंहस्थ महापर्व होने जा रहा है। देवासुर संग्रामवश अमृत कुम्भ का समुद्र मन्थन से प्रकट हुआ यह कुंभ पृथ्वी पर चार स्थानों पर रखा गया था।

**पृथिव्यां कुंभपर्वस्य चतुर्धा भेद उच्यते।**
**चतुः स्थले निपतनात् सुधा कुम्भस्य भूतले॥**
**गंगा द्वारे प्रयागे च धारा गोदावरी तटे।**
**कुम्भख्यो दिव्य योगोअर्य प्रोच्यते शंकरादिभि॥**

पृथ्वी पर कुम्भ के चार स्थानों पर अमृत गिरा, हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन, नासिक में शंकर आदि देवताओं ने कुम्भ नाम का पर्व कहा है। युद्ध समय में पृथ्वी पर अमृत कुम्भ की गुरु, सूर्य और चन्द्रमा ने रक्षा की थी उस समय वर्तमान राशियों पर जब सूर्य, चन्द्र, गुरु आते हैं उस समय चारों स्थानों पर कुम्भ महापर्व होता है।

**सिंह गुरु स्तथा भानुश्चन्द्र क्षय स्तथा।**
**गोदावर्या तथा कुम्भो जायतेअवनि मण्डले॥**

सिंह राशि में गुरु, सूर्य, चन्द्र होने से नासिक में कुम्भ महापर्व होता है। कूर्म और वाहाण्ड पुराण का मत है, तुल्या, आत्रेयी, गौतमी, भारद्वाजी, वृद्ध गौतमी, वाशिष्ठी इन सात नामों से विभक्त होकर सागर में मिलने वाली गोदावरी का ब्रह्मा आदि ने परिवेष्ठन किया है, जल पान अंकर्णेश्वर शिव की पूजा गोदावरी में स्नान, जलपान करने से अश्वमेध यज्ञ का फल होता है और वह जीवात्मा सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है।

**अश्वमेघ फलं चैव लक्ष गोदानजं फलम्।**
**प्राप्नोति स्नान मात्रेण गोदायां सिंह गे गुरौ॥**

स्नान एकादशी अमावस्या व पंचमी आदि तिथियों को होगा।

**मुख्य शाही स्नान**—भाद्रपद कृष्ण ३० बुधवार २७ अगस्त २००३ समस्त धर्म प्रेमी महानुभाव सिंहस्थ में और अधिक समय तक निवास कर समीपवर्ती तीर्थों का दर्शन और सत्संग का लाभ उठाते हैं।

# सिंहस्थ गुरु निर्णय विचार

वर्ष प्रारम्भ में गुरुदेव कर्क राशि में हैं व दिनांक ३० जुलाई २००२ ई. श्री श्रावण शुक्ला १ बुधवार को ६।४८ पर गुरुदेव सिंह राशि में प्रवेश करेंगे-

**उधान-चूड़ा व्रत वन्ध दीक्षा विवाह यात्राश्च वधू प्रवेशम्।**
**तड़ाग कूपात्रिदश प्रतिष्ठां वृहस्पतौ सिंह गते न कुर्यात्॥**

*॥ निर्णयामृत ॥*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



न गुरौ, सिंह राशिस्थे सिंहाशक गतेपि वा।
क्षौरमन्नं न कुर्वीत विवाहं गृह कर्म च॥ *गर्ग संहिता*
यात्रा क्षौरं दीक्षा विवाह व्रत बंधनम्।
प्रतिष्ठादि शुभं कार्यं त्यैजैत्सिंह गते गुरौ॥ *मणि मालायम्*

अर्थात् सामान्य वचनों से सिंहस्थ गुरु में शुभ कार्यो के लिए मना किया गया है लेकिन देश भेद के अनुसार व नक्षत्र तिथि के अनुसार ऐसा नहीं है क्योंकि-

भागीरथ्या चं उत्तरे तीरे गोदावर्याञ्च दक्षिणे।
व्रतद्वाहादि कर्माणि सिंहगेज्ये न दुष्यति॥ *वशिष्ठ संहिता*
भागीरथ्य उत्तरे तीरे गोदाया दक्षिण तथा।
विवाह व्रत वन्धौ वा सिंहस्थे ज्ये न दुष्यति॥ *गर्ग संहिता*

पूज्यनीय गर्ग, वशिष्ठ, व्यास जी के अनुसार सिंह राशि के गुरु में शुभ विवाह व अन्य शुभ कार्य गोदावरी नदी के उत्तर और गंगा नदी के दक्षिण के भाग अंतरालवर्ती देशों में त्याज्य कहा गया है। अन्य में नहीं। अतः सिंहस्थं गुरु विचार अन्य भागों में नहीं करना चाहिए व द्वितीया अन्य पूज्यजनों का मत है वो इस प्रकार से है कि सिंह राशि का ही नवमांश त्याज्य है अर्थात् सिंह के नवमान्स में सिंह का नवांश और मघा नक्षत्र के त्याग की बात लेकर सभी मासों में विवाह मुहूर्त्त लगा दिये गये हैं क्योंकि इसी सम्बन्ध में द्वितीया मत है-

मेषऽर्के सन् व्रतोद्वाहो गंगा गोदान्तरे अपि च।
सर्वा सिंह गुरुवर्ज्या कलिङ्गे गौड़ गुर्जरे॥ *मकरस्थ गुरु कथनम्*
माघमासे पौर्णमासी मघा युक्ता यदा भवेत्।
सिंहस्थस्य गुरोर्दोषस्तास्मिनर्वर्षे न चान्यथा॥ *मुहूर्तमालायाम्*
मघांत्यक्त्वा यदा गच्छेत्फाल्गुनीं च वृहस्पति।
पुत्रिणी धनिनी कन्या सौभाग्य सुखमश्नुते॥ *मणि मालायाम्*

अतः उपर्युक्त बातों के अनुसार पूज्यनीय गुरु जी के वाक्यानुसार व अन्य ज्योतिष ग्रन्थों के आधार पर जाएं तो बड़े-बड़े विद्वानजन बड़े से बड़े वाक्य को थोड़े शब्दों में कहा करते थे लेकिन शौनकादि ऋषियों के अनुसार-

वरलाभेति कालभ्यां दुर्भिक्षोदेश विप्लवात्।
विवाहः शुभदो नित्यं सिंहस्थेपि वृहस्पतौ॥ *शौनकीय पटले*

अर्थात् जब सुयोग्य वर मिल जाय और कन्या विवाह के योग्य हो जाय तो देश में दुर्भिक्ष व अन्य संकट के समय हमेशा सिंहस्थ (नवांश) भी गुरु में भी विवाहप्रद होता है। अतः स्पष्ट आर्ष वचनों के से ही प्रमाण रहते हुए भी जो सम्पूर्ण सिंहस्थ दोष बतायें वे शास्त्रों से विमुख है व शास्त्र तत्व से अनभिज्ञ है अतः ऐसी समस्या में जनता जर्नादन तथा पंडित जनों को सावधान रहना चाहिए। उपरोक्त प्रमाण अनुसार ही विवाह मुहूर्त्तों का प्रयोग किया गया है। अतः अपवादों में ना पड़ें और अपवाद त्याग कर शुभभकार्य करना श्रेयकर सिद्ध होगा।



# सन् २००३ ई. में चन्द्र व सूर्यग्रहण एक विवेचन

विक्रम संवत् २०६० में (दिनांक ३१ मई सन् २००३ से ८ नवम्बर सन् २००३) तक दो ग्रहण होंगे। जिसमें एक सूर्यग्रहण व द्वितीय खण्डग्रास चन्द्रग्रहण होगा उनका विवरण निम्न प्रकार है।

**प्रथम सूर्य ग्रहण**—३१ मई सन् २००३ ज्येष्ठ कृष्णा ३० शनिवार प्रथम सूर्य ग्रहण होगा। यह ग्रहण सम्पूर्ण भारत में दृष्टिगोचर होगा। यह ग्रहण रोहिणी नक्षत्र सुकर्मा योग चन्द्रमा वृष राशि गत होंगे।

**ग्रहण फल निम्न प्रकार से है—वृषे च ग्रहणे गोपाः पश्वः पथिका जनाः। महान्तो मनुजा ये च तेषां पीड़ा गरीयसी॥** से गोप, ग्वालों, पशु-पक्षियों, राहगीर व विद्वान जनों व मनुष्यों व प्रजा को कष्ट प्रदायक व सभी व्यापारिक जिन्सों शेयर, सोना, चांदी के भावों में तेजी का संचार किसी किसी जिन्स में विशेष तेजी भी बनेगी।

**वार फलम**—सूर्य ग्रहण शनिवार को हो रहा है अतः तिल, तेल, तम्बाकू, लाल मिर्च, गेरू, हल्दी, सोना, लाल वस्त्र, ताम्बा, आयरन, शेयर, कोयला, शस्त्र, बैल के संग्रह से दो मास बाद बेचने से लाभ प्राप्ति।

**नक्षत्र फलम्**—ग्रहण रोहिणी नक्षत्र गत हो रहा है जो कि सभी तरह के अनाज, गेहूं, मूंग, उड़द, घी, घास, तृण, लकड़ी, पाट, वारदाना, दूध, दही, नमक, तिल, तेल, लोहा व किराना की वस्तुओं के संग्रह से लाभ, रुई, सूत के संग्रह करें व दस मास पश्चात् बेचने से लाभ की प्राप्ति।

**योग फलम्**—गेहूं व अन्न के भावों में तेजी। सोना बेच कर अन्न का संग्रह करें। देश में दुर्भिक्ष, आरोप-प्रत्यारोप से राजनीति दूषित हो।

**ग्रहण स्पर्श**—७ बजकर २९ मिनट से प्रारम्भ होगा। ८-२२ पर मध्य व ८-३३ पर मोक्ष होगा। इस ग्रहण के सूतक ३० मई शुक्रवार सन् २००३ को सायं ७-२९ से प्रारम्भ होंगे।

**द्वितीय चन्द्रग्रहण**—वर्ष २००३ का द्वितीय ग्रहण ग्रस्तास्त खण्डग्रास चन्द्रग्रहण ८ नवम्बर सन् २००३ कार्तिक शुक्ला १५ शनिवार का होगा। यह ग्रहण भी सम्पूर्ण भारत में दिखाई देगा। ग्रहण अश्वनी नक्षत्र सिद्धि योग व चन्द्रमा उस समय चन्द्रमा मेष राशि पर स्थित होंगे ग्रहण का फल निम्न प्रकार से है।

**उपरागो यदा मेषे पीडियतेऽयं जनाः।**
**कम्बोजश्रिंकिराताञ्च पंचालाञ्चतिलङ्ककाः॥**

कम्बोज, किरात, पांचाल, तेलंग देशों में प्रजा को कष्ट व दुःख सुभिक्ष गेहूं, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, दलहनों में मन्दी का मान होगा।

**वार फलम्**—ग्रहण शनि को हो रहा है अतः तिलहन, अनाजों के भाव घटाबढ़ी से मंदी का मान करेंगे।

**नक्षत्र फलम्**—ग्रहण आश्वनी नक्षत्र गत हो रहा है। मूंग, गुड़, खाण्ड, वनस्पति, घी, तेल में तेजी का प्रभाव व घटाबढ़ी से भावों में गिरावट।

**ग्रहण समय**—ग्रहण स्पर्श ८-३३ रात्रि, मध्य ८-३३ व मोक्ष ८-३८ पर होगा। इस ग्रहण के सूतक पश्चिमी प्रदेशों में स्टैण्डर्ड भारतीय समयानुसार प्रातः ८-०३ मिनट पर प्रारम्भ होंगे।

ग्रहण के सूतक काल में बालक, बूढ़े, रोगी को छोड़कर ग्रहण सूतक काल में भोजन, शयन, मूर्ती स्पर्श, हास्य विनोद का निषेध है। ग्रहण स्पर्श के समय स्नान ग्रहण मध्य देवपूजन तर्पण जप हवनादि कर्म करें। पश्चात् जब ग्रहण मोक्ष होने पर पुनः स्नान करें। ग्रहण स्नान के समय कोई भी मंत्र नहीं बोलना चाहिए। सन्तान युक्त ग्रहस्थों का ग्रहण के समय उपवास नहीं करना चाहिए।

**ग्रहण का राशिफल**—प्रथम ग्रहण वृष राशि रोहिणी नक्षत्र गत है। अतः वृष राशि व गर्भवती महिलाओं को ग्रहण नहीं देखना चाहिए। ग्रहण समय एकान्त स्थान पर बैठकर धार्मिक ग्रन्थ, पुराण, जप, कीर्तन आदि करें अन्य फल निम्न प्रकार से है।

## बारह राशियों के लिए ग्रहण का फल इस प्रकार है

| राशि | मेष | वृष | मिथुन | कर्क | सिंह | कन्या | तुला | वृश्चिक | धनु | मकर | कुम्भ | मीन |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फल | हानि | घात | हानि | लाभ | सिद्धि | मानभंग | रोग | स्त्री कष्ट | सुख | चिन्ता | चिन्ता | धन लाभ |

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अपवाद त्याग कर शुभमकार्य करना श्रेयकर सिद्ध होगा।

| | | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| फल | हानि | घात | हानि | लाभ | सिद्धि | मानभंग | रोग | कष्ट | सुख | चिन्ता | चिन्ता | धन लाभ |

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



# हाथ व पैरों की रेखायें शुभ व अशुभ रोग व योग

सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष शास्त्र का एक प्रमुख अंग है। इस शास्त्र को भगवान् शिव ने जगत के कल्याण के लिए पार्वती से कहा था, सामुद्रिक शास्त्र में हस्त रेखाओं का प्रमुख स्थान है। शास्त्रों के ज्ञाता इन रेखाओं के द्वारा मानव के जीवन का अध्ययन करता है। मानव के हाथ को यदि सीधा करके देखा जाये तो उसमें नाना प्रकार की टेढ़ी-मेढ़ी, लम्बी, पतली, चौकोर रेखायें दिखाई देती हैं। यह सभी रेखायें मानव के उत्थान-पतन में अपना विशिष्ट स्थान रखती है तथा मनुष्य के हाथ में सात प्रमुख रेखायें होती हैं-

१. **जीवन रेखा**—अंगुष्ठ के ऊपर तर्जनी के मध्य मंगल पर्वत से निकल कर शुक्र के क्षेत्र को घेरती हुई मणिबन्ध के पर्वत पर जा समाप्त होती है उसे जीवन रेखा कहते हैं।

२. **मस्तक रेखा**—मंगल द्वितीय पर्वत से प्रारम्भ होकर हाथ के मध्य भाग पर हती हुई जीवन रेखा के ऊपर होकर चन्द्र पर्वत पर जो रेखा आती हैं उसे मस्तक रेखा कहते हैं।

३. **हृदय रेखा**—बुध के पर्वत व कनिष्ठिका अंगुली के नीचे निकल कर मस्तक रेखा के ऊपर होकर गुरु पर्वत तर्जनी अंगुली तक जीवन रेखा होती है।

४. **भाग्य रेखा**—मणिबन्ध अथवा उसके आस-पास से निकल मध्यमा अंगुली की जड़ तक जाती हुई रेखा को भाग्य रेखा कहते हैं।

५. **स्वास्थ्य रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर बुध पर्वत को जाती है। (ऐसा कीरो का मत है)।

६. **सूर्य रेखा**—यह रेखा मणिबन्ध, जीवन रेखा से, भाग्य रेखा से हथेली के मध्य, हृदय व मस्तक रेखा से स्पर्श करती हुई निकलती है।

७. **विवाह रेखा**—यह रेखा कनिष्ठिका अंगुली के नीचे हृदय रेखा से ऊपर होती है।

## ग्रह रेखा चिन्ह और पर्वत

नौ ग्रहों से सम्बन्धित ये नौ रेखा होती हैं। (सूर्य से केतु) सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु इसके अतिरिक्त पाँच रेखाएं हृदय, मस्तक, जीवन, स्वास्थ्य और भाग्य रेखायें होती हैं।

**सम्राट और राष्ट्रपति योग**—जिस पुरुष या स्त्री की नाभि गहरी हो नाक या अग्र भाग यानि आगे का हिस्सा सीधा हो, सीना लालवर्ण व पैरों के तलुवे कोमल हों व रंग लाल हो ऐसा व्यक्ति ''सामुद्रिक शास्त्र'' के अनुसार राजा बनता है।

**राज योग या धनवान योग**—जिसके हाथ में चक्र, फूलों की माला, धनुष, घोठा, ध्वजा, रथ, आशन इनमें से कोई चिन्ह हो तो उसके यहाँ लक्ष्मी स्वयं निवास किया करती हैं।

**प्रधान मंत्री योग**—जिस पुरुष या स्त्री के हाथ की सूर्य रेखा मस्तक रेखा से मिली हो और मस्तक रेखा से सीधी स्पष्ट और गहरी होकर गुरु क्षेत्र में जाकर चतुष्कोण में बदल जाय। ऐसा व्यक्ति भविष्य में प्रधान मंत्री बन सकता है।

**पी.सी.एस. या आई.ए.एस. योग**—जिसके हाथ में सूर्य व गुरु पर्वत उच्च हो और शनि पर्वत पर त्रिशूल का चिन्ह हो, चन्द्र रेखा का भाग्य रेखा से सम्बन्ध हो व भाग्य रेखा हथेली के मध्य से आरम्भ होकर एक शाखा गुरु पर्वत व दूसरी रेखा सूर्य पर्वत पर जायें तो निश्चय ही ऐसा व्यक्ति पी.सी.एस. या आई.ए.एस. ऐसी प्रतियोगिता पास करके राज्य अधिकारी के पद पर आसीन होता है।

**विदेश यात्रा योग**—जिस पुरुष या स्त्री के हाथ में जीवन रेखा से निकल कर भाग्य रेखा को काटती हुई चन्द्र क्षेत्र की ओर जाने वाली सुदृढ़ रेखा विदेश यात्रा का योग प्रदर्शित करती है। जीवन रेखा के जिस स्तर से यह रेखा निकली है उतनी ही आयु में यात्रा योग बनता है।

**भू-स्वामी योग**—जिसके हाथ में एक खड़ी रेखा सूर्य क्षेत्र से चलकर चन्द्र रेखा में मिलें और चंन्द्र रेखा जीवन रेखा को स्पर्श करें और मस्तक रेखा से एक शाखा निकल कर चन्द्र रेखा में मिलकर एक बड़ा डमरू का चिन्ह बने तो वह आदर्श नागरिक और भू-स्वामी योग होता है।

**जलयान चालक योग**—जिसके हाथ में चन्द्ररेखा जीवन रेखा पर्यन्त हो बुध व गुरु का पर्वत ऊंचा हो। हृदय रेखा अवरोधित ना हो तो ऐसा व्यक्ति जल सेना में जहाज चालक होता है।

**वायुयान चालक योग**—जिस व्यक्ति के हाथ की चार अंगुलियों के पर्वत चौड़े हों। सूर्य के नीचे मुद्रा का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति वायुयान चालक बनता है।

**ड्राईवर योग**—जिसके हाथ की चार अंगुलियों के नाखून लम्बे हों। गदेली वर्गाकार हो व चन्द्र पर्वत ऊंचा हो व सूर्य रेखा हृदय रेखा को स्पर्श करे। मस्तक रेखा मंगल पर मिले या त्रिकोण बने तो ऐसे व्यक्ति छोटी व बड़ी गाडियों के ड्राईवर होते हैं।

**वकील योग**—जिसके हाथ में शनि व गुरु रेखा पूर्ण चमत्कृत हो व विकसित हो या मणिबन्ध क्षेत्र से गुरु वलय तक रेखा पहुंचती हो तो ऐसा व्यक्ति कानून वेत्ता होता है।

**ब्रह्मचर्य योग**—जिसके दक्षिण हाथ में गुरु क्षेत्र में स्वास्तिक का चिन्ह बना हो तथा स्पर्श चमत्कृति पूर्ण ऊंचा हो तो ऐसा व्यक्ति एकांतवासी व साधुव्रत जीवन बिताता है।

**सौभाग्य शाली योग**—जिस पुरुष के दक्षिण हाथ में सात ग्रहों के पर्वत में से दो ग्रह पर्वत बलवान हों और इनसे सम्बन्धित रेखा स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति भूमि पतिता होता है व पुत्र भी पिता के समान योग्य व गुणवान होता है।

**जुआरी, सट्टेबाज योग**—जिसकी अनामिका अंगुली मध्यमा के बराबर हो अर्थात् दोनों बराबर लम्बी हों तो ऐसा व्यक्ति जुआरी कहलाता है।

**चोरी कारक योग**—जिस पुरुष अथवा स्त्री के हाथ में बुध पर्वत विकसित हो व जाल बिछा हो तो उसके घर में अनेकों बार चोरियां होती हैं।

**पुलिस व कार्य कुशल योग**—जिसके हाथ में मंगल पर्वत से सूर्य पर्वत और शनि अंगुली के बीचों-बीच कोई रेखा स्पर्श करती है या सूर्य क्षेत्र से बुध पर्वत को कोई रेखा स्पर्श करे तो ऐसे व्यक्ति की साहसिक कार्यों में अधिक रुचि होती है। सेना में भरती होता है। पढ़ा-लिखा कम होने के बावजूद भी पद का मान तो मिलता है अधिक नहीं।

**भाग्यहीन योग**—जिस जातक के हाथ में हथेली के बीच उथली हुई या आयत का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति हर समय चिड़चिड़ा, लापरवाह, जुगलखोर व भाग्यहीन होता है।

**फलित शास्त्री योग**—जिस जातक के हाथ में गुरु क्षेत्र के नीचे गुरु मुद्रिका या शनि, शुक्र, बुध क्षेत्र उच्च हो, अंगुलियां लम्बी हो व पुष्ठ हों तो व्यक्ति ज्योतिषी व फलित शास्त्री होता है।

**नर्स सेविका योग**—जिस स्त्री का हाथ गोल, पतला, चपटा हो, बुध पर्वत पर खड़ी रेखायें हों व शुक्र पर्वत उच्च हो तो ऐसी स्त्री निश्चय नर्स, सेविका बन कर यश प्राप्त करती है।

**नाड़ी विशेषज्ञ योग**—जिस जातक का चन्द्र पर्वत उच्च हो, सूर्य रेखा सदृढ़ हो तो ऐसा जातक नाड़ी विशेषज्ञ होता है।

**दगाबाज व स्वार्थी योग**—जिसके नाखून छोटे, हथेली श्वेत वर्ण व मस्तक रेखा हृदय रेखा में मिली हो तो ऐसा व्यक्ति दगाबाज व हाथ मोटा, अंगुलियाँ छोटी, बुध की अंगुली झुकी हो तो ऐसा जातक स्वार्थी होता है।

**विधुर व विधवा योग**—यदि विवाह रेखा आगे बढ़कर हृदय रेखा से मिले या भाग्य रेखा टूटी हो या काला धब्बा ग्रसित हो तो विधवा व विधुर योग होता है।

**निर्धन व दुःखी योग**—यदि किसी जातक के जीवन रेखा पर ''जाल'' बिछे हों तो जातक निर्धन व दुःखी रहते हैं।

**मातृ-पितृ सुख अभाव योग**—जिस जातक के हाथ में अदिम अवस्था में त्रिकोण आकृति या द्वीप का चिन्ह हो तो बालक के माता-पिता की बाल्यावस्था में मृत्यु हो जाती है।

१. जीवन रेखा टूटी हो तो मृत्यु। सहायक मंगल हो तो कष्टदायक, नष्ट हो या रुक-रुक कर बढ़ती हो तो शरीर कष्ट की प्राप्ति होती है।

२. जीवन रेखा के प्रारम्भ में चिन्ह हो तो मातृ सुख विहीन, गुणक चिन्ह (×) हो तो वाहन दुर्घटना योग, काला चिन्ह हो तो नेत्र पीड़ा, गोल चिन्ह हो तो व्यापारी, यदि जाल सा बिछा हो तो मनुष्य प्राय निर्धन रहता है।

३. जीवन रेखा गहरी हो तो क्रोधी मूर्ख, यदि रक्त वर्ण हो तो अघोरी के समान आचरण, यदि श्वेत वर्ण हो तो जातक प्रायः बीमार रहता है।

**मस्तक रेखा**—यदि हाथ में मृगी गती हो तो आयु ५२ वर्ष, नागी हो तो एक वर्ष, सुभद्रा देह तो ८२ वर्ष, यदि (×) चिन्ह हो तो शल्य रोगी, छोटी-छोटी रेखायें खड़ी हों तो सिर रोगी यदि दो (०) हो तो मस्तक रोगी, (□) हो तो चतुर, यदि यव का चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति आत्महत्या कर लेता है।

**स्वास्थ्य रेखा**—स्वास्थ्य रेखा पर विन्दु का चिन्ह हो तो पक्का चोर, (×) का चिन्ह हो तो जख्मी, यदि (⬭) का चिन्ह हो तो उसे व्यर्थ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



में बोलना, एक से अधिक चिन्ह हो तो बवासीर आदि ऐसे रोग होते हैं जिसमें चीर-फाड़ की आवश्यकता होती है।

### रोग व पीड़ाओं का ज्ञान

१. चौड़ी व पीली, मलिन रेखाओं वाला जातक में कमजोरी व रक्त की कमी होती है।

२. अंगुलियों के प्रथम पर्व में छोटी-छोटी रेखायें हों तो ऐसा व्यक्ति हमेशा रोगों से घिरा रहता है।

३. रेखायें यदि पीत (पीले) वर्ण की हों तो पित्त, पाण्डु रोगी होता है।

४. मध्यमा अंगुली के तीसरे पर्व के सन्धी भाग में त्रिकोण △ हो तो जातक अन्धा, हृदय या सूर्य पर्वत के नीचे नक्षत्र का चिन्ह हो तो जातक की एक आँख दुर्घटना में मारी जाती है।

५. हाथ की अंगुलियां टेढ़ी-मेढ़ी हों, नुकीली हों अथवा गुरु, शनि, सूर्य, बुध, पर्वत दबे हों तो जातक मिरगी का रोगी होता है।

६. हाथ की त्वचा मुलायम हो, स्वास्थ्य रेखा टूटी-सी दिखाई दे तो जातक गठिया का रोगी होता है।

७. मस्तक रेखा पर मंगल पर्वत के श्वेत छोट-छोटे दाँत के चिन्ह हों तो जातक गुरदे का रोगी होता है।

८. यदि चन्द्र पर्वत उच्च हो तो जातक उदर रोगी होता है।

९. मस्तक रेखा पर गुरु पर्वत के नीचे द्विप का चिन्ह हो तो जातक गले का रोगी होता है।

१०. मंगल रेखा लम्बी व ढालू हो या चन्द्र पर्वत पर (×) का चिन्ह हो या तृतीय पर लहरदार रेखा हो तो जातक पागल हो जाता है।

११. यदि रेखायें रक्त वर्ण की हों, हथेली खुश्क हो तो ज्वर व छूत का रोगी होता है।

१२. यदि रेखाओं का रंग अनियमित हो तो जातक का स्वास्थ्य कभी ठीक नहीं रहता है।

१३. यदि नाखून पर अर्द्ध चन्द्र हो या नखों का रक्त वर्ण हो तो जातक रक्त विकार का रोगी होता है।

१४. यदि मस्तक रेखा अधिक उठी हो तो जातक मस्तक रोगी होता है।

**पैर की रेखायें**—जातक के हाथ की भांति पैर में भी रेखायें होती हैं। पैर की रेखायें निम्न हैं।

**मदाघूर्ण रेखा**—पैर की ऐड़ी से लम्बी रेखा पैर के पिछले भाग में होती है। जिस जातक के पैर में यह रेखा होता है तो ऐसा व्यक्ति शराबी, कलह प्रिय, आतंकी, परिजनों का विरोधी होता है।

**मद रेखा**—पैर के तलुवे में कोई रेखा मध्य से प्रारम्भ होकर पैर की मध्यमा अंगुली तक जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति धार्मिक, परोपकारी, दानी व वैरागी प्रवृत्ति का होता है।

**अलसा रेखा**—पैर में कोई रेखा मध्य भाग से प्ररम्भ होकर अनामिका अंगुली तक गई हो तो जातक, आलसी, निष्पफली व अपने आप ही कार्य को बिगाड़ने वाले होते हैं।

**द्वास्था रेखा**—पैर के तलुवे में अंगुष्ठ के नीचे जोड़ से अलग सीधी रेखा हो तो जातक पुत्रवान, यशवान, पितृभक्त, जितनी अधिक लम्बी हो तो उतना ही शुभ व श्रेष्ठप्रद होता है।

**बालिका रेखा**—द्वास्था रेखा के पास की रेखा को बालिका रेखा कहते हैं। ऐसा जातक धनवान, भक्त, यशवान, यदि ऐसा काली हो तो जातक कंजूस, लोभी होता है।

**आत्रोटन रेखा**—पैर के अंगुष्ठ के करीब एक अंगुष्ठ की दूरी पर द्वास्था रेखा के नीचे सुन्दर रेखा वाला जातक ईमानदार व साहसी व कार्यों में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

**शंकु रेखा**—पैर के तलुवे में ऐड़ी के पास लम्बी रेखा वाले जातक की रुचि व प्रवृत्ति बदलती रहती है।

# शनिदेव का विचार

प्रिय पाठकों!

पौराणिक मतों के अनुसार शनि का जन्म सूर्य की पत्नी छाया से हुआ है। आकाश मंडल में सौर परिवार के नौ ग्रहों में यह दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है। इसके चारों ओर उपस्थित मुख्य तीन वलय (छल्ले) के कारण सबसे सुन्दर ग्रह भी माना गया है।

**गति**—आकाश में यह ग्रह सूर्य से ८,८७,००,००० मील दूर है तथा पृथ्वी से ८५,१०,००,००० मील की दूरी पर स्थित है। इसका व्यास ७१,५०० मील माना गया है और मस्त मंद गति के चलने के कारण इसका नाम मंद भी है। सूर्य के समीप पहुंचने पर इसकी गति लगभग ८० मील प्रति घण्टा रह जाती है। दैनिक गति ८ घड़ी ४ पल है। यानि १० घण्टा १६ मिनट है। इस गति के हिसाब से यह शनिदेव १२ राशियों की परिक्रमा पूरी करने में २५ वर्ष ५ महीना और १५ दिन १२ घड़ी और ३० पल लगा देते हैं।

**मुख्य बातें**—शनि एक राशि में ढाई वर्ष रहता है। जन्म राशि से बारहवें जन्म राशि और दूसरी इन तीन राशि को मिलाकर ७११ वर्ष हुआ। इसी को साढ़ेसाती कहते हैं। जन्म राशि से जब शनि चौथे या आठवें हों तो अढैय्या कहा जाता है जो कि विशेष कष्टप्रद है। जब शनि बारहवें स्थान पर आता है तो व्यय अधिक होतत है। जन्म राशि का होने से यात्रा, चर्म व वायु रोग अवश्य होता है। दूसरे होने पर परिवार में किसी की मृत्यु व धन की हानि होती है। चौथे शनि में परिजन मित्रों से अनबन, बिगाड़, आठवें में व्यय हानि, रोग होता है।

**शनि का विचार**—शनि जिस नक्षत्र पर हो उससे अपने नक्षत्र तक, गिनिये यदि वही नक्षत्र हो जाय तो तीन मास १० दिन तक अनेक प्रकार की हानियां होंगी। दूसरे से पांचवें नक्षत्र तक तेरह महीने दस दिन की अवधि में समस्या से छुटकारा मिले, ६ से ११वें में १ वर्ष ८ महीने का समय वायुरोग, देशान्तर में भ्रमण करायेगा। १२ से १५वें नक्षत्र तक ११ महीने १० दिन तक समय कष्ट कारक बीतेगा। १६ से १८वें नक्षत्र तक १० मास का समय उत्तम यश कारक होगा व १९ से २०वें नक्षत्र का छः महीना बीस दिन सुखकारक रहेगा। ११ व १२वाँ नक्षत्र ६ मास २० दिन तक कष्टकारक व वायु विकार से महाकष्ट २३ से २७वाँ नक्षत्र अनुचित ढंग से धन की प्राप्ति कारक होगा।

जिस दिन शनि राशि संक्रमण करें उस दिन चन्द्र नक्षत्र की राशि बनावे, यदि वह राशि अपनी राशि से १-११वीं पड़े तो लाभ, शुभ, २, ५, ९वीं पड़े तो साधारण। ४, ८, १२वीं हो अनिष्ट समझें। परन्तु पंचांगकारों के पंचागों में भेद होने के कारण फल नहीं मिल पाता।

जीवन में प्रायः शनि ३ बार या किसी-किसी को ४ बार आता है। प्रथम बार तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता परन्तु दूसरी बार नींव हिला देता है। तीसरी बार में भवन को उखाड़ फेंकता है और चौथी बार नाना प्रकार के कष्ट देकर जला डालता है।

**शनि चक्र**

| शनि नक्षत्र | समय | फल |
|---|---|---|
| १ | ३ मास १० दिन | अनेक हानियाँ |
| ४ | १३ मास १० दिन | विजय साफल्य |
| ६ | २० मास | व्यर्थ भ्रमण |
| ४ | १३ मास १० दिन | कष्ट, भुजा व्यथा |
| ३ | १० मास | सम्मान, सुख, यश |
| २ | ६ मास २० दिन | उन्नति, सुख |
| ५ | १६ मास २० दिन | धन धान्य का लाभ |

**शनि की शान्ति का उपाय**—नीलम धारण करना चाहिए, छायादान करना चाहिए। शनैश्चर का जाप करना चाहिए। काले घोड़े की नाल की बिना कटी हुई बिना जोड़ी हुई अंगुठी धारण करनी चाहिए। शनि के दिन काले तिल व भुना हुआ चना खाना चाहिए। काले वस्त्र व तिल का तेल लगाना लाभदायक रहता है।

नीलम किन-किन राशि वालों को लाभदायक होता है-तुला-कुम्भ को अत्यन्त लाभदायक। मकर-वृष को साधारण लाभप्रद। मिथुन-कन्या को साधरण शुभ। धनु-मीन को कभी अच्छा तो कभी बुरा।

मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक कभी भी अच्छा नहीं होता। जब तक कुण्डली में बहुत अच्छा ना हो शनि स्तोत्र का पाठ, हनुमान जी व्रत व सुन्दर काण्ड, हनुमान चालीसा का पाठ, दक्षिण मुखी बजरंगी पर चोला, भोग, सिन्दूर, बजरंग बाण का पाठ व हनुमान मंत्र या स्तोत्र से ४० बार परिक्रमा करनी चाहिए व सूर्योदय से पहले पीपल की जड़ में तिल, गुड़, मिश्रित जल शनिवार को देना चाहिए व रात्रि में लोहे के ढक्कन में सरसों के तेल का दीपक जलाना चाहिए।

—पं. सुनील कुमार व्यास, राया (मथुरा)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

को बिगाड़ने वाले होते हैं।

बनावे, यदि वह राशि अपनी राशि से १-११वीं पड़े तो लाभ, शुभ ३

—पं. सुनील कुमार व्यास, राया (मथुरा)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# वर्षा योग सन् २००३ ई.

परिलेखकर्ता —रामावतार गुप्त 'व्यापार भूषण' फोन : ०१२७४-२३९४७
राव उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड, नजदीक नई सब्जी मण्डी, रेवाड़ी-

**वर्षा होने के कुछ नियम :**

**मण्डल बादल कोई ग्रह या उदय अस्त हो।**
**रवि उत्तर-दखिनायन मावस पूनम क्षय हो॥**
**अतिचारी हो क्रूर ग्रह साधारण बरसाय।**
**सौम्य ग्रह बक्री चले सावन उत्तर बाय॥**
**पछवा चले मास दस, वर्षा होय सुहाय।**
**गुरु उदय शुक्रास्त हो, मंगल वर्षे मेह॥**
**अथवा सूर्य देव आर्द्रा पर जब आवै।**
**ही नियम है साधारण वर्षा तब आवै॥**

अर्थात् कोई भी ग्रह राशि बदले या अस्त उदय हो, सूर्यदेव उत्तरायण अथवा दक्षिणायन हो, मावस या पूनम का क्षय हो। कोई भी क्रूर ग्रह अतिचारी गति से अधिक चले या सौम्य ग्रह बक्री चले, मंगल अपनी राशि बदले या सूर्यदेव आर्द्रा नक्षत्र पर प्रवेश करें तब प्रायः वर्षा हो जाती है। यह प्रायः नियम है। प्रायः अन्य ग्रहों की पोजीशन दखल अंदाजी से वर्षा होना जरूरी नहीं है। भादव में जब पूर्वी पवन चलती है, सावन में उत्तर की वायु चले तथा शेष दस महीनों में पश्चिम की वायु चले तो यह वर्षा कारक होती है।

**आधा प्रहर आषाढ़ में वर्षे, एक प्रहर वर्षा हो ज्येष्ठ।**
**बैसाखे दो प्रहर, चैत्र में सिर्फ एक दिन वर्षा नेष्ट॥**
**फागुन में दो दिन वर्षे, अरू माघ महीने में दिन तीन।**
**है अकाल सूचक यह वर्षा, संवत् हो वर्षा से हीन॥**

तात्पर्य यह है कि यदि आषाढ़ में केवल चार घड़ी, ज्येष्ठ में एक प्रहर, बैशाख में दो प्रहर, चैत्र में एक दिन (आठ प्रहर) वर्षा हो तो नेष्ट (खराब) फल होता है। फागुन में दो दिन, माघ में तीन दिन हो तो यह सब वर्षा अकाल होने की सूचना देती है।

**बुध गुरु भृगु सूरज जबै, ही इकट्ठे इकठौर।**
**घात योग के कारणै, धूल उड़े चहुं ओर॥**

ता. १७ से २१ अगस्त तक तथा ता. ५ से १० सितम्बर तक तथा ता. २४ से २६ जुलाई तक उपरोक्त योग है। इस दौरान घात योग है। वायु का जोर रहेगा तथा धूल आदि उड़ेगी। वर्षा नहीं होगी।

**जब जब ही बुध वृहस्पति मिल बैठे इक गेह।**
**तब तब ही संसार में बरसै नाहीं मेह॥**

ता. १७ सितम्बर से ३ अक्टूबर तक यह योग है। इस दौरान वर्षा बन्द रहेगी तथा ता. १० जुलाई से २६ जुलाई तक भी उपरोक्त योग है।

**सम सप्तक गुरु शुक्र हो अथवा भृगुसुत सूर।**
**अथवा सूरज गुरु रहे, समझो वर्षा दूर॥**

उपरोक्त योग ता. १४ जनवरी से १२ फरवरी तक है एवं ता. २ मार्च से २२ मार्च तक है। इस दौरान सूर्य गुरु समसप्तक होने से वर्षा बन्द रहेगी।

**एक राशि पर आ बसैं गुरु शुक्र और सूर।**
**वर्षाकारक योग यह ज्योतिष में मशहूर॥**

यह योग २४ जुलाई से २९ जुलाई तक है तथा २२ अगस्त से ४ सितम्बर तक उपरोक्त योग काफी वर्षा कारक है। यहां शनि की दृष्टि वर्षा में रुकावट करती है तो मंगल की दृष्टि भारी वर्षाकारी है। अतः खण्ड वृष्टि कहीं भारी वर्षा तो कहीं कम वर्षा हो सकती है।

**पाचै रोहिणी सप्तमी आड़ी नोमी पुष्य।**
**चैत्र पूर्णिमा स्वाती तो वर्षा गर्भ प्रमुख्य॥**
**जो इनमें वर्षे नहीं तो उत्तम वर्षात।**
**जो वर्षे तो मत करो फिर वर्षा की बात॥**

चैत्र सुदी में उपरोक्त तिथियों में यदि वर्षा नहीं होती है तो आगे वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी। यदि उपरोक्त में वर्षा हो जाती है तो यह समझना चाहिए कि आगे वर्षा में भारी कमी रहेगी।

**बुध शुक्र दोनों साथ हो, देखे कोई न क्रूर।**
**गुरु की भी दृष्टि पड़े, वर्षा हो भरपूर॥**

यह योग ता. २४ फरवरी से १ मार्च तक है। इस दौरान दूर-दूर तक अच्छी वर्षा होगी तथा कहीं-कहीं महा वर्षा से जन-जीवन अस्त-व्यस्त होगा तथा प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में बाजारों में गिरावट का रुख भी रहेगा।

**ज्येष्ठ मास में आर्द्रा से चित्रा तक जोय।**
**नभ में बिजली चमके, अथवा बादल होय॥**
**चौमासा बरसे नहीं सारा सूखा जाए।**
**जितना हल्का जोग है उतना जल वर्षाय॥**

उपरोक्त नक्षत्र २ जून से १० जून तक है। बादल आदि देख कर आगे वर्षा का अनुमान लगाना चाहिए।

**जल राशि के चन्द्र से नवे सातवें थान।**
**शनि हो अथवा भूमि सुत वर्षा होय महान॥**

उपरोक्त योग के अनुसार १२ अप्रैल से ४ जून एवं ५ दिसम्बर २००३ से २४ जनवरी २००४ के मध्य कभी भी अच्छी वर्षा हो सकती है।

**रवि के आगे वृहस्पति तब अग्नि का जोर।**
**गुरु के आगे सूर्य तो वर्षा हो चहुं ओर॥**

के अनुसार १७ से २१ अगस्त तक उपरोक्त योग के अनुसार अग्निकाण्ड की घटनाओं में वृद्धि होगी तथा २२ अगस्त से १६ सितम्बर तक चारों ओर अच्छी वर्षा हो सकती है।

**पुरुषनरवत चन्दा चले, नारि नरवत पर सूर।**
**वर्षाकारक स्त्री पुरुष योग है मशहूर॥**

के अनुसार २२ जून से २८ जून तक। १२ जुलाई से २६ जुलाई तक। ९ अगस्त से २२ अगस्त तक। ५ सितम्बर से १८ सितम्बर तक। २ अक्टूबर से १६ अक्टूबर तक। २९ अक्टूबर से ६ नवम्बर तक उपरोक्त योग है। इस दौरान अच्छी वर्षा के योग हैं।

स्त्री + स्त्री योगः—२९ जून से ८ जुलाई तक। २७ जुलाई से ५ अगस्त तक। २३ अगस्त से १ सितम्बर तक। १९ सितम्बर से २८ सितम्बर तक। १७ अक्टूबर से २६ अक्टूबर तक उपरोक्त योग है। वायु चलेगी तथा आकाश में बादल छा जाते हैं परन्तु वर्षा नहीं होती।

स्त्री + नपुंसक योगः—ता. ९ से ११ जुलाई तक। ६ अगस्त से ८ अगस्त तक। २ सितम्बर से ४ सितम्बर तक। २९ सितम्बर से १ अक्टूबर एवं २७-२८ अक्टूबर तक उपरोक्त योग होने से अवर्षण रहेगा। कभी-कभी भारी गर्मी। वायु कम चलती है तथा वर्षा नहीं होगी।

पुरुष + पुरुष योगः—२८ अप्रैल से ५ मई। १९ मई से २ जून तक एवं १५ जून से २१ जून तक गर्मी का जोर रहेगा। इस दौरान भारी गर्मी भी पड़ सकती है।

पुरुष + हिजड़े योगः—१६ मई से १८ मई तक तथा १२ जून से १४ जून तक गर्म हवाएं (लू) चलेंगी। इन दिनों सर्वाधिक तापमान रह सकता है।

पुरुष + स्त्री योगः—६ से १५ मई एवं ३ जून से ११ जून तक वर्षा होने के योग हैं। कहीं-कहीं अच्छी वर्षा हो सकती है।

## तेजी मन्दी के पीरीयड २००३ ई.

**शनि बुध सूरज जब इक राशि इक सेज।**
**जौ गेहूं चावल चना जुवार बाजरा तेज॥**

उपरोक्त योग २७ से २९ जून तक होगा। अनाज तेज रहे।

**पड़वा पाचै चतुर्दशी, शुक्ल पक्ष में तीन।**
**बढ़ने पर मन्दी करे, तेजी हो जब छीन॥**

चैत्र सुदी १४ का क्षय, श्रावण सुदी पंचमी का क्षय, आसोज सुदी एकम् का क्षय उपरोक्त पक्ष में तेजी कारक है।

**जो पूर्णमासी बढ़े, तो मन्दा बाजार।**
**जौ, गेहूं, चावल, मटर, मूंग, मोंठ, उर्द, गुवार।**

कार्तिक की पूनम की वृद्धि उपरोक्त वस्तुओं में मन्दी लायेगी। इसी प्रकार माघ की पूनम का क्षय तेजी कारक है।

**किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए।**
**ग्राहक मांगे मूंग घी, बिक्रेता नट जाए॥**

पौष सुदी तीज का क्षय (२६ दिसं.), कार्तिक सुदी चौथ का क्षय पक्ष में घी मूंग दलहन पदार्थों में जनरल लाईन तेज रहेगी।

**पड़वा आठै पूर्णिमा जो बुधवारी आय।**
**सभी वस्तु व्यापार की मंहगे भाव बिकाय॥**

चैत्र सुदी पक्ष, पौष शुक्ल पक्ष २०६० में उपरोक्त योग है।

**शतभिषा तीनों पूर्वा तथा रोहिणी हस्त।**
**पक्ष की एकम् को हो तो मंहगा धान्य समस्त॥**

पौष सुदी २०५९, फाल्गुन सुदी २०५९, चैत्र कृष्ण पक्ष २०५९, भाद्रपद सुदी २०६०, आसोज कृष्ण पक्ष २०६०, पौष शुक्ल पक्ष २०६० में उपरोक्त योग है। के पक्षों में अनाजों में जनरल लाईन तेज रहे।

**बुध गुरु भृगु सूरज जब हो इकट्ठे इकठौर।**
**घात योग के कारणे, धूल उड़े चहुं ओर॥**

ता. १७ अगस्त से २१ अगस्त तक एवं ५ सितम्बर से १० सितम्बर तक उपरोक्त योग है। इस दौरान जोर का वायु चले (आधियां) एवं व्यापारिक वस्तुओं में तेजी को बढ़ावा देगा।

**जेहि पखवारे तिथी बढ़े, वाही में घट जाए।**
**एक वस्तु की क्या कहें, सभी वस्तु घट जाए॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



माघ शुक्ल पक्ष में नवमी की वृद्धि तथा पूर्णिमा का क्षय है। चैत्र सुदी में तीज की वृद्धि तथा चतुर्दशी का क्षय है। कार्तिक कृष्ण पक्ष में अष्टमी की वृद्धि ता एकादशी का क्षय है तथा पौष कृष्ण पक्ष द्वितीया की वृद्धि तथा एकादशी का क्षय है। उपरोक्त पक्षों में मन्दी का वातावरण बनेगा।

**सूर्यदेव भृगुनाथ का एक राशि पर साथ।**
**पकड़ा देती है फसल, मंहगाई को हाथ॥**

ता. ३० जुलाई से १६ अगस्त तक बाजार तेज रहेगा एवं १७ अगस्त से ४ अक्टूबर तक एवं मंगल की दृष्टि से यहां भारी तेजी संभव है।

**गुरु के घर में चन्द्रमा निश्चय बरसे मेह।**
**बुध हो तो राजा प्रजा झगड़े निःसन्देह॥**

वर्षाकाल में जब भी चन्द्रमा धनु एवं मीन राशि पर होगा वर्षाकारक होगा तथा धनु-मीन राशि में बुध के भोग काल में राजा प्रजा में निश्चय मन-मुटाव झगड़े एवं संघर्ष होगा।

**बुध वृहस्पति के घर जब जब हो शनिवार।**
**राजावों में युद्ध हो, बहे रक्त की धार॥**

शनि मिथुन राशि में पिछले वर्ष २००२ से चल रहा है। अपने ढाई वर्ष के भोग काल में व्यापक खून-खराबा, दंगे युद्ध कारक आदि से जन धन की काफी हानि संभव है।

**मंगल के घर में रहे कोई ग्रह अन्यान्य।**
**तो मंहगाई मास छै चलै सभी तुष धान्य॥**

ता. ५ सितम्बर २००३ को राहू मेष में आयेगा। तृण, धान्य, जुवार, बाजरा, गुवार, मकई आदि में तेजी की लम्बी लाईन चल सकती है।

**चार पांच ग्रहों का बने, एक राशि पर योग।**
**वर्षा अथवा युद्ध से दुःख पावै सब लोग॥**

ता. ९ जून से १५ जून तक, ता. ३० जून से १० जुलाई तक, ता. २१ से २८ अक्टूबर तक उपरोक्त योग अति वर्षा कारक अथवा युद्ध दंगे आदि कारक तथा तेजी का समर्थन करेगा।

**साथ-साथ गुरु शनैश्चर दोनों बक्राचार।**
**जौ, गेहूं, मकई, मटर तेज बाजरा गुवार॥**

ता. ६ जनवरी २००४ से दोनों साथ-साथ बक्री चलेगें। सभी प्रकार के अनाजों में तेजी तथा गुड़, तिलहन में भी तेजी को समर्थन देगा तथा रुई, सूत, पाट, बारदाना, हैसियन मन्दा होगा।

**कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े, शुक्ल पक्ष घट जाए।**
**सभी वस्तु तेज हो, सस्तापन हट जाए॥**

ज्येष्ठ मास, आषाढ़ मास, श्रावण मास, आसोज मास में उपरोक्त योग से मासों में जनरल लाईन तेज रहे।

**शनि बुध दोनों चले जब-जब वक्री चाल।**
**सरसों, अलसी, अरण्डी, तिलहन मन्दा माल॥**

ता. १७ दिसंबर २००३ से ७ जनवरी २००४ तक उपरोक्त योग से तिलहन बाजार मन्दा रहे।

**जिस राशि पर भ्रमण भौम का जब होता है उसमें बक्र।**
**बक्री होने पर किरयाणे में चलता है तेजी का चक्र॥**

ता. १४ अगस्त से एक मास के अन्दर किराना बाजारों में अच्छी तेजी चलेगी।

**आश्विन में बुध का उदय मंहगी बिकै कपास।**
**अस्त हो तो जानिये लाल पदार्थ नाश॥**

आसोज बदी पक्ष में बुध का उदय, रुई, कपास पाट, वारदाना आदि में तेजी कारक है। सुदी पक्ष में अस्त लाल रंग की वस्तुओं में तेजी कारक है तथा अनाजों में मन्दी का संचार करेगा।

**जो शशि ऊगे सोम शनि एक अचम्भो जिय जोय।**
**छत्र पड़े दिन तीस में अन्न जू मंहगो होय॥**

ता. ४ जनवरी, ३ फरवरी, ३ मई, २७ सितम्बर एवं २७ अक्टूबर से एक मास के अन्दर किसी राज्य के मन्त्रिमण्डल में परिवर्तन, भंग होगा अथवा अनाजों में तेजी चलेगी।

**अश्वनी भरणी का बने पूनम से संयोग।**
**जुवार गुवार मकई मटर मंहगाई अरु रोग॥**

कार्तिक की पूनम को उपरोक्त नक्षत्र से सावणी फसल के मालों में तेजी आ जायेगी।

**कार्तिक में हो ग्रहण या अन्य और उत्पात।**
**धान्य लीजिए-दीजिए पांच मास पश्चात्॥**

कार्तिक पूनम को ग्रहण होने से अनाज स्टाक की राय देता है। मन्दी होने पर खरीद कर चार-पांच पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ होगा।

**मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु का अस्त।**
**तृण चारा कमती मिले, बेचो पशु समस्त॥**

यह योग घास चारा अनाजों आदि में आगे तेजी लायेगा। पशुओं के चारे की काफी कमी रहेगी। अतः इसमें भारी तेजी भी आ सकती है।

**एक राशि पर होय जब बुध शुक्र और सूर।**
**वर्षा को कमती करे, तेजी हो भरपूर॥**

ता. १२ से १४ मई तक एवं १७ से २१ नवम्बर तक उपरोक्त योग से बाजारों में अच्छी तेजी आ सकती है।

**श्रवण नखत पर हो कभी कोई ग्रह क्रूर।**
**अन्न भाव मंहगा रहे, गेहूं तेज जरूर॥**

ता. २४ जनवरी से ५ फरवरी २००३ तक सूर्य एवं २८ अप्रैल से २१ मई तक मंगल श्रवण नक्षत्र पर भ्रमण करेगा। इस दौरान अनाजों में तेजी रहे। परन्तु यहां गुरु की दृष्टि से बाजार अच्छा मन्दा भी चल सकता है। रुख देखें।

**नीच राशि गत क्रूर ग्रह, पाप ग्रह समवेत।**
**निश्चय तदगत् वस्तुएं, सब मन्दी कर देत॥**

यह योग १८ अक्टूबर से १६ नवम्बर तक है। इस दौरान प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी की लाईन चले। अन्य योग से इसी दौरान तेजी के भी योग हैं। यहाँ देखें कि अच्छी तेजी या अच्छी मन्दी की कोई लाईन निकल सकती है। प्रथम रुख देखकर काम करें।

सावन सुदी एकम् का चन्द्रदर्शन आगे तीन चार मासों में घोर तेजी कारक है तथा कहीं भीषण जन संहार भी करा सकता है।

आसोज मास में घी बेचना चाहिए एवं अनाज मन्दा हो तो स्टाक करके २ मास में बेचें।

संक्रांति लगने से एक दिन पहले किसी वस्तु का भाव संक्रांति के दिन से मन्दा रहे तो आगे तेजी का रुख एक मास तक जनरल तौर पर उस वस्तु में रहता है। विपरीत से मन्दी का रुख समझना।

यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्यौरा सिलसिले वार, पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित प्रसिद्ध पुस्तक ''भविष्य फल प्रकाश सन् २००३ ई.'' की मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अतः व्यापार की उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मगा कर पढ़ें। प्रकाशित हो चुकी है।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत् ५४ सालों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में वर्ष भर की दैनिक तेजी-मन्दी, मासिक विश्लेषण, माल स्टाक करने के उचित मोके, माल खरीदने बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, दलहन, किराना बाजार, तिलहन बाजार, सरसों आदि सोना, चांदी आदि सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी आदि रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, रुई, पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाईनें) महत्वपूर्ण कट लाईनें लेख चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चैप्टर देकर प्रकाशित किया गया है। मूल्य १२५/- प्रति कापी तथा २५/- डाक व्यय अलग कुल १५०/- होगा। रुपया मनीआर्डर पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टाक आदि कर सकें।

हमारी दूसरी पुस्तक ''भविष्य भारती'' अर्घकाण्ड सम्बन्धी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी दोहों के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योग (फार्मूले) आदि दिये गये हैं। उपयोगी पुस्तक है। मूल्य ४५/- डाक व्यय १५/- अलग होगा। पुस्तकें वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर भेजना आवश्यक है। दोनों पुस्तकों के लिए १७५/- का मनीआर्डर भेजने पर डाक व्यय फ्री। १. भविष्यफल प्रकाश पुस्तक के लिए १२५/- का मनीआर्डर अग्रिम भेजने पर रु. १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जायेगी। यानि १५/- की बचत होगी। अपना पता साफ-साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नये पते पर ही भेजें।

स्पेशल चांसों के लिए सम्पर्क करें। एक वस्तु की एक वर्ष की फीस १५००/- होगी। अधिक जानकारी के लिए टेलिफोन नं. ०१२७४-२३९४७ पर सम्पर्क करें। त्रैमासिक या अर्धवार्षिक स्पेशल चांस नहीं भेजें जायेंगे। स्पेशल चासों में सिर्फ महत्वपूर्ण अच्छी तेजी-मन्दी की लाईन ही दी जायेंगी। दिन-प्रतिदिन की तेजी-मंदी चाहने वाले स्पेशल चांस नहीं मंगाएं। इसके लिए पुस्तक **भविष्य फल प्रकाश** २००३ का मंगाकर लाभ उठाना चाहिए।

पता- **श्री रामावतार गुप्ता ''व्यापार भूषण''**
राव उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड,
नई सब्जी मण्डी, रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

इसमें मारी तेजी भी आ सकती है। | सम्बन्धित यह पुस्तक गत ५४ सालों से लगातार | नई सब्जी मण्डी, रेवाड़ी-१२३४०१ (हरियाणा)

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# अथ व्यापार-विमर्श सम्वत् २०६० वि.

## सं. २०६० वि. की ग्रह स्थिति के आधार पर व्यापारिक उतार-चढ़ाव के विचार

लेखक एवं सम्पादक-चौ. पं. महेन्द्र कुमार जैन, सह संपादक पं. गजेन्द्र जैन, उत्तराधिकारी-
आयुर्वेद मार्त्तण्ड ज्योतिष रत्न पं. जैनी जीया लाल शिखर चन्द चौधरी राज वैद्य
ज्योतिष रत्न कार्यालय :- पो. फर्रुख नगर-१२२५०६, गुड़गाँव
फोन न.-कार्यालय: ०१२४-६३७५२१८, निवास: ०१२४-६३७५३७७

मेरे बाबाजी (स्व. जैनी जीयालाल जी चौधरी) ने १२७ वर्ष पूर्व असली पञ्चांग के नाम से एक पंचांग प्रकाशित किया था तभी से इस तेजी-मन्दी के विषय पर मेरे बाबाजी व पिताजी लिखते रहे हैं और समय-समय पर तेजी-मंदी पर अनेकों शास्त्र (पुस्तकें), व्यापार विज्ञान, योग रत्नाकर, वार्षिक व्यापार भविष्य फल आदि लिख कर आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कीं। अब मैं पं. महेन्द्रकुमार जैन एवं मेरा पुत्र पं. गजेन्द्र जैन अपने पूर्वजों के बताये मार्ग का अनुशरण करते हुए प्रत्येक पक्षों, महीनों में आने वाले प्रबल ग्रह, योग, तिथि, वार, नक्षत्र संयोग, संक्रांति का बैठना। चन्द्र दर्शन आदि योगों को ध्यान में रखकर जो तेजी-मन्दी के अपने विचार लिखते हैं वह वायदा और हाजिर का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिए वरदान रूप में सिद्ध होते रहे हैं।

इस लेख में हमने जो विचार लिखे हैं उसमें कई एक बार एक ही स्थान पर तेजी के साथ मन्दी भी लिखी हो तो घबराना नहीं, ऐसे समय पर व्यापार की चाल देखकर कार्य करें। क्योंकि एक दिन में एक ग्रह तेजी कारक व दूसरा ग्रह मन्दी का हो तो बाजार में तेजी की जगह मन्दी या मन्दी की जगह तेजी भी आ सकती है और जो तेजी-मन्दी हमने लिखी है वह एक दिन पहले व बाद में भी आ सकती है। कारण ग्रह का परिवर्तन दिन के शुरू व दिन के अन्त समय में होने से ऐसा होता है। अतः लेख के साथ-साथ मार्किट की चाल को भली प्रकार समझकर व्यापार करें। तो निःसन्देह आप विशेष लाभ उठाएंगे। आपका शुभचिन्तक-

पं. गजेन्द्र जैन, फर्रुखनगर

### अथ चैत्र शुक्ल पक्ष फल विचार

वि.सं.२०६० का शुभारंभ बुधवार ता. २ अप्रैल से हो रहा है। पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। पूर्णिमा बुधवार की, चन्द्रदर्शन गुरुवार का ३० मु., संक्रांति मेष सोमवारी ३० मु. धापी है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र, शनि ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पश्चिम में, गुरु मार्गी हुआ है। मास का चन्द्रदर्शन देश के दक्षिण भाग में उत्पात, यान वाहन दुर्घटना करेगा। सुदी पंचमी को रोहिणी आगे चौमास उत्तम रखेगा। शु. ११ को रविवार आगे ४ मास अन्न में तेजी बनाएगा। सं. मेष रुई, कपास, घी, खाण्ड में तेजी लाएगी। मिथुन का शनि संसार में कहीं पर युद्ध कराएगा। जिससे कई देशों की सरकारों में परिवर्तन होंगे। प्रजा को भीषण कष्ट का सामना करना पड़ेगा। पूर्णिमा में हस्त चित्रा आगे एक मास सुभिक्ष रखेगा। ईख, दूध, रस, घी में मन्दा, फल, फूल, किराने में तेजी पक्षान्त में घी तेज होगा।

शुक्ल पक्ष—**शु. १ बुध**-मेषे बुध गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, सूत, सोना मन्दा। अन्न, गेहूं, चना, जौ, शेयर, पशु तेज। **शु. २ गुरु**-चन्द्रदर्शन, बुधोदय पश्चिम, रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, चांदी, अन्न में घट-बढ़ से मन्दा। अलसी, घी, सरसों, तेल, कपड़ा, फलों में तेजी। देश के दक्षिण भाग में गड़बड़ के योग बने हैं। **शु. ३ शुक्र**-गुरु मार्गी-आगे ३, ४ दिनों में रुई में मन्दा आकर तेजी बने, चांदी, अलसी, सरसों, गेहूं, चना आदि अन्न तेज, पशुओं व सभी तम्बाकू में मन्दा करे। वक्री के फलों में उल्टा करेगा। **शु. ४ रवि**-उ.षा. पौष कहीं कम कहीं अधिक वर्षा हो, घी, गुड़, धान्य में मन्दा, रुई, राई, सरसों तेल, तिल, उड़द, मूंग में कुछ तेजी आवें। देश के कई भागों में बीमारी फैले। **शु. ५ सोम**-शनि मिथुन में, घी, कपास, नमक, तेल तिल, गोला, बादाम, रुई, सूत, कपड़ा, गुड़, शक्कर, तांबा, चांदी, लोहा, मशीन आदि सभी अनाजों में तेजी। उत्तर दिशा में दुर्भिक्ष, एक दो प्रान्त की सरकारों में परिवर्तन, आगे तीन मास पीड़ा कारक समय, राजा प्रजा को गहन कष्ट उठाना पड़ेगा। **शु. ६ मंगल**-पू.भा. शुक्र रुई पदार्थ तेज, अन्न मन्दा, प्रजा को कष्ट, कहीं-कहीं वर्षा हो। **शु. ७ बुध**-भरणी बुध कहीं-कहीं झगड़े, प्रजा में विग्रह हो, अन्न घटबढ़ से तेज। **शु. ९ शुक्र**-मकरे मंगल सोना, चांदी, रुई, कपास, अलसी, सरसों, घी, तेल, ऊन सभी रस पदार्थ, तांबा, गुड़, खाण्ड में अच्छी तेजी आएगी। **शु. १२ सोम**-मेषे सूर्य रुई, सूत, कपास, तिल पदार्थ, तिल तेल, सरसों, अरण्डी, नारियल, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर में तेजी, सभी धान्यों में मन्दा। **शु. १५ बुध**-मीने शुक्र प्रजा को सुख, बिनौला, कपास, सरसों, अरण्डी, तिल तेल, शक्कर, खाण्ड सभी अन्न मन्दा, रुई, चांदी में तेजी।

### विशेष योग

मेष राशि में सूर्य का जब होता है वास।
खाण्ड तेल तिल तेज हो रुई सूत कपास॥
मिथुन राशि शनि आव ही उत्तर में होय राड़।
पांच मास मंहिगे नद नर्मद की आड़॥
नद नर्मद की आड़ उजेणी भंग जो होसी।
चैत्र मास दुःख बहुत प्रजा धन सारा खोसी॥
तीन मास पीड़ा रहे राजा के तन जान।
काल रहे उत्तर दिशा निश्चय करे मान॥
चैत्र मास जब कभी बुधोदय हो नहीं अस्त।
अनावृष्टि दुष्काल से रहे सभी जन त्रस्त॥

### अथ वैशाख मास फल विचार

मास में ५ गुरु ५ शुक्र हैं। मावस गुरु की, चन्द्रदर्शन ४५ मु. शनि का, पूर्णिमा शुक्र की, संक्रान्ति वृष गुरु की १५ मु. भूखी बैठी है। कृष्ण पक्ष में तिथि घटकर बढ़ी है। बुध वक्री, बुधास्त पश्चिम व उदय पूर्व में हुआ है। नेपच्यून वक्री और अगस्त मुनि दिन में अस्त हुआ है। मास में ५ गुरु व ५ शुक्र शुभ हैं। कृ. ५ सोम उत्तम वर्षा कारक, कृ. १३ मंगलवारी मीठा, पान, नमक, चन्दन में तेजी करे। मावस तेजी बनावें, चन्द्रदर्शन प्रजा का धर्म भंग करे, देश में उपद्रव मचे, कृतिका का सूर्य तांत्रिक, ज्योतिषीयों को पीड़ा दे। शु. ३ रवि घी, खाण्ड, पान, सुपारी, गुड़, शक्कर, चन्दन, केशर को तेज करे। शु. ५ मंगल देश में झगड़ा, उत्पात को बढ़ावे, हस्ते मंगल पीतल, नारियल, तांबा, कांसी, सुपारी, लाल वस्तु को मंहगा करे। पूर्णिमा प्रजा को कष्ट व तेजी करे। अतः मास में रेशमी वस्त्र, जायफल, लोंग, मिर्च, पीत वर्ण की वस्तु तेज, धान्य मन्दे होकर तेज, विप्रों को पीड़ा। देश में कहीं-कहीं प्राकृतिक उत्पात, उपद्रव, किसी बड़े यान वाहन दुर्घटना से जन हानि संभव।

कृष्ण पक्ष—**कृ. ३ शनि**-उ.भा. शुक्र गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, रुई, कपास, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक, कपूर, सोना, चांदी आदि मूल पदार्थों में तेजी आयेगी। **कृ. ५ सोम**-आज दिन वर्षा ऋतु में वर्षा का उत्तम योग बना है। **कृ. १० शनि**-वक्री बुध रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तिल, तेल, अरण्डी, शेयर, बिनौला, जीरा, धनियां, सुपारी, नारियल, आदि किराना में तेजी आएगी। अन्न मन्दा रहेगा। **कृ.११ रवि**-भरणी सूर्य, बुधास्त पश्चिम-अलसी, सरसों, तिल, तेल, लाल मिर्च, गुड़, खाण्ड, घी, सोना, तांबा, पीतल, गेहूं, जौ, चना, चावल, हल्दी में तेजी। रुई, चांदी पहले तेज पीछे मन्दी बने, शेयर हैसियन, बारदाना में मन्दा, कहीं-कहीं वर्षा हो। **कृ. १२ सोम**-श्रवण भौम तिल तेल, गेहूं, जौ, चना, धातु, तांबा, पीतल, सोना, चांदी, अफीम आदि में तेजी आवे। प्रजा बीमार हो। **कृ. १३ मंगल**-खांड, पान, सुपारी, नमक, चन्दन आदि वस्तुओं में तेजी बनेगी। **कृ. १४ बुध**-रेवती शुक्र रुई, कपास, चन्दन, सूत, सण, जवाहरात, शक्कर, खाण्ड आदि में मन्दा रहेगा। **कृ. ३० गुरु**-प्रजा को कुछ सुख अनुभव हो। भावों में समता बने।

शुक्ल पक्ष—**शु. २ शनि**-चन्द्रदर्शन अलसी, सरसों, लोहा आदि धातु, सूत, कपड़ा, चांदी, सोना, तेल, रुई, कपास, उड़द, तिल, मूंग, मोंठ आदि में तेजी परदेश में बिमारी, उपद्रव आदि से जनता को कष्ट हो। लोगों का धर्म भंग हो। **शु. ३ रवि**-घी, खाण्ड, पान, सुपारी, गुड़, शक्कर, चन्दन, केशर आदि तेज होंगे। **शु. ५ मंगल**-देश में कहीं प्राकृतिक उत्पात, यान-वाहन दुर्घटना से जन हानि सम्भव है। पीतल, नारियल, काँसा, तांबा सभी धान्यों में तेजी बनेगी। **शु. १० रवि**-कृति सूर्य, अश्विनी, मेषे शुक्र-अलसी, सरसों, सूत, कपास, रुई, ऊन, अन्न, गेहूं, चना, मटर आदि में मन्दा, सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना आदि तेज। तिलहन पदार्थों में घटबढ़ से मन्दा आवे। तेज हवा चले। पशुओं में रोग फैले। आगे कार्तिक मास में सफेद वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी। **शु. १४ गुरु**-वर्षे सूर्य, अश्लेषा गुरु-रुई, सूत, कपास, चांदी में घटबढ़, ईख, तेल, घी, मोती, माणिक सभी प्रकार का अन्न तेज, समय दुर्भिक्ष का होने से प्रजा को कष्ट, वर्षा कमी रहे। **शु. १२ भौम**-पीतल, नारियल, तांबा, कांसी, सुपारी, सभी लाल पदार्थों में तेजी आएगी। **शु. १५ शुक्र**-बुधोदय पूर्व, वक्री नेपच्यून-आज के दिन अगर वर्षा हो तो आगे छः मास तक सभी धान्य तेज रहेगा। अन्न, गेहूं, जौ, चना, अलसी, अरण्डी, तिल,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



तेल, सरसों, लाल मिर्च आदि में तेजी, सोना मन्दा रहेगा। रुई २५ दिन तेज। चांदी में घटबढ़ से तेजी। आगे प्रजा को कहीं विशेष कष्ट का समाना करना होगा।

**विशेष योगः-**

**श्रवण नक्षत्र पर जब आवे कोई ग्रह क्रूर।**
**तभी अन्न मँहगा बिकें गेहूं तेज जरूर॥**
**आगे सूरज बीच बुध पीछे भृगु की चाल।**
**गल्ला, रुई, उड़द, तिल तेज तिलहन माल॥**
**बैशाखी कारी तेरस दिन जब जब होव भौम।**
**पीपल मीठापान रस चन्दन अकरे रोम॥**
**शुक्ल पक्ष बैशाख सर मंगलवार का संग।**
**मंहिगे पीपल नारियल वस्त्र सुपारी रंग॥**

## अथ ज्येष्ठ मास फल विचार

मास में ५ शनि हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि घट कर वृद्धि हुई है। शुक्ल में तिथि ह्रास हुआ है। मावस व पूर्णिमा शनि की, चन्द्रदर्शन रवि का ३० मु. है। मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध मार्गी, शनि अस्त और हर्षल वक्री हुआ है। सूर्य ग्रहण भी हैं। मास में ५ शनि नेष्ट फलकारक है। राजा प्रजा दोनों को कष्ट मिलेगा। वर्षा कम तेज वायु चले। देश में विस्फोट आदि की घटना से जनहानि हो। काली वस्तु तेज रहे। ११ सोम को रेवती नक्षत्र प्रजा को महान कष्ट को देने वाला योग बना रहा है। १२ मंगल को रेवती नेष्टफल व कुछ वर्षा करे। चन्द्रदर्शन देश के पूर्वी भाग में उपद्रव कराएगा. सुदी पड़वा रविवार-मृगशिर नक्षत्र उत्तम वायु के साथ वर्षा करे। २ सोम को आर्द्रा दक्षिण भाग में उत्पात पैदा करेगा। मावस को सूर्य शनि का मेल देश में अकाल विग्रह युद्ध आदि उत्पादों से जन हानि का कारण बनाए हुए हैं। अतः मास में काली वस्तु तेज धान्यादि भावों में महर्घ एवं समर्घता हो। गुड़, शक्कर के भाव भी मन्दे आवे। किरात व यवन जाति को पीड़ा हो। देश में जहाँ-तहाँ उपद्रवों का बोलबाला रहें। देश को प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ेगा। हैजे का प्रकोप भी प्रजा को सहना पड़े।

**कृष्ण पक्ष—कृ. ५ मंगल**-रुई में घट-बढ़ होकर तेज। सण आदि १५ दिन में तेज, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तेल, तिल, कपूर, अगर, चन्दन, गन्ध पदार्थ, नारियल, सुपारी आदि में मन्दा, अन्न में तेजी बनेगी। **कृ. ६ बुध**-धनिष्ठा मंगल-गुड़, खाण्ड सभी रस पदार्थों में मन्दा, तांबा, पीतल, जस्त, सोना, चांदी, गेहूं आदि समस्त धान्यों में तेजी बनेगी। **कृ. ८ शुक्र**-भरणी शुक्र-तिल, तेल, सरसों, गेहूं, जौ, चना आदि में घटबढ़ होकर अन्त में मन्दी और सोना, चांदी में अच्छी मन्दी आवे। दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आम नागरिकों का जीवन दुर्लभ करेंगे। **कृ. १० रवि**-रोहिणी सूर्य-चांदी में मन्दा, अलसी, तेल, तिल, सरसों, सुपारी, खाण्ड, गुड़, घी, गेहूं, चना, सूत, सण आदि में तेजी। रुई पदार्थों में अच्छी घटबढ़ होकर अन्त में मन्दी आवे। जलचर, पशु और गणमान्य व्यक्तियों को कष्ट का समना करना पड़ेगा। **कृ. १२ मंगल**-आज रेवती नक्षत्र है। अतः जहां-तहां वर्षा होगी, पर प्रजा को कष्ट भी मिलेगा। **कृ. ३० शनि**-सूर्य ग्रहण-श्रेष्ठ व गणमान्यों को कष्ट, अन्न की पैदावार कम, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों तेज। अन्न में घटबढ़ होकर मन्दा। मन्दे में खरीदें। अच्छा लाभ मिले। सोरठ, सिन्धु में उपद्रव से जन हानि। काले, नीले पदार्थ, तेल तिल, मिर्च, तम्बाकू, सूत, कपास, अन्न, घी, गोला, खास, पाट, बारदाना और माल किराना में तेजी बनेगी।

**शुक्ल पक्ष—शु. १ रवि**-चन्द्रदर्शन देश के पूर्वी भाग में झगड़े और उत्पात से जन हानि हो। अन्न, चांदी, सोना, सरसों, सण, सूत, कपास, रुई, गेहूं, चना आदि तेज। रुई में घटबढ़ होकर मन्दो बने। **शु. २ सोम**-कृतिका शुक्र-हींग, जीरा, सुपारी, सूत, कपड़ा, चावल, अन्न, सरसों, तिल, तेल, कपड़ा आदि में मन्दा। वर्षा हो तो आगे वर्षा की कमी रहेगी। **शु. ३ मंगल**-कुम्भ मंगल-सभी प्रकार का अन्न, चित्र-विचित्र वस्तु, रस, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में तेजी, रुई, चांदी में घटबढ़ हो। **शु. ५ गुरु**-कृति. बुध, वृषे शुक्र-पैदावार कम, वर्षा कहीं हो कहीं न हो। शेयर, चांदी में मन्दा, रुई में घटबढ़ होकर तेज।अन्न गेहूं, चना, मटर आदि में तेजी, देश में जहां-तहां झगड़ हो। प्रजा में चिन्ता बने। **शु. ६ शुक्र**-शनि अस्त, रुई, सोना मन्दा, अन्न तेज, व्यापारियों को कष्ट। व्यापार अच्छा। उतार-चढ़ाव बनेगा। मौका देखकर माल खरीदें। आगे अच्छा लाभ मिले। अन्न, सरसों, तेलो में मन्दा आएगा। मन्दे में खरीदो आगे २-३ मास में अच्छा में अच्छा लाभ मिलेगा। **शु. १४ शुक्र**-रोहिणी शुक्र-सोना, तांबा, जस्ता, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मन्दा, देश में जहां-तहां उपद्रव झगड़े होंगे। **शु. १५ शनि**-आगे समय सुभिक्षकारी। १५ दिन अच्छी मन्दी बनेगी फिर तेजी आएगी। आज वर्षा हो तो निःसंकोच अन्न का संग्रह करो। आगे उत्तम लाभ मिलेगा।

**विशेष योगः-**

**मावस को शशि सूर दोऊ करे रोहिणी वास।**
**अकाल विग्रह व्याधि पीड़ित प्रजा विनाश॥**
**चार ग्रहों का बाना एक राशि पर योग।**
**वर्षा अथवा युद्ध से दुःखी रहें सब लोग॥**
**दुतिया तृतीया ज्येष्ठ सुदी आवे आर्द्रा रिक्ष।**
**वर्षे तो कर्षे नमी दर्से दुःख दुर्भिक्ष॥**

## अथ आषाढ़ मास फल विचार

मास में ५ रवि हैं। मावस-पूर्णिमा और संक्रांति मिथुन रविवार की हैं। सं. ३० मु. भूखी सूती हुई खप्पर योग बना रही है। चन्द्रदर्शन ३० मु. मंगलवार का है। कृष्ण में तिथि घटकर बढ़ी है और शुक्ल पक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। सूर्य, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पूर्व में और शनि उदय हुआ है। मास में पांच रवि रोगों को देने वाले हैं। वर्षा कम और रसकस तेज होगा। कृ. ५ बुध से तेज वायु का योग बना है। आर्द्रा रवि प्रवेश उत्तम नहीं आगे वर्षा कम होगी। चन्द्रदर्शन देश में कोई बड़ी दुर्घटना कराएगा। प्रजा बिमार रहे, अन्न तेज हो। शु. ५ शुक्र शुभ रहे। **शु. ११ गुरु**-मन्दी लाएगी। **कृ. १४ शनि**-रोहिणी देश में जहां-तहां करफ्यू और कंट्रोल लगवाएगा। बुध, गुरु का मेल वर्षा की खैंच करेगा। शनि उदय प्रजा को पीड़ा और धान्य मंहिगा करेगा। कपास, तिल, सूत, कृष्ण में मंहिगे, शुक्ल में मन्दे और रस पदार्थ तेज होंगे। धान्य तेज होकर मन्दा हो। कौशल कलिंग में उपद्रव, आंधी के साथ जहाँ-तहाँ वर्षा तूफान से जन हानि, ग्रह पात व राजनीति में परिवर्तन के योग बने हैं।

**कृष्ण पक्ष—कृ. १ रवि**-सूर्य मिथुने, रोहिणी, बुध-सोना, चांदी में साधारण तेजी। रुई, कपास, गेहूं, जौ आदि अन्न वारदाना, सरसों, लोहा, कन्दमूल, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी। तिल, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, सोना-चांदी में तेजी आकर मन्दी रहे। ऊनी वस्त्रों में मन्दा आवे। गर्मी का जोर रहें। **कृ. ५ गुरु**-रुई में मन्दी आकर तेज, अन्न मन्दा, खेती उत्तम, सोना-चांदी में घटबढ़ हो। देश में जहां-तहां झगड़े, टिड्डी से नुकसान, तेज आंधियां आएंगी। **कृ. ८ रवि**-आर्द्रा सूर्य-अलसी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, रुई, कपास, सूत, अरण्डी, चावल, माणिक, मोती आदि में तेजी आकर मन्दा बनेगा। अन्न, सोने में घटबढ़। विद्वानों व गणमान्य लोगों को कष्ट झेलना पड़ेगा। **कृ. ९ बुध**-मृग., बुध-गेहूं, जौ, चना आदि समस्त अनाजों में मन्दा, रुई तेज, सरसों, अलसी, बिनौला, तेलवाना में घटबढ़, मन्दा रहेगा। **कृ. १० मंगल**-बुधास्त पूर्व, मृग. शुक्र-रुई, चांदी में घटबढ़ होकर मन्दी रहें। गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, जुवार, चना, घी में मन्दे। गुड़, शक्कर, चावल, अलसी में तेजी [illegible] मन्दी आवे। पशुओं को पीड़ा, देश में बिमारी फैले और झगड़े हों। **कृ. १२ गुरु**-मिथुने बुध-रुई, सोना, चांदी, सरसों में मन्दी आकर घटबढ़ चले। तेल, तिल, अरण्डी में साधारण तेजी बनेगी। तेज हवा चले। अगर आज हवा हो तो अशुभ जानो। अर्थात् आगे वर्षा कम होगी। **कृ. १३ शुक्र**-घी, मूंग, मोती, माणिक, अन्न आदि के भावों में परिवर्तन होंगे। प्रजा को कुछ सुख मिले। **कृ. ३० रवि**-मिथुने शुक्र-रुई, वारदाना, सींगदाना, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों, अरण्डी, तिल तेल में मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी चले और जौ, गेहूं, चना में कुछ तेजी आकर मन्दी रहेगी।

**शुक्ल पक्ष—शु. २ मंगल**-चन्द्रदर्शन-प्रजा बिमार रहे। अन्न में मन्दा, अन्न, रुई, सोना, चांदी में घटबढ़, रुई में मन्दी, कहीं न कहीं देश में गड़बड़ अवश्य होगी। **शु. ५ शुक्र**-सभी वस्तुओं में मन्दा और प्रजा को सुख मिले। **शु. ६ शनि**-पुन. बुध, आर्द्रा शुक्र तेज हवा चले। देश में सुभिक्ष फैले। रुई, सूत, कपड़ा, सण, जूट, चांदी में मन्दी, अन्न तेज होकर मन्दा बने। बच्चों को पीड़ा झेलनी पड़ेगी। अर्थात् बच्चों में बिमारी फैले। **शु. ७ रवि**-पुनर्वसु सूर्य-सोना, चांदी, कपास, बिनौला, तिल, जुवार, गुवार, मोंठ, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, केसर, सुगन्धित वस्तु तेज। जहाँ तहां प्रजा को कष्ट भोगना पड़ेगा। **शु. ११ गुरु**-कर्के बुध-रुई, कपड़ों में मन्दा, चांदी में घटबढ़, अन्न गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर आदि में मन्दा, सरसों, मूंगफली, तेल, तिल, गुड़, रसपदार्थों में तेजी बनेगी। प्रजा को कष्ट मिले। **शु. १२ शुक्र**-शनि उदय-रुई, शेयर में मन्दा, सभी अन्न तेज होकर मन्दा हो, अलसी, सरसों, अरण्डी, बिनौला, मूंगफली मन्दी। लोहा, जस्ता, सीसा, रांगा, काले पदार्थ, गुड़ आदि में तेजी। प्रजा में सुभिक्ष हों। **शु. १३ शनि**-पुष्य बुध-अन्न, सोना, चांदी, कपड़ा, सूत, मोती, मूंगा, धातु आदि में मन्दा। रुई में घटबढ़ होकर मन्दी। जनता में भय फैले। **शु. १५ रविवार**-आज पूर्णिमा है। इस का फल ९ मास बाद फाल्गुन में अच्छी तगड़ी तेजी कई वस्तुओं में आएगी। होशियारी से कार्य करना।

**विशेष योग**

**सूर संक्रामण समय से सम सप्तम राकेश।**
**छः मास तक अन्न में तेजी रहे विशेष॥**
**बुध के घर में जब कभी शनि उदय हो।**
**पीड़ित प्रजा धान्य मंहगा पशुओं का क्षय हो॥**
**जब जब ही बुध गुरु मिल बैठे एक गेह।**
**तब तब ही संसार में बरसे नहीं है मेह॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



चार ग्रहों का बने एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से दुखी रहें सब लोग॥
आषाढ़ कृष्ण अष्टमी रविवार का योग।
आर्द्रा रवि हुआ फूटे सब के भोग॥

### अथ श्रावण मास फल विचार

मास में ५ सोम ५ मंगलवार हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि और शुक्ल पक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। संक्रांति कर्क बुध की घापी १५ मु. बैठी है। चन्द्रदर्शन १५ मु. बुधवार का है। पूर्णिमा व अमावस मंगलवार की हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधोदय पश्चिम में, शुक्रास्त पूर्व और गुरु अस्त और साथ ही मंगल वक्री हुआ है। मास में पांच सोम शुभ पर पांच मंगल देश के राजाओं के लिए अमंगलकारी हैं। मास शुक्रास्त बुधोदय तेजी लाएगा। कृ. ८ को अश्विनी में तेजी कारक है। सुदी में तिथि क्षय आगे कार्तिक तक किसी गणमान्य पुरुष का वियोग कराएगी। या सरकार में परिवर्तन होगा। चन्द्रदर्शन भी शुभ नहीं। गुरु अस्त, धान्य, रसकस, घी को तेज करेगा। मंगल वक्री सभी किराना में तेजी करेगा। श्रावणी को श्रवण न होना भी शुभ नहीं। सूर्य-शुक्र की युति तेजी, सूर्य-गुरु-शुक्र की युति वर्षा करे। घात योग धूल उड़ावेगी। किसी क्षेत्र के बंटवारे को लेकर युद्ध हो सकता है। इस मास के ग्रहों का प्रभाव आगे कार्तिक मास तक होगा।

**कृष्ण पक्ष—कृ. १ सोम**-घी, मूंग, मोती, माणिक सभी अन्न में मन्दा। प्रजा में सुख फैले। जहां-तहां वर्षा हो। **कृ. ३ बुध**-कर्के सूर्य, बुधोदय पश्चिम, पुन. शुक्र-रुई, चांदी, कपास में १५ दिन मन्दा रहकर फिर अच्छी तेजी बनेगी। गुड़, सरसों, खाण्ड, तेल तिल, अलसी, मूंगफली, अरण्डी में अचानक तेजी आयेगी। दक्षिण में झगड़े बनेंगे। **कृ. ५ शुक्र**-अश्लेषा बुध, अरण्डी, मूंगफली, अलसी, तिल, तेल, खाण्ड, सरसों, गुड़ आदि में तेजी बनेगी। **कृ. ७ रवि**-पुष्य में सूर्य, साधु त्यागी व्रतियों को कष्ट, केसर, कस्तूरी, कपूर आदि गंध पदार्थ तेज होंगे। **कृ. १० गुरु**-कर्के शुक्र-घी, तेल, गोला, गुड़, शक्कर और सभी रसपदार्थ सूत, सण, बारदाना में तेजी आएगी। रुई मन्दी होकर तेज, सभी अन्न में मन्दी आएगी। **कृ. १२ शनि**-पुष्य शुक्र-शुक्रास्त पूर्व, मघा सिंह बुध-सोना, खाण्ड, रुई, कपूर, सूत, कपड़ा, देवदारू में तेजी। ऊन, जौ, गेहूं, चना, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा आकर आगे १५ दिन में तेजी आएगी। जहां-तहां झगड़े हों, चौपाए पशु कष्ट पावें। अन्न तेज होकर मन्दा बने। गुजरात मालवा में भय बने। कहीं-कहीं बिमारी फैले। **कृ. ३० मंगल**-वक्री मंगल-रस पदार्थ अलसी, सरसों, राई, घी, तेल, काले पदार्थ, रुई, गोला, गुड़, सोना, अन्नादि में तेजी बनेगी। कुछ किराना माल विशेष तेज होगा।

**शुक्ल पक्ष—शु. १ बुध**-चन्द्रदर्शन, मघा सिंह, गुरु-दूध, फल की पैदावार उत्तम। सोना, चांदी, लोहा, रुई में मन्दा। इस मन्दे में माल खरीदें आगे ४ मास में अच्छा लाभ मिलेगा। चावल, गेहूं, तेल, घी आदि में तेजी। गणमान्य व्यक्तियों के मान में वृद्धि, परदेश में जहां-तहां झगड़ा-उत्पात आदि घटनाएं बढ़ेंगी। **शु. ५ रवि**-अश्लेषा सूर्य-अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी, रुई, बिनौला, चावल, गेहूं, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों में तेजी। रसकस में मन्दा बनेगा। देश के उत्तर पश्चिम में आपसी तनाव बढ़ने से झगड़े होंगे। **शु. ७ सोम**-पू.फा. बुध-सभी अन्न और बहुत सी वस्तुओं में मन्दी आएगी। देश में जहां-तहां युद्ध, विस्फोट आदि की घटनाओं से जनहानि होगी। प्रजा में भय बढ़ेगा। **शु. ९ बुध**-अश्लेषा, शुक्र-जहां-तहां वर्षा होगी। रुई में साधारण मन्दी, अन्न में घटाबढ़ी रहेगी। **शु. १२ शनि**-गुरु अस्त-रुई, सूत, कपास में मन्दा, चांदी, सभी अन्न व तेलवाना में तेजी आएगी। **शु. १५ मंगल**-आज रक्षाबन्धन है। श्रवण नक्षत्र का अभाव है। अतः देश में दुर्भिक्ष पैदा हो। प्रजा कष्टमय जीवन व्यतीत करे। और बहुत सी वस्तुओं में तेजी बनेगी।

### विशेष योग

सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत जान।
मृगशिर में दुर्भिक्ष का सब लक्षण अनुमान॥
श्रावण मास में शतभिषा नक्षत्र माहि।
सूर्य संक्रांति हुई मंहगा अन्न बिकाहिं॥
सूर्यदेव भृगु नाथ का एक राशि पर साथ।
पकड़ा देती है फसल मंहगाई को हाथ॥
एक राशि पर साथ हो सूर्य गुरु भृगु तीन।
वर्षा होती खूब पर खेती होती छीन॥
कुम्भ राशि में भौम का जब हो उसमें वक्र।
लोकदुखी और किराणे में चले तेजी का चक्र॥
कृष्ण पक्ष तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाये।
सभी वस्तु तेज हो सस्ता पन हट जाय॥
बुध गुरु भृगु सूरज जब हो इक ठोर।
घात योग के कारणे धूल उड़े चहुँ ओर॥
शुक्ल पक्ष सप्तमी नहीं स्वाती नक्षत्र।
पूनम को श्रवण नहीं दुःख दुर्भिक्ष सर्वत्र॥

### अथ भाद्रपद मास फल विचार

मास में पांच बुध हैं। शुक्ल पक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। मावस, पूर्णिमा बुध की हैं। चन्द्रदर्शन शुक्र का ४५ मु. है। संक्रांति सिंह रविवारी धापी ३० मु. सूती है। सूर्य, बुध, शुक्र, राहु, केतु ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री, प्लूटो मार्गी, अगस्त मुनि उदय, बृहस्पति उदय, बुधास्त पश्चिम में हुआ है। मास में पांच बुध रसायन पदार्थ, उड़द में तेजी लाएंगे। बदी एकम् अन्न तेज, बदी चौथ अति तेजी, चन्द्रदर्शन तेलबाना को तेज करेगा। सुदी ५ को स्वाती शुभ पर तिथि क्षय नेष्ट है। पूर्णिमा में शतभिषा तेजी कारक प्रजा को कष्ट देगा। मास में बना घात योग धूल उड़ाएगा। बुधवारी मावस घी, तेल आदि में अच्छी तेजी लाएगी। वर्षा कहीं अच्छी होगी कहीं न भी होगी।

**कृष्ण पक्ष—कृ. १ बुध**-सभी प्रकार के अनाजों में अच्छी तेजी आएगी और यह तेजी लम्बी चलेगी। **कृ. २ गुरु**-सोना, चांदी, कपास, सूत, सण, बिनौला में मन्दा रहेगा। **कृ. ४ शनि**-उ.फा. बुध-देश में भ्रष्टाचार में बढ़ोत्तरी, प्रजा में हीन भावना पनपेगी। रुई, चांदी में घटबढ़ होकर मन्दा। मूंग, मसूर, उड़द, तेल, घी, सभी अन्न में अच्छी तेजी आएगी। **कृ. ५ रवि**-मघा सिंह-सूर्य, मघा सिंह-भृगु, यहाँ बहुत सी वस्तुओं में तेजी बढ़ेगी। सोना, लाल वस्तु, तिल, तेल, मूंगफली, सरसों, तांबा, पीतल, चांदी, जौ, गेहूं, चना, मटर, बाजरा, गुवार, पशु, केसर, कस्तुरी, सभी रसों में तेजी आएगी। जहां-तहां तेज हवा के साथ वर्षा होगी। **कृ. ७ मंगल**-चांदी, रुई, गेहूं, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली आदि में तेजी और पशुओं में मन्दा बनेगा। **कृ. ९ गुरु**-कन्या बुध-सोना, खाण्ड, गुड़, शक्कर, गेहं, जौ, चना, तांबा, धातु, पीतल आदि तेज। चांदी, गुड़, शक्कर, सरसों में मन्दा। बगैर वर्षा के तेज हवा चले। **कृ. १० शुक्र**-कपास, सूत, चना आदि में मामूली सुधार होगा। **कृ. १२ रवि**-सोना, चांदी, रुई में कुछ मन्दा आएगा। **कृ. १४ मंगल**-सोना, चांदी, रुई, चारा आदि तेज होंगे। **कृ. ३० बुध**-सभी अन्न सभी तेलबाना में तेजी आवे। देश में दुर्भिक्ष फैले। प्रजा में भय बने।

**शुक्ल पक्ष—शु. १ बुध**-वक्री बुध, पू.फा. शुक्र-घी, गुवार, जुवार, जौ, चना, मूंग, उड़द में मन्दा। रुई तेज होकर मन्दी। गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तेल, अरण्डी, शेयर बिनौले में अच्छी तेजी आएगी। **शु. २ शुक्र**-चन्द्रदर्शन, मार्गी-प्लूटो, अन्न, गेहूं, चना, जौ, चावल, सरसों तेल, तिल, ऊन आदि में मन्दा। सोना, गुड़, शक्कर, तेल, पदार्थ तेज होंगे। रुई, चांदी में घटबढ़ चलेगी। **शु. ३ शनि**-अगस्त उदय-देश में दुर्भिक्ष को कष्ट, अगर आज वर्षा हो तो देश व प्रजा का संकट दूर होगा। **शु. ५ सोम**-पू.फा. सूर्य-रुई, कपास, घी, गुड़, चावल, अलसी, चांदी, गेहूं, खाण्ड, सरसों में तेजी आकर मन्दी बनेगी। सोना मन्दा रहेगा। **शु. ७ बुध**-गुरु उदय, रुई में अच्छी घटबढ़ से तेज होकर मन्दी। चांदी, अन्न में घटबढ़। सुगन्धित पदार्थों के लेने से आगे लाभ मिलेगा। प्रजा में कलह की प्रवृत्ति बढ़ेगी। **शु. ९ गुरु**-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी में पहले तेजी बनकर मन्दा आएगा। हैसियन बारदाना मन्दा। रुई आगे विशेष लाभ देगी। **शु. १० शुक्र**-वक्री बुध सिंह-सोना, खाण्ड, रुई, कपूर, कपड़ा, देवदारु में तेजी, अन्न, मीठे में मन्दा आकर १५ दिन पीछे तेजी बनेगी। **शु. १३ सोम**-पू.फा. बुध, उ.फा. शुक्र-चांदी, सोना में घटबढ़, अन्न, रुई में सुधार, देश में कहीं न कहीं झगड़े बढ़ेंगे। प्रजा कष्टमय रहे। **शु. १५ बुध**-कन्या शुक्र-फसलों में हानि हो, सभी अन्न, सोना, चावल, गुड़, खाण्ड, ऊनी वस्त्र तेज। चांदी में घटबढ़ होकर तेज। नोट-मास नक्षत्र अभाव में अच्छी तेजी बनेगी।

### विशेष योग

भादों लागत चौथ को जब होवे शनिवार।
देश नाश दुर्भिक्ष दुःख भूख अरू भ्रष्टाचार॥
बुधवारी मावस दुःख उपजे थोड़ा अन्न।
मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै जब अन्न॥
ईख शर्करा मिष्ट रस गुड़ हल्दी तेल।
सोना तांबा तेज हो सूर्य सिंह के मेल॥
बुध गुरु भृगु सूरज जब हो इकठोर।
धात योग के कारणे धूल उड़े चहुँ ओर॥

### अथ आश्विन मास फल विचारः

मास में पाँच गुरु पांच शुक्र हैं। मावस, पूर्णिमा शुक्रवारी, चन्द्रदर्शन शनि का ३० मु. है। संक्रांति कन्या बुधवारी धापी ४५ मु. बैठी है। कृष्णपक्ष में तिथि वृद्धि, शुक्ल पक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मंगल मार्गी, बुधोदय पूर्व में, शुक्रोदय पश्चिम में और बुधास्त पूर्व में हुआ है। मास में पांच गुरु उत्तम, पांच शुक्र साधारण फल देंगे। कृ. ६ बुधवारी होने से घी संग्रह करना चाहिए। कृ. ३ शनिवारी देश में विस्फोट या अग्निकाण्ड कराएगी। अन्न में मन्दा आएगा। कृ. ११ सोम से पशु तेज होंगे। शु. १ बुध काली वस्तु व घी में नफा दिलाएगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



चन्द्रदर्शन नैऋत्य में उपद्रव, झगड़े करेगा। रुई तेज होगी। शुक्रोदय देश में अशांति फैलाएगा। सिन्ध में झगड़ा जहा-तहां दुर्भिक्ष तथा राज विग्रह होगा। पूर्णिमा में रेवती भी आगे दुर्भिक्षकारी और तेजी बनाएगा। गाय भैंस के मूल्यों में वृद्धि, रसकस घी तेज। कपास में अति तेजी। कुरुक्षेत्र के जन, चित्रकार, पक्षियों को कष्ट होगा।

**कृष्ण पक्ष—कृ. १ गुरु**-सोना-चांदी, रुई, कपास, सूत, सण, बिनौला आदि में मन्दा। **कृ. ३ शनि**-उ.फा. सूर्य-रुई पदार्थ मन्दे। कपास, अरण्डी, चावल, उड़द, मूंग, सोना, चांदी, लोहा, मूंज, बांस, नील, तेल, तिल आदि में तेजी। देश में जहां-तहां अग्निकाण्ड, विस्फोट आदि की घटना होगी तथा प्रजा में भय फैलेगा। **कृ. ४ रवि**-यहां अन्न मन्दा मिले तो लेना आगे अवश्य लाभ मिलेगा। **कृ. ५ मंगल**-चांदी, रुई, गेहूं, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली आदि मं तेजी। पशु मन्दे होंगे। **कृ. ६ बुध**-कन्या सूर्य, बुधोदय पूर्व, रुई तेज, चांदी में घटबढ़ होकर तेजी। सोना मन्दा, गेहूं, जौ, चना, अरण्डी, अलसी, तिल, तेल, सरसों, लाल मिर्च, मजीठ, माल किराना। नारियल, सुपारी आदि घी में मन्दा माल खरीदो। अगले मास लाभ मिलेगा। **कृ. ७ गुरु**-हस्ते शुक्र-रुई, चांदी, मन्दी अन्न, खाण्ड, शक्कर, सोना, आदि में घटबढ़ चले। प्रजा बिमार हो। **कृ. ८ शुक्र**-वक्री धनिष्ठा मंगल, धातु, गेहूं तेज, रसकस में मन्दा आएगा। **कृ. ९ शनि**-मार्गी बुध-रुई पदार्थ घटबढ़ से तेज होंगे। सण, लकड़ी १५ दिन तेज। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तिल तेल, कपूर, चन्दन आदि मन्दे होंगे। **कृ. १० रवि**-सोना, चांदी, रुई आदि में मन्दा। **कृ. १२ मंगल**-सोना, चांदी, रुई आदि में तेजी। **कृ. १४ गुरु**-सोना, चांदी, रुई, राई, मजीठ, जीरा, धनियां, माल किराना तेज। **कृ. ३० शुक्र**-आज उ.फा. नक्षत्र है। अतः प्रजा में नाना प्रकार से भय फैलेगा।

**शुक्ल पक्ष—शु. २ शनि**-चन्द्रदर्शन, मंगल मार्गी, हस्ते सूर्य, अन्न, घी में मन्दा। आगे कार्तिक में लाभ अवश्य मिलेगा। रुई, सूत, कपास, अलसी, सरसों, लोहा, धातु, सूत, कपड़ा, चांदी, सोना, चावल, गुड़, शक्कर, हींग, हल्दी आदि मसालों में तेजी बनेगी। **शु. ४ सोम**-चित्रा शुक्र-देश में किन्हीं हिस्सों में झगड़े बढ़ने से प्रजा दुःखी होगी। **शु. ५ मंगल**-रुई, सूत, कपास में घटबढ़, गुड़, खाण्ड, जौ, गेहूं, चना में मन्दा पर पैदावार उत्तम हो। **शु. ६ बुध**-उ.फा. बुध-रुई, चांदी में घटबढ़ होकर मन्दी, सभी प्रकार का अन्न मन्दा रहेगा। **शु. ८ शुक्र**-कन्या में बुध-सोना, खाण्ड, शक्कर, गुड़, गेहूं, जौ, चना, तांबा, पीतल, चांदी आदि धातु, सरसों में मन्दा आवे तथा तेज हवा चले। **शु. ९ शनि**-तुला शुक्र, शुक्रोदय पश्चिम-रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, अन्न, पशु, धातु, घी, दूध मन्दा। देश में कई स्थानों पर विग्रह फैले। अशान्ति बने। सिन्ध में झगड़े हों। जहां-तहाँ दुर्भिक्ष फैलेगा। **शु. १० रवि**-शतभिषा मंगल-रुई, सूत, कपास मन्दी होकर तेज हो। अन्न मन्दा। सोना, चांदी में घटबढ़, खेती उत्तम हो। **शु. १३ बुध**-बुधास्त पूर्व-रुई, चांदी में घटाबढ़ी होकर मन्दा। गेहूं, अलसी, माल किराना तेज होगा। देश में चोरियां अधिक होने से आम प्रजा में असन्तोष बढ़ेगा। **शु. १५ शुक्र**-चित्रा सूर्य, स्वाति शुक्र-सूत, कपड़ा, सोना, गेहूं, जौ, चना, रुई, कपास, गुड़, शक्कर तेज होकर मन्दे। नारियल, रसकस मन्दे। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों में तेजी आएगी। आज रेवती है। अतः आगे १५ दिन तेजी के रहेंगे तथा जहां-तहां दुर्भिक्ष भी होगा।

### विशेष योग

**बदी तीज आश्विन में हुआ संग शनिवार।**
**अग्निकाण्ड भयभीत जग मंहगा चले बाजार॥**
**कृष्ण पक्ष तिथि बढ़े शुक्ल पक्ष घट जाय।**
**सभी वस्तु तेज हो सस्ता पन हट जाय॥**
**शुक्रोदय धूल द्वार में वृष्टि जल नहीं होवे।**
**चले पवन अति जोर की वृष्टि सारी खोवे॥**
**किंचित छींटे पड़त हैं सुनो सभी नर-नार।**
**धूल द्वार फल शुक्रोदय चातुर करो विचार॥**

### अथ कार्तिक मास फल विचार

मास में पांच शनि पांच रवि हैं। मावस शनिवारी, चन्द्रदर्शन सोम का ४५ मु. है। पूर्णिमा रविवारी, संक्रांति तुला सुक्रवारी भूखी ४५ मु. बैठी है। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है और शुक्ल पक्ष में तिथि घटकर बढ़ी है। सूर्य, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। शनि वक्री, हर्षल मार्गी और पूर्णिमा को चन्द्रग्रहण भी हुआ है। मास में पांच शनि नेष्ट, पांच रवि निकृष्ट रोग, अग्नि भय, झगड़ों को बढ़ाने वाले हैं। पूर्णिमा में कृत्तिका का लोप, घोर दुर्भिक्ष, तेजी व मनुष्यों में नेत्र पीड़ा देगा। चन्द्रदर्शन सभी तेलवाना के बाजारों में तेजी लाएगा। शु. ४ का क्षय घी, मूंग के भावों में वृद्धि करेगी। चन्द्रग्रहण समुद्री तूफान मचाएगा। रुई, कपास तेज। सुदी एकम् रविवारी अन्न, रुई को बढ़ाएगी। आर्द्रा [illegible] बना है। अतः धान्यादि, तेल, घी, रसपदार्थ तेज, रेशम, मूंग, मोती, मजीठ, सफेद वस्त्रों में मन्दा, मासान्त में सोना, चांदी, गाय, हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी के भावों में वृद्धि होगी।

**कृष्ण पक्ष—कृ. ३ सोम**-चांदी, रुई, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली आदि में तेजी बने। **कृ. ५ बुध**-कपास, सूत, गेहूं, चना तेज रहेगा। **कृ. ६ गुरु**-चित्रा बुध-रुई में घटबढ़ होकर तेजी बने। अन्न में तेजी आएगी। विद्वान् व गणमान्य व्यक्तियों को कष्ट उठाना पड़ेगा। **कृ.७ शुक्र**-तुला सूर्य-सोना, तांबा, अलसी, आंवला, गेहूं, सरसों, नारियल, सुपारी आदि में तेजी बनेगी। रुई, चांदी में मन्दा। पशु रोगी होंगे। **कृ. ८ शनि**-सोना, चांदी, रुई, सूत, कपास में मामूली मन्दा आएगा। **कृ. ९ सोम**-तुला बुध, विशाखा शुक्र-गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग आदि में भारी घटबढ़ चले। गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि, अफीम, बारदाना, गोला आदि में तेजी। चांदी, सरसों, अलसी, मूंगफली, बिनौला में मन्दा आएगा। व्यापारियों में चिन्ता बने। भारी उथल-पुथल का योग है। प्रजा को भारी कष्ट का सामना करना पड़े। कई स्थानों पर झगड़े, विग्रह आदि हों। **कृ. १२ बुध**-सोना, चांदी, रुई, राई, सरसों, जीरा, धनियां आदि माल किराना तेज होगा। **कृ. १४ शुक्र**-स्वाति सूर्य, स्वाति बुध-रुई, हल्दी, सुपारी, सरसों, चपड़ा, गुगल, बिनौला, मिर्च, मसाला, राई, हींग आदि बहुत सी वस्तुओं में घटबढ़ चले। विद्वानों व गणमान्य व्यक्तियों को कष्ट भोगना पड़ेगा। **कृ. ३० शनि**-शनि वक्री-रुई तेज होकर मन्दी हो। कपड़ा, सूत मन्दा रहेगा। सोना, चांदी, मानक, मोती, लौंग, सुपारी, अन्न सभी, कलई, शीशा, घी, गुल तेल, खाण्ड आदि बहुत से पदार्थ तेज होंगे। प्रजा को भारी चिन्ता का सामना करना पड़ेगा। ३-४ दिनों में जो वस्तु मन्दी या तेज हुई हैं वह शनि मार्गी के समय विपरीत होगी।

**शुक्ल पक्ष—शु. १ रवि**-चन्द्रदर्शन-अन्न, सोना, चांदी, सरसों, रुई, सूत, कपास, गुड़, खाण्ड, उड़द, तिल, तेल, सरसों में अच्छी तेजी बनेगी। **शु. ३ मंगल**-वृश्चिक शुक्र-ज्वार, बाजरा, गेहूं, जौ, चना आदि अन्न, चांदी, अलसी, कपास, शेयरों में भारी घटबढ़ चलेगी। घी, मूंग, आदि में तेजी बनेगी। **शु. ५ बुध**-अनुराधा शुक्र-रुई तेज, गुड़, खाण्ड, चावल, नमक, क्षार पदार्थ मन्दे रहेंगे। देश के कई स्थानों पर बिमारी, उपद्रव, भूकम्प आदि से जन हानि संभव है। **शु. ८ शनि**-विशाखा बुध-अन्न, गुड़ आदि में मामूली मन्दा बनेगा। परदेश में कई स्थानों पर अशांति रहेगी। **शु. ११ मंगल**-सोना, चांदी, रुई, कपास, सूत, सण, बिनौला में मन्दा बने। **शु. १३ गुरु**-विशाखा सूर्य-सरसों, मसूर, तेल, तिल, अफीम , तांबा, पीतल, चांदी, अलसी, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सूत आदि में अच्छी तेजी से मन्दा फिर तेजी बनेगी। देश के पूर्व में आपसी झगड़ों से अशान्ति बनेगी। **शु. १५ शनि**-वृश्चिके बुध, चन्द्रग्रहण-कई प्रमुख वस्तुओं में मन्दा बनेगा जोकि आगे चलकर ३-४ मास में अच्छा लाभ देगी। समुद्री झगड़ों में बढ़ोतरी, सोरठ सिन्धु उज्जैन की प्रजा को भारी कष्ट झेलना होगा। चांदी मन्दी, घी, तेल, कपास, रसकस, अलसी संग्रह करना चाहिए। **शु. १५ रवि**-चांदी, रुई, गेहूं, चना, अलसी, उड़द, तिल, मूंगफली आदि में तेजी आएगी।

### विशेष योग

**जब कभी शनिदेव आर्द्रा में हो वक्र।**
**क्षेत्र घटे, सेना कटे, चले युद्ध का चक्र॥**
**जब कभी किसी मास सुदी चौथ घट जाय।**
**ग्राहक मांगे मूंग घी विक्रेता नट जाय॥**
**कार्तिक में ग्रहण या हो और कोई उत्पात।**
**धान्य लीजिए दीजिए पांच मास पश्चात्॥**
**कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा कृत्तिका नखत का लोप।**
**शाख विनाशी योग है तेजी करे प्रकोप॥**
**मिथुन राशि में जब कभी शनि ग्रह हो वक्र।**
**भूकंपे नरपति दुखी चलता तेजी का चक्र॥**

### अथ मार्गशीर्ष मास फल विचार

मास में पांच सोमवार हैं। मावस रविवार, चन्द्रदर्शन मंगल का ३० मु. है और पूर्णिमा सोम की तथा संक्रांति वृश्चिक रविवारी भूखी १५ मु. बैठी है। कृष्ण पक्ष में तिथि ह्रास हुआ है। सूर्य, मंगल, बुध, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधादय पश्चिम में हुआ है। मास में पांच सोम उत्तम फल देने वाले हैं। सूत, कपास में तेजी, गुजरात व दक्षिण के प्रान्तों में प्रजा नाश, बीमारी या प्राकृतिक उत्पात से होगी। कृ. १ को मघा नक्षत्र आगे आषाढ़ में वर्षा करेगा। पूर्णिमा में रोहिणी नक्षत्र रुई को मन्दी करेगा। पर दुर्भिक्ष भी करेगा। धान्यादि भाव सम, तिल, सुपारी, कपास, वस्त्र, ईख, शाली घी के भाव तेज होंगे। देश में राजनीति सरगर्मी बढ़ेगी। जहां-तहां वर्षा होगी।

**कृष्ण पक्ष—कृ. १ सोम**-अनुराधा बुध-रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी, सभ अन्न मन्दे, प्रजा को सुख मिले। **कृ. २ भौम**-ज्येष्ठा शुक्र-सोना, मखी, सरसों, घी, तेल, चांदी,चावल आदि में मन्दा। सभी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

मन्दा पर पैदावार उत्तम हो। शु. ६ बुध-उ.फा. बुध-
रुई, चांदी में घटबढ़ होकर मन्दी, सभी प्रकार का

बढ़ाएगा। आर्द्रा में शनि वक्री शुभ नहीं युद्ध का कारण

बिमारी, उपद्रव, भूकम्प आदि से जन हानि संभव है।
मन्दा बनेगा। परदेश में कई स्थानों पर अशांति रहेगी।

सूत, कपास, सोना, चांदी, सभ अन्न मन्दे, प्रजा को
मिले। कृ. २ भौम-ज्येष्ठा शुक्र-सोना, मखी,
सरसों, घी, तेल, चांदी,चावल आदि में मन्दा। सभी

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri. Funding by MoE-IKS



अनाजों के भावों में वृद्धि होगी। आपसी झगड़े बढ़ेंगे। **कृ. ६ शनि**-पू.भा. मंगल, रुई, सूत, कपड़ा, अरण्डी, सरसों, नारियल, तिल, तेल, अलसी, कपास, बायविडग, नमक, शक्कर, खाण्ड, नारियल, सुपारी आदि वस्तुओं में अच्छी तेजी बनेगी। **कृ. ७ रवि**-बुधोदय पश्चिम-वृश्चिक सूर्य-रूई, सूत, कपास, चांदी में १५ दिन में मन्दी आकर तेजी बनेगी। चांदी, तांबा, पीतल, जस्त, ऊनी, वस्त्र, सरसों, चौखा, घी, तेल, अरण्डी सभी अन्न में तेजी आएगी। **नोट**-सभी लाल पदार्थों में मन्दा रहे तो यहां अवश्य लेने चाहिए आगे अवश्य लाभ मिलेगा। प्रजा में राजभय बनने के योग बने हैं। **कृ. १० बुध**-अनुराधा सूर्य, ज्येष्ठा बुध-सभी अनाजों में घटाबढ़ी से मन्दा। सोना, चांदी, मोती, कपड़ा मन्दा रहेगा। गेहूं, जौ, चना, बाजरा, उड़द, मूंग, मोंठ, गुवार, ज्वार, चावल आदि में तेजी अच्छी बनेगी। पशु व धर्मात्मा लोगों में बिमारी फैलेगी। **कृ. १३ शनि**-मूल धन शुक्र-फसलों में हानि होगी। सभी प्रकार का अन्न, मूंग, मोंठ, बाजरा, गेहूं, जौ, चना, तांबा, रुई, सूत, कपास, कपड़ा, शेयर आदि में तेजी आएगी। चांदी मन्दी रहेगी। **कृ. १४ रवि**-अमावस क्षय-आज विशाखा नक्षत्र उत्तम नहीं, प्रजा को बिमारियों से कष्ट होगा।

**शुक्ल पक्ष—शु. २ मंगल**-चन्द्रदर्शन, सोना, चांदी, तेल, सरसों, गुड़, खाण्ड, घी सभी में अच्छी तेजी। गेहूं, गुड़, जौ, चना आदि के भावों में घटबढ़ होगी। **शु. ५ शुक्र**-मूले धनु बुध-बच्चों को पीड़ा होगी। हाथी आदि पशुओं को कष्ट मिलेगा। राज व प्रजा में आपसी टकराव बनेगा। अन्न, सोना, चांदी में कुछ मन्दा, रुई, सूत, सण आदि में घटबढ़ चले। **शु. ९ मंगल**-पू.षा. शुक्र-उड़द, मूंग, मोंठ, तिल, तेल, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक आदि पदार्थ मन्दे रहेंगे। खाण्ड, गुड़, जौ, गेहूं, चना आदि में तेजी बनेगी। रुई में घटबढ़ चलेगी। **शु. १० बुध**-ज्येष्ठा सूर्य-रुई मन्दी होकर तेज होगी। चांदी, सूत, कपास, अलसी, अरण्डी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, परा, हींग, गेहूं, जौ, चना आदि में तेजी बनेगी। बाद में भाव घटबढ़ के होंगे। **शु. ११ गुरु**-मीने मंगल-सोना, चांदी, रुई, चारा, लकड़ी का सामान, अलसी, पशु, सभी गन्ध पदार्थ तेज होंगे। अनाज मन्दे रहेंगे। चांदी में घटबढ़ होगी। **शु. १५ सोम**-पू.षा. बुध-सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, गुवार आदि में मन्दा। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, कपास आदि में तेजी बनेगी। प्रजा बिमारी से ग्रस्त पाएगी।

### विशेष योग

मार्गशीर्ष पहले पाख में कोई तिथि घट जाय।
झगड़ा और फिसाद नित लोगों में अधिकाय॥
जब जब देव योग से अश्लेषा नक्षत्र मांहि।
सूर्य संक्रामण हो तो मंहगा अन्न बिकांहि॥
वृश्चिक गत जब सूर्य हो ऊन वस्त्र समभाव।
लाल द्रव्य मन्दे लो छटे मास लाभ छाव॥
सूर संक्रामण सूर दिन राजाओं में रार।
धान्य तथा रस तेज हो दुःखी रहे संसार॥

### अथ पौष मास फल विचार

मास में पांच मंगल पांच बुध हैं। अमावस मंगल की पूर्णिमा बुध की है। चन्द्रदर्शन ३० मु. बुधवार का है। संक्रांति धन मंगलवारी धापी ३० मु. बैठी है। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है और शुक्ल में घटकर बढ़ी है। सूर्य, मंगल, शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुध वक्री मार्गी, बुधास्त पश्चिम, उदय पूर्व में हुआ है। गुरु वक्री हुआ है। मास में पांच मंगल नेष्ट फलकारक हैं। रुई, चांदी, कपास तेज करेंगे। पांच बुध शुभ रसकस में मन्दा लाएगा। कृ. ९ बुध पैदावार उत्तम, मावस मंगलवार अशुभ पर मूल नक्षत्र उत्तम फल देगा। शु. ११ को कृतिका सभी लाल वस्तुओं में लाभ कराएगा। सुदी ३ का क्षय मूंग, घी में तेजी करेगा। रेशमी वस्त्र, जायफल, लौंग, मिर्च, लाल वस्तु, नमक, रसपदार्थ कपूर, चन्दन तेज बिकेंगे। शीत लहर से प्रजा जनों को पीड़ा होगी।

**कृष्ण पक्ष—कृ. ३ गुरु**-उ.भा. मंगल-सभी गन्ध पदार्थ-चन्दन, कपूर आदि सोना, चांदी, रुई, जौ, गेहूं, चना आदि भारी घटबढ़ होगी। **कृ. ४ शनि**-उ.षा. शुक्र-अलसी, सरसों, अरण्डी, रसकस, गुड़, शक्कर, खाण्ड आदि में मन्दा, रुई, सभी अनाजों में घटबढ़ से तेजी बनेगी। **कृ. ५ रवि**-सोना, चांदी, रुई, चारा आदि में तेजी रहेगी। **कृ. ७ मंगल**-मूल- धनु में सूर्य, मकरे शुक्र-अन्न में कुछ मन्दा आकर आगे बहुत ही अच्छी तेजी बनेगी। रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी में घटबढ़ होकर तेजी आएगी। गेहूं, जौ, चना आदि सभी अन्न, गुड़, शक्कर, खाण्ड, घी, चांदी, शेयर,अफीम, लोहा, बारदाना, सण आदि पदार्थ तेज होंगे। सोना मन्दा रहेगा। फसलों में नुकसान व प्रजा बीमार होगी। **कृ. ८ बुध**-वक्री-बुध- रुई तेज होकर मन्दी, गुड़, शक्कर, सरसों, अलसी, कपूर, तिल, अरण्डी, शेयर बिनौला, मेवा आदि फलों में तेजी आएगी। **कृ. १२ शनि**-बुधास्त पश्चिम-रुई, चांदी में पहले तेजी, पीछे मन्दा, शेयर हैसियन, बारदाना में मन्दा आएगा। रुई लेने से लाभ मिलेगा। राज में गणमान्य लोगों को पीड़ा का सामना करना होगा। **कृ. ३० मंगलवार**-मावस को नेष्ट व शुभ दोनों फल समान रूप से विद्यमान हैं। जिधर लाइन चले उधर का व्यापार करें।

**शुक्ल पक्ष—शु. १ बुध**-श्रवण में भृगु, चन्द्रदर्शन-चांदी, सोना, गोला, खाण्ड, शक्कर, गुड़, उड़द, मूंग और सफेद वस्तुओं में मन्दा बने। अन्न, घी, कपास, तेल, अलसी, अरण्डी आदि में तेजी बनेगी। रुई में मन्दा आकर तेज, चांदी में घटबढ़ चले। **शु. २ गुरु**-वक्री मूल में बुध-रुई, सूत, सण में घटबढ़ हो, सोना, चांदी में मन्दा, पशुओं में पीड़ा व देश भी पीड़ित होगा। घी, मूंग में तेजी आवेगी। **शु. ७ सोम**-पू.षा. सूर्य-सभी प्रकार के अन्न में घटबढ़ चलेगी। अलसी, गुड़, ऊन, चांदी, खाण्ड, कपूर, कपड़ा आदि में तेजी का वातावरण बनेगा। शीत एकाएक जोरदार पड़ेगी। **शु. १० शुक्र**-बुधोदय पूर्व- आगे २५ दिनों रुई तेज होगी। चांदी में घटबढ़ होकर तेजी बने। सोना मन्दा रहें। गेहूं, जौ, चना, अलसी, तिल, तेल, सरसों, लाल मिर्च, गोला, हींग, उड़द आदि में तेजी आएगी। **शु. ११ शनि**-सभी लाल पदार्थ, लाल मिर्च आदि में तेजी भंयकर आएगी। अन्न लेने से फाल्गुन में लाभ मिलेगा। **शु. १२ रवि**-धनिष्ठा शुक्र-घी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी, पशुओं में तेजी बनेगी। **शु. १४ मंगल**-बुध मार्गी-सण, लकड़ी, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, तिल, तेल, कपूर, चन्दन अगर आदि गन्ध में मन्दा। अन्न, चावल, चना, चांदी, ईख तेज बिके। रुई पदार्थों में घटबढ़ से तेज। जहां तहां झगड़े होंगे। **शु. १५ बुध**-शुभ है। आगे एक दो दिन मन्दा रहेगा।

### विशेष योग

पौष मावस के दिन मंगल अति दुर्भिक्ष।
मूल नक्षत्र हो तो सुन्दर सुखद सुभिक्ष॥
पौष नौमी शनैश्चर का जुड़ा है समाज।
आर्द्रा रवि समय तक संग्रहों अनाज॥
पौष सुदी एकादशी हो कृत्तिका नक्षत्र।
लाल वस्तुओं में लाभ मिले सर्वत्र॥
पौष मावस मूल रिख संग मंगलवार।
जल वर्षे हर्षे जन अन्न लाभ अपार॥
तब कभी पौष मास सुदी तीज घट जाय।
ग्राहक मांगे मूंग, घी, विक्रेता नट जाय॥

### अथ माघ मास फल विचारः

मास में पांच गुरु पांच शुक्र हैं। मावस व संक्रंति मकर भूखी ३० मु. बैठी है। चन्द्रदर्शन ३० मु. व पूर्णिमा शुक्रवारी है। कृष्ण में तिथि ह्रास और शुक्ला में वृद्धि हुई है। सूर्य, मंगल, बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच गुरु, पांच शुक्र शुभफल देंगे। पर कृ. ३ शनिवारी देश में राजाओं में आपसी युद्ध करायएगी। मावस को उ.षा. भी देश में उत्पात मचाएगा। चन्द्रदर्शन धातुओं में तेजी और तेलों में मन्दी लाएगा। सुदी २-३ को शुक्र शनि राज्य सरकारों में आपसी तनाव बढ़ाएगा। प्रजा व्याकुल रहेगी। शु. ५ सोम-घी, तेल को तेज करेगी। मास में मंगल राहु का मेल अनावृष्टि, दुर्भिक्ष व फसलों को नुकसान पहुंचायेगा। फल, फूल, रसकस, घी में तेजी बनेगी। वर्षा के साथ ओले पड़ेंगे। राज नेताओं से देश की राजनीति प्रभावित होगी। प्रजा व्याकुल रहेगी।

**कृष्ण पक्ष—कृ. २ शुक्र**-कुम्भे शुक्र-अन्न, गेहूं, जौ, चना, मटर, अरहर, मूंग, मोंठ, बाजरा, गुवार, सफेद वस्तु, गुड़, शक्कर, तेल व रस पदार्थों में मन्दा। सभी शेयरों में तेजी। प्रजा पीड़ित रहें। **कृ. ३ शनि**-देश में आपसी झगड़े बढ़ेंगे। **कृ. ४ रवि**-उ.षा. सूर्य-रुई, सूत, कपास, चावल, अरण्डी में घटबढ़ होकर तेजी बने। रुई, खाण्ड, गुड़ तेज बिकेगा। अन्न तेज होकर मन्दा होगा। **कृ. ७ बुध**-सूर्य, मकर-घी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सरसों में घटबढ़ चले, गेहूं, जौ, चना, मूंग, मोंठ, बारदाना, सोना, चांदी मन्दी, घी, तेलों में तेजी बनेगी। **कृ. ८ गुरु**-शतभिषा शुक्र-घी, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, अरण्डी, सोना, चांदी, पशु आदि में तेजी बनेगी। **कृ. १३ मंगल**-आज १४ का क्षय फाल्गुन में रुई व रुई पदार्थों में अवश्य तेजी आएगी। **नोट करें। कृ. ३० बुध**-पू.षा. बुध-गेहूं, जौ, चना, मटर, उड़द, मूंग, बाजरा, गुवार, सोना, चांदी में मन्दा। गुड़, शक्कर, खाण्ड, सरसों, अलसी, बिनौला, रुई, कपास तेज बिकेगा। **नोट**—इस पक्ष के योगों के अनुसार आगे भादों में सभी अन्न गेहूं, चावल, मूंग आदि में अच्छी तेजी बनेगी।

**शुक्ल पक्ष—शु. २ शुक्र**-चन्द्रदर्शन-गेहूं, जौ, चना, चावल, सरसों, तिल, तेल, ऊन, तिलहन, पदार्थ मन्दे। सोना, चना, जौ, तिल, तेल, सरसों, अलसी, मूंग, मसूर तेज। चांदी में घटबढ़ होगी। **शु. ३ शनि**-श्रवण-सूर्य, अश्विन मेषे मंगल-अलसी, जौ, गेहूं, बाजरा, लौंग, सुपारी, पीतल, सरसों, मीठे में तेजी। सोना, चांदी, तांबा, पीतल में मन्दा रहेगा। देश में अग्निकाण्ड, उपद्रव, नेताओं के आपसी झगड़े, प्रजा में विग्रह, रोजमर्रा की वस्तुओं में धीरे-धीरे तेजी आएगी। **शु. ५ सोम**-पू.भा. शुक्र-रुई, घी,तेलों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



में अच्छी तेजी। अनाजों में मन्दा, प्रजा को कष्ट होगा। **शु. १० शनि**-उ.षा. बुध-सभी अन्न और बहुत सी वस्तुओं में मन्दा रहेगा। बच्चों को पीड़ा व इनकी मृत्यु दर में बढ़ोत्तरी होगी। **शु. १२ मंगल**-मकरे बुध, मीने शुक्र-बिनौला, कपास, सरसों, अरण्डी, तिल, तेल, गुड़, शक्कर, खाण्ड सभी अन्न में मन्दा। चांदी तेज। रुई, घी में घटबढ़ होकर तेज होगी। **शु. १५ शुक्र**-धनिष्ठा सूर्य, उ.भा. १ शुक्र-मूल पदार्थों में तेजी, अन्न, रुई, कपास, चावल, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक कपूर, सोना, चांदी में मन्दी। आगे समय दुर्भिक्षकारी होने से तेजी भी आवश्य बनेगी।

### विशेष योग

**कृष्ण पक्ष तिथि घटे शुक्र पक्ष बढ़ जाय।**
**होय सुभिक्ष सुकाल भूमि न अन्न समाय॥**
**मकर राशि के भानु में तेज बिके घी तेल।**
**धान्य भाव मन्दे रहें कुछ पीड़ा का खेल॥**
**दुतिया तृतीया माघ सुदी शुक्र शनिवार।**
**पृथ्वी पर युद्ध से बहै रक्त की धार॥**
**मंगल राहु साथ में एक नखत इक राश।**
**अनावृष्टि दुर्भिक्ष दुःख हो खेती का नाश॥**
**श्वेत अष्टमी माघ की कृतिका नक्षत्र संयुक्त।**
**फाल्गुन खेती गड़बड़े श्रवण अन्न धन भुक्त॥**

### अथ फाल्गुन मास फल विचारः-

मास में पांच शनिवार हैं। मावस शुक्रवारी, चन्द्रदर्शन ३० मु. और पूर्णिमा शनिवारी है। संक्रांति कुम्भ शुक्रवारी धापी ४५ मु. खप्पर योग बनाए बैठी है। कृष्ण पक्ष में तिथि का ह्रास हुआ है। सूर्य-बुध-शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। मास में पांच शनि नेष्ट फलकारक हैं। अनाज, नमक, घी, तेल में तेजी बनेगी। **कृ. ५ बुध**-घी, गेहूं को बढ़ाएगी। कृ. ६ को स्वाती आगे ३ मास दुर्भिक्षकारी रहेगा। मास का चन्द्रदर्शन गुड़, तिल, तेल, कपास के भावों को बढ़ाएगा। सुदी एकम् को शतभिषा शुभ है। सुदी २ रविवारी दक्षिण-पूर्व में बिमारी फैलाएगी। सुदी ८ को रोहिणी आगे वर्षा की खैंच करेगी। साते को कृतिका भादों की मावस को वर्षा करेगा। होली दहन शनिवार का देश को भारी संकट में डालेगा। कृष्ण पक्ष में धान्य तेज शुक्ल में मन्दा। सोना, चांदी, गाय, हाथी, घोड़ा, मोटर आदि तेज होंगे। वाहन दुर्घटना या कोई बड़ी प्राकृतिक घटना से जन हानि संभव है।

**कृष्ण पक्ष—कृ. ३ सोम**-श्रवण बुध-गुड़, शक्कर, खाण्ड, चावल, चना, गेहूं आदि धान्यों में तेजी आएगी। फसल को ओले आदि गिरने से नुकसान होगा। **कृ. ६ गुरु**-आज दिन स्वाती नक्षत्र शुभ नहीं। आगे ३ मास दुर्भिक्ष रहेगा। सूत, सरसों, मूंगफली, घी, चावल आदि में कुछ मन्दा रहेगा। **कृ. ७ शुक्र**-कुम्भे सूर्य-गेहूं, जौ, चना, बाजरा, ज्वार, मूंग, सरसों, गुड़, शक्कर, खाण्ड, नमक, घी, तेल, मूंगफली, अरण्डी आदि में तेजी बनेगी। **कृ. ९ शनि**-भरणी, मंगल, गेहूं, जौ, चना, ज्वार, मूंग, मोंठ, बाजरा, गुवार, सोना, चांदी में अच्छी तेजी बनेगी। रस पदार्थ, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा आएगा। विद्वान व गणमान्य व्यक्तियों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा। **कृ. १० रवि**-बुधास्त पूर्व-चांदी में घटबढ़ होकर मन्दी, सोना, गेहूं, अलसी में तेजी। **नोट**—अन्न में एक मास बाद अच्छी तेजी के योग बने हैं। व्यापारियों को कष्ट व प्रजा को बिमारी का सामना करना होगा। **कृ. १२ मंगल**-रेवती शुक्र-रुई, कपास, चन्दन, सूत, सण, जवाहरात, गुड़, शक्कर, खाण्ड में मन्दा रहेगा। **कृ. १३ बुध**-धनिष्ठा बुध-रुई में घटाबढ़ी चलेगी। अन्न, सोना, चांदी, तांबा, पीतल, जस्ता में मन्दा आएगा। **कृ. १४ गुरु**-शतभिषा सूर्य-सोना, चांदी में मन्दा आकर तेज होगी। सरसों, सूत, कपड़ा, तिल, तेल, किराना, गेहूं, गुड़, खाण्ड आदि में तेजी आएगी। **कृ. ३० शुक्र**-भावों में ठहराव रहेगा।

**शुक्ल पक्ष—शु. १ शनि**-चन्द्रदर्शन-धान्य पदार्थों में घटबढ़ हो, तिल, तेल, सरसों, अलसी, मूंग, मसूर, गुड़, कपास आदि पदार्थों में अच्छी तेजी पक्ष भर रहेगी। **शु. २ रवि**-कुम्भे बुध-घी, तेल, सरसों, अलसी, रसकस, गुड़, सक्कर आदि में घटबढ़ से मन्दा। सोना, चांदी, तांबा, पीतल में मन्दी से तेजी आएगी। देश के दक्षिण-पूर्व में प्रजा बिमार होगी। **शु. ५ बुध**-शतभिषा बुध-सोना, चांदी, सण, सूत, अन्न आदि में तेजी आएगी। देश की छोटी-छोटी बस्तियों में बीमारी फैलेगी। **शु. ७ शुक्र**-आज कृतिका नक्षत्र है ध्यान रखें आगे भाद्रपद मास में उत्तम वर्षा होगी। **शु. ९ रवि**-अश्विनी मेषे बुध-तिल, तेल, सरसों, अरण्डी, रुई, सूत, ऊन आदि में घटबढ़ चलकर मन्दा आवे। आज से १० दिन बाद सोना, चांदी, गेहूं, जौ, चना आदि तेज होंगे। **शु. १३ गुरु**-पू.भा. सूर्य, पू.भा. बुध-स[illegible] में घटबढ़ चले। रेशम में अच्छी तेजी आएगी। गुड़, खाण्ड तेज होकर मन्दा होगा। देश में कहीं-कहीं आपसी झगड़े बढ़ेंगे। कहीं प्रेम भी होगा। **शु. १५ शनि**-कृतिका मंगल-रुई मन्दी, गेहूं, जौ, चना, तिल, सरसों, अलसी, चांदी, चावल, सूत, कपड़ा तेज होगा। प्रजा बिमार रहें। आज मघा नक्षत्र है। शुभ नहीं, आगे कई वस्तु तेज होंगी।

### विशेष योग

**षष्ठी फाल्गुन बदी में चित्रा करे सुभिक्ष।**
**यदि स्वाति हो तो तीन मास दुर्भिक्ष॥**
**फाल्गुन शुक्ला सप्तमी हो कृतिका नक्षत्र।**
**भादव मावस के दिन वर्षा हो सर्वत्र॥**
**मंगल राहु शुक्र जब हो एक राशि आधार।**
**राजाओं में युद्ध हो बहे रक्त की धार॥**
**मास नखत पूनम नहीं तेज बिकै तब अन्न।**
**शनि दिन होली दहन संकट सहे जहान॥**

### अथ चैत्र कृष्ण पक्ष फल विचारः-

यह पक्ष रवि से आरम्भ हो रहा है। मावस शनि की, संक्रांति मीन रविवार की भूखी ३० मु. बैठी है। सूर्य, मंगल, बुध ने राशि परिवर्तन किया है। कृष्ण पक्ष में तिथि ह्रास शुक्ल में वृद्धि हुई है। जोकि उत्तम योग है। शनि मार्गी, बुधोदय पश्चिम में हुआ है। पांच रवि नेष्ट फलकारक हैं। प्रजा रोगी होगी। कपास, घी, तेल, सूत, सोना, किराणा आदि में तेजी बनेगी। राजनीति में भारी उतार-चढ़ाव से प्रजा में विग्रह होगा। मंगल, शुक्र का मिलाप बहुत सी वस्तुओं में तेजी लाएगा।

**कृष्ण पक्ष—कृ. १ रवि**-शनि मार्गी-तिल, तेल, सरसों में तेजी, रुई, सूत, कपास में ६-७ दिनों में मन्दी आकर तेजी बनेगी। सफेद वस्तु तेज होकर मन्दी होगी। वक्री के समय जो वस्तु तेज हुई व मन्दी, जो मन्दी हुई वह तेज होगी। **कृ. ३ मंगल**-मीने, बुध-रुई, सूत, कपास, बिनौला तेज, अन्न में घटबढ़ से मन्दा, चना, गुड़, शक्कर मन्दा, सोना, चांदी में पहले तेजी पीछे मन्दा आएगा। प्रजा व अधिकारी वर्ग में आपसी द्वेष बढ़ेगा। **कृष्ण ४ बुध**-उ.भा. बुध-चांदी में अच्छा उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। गुड़, खाण्ड, अन्न भाव सामान्य, राजा प्रजा में आपसी द्वेष बनेगा। **कृ. ५ गुरु**-वृषे मंगल-सभी धान्य गेहूं, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोंठ, सरसों, तिल, तेल, अलसी, चन्दन, केसर, जूट, बारदाना, धातु, कपूर आदि में [illegible] होगी।

**कृ. ६ शुक्र**-भरणी शुक्र-तेल, तिल, सरसों, गेहूं, जौ, चना आदि में घटबढ़ से मन्दा बनेगा। सोना, चांदी में अच्छी मन्दी आएगी। **कृ. ८ रवि**-मीने सूर्य-अन्न, तेल, तिल, नमक, चांदी, सोना, सण, खाण्ड में अच्छी तेजी बनकर मन्दा और चांदी मन्दी रहेगी। **कृ. ११ बुध**-उ.भा. सूर्य, रेवती बुध, बुधोदय पश्चिम, चांदी में अच्छी तेजी, रुई, कपास, घी, तेल, सरसों, अरण्डी में मन्दा, गन्ध पदार्थ, चन्दन, कपूर, मिर्च, लौंग, लाल वस्तु तेज होगी। **कृ. ३० शनि**-आज पू.भा. नक्षत्र है शुभ है। आगे पक्ष उत्तम रहेगा। भावों में मन्दी आएगी। प्रजा को सुख मिलेगा।

### विशेष योग

**चैत्र बदी में तिथि घटे और सुदी बढ़ जाए।**
**हो सुभिक्ष सुकाल भूमि में अन्न न समाए॥**
**सर्वधान्य मंहगे बिकैं मीन राशि गत भानु।**
**तेजी तिलहन नमक में साधारण अनुमान॥**
**मेष राशि पर होय जब शुक्र राहु योग।**
**धान्य भाव मंहिगा रहे विग्रह पीड़ित लोग॥**
**वक्री चाल चलते हुए शनि मार्गी हो जाय।**
**चालू रुख व्यापार का एकदम पलटा खाय॥**

**तेजी-मन्दी सट्टा पुस्तक**—तेजी-मन्दी के चांस तथा लाटरी सट्टे के अंक निकालने के लिए यह पुस्तक उत्तम है। मूल्य १२१/- रुपये, डाक खर्च ३० रु. अलग।

**योग रत्नाकर**-यह पुस्तक दोहों के रूप में लिखी गई है। वर्षा का ज्ञान तथा तेजी-मन्दी का ज्ञान बहुत अच्छी प्रकार से समझाया गया है। मूल्य ५१/-रुपये, डाक खर्च २५ रु. अलग।

**व्यापार भविष्य फल**-हर वस्तु की अलग-अलग तेजी-मन्दी, स्पेशल तथा लंबी लाइनें हर वस्तु की अलग-अलग हैं। सट्टे, वायदा व्यापार तथा हाजिर स्टाक के माल के चांस हर वस्तु के अलग-अलग दिए गए हैं। मूल्य १२०/-रु. मंगाकर लाभ उठायें। डाक खर्च ३५ रु. अलग। नोट-कार्यालय में तेजी-मन्दी के अचूक चांस निकाले जाते हैं। एक वस्तु की फीस इस प्रकार से है-फीस १ मास की ३५१/-रु., फीस ३ मास ९७५/-रु., फीस ६ मास १९५०/-, फीस १ साल ३८५१/- रु. है, स्पेशल चांस की फीस ५५१/- रु. है। पूर्ण वर्ष स्पेशल चांस फीस ६०००/- रु. मंगाकर लाभ उठायें।

**पताः ज्योतिष रत्न कार्यालय**
पो.-फर्रुखनगर-१२२५०६, जिला गुड़गावां
फोन कार्या. : 6375218, एस.टी.डी. 0124
निवास- 6375377 एस.टी.डी. 0124

CC-0. In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

दुर्घटना या कोई बड़ी प्राकृतिक घटना से जन हानि संभव है। | बुध- सभी अन्न, सभी धातु सोना, चांदी में मन्दा, सूत | तेजी बनेगी। प्रजा में आपसी झगड़ों में बढ़ोत्तरी होगी। | फोन कार्या. : 6375218, एस.टी.डी. 0124 निवास- 6375377 एस.टी.डी. 0124

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# चन्द्र शृंगोन्नतः व्यापार वाणी सं. २०६० विक्रमी

## श्री शंकर साहित्य सदन, दूरा, फतेहपुर सीकरी (आगरा) (उत्तर प्रदेश)

### चैत्र शुक्ल पक्ष

रक्त वर्ण — दक्षिण शृंग

दिनांक ३ अप्रैल सन् २००३ ई॰ चैत्र शुक्ल २ गुरुवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण शृंग से हो रहा है। जिसका फल राष्ट्र तथा संसार में अशान्ति उत्पन्न का सूचक है। गेहूँ, चना, जौं, मटर, उड़द, मोंठ, मसूर, हल्दी, काली मिर्च, सोना, चाँदी, पीतल, स्टील पर घोर तेजी आती है। जूट, पाट, बारदाने के भाव भी ऊँचे पर चले जाते हैं। घी, तेल, रुई, कपास, ऊन में भी तेजी होती है। व्यापारी वर्ग इस मास में अच्छा लाभ उठा सकते हैं। दक्षिण भारत में अशान्ति तथा प्राकृतिक प्रकोप अवश्य होता है।

### वैशाख शुक्ल पक्ष

रक्त वर्ण — सम शृंग

सं॰ २०६० वि॰ वैशाख शुक्ल २ शनिवार को चन्द्रदर्शन सम शृंग रक्तस्वर्ण से दिखलाई देगा। चन्द्रमा का यह दर्शन रुई, कपास, ऊन, काष्ठ, कोयला, मिट्टी के तेल में कुछ मंदापन लाते हैं। गेहूँ, चना, मटर, जौं, उड़द, मोंठ, मसूर, घी, तेल, सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील के भाव कुछ तेजी पर आते हैं। जर्मन, अरब राष्ट्रों में जनधन का भारी विनाश होता है। जूट, पाट, बारदाना, किराना वस्तुओं के भाव कुछ गिर जाते हैं। व्यापारी वर्ग को संग्रह करने की राय देता है। अंधड़, तूफानादि का भय, अग्नि प्रकोप की संभावना बनी रह सकती है।

### ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ ज्येष्ठ शुक्ल १ रविवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग पीतवर्ण से होगा। रविवार को चन्द्रदर्शन पश्चिमी देशों में विग्रह, उत्पात, युद्ध की स्थिति बनाते हैं। किसी भीषण रोग का प्रादुर्भाव भी होता है। केन्द्र तथा प्रान्त में राजनैतिक उथल, पुथल भी होती है। गेहूँ, चना, जौं, मटर, मक्का, उड़द, ज्वार, बाजरा, ग्वार पर एक दम सस्तापन होता है। दाख, किशमिश, जीरा, धनिया, हल्दी, काली मिर्च, चिरोंजी, मखाने पर घोर तेजी होती है। वायु संचार के साथ खण्ड दृष्टि भी होगी।

### आषाढ़ शुक्ल पक्ष

श्वेत वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ आषाढ़ शुक्ल २ मंगलवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग श्वेतवर्णा से होगा। मंगलवार को चन्द्रदर्शन दुर्भिक्ष की स्थिति बना सकता है। कार्तिकी फसल अवश्य अच्छी होती है। पाक में प्राकृतिक प्रकोप से जन धन का भारी विनाश होता है। गेहूँ, चना, जौं, मटर, मक्का, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ में कुछ सस्तापन होता है। जीरा, धनियां, हल्दी, किशमिश, दाख, हींग, मखाने में अच्छी तेजी होती है। जूट, पाट, बारदाने के भाव गिर जाते हैं। मासान्त में वर्षा के योग बनते हैं।

### श्रावण शुक्ल पक्ष

रक्त वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ श्रावण शुक्ल २ गुरुवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग रक्त वर्ण संयुक्त होगा। इस मास में पृथ्वी के पूर्वी भागों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, भूस्खलन होने की पूर्ण संभावना है। जापान, जर्मन, हालैण्ड, आस्ट्रेलिया, लन्दन आदि में उपद्रव, सत्ता के विरुद्ध उपद्रव, तोड़फोड़, सरकारी सम्पत्ति का भारी विनाश होता है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, पीतल, स्टील, गेहूँ, चना, मटर, चावल, मूँग, मसूर, उड़द के भाव गिर जाते हैं। कागज स्टेशनरी के सामान में अच्छी तेजी होती है। केन्द्रिय मंत्रिमण्डल में आकस्मिक परिवर्तन होता है।

### भाद्रपद शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ भाद्रपद शुक्ल २ शुक्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग पीतवर्ण से दिखाई देगा। इस चन्द्रर्शन से भ्रष्टाचार, पापाचार, हत्याकाण्ड, लूट पाट आदि उपद्रव होते हैं। राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में घोर वर्षा, बाढ़ की संभावना है। उत्तर पदेश, कुछ राजस्थान, मध्य प्रदेश में समयानुकूल वर्षा होती है। गेहूँ, चना, जौं, चावल, लोहा, चांदी, सोना, ताम्बा में अच्छी तेजी होती है। काली मिर्च, दाख, किशमिश, जीरा, धनियाँ, के भाव गिर जाते हैं।

### आश्विन शुक्ल पक्ष

श्वेत वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ आश्विन शुक्ल २ चन्द्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग श्वेतवर्ण से होगा। उत्तर भारत में प्राकृतिक प्रकोप, नयी विधान सभाओं में नये विधान पारित होंगे। जनता- सरकार में खुशी की लहर दौड़े। सुखशान्ति का अच्छा समय दिखलाई दे रहा है। गेहूँ, चना, जौं, मटर, चावल, सरसों, तिल, प्रियंगु के भाव गिरकर एक दम चढ़ जाते हैं। घी, तेल, दाख, किशमिश, जीरा, धानियाँ, मखाने, हींग के भाव विशेष ऊँचे चढ़ सकते हैं। राजनैतिक दलों में दरार हो।

### कार्तिक शुक्ल पक्ष

श्वेत वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ कार्तिक शुक्ल २ चन्द्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तरशृंगश्वेतवर्ण से होगा। उत्तर भारत में प्राकृतिक प्रकोप से हानि भी होगा। नवीन विधान सभाओं में नये विधान भी पारित हो सकते हैं। जनता सरकार के लिये अच्छा समय है। सुख शान्ति का वातावरण बने। गेहूँ, चना, जौं, मटर, चावल, सरसों, तिल, प्रियंगू के भाव एक दम गिर जाते हैं। घी, तेल, दाख, किशमिश, जीरा, धनियाँ, मखाने, चिरोंजी पर घोर तेजी होती है।

### मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ मार्गशीर्ष शुक्ल २ मंगलवार को चन्द्रदर्शन उत्तर शृंग से होगा। सुखशान्ति का परिचायक है। राम मंदिर, बाबरी मस्जिद विवाद पुनः तूल पकड़ सकता है। जिसमें सरकार कड़े कदम भी उठा सकती है। गेहूँ, चना, जौं, चावल, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील पर अच्छी तेजी होती है। उत्तर पूर्व में जातीय संघर्ष हो सकता है। उपद्रव, आन्दोलन, तोड़फोड़ वारदातें हो सकती हैं। राजनैतिक पार्टियों में मतभेद उत्पन्न हो सकता है।

### पौष शुक्ल पक्ष

श्याम वर्ण — उत्तर शृंग

संवत् २०६० वि॰ पौष शुक्ल २ गुरुवार को चन्द्रदर्शन उत्तरशृंग श्यामवर्ण से दृष्टि गोचर होगा। दक्षिण में उपद्रव, अशान्ति का वातावरण बन सकता है। गेहूँ, चना, जौ, चावल, उड़द, मूँग, मसूर, किशमिश, गूगल, काली मिर्च [illegible] हींग, हल्दी, जवाखार, मखाने के भाव तेजी पर जा स[illegible] भूकंम्प से पश्चिमी राष्ट्रों में लाखों लोग बेघर हो सकते हैं। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, स्टील, काष्ठ, कोयला, मिट्टी के तेल, डीजल, पैट्रोल के भावों में तेजी [illegible]।

### माघ शुक्ल पक्ष

श्याम वर्ण — सम शृंग

संवत् २०६० वि॰ माघ शुक्ल २ शुक्रवार को चन्द्रदर्शन सम शृंग श्यामवर्ण से होगा। जर्मन, ब्रिटेन, रूस, अमेरिका में अशान्ति पैदा हो सकती है। भारत में शान्ति का वातावरण बना रह सकता है। पूर्व में युद्ध अवश्य ही होगा। गेहूँ, चना, जौं, चावल, मटर, उड़द, मूँग, मसूर, मोंठ पर अच्छी तेजी हो। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, स्टील के भाव गिर जाते हैं। किशमिश, जीरा, धनियाँ, कालीमिर्च, जूट, पाट, बारदाना तेज।

### फाल्गुन शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — दक्षिण शृंग

संवत् २०६० वि॰ फाल्गुन शुक्ल १ शनिवार को चन्द्रदर्शन दक्षिणशृंग पीतवर्ण वाला दिखाई देगा। इसका फल दुर्भिक्ष कारक है। उपलवृष्टि, खण्डवृष्टि से हानि हो सकती है। गेहूँ, चना, मक्का, मटर, चावल, शक्कर, गुड़, सोना, चाँदी, ताम्बा, किराना वस्तुओं के भावों में जोरदार तेजी होती है।

### सन् २००३-२००४ ई॰ में सरसों स्पेशल चांस

| खरीदना | बेचना | खरीदना | बेचना |
|---|---|---|---|
| अप्रैल - ३ से २० तक | २१ से २८ तक | अप्रैल - ४ से १५ तक | १६ से २५ तक |
| मई - ५ से १५ तक | १६ से ३० तक | जून - ५ से १८ तक | २० से २८ तक |
| जुलाई - ७ से १८ तक | १९ से २५ तक | अगस्त - ५ से १९ तक | २२ से ३० तक |
| सितम्बर - ५ से १८ तक | २० से २८ तक | अक्टूबर - २ से १० तक | १२ से १८ तक |
| नवम्बर - २ से २० तक | २२ से ३० तक | दिसम्बर - ४ से २० तक | २२ से २९ तक |
| जनवरी - ४ से १६ तक | १८ से २६ तक | फरवरी - २ से १० तक | १५ से २८ तक |
| मार्च - ४ से २० तक | २४ से २७ तक | | |

### सन् २००३-२००४ ई॰ में जीरा स्पेशल चांस

| | | | |
|---|---|---|---|
| अप्रैल - ४ से २२ तक | २४ से २८ तक | अप्रैल - २ से १० तक | ११ से २५ तक |
| मई - ८ से १८ तक | १९ से ३० तक | जून - ११ से २२ तक | २३ से ३० तक |
| जुलाई - १० से २५ तक | २६ से ३० तक | अगस्त - १५ से २५ तक | २६ से ३० तक |
| सितम्बर - ४ से १५ तक | १६ से २८ तक | अक्टूबर - ८ से २० तक | २२ से २८ तक |
| नवम्बर - ४ से २० तक | २२ से २८ तक | दिसम्बर - १५ से २५ तक | २६ से ३० तक |
| जनवरी - ५ से १८ तक | २० से २५ तक | फरवरी - १० से २८ तक | २८ से २८ तक केवल ३ घंटे |
| मार्च - ५ से २५ तक | २७ से ३० तक | | |

तेजी मंदी रिपोर्ट फीस :- वार्षिक २००१.००, षट्मासिक १००१.००, त्रैमासिक ५०१.००, मासिक २५१.०० डाक व्यय ५०.००
जन्म पत्र फीस :- अतिश्रेष्ठ २००१.००, श्रेष्ठ १००१.००, माध्यम ५०१.००, साधारण २५१.००, डाक व्यय ५०.००
हस्त रेखा भविष्य दर्शन :- अतिश्रेष्ठ २००१.००, श्रेष्ठ १००१.००, माध्यम ५०१.००, साधारण २५१.००, डाक व्यय ५०.००
पता :- संस्थापक संचालक पं. शंकरलाल गौड़
ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़ "शंभु कवि" ब्रज बाबा पथ दूरा, फतेहपुर सीकरी (आगरा), (उ. प्र.) पिन २८३११०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



# संवत् विक्रम २०६० (सन् २००३-२००४ ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक-ओंकार दैवज्ञ ( व्यापार अनुसंधान केन्द्र ), पो. हापुड़, गाजियाबाद ( यू.पी. )

संवत् विक्रम २०६०, ०२ अप्रैल दिन बुधवार को लगने से वर्ष का राजा बना है बुध। ज्योतिष शास्त्र में व्यापार का स्वामी तो होता है साथ ही ज्योतिष का स्वामी, वकीलों का स्वामी होने से सभी को उन्नति प्रदान कारक यह सं. रहेगा। मंत्री शशि पिता-पुत्र का योग भी उन्नति कारक है।

**भैरव प्रश्न** - जननी कालिका माँ सुनो, भैरव प्रश्न विनीत।
साठ साल अब आयेगा, हाल कहो कर प्रीत।।

**भवानी कालिका उत्तर** -

बुध राजा मंत्री शशि पुत्र और पिता का योग।
मेघ का द्रोण नाम है, समुन्द्र में रोहिणी वास।।
धान्याधिप कुजधान्य में करे घटा बढी की चाल।
कोई तो माल कमायेगा, कोई कोई हो पैमाल।।
संवत् अच्छा होवेगा क्योंकि विश्वा वर्षा पाँच।
ऊंकार भजन से सुख मिले भैरव समझो सांच।।

**वर्षा का राजा बुध** - होने से भारत में स जल हरियाली गूंजेगी। घर-घर में विवाह मंगल कार्य अधिक होंगे। सुभिक्ष धन धान्य की वृद्धी करेगे। **मंत्री चन्द्रमा**-इस वर्ष में गरीब घरों को भी अमीर बना देगा। चांदी की अधिकता, श्वेत वस्तु अधिक रूपेण वृद्धी पर होंगी। जब भी चन्द्रमा की चाल पाप ग्रहों से बने तभी माल लेकर १५ ही दिन में लाभ यानि तारुणी करना विशेष लाभ प्रद होगा। सस्येश बुध-इस वर्ष में जल की वृद्धि निरुपद्रवम् और ब्राह्मणों की वृद्धि होगी। इस वर्ष होने से ग्रीष्म ऋतु में धान्य की महर्घता दिखाई देगी। जौ, चने की वृद्धि इस वर्ष होगी। सुख सुभिक्ष करेगा। आकाशीय कौंसिल का चुनाव उत्तम है, क्योंकि जल ही जीवन होता है, इस वर्ष मेष का नाम द्रोण है इसलिए-*द्रोणः वर्षति सर्वदा। रोहिणी वास समुद्रे। समुद्रे तु महावृष्टी।।* ऐसा ज्योतिष शास्त्र का लेख है। समय का निवास, इस वर्ष माली के घर में रहेगा। - लेख ज्योतिष शास्त्र में पाये जाते हैं इसलिए सम्वत् २०६० दुष्कर्मियों के लिए खराब और उत्तम कर्म करने वालों के लिए महान् उत्तम रहेगा। सम्वत् २०६० में चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ और आषाढ़ में विवाह मुहूर्त खूब होंगे लेकिन मंगशिर मास में सिंह का गुरु आने से ज्योतिष शास्त्र का लेख है कि .....

**सिंहस्थ गुरौ वर्ज्यं कर्माणि**-अर्थात् सिंह के गुरु में शुभ कार्य नहीं होते। इसलिए आषाढ़ तक की तेजी ही पर्याप्त जानें।

**चैत्र शुक्ला सम्वत् २०६० का सामूहिक भविष्य**- यह महीना ता॰ २ अप्रैल बुधवार को प्रारम्भ होने से वर्ष का राजा बुध बनेगा जो सटट्टे बदनी तथा हाजिर मार्केटों में अच्छी चमक लायेगा। चन्द्रदर्शन पड़वा में न होकर दोयज में ही होगा। गुरुवारी दर्शन खास तौर से चांदी, सोना, पीतल आदि धातु पदार्थों में तेजी कारक होता है। लेकिन ता॰ ४ अप्रैल को बुध का उदय पश्चिम और तृतीया तिथी की वृद्धि होने से मन्दी और तेजी दोनों के योग बनते हैं। इस तारीख से पहले अगर भारी मन्दी आ चुकी हो तो तेजी ता॰ ११ अप्रैल तक आयेगी। अगर ता॰ ४ को १ बजे तक विपरीत मार्केट चल जावे जब विपरीत ही सौदा करें ऐसा यह चांस रामबाण है। ता॰ ११ अप्रैल को सूर्य अस्त के बाद मकर का मंगल विपरीत मार्केट हर वस्तु में चलायेगा। ता॰ १४ अप्रैल को मेष संक्रांति होने से इस वर्ष का मंत्री चन्द्रमा बन जाएगा। इससे यह सिद्ध होता है कि दोनों शुभ ग्रह हैं लेकिन पुत्र पिता से कभी-कभी नेष्ट प्रभाव भी करेगा। चन्द्रमा का बेटा बुध और चैत्र शुदि चौदस का क्षय होना नेष्ट होने से यहां की चालू लाईन पूर्ण रूप से चलेगी। इस महिने में ता॰ ३, ४, ११ तथा १४ अप्रैल इन तारीखों में १०० तेजी तो २५ मन्दी शेयर, सोना, चांदी, सरसों, चना आदि में लाभदायक अवश्य रहेंगी।

**बैशाख सम्वत् २०६० का सामूहिक व्यापार भविष्य**-इस माह में बुधास्त पश्चिम में २७ अप्रैल को और ता॰ २५ अप्रैल को बुध बक्री होंगे। बुध व्यापार पति माना गया है। इसलिए ता॰ १७ अप्रैल से ता॰ १६ मई तक बहुत जर्बदस्त घटबढ़, तेजी-मन्दी गेहूँ, चने की आवक रहेगी। ता॰ १७ को जो भी लाईन बनेगी वही लाईन ज्यों की त्यों पांच दिवसीय चलेगी। चाहे शेयर हो या चांदी, सोना, गुड़, रुई, बिनौला या अन्य कोई भी वस्तु हों, उन सभी में इस ग्रह का प्रभाव अवश्य पड़ेगा। ता॰ २२ अप्रैल मंगलार को तिथि टूटने से जबद्रस्त मन्दी के योग मानते हैं। इसलिए पुराना माल गेंहू, चना, जौं आदि की अवश्य बेच देवें क्योंकि भविष्य में मन्दी का साम्राज्य होगा। इस ग्रह के असर से मेंथा, पीतल, शेयर, चीनी, गुड़ आदि सभी प्रभाव में आयेंगे। यह लाईन ता॰ २५ अप्रैल तक बिना रियक्शन के चलेगी। ता॰ २५ की अर्द्ध रात्रि को बकी बुध होने से ता॰ २५ का जो भाव बन्द होंगे वह नजर भी नहीं आयेंगे और ता॰ २६ अप्रैल से नयी लाईन चल पड़ेगी। इसलिए यहां सट्टे-बदनी के व्यापार में तेजी लगाना अच्छा रहेगा। यहां की चालू चाल ता॰ २ मई तक सीधी चलेगी। ता॰ ३ मई को शनिवारी चन्द्रदर्शन मार्केटों में विशेष रूप से खिचांव पैदा करेगा अर्थात् घने नीचे भाव हों तो खरीदना। ऊंचे भाव हों तो बेचना। यहां की चालू लाईन पूर्ण शुक्ल पक्ष में चलेगी और किसी वस्तु में जबद्रस्त तेजी आयेगी लेकिन ता॰ ५ मई सोमवार को पिछली लाईनें खत्म होंगी और ता॰ ६ मई को नई लाईन बनाकर इस महीने में विशेष चहलपहल बुध उदय ता॰ १६ बैशाख शुदि पूर्णिमा तक चलने का विचार है क्योंकि बैशाख शुदि चतुद्रशी को वृष का सूर्य पन्द्रह मुहूर्ती है जो किसी किसी वस्तु में जैसे कि चांदी, सोना, सरसों, सोया, मेंथा में चल सकती है।

**ज्येष्ठ सम्वत् २०६० का सामूहिक व्यापार भविष्य** - इस माह में पांच शनिवार हैं जो कि लौह से सम्बधित सभी वस्तुओं में तेजी लायेंगे। इन्फीरियर लाईन का साम्राज्य इस माह में छाया रहेगा और मार्गी बुध, सूर्य ग्रहण, शनि अस्त इस माह के खास ग्रह योग हैं। ऐसे योगों में किसी वस्तु में भयंकर तेजी और किसी वस्तु में मन्दी की मोटी लाईन निकला करती है। ता॰ २२ मई से पहले जिस वस्तु में मन्दी रहे उसी में आये २५ दिन विपरीत मार्केट चलेगा। बहुत जबद्रस्त गेहूं, चना की आवक होने से मंडियों में भरपूर वस्तुएं दिखाई देंगी और ता॰ २२ के मध्यान्ह से जिस वस्तु में जिधर लाईन चलेगी वही लाईन तमाम महीने चलने की आशा है। मकर का मंगल धान्यों में ज़ोरदार मन्दी करेगा लेकिन शृंगार व खुशबूदार वस्तु सभी में तेजी का योग बनता है। अमावस्या को खण्ड ग्रास सूर्य ग्रहण बहुत ज़ोरदार जो मन्दी की लाईन चल रही होगी उसमें दो दिन तो स्थिरता बाद में तेजी की लाईन छायेगी। अगर दो दिन में हमारे लिखे अनुसार मार्केट न चले तब तुरन्त सौदा विपरीत में डबल करके सौदा करें। यह संकेत सिर्फ सट्टा बदनी के व्यापार में है। चांदी, सोना के ऊँचे भाव अब आखिरी रूप में चलेंगे। अन्य वस्तु जैसे आलू, मैंथा में तेजी का प्रभाव बढ़ेगा और दीगर तमाम वस्तुओं में पूर्व लाईनें तारीख ६ जून से पलटने लगेंगी। इस मास का खास चांस यही है कि घने ऊँचे भावों को देखकर फंसना नहीं चाहिए बल्कि नफा पक्का करना चाहिए।

**आषाढ़ सम्वत् २०६० का व्यापार भविष्य** - सूर्य की वस्तु चाहे वह धातु हो चाहे दालों में हो चाहे शेयरों में हो सभी में असर तेजी का होता है। जब-जब भी सिंह का चन्द्रमा हो तभी चांस सम्पन्न होगा जहाँ आप गली फाट के भी लगा कर लाभ उठा सकते हो। इस माह में इन्फीरियर लाइन का प्रभाव तेलों के स्टॉक की इजाजत देता है। धमाके की मंदी जब भी आयेगी तभी खरीदो। इस महीने में शुक्ल पक्ष में १३ का क्षय होना तेजी कारक है मंदी आने पर स्टॉक का ध्यान भी रखना। सट्टे-बदनी में बदि प्रतिपदा की लाइन बदि छट तक, अगर सातें को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

ता॰ २ अप्रैल बुधवार को प्रारम्भ होने से वर्ष का राजा ... का क्षय होना तेजी कारक है मंदी आने पर स्टाक का ध्यान भी रखना। ... प्रतिपदा की लाइन बदि छट तक, अगर सातें को

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS



१२ से १ घंटे में मंदी चली तो मंदी, महीने के नये भाव २० घंटे में न बने तो तेजी की १ सप्ताह की लाइन चलेगी। इस के बाद भाव पड़े से रहेंगे, पर भौमवारी चन्द्रदर्शन ता॰ १ जलुाई को होने से पूर्व सभी वस्तुओं के भाव १ दम बदलेंगे और देव-शयमी एकादशी तक चलेंगे बाद ४ दिन में ही १/४ का रियक्शन सभी हाजिर व सट्टे-वंदनी के व्यापारों में आयेगी। ता॰ १७, ता॰ २४ जून तथा ४, ८, ११ जुलाई को नजराना तेजी मंदी लगानी, लाभ प्रद रहेंगी। भूल कर भी मंदी का रियक्शन चांदी, चीनी में चांस बेचान का नहीं होगा बल्कि स्टोक ही करना साथ ही मैथा का व्यापार का लाभ प्रद रहेगा।

**श्रावण सं॰ २०६० का सामूहिक विवरण** - इस महीने में श्रावण बदि प्रतिपदा ता॰ १४ जुलाई को कर्क राशि में गुरूदेव प्रात: आश्लेषा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में प्रवेश करेंगे। गुरुदेव के प्रभाव से सोना, हल्दी व तमाम पीली रंग की वस्तुओं में जोरदार चाल चलेगी। इस ग्रह के प्रभाव से व्यापार में चहलपहल नये आयात-निर्यात व नये सट्टे भी बढ़ा करते हैं। इस महीने में गुरुवार की चाल हर गुरुवार को नये भाव बनाएंगे। जो चाल पीली वस्तुओं में शुरू होगी वह सत्रह जौलाई श्रावण बदि चौथ तक चलेगी क्योंकि कर्क में सूर्य ता॰ १७ जुलाई की शाम १७ घटि पर प्रवेश करेंगे। यह संक्रान्ती बाल्य अवस्था में बैठी है और १५ मुहूर्ती तेजी सूचक है। ता॰ १८ जुलाई को मेंथा और चीनी, गुड़ आदि तमाम धान्यों में ता॰ १७ की १२ से १ बजे के दरम्यान में चालू लाईन ता॰ २४ जुलाई तक तो चलेगी ही बाद ता॰ २४ को ही कर्क राशि में ही शुक्र के संचरण के प्रभाव से और ता॰ २७ जुलाई की रात्रि में शुक्रास्त होने से या तो मार्केटें में पानी पानी हो जाएंगा या एकदम मार्केट बढेंगे। जब दो ग्रह भिन्न-भिन्न प्रभावकारी हुआ करते हैं तब बहुधा वस्तुओं में रियक्शन लेकर मार्केट चला करता है और खास तौर से कालीमिर्च, कोचीन का व्यापार तेजी कारक बन जाता है। यहां की चालू लाईन ता॰ २ आगस्त तक अवश्य ही चलेगी। नाग पंचमी श्रावण शुदि चतुर्थी शनिवारी होने से जिन शेयरों में अधिक मन्दी आई होगी उनमें तेजी का बिगुल बज जाएगा। पर चांदी, सोना, मणि आदि में विशेष मन्दी का प्रवाह होगा। रविवार ता॰ १० अगस्त को गुरु अस्त होंगे जो अगले दिन सोमवार से गुरु के अधिकार की वस्तुओं में मन्दी का प्रभाव बनाऐंगे।

**भाद्रपद सं॰ २०६० का सामूहिक विवरण:-** भादों लगते ही सभी पूर्व लाइनें ज्यों की त्यों चलती रहेंगी लेकिन भादों बदि पंचमी रविवार सिंह की संक्रान्ति लगने से धान्यादि, तेल, मेंथा, शेयर तथा वायदा बाज़ारों में तेजी का विचार बनता है लेकिन शुक्रास्त पूर्व में मणि, चांदी, सोना में विशेष मन्दी कारक है। जब दो प्रकार के संक्रमण होते हैं तब ग्रहों के प्रभाव से खाने-पीने की वस्तुओं में तथा सोना, चांदी, प्रमुख शेयरों में पृथक-पृथक लाइनें चला करती हैं। सें सेक्स में ४० से ५२ या दुगना अकं गिरने की सम्भावना बनेगी। बजाज आटो, ऐ, सी. सी. तथा बड़ी कम्पनीयों के शेयरों में बिकवाली का जोर होने की सम्भावना है। जन्माष्टमी पर कन्या राशि में बुध देव का संचरण ता॰ २१ अगस्त को गोगा नवमी के दिन करीब २५ घटी पर होने से पूर्व चली लाईन कल से रुख पलट देगी। भारतीय उद्यम पर यमाहा का पूर्ण स्वामित्व ५८ से ९८ फीसदी स्वामित्व का योग बनता है। अन्य दीगर लाइनें ज्यों की त्यों जन्माष्टमी बाद एक सप्ताह में ही अपना अच्छा प्रभाव दिखायेंगी लेकिन भादों बदि चतुद्रशी मंगलवार ता॰ २६ अगस्त की रात्रि में बुध बक्री होने से ता॰ २७ अगस्त से पूर्ण प्रभाव कबरिट जो भी शाम को बनेंगे वे अगले दिन बद कर चलेंगे। इण्डियन किशमिश, पीले-हरे बादाम, छुआरे, पिश्ता के भाव सुधरेंगे। इस पीरियड में मन्दी आने पर घटे भाव स्टाक करें और खास तौर से हाजिर तथा सट्टा तिलहन के भाव तेजी पर जाएंगे। खास तौर से आलू, गुड़, सट्टा बाजार तथा सोयाबीन में तेजी का संचार होने की धारणा है। अगर यहां भाव पड़े रहें या मन्दी आती दिखाई दे तब भी घबराना मत क्योंकि भादों शुद्धि में बुधाष्टमी का टूटना और सिहें बुध ता॰ ४ सितम्बर को और इसी दिन बुधास्त पश्चिम में होना मार्केटें में नई झलक देगी भाव बढ़ने की प्रक्रिया होगी। विशेपतया चीनी, खांड, आलू और कोचीन, काली मिर्च में तेजी होगी।

**आश्विन सं॰ २०६० का व्यापार भविष्य :-** इस माह में इन्फीरियर लाइन चलेगी इसलिये कुछ वस्तुओं में भारी मंदी पर सूर्याश्रित वसुाओं में तेजी अच्छी आयेगी। विदेशी माल की मांग भारत में बढ़ेगी। ता॰ ११ सितम्बर बदि आश्रिन की प्रतिपदा से लाइनों के पलटने का योग इसीलिये बनता है क्योंकि ता॰ १७ सितं॰ को कन्या संक्रान्ति के दिन बुधोदय होने से ता॰ ११ से १७ सिंत. की लाइन जोरदार चलकर ता॰ १८ को गुरुवार होने से रात्रि को ४५ घड़ी पर हस्ते शुक्र का प्रवेश श्वेत वस्तुओं के अलावा मूंगफली, लोहा, सीमेंन्ट, रेत, वजपुर के स्टौकिस्ट भी लाभ उठायेंगे। मेंथा में भारी तेजी व सभी सुगन्धित पदार्थों में तेजी का बिगुल बजेगा। जब मार्केट में हा-हा कार ऊंचाई का बनेगा तब पूर्ण होशियारी से व्यापार करें क्योंकि किसी-किसी वस्तुओं में यहां इस माह की तेजी लास्ट होगी अत: तारुणी करना लाभ प्रद जानना। किसी-२ शेयरों में ता॰ २० सितंबर से १० दिवसीय चांस उत्तम लाभ देगा। मेंथा, कपूर, हल्दी, मिर्च, आलू भी लाभ देगा। दिल्ली, हापुड ता॰ १२ व १८ सितंबर में नये भाव बनेंगे, और कन्या संक्रांति आगे तमाम महीनों में ही असर करेगी। विशेष रूप से रुई और अन्य सफेद वस्तु इसके प्रभाव में चलेंगी। हमारा विचार मन्दी होकर तेजी का है क्योंकि ता॰ २७ सितम्बर को आश्विन शुदि प्रतिपदा घटा रही है और हस्ते रवि ता॰ २७ को शाम २३ घटि पर प्रवेश कर रहे हैं। धान्य, रस पदार्थों वाली वस्तुओं के अलावा मेंथा और शेयरों में तेजी लायेगा। इस माह में पांच गुरु हैं अत: पाश्चात्य देशों में राज विग्रह एवं अशान्ती और वायदे व्यापारों में मन्दी आई हुई होने पर समाप्त हो जाएगी। सोना, चांदी, पीतल के भाव ३ अक्तूबर के बाद तेजी पर जाएंगे क्योंकि तुला का शुक्र और ता॰ ८ को बुधास्त तेजी कारक हैं। आलू, चीनी, खांडसारी, गोले का स्टाक करें। सरसों आदि की तेजी में ऊंचा भाव मिलने पर बेचान बोलना अच्छा रहेगा।

**कार्तिक सम्वत् २०६० का सामूहिक व्यापार भविष्य:-** बदि पक्ष में तिथि का घटना घोर मन्दी कारक है लेकिन शुक्ल पक्ष में तिथि का घटना उतना ही तेजी कारक है। इस माह की फसल की वस्तु को बदि पक्ष की तिथि का क्षय मन्दी बनाती है। तुला संक्रान्ती जो ता॰ १७ अक्तूबर को ही यह मन्दी का रियक्शन लायेगी। लेकिन दीपावली से आगे पन्द्रह दिन में आखीरी तेजी आलू आदि अन्य वस्तु लास्ट तेजी का गुल खिलाएंगी। सूर्य-बुध के योग से गेहूं, चना, सौंठ, जौ, बादाम, छुआरा आदि खुष्क मेवाओं में तेजी आयेगी। इस महीने में रूई का स्यक अवश्य करना चाहिए। चांदी, सोना बदि पक्ष में पड़े रहेंगे। तिलहन आदि की पैदावार बढ़ने की आंशका होगी। लेकिन शुदि पक्ष में तिथि चौथ घटि है इसलिए तेजी का योग बनता है। विशेष रूप से चन्द्रगहण चांदी, सोना या अन्य वस्त्रादि में तेजी बराबर बढ़ती रहेगी। विशेष रूप से ता॰ १८ अक्तूबर और २८ अक्तूबर और ता॰ ८ नवम्बर में नजराना लगाने के लिए बहुत अच्छी तारीखें हैं।

**मार्गशीर्ष सम्वत २०६० का सामूहिक व्यापार भविष्य :-** इतवार ता॰ १६ को वृश्चिक संक्रान्ति ३६ घड़ी पर १५ मुहूर्ती महर्घता सूचक है पर इसी दिन रात्रि को बुधोदय पश्चिम में मंदी कारक चलेगा। जन-२ बड़े योग १ साथ टकराते हैं तब बहुत ही सोच विचार कर व्यापार करना चाहिये यानि इस माह में ता॰ १७ नवम्बर को १२ बजकर ४५ मिनट से जिस वस्तु में जिधर की लाइन बन जायेगी वही लाइन १५ दिवसीय चलेगी। लाल रंग की वस्तु तो लेना पर गेहूं, चना, मटर रियक्शन में लेना और घी वैजीटेबल बेचना। दीगर सभी सट्टों में पूर्व कार्तिक माह की लाइनें ता॰ १० से १७ नवम्बर तक ज्यों की त्यों चलेंगी। ता॰ १८ नवम्बर को १ बजकर ५ मिंट तक जिस वस्तु में भी नीचे भाव कटेंगे तो भारी मंदी आयेगी अगर न कटे तो ऊंचे भावों से सभी मार्केट टक्कर खायेंगे, स्टॉक से आलू पुराना निकालें। कोचीन, कालीमिर्च तथा सूखे मेवों में ध्यान रखना। इसी अवधि में साफ्टवेयर निर्यात १५ से ३१ प्रतिशत बढ़ने की आशा बनती है। गुड, खांड, खाँडसारी में सारा गुजरात तथा तमिलनाडु मार्केटों में बढ़ेगी। मार्गशीर्ष माह में अमावस्या क्षीण हुई है ये योग यू॰पी॰ प्रान्तों में भारीश्वेत वस्तु चांदी, सूत व सूती वस्त्रों में भारी मंदी सूचक है। मैंथा की लाइन ता॰ २४ नवम्बर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS



को बजे दोपहर तक भी सट्टा हो हाजिर वही लाइन १४ या २४ दिन चलने की सम्भावना है। मूले धनुषि बुध ठीक ता॰ २८ को १२½ घड़ी पर लगने से भारी आवक गुड़ में बढ़ेगी इसलिये १ सप्ताह में मंदी सूचक ये ग्रह हैं। अमरीकन शेयर मार्केट भी १ दम टूटेंगे पर १ नोट है कि यहां ३० नवम्बर तक मंदी न चलै तो १५ दिवसीय तेजी बनेगी।

**पौष सं॰ २०६० का सामूहिक व्यापार भविष्य:**- इस महीने में ५ मंगल तेजीकारक हैं, जिन वस्तु में गत माह मंदी आई होगी तेजी का जोरदार संचार होगा। लेकिन ५ ही बुध हैं जो तेजी आई हुई वस्तु में घोर मन्दी कारक है। अगर पौष बदि में दोयज से सप्तमी तक वर्षा होती है तो आगे फसल में उत्तम भारी रूप से अनाज पैदा होंगे। पूष बदी प्रतिपदा मंगलवार १ दिसम्बर को वादे सट्टों में जिस वस्तु में भी १ बजे तक मंदी चलेगी तो जोरदार मंदी ५ दिन में ही आयेगी। अगर मार्केट विपरीत चले तो ज़ोरदार विपरीत मार्केट ही कम से कम ५ दिन व्यापार चलेगा। १६ दिसम्बर को धन संक्रान्ति मंगलवार को रात्रि के ३३ घड़ी पर लगने से सुगन्धित पदार्थ इत्र, कपूर, मैंथा आदि का स्टाक करें। लाभ होगा। लेकिन सोना, चाँदी के भाव में मंदी। इस महीने में त्रिद्याष्टमी १७ दिसम्बर की दिन के १२ घड़ी पर होने से जिन वस्तुओं में पहले तेजी आयी होगी उन्हीं में मंदी का संचार ज़ोरदार होगा क्योंकि यही बुध पहले वक्री होगा बाद २० को ही अस्त हो जायेगा। यहाँ पर नजराने तेजी-मंदी के अवश्य ही खलेंगे। पूष सुदी में २४ दिसम्बर से ७ जनवरी २००४ तक किसी-किसी मार्केट में मंदी समाप्त हो जायेगी क्योंकि पौष सुदी तीज क्षय हो गयी है और बुध का उदय जनवरी में होना तथा बक्री गुरु ६ जनवरी में होना और मार्गी बुध भी पूर्णमासी को ७ जनवरी को हो जाने से अनाज, दलहन, ग्वार, मटर में तेजी का संचार होगा। गुड़, खांड में इसी पक्ष में जोरदार मंदी समाप्त हो जायेगी। इस महीने में १६, २०, २६ दिसम्बर और जनवरी १ और ६ में तेजी-मंदी अवश्य ही लगाकर लाभ उठायें।

**माघ सं. २०६० का सामूहिक व्यापार भविष्य :**-जब भी २ शुभ ग्रहों का अधिकार हो तो तारूणी का व्यापार ही लाभ देता है यह बात हजारों बार आजमाईस शुदा है। हर वस्तुओं में पहिली लाइन ही २ दिन बदि-१, बदि-२ में चलेगी। ता॰ ९ जनवरी की रात को कुंभे शुक्र होने से अगले दिन ता॰ १० जनवरी को पलटने लगेगीं। यहां की चालू लाइनें मकर संक्रान्ति माघ बदि ७ बुधवार ता॰ १४ जनवरी तक बिना रियक्शन के चलेगी। बदि माघ पक्ष में कुछ वस्तुओं में भाव पड़े से रहेंगे तो भी पुराना स्यक अवश्य ही निकालिये। माघ बदि ७ बुध को मकर संक्रान्ति से ३० मुहुर्ती होने से धान्यादि भावों में समता रहेगी तथा बुध के ऊंचे भाव जिन वस्तुओं के कटे तो भारी तेजी वर्ना शनै-२ मंदी का प्रभाव हो चलेगा। शेयर स्टील, बजाज के तेजी पर जायेंगे पर लाइन परिवर्तन नहीं होगी। चांदी में भारी मंदी जब भी आये खरीदो। तिलहनों में चतुद्रशी बदि से लाइन बदलेगी। इस माह में अमावस्या माघ की टूटी है। माघ शुदि में ही इन्फीरियर लाइन का चलना महीन कपड़े में तेजी आने लगेगी। दाल, दलहन के मंदे भाव भी उठेंगे और मोटी-२ चीजों में जैसे खद्दर कुछ भंडार की वस्तु और दवाइयों में तेजी का बिगुल बजेगा। चालू सट्टों में सट्टे की गहराई पकडें और जब भी चालू सट्टों में मंगल के भाव शुक्र को ऊंचे के क्रौस हों तो तेजी न हों तो मंदी का बिगुल बजेगा। स्टील, पीतल, ताबां आदि की लाइन ता॰ २६ जनवरी १ बजकर २७ मिनट से जो भी जिधर भी ११/२७ से चलेगी वही १५ दिन साधी चलेगी और सूखे मेवों की तेजी समाप्त होगी। पुराने गेंहू, चना, बेफड़ इधर लो उधर बेचों ये नियम माघ में भी और अगले माह भी काम देगा। स्टील, लोहा और मैटीरियल लास्ट माह में खरीदो तथा ता॰१६, २०, २७ जनवरी तथा ता॰ ३ व ५ फरवरी में नजराने लगाना।

**फाल्गुन सं॰ २०६० विक्रम की तेजी मंदी :**- व्यापार पति बुध से सूर्य आगे-२ ही चलेंगे इस वास्ते इन्फीरियर लाइन में बदि पक्ष में अष्टमी क्षय, सप्तमी मिती को कुमारी अवस्था में कुँभ की सं॰ का लगना ४५ मुहूर्ती १ दम भाव गिरेंगे। आलू १ दम गिरेगा तथा इस फसल की वस्तु में मंदी भारी आयेगी। इसीलिये स्टॉक निकालें और ता॰ ९ को बुध श्रवण में होने से ध्यान रखिये चांदी पूर्व तेजी पर रही है तो भारी मंदी मंगला चौथ ता॰ १० से जाने। अन्य वस्तु सफेदी लिये हुए तेजी पर जाने का विचार है अन्य पंसारट में गिरावट रूकेगी। पर बुध को १ बजे तक ता॰ ११ फरवरी तक अगर विपरीत मार्केट चले तो फौरन सौदा काट दें। अंरडा बम्बई तेल, तिलहन तथा गुजरात की मांग बढ़ने से भाव बढेंगे परंच १ दिन बाद भी विपरीत सौदा चले तो फौरन काट का डबल कर ७२ घंटे में लाभ उठाना। सोना तेजी पर मणि, मूंगा, हीरा, लइसुनियां में एंक मंदी का धमाका ही खरीदार को लाभ देगा। रविवार ता॰ १५ फरवरी में बुध का अस्त होने से या तो भारी तेजी या भारी मंदी आयेगी इसलिये आज नहीं लाइन चलने पर कल से व्यापार करें सब्जियों के व्यापारियों को १० दिन सीमित ही व्यापार करना उचित होगा और इस मंदी में चावलों का स्टौक ३ माह में ही लाभ देगा। रूई के व्यापारी मंदी को देखकर घनी मंदी में नहीं जाना बल्कि स्टॉक करना। स्टील, पीतल, लोहतर धातुओं में आगे तेजी का व्यापार करें। ता॰ १९ फरवरी को ४० घड़ी रात में शतभिषा पर सूर्य भी चावल नया खरीदो। दो या साढ़े तीन माह में मोटा लाभ उठाना। चन्द्रदर्शन शनिवारी ता॰ २१ और ता॰ २२ को प्रात: ही बंद बाजार में कुंभ बुध होने से ध्यान रखिये ता॰ २३ फरवरी को गत भाव ११ बजे तक नीचे से नीचे के बन कर सरसों, हल्दी में और न कटें तो भारी तेजी १ सप्ताह में चलेगी पर विपरीत में डबल सौदा करके ९६ घंटे में लाभ उठाना। हमारा विपरीत में इमली, मक्का अनाजों में तेजी का है लेकिन यह तेजी स्थिर होगी। शुदि में चन्द्रदर्शन शनिवारी तेजी कारक है सभी सट्टे बढ़ेंगे पर नोट है कि शनिवार को ११ बजकर ४५ मिंट बाद १० मिंट में तेजी न चले तो ६२ घंटे विपरीत मार्केट चल कर तेजी की चाल चलेगी।

**कृष्णा चैत्र संवत् २०६० का सामूहिक विवरण :**- चैत्र कृष्ण रविवार को प्रतिपदा ता॰ ७ मार्च २००४ में शनिदेव जी मार्गी गति से चलेंगे यह ग्रह फाल्गुनी सभी लाइनों को बदलेंगे। शनि बहुत ही मंदग्रह है अत: उतावले होकर व्यापार न करना। ता॰ ९ भौमवार चैत्र बदि ३ को मीने बुध १३ घड़ी पर प्रवेश होने से तेल, तिलहनों, गुड़, मीठे रसदार तमाम वस्तुओं में रियक्शन का चांस देगा। चैत्र में आखिरी मंदी गुड़ में चलेगी पर इस माह की मंदी गुड़, तिलहन , चांदी, सोना में खरीदार ही आगे लाभ उठायेंगे। यहां की लाइनें सरसों तेल, मैंथा की तो हैं ही पर विशेषतया सुहाग की तमाम वस्तुओं में मंदी लिवाल को लाभ देगी। मीन संक्रान्ति अष्टमी रविवार प्रविष्ट वा॰ ३ न॰ ४ मु॰ ३० धान्यादि भावों में समता कारक है और ता॰ १५ को मार्च में जिस वस्तु में तेजी चलेगी उसी में बुधोदय ता॰ १७ मार्च चैत्र बदि ११ तक चलेगी पर तिथि चैत्र की १३ ता॰ १८ मार्च में टूट रही है यह मंदी कारक है। इस चैत्र बदि में ता॰ ९, १२, १८ को नजराना लगाने उत्तम लाभकारी चांस दिन रहेंगे अगर न फलै तो दूसरे दिन भी लगाना यह नोट ध्यान रखना।


## अनमोल चांस मंगाइये-

अनमोल क्यों ? क्योंकि चांस ग्रहों के आधार पर देते हैं साथ ही ग्राफिकल चांस भी बनाते हैं। ऊंचे-नीचेआनुपातिक क्रासिंग भाव देना ही चांस की विशेषता होती है। हाजिर या वायदा वस्तु के चांस चांदी, सोना, शेयर्स, मेंथा, गुड़, सरसों, सोयाबीन तेल, कॉपर, आलू, अरन्डा, हल्दी, बारदाना, तेल, तिलहनादि, दलहनादि, किराना वस्तुओं तथा खुष्क मेवाओं के चांस देते हैं। हाजिर एक वस्तु एक वर्ष फीस ५५१.००, छह माह ३५१.०० तथा तीन माह २५१.०० है। वायदा एक वस्तु एक माह २५१.००, सम्पूर्ण वर्ष २५५१.०० है। वायदा एक वस्तु फोन पर प्रतिदिन बताने की फीस १०००.०० है।

**शांडिल्य व्यापार भविष्य:**-पूर्ण एक वर्ष की दैनिक व लम्बी लाईन धाखा चांस हर वस्तु के छपते हैं। मूल्य १२५.०० है। रुपया पेशगी भेजें।

पता- श्री ओंकार प्रसाद, विश्वबन्धु शर्मा
श्री ओंकाराश्रम ज्योतिष भवन, (एम.काम.एल.एल.बी.)
२१/२२, ब्रह्मनान, पो॰ हापुड़ , जि॰-गाजियाबाद (उ॰ प्र॰)
फोन नं.-३१२२३८, ३१७९२९


CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection